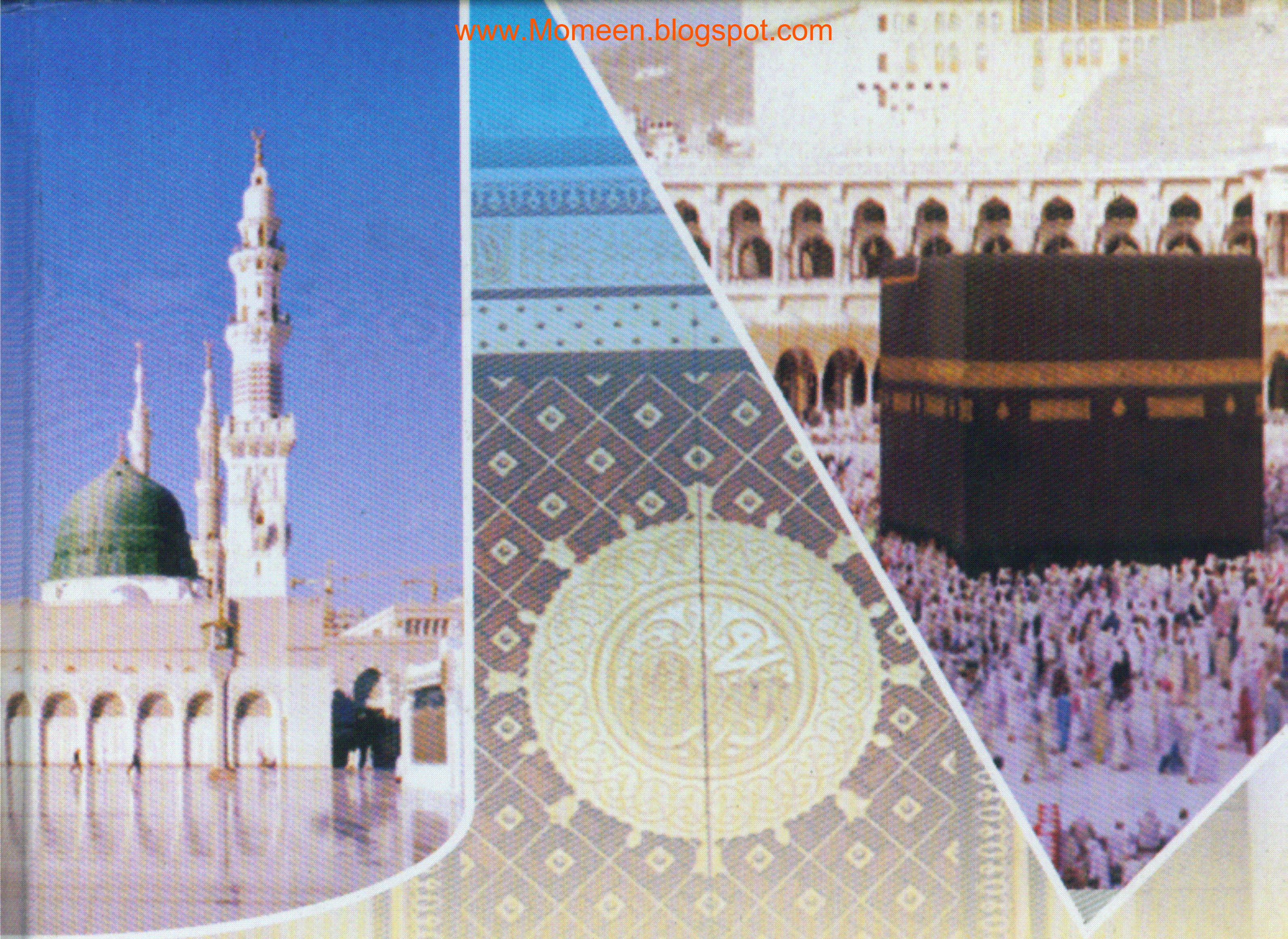


मुख़्तसर
सही बुख़ारी

भाग-2

मुसन्निफ :
इमाम अबुल अब्बास ज़ैनुद्दीन अहमद बिन अब्दुल लतीफ अज़्ज़ुबैदी रह०

नजर सानी :
शैखुल हदीस हाफिज़ अब्दुल अज़ीज़ अलवी हफिज़हुल्लाह

हिन्दी अनुवाद :
ऐजाज़ ख़ान

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अत्तजरीदुस्सरीहु लिअहादीसिल जामिइस्सहीहि

मुख़्तसर सही बुख़ारी

(हिन्दी)

इमाम अबुल अब्बास ज़ैनुद्दीन अहमद बिन अब्दुल लतीफ अज़्ज़ुबैदी रह.

भाग -2



उर्दू तर्जुमा और फ़ायदे

शैखुल हदीस अबू मुहम्मद हाफिज़ अब्दुस्सत्तार हम्माद हफिज़हुल्लाह

(फाज़िल मदीना यूनिवर्सिटी)



नज़र सानी

शैखुल हदीस हाफिज़ अब्दुल अज़ीज़ अलवी हफिज़हुल्लाह



हिन्दी तर्जुमा

ऐजाज़ खान

इस्लामिक बुक सर्विस

मुख़्तसर सही बुख़ारी (भाग - 2)

मुसन्निफ़ :

इमाम अबुल अब्बास ज़ैनुद्दीन अहमद बिन अब्दुल लतीफ अज़्ज़ुबैदी रह॰

नज़र सानी :

शैखुल हदीस हाफिज़ अब्दुल अज़ीज़ अलवी हफिज़हुल्लाह

हिन्दी अनुवाद :

ऐजाज़ ख़ान

ISBN 81-7231-921-4

प्रथम संस्करण -- 2008

प्रकाशक :

इस्लामिक बुक सर्विस

2872-74, कूचा चेलान, दरिया गंज, नई दिल्ली-2 (भारत)

फोन : 011-23253514, 23286551, 23244556

फैक्स : 011-23277913, 23247899

E-mail: islamic@eth.net / ibsdelhi@del2.vsnl.net.in

website: www.islamicindia.co.in / www.islamicindia.in

Our Associates:

- Al-Munna Book Shop Ltd., **(UAE)**
  (Sharjah) ***Tel.:*** 06-561-5483, 06-561-4650 / **(Dubai)** ***Tel.:*** 04-352-9294
- Azhar Academy Ltd., **London (United Kindgom)**
  Tel.: 020-8911-9797
- Lautan Lestari (Lestari Books), **Jakarta (Indonesia)**
  Tel.: 0062-21-35-23456
- Husami Book Depot, **Hyderabad (India)**
  Tel.: 040-6680-6285

Printed in India

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِيْنُهُ، مَنْ يَّهْدِهِ اللهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ. أَمَّا بَعْدُ: فَإِنَّ خَيْرَ الْحَدِيْثِ كِتَابُ اللهِ وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ، وَشَرَّ الْأُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا، وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِۦ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ﴾ - ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُوا۟ رَبَّكُمُ ٱلَّذِى خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَٰحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَآءً ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ٱلَّذِى تَسَآءَلُونَ بِهِۦ وَٱلْأَرْحَامَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا﴾ - ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَقُولُوا۟ قَوْلًا سَدِيدًا ۝ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَٰلَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا﴾

तर्जुमा : बिलाशुबा सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं, हम उसकी तारीफ करते हैं, उससे मदद मांगते हैं जिसे अल्लाह राह दिखाये, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे अपने दर से धुतकार दे, उसके लिए कोई रहबर नहीं हो सकता और मैं गवाही देता हूँ कि मअबूदे बरहक सिर्फ अल्लाह तआला है, वोह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। हम्दो सलात के बाद यकीनन तमाम बातों से बेहतर बात अल्लाह तआला की किताब है और तमाम तरीकों से अच्छा तरीका मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का है और तमाम कामों से बदतरीन काम वोह है जो (अल्लाह के दीन में) अपनी तरफ़ से निकाले जायें। और हर बिदअत गुमराही है।" (मुस्लिम, हदीस नं. 867)

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो। जैसा के उससे डरने का हक़ है और तुम्हें मौत न आये मगर, इस हाल में कि तुम मुसलमान हो।"

(सूरा ए आले इमरान, पारा 4, आयत नं. 102)

"ऐ लोगो! अपने रब से डरो, जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और (फिर) उस जान से उसकी बीवी को बनाया और (फिर) उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें पैदा कीं और उन्हें (जमीन पर) फैलाया। अल्लाह से डरते रहो जिसके ज़रीए (जिसके नाम पर) तुम एक दूसरे से सवाल करते हो और रिश्तों (को क़ता करने) से डरो (बचो)। बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है।" (सूरा ए निसाअ पारा 4 आयत नं. 1)

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और ऐसी बात कहो जो मोहकम (सीधी और सच्ची) हो। अल्लाह तुम्हारे आमाल की इस्लाह और तुम्हारे गुनाहों को मआफ़ फरमायेगा और जिस शख़्स ने अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की तो उसने बड़ी कामयाबी हासिल की।" (सूरा अहज़ाब पारा 22, आयत नं. 70, 71)

मुकद्दमतुल-किताब

हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह तआला ही के लिए है, जो तमाम मख्लूकात को बेहतरीन अन्दाज और मुनासिब शक्ल व सूरत के साथ पैदा फ़रमाया है। वो ऐसा दाता, मेहरबान और रोज़ी देने वाला है कि किसी हक़दार के हक़ के बग़ैर भी मख्लूक़ को अपनी नेमतों से मालामाल किये हुए है और जब तक सुबह व शाम का यह सिलसिला जारी है, उस वक्त तक अल्लाह तआला की रहमत और सलामती उसके रसूल बरहक पर हो जो अच्छे अख़्लाक की तकमील के लिए भेजे गये थे, जिन्हें अल्लाह तआला ने तमाम मख्लूकात पर बरतरी और फजीलत अता फरमाई। इसी तरह उसकी आल व औलाद पर भी अल्लाह की रहमत हो जो अल्लाह की राह में बड़ी फय्याजी से खर्च करते हैं और उनके सहाबा-ए-किराम पर भी जो इताअत गुजार और वफादार हैं।

हम्दो सलात के बाद मालूम होना चाहिए कि इमामुल मुहद्दिसीन अबू अब्दुल्लाह, मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहीम बुखारी रह. की अजीमुश्शान जामेअ सही इस्लामी किताबों में सबसे ज्यादा मोतबर और बेशुमार फायदों की हामिल है। लेकिन इसमें अहादीस तकरार के साथ मुख़्तलिफ़ अबवाब में अलग-अलग तौर पर बयान हुई हैं। अगर कोई शख़्स अपनी चाहत की हदीस ढूंढना चाहे तो बहुत इन्तहाई तलाश व जुस्तजू और सख़्त मेहनत के बाद ही उसे मालूम कर सकता है। बेशक इस किस्म के तकरार से इमाम बुखारी का मकसद यह था कि मुख्तलिफ असानीद के साथ अहादीस बयान की जाये। ताकि इन्हें दर्जा शोहरत हासिल हो जाये। लेकिन इस मजमूअ-ए-अहादीस से हमारा मकसद नफ्से हदीस से जानकारी हासिल करना है। बाकी रही उनकी सेहत व सिकाहत तो उसके मुताल्लिक सब जानते हैं कि इस मजमूऐ की तमाम अहादीस सही और क़ाबिले ऐतबार हैं। इमाम नववी शरह मुस्लिम के मुक़द्दमे में लिखते हैं।

हजरत इमाम बुखारी रह॰ एक हदीस को मुख़्तलिफ़ सनदों के साथ अलग अलग अबवाब में ज़िक्र करते हैं। बाज़ औक़ात इस हदीस का ताल्लुक रखने वाले बाब से बहुत दूर का ताल्लुक होता है। चुनांचे अकसर औकात इसके मुताल्लिक यह ख्याल तक नहीं गुज़रता कि इसका यहां ज़िक्र करना मुनासिब होगा। इसलिए एक पढ़ने वाले के लिए इस मुतालब-ए-हदीस को तलाश करना और इसकी तमाम असानीद को मालूम करना बहुत मुश्किल हो जाता है। आपने मज़ीद फ़रमाया "मुताख़्ख़िरीन में से कुछ हुफ्फाज़ (हाफिज़) इस ग़लतफ़हमी में

मुब्तला हो चुके हैं कि इन्होंने बुख़ारी में ऐसी अहादीस की मौजूदगी से इनकार कर दिया, जो अलग अलग अबवाब में दर्ज थी। लेकिन उनकी तरफ़ बसहूलत ज़ेहन की पहुंच न हो सकी। (शरह नववी, सफ़ह 15, जिल्द 1)

ऐसे हालात में मेरे अन्दर यह ख़्वाहिश पैदा हुई कि मैं अपनी किताब में मन्दरजा ज़ैल बातों का एहतमाम करूं।

1. जामेअ सही की तमाम अहादीस को उनकी सनदों और तकरार के बग़ैर जमा कर दिया जाये। ताकि मतलूबा हदीस किसी क़िस्म की दुश्वारी के बग़ैर तलाश की जा सके।
2. हर मुकर्रर हदीस को एक ही जगह बयान करूंगा। लेकिन अगर किसी दूसरी जगह इस रिवायत में कोई इज़ाफ़ा हुआ तो पूरी हदीस ज़िक्र करने के बजाय इज़ाफ़ा का हवाला दूंगा।
3. अगर पहली कोई हदीस मुख़्तसर तौर पर ज़िक्र हुई हो और बाद में कहीं इसकी तफ़सील हो तो इज़ाफ़ी फ़ायदा के पेशे नज़र दूसरी तफ़सीली रिवायत को नक़ल करूंगा।
4. मक़तूअ और मुअल्लक रिवायात को नज़र अन्दाज़ करते हुए सिर्फ मरफ़ूअ और मुत्तसिल अहादीस को बयान करूंगा।
5. सहाबा-ए-किराम और उनके बाद आने वाले दूसरे लोगों के वाकयात जिनका हदीस से कोई ताल्लुक नहीं और न ही उनमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र मुबारक है, जैसे हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ि. और हज़रत उमर रज़ि. का सक़ीफ़ा बनी साइदा की तरफ जाना और वहां जाकर आपस में बातचीत करना, नीज़ हज़रत उमर रज़ि. की शहादत अपने बेटे को हज़रत आइशा रज़ि. अनहा से उनके घर में दफ़न होने के लिए इजाज़त लेने की वसीयत, आइन्दा मजलिस शूरा के मुताल्लिक़ उनके इरशादात, इसी तरह हज़रत उस्मान रज़ि.. की बैअत, हज़रत जुबैर रज़ि. की अपने बेटे को क़र्ज़ उतारने की वसीयत और इन जैसे दीगर वाक़यात को भी ज़िक्र नहीं करूंगा।
6. हर हदीस के शुरू में सिर्फ़ उसी सहाबी का नाम ज़िक्र करूंगा, जिसने इस हदीस को बयान किया है। ताकि पहली नज़र में ही उसके रावी का इल्म हो जाये।
7. रावी का नाम लेने में इन्हीं अल्फ़ाज़ का इल्तज़ाम करूंगा जैसा कि इमाम बुख़ारी रह. ने किया है। मसलन इमाम बुख़ारी कभी तो अन आइशा रज़ि.

अनहा और अन अबी अब्बास रज़ि॰ को भी अन अब्दुल्लाह बिन अब्बास कह देते हैं। कभी अन इब्ने उमर रज़ि॰. और कभी कभी अन अब्दुल्लाह बिन उमर। नीज बाज औक़ात अन अनस रज़ि॰ और बाज मक़ामात पर अन अनस बिन मालिक रज़ि॰. ज़िक्र करते हैं।

अलग़र्ज़ इन्हें इस मामले में उनकी पूरी मुताबक़त करूंगा। इसी तरह कभी सहाबी के हवाले से बयान करते हुए अनिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और कभी क़ाला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहते हैं।

फिर बाज औक़ात अनिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ाला कजा के अल्फ़ाज ज़िक्र करते हैं। बहरहाल मैंने अल्फ़ाज़ के ज़िक्र करने में इमाम बुख़ारी रह॰ का पूरा पूरा इत्तेबाअ किया है। अगर किसी जगह अल्फ़ाज़ का कोई इख़्तिलाफ़ नज़र आये तो उसे मुतअद्दिद नुस्खों के इख़्तिलाफ़ पर महमूल किया जाये।

तहदीसे नेमत :

अल्लाह के फ़ज़लो करम से मुझे मुख़्तलिफ़ मशाइख़े-आज़म (उस्ताद) से कई एक मुत्तसिल असानीद हासिल हैं जो इमाम बुखारी तक पहुंचती है, उनमें से कुछ ये हैं:-

पहली सनद :

यमन के दारूल हुकूमत तअज में अल्लामा नफ़ीसुद्दीन अबी रबीअ सुलेमान बिन इब्राहीम अलवी से 823 हिजरी में मैंने सही बुख़ारी के कुछ अजजा (हिस्से) पढ़े और अक्सर का सिमा (सुन) करके उसकी इजाज़ते (सनद) हासिल की। उन्होंने अपने वालिद मोहतरम से इजाजते हदीस ली। फिर अपने उस्ताद शर्फ़ुल मुहद्दिसीन मूसा बिन मूसा बिन अली दिमश्की से जो गजूली के नाम से मशहूर हैं, मुकम्मल तौर पर सही बुख़ारी का दरस लिया।

अल्लामा के वालिद को शैख अबू अब्बास अहमद बिन अबी तालिब हज्जारू से कौलन और उनके उस्ताद को सिमाअन इजाज़त हासिल है।

दूसरी सनद :

मुझे इमाम अबुल फतह मुहम्मद बिन इमाम ज़ैनुद्दीन अबू बक्र बिन हुसैन मदनी उस्मानी से बुख़ारी के पेशतर हिस्से की सिमाअन और वैसे तमाम किताब

की इजाज़ते रिवायत हासिल है।

इसी तरह शैख इमाम शमसुद्दीन अबू अज़हर मुहम्मद बिन मुहम्मद जज़री दिमश्की से और काजी अल्लामा हाफ़िज़ तक़ीउद्दीन मुहम्मद बिन अहमद फ़ारसी, जो मक्का मुकर्रमा में औहद-ए-कुज़ा पर फ़ाइज़ थे, उनसे भी मुझे बतौरे इजाज़त सनद हासिल है। इन तीनों शैख़ों को शैखुल मुहद्दिसीन अबू इसहाक़ इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन सिद्दीक़ दिमश्की अल मअरूफ़ ब इब्ने रसाम से और इन्हें हज़रत अबू अब्बास अल जज़री से इजाज़त हासिल है।

तीसरी सनद :

मैंने अपने शैख़ अबू फतह के बेटे शैख़ इमाम ज़ैनुद्दीन अबू बकर बिन हुसैन मदनी मरागी से भी आली सनद हासिल की है। नीज काज़ीयुलकुज़ाअ मुजद्दिदुद्दीन मुहम्मद बिन याकूब शिराज़ी से भी इजाज़ते आम्मा ली।

इन दोनो शैख़ों को हज़रत अबू अब्बास मज़ार से इजाज़त हासिल है। शैख़ अबू अब्बास अल हज्जार को शैख़ हुसैन बिन मुबारक ज़ुबैदी से उन्हें शैख़ अबुल वक्त, अब्दुल अव्वल बिन ईसा बिन शुऐब बिन अलहरबी से, उन्हें शैख़ अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद मुजफ़्फ़र दाऊदी से, उन्हें इमाम अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हमविया सरखी से और उन्हें शागिर्दे इमाम बुख़ारी शैख़ मुहम्मद बिन यूसुफ़ फरबरी से और उन्हें शैख़ कबीर इमाम मुहद्दिसीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहीम बुख़ारी से सनदे इजाज़त हासिल है।

इनके अलावा भी मुतअद्दिद असानीद हैं, जो इमाम बुख़ारी तक पहुंचती है।

मैंने सिर्फ़ मशहूर और आली इसनाद के ज़िक्र पर इक्तफ़ा किया है। वरना इनके अलावा भी मुझे अलग अलग शैखों (उस्तादों) से इजाज़त हासिल है, जिनका ज़िक्र तिवालत का बाइस है।

मैंने इस किताब का नाम "अत्तजरीदुस्सरीहु लिअहादीसिल जामिइस्सहीहि" तजवीज़ किया है। दुआ है कि अल्लाह तआला इसे लोगों के लिए नफ़ाबख़्श बनाये और इसके ज़रीये आमालो मक़ासिद की इस्लाह फ़रमाये। आमीन!

"व सल्लल्लाहु अला नबीय्यिना मुहम्मदिंव व आलिही व असहाबिही अजमईन"

तक़दीम

मुख़्तसर सही बुख़ारी नवीं सदी की एक मुहद्दिस जनाब इमाम जैनुद्दीन अहमद बिन अब्दुल लतीफ जुबैदी रह॰ की लिखी हुई है। जिसका उन्होंने नाम *'अत्तजरीदुस्सरीहु लिअहादीसिल जामिइस्सहीहि'* रखा है, जिसमें उन्होंने सही बुख़ारी की मरफ़ूअ मुत्तसिल अहादीस को चुना है। इमाम बुख़ारी रह॰ एक एक हदीस फहमी, मसाईल के इस्तंबात (मसाईल निकालने) की ख़ातिर कई बार दस-दस, बीस-बीस (और इससे कम और ज़्यादा) जगह ले आये हैं। लेकिन इमाम ज़ुबैदी ने मेहनत और कोशिश करके इस तकरार को ख़त्म किया है और हदीस को सिर्फ एक दफ़ा ऐसे बाब के तहत लिखा है जिसके साथ उसकी मुताबक़त बिलकुल वाज़ेह और नुमायां है। जिसकी ख़ातिर इन्होंने इमाम बुख़ारी की कुछ कुतुब और बेशुमार अबवाब भी ख़त्म कर दिये हैं।

मिसाल के तौर पर इमाम बुख़ारी रह॰ ने "किताबुलहीला", "किताबुलइकराही", "किताब अखबारिलआहादी" के नाम से किताब के आख़िर में उनवान क़ायम किये हैं। लेकिन इमाम ज़ुबैदी ने इन तीनों अहम कुतुब को हजफ कर दिया है। आखरी किताबुल तौहीद में **18** अबवाब में से इमाम ज़ुबैदी ने सिर्फ़ 7 बाब बयान किये हैं। "किताबुल इअतेसामे बिल किताबी व सुन्नती" में **28** अबवाब में से सिर्फ़ 7 अबवाब बयान किये हैं। इस तरह इमाम ज़ुबैदी की किताब सही बुख़ारी की सिर्फ़ मरफ़ूअ मुत्तसिल रिवायात का इख़्तसार व इन्तेख़ाब है और सही अहादीस का एक मुख़्तसर मजमुआ है, जो इस मक़सद के लिए तैयार किया गया है कि इन्सान इनको बिला तकलीफ याद कर सके और इनकी सेहत के बारे में उसके दिल में किसी तरह का ख़दशा या खटका न रहे। हमारे फ़ाज़िल दोस्त और मोहतरम भाई हाफ़िज़ अब्दुस्सत्तार हम्माद हफ़िज़हुल्लाह जो साहिबे इल्म और अहले क़लम

हज़रात में एक ऊँचे मक़ाम पर फाइज़ हैं और बुनयादी तौर पर एक मुदर्रिस है और जामिया इस्लामिया मदीना मुनव्वरा के फारिग़ होने की बिना पर अरबी ज़ुबान और अरबी अदब में महारत रखते हैं। इन्होंने इसका बहुत मेहनत व कोशिश से आसान तर्जुमा किया है और बहुत ज़रूरी जगहों पर बहुत जामेअ और मुख़्तसर फायदे लिखे हैं। वो एक मुदर्रिस होने की हैसियत से तर्जुमे की नज़ाकत को समझते हैं और साहिबे तहरीर होने की बिना पर उसको बेहतरीन अन्दाज़ में ढालते हैं और एक ख़तीब और वाईज की हैसियत से अवाम की ज़रूरत और जज़्बात से जानकार होने की बिना पर मुश्किल अलफाज इस्तेमाल नहीं करते। मैंने तर्जुमा और फायदे पर नज़रसानी की है। एक आम मुसन्निफ़ जो मुसन्निफ़ न हो और अरबी ज़ुबान की तराकीब और उसलूब से जानकार न हो, उसके तर्जुमे पर नज़रसानी करना और उसको ठीक करना कभी कभी तर्जुमा करने से भी मुश्किल काम होता है। लेकिन माहिर तर्जुमा करने वाले के तर्जुमे पर नज़रसानी मुश्किल काम नहीं होता। बल्कि यह तो हमवार बनी हुई ज़मीन पर बेल-बूटे उगाना होता है। इसलिए तर्जुमे की नोक पलक संवारना कोई मुश्किल काम न था। लेकिन इसके बावजूद इनके काम में कहीं कमी का रह जाना कोई बड़ी या काबिले गिरफ्त बात नहीं है। इसलिए कुछ जगहों पर नागुरेज सूरत में तर्जुमे को सही और ठीक करने की ख़ातिर कुछ लफ़्ज़ी तब्दीली की गई है और कुछ जगहों पर फ़ायदों में ज़रूरत के तहत इज़ाफा किया गया है और वहां निशानदेही भी कर दी गई है। लेकिन तर्जुमे की तसहीह में निशानदेही करना मुमकिन होता है और न मुनासिब। इसलिए इसकी निशानदेही नहीं की गई। बल्कि एक काबिले ऐतमाद साथी होने के नाते उनके इल्म में लाये बग़ैर यह इल्मी जसारत (बहादुरी) की गई है।

इस इल्मी और तहक़ीकी काम पर वो मुबारकबाद के हक़दार हैं और वो इदारा जो इस काम को इस्लाहे उम्मत और जज़्बे तब्लीग़ के

तहत मन्ज़रे आम पर (सबके सामने) लाया है, वो भी क़ाबिले सताईश है। हम यह उम्मीद रखते हैं कि उर्दू पढ़ने वालों के लिए दीन की समझ और इत्तबाअ-ए-सुन्नत के लिए यह तर्जुमा और फ़ायदे इन्शा अल्लाह बहुत ज़्यादा फ़ायदेमंद होंगे।

अब्दुल अज़ीज़ अलवी

फ़ैसलाबादी

22 जमादी अव्वल, 1420 हिजरी, बमुताबिक़ 16 सितम्बर, 1999

मुख़्तसर सही बुख़ारी लिखने वाले की मुख़्तसर सवानेह उमरी (हालात)

आपका पूरा नाम अबुल अब्बास ज़ैनुद्दीन अहमद बिन अब्दुल लतीफ़ अश शरजी जुबैदी है जो इमाम जुबैदी के नाम से मशहूर हैं। आप यमन के शहर जुबैद के पास शरजा के मुक़ाम पर जुमे की रात तारीख 12 रमज़ान 812 हिजरी मुताबिक़ 1410 ईस्वी को पैदा हुये। उस वक्त के बड़े बड़े उलमा से फ़ायदा उठाया। फन्ने हदीस पर इन्हें ख़ास ग़लबा था। अपने वक़्त के बहुत बड़े मुहद्दिस और माहिरे अदब थे। यमनी रियासतों में काफ़ी सालों तक दरसे हदीस दिया। बिल आख़िर 893 हि॰ मुताबिक़ 1488 ई॰ को अपनी उम्र की 81 बहारें देखने के बाद शहर जुबैद में इन्तिक़ाल फ़रमाया और वहीं दफ़न किये गये।

फेहरिस्त

उमरह के बयान में

किताबुल हज
हज के बयान में

हज बैतुल्लाह (काबा शरीफ का हज़) अरकान इस्लाम में से है जो छः हिजरी को फर्ज हुआ और इसकी फरजियत को न मानने वाला काफिर है, बदनी और माली ताकत के होते हुये जिन्दगी में इसे एक बार अदा करना जरूरी है। (औनुलबारी, 2/504)

बाब 1 : हज की फरजियत और उसकी फज़ीलत।

٨ - باب: وُجُوبُ الحَجِّ وَفَضْلُهُ

769 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार फजल बिन अब्बास रजि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे सवारी पर बैठे हुए थे। इतने में कबीला खसअम की एक औरत आयी तो फजल रजि. उसकी तरफ देखने लगे और वह फजल रजि. की तरफ देखने लगी। तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फजल रजि. का मुंह दूसरी तरफ फैर दिया, उस औरत ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह का फरीजा हज जो उसके बन्दों पर आयद है,

٧٦٩ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عنهمَا قَالَ: كانَ الْفَضلُ بنُ العبَّاسِ رَدِيفَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَجَاءَتْ آمْرَأَةٌ مِنْ خَثْعَمَ، فَجَعَلَ الْفَضْلُ يَنظُرُ إِلَيْهَا وَتَنْظُرُ إِلَيْهِ، وَجَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَصْرِفُ وَجْهَ الْفَضْلِ إِلَى الشِّقِّ الآخَرِ، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ فَرِيضَةَ ٱللهِ عَلَى عِبَادِهِ فِي الحَجِّ أَدْرَكَتْ أَبِي شَيْخًا كَبِيرًا، لاَ يَثْبُتُ عَلَى الرَّاحِلَةِ، أَفَأَحُجُّ عَنْهُ؟ قَالَ: (نَعَمْ). وَذٰلِكَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ. [رواه البخاري: ١٥١٣]

उसने मेरे बूढ़े बाप को पा लिया है, मगर वह सवारी पर नहीं बैठ सकता तो क्या मैं उसकी तरफ से हज कर सकती हूं? आपने फरमाया "हां"। यह वाक्या हज्जतुल विदा में पेश आया था।

फायदे : इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि किसी कमजोर की तरफ से हज करना जाइज है, बशर्ते करने वाला पहले अपना हज कर चुका हो, इसी तरह किसी के मरने के बाद भी उसकी तरफ से हज ठीक है।

٢ - باب: قول الله تعالى: ﴿يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ لِّيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ﴾

बाब 2 : फरमाने इलाही: "लोग तेरे पास दूर-दराज रास्तों से दुबले ऊंटों पर सवार या पैदल चलकर आयेंगे ताकि अपने फायदे हासिल करें।"

٧٧٠ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَرْكَبُ رَاحِلَتَهُ بِذِي الحُلَيْفَةِ، ثُمَّ يُهِلُّ حَتَّى تَسْتَوِيَ بِهِ قَائِمَةً. [رواه البخاري: ١٥١٤]

770 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आप, जुल हुलैफा में अपनी सवारी पर सवार हो जाते और जब वह आपको लेकर सीधी खड़ी हो जाती तो लब्बेक कहा करते थे।

फायदे : कुछ लोगों का खयाल है कि पैदल हज करना अफजल है, इमाम बुखारी उनका रद्द फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी ऊंटनी पर सवार होकर हज किया है और आपकी पैरवी सबसे अफजल है। (औनुलबारी, 2/507)

٣ - باب: الحَجّ عَلَى الرَّحْلِ

बाब 3 : सवार होकर हज को जाना

771 : अनस रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऊँटनी पर सवार होकर हज किया और उस ऊंटनी पर आपका सामान भी लदा हुआ था।

٧٧١ : عَنْ أَنسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ حَجَّ عَلَى رَحْلٍ، وَكَانَتْ زَامِلَتَهُ. [رواه البخاري: ١٥١٧]

फायदे : मतलब यह है कि सादे पालान पर सवार होना सुन्नत है। इसलिए नरम व नाजुक गद्दे और मखमली तकिये तलाश करना सुन्नत के खिलाफ है। हज के अदा करते वक्त जिस कद्र तकलीफ होगी, उतना ही सवाब में इजाफा होगा।

 (औनुलबारी, 2/508)

बाब 4 : हज मबरूर की फज़ीलत (बड़ाई)

٤ - باب: فَضْلُ الحَجِّ المَبْرُورِ

772 : उम्मे मौमिनिन आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम समझते हैं कि जिहाद सब नेक कामों से बढ़कर है तो क्या हम लोग जिहाद न करें? आपने फरमाया, नहीं बल्कि (तुम्हारे लिए) उम्दा जिहाद हज्जे मबरूर है।

٧٧٢ : عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ المُؤْمِنِينَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، نَرَى الْجِهَادَ أَفْضَلَ الأَعْمَالِ، أَفَلاَ نُجَاهِدُ؟ قَالَ: (لاَ، لَكِنَّ أَفْضَلَ الْجِهَادِ حَجٌّ مَبْرُورٌ). [رواه البخاري: ١٥٢٠]

फायदे : हज्जे मबरूर की तारीफ यह है कि वह खालिस अल्लाह की खुशी हासिल करने के लिए किया जाये, उसमें दिखावे का दखल न हो और इस दौरान किसी गुनाह का भी इरतेकाब न हो।

773: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को

٧٧٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (مَنْ حَجَّ لِلهِ، فَلَمْ يَرْفُثْ وَلَمْ

يَفْسُقْ، رَجَعَ كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ). [رواه البخاري: ١٥٢١]

यह फरमाते हुये सुना जो आदमी अल्लाह के लिए हज करे, फिर न कोई गुनाह का काम और फहस (गाली गलौच) बात करे तो वह ऐसा बेगुनाह वापिस होगा, जैसे उसे आज ही उसकी मां ने जन्म दिया है।

फायदे : इसका मतलब यह है कि जिस तरह बच्चा पैदाईश के वक्त गुनाहों से पाक होता है, हज के बाद भी तमाम गुनाह झड़ जाते हैं लेकिन बन्दों के हक माफ नहीं होंगे, इसी तरह अल्लाह के हक भी माफ नहीं होंगे, जो उसने अपने जिम्मे लिये थे। मसलन नजर और कफ्फारा वगैरह। (औनुलबारी, 2/511)

٥ - باب: مُهَلُّ أَهْلِ الْيَمَنِ

बाब 5 : यमन वालों के लिए अहराम की जगह।

٧٧٤ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ وَقَّتَ لأَهْلِ الْمَدِينَةِ ذَا الْحُلَيْفَةِ، وَلأَهْلِ الشَّأْمِ الْجُحْفَةَ، وَلأَهْلِ نَجْدٍ قَرْنَ الْمَنَازِلِ، وَلأَهْلِ الْيَمَنِ يَلَمْلَمَ، هُنَّ لَهُنَّ، وَلِمَنْ أَتَى عَلَيْهِنَّ مِنْ غَيْرِهِنَّ، مِمَّنْ أَرَادَ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ، وَمَنْ كَانَ دُونَ ذٰلِكَ فَمِنْ حَيْثُ أَنْشَأَ، حَتَّى أَهْلُ مَكَّةَ مِنْ مَكَّةَ. [رواه البخاري: ١٥٣٠]

774 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना वालों के लिए जुलहुलैफा को मिकात बनाया। शाम वालों के लिए अल-जुहफा, अहले नज्द के लिए करने मनाज़िल और यमन वालों के लिए यलमलम को मिकात तय फरमाया, उन मकामात के रहने वालों के लिए भी जो हज और उमराह का इरादा करते हुये वहां से गुजरें और जो लोग इन जगहों के अन्दर की तरफ हैं, वह जहां से चलें, वही से अहराम बांधे, चूनांचे मक्का वाले मक्का ही से अहराम बांधे।

फायदे : मालूम हुआ कि अगर व्यापार या किसी और जरूरी काम के लिए मक्का जाना पड़े तो इन जगहों से अहराम बांधना जरूरी नहीं, यह पाबन्दी हज या उमरह करने वाले के लिए है। अगर ऐसा आदमी अहराम के बगैर मीक़ात से आगे बढ़ जाये तो गुनाहगार होगा।

बाब 6:

٦ - باب

775 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुल हुलैफा के मैदान में अपने ऊंट को बिठाया, फिर वहां नमाज़ पढ़ी और अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. ऐसा ही किया करते थे।

٧٧٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ أَنَاخَ بِالْبَطْحَاءِ بِذِي الْحُلَيْفَةِ فَصَلَّى بِهَا. وَكانَ عَبْدُ ٱللهِ بْنُ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا يَفْعَلُ ذٰلِكَ. [رواه البخاري: ١٥٣٢]

फायदे : इमाम बुखारी ने इस हदीस पर यूं उनवान कायम किया, "जुल हुलैफा में नमाज़ पढ़ना" मुमकिन है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज को जाते और वापिस आते वक़्त इस मैदान में नमाज़ पढ़ते हों। (औनुलबारी, 2/516)

बाब 7 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शजरा के रास्ते से निकलना।

٧ - باب: خُرُوجُ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى طَرِيقِ الشَّجَرَةِ

776 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बतरीक शजराह (मदीना से) रवाना हुये और मुअर्रस रास्ते से (मदीना में) दाखिल हुये और बेशक

٧٧٦ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كانَ يَخْرُجُ مِنْ طَرِيقِ الشَّجَرَةِ، وَيَدْخُلُ مِنْ طَرِيقِ المُعَرَّسِ، وَأَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كانَ إِذَا خَرَجَ إِلَى مَكَّةَ يُصَلِّي فِي مَسْجِدِ الشَّجَرَةِ، وَإِذَا رَجَعَ صَلَّى بِذِي الْحُلَيْفَةِ، بِبَطْنِ الْوَادِي، وَبَاتَ حَتَّى يُصْبِحَ. [رواه البخاري: ١٥٣٣]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब (मदीना से) मक्का के लिए रवाना होते तो मस्जिद शजराह में नमाज़ पढ़ा करते और जब लोटते तो जुल हुलैफा के नशीबी मैदान में नमाज़ पढ़ा करते और रात को सुबह तक वहीं ठहरते।

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि मुसाफिर अगर कहीं बाहर से आये तो खबर दिये बगैर रात के वक़्त अपने घर में दाखिल न हो। अगर रास्ते में रात आ जाये तो वहीं रात गुजारे। (औनुलबारी, 2/517)

٨ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: «العَقِيقُ وَادٍ مُبَارَكٌ»

बाब 8 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान: "वादी अक़ीक़ एक मुबारक वादी (घाटी) है।"

٧٧٧ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ بِوَادِي العَقِيقِ يَقُولُ: (أَتَانِي اللَّيْلَةَ آتٍ مِنْ رَبِّي فَقَالَ: صَلِّ فِي هٰذَا الْوَادِي المُبَارَكِ، وَقُلْ: عُمْرَةً فِي حَجَّةٍ). [رواه البخاري: ١٥٣٤]

777 : उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वादी अकीक में यह फरमाते हुए सुना, आज रात मेरे रब की तरफ से एक आने वाला आया और कहने लगा कि इस बाबरकत वादी में नमाज़ पढ़ें और कहें कि मैंने हज के साथ उमरह की भी नियत की है।

फायदे : वादी अकीक मदीना से चार मील के फासले पर बकीअ के करीब है। (औनुलबारी, 2/518)

٧٧٨ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: أَنَّهُ رُئِيَ وَهُوَ مُعَرِّسٌ بِذِي الحُلَيْفَةِ، بِبَطْنِ الْوَادِي، قِيلَ لَهُ: إِنَّكَ بِبَطْحَاءَ مُبَارَكَةٍ. [رواه البخاري: ١٥٣٥]

778 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि उन्हें आखरी शब में जब आप

जुल हुलैफा में ठहरे हुए थे एक ख्वाब दिखाया गया, जिसमें कहा गया कि आप आज एक बाबरकत मैदान में हैं।

बाब 9 : (महरम के लिए) अपने कपड़ों से तीन बार खुशबू का धोना।

٩ - باب: غسلُ الخلوق ثلاث مرات من الثياب

779 : याला बिन उमय्या रजि. से रिवायत है, उन्होंने उमर रजि. से कहा कि जिस वक्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्य उतर रही हो, आप मुझे दिखायें, रावी का बयान है कि एक रोज नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मकामे जिअराना में थे। सहाबा किराम रजि. का एक गिरोह भी वहां मौजूद था, इतने में एक आदमी ने आपके पास आकर पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप उस आदमी के बारे में क्या हुक्म देते हैं? जिसने उमरह का अहराम बांधा मगर वह खुशबू से आलूदा था (यानी खुशबू लगा रखी थी)। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुछ देर चुप रहे, फिर आप पर वह्य आयी तो उमर रजि. ने मेरी तरफ इशारा किया, जब मैं आया तो उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर पर एक कपड़ा था, जिससे आप पर साया किया गया था,

٧٧٩ : عَنْ يَعْلَى بْنِ أُمَيَّةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ لِعُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَرِنِي النَّبِيَّ ﷺ حِينَ يُوحَى إِلَيْهِ. قَالَ: فَبَيْنَمَا النَّبِيُّ ﷺ بِالْجِعْرَانَةِ، وَمَعَهُ نَفَرٌ مِنْ أَصْحَابِهِ، جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، كَيْفَ تَرَى فِي رَجُلٍ أَحْرَمَ بِعُمْرَةٍ، وَهُوَ مُتَضَمِّخٌ بِطِيبٍ؟ فَسَكَتَ النَّبِيُّ ﷺ سَاعَةً، فَجَاءَهُ الْوَحْيُ، فَأَشَارَ عُمَرُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ إِلَيَّ فَجِئْتُ، وَعَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ ثَوْبٌ قَدْ أُظِلَّ بِهِ، فَأَدْخَلْتُ رَأْسِي، فَإِذَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ مُحْمَرُّ الْوَجْهِ، وَهُوَ يَغِطُّ، ثُمَّ سُرِّيَ عَنْهُ، فَقَالَ: (أَيْنَ الَّذِي سَأَلَ عَنِ الْعُمْرَةِ؟). فَأُتِيَ بِرَجُلٍ، فَقَالَ: (اغْسِلِ الطِّيبَ الَّذِي بِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، وَانْزِعْ عَنْكَ الْجُبَّةَ، وَاصْنَعْ فِي عُمْرَتِكَ كَمَا تَصْنَعُ فِي حَجَّتِكَ).

[رواه البخاري: ١٥٣٦]

मैंने अपना सर उस कपड़े के अन्दर किया तो देखता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहरा सुर्ख है और आप खर्राटे ले रहे हैं। धीरे-धीरे जब आप की यह हालत खत्म हुई तो फरमाया, वह आदमी कहां है, जिसने उमरह के बारे में सवाल किया था? चूनांचे वह आदमी हाजिर किया गया तो आपने फरमाया, जो खुशबू तुझे लगी हुई है, उसे तीन बार धो डालो और अपना जुब्बा (कुर्ता) उतार दो और उमरह में भी उस तरह करो जैसे हज में करते हो।

फायदे : इस हदीस से मालूम होता है कि अहराम के वक़्त खुशबू लगाना ठीक नहीं लेकिन अगली हदीस आइशा रजि. से मालूम होता है कि आपने हज्जतुलविदा के मौके पर अहराम बांधने से पहले खुशबू लगायी थी, जिसके असरात अहराम के बाद भी देखे जा सकते थे। (औनुलबारी, 2/521)

١٠ - باب: الطِّيبُ عِنْدَ الإِحْرَامِ وَمَا يَلْبَسُ إِذَا أَرَادَ أَنْ يُحْرِمَ

बाब 10 : अहराम के वक़्त खुशबू लगाना और मुहरिम जब अहराम बांधने का इरादा करे तो क्या पहने।

٧٨٠ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَتْ: كُنْتُ أُطَيِّبُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ لإِحْرَامِهِ حِينَ يُحْرِمُ، وَلِحِلِّهِ قَبْلَ أَنْ يَطُوفَ بِالْبَيْتِ. [رواه البخاري: ١٥٣٩]

780 : उम्मे मौमिनीन आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अहराम बांधते वक़्त और तवाफे जियारत से पहले अहराम खोलते वक़्त खुशबू लगा देती थी।

फायदे : दसवीं तारीख को जब जमराह उक्बा (बड़ा शैतान) की रमी करली जाये तो अहराम की पाबन्दियां खत्म हो जाती हैं। सिर्फ औरत के पास जाने पर पाबन्दी रहती है, वो कभी तवाफे जियारत के बाद खत्म हो जाती है।

बाब 11 : बालों को जमाकर अहराम बांधना।

١١ - باب: مَنْ أَهَلَّ مُلَبِّدًا

781: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लब्बेक पुकारते हुये सुना जबकि आप अपने बालों को जमाये हुये थे।

٧٨١ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يُهِلُّ مُلَبِّدًا. [رواه البخاري: ١٥٤٠]

फायदे : अहराम बांधते वक़्त इस खयाल से कि बाल परेशान न हो या उनमें ज्यादा धूल मिट्टी न पड़े। बालों को गोंद या किसी और चीज से जमा लेना जाइज है। अरबी जबान में उसे तलबिद कहते हैं। (औनुलबारी, 2/524)

बाब 12: मस्जिदे जुल हुलैफा के पास (अहराम बांधकर) लब्बेक पुकारना।

١٢ - باب: الإِهْلاَلُ عِنْدَ مَسْجِدِ ذِي الحُلَيْفَةِ

782 : इब्ने उमर रजि. से ही रिवायत है, कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिद यानी जुलहुलैफा से तलबिया शुरू किया।

٧٨٢ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ما أَهَلَّ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِلَّا مِنْ عِنْدِ المَسْجِدِ، يَعْنِي: مَسْجِدَ ذِي الحُلَيْفَةِ. [رواه البخاري: ١٥٤١]

फायदे : तलबिया के वक़्त के बारे में अलग अलग राय है, कुछ रिवायतो में है कि जब आप ऊंटनी पर सवार हुये तो तलबिया कहा, कुछ में है कि जब आप बैदा की ऊंचाई पर पहुंचे तो लब्बेक कहा, यह इख्तिलाफ रावियों के अपने मुशाहदा की बिना पर है। अलबत्ता रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर तीनों मकामों पर लब्बेक कहा है। (औनुलबारी, 2/425)

बाब 13 : हज में दूसरे के पीछे सवार होना।

١٣ - باب: الرُّكُوبُ وَالاِرْتِدَافُ فِي الحَجِّ

٧٨٣ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ أُسَامَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ كَانَ رِدْفَ النَّبِيِّ ﷺ، مِنْ عَرَفَةَ إِلَى الْمُزْدَلِفَةِ، ثُمَّ أَرْدَفَ الْفَضْلَ، مِنَ الْمُزْدَلِفَةِ إِلَى مِنًى، فَكِلاَهُمَا قَالَ: لَمْ يَزَلِ النَّبِيُّ ﷺ يُلَبِّي حَتَّى رَمَى جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ. [رواه البخاري: ١٥٤٣، ١٥٤٤]

783 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि अरफात से मुजदलफा तक उसामा रजि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सवार थे। फिर मुजदलफा से मिना तक आपने फजल बिन अब्बास रजि. को अपने पीछे बिठाया। दोनों का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बराबर लब्बेक कहते रहे, यहां तक कि आपने जमरा अक़बा की रमी फरमायी।

फायदे : इस हदीस से सवारी पर किसी दूसरे को अपने पीछे बिठाने का सबूत मिलता है। बशर्ते सवारी का जानवर उसकी ताकत रखता हो। (औनुलबारी, 2/526)

١٤ - بَاب: مَا يَلْبَسُ الْمُحْرِمُ مِنَ الثِّيَابِ وَالأَرْدِيَةِ وَالأُزُرِ

बाब 14 : मुहरिम किस किस्म के कपड़े, चादर और तहबन्द (लूंगी) पहने।

٧٨٤ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: انْطَلَقَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الْمَدِينَةِ، بَعْدَمَا تَرَجَّلَ وَادَّهَنَ، وَلَبِسَ إِزَارَهُ وَرِدَاءَهُ، هُوَ وَأَصْحَابُهُ، فَلَمْ يَنْهَ عَنْ شَيْءٍ مِنَ الأَرْدِيَةِ وَالأُزُرِ تُلْبَسُ، إِلَّا الْمُزَعْفَرَةَ الَّتِي تَرْدَعُ عَلَى الْجِلْدِ، فَأَصْبَحَ بِذِي الْحُلَيْفَةِ، رَكِبَ رَاحِلَتَهُ، حَتَّى اسْتَوَى عَلَى الْبَيْدَاءِ أَهَلَّ هُوَ وَأَصْحَابُهُ، وَقَلَّدَ بَدَنَتَهُ، وَذٰلِكَ لِخَمْسٍ بَقِينَ مِنْ ذِي الْقَعْدَةِ، فَقَدِمَ مَكَّةَ لأَرْبَعِ لَيَالٍ خَلَوْنَ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ، فَطَافَ بِالْبَيْتِ وَسَعَى بَيْنَ

784 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा किराम रजि. कंघी करने, तेल डालने, तहबन्द पहनने और चादर औढ़ने के बाद मदीना से रवाना हुये और आपने किसी तरह की चादर और तहबन्द पहनने को मना नहीं फरमाया, अलबत्ता जाफरान से रंगे हुये कपड़े जिनसे बदन पर जाफरान

الصَّفَا وَالمَرْوَةِ، وَلَمْ يَحِلَّ مِنْ أَجْلِ بُدْنِهِ، لِأَنَّهُ قَلَّدَهَا، ثُمَّ نَزَلَ بِأَعْلَى مَكَّةَ عِنْدَ الحَجُونِ وَهُوَ مُهِلٌّ بِالحَجِّ، وَلَمْ يَقْرَبِ الْكَعْبَةَ بَعْدَ طَوَافِهِ بِهَا حَتَّى رَجَعَ مِنْ عَرَفَةَ، وَأَمَرَ أَصْحَابَهُ أَنْ يَطُوفُوا بِالْبَيْتِ وَبَيْنَ الصَّفَا وَالمَرْوَةِ، ثُمَّ يُقَصِّرُوا مِنْ رُؤُوسِهِمْ، ثُمَّ يَحِلُّوا، وَذٰلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ بَدَنَةٌ قَلَّدَهَا، وَمَنْ كَانَتْ مَعَهُ امْرَأَتُهُ فَهِيَ لَهُ حَلَالٌ، وَالطِّيبُ وَالثِّيَابُ. [رواه البخاري: ١٥٤٥]

लगे, उनसे मना फरमाया, अलगर्ज सुबह के वक़्त आप जुलहुलैफा से अपनी ऊंटनी पर सवार हुये और जब बैदा के मकाम में पहुंचे तो आपने और आपके सहाबा किराम रजि. ने लब्बेक कहा और अपनी कुर्बानियों के गले में कलादे (पट्टे) डाल दिये। यह पच्चीस जुल कआदा का वाक्या है। फिर आप चार जिलहिज्जा को मक्का मुकर्रमा पहुंचे। काबा का तवाफ किया और सफा मरवाह के बीच सई फरमायी चूंकि आप कुरबानी के ऊंट साथ लाये थे और उन्हें कलादा पहना चुके थे। इसलिए अहराम न खोल सके, फिर आप मक्का की ऊंचाई पर हजून के मकाम के पास फरोकश हुये चूंकि आप हज का अहराम बांधे हुए थे, लिहाजा तवाफे कुदुम के बाद फिर काबा के करीब नहीं गये, यहां तक कि अरफात से वापस आये और आपने अपने सहाबा किराम रजि. को हुक्म दिया कि वह काबा का तवाफ और सफा मरवाह की सई करें। फिर अपने बाल कतरवा डालें और अहराम खोल ले। यह हुक्म उन्हीं लोगों को दिया, जिनके पास कुरबानी का जानवर न था, जिसे पहले से कलादा पहना दिया गया हो और जिसके साथ उसकी बीवी हो तो वह उसके लिए हलाल है। इस तरह खुशबू और दीगर लिबास भी अब हलाल है।

बाब 15 : लब्बेक का बयान।

١٥ - باب: التَّلْبِيَةُ

785 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस तरह तलबिया कहते थे "मैं हाजिर हूँ ऐ अल्लाह, मैं हाजिर हूँ मैं फिर हाजिर हूँ। तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाजिर हूँ, तेरे ही लिए तारीफ है, तू ही सारी नैमतों और बादशाहत का मालिक है, तेरा कोई शरीक नहीं।

٧٨٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ تَلْبِيَةَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ: (لَبَّيْكَ ٱللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لاَ شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الحَمْدَ والنِّعْمَةَ لَكَ وَالمُلْكَ، لاَ شَرِيكَ لَكَ). [رواه البخاري: ١٥٤٩]

फायदे : कुछ रिवायत से पता चलता है कि तलबिया के अलफाज में इजाफा करना जाइज है। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तलबिया पर इक्तफा करना बेहतर है। तलबिया के इख्तिताम पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद पढ़ना, जन्नत का सवाल और जहन्नम से पनाह मांगना भी बाज रिवायत में आया है। (औनुलबारी, 2/533)

बाब 16 : सवारी पर सवार होते वक्त तलबिया से पहले तहमीद और तस्बीह और तकबीर कहना।

١٦ - باب: التَّحْمِيدُ وَالتَّسْبِيحُ وَالتَّكْبِيرُ قَبْلَ الإِهْلاَلِ عِنْدَ الرُّكُوبِ عَلَى الدَّابَّةِ

786: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना में जुहर की चार रकअत पढ़ीं और हम लोग आपके साथ थे, फिर जुल हुलैफा में असर की दो रकअत पढ़ कर रात वहीं रहे। सुबह के वक्त वहां से सवार हुये

٧٨٦ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَنَحْنُ مَعَهُ، بِالمَدِينَةِ الظُّهْرَ أَرْبَعًا، وَالعَصْرَ بِذِي الحُلَيْفَةِ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ بَاتَ بِهَا حَتَّى أَصْبَحَ، ثُمَّ رَكِبَ حَتَّى ٱسْتَوَتْ بِهِ عَلَى البَيْدَاءِ، حَمِدَ ٱللهَ وَسَبَّحَ وَكَبَّرَ، ثُمَّ أَهَلَّ بِحَجٍّ وَعُمْرَةٍ، وَأَهَلَّ النَّاسُ بِهِمَا، فَلَمَّا قَدِمْنَا، أَمَرَ النَّاسَ فَحَلُّوا، حَتَّى كَانَ يَوْمُ التَّرْوِيَةِ

أَهَلُّوا بِالحَجِّ. قَالَ: وَنَحَرَ النَّبِيُّ ﷺ بَدَنَاتٍ بِيَدِهِ قِيَامًا، وَذَبَحَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِالمَدِينَةِ كَبْشَيْنِ أَمْلَحَيْنِ. [رواه البخاري: ١٥٥١]

और जब सवारी बैदा में पहुंची तो आपने अलहम्दुलिल्लाह, सुब्हान अल्लाह और अल्लाहु अकबर कहा, फिर आपने हज और उमरह दोनों के लिए लब्बेक कहा और लोगों ने भी हज और उमरह दोनों के लिए लब्बेक कहा, जब हम मक्का पहुंचे तो आपने लोगों को अहराम से बाहर होने का हुक्म दिया तो उन्होंने अहराम खोल डाला। यहां तक कि आठवें जिलहिज्जा का दिन आ गया। फिर उन्होंने हज का अहराम बांधा। अनस रजि. फरमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खड़े होकर कई ऊंट अपने हाथ से जिब्ह फरमाये और मदीना मुनव्वरा में आपने सींगों वाले दो खुबसूरत मेण्डे कुरबान किये।

फायदे : जाहिलीयत के जमाने में यह एक रस्म चली आ रही थी कि हज के महीनों में उमराह करने पर पाबन्दी थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस रस्म को खत्म किया और अपने सहाबा किराम को इन महीनों में उमराह करने का हुक्म दिया। (औनुलबारी, 2/553)

बाब 17 : किब्ला रुख होकर अहराम बांधना।

١٧ - باب: الإِهْلاَلُ مُسْتَقْبِلَ القِبْلَةِ

٧٨٧ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّه كَانَ يُلَبِّي مِنْ ذِي الحُلَيْفَةِ، فَإِذَا بَلَغَ الحَرَمَ أَمْسَكَ حَتَّى إِذَا جَاءَ ذَا طُوًى بَاتَ فِيهِ، فَإِذَا صَلَّى الْغَدَاةَ ٱغْتَسَلَ، وَزَعَمَ أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَعَلَ ذٰلِكَ. [رواه البخاري: ١٥٥٣]

787: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि वह जुल हुलैफा में तलबिया कहते और हरम में पहुंचकर उसे बन्द कर देते और मकामे तुवा के पास पहुंचकर रात गुजारते थे। सुबह की नमाज़ पढ़ने के बाद वहीं नहाते और कहा करते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा ही किया है।

फायदे : हज़रत इब्ने उमर रजि. हरम की जमीन पर पहुंचकर तलबीया बन्द कर देते और तवाफ और सई में लग जाते, फिर जब बैतुल्लाह के तवाफ और सफा मरवाह की सई से फारिग हो जाते तो तलबिया शुरू कर देते, जैसा कि इब्ने खुजैमा की रिवायत में सराहत है। (औनुलबारी, 2/536)

---

١٨ - باب: التَّلْبِيَةُ إِذَا انْحَدَرَ فِي الْوَادِي

बाब 18 : मुहरिम जब वादी में उतरे तो लब्बेक कहे।

٧٨٨ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَمَّا مُوسى كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ، إِذِ ٱنْحَدَرَ فِي الْوَادِي يُلَبِّي). [رواه البخاري: ١٥٥٥]

788: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, गोया मैं इस वक़्त मूसा अलैहि. को देख रहा हूँ कि वह लब्बेक कहते हुये नशीब में उतर रहे हैं।

फायदे: मालूम हुआ कि नशीब और फराज में उतरते चढ़ते वक़्त लब्बेक कहना पैगम्बरों की सुन्नत है। (औनुलबारी, 2/537)

---

١٩ - باب: مَنْ أَهَلَّ فِي زَمَنِ النَّبِيِّ ﷺ كَإِهْلاَلِهِ ﷺ

बाब 19 : जिस आदमी ने नबी के जमाने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बराबर अहराम बांधा।

٧٨٩ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَنِي النَّبِيُّ ﷺ إِلَى قَوْمٍ بِالْيَمَنِ، فَجِئْتُ وَهُوَ بِالْبَطْحَاءِ، فَقَالَ: (بِمَا أَهْلَلْتَ). قُلْتُ: أَهْلَلْتُ كَإِهْلاَلِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: (هَلْ مَعَكَ مِنْ هَدْيٍ؟). قُلْتُ: لاَ، فَأَمَرَنِي فَطُفْتُ بِالْبَيْتِ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، ثُمَّ أَمَرَنِي فَأَحْلَلْتُ، فَأَتَيْتُ ٱمْرَأَةً مِنْ قَوْمِي، فَمَشَطَتْنِي، أَوْ غَسَلَتْ رَأْسِي.

789: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मुझे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरी कौम की तरफ यमन भेजा तो मैं वहां से ऐसे वक़्त वापस आया, जब आप बतहा में थे। आपने मुझ से पूछा तुमने कौनसा अहराम

فَقَدِمَ عُمَرُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، فَقَالَ: إِنْ نَأْخُذْ بِكِتَابِ ٱللهِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُنَا بِالتَّمَامِ، قَالَ ٱللهُ: ﴿وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ﴾. وَإِنْ نَأْخُذْ بِسُنَّةِ النَّبِيِّ ﷺ فَإِنَّهُ لَمْ يَحِلَّ حَتَّى نَحَرَ الْهَدْيَ. [رواه البخاري: ١٥٥٩]

बांधा है? मैंने अर्ज किया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जैसा अहराम बांधा हैं आपने फरमाया, क्या तुम्हारे पास कुरबानी है, मैंने अर्ज किया नहीं। फिर मैंने आपके हुक्म के मुताबिक बैतुल्लाह का तवाफ किया और सफा मरवाह की सई की। फिर आपने अहराम खोल देने का हुक्म दिया तो मैंने अहराम खोल दिया। फिर मैं अपने घर वालों में से एक औरत के पास आया, उसने मेरे बालों में कंघी की या सर धोया। जब उमर रजि. खलीफा हुये तो फरमाने लगे, अगर हम किताबुल्लाह पर अमल करते हैं तो वह हमें हज और उमरह पूरा करने का हुक्म देती है। इरशाद बारी तआला है: हज और उमरह को अल्लाह के लिए पूरा करो।''

और अगर हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल करें तो आपने कुरबानी से पहले अहराम नहीं खोला।

फायदे : हज़रत उमर रजि. की राय थी कि हज के अहराम को उमरह के अहराम में नहीं बदलना चाहिए। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान के मुकाबले में हज़रत उमर रजि. की राय से इत्तेफाक नहीं किया जा सकता। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसलिए अहराम न खोला था कि आपके साथ कुरबानी का जानवर था। बहरहाल हदीस के मुकाबले में किसी की राय को कबूल नहीं करना चाहिए।

(औनुलबारी, 2/539)

٢٠ - باب: قَوْلُ الله تَعالَى: ﴿الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَعْلُومَاتٌ﴾...

बाब 20 : फरमाने इलाही : ''हज के चन्द मुअय्यन महीने हैं''

٧٩٠ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا حَدِيثُهَا فِي الحَجِّ قَدْ تَقَدَّمَ، قَالَتْ فِي هٰذِهِ الرِّوَايَةِ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي أَشْهُرِ الْحَجِّ، وَلَيَالِي الحَجِّ، وَحُرُمِ الْحَجِّ، فَنَزَلْنَا بِسَرِفَ، قَالَتْ: فَخَرَجَ إِلَى أَصْحَابِهِ فَقَالَ: (مَنْ لَمْ يَكُنْ مِنْكُمْ مَعَهُ هَدْيٌ، فَأَحَبَّ أَنْ يَجْعَلَهَا عُمْرَةً فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ كَانَ مَعَهُ الْهَدْيُ فَلا). قَالَتْ: فَالآخِذُ بِهَا وَالتَّارِكُ لَهَا مِنْ أَصْحَابِهِ، قَالَتْ: فَأَمَّا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَرِجَالٌ مِنْ أَصْحَابِهِ، فَكَانُوا أَهْلَ قُوَّةٍ، وَكَانَ مَعَهُمُ الْهَدْيُ، فَلَمْ يَقْدِرُوا عَلَى الْعُمْرَةِ. وَذَكَرَ بَاقِيَ الحَدِيثِ. [رواه البخاري: ١٥٦٠]

790 : आइशा रजि. की हज के बारे में हदीस (780) पहले गुजर चुकी है, इस रिवायत में इतना इजाफा है कि आपने फरमाया कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हज के महीनों हज की रातों और हज के अहराम में निकले। फिर हमने मकामे सरफ में पड़ाव किया। आइशा रजि. फरमाती हैं कि फिर आप अपने सहाबा किराम रजि. के पास तशरीफ लाये और फरमाया, तुममें से जिसके पास कुरबानी का जानवर न हो और वह इस अहराम से उमरह करना चाहे तो मैं चाहता हूँ कि वह ऐसा करे। मगर जिसके साथ कुरबानी हो वह ऐसा न करे। आइशा रजि. फरमाती है कि आपके असहाब में से कुछ ने इस हुक्म से फायदा उठाया और कुछ ने न उठाया। आइशा रजि. फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके कुछ सहाबा किराम साहिबे हैसियत थे, जिनके पास कुरबानी का जानवर था, वह उमरह नहीं कर सकते थे। रावी ने उसके बाद पूरी हदीस जिक्र की है।

फायदे : हज के महीने यह हैं, शव्वाल, जिलकअदा और जिलहिज्जा के शुरुआती दस दिन, इससे पहले हज का अहराम बांधना मना है।

٢١ - باب: التَّمَتُّعُ وَالإِقْرَانُ وَالإِفْرَادُ بِالحَجِّ وَفَسْخِ الحَجِّ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ هَدْيٌ

बाब 21 : हज्जे तमत्तुऊ, किरान और इफराद और जिसके पास कुरबानी न हो, उसके लिए हज को फिस्क करके उमरह बना देने का बयान।

٧٩١ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا فِي رواية قَالَتْ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَلاَ نُرَى إِلاَّ أَنَّهُ الحَجُّ فَلَمَّا قَدِمْنَا تَطَوَّفْنَا بِالْبَيْتِ، فَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ مَنْ لَمْ يَكُنْ سَاقَ الْهَدْيَ أَنْ يَحِلَّ، فَحَلَّ مَنْ لَمْ يَكُنْ سَاقَ الْهَدْيَ، وَنِسَاؤُهُ لَمْ يَسُقْنَ فَأَحْلَلْنَ، قَالَتْ صَفِيَّةُ: ما أُرَانِي إِلَّا حابِسَتَهُمْ، قَالَ: (عَقْرَى حلْقَى، أَوَ مَا طُفْتِ يَوْمَ النَّحْرِ؟). قَالَتْ: قُلْتُ: بَلَى، قَالَ: (لاَ بَأْسَ انْفِرِي) [رواه البخاري: ١٥٦١]

791 : आइशा रजि. से एक रिवायत में है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ (मदीना से) निकले तो सिर्फ हज करने का इरादा था, लेकिन जब हमने मक्का पहुँचकर काबा का तवाफ कर लिया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म फरमाया, जो आदमी कुरबानी का जानवर साथ लेकर न आया हो, वह अहराम खोल दे। चूनांचे जो लोग कुरबानी साथ न लाये थे, वह अहराम से बाहर हो गये। चूंकि आपकी बीवियां भी कुरबानी का जानवर साथ न लायी थी, तो उन्होंने भी अहराम खोल दिया। सफिय्या रजि. ने कहा, मेरा खयाल है कि मेरी वजह से लोगों को रूक जाना पड़ेगा। आपने फरमाया, अकरा हलका (बांझ गंजी) क्या तूने कुरबानी के दिन तवाफ नहीं किया था, सफिय्या कहती है मैंने कहा, हां! किया था, आपने फरमाया, फिर कुछ हर्ज नहीं, रवाना हो जाओ।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन सहाबा किराम को जो कुरबानी साथ नहीं लाए थे, उमरह करके अहराम खोल देने का हुक्म दिया तो उससे हज्जे तमत्तुऊ और हज फिस्क करके उमरह कर देने का सबूत साबित हुआ।

(औनुलबारी

٧٩٢ : وَعَنْهَا - في رواية أخرى - قَالَتْ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ عامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ، فَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِعُمْرَةٍ، وَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِحَجَّةٍ وَعُمْرَةٍ، وَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِالحَجِّ، وَأَهَلَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالحَجِّ، فَأَمَّا مَنْ أَهَلَّ بِالحَجِّ، أَوْ جَمَعَ الحَجَّ وَالْعُمْرَةَ، لَمْ يَحِلُّوا حَتَّى كانَ يَوْمُ النَّحْرِ. [رواه البخاري: ١٥٦٢]

792 : आइशा रजि. ही से एक दूसरी रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम हज्जतुल वदाअ के साल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जब रवाना हुये तो हम में से कुछ ने सिर्फ उमराह का अहराम बांधा था और कुछ लोगों ने हज और उमरह दोनों का और कुछ ने सिर्फ हज का। अलबत्ता रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज का अहराम बांधा था तो जिसने सिर्फ हज का या हज और उमरह दोनों का अहराम बांधा था, उसने दस तारीख से पहले अहराम नहीं खोला।

फायदे : इस रिवायत से हज की तीनों अकसाम (इफराद, तमत्तुऊ, और किरान) का सबूत मिलता है। (औनुलबारी, 2/543)

٧٩٣ : عَنْ عُثْمانَ رَضِيَ الله عَنْهُ أَنَّه نَهى عَنِ المُتْعَةِ، وَأَنْ يُجْمَعَ بَيْنَهُما، فَلَمَّا رَأى عَلِيٌّ أَهَلَّ بِهِما: لَبَّيْكَ بِعُمْرَةٍ وَحَجَّةٍ، قَالَ: ما كُنْتُ لأَدَعَ سُنَّةَ النَّبِيِّ ﷺ لِقَوْلِ أَحَدٍ. [رواه البخاري: ١٥٦٣]

793: उसमान रजि. से रिवायत है कि उन्होंने (अपनी खिलाफत में) हज्जे तमत्तुऊ और किरान (हज और उमरह इक्ट्ठा करने) से मना किया। अली रजि. ने जब यह देखा तो हज और उमरह दोनों का एक साथ अहराम बांधा और कहा, "लब्बेक बिल उमरह व हज" फिर फरमाया मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत को किसी के कहने से नहीं छोडूंगा।

फायदे : हज़रत उसमान रजि. का हज तमत्तुऊ और हज किरान से मना करना अपने इजतिहाद की वजह से था। इसलिए हज़रत अली रजि. ने इस पर अमल नहीं किया। बल्कि फरमाया कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान को किसी के कौल से छोड़ा नहीं जा सकता, निसाई की एक रिवायत से मालूम होता है कि हज़रत उस्मान ने इससे रूजू कर लिया था।

(औनुलबारी, 2/544)

٧٩٤ : عَنِ ابنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كانُوا يَرَوْنَ أَنَّ الْعُمْرَةَ فِي أَشْهُرِ الحَجِّ مِنْ أَفْجَرِ الْفُجُورِ فِي الأَرْضِ، وَيَجْعَلُونَ الْمُحَرَّمَ صَفَرًا، وَيَقُولُونَ: إِذَا بَرَأَ ٱلدَّبَرْ، وَعَفَا الأَثَرْ، وَٱنْسَلَخَ صَفَرْ، حَلَّتِ الْعُمْرَةُ لِمَنِ ٱعْتَمَرْ. قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَصْحَابُهُ صَبِيحَةَ رَابِعَةٍ مُهِلِّينَ بِٱلحَجِّ، فَأَمَرَهُمْ أَنْ يَجْعَلُوهَا عُمْرَةً، فَتَعَاظَمَ ذٰلِكَ عِنْدَهُمْ، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَيُّ ٱلحِلِّ؟ قَالَ: (حِلٌّ كُلُّه). [رواه البخاري: ١٥٦٤]

794 : अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, लोग समझते थे कि हज के जमाने में उमरह करना बहुत बड़ा गुनाह है और वह (अपनी तरफ से) माहे मोहरम को सफर कर लेते और कहते कि जब ऊंट की पीठ का जख्म अच्छा होकर उसका निशान मिट जाये और सफर गुजर जाये, उस वक़्त उमरह हलाल है। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा किराम जिलहिज्जा की चौथी तारीख की सुबह को हज का अहराम बांधे हुये मक्का पहुंचे और आपने सहाबा किराम को हुक्म दिया कि वह उस अहराम को खत्म करके उसकी बजाये उमरह का अहराम बांधे तो यह बात उन लोगों को भारी गुजरी और कहने लगे ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! उमरह करके हमारे लिए क्या चीज हलाल होगी। आपने फरमाया कि सब चीजें हलाल हैं।

फायदे : कई हदीसों से साबित होता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज किरान की नियत से अहराम बांधे हुये थे, लेकिन मक्का पहुंचकर आपने इस ख्वाहिश का इजहार किया कि

अगर मैं कुरबानी साथ न लाया होता तो इस अहराम को उमरे से बदल लेता और हज तमत्तुऊ करता और इससे मालूम होता है कि हज तमत्तुऊ बेहतर है। (औनुलबारी, 2/547)

٧٩٥ : عَنْ حَفْصَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ، أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، مَا شَأْنُ النَّاسِ حَلُّوا بِعُمْرَةٍ، وَلَمْ تَحْلِلْ أَنْتَ مِنْ عُمْرَتِكَ؟ قَالَ: (إِنِّي لَبَّدْتُ رَأْسِي، وَقَلَّدْتُ هَدْيِي، فَلاَ أَحِلُّ حَتَّى أَنْحَرَ). [رواه البخاري: ١٥٦٦]

795 : उम्मे मौमिनिन हफ्सा रजि. से रिवायत है, उन्होंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! लोगों को क्या हुआ कि उन्होंने उमरह करके अहराम खोल दिया है और आपने उमरह करके अहराम नहीं खोला। आपने फरमाया कि मैंने अपने बाल जमा लिये थे और कुरबानी के गले में कलादा पहना दिया था, इसलिए जब तक कुरबानी न करूं अहराम नहीं खोल सकता।

फायदे : इससे भी यही मालूम होता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज किरान की नियत से अहराम बांधे हुये थे। (औनुलबारी, 2/548)

٧٩٦ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَأَلَهُ رَجُلٌ عَنِ التَّمَتُّعِ وَقَالَ: نَهَانِي نَاسٌ عَنْهُ، فَأَمَرَهُ بِهِ، قَالَ الرَّجُلُ: فَرَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ كَأَنَّ رَجُلًا يَقُولُ لِي: حَجٌّ مَبْرُورٌ، وَعُمْرَةٌ مُتَقَبَّلَةٌ، فَأَخْبَرْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ، فَقَالَ: سُنَّةُ النَّبِيِّ ﷺ. [رواه البخاري: ١٥٦٧]

796: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि उनसे एक आदमी ने हज तमत्तुऊ के बारे में पूछा और कहा कि लोगों ने मुझे इससे मना किया है। उन्होंने तमततुऊ करने का हुक्म दिया, वह आदमी कहता है कि मैंने ख्वाब में देखा, जैसे कोई आदमी मुझ से कह रहा है, तेरा हज मबरूद और तेरा उमराह

मकबूल हुआ। वह आदमी कहता है कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रजि. से इस ख्वाब का जिक्र किया तो उन्होंने फरमाया, यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है।

٧٩٧ : عَنْ جابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ حَجَّ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ سَاقَ الْبُدْنَ مَعَهُ، وَقَدْ أَهَلُّوا بِالْحَجِّ مُفْرَدًا، فَقَالَ لَهُمْ: (أَحِلُّوا مِنْ إِحْرَامِكُمْ، بِطَوَافِ الْبَيْتِ وَبَيْنَ الصَّفَا وَالمَرْوَةِ، وَقَصِّرُوا، ثُمَّ أَقِيمُوا حَلاَلاً، حَتَّى إِذَا كَانَ يَوْمُ التَّرْوِيَةِ فَأَهِلُّوا بِالْحَجِّ، وَٱجْعَلُوا الَّتِي قَدِمْتُمْ بِهَا مُتْعَةً). فَقَالُوا: كَيْفَ نَجْعَلُهَا مُتْعَةً، وَقَدْ سَمَّيْنَا الْحَجَّ؟ فَقَالَ: (ٱفْعَلُوا ما أَمَرْتُكُمْ، فَلَوْلاَ أَنِّي سُقْتُ الْهَدْيَ لَفَعَلْتُ مِثْلَ الَّذِي أَمَرْتُكُمْ، وَلٰكِنْ لاَ يَحِلُّ مِنِّي حَرَامٌ حَتَّى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ). فَفَعَلُوا. [رواه البخاري: ١٥٦٨]

797 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हज किया। जबकि आप उस वक़्त कुरबानी के जानवर साथ लाये थे और तमाम सहाबा किराम ने हज्जे मुफरद का अहराम बांधा था। आपने उनसे फरमाया कि तुम लोग काबा का तवाफ और सफा मरवाह की सई करके अहराम खोल दो और बाल कतरवा दो, फिर इसी तरह अहराम के बगैर ठहरे रहो, जब आठवीं तारीख हो तो मक्का से हज का अहराम बांध लो और जिस अहराम में तुम आये थे, उसको तमत्तुऊ कर दो। सहाबा किराम रजि. ने अर्ज किया हम उसे किस तरह तमत्तुऊ कर दें। क्योंकि हमने तो अहराम बांधते वक़्त सिर्फ हज का नाम लिया था, आपने फरमाया जो कुछ मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ, उसे बजा लाओ। अगर मैं कुरबानी

का जानवर न लाया होता तो मैं भी ऐसा ही करता, जैसा तुम्हें हुक्म देता हूँ। लेकिन मैं क्या करूं जब तक कुरबानी अपने ठिकाने को न पहुंच जाये, कोई चीज मुझ पर हलाल नहीं हो सकती (जो अहराम में हराम थी)। चूनांचे सहाबा किराम रजि. ने ऐसा ही किया।

फायदे : कुछ लोगों का खयाल था कि हज तमत्तुऊ में सबाब कम मिलता है। हज़रत जाबिर रजि. की इस रिवायत से उनका रद्द होता है, क्योंकि हज तमत्तुऊ तमाम अकसामे हज से अफजल है और इसमें सवाब भी ज्यादा है।

बाब 22 : हज्जे तमत्तुऊ का बयान।

٢٢ - باب: التَّمَتُّعُ

798 : इमरान बिन हुसैन रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में तमत्तुऊ किया है और खुद कुरआन में भी इसका हुक्म नाजिल हुआ है। मगर एक आदमी ने अपनी राय से जो चाहा, वो कह दिया।

٧٩٨ : عَنْ عِمْرَانَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: تَمَتَّعْنَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَنَزَلَ الْقُرْآنُ، قَالَ رَجُلٌ بِرَأْيِهِ مَا شَاءَ. [رواه البخاري: ١٥٧١]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि सहाबा किराम अहकाम में इजतेहाद करते थे, लेकिन नस सरीह के मुकाबले में इस इजतेहाद की कोई हैसियत नहीं। (औनुलबारी, 2/553)

बाब 23 : मक्का मुकर्रमा में किधर से दाखिल हुआ जाये?

٢٣ - باب: مِنْ أَيْنَ يَدْخُلُ مَكَّةَ

799 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बुलन्द घाटी के मकाम

٧٩٩ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ دَخَلَ مَكَّةَ مِنْ كَدَاءٍ، مِنَ الثَّنِيَّةِ الْعُلْيَا الَّتِي

بِالْبَطْحَاءِ، وَخَرَجَ مِنَ الثَّنِيَّةِ السُّفْلَى. [رواه البخاري: ١٥٧٥]

कदआ से जो बतहा में है, मक्का में दाखिल हुये और निचली घाटी की तरफ से निकले थे।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज को जाते हुये मक्का में एक रास्ते से दाखिल होते तो फरागत होने के बाद दूसरे रास्ते से निकलते, जैसा कि ईद के मौके पर रास्ता बदलते थे ताकि दोनों रास्ते गवाही दें। (औनुलबारी, 2/554)

---

٢٤ - باب: فَضْلُ مَكَّةَ وَبُنْيَانِهَا

बाब 24 : मक्का और उसकी इमारतों की फज़ीलत।

٨٠٠ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الجَدْرِ، أَمِنَ الْبَيْتِ هُوَ؟ قَالَ: (نَعَمْ). قُلْتُ: فَمَا لَهُمْ لَمْ يُدْخِلُوهُ فِي الْبَيْتِ؟ قَالَ: (إنَّ قَوْمَكِ قَصَّرَتْ بِهِمُ النَّفَقَةُ). قُلْتُ: فَمَا شَأْنُ بَابِهِ مُرْتَفِعًا؟ قَالَ: (فَعَلَ ذٰلِكِ قَوْمُكِ، لِيُدْخِلُوا مَنْ شَاؤُوا وَيَمْنَعُوا مَنْ شَاؤُوا، وَلَوْلاَ أَنَّ قَوْمَكِ حَدِيثٌ عَهْدُهُمْ بِالْجَاهِلِيَّةِ، فَأَخَافُ أَنْ تُنْكِرَ قُلُوبُهُمْ، أَنْ أُدْخِلَ الجَدْرَ فِي الْبَيْتِ، وَأَنْ أُلْصِقَ بَابَهُ بِالأَرْضِ). [رواه البخاري: ١٥٨٤]

800 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हतीम के बारे में पूछा कि क्या वह भी काबा में है? आपने फरमाया, हां मैंने कहा फिर उन लोगों ने उसे काबा में क्यों न दाखिल किया? आपने फरमाया कि तुम्हारी कौम के पास माल कम था। मैंने अर्ज किया, दरवाजा इतना ऊँचा क्यों है? आपने फरमाया, तुम्हारी कौम ने इसलिए किया कि जिसे चाहें काबा में दाखिल होने दें और जिसे चाहे रोक दें। अगर तुम्हारी कौम का जमाना जाहलियत के करीब न होता और उनके दिलों

पर नागवारी का मुझे डर न होता तो मैं हतीम को काबा के अन्दर शामिल कर देता और उसका दरवाजा जमीन के बराबर बना देता।

फायदे : इससे मालूम हुआ कि बाज औकात लोगों के जज्बात का एहतेराम करना जरूरी होता है। बशर्ते कि किसी फर्ज की अदायगी में कौताही न हो। (औनुलबारी, 2/557)

---

801 : आइशा रजि. से ही एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अगर तुम्हारी कौम का जमाना जाहिलयत अभी अभी ताजा न होता तो मैं काबा को ढा करके जो हिस्सा उससे अलग कर दिया गया है, उसको फिर उसमें शामिल कर देता और दरवाजे को जमीन से मिला देता और उसमें एक शरकी (पूर्वी) और एक गरबी (पश्चिमी) दो दरवाजे बना देता। अलगर्ज मैं उसे इब्राहिम अलैहि. की बुनियादों के मुताबिक बनाता।

٨٠١ : وَفِي رِوايَةٍ عَنْها رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (يَا عائِشَةُ، لَوْلاَ أَنَّ قَوْمَكِ حَدِيثُ عَهْدٍ بِجاهِلِيَّةٍ، لأَمَرْتُ بِالْبَيْتِ فَهُدِمَ، فَأَدْخَلْتُ فِيهِ ما أُخْرِجَ مِنْهُ، وَأَلْزَقْتُهُ بِالأَرْضِ، وَجَعَلْتُ لَهُ بَابَيْنِ بَابًا شَرْقِيًّا وَبَابًا غَرْبِيًّا، فَبَلَغْتُ بِهِ أَساسَ إِبْرَاهِيمَ). [رواه البخاري: ١٥٨٦]

बाब 25 : मक्का के घरो में विरासत का जारी होना और उनकी खरीद और फरोख्त करना, नीज मस्जिदे हराम में लोगों का बराबर हकदार होना।

٢٥ - باب: تَوريث دُور مَكَّةَ وَبَيْعِهَا وَشِرَائِهَا وَأَنَّ النَّاسَ فِي المَسْجِدِ الحَرَامِ سَوَاءٌ

٨٠٢ : عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَيْنَ تَنْزِلُ فِي دَارِكَ بِمَكَّةَ؟ فَقَالَ: (وَهَلْ تَرَكَ عَقِيلٌ مِنْ رِبَاعٍ، أَوْ دُورٍ؟). وَكَانَ عَقِيلٌ وَرِثَ أَبَا طَالِبٍ، هُوَ وَطَالِبٌ، وَلَمْ يَرِثْهُ جَعْفَرٌ وَلَا عَلِيٌّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا شَيْئًا، لِأَنَّهُمَا كَانَا مُسْلِمَيْنِ، وَكَانَ عَقِيلٌ وَطَالِبٌ كَافِرَيْنِ. [رواه البخاري: ١٥٨٨]

802 : उसामा बिन जैद रजि. से रिवायत है कि उन्होंने हज्जतुल विदा में जाते वक़्त अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप मक्का वाले अपने घर में कहां नुजूल फरमायेंगे? आपने फरमाया कि अकील ने हमारे लिए कोई जायदाद या मकान कहां छोड़ा है? अकील और तालिब तो अबू तालिब के वारिस ठहरे। जाफर रजि. उनकी किसी चीज के वारिस हुये न अली रजि. क्योंकि दोनों मुसलमान हो गये थे और उस वक़्त अकील और तालिब काफिर थे।

फायदे : मक्का मुकर्रमा के मकानात में विरासत चलती है, क्योंके उनके बारे में हुकूक मिलकियत साबित है। जनाब अबू तालिब के चार बेटे थे, अकील, तालिब, अली और जाफर। हज़रत अली और जाफर रजि. मुसलमान हो गये, तालिब जंगे बदर में मारा गया, अकील को अपने बाप अबू तालिब की तमाम जायदाद मिल गयी। चूंकि यह जायदाद हाशिम की थी जो अब्दुल मुत्तलिब को मुन्तकिल हुई। उसने अपने तमाम बेटों में तकसीम कर दी। इसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाप अब्दुल्लाह का भी हिस्सा था, लेकिन आपने मक्का की फतह के बाद उन मामलात को कायम रखा ताकि लोगों के बीच नफरत पैदा न हो। (औनुलबारी, 2/561)

---

٢٦ - بَاب: نُزُولُ النَّبِيِّ ﷺ مَكَّةَ

बाब 26 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मक्का में उतरना।

٨٠٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، حِينَ أَرَادَ قُدُومَ مَكَّةَ: (مَنْزِلُنَا غَدًا، إِنْ شَاءَ ٱللهُ، بِخَيْفِ بَنِي كِنَانَةَ، حَيْثُ تَقَاسَمُوا عَلَى الْكُفْرِ). يَعْنِي ذٰلِكَ الْمُحَصَّبَ، وَذٰلِكَ أَنَّ قُرَيْشًا وَكِنَانَةَ، تَحَالَفَتْ عَلَى بَنِي هَاشِمٍ وَبَنِي عَبْدِ المطَّلِبِ، أَوْ بَنِي المُطَّلِبِ: أَنْ لاَ يُنَاكِحُوهُمْ وَلاَ يُبَايِعُوهُمْ، حَتَّى يُسْلِمُوا إِلَيْهِمُ النَّبِيَّ ﷺ. [رواه البخاري: ١٥٩٠]

803 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का आना चाहा तो इरशाद फरमाया, हमारा मकाम इन्शा अल्लाह कल को खैफ बनी किनाना में होगा, जहां मुश्रिकों ने कुफ्र पर अड़े रहने का आपस में मुआहिदा किया था, यानी मुहस्सब में उतरेगें और यह वाक्या यूँ था कि कुरैश और किनाना ने बनी हाशिम और बनी अब्दुल मुत्तलिब के खिलाफ कसम उठाकर वादा किया था कि उनके साथ न मनाकहत (आपसी निकाह) करेंगे और न उनके हाथ कोई चीज बेचेंगे, जब तक वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हमारे हवाले न कर दें।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पड़ाव के लिए उस मकाम का इन्तिखाब अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिए फरमाया कि एक वह भी वक्त था कि आप मजबूर और मकहूर थे। आज अल्लाह ने आपको मक्का की हुकूमत दे दी है।

(औनुलबारी 2/563)

बाब 27 : काबा गिराना।

٢٧ - باب: هَدْمُ الْكَعْبَةِ

٨٠٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يُخَرِّبُ الْكَعْبَةَ ذُو السُّوَيْقَتَيْنِ مِنَ الْحَبَشَةِ). [رواه البخاري: ١٥٩١]

804 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, काबा शरीफ को

छोटी छोटी पिण्डलियों वाला एक हब्शी (कयामत के करीब) गिरा देगा।

फायदे : जब कयामत के करीब यह वाक्या रोनुमा होगा और यह उन आयात के खिलाफ नहीं जिनमें मक्का को अमन का शहर करार दिया गया है, क्योंकि कयामत के वक़्त काबा क्या, हर चीज तबाह और बर्बाद हो जायेगी। (औनुलबारी, 2/565)

٢٨ - باب: قول الله تعالى: ﴿جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ﴾ . . .

बाब 28 : फरमाने इलाही " अल्लाह ने मकाने मुहतरम काबा को लोगों के लिए कयाम का जरीया बनाया और माहे हराम को भी"

٨٠٥ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كانُوا يَصُومُونَ عاشوراء قَبْلَ أَنْ يُفْرَضَ رَمَضَانُ، وَكانَ يَوْمًا تُسْتَرُ فِيهِ الْكَعْبَةُ، فَلَمَّا فَرَضَ اللهُ رَمَضَانَ، قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (مَنْ شَاءَ أَنْ يَصُومَهُ فَلْيَصُمْهُ، وَمَنْ شَاءَ أَنْ يَتْرُكَهُ فَلْيَتْرُكْهُ). [رواه البخاري: ١٥٩٢]

805 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि लोग रमजान के रोजे फर्ज होने से पहले आशूरा का रोजा रखा करते थे और उस रोज काबा को गिलाफ पहनाया जाता था। फिर जब अल्लाह तआला ने रमजान के रोजे फर्ज कर दिये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अब जो आशूरा का रोजा चाहे रखे और जो न रखना चाहे वह न रखे।

फायदे : इस हदीस में बैतुल्लाह की अजमत को बयान किया गया है कि आशूरा के दिन उसे गिलाफ पहनाया जाता था। (औनुलबारी, 2/566)

٨٠٦ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَيُحَجَّنَّ الْبَيْتُ وَلَيُعْتَمَرَنَّ بَعْدَ

806 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि

خُرُوجِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ). [رواه البخاري: ١٥٩٣]

आपने फरमाया कि याजूज माजूज के निकलने के बाद भी खानाकाबा का हज और उमराह होता रहेगा।

फायदे : इमाम बुखारी ने एक दूसरी रिवायत को भी बयान किया है कि कयामत के करीब के वक़्त बैतुल्लाह का हज रूक जाएगा। इन दोनों में टकराव नहीं है, क्योंकि हलाकते याजूज और माजूज के बाद हज होता रहेगा फिर इतना कुफ्र फैलेगा कि हज और उमराह बन्द हो जायेंगे। (औनुलबारी, 2/567)

٢٩ - باب: هَدْمُ الْكَعْبَةِ

बाब 29 : इन्हदामे काबा की पैशीन गोई।

٨٠٧ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (كَأَنِّي بِهِ أَسْوَدَ أَفْحَجَ، يَقْلَعُهَا حَجَرًا حَجَرًا). [رواه البخاري: ١٥٩٥]

807 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, गौया मैं उस काले कलूटे आदमी को देख रहा हूँ जो काबा का एक एक पत्थर उखाड़ फैंकेगा।

फायदे : यह किस्सा हज़रत ईसा अलैहि. के दोबारा आने और वफात पाने के बाद होगा, जबकि कुरआनी तालिमात को सीनों से उठा लिया जाएगा।

٣٠ - باب: مَا ذُكِرَ فِي الْحَجَرِ الأَسْوَدِ

बाब 30 : हजरे असवद (काला पत्थर) के बारे में जो बयान किया गया है?

٨٠٨ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ: أَنَّهُ جَاءَ إِلَى الْحَجَرِ الأَسْوَدِ فَقَبَّلَهُ، فَقَالَ: إِنِّي أَعْلَمُ أَنَّكَ حَجَرٌ، لَا تَضُرُّ وَلَا تَنْفَعُ، وَلَوْلَا أَنِّي رَأَيْتُ

808: उमर रजि. से रिवायत है कि वह तवाफ करते वक़्त हजरे असवद के पास आये और उसे चुम्मा

देकर कहा, बेशक मैं जानता हूँ कि तू एक पत्थर है, किसी को नफा व नुकसान नहीं पहुंचा सकता। अगर मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तुझे बोसा देते हुये न देखा होता तो मैं भी तुझे बोसा न देता।

النَّبِيَّ ﷺ يُقَبِّلُكَ ما قَبَّلْتُكَ. [رواه البخاري: ١٥٩٧]

फायदे : हज़रत उमर रजि. सिर्फ इत्तेबा की नियत से हजरे असवद को बोसा देते थे, इससे मालूम हुआ कि कब्रों की चौखट या उनकी जमीन को चूमना बिदअत और जिहालत का काम है।

बाब 31: जो आदमी (हज या उमराह की हालत में) काबा के अन्दर दाखिल नहीं हुआ।

٣١ - باب: مَنْ لَمْ يَدْخُلِ الكَعبة

809: अब्दुल्लाह बिन अबी औफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमराह किया तो काबा का तवाफ किया और मकामे इब्राहिम के पीछे दो रकअत नमाज़ पढ़ी। आपके साथ एक आदमी था जो आपको लोगों से छिपाये हुये था। फिर एक आदमी ने अब्दुल्लाह बिन औफा रजि. से पूछा क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम काबा के अन्दर तशरीफ ले गये थे। तो उन्होंने नफी में जवाब दिया।

٨٠٩ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ٱعْتَمَرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَطَافَ بِالْبَيْتِ، وَصَلَّى خَلْفَ المَقَامِ رَكْعَتَيْنِ، وَمَعَهُ مَنْ يَسْتُرُهُ مِنَ النَّاسِ، فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: أَدَخَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ الْكَعْبَةَ؟ قَالَ: لاَ. [رواه البخاري: ١٦٠٠]

फायदे : यह उमरतुल कजा का वाक्या है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस वक़्त बैतुल्लाह के अन्दर इसलिए तशरीफ नहीं ले गये कि उस वक़्त मुश्रिकीन की बादशाही थी और बैतुल्लाह में बहुत ज्यादा बूत रखे हुये थे। मक्का जीतने के वक़्त

आपने मक्का को बूतों से पाक किया और अन्दर दाखिल हुये। (औनुलबारी, 2/574)

बाब 32 : जिस आदमी ने काबा के कोनों में "अल्लाहु अकबर" कहा।

٣٢ - باب: مَنْ كَبَّرَ فِي نَوَاحِي الكَعْبَةِ

810 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब हज के लिए तशरीफ लाये तो आपने काबा के अन्दर दाखिल होने से इन्कार कर दिया, क्योंकि अन्दर बूत रखे हुये थे। फिर आपके हुक्म से उन्हें निकाल दिया गया और सहाबा किराम रजि. ने इब्राहिम और इस्माईल की वो तसवीरें भी निकाल दी, जिनके हाथों में पान्से थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह उन लोगों को हलाक करे। इब्राहिम और इस्माईल अलैहिस्सलाम ने कभी पान्सो से कुरा अन्दाजी नहीं की। फिर आपने काबा के अन्दर "अल्लाहु अकबर" कहा, लेकिन नमाज़ नहीं पढ़ी।

٨١٠ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ لَمَّا قَدِمَ، أَبَى أَنْ يَدْخُلَ الْبَيْتَ وَفِيهِ الآلِهَةُ، فَأَمَرَ بِهَا فَأُخْرِجَتْ، فَأَخْرَجُوا صُورَةَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ فِي أَيْدِيهِمَا الأَزْلاَمُ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (قَاتَلَهُمُ ٱللهُ، أَمَا وَٱللهِ قَدْ عَلِمُوا أَنَّهُمَا لَمْ يَسْتَقْسِمَا بِهَا قَطُّ). فَدَخَلَ الْبَيْتَ، فَكَبَّرَ فِي نَوَاحِيهِ، وَلَمْ يُصَلِّ فِيهِ. [رواه البخاري: ١٦٠١]

फायदे : हज़रत इब्ने अब्बास रजि. को नमाज़ पढ़ने का इल्म न था, इसलिए इनकार किया है। वरना सूरते हाल हज़रत बिलाल रजि. के बयान के मुताबिक यह है कि आपने बैतुल्लाह के अन्दर निफ़्ल पढ़ी थी। वाजेह रहे कि हज़रत बिलाल रजि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। (औनुलबारी, 2/576)

बाब 33 : (तवाफ में) रमल की इब्तदा कैसे हुई?

٣٣ - باب: كَيفَ كَانَ بَدْءُ الرَّمَلِ

811 : इब्ने अब्बास रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा किराम जब मक्का तशरीफ लाये तो मुश्रिकीन ने यह कहना शुरू कर दिया कि अब यहां एक गिरोह आने वाला है। जिसको यशरीब (मदीना) के बुखार ने कमजोर कर दिया है। उस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को हुक्म दिया कि तवाफ के पहले तीन चक्करों में रमल करें और दोनों रूक्नों के बीच मामूली चाल से चलें और आपको यह हुक्म देने में कि वह सात चक्करों में अकड़कर चले, लोगों पर आसानी के अलावा कोई अम्र (काम) माने न था।

٨١١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَأَصْحَابُهُ، فَقَالَ المُشْرِكُونَ: إِنَّهُ يَقْدَمُ عَلَيْكُمْ وَقَدْ وَهَنَتْهُمْ حُمَّى يَثْرِبَ، فَأَمَرَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَرْمُلُوا الأَشْوَاطَ الثَّلاثَةَ، وَأَنْ يَمْشُوا ما بَيْنَ الرُّكْنَيْنِ، وَلَمْ يَمْنَعْهُ أَنْ يَأْمُرَهُمْ أَنْ يَرْمُلُوا الأَشْوَاطَ كُلَّهَا إِلَّا الإِبْقَاءُ عَلَيْهِمْ.
[رواه البخاري: ١٦٠٢]

फायदे : हालांकि अकड़कर चलना घमण्ड की निशानी है, लेकिन उस वक़्त काफिरों पर रोब डालना मकसद था। इसलिए अल्लाह को यह काम इतना पसन्द आया कि उसे हमेशा के लिए सुन्नत करार दे दिया।

बाब 34 : जब कोई मक्का आये तो पहले तवाफ में सबसे पहले हजरे असवद को चूमे और तीन चक्करों में रमल करे (अकड़कर चले)

٣٤ - باب: اسْتِلَامُ الحَجَرِ الأَسْوَدِ حِينَ يَقْدَمُ مَكَّةَ أَوَّلَ مَا يَطُوفُ وَيَرْمُلُ ثَلَاثًا

812 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है,

٨١٢ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ

حِينَ يَقْدَمُ مَكَّةَ، إِذَا ٱسْتَلَمَ الرُّكْنَ الأَسْوَدَ، أَوَّلَ ما يَطُوفُ: يَخُبُّ ثَلاثَةَ أَطْوافٍ مِنَ السَّبْعِ. [رواه البخاري: ١٦٠٣]

उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि जब आप मक्का तशरीफ लाये तो तवाफ शुरू करते वक्त पहले हजरे असवद को बोसा देते और सात चक्करों में से पहले तीन में जरा अकड़कर चलते।

फायदे : रमल सिर्फ मर्दों के लिए है, वह भी जरूरी नहीं। अगर रह जाये तो उसकी कजा लाजिम नहीं है। (औनुलबारी, 2/579)

बाब 35 : हज और उमरह में रमल करना।

٣٥ - باب: الرَّمَلُ في الحَجِّ وَالعُمْرَةِ

٨١٣ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: فَمَا لَنَا وَالرَّمَلَ، إِنَّما كُنَّا رَاءَيْنَا بِهِ المُشْرِكِينَ، وَقَدْ أَهْلَكَهُمُ ٱللهُ، ثُمَّ قَالَ: شَيْءٌ صَنَعَهُ النَّبِيُّ ﷺ، فَلاَ نُحِبُّ أَنْ نَتْرُكَهُ. [رواه البخاري: ١٦٠٥]

813: उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अब हमें रमल की क्या जरूरत है? यह तो हमने मुश्रिकीन को अपनी ताकत दिखाने के लिए किया था और अब अल्लाह ने उन्हें हलाक कर दिया है। फिर कहने लगे कि जो काम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किया है, हमें उसे छोड़ना नहीं चाहिए।

फायदे : इससे मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तेबा हर चीज से आगे है, चाहे उसकी इल्लत (सबब) हमारे दिमाग में आये या न आये। (औनुलबारी, 2/580)

٨١٤ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ما تَرَكْتُ ٱسْتِلاَمَ هَذَيْنِ الرُّكْنَيْنِ، في شِدَّةٍ وَلاَ رَخَاءٍ، مُنْذُ

814 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब से मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَسْتَلِمُهُمَا. [رواه البخاري: ١٦٠٦]

वसल्लम को इन दो रूक्नों को चूमते देखा है, उस वक़्त से मैंने उनके बोसा को तर्क नहीं किया, चाहे दिक्कत हो या सहूलियत।

फायदे : हजरे असवद का बोसा लेना चाहिए, अगर यह न हो सके तो हाथ या छड़ी लगाकर उसे चूमना चाहिए। अगर ऐसा भी मुमकिन न हो तो उसकी तरफ इशारा करके तवाफ शुरू कर दे। इशारा के वक़्त हाथ को चूमना सही नहीं।

٣٦ - باب: اسْتِلاَمُ الرُّكْنِ بِالْمِحْجَنِ

बाब 36 : छड़ी से हजरे असवद को चूमना।

٨١٥ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: طَافَ النَّبِيُّ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ عَلَى بَعِيرٍ، يَسْتَلِمُ الرُّكْنَ بِمِحْجَنٍ. [رواه البخاري: ١٦٠٧]

815 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज्जतुलविदा में अपने ऊंट पर सवार होकर तवाफ किया, आप छड़ी से हजरे असवद का इस्तेलाम फरमाते।

फायदे : मुस्लिम की रिवायत में है कि हजरे असवद को छड़ी लगाकर उसे चूमते थे। (औनुलबारी, 2/582)

٣٧ - باب: تَقْبِيلُ الحَجَرِ

बाब 37 : हजरे असवद को बोसा देना।

٨١٦ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَأَلَهُ رَجُلٌ عَنِ ٱسْتِلاَمِ الحَجَرِ، فَقَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَسْتَلِمُهُ وَيُقَبِّلُهُ. فَقَالَ الرَّجُلُ: أَرَأَيْتَ إِنْ زُحِمْتُ، أَرَأَيْتَ إِنْ غُلِبْتُ؟ قَالَ: اجْعَلْ أَرَأَيْتَ بِالْيَمَنِ، رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَسْتَلِمُهُ وَيُقَبِّلُهُ. [رواه البخاري: ١٦١١]

816 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि उनसे एक आदमी ने हजरे असवद को बोसा देने के बारे में पूछा तो उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उसे हाथ लगाते और बोसा देते देखा है। उस आदमी ने

कहा, अच्छा बताइये, अगर भीड़ ज्यादा हो और लोग मुझ पर गालिब आ जायें तो क्या करूं? इब्ने उमर रजि. ने फरमाया, इस किस्म की अगर मगर यमन में रहने दो। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उसे बोसा देते हुये और चूमते हुये देखा है।

फायदे : हज़रत इब्ने उमर रजि. की इत्तेबा-ए-सुन्नत से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कौल और अमल के मुकाबले हिलों और बहानों की कोई हैसियत नहीं है, बल्कि ईमान की निशानी यह है कि हदीस सुनने के फौरन बाद उस पर अमल शुरू कर दिया जाये।

٣٨ - باب: مَنْ طَافَ بِالْبَيْتِ إِذَا قَدِمَ مَكَّةَ قَبْلَ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى بَيْتِهِ

बाब 38 : जिस आदमी ने मक्का आते ही काबा का तवाफ किया, इससे पहले कि अपने ठिकाने पर जाये।

٨١٧ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ أَوَّلَ شَيْءٍ بَدَأَ بِهِ - حِينَ قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ - أَنَّهُ تَوَضَّأَ، ثُمَّ طَافَ، ثُمَّ لَمْ تَكُنْ عُمْرَةً. ثُمَّ حَجَّ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا مِثْلَهُ. [رواه البخاري: ١٦١٤]

817 : आइशा रजि. से रिवायत है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का तशरीफ लाये तो पहला काम यह किया कि वुजू करके तवाफ फरमाया, सिर्फ तवाफ करने से उमरह नहीं हुआ था। आपके बाद अबू बकर रजि. और उमर रजि. ने भी ऐसा ही हज किया।

फायदे : कुछ लोगों का खयाल है कि उमरह करते वक्त सिर्फ बैतुल्लाह का तवाफ करने के बाद मुहरिम हलाल हो जाता है। इमाम बुखारी उनका रद्द करते हैं कि जब तक सफा मरवाह की सई न करे, उमरह पूरा नहीं होगा।

818 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से मरवी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तवाफ की हदीस (812) अभी अभी गुजरी है, इस रिवायत में इतना ज्यादा है कि आप तवाफ के बाद दोगाना (दो रकअत) अदा करते थे, फिर सफा मरवाह के बीच सई करते थे।

٨١٨ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: حديثُ طَوافِ النَّبِيِّ ﷺ تَقَدَّمَ قريبًا، وزادَ في هٰذِهِ الرِّوايَةِ: أَنَّهُ كانَ يَسْجُدُ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ يَطُوفُ بَيْنَ الصَّفَا وَالمَرْوَةِ. [رواه البخاري: ١٦١٦]

बाब 39 : तवाफ के दौरान बातचीत करना।

٣٩ - باب: الكَلاَمُ فِي الطَّوَافِ

819 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम काबा का तवाफ कर रहे थे। इस बीच आपका गुजर एक ऐसे आदमी पर हुआ, जिसने अपना हाथ तसमा या धागे या किसी और चीज के जरीये दूसरे शख्स से बांध रखा था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसको अपने हाथ से काट दिया। फिर फरमाया कि हाथ पकड़कर उसे ले चलो।

٨١٩ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ مَرَّ وَهُوَ يَطُوفُ بِالْكَعْبَةِ بِإِنْسَانٍ، رَبَطَ يَدَهُ إِلَى إِنْسَانٍ، بِسَيْرٍ أَوْ بِخَيْطٍ أَوْ بِشَيْءٍ غَيْرِ ذٰلِكَ، فَقَطَعَهُ النَّبِيُّ ﷺ بِيَدِهِ، ثُمَّ قَالَ: (قُدْهُ بِيَدِهِ). [رواه البخاري: ١٦٢٠]

फायदे : तवाफ अगरचे नमाज़ की तरह है, मगर इसमें बातचीत करना जाइज है। यह बातचीत फिजूल और बेकार न हो, बल्कि किसी दीनी गर्ज के लिए हो। इमाम बुखारी ने इस हदीस से तवाफ के बीच बात करना साबित किया है। (औनुलबारी, 2/586)

बाब 40 : काबा का तवाफ कोई नंगा आदमी न करे और न ही मुश्रिक

٤٠ - باب: لاَ يَطُوفُ بِالبَيْتِ عُرْيَانٌ

وَلاَ يَحُجُّ مُشْرِكٌ

हज को आये।

٨٢٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، بَعَثَهُ - فِي الحَجَّةِ الَّتِي أَمَّرَهُ عَلَيْهَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ قَبْلَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ - يَوْمَ النَّحْرِ بِمِنًى، فِي رَهْطٍ يُؤَذِّنُ فِي النَّاسِ: أَلاَ، لاَ يَحُجُّ بَعْدَ الْعَامِ مُشْرِكٌ، وَلاَ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ عُرْيَانٌ. [رواه البخاري: ١٦٢٢]

820 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि हज्जतुलविदा से पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू बकर रजि. को एक साल अमीरे हज बनाया। उन्होंने मुझे दसवें जिलहिज्जा को चन्द आदमियों के साथ लोगों में यह ऐलान करने को भेजा कि इस साल के बाद न कोई मुश्रिक हज करे और न कोई नंगा आदमी काबा का तवाफ करे।

फायदे : जाहिलीयत के जमाने में एक हिमाकत यह थी कि जिन कपड़ों में गुनाह करते थे, उन्हें तवाफ करने से पहले उतार देते और बैतुल्लाह का तवाफ बिलकुल नंगे करते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इससे मना फरमा दिया, मालूम हुआ कि तवाफ में नमाज़ की तरह बदन ढ़ांपना जरूरी है।

(औनुलबारी, 2/588)

---

٤١ - باب: مَنْ لَمْ يَقْرَبِ الْكَعْبَةَ وَلَمْ يَطُفْ حَتَّى يَخْرُجَ إِلَى عَرَفَةَ وَيَرْجِعَ بَعْدَ الطَّوَافِ الأَوَّلِ

बाब 41: जो आदमी पहला तवाफ करके फिर काबा के करीब न गया और न उसने (दोबारा) तवाफ किया, यहां तक कि अरफात से हो आया।

٨٢١ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ مَكَّةَ، فَطَافَ وَسَعَى بَيْنَ الصَّفَا وَالمَرْوَةِ، وَلَمْ يَقْرَبِ الْكَعْبَةَ بَعْدَ طَوَافِهِ بِهَا حَتَّى رَجَعَ مِنْ عَرَفَةَ. [رواه البخاري: ١٦٢٥]

821 : अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का में तशरीफ लाये। काबा

का तवाफ किया, सफा मरवाह के बीच सई फरमायी, फिर अरफा से वापसी के वक़्त तक आप काबा के करीब नहीं गये।

फायदे : मतलब यह है कि अगर कोई तवाफे कुदूम के बाद अपनी मसरूफियात के पेशे नजर वकूफे अरफात से पहले बैतुल्लाह हाजिरी नहीं देता और न ही निफ़्ल तवाफ करता है तो उस पर कोई कदगन नहीं है और न ही तवाफ पर पाबन्दी है।

(औनुलबारी, 2/589)

बाब 42 : हाजियों को पानी पिलाना।

٤٢ - باب: سِقَايَةُ الحَاجِّ

822 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिना की रातों में मक्का रहने की इजाजत चाही, क्योंकि वह हाजियों को पानी पिलाया करते थे। आपने उन्हें इजाजत दे दी।

٨٢٢ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ٱسْتَأْذَنَ الْعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ: أَنْ يَبِيتَ بِمَكَّةَ، لَيَالِيَ مِنًى، مِنْ أَجْلِ سِقَايَتِهِ، فَأَذِنَ لَهُ. [رواه البخاري: ١٦٣٤]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि हाजी के लिए ग्यारहवीं, बारहवीं और तेरहवीं रात का मिना में गुजारना जरूरी है। अगर कोई जरूरी काम हो तो बाहर रहने की इजाजत है। इसी तरह अगर बारह तारीख को मगरिब से पहले पहले मिना से वापिस आ जाये तो तेरहवी रात को मिना में गुजारना साकित हो जाता है।

(औनुलबारी, 2/590)

823 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबील के पास

٨٢٣ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ جَاءَ إِلَى السِّقَايَةِ فَٱسْتَسْقَى، فَقَالَ الْعَبَّاسُ: يَا

فَضْلُ، اذْهَبْ إِلَى أُمِّكَ، فَأْتِ رَسُولَ اللهِ ﷺ بِشَرَابٍ مِنْ عِنْدِهَا. فَقَالَ: (اسْقِنِي). قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّهُمْ يَجْعَلُونَ أَيْدِيَهُمْ فِيهِ. قَالَ: (اسْقِنِي). فَشَرِبَ مِنْهُ، ثُمَّ أَتَى زَمْزَمَ، وَهُمْ يَسْقُونَ وَيَعْمَلُونَ فِيهَا، فَقَالَ: (اعْمَلُوا، فَإِنَّكُمْ عَلَى عَمَلٍ صَالِحٍ). ثُمَّ قَالَ: (لَوْلَا أَنْ تُغْلَبُوا لَنَزَلْتُ، حَتَّى أَضَعَ الحَبْلَ عَلَى هٰذِهِ). يَعْنِي: عاتِقَهُ، وَأَشَارَ إِلَى عاتِقِهِ. [رواه البخاري: ١٦٣٥]

तशरीफ लाकर पानी मांगा तो अब्बास रजि. ने अपने बेटे फज्ल रजि. से कहा कि अपनी मां के पास जावो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए मशरूब ले आओ। आपने फरमाया कि मुझे यही पानी पिलावो। अब्बास रजि. ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! लोग इसमें हाथ डालते हैं। आपने फरमाया, मुझे इसी में से पिला दो। चूनांचे आपने इसमें से पिया, फिर आबे जमजम के पास आये, वहां लोग पानी पिलाने का काम कर रहे थे। आपने फरमाया, अपने काम में लगे रहो, तुम अच्छा काम कर रहे हो। फिर फरमाया, अगर यह डर न होता कि तुम थक जाओगे तो यकीनन मैं सवारी से उतर कर रस्सी अपने कंधों पर रख लेता और पानी भरता।

फायदे : मालूम हुआ कि जो चीज आम लोगों की नफारसानी के लिए वक्फ हो, इससे मालदार और फकीर दोनों फायदा उठा सकते हैं। (औनुलबारी, 2/593)

---

٨٢٤ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: سَقَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ مِنْ زَمْزَمَ، فَشَرِبَ وَهُوَ قَائِمٌ. وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ أَنَّهُ كَانَ يَوْمَئِذٍ إِلَّا عَلَى بَعِيرٍ. [رواه البخاري: ١٦٣٧]

824 : इब्ने अब्बास रजि. से ही रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जमजम का पानी पिलाया, जो आपने खड़े होकर पिया। एक और रिवायत में है कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस दिन ऊंट पर सवार थे।

फायदे : इस हदीस से खड़े होकर पानी पीने का सबूत मिलता है और जमजम का पानी खड़े होकर पीना मुस्तहब है।

(औनुलबारी, 2/594)

बाब 43 : सफा मरवाह (के बीच सई) का वाजिब (जरूरी) होना।

٤٣ - باب: وُجوبُ الصَّفَا وَالمَرْوَةِ

825 : आइशा रजि. से रिवायत है कि उनके भांजे उरवा बिन जुबैर रजि. ने उससे कहा, फरमाने इलाही, बेशक सफा और मरवाह अल्लाह की निशानियों में से हैं जो आदमी काबा का हज या उमरह करे तो उस पर कोई गुनाह नहीं कि वह सफा मरवाह की सई करे'' के बारे में सवाल किया और कहा कि इससे तो यह मालूम होता है कि अगर सफा मरवाह की सई न करें तो किसी पर कुछ भी गुनाह नहीं, आइशा रजि. ने फरमाया, ऐ मेरे भांजे! तूने गलत बात कही अगर अल्लाह का यह मतलब होता तो आयते करीमा यूँ होती, उनके तवाफ न करने में कोई हर्ज नहीं, दरअसल बात यह है कि आयते

٨٢٥ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، أَنَّها سَأَلَها ابْنُ أُخْتِها عُرْوَةُ ابْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ قَوْلِ ٱللهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿إِنَّ ٱلصَّفَا وَٱلْمَرْوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِ فَمَنْ حَجَّ ٱلْبَيْتَ أَوِ ٱعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا﴾. قَالَ: فَوَٱللهِ ما عَلَى أَحَدٍ جُنَاحٌ أَنْ لاَ يَطَّوَّفَ بِالصَّفَا وَالمَرْوَةِ، قَالَتْ عائِشَةُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: بِئْسَ ما قُلْتَ يَا ٱبْنَ أُخْتِي، إِنَّ هٰذِهِ لَوْ كانَتْ كما أَوَّلْتَها عَلَيْهِ، كانَتْ: لاَ جُناحَ عَلَيْهِ أَنْ لاَ يَتَطَوَّفَ بِهِمَا، وَلٰكِنَّهَا أُنْزِلَتْ في الأَنْصَارِ، كانُوا قَبْلَ أَنْ يُسْلِمُوا، يُهِلُّونَ لِمَنَاةَ الطَّاغِيَةِ، الَّتِي كانُوا يَعْبُدُونَهَا عِنْدَ المُشَلَّلِ، فَكانَ مَنْ أَهَلَّ يَتَحَرَّجُ أَنْ يَطَّوَّفَ بِالصَّفَا وَالمَرْوَةِ، فَلَمَّا أَسْلَمُوا، سَأَلُوا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ عَنْ ذٰلِكَ، قَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّا كُنَّا نَتَحَرَّجُ أَنْ نَطَّوَّفَ بَيْنَ الصَّفَا والمَرْوَةِ، فَأَنْزَلَ

ٱللَّهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ ٱلصَّفَا وَٱلْمَرْوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِ﴾. الآيَةَ.

قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهَا: وَقَدْ سَنَّ رَسُولُ ٱللَّهِ ﷺ الطَّوَافَ بَيْنَهُمَا، فَلَيْسَ لأَحَدٍ أَنْ يَتْرُكَ الطَّوَافَ بَيْنَهُمَا. [رواه البخاري: ١٦٤٣]

करीमा अन्सार के बारे में उतरी, वह इस्लाम लाने से पहले मनात (बूत का नाम है) के लिए अहराम बांधा करते थे। जिसकी मकामे मुशल्ल के पास इबादत करते थे। इसलिए उनमें से जो आदमी अहराम बांधता वह सफा मरवाह के बीच सई करना गुनाह समझता। जब यह लोग मुसलमान हुए तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसके बारे में पूछा और कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम लोग तो सफा मरवाह के बीच सई को बुरा समझते थे। फिर अल्लाह ने यह आयत उतारी कि "सफा और मरवाह दोनों अल्लाह की निशानियां हैं।" आखिर आयत तक। आइशा रजि. ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तो सफा मरवाह की सई को जारी फरमाया, इसलिए अब कोई सई को नहीं छोड़ सकता।

फायदे : सही मुस्लिम में है कि अल्लाह की कसम! उस आदमी का हज पूरा नहीं है जो सफा मरवाह की सई नहीं करता, इससे मालूम हुआ कि सई करना हज का एक रूक्न है। (औनुलबारी, 2/598)

---

٤٤ - باب: مَا جَاءَ فِي السَّعْيِ بَيْنَ الصَّفَا وَالمَرْوَةِ

बाब 44 : सफा मरवाह के बीच सई करने के बारे में क्या आया है?

٨٢٦ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللَّهِ ﷺ إِذَا طَافَ الطَّوَافَ الأَوَّلَ خَبَّ ثَلاَثًا وَمَشَى أَرْبَعًا، وَكَانَ يَسْعَى بَطْنَ المَسِيلِ إِذَا طَافَ بَيْنَ الصَّفَا وَالمَرْوَةِ. [رواه البخاري: ١٦٤٤]

826 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब पहला तवाफ करते तो तीन चक्करों

में दौड़कर चलते और चार चक्करों में आम रफ्तार से चलते और जब सफा मरवाह के बीच सई करते तो वादी के नशीब में दौड़कर चलते।

फायदे : तवाफ की यह हालत सिर्फ तवाफे कुदूम में इख्तियार की जाये, नीज सफा से मरवाह तक एक चक्कर और मरवाह से सफा तक दूसरा चक्कर है। इसी तरह सात चक्कर लगाते जाये। अब पहचान के लिए दौड़ने की जगह में सब्ज (हरी) ट्यूब लाईटें लगी हुई हैं। (औनुलबारी, 2/599)

٤٥ - باب: تَقْضِي الحَائِضُ المَنَاسِكَ كُلَّهَا إِلَّا الطَّوافَ بِالْبَيْتِ

बाब 45 : हायजा, काबा के तवाफ के अलावा हज के दूसरे सारे काम पूरे करे।

٨٢٧ : عَنْ جابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: أَهَلَّ النَّبِيُّ ﷺ هُوَ وَأَصْحَابُهُ بِالحَجِّ، وَلَيْسَ مَعَ أَحَدٍ مِنْهُمْ هَدْيٌ غَيْرَ النَّبِيِّ ﷺ وَطَلْحَةَ وَقَدِمَ عَلِيٌّ مِنَ الْيَمَنِ وَمَعَهُ هَدْيٌ، فَقَالَ: أَهْلَلْتُ بِمَا أَهَلَّ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ، فَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَصْحَابَهُ أَنْ يَجْعَلُوهَا عُمْرَةً، وَيَطُوفُوا، ثُمَّ يُقَصِّرُوا وَيَحِلُّوا إِلَّا مَنْ كَانَ مَعَهُ الْهَدْيُ، فَقَالُوا: نَنْطَلِقُ إِلَى مِنًى وَذَكَرُ أَحَدِنَا يَقْطُرُ مَنِيًّا، فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: (لَوِ ٱسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي ما ٱسْتَدْبَرْتُ ما أَهْدَيْتُ، وَلَوْلا أَنَّ مَعِي الْهَدْيَ لأَحْلَلْتُ). [رواه البخاري: ١٦٥١]

827 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा किराम रजि. ने हज का अहराम बांधा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबू तल्हा रजि. के अलावा किसी के साथ कुरबानी का जानवर नहीं था और अली रजि. यमन से आये थे। उनके साथ भी कुरबानी का जानवर था। अली रजि. ने कहा कि मैंने अहराम बांधते वक्त यह नियत की थी कि जो अहराम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का है वही मेरा है। इस मौके पर नबी सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रजि. को हुक्म दिया कि वह सब इस अहराम को हज के बजाये उमरह का कर दे और तवाफ करके बाल कतरवा लें। फिर कुरबानी साथ लाने वालों के अलावा सब अहराम खोल दें, इस पर सहाबा ने कहा, हम मिना इस हालत में जायें कि हमारे अजाये तनासुल (गुप्तांगों) से मनी टपक रही हो। इस गुफ्तगू की खबर जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुंची तो आपने फरमाया अगर मुझे पहले से मालूम होता जो अब मालूम हुआ है, तो मैं अपने साथ कुरबानी का जानवर न लाता। अगर मेरे साथ कुरबानी का जानवर न होता तो मैं भी अहराम खोल देता।

फायदे : इस हदीस के आखिर में है कि "फिर ऐसा हुआ कि हज़रत आइशा रजि. को हैज आ गया। उन्होंने बैतुल्लाह के तवाफ के अलावा तमाम हज के काम पूरे किये और खास दिनों से फारिग होने के बाद बैतुल्लाह का तवाफ किया, इस तरह बाब से मुनासिबत वाजेह होती है।

बाब 46 : आठवें जिलहिज्जा को हाजी नमाज़ जुहर कहां पढ़े?

٤٦ - باب: أَيْنَ يُصَلِّي الظُّهْرَ يَوْمَ التَّرْوِيَةِ

828: अनस रजि. से रिवायत है, उनसे किसी ने पूछा कि मुझे आप कोई ऐसी बात बतायें जो आपको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की याद हो। यानी आपने आठवें जिलहिज्जा को जुहर और असर की नमाज़ कहां पढ़ी? उन्होंने कहा, मिना में, उसने पूछा कि कूच के

٨٢٨ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَأَلَهُ رَجُلٌ فَقالَ لَهُ أَخْبِرْنِي بِشَيْءٍ عَقَلْتَهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَيْنَ صَلَّى الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ يَوْمَ التَّرْوِيَةِ؟ قَالَ: بِمِنًى، قالَ: فَأَيْنَ صَلَّى الْعَصْرَ يَوْمَ النَّفْرِ؟ قَالَ بِالأَبْطَحِ، ثُمَّ قالَ أَنَسٌ: ٱفْعَلْ كَمَا يَفْعَلُ أُمَرَاؤُكَ. [رواه البخاري ١٦٥٣]

रोज नमाज़ असर कहां पढ़ी थी? उन्होंने कहा महसब में जाकर, फिर अनस रजि. ने कहा कि तेरे लिए अपने अहकाम की पैरवी करना है।

फायदे : बुखारी की दूसरी रिवायत में हज़रत अनस रजि. का जवाब इन अलफाज में मनकूल है "कि देख जहां तेरे हाकिम लोग नमाज़ पढ़ें, वहां तू भी अदा कर।" इससे मालूम हुआ कि किसी मुस्तहब काम को अमल में लाने के लिए हाकिम वक़्त और जमाते मुस्लिमीन की मुखालफत नहीं करना चाहिए।

(औनुलबारी, 2/604)

بَاب ٤٧ - باب: صَوْمُ يَوْمِ عَرَفَةَ

बाब 47 : अरफा के दिन रोजा रखने का बयान।

٨٢٩ : عَنْ أُمِّ الفَضْلِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: شَكَّ النَّاسُ يَوْمَ عَرَفَةَ فِي صَوْمِ النَّبِيِّ ﷺ، فَبَعَثْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِشَرَابٍ فَشَرِبَهُ. [رواه البخاري: ١٦٥٨]

829 : उम्मे फज्ल रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अरफा के दिन लोगों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रोजे में शक था तो मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में एक मशरूब (पीने की चीज) भेजा तो आपने उसे पी लिया।

फायदे : मुस्लिम की रिवायत में है कि अरफा के दिन रोजा रखने से दो साल के गुनाह माफ हो जाते हैं, लेकिन हाजी के लिए बेहतर है कि वह अरफा के दिन रोजा न रखे, ताकि हज के काम अदा करने में कमजोरी पैदा न हो। बाज रिवायतों में हाजी के लिए इस दिन रोजा रखने की नही भी वारिद है। (औनुलबारी, 2/605)

٤٨ - باب: التَّهْجِيرُ بِالرَّوَاحِ يَوْمِ عَرَفَةَ

बाब 48 : अरफा के लिए दिन ठीक दोपहर के वक़्त रवाना होना।

٨٣٠ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ: جَاءَ يَوْمَ عَرَفَةَ، حِينَ زَالَتِ الشَّمْسُ، فَصَاحَ عِنْدَ سُرَادِقِ الحَجَّاجِ، فَخَرَجَ وَعَلَيْهِ مِلْحَفَةٌ مُعَصْفَرَةٌ، فَقَالَ: ما لَكَ يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمٰنِ؟ فَقَالَ: الرَّوَاحَ إِنْ كُنْتَ تُرِيدُ السُّنَّةَ، قَالَ هٰذِهِ السَّاعَةَ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَأَنْظِرْنِي حَتَّى أُفِيضَ عَلَى رَأْسِي ثُمَّ أَخْرُجَ، فَنَزَلَ حَتَّى خَرَجَ الحَجَّاجُ، فَسَارَ، فَقَالَ لَهُ سالِمُ بْنُ عَبْدِاللهِ - وكانَ مع أَبِيهِ - إِنْ كُنْتَ تُرِيدُ السُّنَّةَ فَاقْصُرِ الخُطْبَةَ وَعَجِّلِ الوُقُوفَ، فَجَعَلَ يَنْظُرُ إِلَى عَبْدِ ٱللهِ، فَلَمَّا رَأَى ذٰلِكَ عَبْدُ ٱللهِ قَالَ: صَدَقَ وَكانَ عَبْدُ المَلِكِ قد كَتَبَ إِلَى الحَجَّاجِ: أَنْ لاَ يُخَالِفَ ابْنَ عُمَرَ فِي الحَجِّ.

[رواه البخاري: ١٦٦٠]

830 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि वह अरफा के दिन सूरज ढ़लने के बाद तशरीफ लाये और हाजियों के डेरे के पास पहुंचकर जोर से आवाज दी तो हाजी कसम में रंगी हुई चादर ओढ़े बाहर निकला और कहने लगा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान क्या बात है, उन्होंने कहा कि अगर तुम्हें सुन्नत की पैरवी की चाहत है तो अभी चलना चाहिए। हाजी बोला, बिलकुल इसी वक़्त? उन्होंने कहा, हाँ। हाजी ने कहा, मुझे इतनी मुहलत दे कि मैं अपने सर पर पानी बहा लूं। फिर चलता हूँ। इब्ने उमर रजि. अपनी सवारी से नीचे उतर पड़े, यहां तक कि हाजी फारिग होकर बाहर निकला और रवाना हुआ तो सालिम बिन अब्दुलाह ने जो अपने बाप के साथ थे, उससे कहा, अगर तू सुन्नत की पैरवी चाहता है तो खुतबा मुख्तसर (थोड़ा) पढ़ना और वकूफ में जल्दी करना, यह सुनकर हाजी अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. की तरफ देखने लगा। जब अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. ने देखा तो उससे कहा कि सालिम सच कहता है और अब्दुल मलिक ने हाजी को लिख भेजा था कि हज में इब्ने उमर रजि. की मुखालफत न करना।

फायदे : मालूम हुआ कि अरफा के दिन सूरज ढ़लते ही जुहर और असर को जमा करके पढ़ लेना चाहिए। अगर नमाज़ की तैयारी

करने (मसलन गुस्ल वगैरह) में कुछ देर भी हो जाये तो कुछ हर्ज नहीं। (औनुलबारी,2/608)

बाब 49: अरफा में ठहरने के लिए जल्दी करना।

٤٩ - باب: التَّعْجِيلُ إِلَى المَوقِف

इस उनवान के तहत गुजिश्ता हदीस नम्बर 730 के पेशे नजर किसी और हदीस का इन्द्राज नहीं किया गया।

फायदे : पिछली हदीस में है कि " अगर तू सुन्नत की इत्तेबा करना चाहता है तो खुतबा मुख्तसर पढ़ना और वुकूफ में जल्दी करना।" इन्हीं अलफाज से उनवान साबित होता है। इस उनवान के तहत इमाम बुखारी ने लिखा कि इस बात में भी वही हदीस लिखने का प्रोग्राम था, जिसे इमाम मालिक ने इमाम इब्ने शहाब जुहरी से बयान किया है। लेकिन मैं चाहता हूँ कि इस किताब में वही हदीस लावूं जो बिलाफायदा मुकर्रर न हो।

बाब 50 : अरफा के मैदान में ठहरना।

٥٠ - باب: الوُقُوف بِعَرَفَة

831 : जुबैर बिन मुतईम रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि इस्लाम से पहले एक बार मुसलमान होने से पहले मेरा ऊंट गुम हो गया, मैं अरफा के दिन उसे ढूंढने निकला तो मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अरफात में ठहरे हुये देखा। मैंने दिल में कहा कि अल्लाह की कसम! यह तो कौमे हुम्स से हैं। (जो हुदूदे हरम से बाहर नहीं आते) फिर यहां उनका क्या काम?

٨٣١ : عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِم رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَضْلَلْتُ بَعِيراً لِي، فَذَهَبْتُ أَطْلُبُهُ يَوْمَ عَرَفَةَ، فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَاقِفاً بِعَرَفَةَ، فَقُلْتُ: هٰذَا وَٱللهِ مِنَ الحُمْسِ، فَمَا شَأْنُهُ هَا هُنَا. [رواه البخاري: ١٦٦٤]

फायदे : हुम्स हिमासत से लिया गया है, जिसका मायना सख्ती है। कुरैश को हुम्स कहने की वहज यह थी कि वह अपने दीन में

सख्ती से काम लेते थे। इसी सख्ती की वजह से वह हुदूदे हरम से बाहर नहीं निकलते थे। हज़रत जुबैर बिन मुतईम रजि. को इसलिए ताअज्जुब हुआ कि उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज के दौरान हुदूदे हरम से बाहर अरफात के मैदान में वकूफ करते देखा। (औनुलबारी, 2/609)

बाब 51 : अरफा से लौटते वक़्त किस तरह चलना चाहिए।

٥١ - باب: السَّيْرُ إِذَا دَفَعَ مِنْ عَرَفَةَ

832 : उसामा बिन जैद रजि. से रिवायत है कि उनसे पूछा गया कि हज्जतुल विदा में वापसी के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रफ्तार कैसी थी तो उन्होंने बताया कि अरफात से रवानगी के वक़्त आम रफ्तार से चलते थे और जब मैदान आ जाता तो तेज हो जाते थे। रावी कहता है कि 'नस' उस तेज रफ्तारी को कहते हैं जो आम रफ्तार से ज्यादा होती है।

٨٣٢ : عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سُئِلَ: عَنْ سَيْرِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ، حِينَ دَفَعَ؟ قَالَ: كَانَ يَسِيرُ الْعَنَقَ، فَإِذَا وَجَدَ فَجْوَةً نَصَّ.

قَالَ الرَّاوِي: وَالنَّصُّ فَوْقَ الْعَنَقِ. [رواه البخاري: ١٦٦٦]

फायदे : चूंकि मुजदलफा में आकर मगरिब और इशा की नमाज़ को जमा करके पढ़ना होता है, इसलिए अरफात से लौटते वक़्त जरा जल्दी चलना मसनून (सुन्नत) है। (औनुलबारी, 2/611)

बाब 52 : अरफात से लौटते वक़्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सुकून और इत्मिनान के बारे में हुक्म देना और कोड़े से इशारा फरमाना।

٥٢ - باب: أَمْرُ النَّبِيِّ ﷺ بِالسَّكِينَةِ عِنْدَ الإِفَاضَةِ وَإِشَارَتُهُ إِلَيْهِمْ بِالسَّوْطِ

٨٣٣ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ دَفَعَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ عَرَفَةَ، فَسَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ وَرَاءَهُ زَجْرًا شَدِيدًا، وَضَرْبًا لِلإِبِلِ، فَأَشَارَ بِسَوْطِهِ إِلَيْهِمْ، وَقَالَ: (أَيُّهَا النَّاسُ، عَلَيْكُمْ بِالسَّكِينَةِ، فَإِنَّ الْبِرَّ لَيْسَ بِالإِيضَاعِ). [رواه البخاري: ١٦٧١]

833 : इब्ने अब्बास रजि.से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अरफा के दिन वापस हुये तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने पीछे शौरगुल और ऊंटों को मारने की आवाज सुनी तो आपने अपने कोड़े से उनकी तरफ इशारा किया और हुक्म दिया कि लोगों! सुकून कायम रखो, ऊंटों को दौड़ाने में कोई नेकी नहीं है।

फायदे : मतलब यह है कि जो तेज रफ्तारी अपनी या जानवरों की तकलीफ का सबब हो, वह किसी सूरत में तारीफ के काबिल नहीं। (औनुलबारी,2/612)

٥٣ - باب: مَنْ قَدَّمَ ضَعَفَةَ أَهْلِهِ بِلَيْلٍ، فَيَقِفُونَ بِالْمُزْدَلِفَةِ وَيَدْعُونَ، وَيُقَدِّمُ إِذَا غَابَ الْقَمَرُ

बाब 53 : जिसने कमजोर घर वालों को रात पहले भेज दिया वह मुजदलफा में ठहरें, दुआ करें और चांद डूबते ही उनको आगे (मिना) रवाना कर दिया।

٨٣٤ : عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهَا نَزَلَتْ لَيْلَةَ جَمْعٍ عِنْدَ الْمُزْدَلِفَةِ، فَقَامَتْ تُصَلِّي، فَصَلَّتْ سَاعَةً ثُمَّ قَالَتْ: يَا بُنَيَّ، هَلْ غَابَ الْقَمَرُ؟ قَالَ: لاَ، فَصَلَّتْ سَاعَةً ثُمَّ قَالَتْ: هَلْ غَابَ الْقَمَرُ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَتْ: فَارْتَحِلُوا، فَارْتَحَلْنَا وَمَضَيْنَا، حَتَّى رَمَتِ الْجَمْرَةَ، ثُمَّ رَجَعَتْ فَصَلَّتِ الصُّبْحَ

834 : असमा बिन्ते अबी बकर रजि. से रिवायत है कि वह मुजदलफा में रात के वक्त उतरी और नमाज़ पढ़ने खड़ी हो गयी, फिर एक घड़ी तक नमाज़ पढ़ती रही, पढ़ने के बाद पूछा, ऐ बेटे! क्या चांद डूब गया है। उसने कहा हां, डूब गया। उन्होंने कहा तो फिर कूच

في مَنْزِلِهَا، قَالَ: فَقُلْتُ لَهَا: يَا هَنْتَاهُ، ما أُرَانَا إِلَّا قَدْ غَلَّسْنَا، قَالَتْ: يَا بُنَيَّ، إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَذِنَ لِلظُّعُنِ. [رواه البخاري: ١٦٧٩]

करो, चूनांचे हम रवाना हुये यहां तक कि असमा रजि. ने मिना पहुंचकर रमी की। फिर सुबह की नमाज़ वापस आकर अपने मकाम पर अदा की। रावी का बयान है कि मैंने उनसे कहा कि मेरे ख्याल के मुताबिक हमने जल्दी से काम लिया है और अंधेरे में ही कंकरियां मार दी हैं। असमा रजि. ने जवाब दिया, मेरे बेटे! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औरतों को इसकी इजाज़त दे दी है।

फायदे : दसवीं की रात मुजदलफा में गुजारना जरूरी है। अलबत्ता बच्चों, औरतों और कमजोर लोगों को इजाजत है कि वह थोड़ी देर मुजदलफा ठहर कर मिना रवाना हो जायें।

---

٨٣٥ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: نَزَلْنَا الْمُزْدَلِفَةَ، فَاسْتَأْذَنَتِ النَّبِيَّ ﷺ سَوْدَةُ، أَنْ تَدْفَعَ قَبْلَ حَطْمَةِ النَّاسِ، وَكَانَتْ ٱمْرَأَةً بَطِيئَةً، فَأَذِنَ لَهَا، فَدَفَعَتْ قَبْلَ حَطْمَةِ النَّاسِ، وَأَقَمْنَا حَتَّى أَصْبَحْنَا نَحْنُ، ثُمَّ دَفَعْنَا بِدَفْعِهِ، فَلأَنْ أَكُونَ ٱسْتَأْذَنْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَما ٱسْتَأْذَنَتْ سَوْدَةُ، أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ مَفْرُوحٍ بِهِ. [رواه البخاري: ١٦٨١]

835 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम मुजदलफा में उतरते तो सौदा रजि. ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इज़ाजत मांगी कि लोगों की भीड़ से पहले ही रवाना हो जायें, क्योंकि वह जरा धीरे चलने वाली थी। आपने उनको इजाजत दे दी। चूनांचे वो लोगों की भीड़ से पहले ही निकल खड़ी हुई और हम लोग सुबह तक वहीं ठहरे रहे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ वापस हुये, काश! मैंने भी रसूलुल्लाह से इजाजत ली होती तो अच्छा था, जैसे कि सौदा रजि. ने ली थी।

फायदे : दूसरी रिवायत में है कि काश! मैं (आइशा रजि.) नमाज़े फजर मिना में पढ़ती और लोगों के इजदहाम से पहले रमी जिमार कर लेती। (औनुलबारी, 2/616)

---

٥٤ - باب: مَن يُصَلِّي الْفَجْرَ بِجَمْعٍ

बाब 54 : नमाज़े सुबह मुजदलफा ही में पढ़ना।

٨٣٦ : عَنْ عَبْدِاللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ قَدِمَ جَمْعاً فَصَلَّى الصَّلاَتَيْنِ، كُلَّ صَلاَةٍ وَحْدَهَا بِأَذَانٍ وَإِقَامَةٍ، وَالْعَشَاءُ بَيْنَهُمَا، ثُمَّ صَلَّى الْفَجْرَ حِينَ طَلَعَ الْفَجْرُ، قَائِلٌ يَقُولُ طَلَعَ الْفَجْرُ، وَقَائِلٌ يَقُولُ لَمْ يَطْلُعِ الْفَجْرُ، ثُمَّ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِنَّ هَاتَيْنِ الصَّلاَتَيْنِ حُوِّلَتَا عَن وَقْتِهِمَا، فِي هٰذَا الْمَكَانِ، الْمَغْرِبَ وَالعِشَاءَ، فَلاَ يَقْدَمُ النَّاسُ جَمْعًا حَتَّى يُعْتِمُوا، وَصَلاَةَ الْفَجْرِ هٰذِهِ السَّاعَةَ). ثُمَّ وَقَفَ حَتَّى أَسْفَرَ، ثُمَّ قَالَ: لَوْ أَنَّ أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ أَفَاضَ الآنَ أَصَابَ السُّنَّةَ. فَمَا أَدْرِي: أَقَوْلُهُ كَانَ أَسْرَعَ أَمْ دَفْعُ عُثْمَانَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، فَلَمْ يَزَلْ يُلَبِّي حَتَّى رَمَى جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ يَوْمَ النَّحْرِ. [رواه البخاري: ١٦٨٣]

836 : अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है कि वह जब मुजदलफा आये तो उन्होंने दो नमाजें अदा कीं, हर नमाज़ के लिए अलग अलग अज़ान और अकामत कही और दोनों नमाज़ों के बीच खाना खाया। फिर जब सुबह रोशन हुई तो फजर की नमाज़ पढ़ी उस वक़्त इतना अन्धेरा था कि कोई कहता फजर हो गई और कोई कहता अभी फजर नहीं हुई, फारिग होने के बाद अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यह दोनों नमाजें मगरिब और इशा इस मकाम (मुजदलफा) में अपने वक़्त से हटा दी गई हैं। लोगों को चाहिए कि मुजदलफा में उस वक़्त दाखिल हो जब अन्धेरा हो जाये, फिर फजर की नमाज़ इस वक़्त पढ़े। फिर अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. ठहरे रहे, यहां तक कि रोशनी हो गई। फिर कहने लगे अगर अमीरूल मौमिनीन (हज़रत उस्मान

रजि.) उस वक़्त मिना की तरफ रवाना होते तो सुन्नत के मुताबिक अमल करते। रावी कहता है कि मुझे यह इल्म नहीं कि इब्ने मसऊद रजि. का यह कौल पहले हुआ या उसमान रजि. का कूच पहले हुआ। और इब्ने मसऊद रजि. बराबर तलबिया कहते रहे, यहां तक कि कुरबानी के दिन जमरा अकबा को कंकरीयां मारी।

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि नमाज़ों को जमा करने वाला बीच में खाना वगैरह खा सकता है और कुछ आराम भी कर सकता है। क्योंकि उनके बीच इस कद्र फासला पकड़ के काबिल नहीं है। (औनुलबारी, 2/617)

बाब 55 : मुजदलफा से कब रवाना होना चाहिए।

٥٥ - باب: مَتَى يُدْفَعُ مِنْ جَمْعٍ

837: उमर रजि. से रिवायत है कि उन्होंने फजर की नमाज़ मुजदलफा में पढ़ी, फिर ठहरे रहे और फरमाने लगे कि मुश्रिकीन सूरज निकलने के बाद यहां से कूच करते और सूरज निकलने के इन्तजार में यह कहते, ऐ सबीर! सूरज तुझ पर जाहिर हो, लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी मुखालफत फरमायी, फिर उमर रजि. ने सूरज निकलने से पहले वहां से कूच किया।

٨٣٧ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ صَلَّى بِجَمْعٍ الصُّبْحَ، ثُمَّ وَقَفَ فَقَالَ: إِنَّ الْمُشْرِكِينَ كَانُوا لاَ يُفِيضُونَ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ، وَيَقُولُونَ: أَشْرِقْ ثَبِيرُ، وَأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَالَفَهُمْ، ثُمَّ أَفَاضَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ. [رواه البخاري: ١٦٨٤]

फायदे : सबीर मुजदलफा में एक बहुत बड़ा पहाड़ है जो अरफात को जाते वक़्त दायीं तरफ और मिना जाते वक़्त बायीं तरफ पड़ता है। (औनुलबारी, 2/619)

बाब 56 : कुरबानी के ऊंटों पर सवार होना।

٥٦ - باب: رُكُوبُ الْبُدْنِ

838 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी को देखा कि वह कुरबानी के ऊंट को हांक रहा था, आपने फरमाया, इस पर सवार हो जा। उसने अर्ज किया कि यह तो कुरबानी का ऊंट है। आपने फरमाया इस पर सवार हो जा, दूसरी या तीसरी मर्तबा फरमाया, तुझ पर अफसोस इस पर सवार हो जा।

٨٣٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ رَأَى رَجُلًا يَسُوقُ بَدَنَةً، فَقَالَ: (ٱرْكَبْهَا). فَقَالَ: إِنَّهَا بَدَنَةٌ، فَقَالَ: (ٱرْكَبْهَا). قَالَ: إِنَّهَا بَدَنَةٌ، قَالَ: (ٱرْكَبْهَا وَيْلَكَ). فِي الثَّالِثَةِ أَوْ فِي الثَّانِيَةِ. [رواه البخاري: ١٦٨٩]

फायदे : मालूम हुआ कि कुरबानी के ऊंटों पर सवारी करना जाइज है, चाहे कोई मजबूरी न भी हो। इमाम बुखारी ने इससे यह भी साबित किया है कि वक़्फे आम से खुद फायदा लेना जाइज है। (औनुलबारी, 2/623)

बाब 57 : जो आदमी कुरबानी का जानवर साथ लेकर गया।

٥٧ - باب: مَنْ سَاقَ الْبُدْنَ مَعَهُ

839 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदा के मौके पर हज के साथ उमरह मिलाया था और कुरबानी की थी, हुआ यूँ कि जिल हुलैफा से कुरबानी का जानवर अपने साथ ले गये थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

٨٣٩ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: تَمَتَّعَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الحَجِّ، وَأَهْدَى، فَسَاقَ مَعَهُ الْهَدْيَ مِنْ ذِي الْحُلَيْفَةِ، وَبَدَأَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَأَهَلَّ بِالْعُمْرَةِ، ثُمَّ أَهَلَّ بِالْحَجِّ، فَتَمَتَّعَ النَّاسُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الحَجِّ، فَكَانَ مِنَ النَّاسِ مَنْ أَهْدَى فَسَاقَ الْهَدْيَ، وَمِنْهُمْ مَنْ لَمْ يُهْدِ

فَلَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ مَكَّةَ، قَالَ لِلنَّاسِ: (مَنْ كَانَ مِنْكُمْ أَهْدَى، فَإِنَّهُ لاَ يَحِلُّ لِشَيْءٍ حَرُمَ مِنْهُ، حَتَّى يَقْضِيَ حَجَّهُ، وَمَنْ لَمْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَهْدَى، فَلْيَطُفْ بِالْبَيْتِ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، وَلْيُقَصِّرْ وَلْيَحْلِلْ، ثُمَّ يُهِلَّ بِالْحَجِّ، فَمَنْ لَمْ يَجِدْ هَدْيًا فَلْيَصُمْ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةً إِذَا رَجَعَ إِلَى أَهْلِهِ) [رواه البخاري: ١٦٩١]

वसल्लम ने शुरू में उमरे के अहराम के साथ लब्बेक कहा। बाद अजीं हज का लब्बेक कहा तो लोगों ने भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हज को उमरे के साथ मिलाकर फायदा हासिल किया। उनमें से कुछ लोग कुरबानी के जानवर साथ लाये थे, जबकि कुछ लोगों के साथ कुरबानी के जानवर नहीं थे। चूनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मक्का तशरीफ लाये तो लोगों से इरशाद फरमाया कि जिस आदमी के पास कुरबानी का जानवर है, उसके लिए कोई ऐसी चीज जो अहराम की हालत में हराम थी हलाल न होगी, यहां तक कि अपने हज से फारिग हो जायें और जो आदमी कुरबानी का जानवर साथ नहीं लाया, वो काबा का तवाफ करके सफा मरवाह की सई करे, फिर अपने बाल कतरवा कर अहराम खोल दे। इसके बाद फिर हज का अहराम बांधे और लब्बेक कहे, जिसमें कुरबानी देने की ताकत न हो वह तीन रोजे हज के दिनों में और सात रोजे अपने घर पहुंचकर रखे, यानी कुल दस रोजे रखे।

फायदे : बेहतर है कि अरफा के दिन से पहले पहले तीन रोजे रख ले, क्योंकि उसके बाद खाने पीने के दिन हैं, बाकी सात रोजे अपने घर पहुंचकर रखे। रास्ते में रखने ठीक नहीं हैं।

(औनुलबारी, 2/627)

बाब 58 : जिस आदमी ने जिलहुलैफा पहुंचकर इशआर (कुरबानी की कोहान को जख्म लगाया) और तकलीद यानी उनके गले में पट्टा डाला, फिर अहराम बांधा।

٥٨ - باب: مَنْ أَشْعَرَ وَقَلَّدَ بِذِي الْحُلَيْفَةِ ثُمَّ أَحْرَمَ

840 : मिस्वर बिन मख्रमा और मरवान रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जमाना हुदैदिया में एक हजार से ज्यादा सहाबा के साथ मदीना मुनव्वरा से रवाना हुये, जब जिलहुलैफा पहुंचे तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी कुरबानी के जानवरों को कलादा पहनाया और उनका इशआर किया, फिर उमरह का अहराम बांधा।

٨٤٠ : عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ وَمَرْوَانَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالاَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الْمَدِينَةِ زَمَنَ الْحُدَيْبِيَةِ فِي بِضْعَ عَشْرَةَ مِائَةً مِنْ أَصْحَابِهِ، حَتَّى إِذَا كَانُوا بِذِي الْحُلَيْفَةِ، قَلَّدَ النَّبِيُّ ﷺ الْهَدْيَ وَأَشْعَرَهُ، وَأَحْرَمَ بِالْعُمْرَةِ. [رواه البخاري: ١٦٩٤، ١٦٩٥]

फायदे : कुरबानी के जानवरों को निशानी के तौर पर ऐसा किया जाता था ताकि अरब लोग उनसे छेड़खानी न करें, और इज्जत और एहतेराम की नजर से देखें, जिन हजरात ने ऐसा करने से मना किया है, वह बहुत दूर की कोड़ी लाये हैं। (औनुलबारी, 2/629)

बाब 59 : जिसने अपने हाथ से कलादा पहनाया।

٥٩ - باب: مَنْ قَلَّدَ الْقَلاَئِدَ بِيَدِهِ

841 : आइशा रजि से रिवायत है, उन्हें खबर पहुंची कि इब्ने अब्बास रजि. कहते हैं कि जो काबा में कुरबानी का जानवर भेजे तो उस पर वह

٨٤١ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّهُ بلغها: أَنَّ عَبْدَ ٱللهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: مَنْ أَهْدَى هَدْيًا، حَرُمَ عَلَيْهِ مَا يَحْرُمُ عَلَى الحَاجِّ، حَتَّى يُنْحَرَ هَدْيُهُ. فَقَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: لَيْسَ

كما قال: أَنَا فَتَلْتُ قَلَائِدَ هَدْيِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ بِيَدَيَّ، ثُمَّ قَلَّدَهَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِيَدَيْهِ، ثُمَّ بَعَثَ بِهَا مَعَ أَبِي، فَلَمْ يَحْرُمْ عَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ شَيْءٌ أَحَلَّهُ ٱللهُ لَهُ حَتَّى نُحِرَ الْهَدْيُ. [رواه البخاري: ١٧٠٠]

तमाम चीजें हराम हो जाती हैं, जो हज करने वाले पर होती है। यहां तक कि वह कुरबानी जिब्ह कर दी जाये। आइशा रजि. ने फरमाया कि जो इब्ने अब्बास रजि. कहते हैं, वह सही नहीं है, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदी (कुरबानी) के कलादे खुद अपने हाथ से बनाये, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने हाथों से उन कलादों को पहनाया और मेरे वालिद (बाप) के साथ उन्हें रवाना किया गया, मगर कोई चीज जो अल्लाह ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हलाल फरमायी थी, वह आप पर जानवरों की कुरबानी तक हराम नहीं हुई।

फायदे : हज़रत इब्ने अब्बास रजि. के मुकिफ की बुनियाद महज कयास था, जिसे हज़रत आइशा रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमल से रद्द कर दिया। लोगों ने भी हज़रत आइशा रजि. के मुकिफ से इत्तेफाक किया और हज़रत इब्ने अब्बास रजि. के फतवे को छोड़ दिया। (औनुलबारी, 2/631)

बाब 60 : बकरियों को कलादा पहनाना।

٦٠ - باب: تَقْلِيدُ الْغَنَمِ

٨٤٢ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا فِي رِوَايَةٍ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَهْدَى غَنَمًا، وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهَا: أَنَّهُ ﷺ قَلَّدَ الْغَنَمَ وَأَقَامَ فِي أَهْلِهِ حَلَالًا. [رواه البخاري: ١٧٠١، ١٧٠٢]

842 : आइशा रजि. से ही एक रिवायत है कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ बकरियां कुरबानी के तौर रवाना की और उन्हीं की एक दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बकरियों को कलादा पहनाया और अपने घर में बगैर अहराम के रहे थे।

फायदे : निशानी के तौर पर कुरबानी की बकरियां को हार पहनाना जाइज है, लेकिन उनका इशआर करना बिलाइत्तेफाक ठीक नहीं है, क्योंकि वह इसकी मुतहमिल नहीं हैं। नीज बालों की ज्यादती की वजह से इशआर जाहिर भी नहीं होता। (औनुलबारी, 2/632)

बाब 61 : ऊन से कलादे तैयार करना।

٦١ - باب: القَلائِدُ مِنَ العِهْنِ

843 : आइशा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने कुरबानी की बकरियों के कलादे उस ऊन से बनाये जो मेरे पास मौजूद थी।

٨٤٣ : وَفي رواية عَنْهَا قَالَتْ: فَتَلْتُ قَلاَئِدَهَا مِنْ عِهْنٍ كَانَ عِنْدِي. [رواه البخاري: ١٧٠٥]

फायदे : कुछ लोगों का खयाल है कि कुरबानी के हार वगैरह जमीनी पैदावार कपास वगैरह से बनाए जाए। हज़रत आइशा रजि. ने उनका रद्द किया कि ऊन और रेशम वगैरह से बनाये जा सकते हैं। (औनुलबारी, 2/633)

बाब 62 : कुरबानी की झूलें तक खैरात कर देने का बयान।

٦٢ - باب: الجِلاَلُ لِلْبُدْنِ وَالتَّصَدُّقُ بِهَا

844 : अली रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह हुक्म दिया था कि जो ऊंट कुरबानी के तौर पर जिब्ह किये हैं, उनकी झूलें और खालें सदका कर दो।

٨٤٤ : عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَمَرَنِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ أَنْ أَتَصَدَّقَ بِجِلاَلِ الْبُدْنِ الَّتِي نَحَرْتُ وَبِجُلُودِهَا. [رواه البخاري: ١٧٠٧]

फायदे : इस हदीस में इख़्तिसार है, हकीकत यह है कि हज्जतुलविदा के मौके पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरबानी के तौर पर सौ ऊंट जिब्ह किये। हज़रत अली रजि. को उनका

गोश्त, खालें और झूलें बांटने का हुक्म दिया।

बाब 63 : अपनी बीवियों की तरफ से उनके कहे बगैर गाये जिब्ह करना।

٦٣ - باب: ذَبْحُ الرَّجُلِ البَقَرَ عَنْ نِسَائِهِ مِنْ غَيْرِ أَمْرِهِنَّ

845 : आइशा रजि. की एक रिवायत (791) कि हम जिलकअदा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मदीना से रवाना हुये, पहले गुजर चुकी है। इस तरीक में इतना ज्यादा है कि कुरबानी के दिन हमारे सामने गाय का गोश्त लाया गया तो मैंने पूछा कि यह गोश्त कैसा है? लाने वाले ने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी बीवियों की तरफ से कुरबानी की है।

٨٤٥ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ ٱللهِ صَلَّى ٱللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِخَمْسٍ بَقِينَ مِنْ ذِي الْقَعْدَةِ، تَقَدَّمَ وفي هٰذِهِ الرِّوَايَةِ زِيَادَةٌ: فَدُخِلَ عَلَيْنَا يَوْمَ النَّحْرِ بِلَحْمِ بَقَرٍ، فَقُلْتُ: مَا هٰذَا؟ قَالَ: نَحَرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَنْ أَزْوَاجِهِ. [رواه البخاري: ١٧٠٩]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि अगर कोई आदमी दूसरे की तरफ से उसकी इजाजत या उसके इल्म में लाये बगैर कोई भला काम करता है तो उसे सवाब पहुंचता है। नीज इसमें गाय वगैरह की कुरबानी में शिराकत का सबूत भी मिलता है।

(औनुलबारी, 2/636)

बाब 64 : मिना में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुरबानी की जगह पर कुरबानी करना।

٦٤ - باب: النَّحْرُ فِي مَنْحَرِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِنًى

846: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि वह रसूलुल्लाह

٨٤٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ كَانَ يَنْحَرُ فِي الْمَنْحَرِ. يَعْنِي: مَنْحَرَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ١٧١٠]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कुरबानी की जगह पर कुरबानी करते थे।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नहर का मकाम जमरा अकबा के करीब मस्जिदे खैफ के पास था, फिर भी मिना में हर जगह कुरबानी की जा सकती है।

बाब 65 : ऊंट का पांव बांधकर कुरबानी करना।

٦٥ - باب: نَحْرُ الإِبِلِ مُقَيَّدَةً

847 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि उन्होंने एक आदमी को देखा जो कुरबानी के ऊंट बिठाकर जिब्ह कर रहा था तो उन्होंने फरमाया कि इसे उठा और एक पांव बांधकर खड़ा करके जिब्ह कर, यह पाबन्दी सुन्नते मुहम्मदीया है।

٨٤٧ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ رأى عَلَى رَجُلٍ قَدْ أَنَاخَ بَدَنَتَهُ يَنْحَرُهَا، قَالَ: ٱبْعَثْهَا قِيَامًا مُقَيَّدَةً، سُنَّةُ مُحَمَّدٍ ﷺ. [رواه البخاري: ١٧١٣]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि सुन्नत के खिलाफ काम होता देखकर खामोश नहीं रहना चाहिए बल्कि सुन्नत की वजाहत जरूरी है।

बाब 66 : कुरबानी से कसाब (कसाई) को (बतौरे उजरत) कोई चीज न देना।

٦٦ - باب: لاَ يُعْطِي الجَزَّارَ مِن الهَدْيِ شَيْئًا

848 : अली रजि. से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मुझे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया था कि मैं कुरबानी के ऊंट की निगरानी करूं और कसाब को उनकी कोई चीज बतौरे उजरत न दूं।

٨٤٨ : عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَمَرَنِي النَّبِيُّ ﷺ أَنْ أَقُومَ عَلَى البُدْنِ، وَلاَ أُعْطِيَ عَلَيْهَا شَيْئًا فِي جِزَارَتِهَا. [رواه البخاري: ١٧١٦م]

फायदे : कसाई को मेहनताने के तौर पर खाल वगैरह नहीं देना चाहिए

बल्कि उसे अपनी तरफ से मुआवजा दिया जाये। फिर भी खैरात के तौर पर गोश्त वगैरह देने में कोई हर्ज नहीं है।

(औनुलबारी, 2/638)

बाब 67 : कुरबानी के जानवरों से क्या खायें और क्या खैरात करें।

٦٧ - باب: ما يَأكُلُ مِنَ البُدْنِ وَمَا يَتَصَدَّقُ

849 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम अपनी कुरबानी का गोश्त मिना में तीन दिन से ज्यादा न खाते थे, लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें इजाजत देते हुये फरमाया कि खाओ और जादे राह के तौर पर साथ भी ले जावो। चूनांचे हमने खाया और साथ भी लाये।

٨٤٩ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا لَا نَأْكُلُ مِنْ لُحُومِ بُدْنِنَا فَوْقَ ثَلَاثِ مِنًى، فَرَخَّصَ لَنَا النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: (كُلُوا وَتَزَوَّدُوا). فَأَكَلْنَا وَتَزَوَّدْنَا. [رواه البخاري: ١٧١٩]

फायदे : मुस्लिम की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन दिन से ज्यादा कुरबानी का गोश्त रखने से मना फरमाया था, चूनांचे यह हुक्म मजकूरा हदीस से मनसूख हुआ और कुरबानी का गोश्त जादे राह के तौर पर देर तक रहने की इजाजत मुरह्हमत हुई। (औनुलबारी, 2/639)

बाब 68 : अहराम खोलते वक़्त सर मुण्डवाना और कतरवाना।

٦٨ - باب: الحَلْقُ وَالتَّقْصِيرُ عِنْدَ الإِحْلَالِ

850 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने हज में सर को मुण्डवाया था।

٨٥٠ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: حَلَقَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي حَجَّتِهِ. [رواه البخاري: ١٧٢٦]

फायदे : हदीस से मालूम हुआ कि सर मुण्डवाना कतरवाने से अफजल है, लेकिन औरतों के लिए सर मुण्डवाना जाइज नहीं, वह अपनी चुटिया के थोड़े बाल ले लें।

---

851 : इब्ने उमर रजि. ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : ऐ अल्लाह! सर मुण्डवाने वालों पर मेहरबानी फरमां, सहाबा किराम रजि. ने अर्ज किया: ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! बाल कतरवाने वालों पर भी, आपने फिर यही फरमाया: ऐ अल्लाह! सर मुण्डवाने वालों पर रहमत नाजिल फरमा, सहाबा किराम रजि. ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! बाल कतरवाने वालों पर भी, तब आपने फरमाया कि बाल कतरवाने वालों पर भी रहम फरमां।

٨٥١ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (اللَّهُمَّ ٱرْحَمِ ٱلْمُحَلِّقِينَ). قَالُوا: وَالمُقَصِّرِينَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (اللَّهُمَّ ٱرْحَمِ ٱلْمُحَلِّقِينَ). قَالُوا: وَالْمُقَصِّرِينَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (وَالْمُقَصِّرِينَ). [رواه البخاري: ١٧٢٧]

फायदे : तमाम सर को मुण्डवाना चाहिए, तभी दुआ-ए-नबवी का हकदार होगा, इससे यह भी मालूम हुआ कि मशरू काम करने वाले के लिए खैर और बरकत की दुआ करना मुस्तहब है। (औनुलबारी, 2/642)

---

852 : अबू हुरैरा रजि. से भी ऐसी ही रिवायत है, मगर उसमें लफ्ज अरहम के बजाये अगफिर है, जिसको आपने तीन बार कहा और चौथी बार फरमाया कि बाल कतरवाने वालों की भी बख्शीश फरमां।

٨٥٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ مِثْلُ ذٰلِكَ إِلَّا أَنَّهُ قَالَ: (ٱغْفِرْ) بَدَلَ: (ٱرْحَمْ)، قَالَهَا ثَلَاثًا، قَالَ: (وَلِلْمُقَصِّرِينَ). [رواه البخاري: ١٧٢٨]

फायदे : अगर हज से चन्द दिन पहले उमरह किया जाये और अन्देशा हो कि दसवीं तारीख तक बाल नहीं उग सकेंगे तो ऐसे हालात में उमरह करने वालों के लिए बाल कतरवाना अफजल है ताकि हज के मौके पर बालों को मुण्डवा सके।

853: अमीर मआविया रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाल कैंची से कतरे थे।

٨٥٣ : عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَصَّرْتُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ بِمِشْقَصٍ. [رواه البخاري: ١٧٣٠]

फायदे : यह वाक्या उमरह कजा या उमरह जिराना का है, क्योंकि हज्जतुल विदा में आपने मिना में हलक कराया था।

(औनुलबारी, 2/644)

बाब 69 : कंकरीयाँ मारना।

٦٩ - باب: رَمْيُ الجِمَارِ

854 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि उनसे किसी आदमी ने पूछा कि जमरों को कंकरियां किस वक़्त मारूं? उन्होंने जवाब दिया कि जब तुम्हारा इमाम रमी करे तो उस वक़्त तुम भी रमी करो और उसने दोबारा यही बात पूछी तो उन्होंने फरमाया कि हम इन्तजार करते रहते जब सूरज ढ़ल जाता तो कंकरियां मारते थे।

٨٥٤ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ سَأَلَهُ رَجُلٌ: مَتَى أَرْمِي الجِمَارَ؟ قَالَ: إِذَا رَمَى إِمَامُكَ فَٱرْمِهِ، فَأَعَادَ عَلَيْهِ الْمَسْأَلَةَ، قَالَ: كُنَّا نَتَحَيَّنُ، فَإِذَا زَالَتِ الشَّمْسُ رَمَيْنَا. [رواه البخاري: ١٧٤٦]

फायदे : दसवीं तारीख को कंकरियां मारने का अफजल वक़्त चाश्त है और बाकी वक़्त में सूरज ढ़लने के बाद है।

बाब 70 : वादी के नशीब से कंकरियां मारना।

٧٠ - باب: رَمْيُ الجِمَارِ مِن بَطْنِ الوَادِي

855 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है कि उन्होंने वादी के नशीब से जाकर कंकरियां मारी तो उनसे कहा गया, कुछ लोग तो ऊपर ही से खड़े होकर रमी करते हैं। उन्होंने फरमाया, कसम अल्लाह की जिस के अलावा कोई माबूद बरहक नहीं है। यह उस आदमी की रमी करने की जगह है, जिस पर सूरा बकरा नाजिल हुई थी।

٨٥٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ رَمى مِنْ بَطْنِ الْوَادِي، فَقِيلَ له إنَّ نَاسًا يَرْمُونَهَا مِنْ فَوْقِهَا؟ فَقَالَ: وَالَّذِي لاَ إِلَهَ غَيْرُهُ، هٰذَا مَقَامُ الَّذِي أُنْزِلَتْ عَلَيْهِ سُورَةُ الْبَقَرَةِ ﷺ. [رواه البخاري: ١٧٤٧]

फायदे : सवाल करने वाले ने जमरा अकबा को कंकरियां मारने के बारे में सवाल किया, वाजेह रहे कि उस वक़्त मक्का मुकर्रमा बायीं तरफ और अरफा दायीं तरफ हो और जमरा के सामने खड़ा होकर रमी की जाये। (औनुलबारी, 2/647)

बाब 71 : हर जमरा पर सात सात कंकरियां मारी जायें।

٧١ - باب: رَمْيُ الجِمَارِ بِسَبْعِ حَصَيَاتٍ

856 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से ही रिवायत है कि जब वह बड़े जमरा (अक़बा) के पास पहुंचे तो उन्होंने काबा को अपनी बायीं तरफ और मिना को अपनी दायीं तरफ कर लिया और उसे सात कंकरियां मारी और फरमाया कि इस तरह उस आदमी ने कंकरियां मारी थीं, जिस पर सूरा बकरा नाजिल हुई थी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)।

٨٥٦ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ انْتَهى إِلَى الجَمْرَةِ الْكُبْرَى، فَجَعَلَ الْبَيْتَ عَنْ يَسَارِهِ، وَمِنًى عَنْ يَمِينِهِ، ورمى بِسَبْعٍ، وَقَالَ: هَكَذَا رَمى الَّذِي أُنْزِلَتْ عَلَيْهِ سُورَةُ الْبَقَرَةِ ﷺ. [رواه البخاري: ١٧٤٨]

फायदे : जमरा अकबा चन्द एक बातों में दूसरे जमरा से अलग है, एक यह कि दसवीं तारीख को सिर्फ उसी को रमी की जाती है। दूसरे उसकी रमी का वक्त चाश्त है, तीसरे यह कि उसके पास दुआ नहीं करना चाहिए। (औनुलबारी, 2/649)

---

٧٢ - باب: إذَا رَمَى الجَمْرَتَيْنِ يَقُومُ وَيُسهِلُ مُسْتَقبِلَ الْقِبْلَةِ

बाब 72 : नर्म जमीन पर किब्ला रूख खड़े होकर पहले और दूसरे जमरे को कंकरियां मारना।

٨٥٧ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ كانَ يَرْمِي الجَمْرَةَ الدُّنْيَا بِسَبْعِ حَصَيَاتٍ، يُكَبِّرُ عَلَى إثْرِ كُلِّ حَصَاةٍ، ثُمَّ يَتَقَدَّمُ حَتَّى يُسْهِلَ، فَيَقُومُ مُسْتَقْبِلَ القِبْلَةِ، فَيَقُومُ طَوِيلًا، وَيَدْعُو وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ، ثُمَّ يَرْمِي الْوُسْطى، ثُمَّ يَأْخُذُ ذَاتَ الشِّمَالِ فَيَسْتَهِلُ، وَيَقُومُ مُسْتَقْبِلَ القِبْلَةِ، فَيَقُومُ طَوِيلًا، وَيَدْعُو وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ، وَيَقُومُ طَوِيلًا، ثُمَّ يَرْمِي جَمْرَةَ ذَاتِ الْعَقَبَةِ مِنْ بَطْنِ الْوَادِي، وَلَا يَقِفُ عِنْدَهَا، ثُمَّ يَنْصَرِفُ، فَيَقُولُ: هَكَذَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَفْعَلُهُ. [رواه البخاري: ١٧٥١]

857 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि वह (मस्जिदे खैफ के) करीब वाले जमरे को सात कंकरियां मारते और हर कंकरी के बाद तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहते थे, फिर आगे बढ़ते और नरम जमीन पर पहुंचकर किब्ला रूख खड़े हो जाते और देर तक हाथ उठाकर दुआ करते, फिर बीच वाले जमरे को कंकरियां मारते, उसके बाद बायीं तरफ नरम और हमवार (समतल) जमीन पर चले जाते और किब्ला रूख खड़े होकर देर तक हाथ उठाकर दुआ करते रहते और यूँ देर तक खड़े रहते, फिर वादी के नशीब से जमरा अकबा को रमी करते और उसके पास न ठहरते और वापिस आ जाते और फरमाते कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऐसा करते देखा है।

फायदे : कुछ रिवायत में है कि हज़रत इब्ने उमर रजि. सूर बकरा पढ़ने

की मिकदार वहां खड़े निहायत खुशूअ से दुआ करते रहते, इससे यह भी मालूम हुआ कि कंकरियां एक बार ही न फैंक दी जायें, बल्कि एक एक कंकरी मारी जाये।

बाब 73 : तवाफ़े विदा का बयान।

٧٣ - باب: طَوَافُ الْوَدَاعِ

858 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फ़रमाया कि लोगों को हुक्म दिया गया कि उनका आखरी वक़्त बैतुल्लाह के पास हो (यानी तवाफ़े विदा करें) मगर हैज वाली औरतों को (यह तवाफ) माफ है।

٨٥٨ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أُمِرَ النَّاسُ أَنْ يَكُونَ آخِرُ عَهْدِهِمْ بِالْبَيْتِ، إِلَّا أَنَّهُ خُفِّفَ عَنِ الحَائِضِ. [رواه البخاري: ١٧٥٥]

फायदे : तवाफे विदा का दूसरा नाम तवाफ़े सदर भी है और यह भी जरूरी है। नीज यह भी मालूम हुआ कि सहते तवाफ के लिए पाक होना जरूरी है। (औनुलबारी, 2/652)

859 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वादी मुहस्सब में जुहर, असर, मग़रिब और इशा की नमाज़ पढ़ी, उसके बाद थोड़ी देर नींद ली, फिर सवार होकर बैतुल्लाह गये और तवाफ़ किया।

٨٥٩ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ، وَالمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ، ثُمَّ رَقَدَ رَقْدَةً بِالْمُحَصَّبِ، ثُمَّ رَكِبَ إِلَى الْبَيْتِ فَطَافَ بِهِ. [رواه البخاري: ١٧٥٦]

फायदे : वादी मुहस्सब मक्का और मिना के बीच एक खुला मैदानी इलाका है, उसे अबतह बत्हा और खैफ बनी किनाना भी कहते हैं। (औनुलबारी, 2/652)

बाब 74 : अगर तवाफे जियारत कर लेने के बाद औरत को हैज आ जाये?

٧٤ - باب: إِذَا حَاضَتِ المرأةُ بَعْدَ مَا أَفَاضَتْ

860 :इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हायजा (माहवारी वाली औरत) को तवाफ के बाद मक्का से जाने की इजाजत है, रावी का बयान है कि मैंने इब्ने उमर रजि. को यह कहते सुना कि इजाजत नहीं है, लेकिन बाद में उनसे सुना कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हायजा को रूख्सत (इजाजत) दी है।

٨٦٠ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رُخِّصَ لِلْحَائِضِ أَنْ تَنْفِرَ إِذَا أَفَاضَتْ.
قَالَ: وَسَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ يَقُولُ: إِنَّهَا لاَ تَنْفِرُ، ثُمَّ سَمِعْتُهُ يَقُولُ بَعْدُ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَخَّصَ لَهُنَّ. [رواه البخاري: ١٧٦٠، ١٧٦١]

फायदे : हज़रत उमर, इब्ने उमर और जैद बिन साबित रज़ि॰ का यह मानना था कि हायजा के लिए भी तवाफ़े विदा करना ज़रूरी है, लेकिन हज़रत जैद और इब्ने उमर रज़ि॰ ने इस मुकिफ से रूजू कर लिया था। अलबत्ता हज़रत उमर रज़ि॰ का रूजू साबित नहीं। उनका यह मुकिफ इस हदीस के खिलाफ़ है। (औनुलबारी, 2/653)। उनको इस हदीस का इल्म न था।

बाब 75 : वादी मुहस्सब में ठहरना।

٧٥ - باب: المُحَصَّب

861 : इब्ने अब्बास रजि. से उन्होंने फरमाया कि वादी मुहस्सब में ठहरना कोई इबादत नहीं है, वो सिर्फ़ एक जगह है, जहां रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यूँ ही ठहरे थे।

٨٦١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَيْسَ التَّحْصِيبُ بِشَيْءٍ، إِنَّمَا هُوَ مَنْزِلٌ نَزَلَهُ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ١٧٦٦]

फ़ायदे : मतलब यह है कि वादी मुहस्सब में ठहरना अरकाने हज से नहीं है, बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस ख़्याल से वहां ठहरे कि वहां से मदीना को रवानगी आसान होगी। चूंकि

आपने वहां कयाम फरमाया, इसलिए उसका एहतेमाम मुस्तहब है। आपके बाद शैखेन (अबू बकर उमर फारूक) रजि. भी वहां ठहरे। (औनुलबारी, 2/654)

٧٦ - باب: النُّزولُ بِذِي طُوىً قبلَ أنْ يَدْخُلَ مَكَّةَ وَالنُّزولُ بالبطحاءِ الَّتِي بِذِي الحُلَيْفَةِ إذا رجع مِن مَكَّةَ

बाब 76: मक्का में दाखिल होने से पहले जितुआ में ठहरना और मक्का से लौटते वक़्त इस बत्हा में पड़ाव करना जो जिलहुलैफा में है।

٨٦٢ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ كَانَ إِذَا أَقْبَلَ بَاتَ بِذِي طُوًى، حَتَّى إِذَا أَصْبَحَ دَخَلَ، وَإِذَا نَفَرَ مَرَّ بِذِي طُوًى وَبَاتَ بِهَا حَتَّى يُصْبِحَ، وَكَانَ يَذْكُرُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَفْعَلُ ذٰلِكَ. [رواه البخاري: ١٧٦٩]

862 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि जब वह मक्का जाते तो जितुआ में पड़ाव करते, रात वहीं बसर करते, सुबह होती तो मक्का में दाखिल होते और जब मक्का से वापिस होते तो भी जितुआ में रात गुजारते, सुबह तक वहीं रहते और जिक्र करते थे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी ऐसा करते थे।

फायदे : इमाम बुखारी ने इस हदीस पर यूँ उनवान कायम किया है, "मक्का लौटते वक़्त भी जितुआ में पड़ाव करना" साहबे तजरीद के उनवान के तहत इमाम बुखारी जो हदीस लाते हैं, इसमें यह खुलासा मौजूद है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज या उमरह से लौटकर मदीना आते तो अपनी ऊंटनी को उस मैदाने बत्हा में बिठाते जो जिलहुलैफा में है।"



किताबुल उमरह

उमरह के बयान में

١ - باب: وجُوبُ الْعُمْرَةِ وَفَضْلُهَا

बाब 1 : फरजीयत उमरह और उसकी फज़ीलत।

٨٦٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (الْعُمْرَةُ إِلَى الْعُمْرَةِ كَفَّارَةٌ لِمَا بَيْنَهُمَا، وَالحَجُّ المَبْرُورُ لَيْسَ لَهُ جَزَاءٌ إِلَّا الجَنَّةُ). [رواه البخاري: ١٧٧٣]

863 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, एक उमरह दूसरे उमरह तक के बीच गुनाहों का कफ्फारा होता है और मकबूले हज का सिला तो सिवाये जन्नत के कुछ नहीं है।

फायदे : इमाम बुखारी के नजदीक हज की तरह उमरह भी फर्ज है, लेकिन मजकूरा हदीस से इसकी फरजीयत वाजेह नहीं होती, बल्कि वह अहादीस जिनमें इस्लाम के अरकान बयान हुये हैं, उनमें हज का जिक्र करके उमरह को उनमें बयान नहीं किया गया। वल्लाहु आलम। (औनुलबारी, 2/659)

٢ - باب: مَنِ اعْتَمَرَ قَبْلَ الحَجِّ

बाब 2 : हज से पहले उमरह करना।

٨٦٤ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ سُئِلَ عَنِ الْعُمْرَةِ قَبْلَ الْحَجِّ؟ فَقَالَ: لَا بَأْسَ. وَقَالَ: اعْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ قَبْلَ أَنْ يَحُجَّ. [رواه البخاري: ١٧٧٤]

864 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि उनसे हज से पहले, उमरह करने की बाबत पूछा गया तो उन्होंने फरमाया कि इसमें कोई

कबाहत (हर्ज) नहीं, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज से पहले उमरह किया है।

बाब 3 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किस कद्र उमरह किये?

٣ - باب: كَمِ اعْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ

865 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कितने उमरे किये हैं? तो उन्होंने जवाब दिया कि चार, जिनमें एक रजब के महिने में किया था, सवाल करने वाला कहता है कि मैंने आइशा रज़ि. से अर्ज किया, अम्मा जान! आपने इब्ने उमर रज़ि. की बात को सुना है? आइशा रज़ि. ने पूछा, वह क्या कहते हैं? सवाल करने वाला बोला वह कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चार उमरे किये, जिनमें एक रजब में किया था। आइशा रज़ि. ने फरमाया, अल्लाह तआला अबू अब्दुर्रहमान रज़ि. पर रहम करे। आपने कोई उमरह नहीं किया, जिसमें वह मौजूद न हों। (फिर वह भूल गये) रजब में तो आपने कोई उमरह भी नहीं अदा फरमाया।

٨٦٥ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ قِيلَ لَهُ: كَمِ ٱعْتَمَرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ؟ قَالَ أَرْبَعًا: إِحْدَاهُنَّ فِي رَجَبٍ. قَالَ السَّائِلُ: فَقُلْتُ لِعَائِشَةَ: يَا أُمَّاهُ أَلاَ تَسْمَعِينَ مَا يَقُولُ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمٰنِ، قَالَتْ: مَا يَقُولُ؟ قَالَ: يَقُولُ: إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ ٱعْتَمَرَ أَرْبَعَ عُمْرَاتٍ، إِحْدَاهُنَّ فِي رَجَبٍ. قَالَتْ: يَرْحَمُ ٱللهُ أَبَا عَبْدِ الرَّحْمٰنِ، مَا ٱعْتَمَرَ عُمْرَةً إِلَّا وَهُوَ شَاهِدُهُ، وَمَا ٱعْتَمَرَ فِي رَجَبٍ قَطُّ. [رواه البخاري: ١٧٧٦]

फायदे : इसमें कोई शक नहीं है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रजब के महिने में कोई उमरह नहीं किया। सही मुस्लिम में है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि. ने हज़रत आइशा रज़ि. की बात सुन कर हाँ या नहीं में कोई जवाब नहीं दिया बल्कि चुप हो गये। (औनुलबारी, 2/661)

٨٦٦ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أنه سُئِلَ: كَم اعْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ؟ قَالَ: أَرْبَعًا: عُمْرَةَ الحُدَيْبِيَة فِي ذِي الْقَعْدَةِ حَيْثُ صَدَّهُ الْمُشْرِكُونَ، وَعُمْرَةً مِنَ العَامِ الْمُقْبِلِ فِي ذِي الْقَعْدَةِ حَيْثُ صَالَحَهُمْ، وَعُمْرَةَ الجِعْرَانَةِ إِذْ قَسَمَ غَنِيمَةً - أُرَاهُ - حُنَيْنٍ. قُلْتُ: كَمْ حَجَّ؟ قَالَ: وَاحِدَةً. [رواه البخاري: ١٧٧٨]

866 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कितने उमरे किये? तो उन्होंने कहा, चार। एक उमरह तो हुदेबिया जो जिलकअदा में किया जबकि मुश्रिकीन ने आपको वापस कर दिया था। दूसरा उमरह आईन्दा साल जिलकअदा में किया, जबकि आपने मुश्रिकीन से सुल्ह फरमायी, तीसरा उमरह जिराना जब माले गनीमत तकसीम किया। मेरा ख्याल है कि यह माले गनीमत हुनेन का था। (चौथा हज के साथ) फिर मैंने पूछा कि आपने हज कितने किये तो जवाब दिया सिर्फ एक।

٨٦٧ : وفي رواية أنه قَالَ: اعْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ حَيْثُ رَدُّوهُ، وَمِنَ القَابِلِ عُمْرَةَ الحُدَيْبِيَة، وَعُمْرَةً فِي ذِي الْقَعْدَةِ، وَعُمْرَةً مَعَ حَجَّتِهِ. [رواه البخاري: ١٧٧٩]

867 : अनस रज़ि. से दूसरी रिवायत में यूँ फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक तो वह उमरह किया था, जिससे मुश्रिकीन ने आपको वापस कर दिया था फिर अगले साल कजाअ का उमरह, तीसरा जिलकअदा में और चौथा उमरह हज के साथ अदा फरमाया।

फायदे : दूसरे उमरह को उमरह कजा इसलिए कहा जाता है कि यह कुरैश से सुल्ह और उनसे एक फैसले के नतीजे में हुआ था। यह नाम इसलिए नहीं रखा गया कि चूंकि मुश्रिकीन ने पहले उमरह से रोक दिया था तो आपने बतौर कजा अदा किया हो, जैसा कि आम लोगों में मशहूर है, बल्कि जिस उमरह से रोका गया था, उसे शुमार करके चार उमरह होते हैं। (औनुलबारी, 2/662)

٨٦٨ : عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: اعْتَمَرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي ذِي الْقَعْدَةِ قَبْلَ أَنْ يَحُجَّ مَرَّتَيْنِ. [رواه البخاري: ١٧٨١]

868 : बरा बिन आजिब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज करने से पहले जिलकअदा में दो उमरे अदा फरमाये।

फायदे : इस हदीस में दो उमरे बयान हुये हैं। रावी ने वह उमरह जो हज के साथ किया था और जिस उमरे से आपको रोक दिया गया था, इन दोनों को शुमार नहीं किया गया। वाजेह हो कि तीन उमरे माहे जिलकअदा में अदा किये गये। चौथा उमरह हज के साथ और जिलहिज्जा में किया गया था।

बाब 4 : तनईम से उमरह करना।

٤ - باب: عُمْرَةُ التَّنْعِيمِ

٨٦٩ : عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَهُ أَنْ يُرْدِفَ عَائِشَةَ وَيُعْمِرَهَا مِنَ التَّنْعِيمِ. [رواه البخاري: ١٧٨٤]

وَأَنَّ سُرَاقَةَ بْنَ مَالِكِ بْنِ جُعْشُمٍ لَقِيَ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ بِالْعَقَبَةِ وَهُوَ يَرْمِيهَا، فَقَالَ: أَلَكُمْ هٰذِهِ خَاصَّةً يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (لَا، بَلْ لِلأَبَدِ). [رواه البخاري: ١٧٨٥]

869 : अब्दुल रहमान बिन अबू बकर रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें हुक्म दिया कि आइशा रज़ि. को अपने साथ सवार करके ले जायें और उन्हें मकामे तनईम से उमरह करा लायें और शुराका बिन मालिक बिन जुशुम रज़ि. रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उस वक्त मिले जब आप जमरा अकबा पर कंकरियां मार रहे थे। उसने आपसे पूछा क्या यह हज को फस्ख करके उमरह करना आप के लिए ही खास है। आपने फरमाया, नहीं यह हमेशा के लिए है।

फायदे : हज़रत शुराका बिन मालिक रज़ि. का सवाल हज़रत जाबिर रज़ि. से मरवी एक लम्बी हदीस का हिस्सा है। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर रज़ि. की हदीस में इसका जिक्र बुखारी में नहीं है। साहिबे तजरीद को चाहिए था कि यूँ कहते, एक रिवायत जो हज़रत जाबिर रज़ि. से मरवी है, उसमें यूँ है।

बाब 5 : हज के बाद कुरबानी के बगैर उमरह करना।

٥ - باب: الاعْتِمَارُ بَعْدَ الحَجِّ بِغَيرِ هَدْيٍ

870 : आइशा रज़ि. से जो हदीस (869, 791, 792) हज के बाबत है, वह कई बार मुकम्मिल नकल होकर गुजर चुकी है।

٨٧٠ : حَدِيثُ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا فِي الحَجِّ، تَكَرَّرَ كَثِيراً، وَقَدْ تَقَدَّمَ بِتَمامِهِ (برقم: ٢١٤) [رواه البخاري: ١٧٨٤]

फायदे : बाज लोगों का ख्याल है कि माहे जिलहिज्जा में हज के बाद भी अगर कोई उमरह का अहराम बांधना चाहे तो उसे कुरबानी देनी होगी। इमाम साहब उसकी तरदीद फरमाते हैं कि हज़रत आइशा रज़ि. ने हज के बाद जो उमरह किया था, उसमें कोई कुरबानी, फिदया रोजे अदा नहीं किये।

बाब 6 : उमरह का सवाब बकदर मशक्कत है।

٦ - باب: أَجْرُ العُمْرَةِ عَلَى قَدْرِ النَّصَبِ

871 : आइशा रज़ि. से ही एक रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि

٨٧١ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْها فِي رِوايَةٍ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا فِي

वसल्लम ने उनसे उमरह की बाबत फरमाया कि उसका सवाब बकद्र खर्च या तुम्हारी तकलीफ के मुताबिक दिया जायेगा।

لِعُمْرَةِ: (وَلٰكِنَّهَا عَلَى قَدْرِ نَفَقَتِكِ أَوْ نَصَبِكِ). [رواه البخاري: ١٧٨٧]

फायदे : तकलीफ के मुताबिक सवाब में कमी बैशी का काइदा कुल्लिया नहीं क्योंकि बाज इबादतों में तकलीफ कम होती है, लेकिन जमान और मकान के लिहाज से सवाब ज्यादा मिलता है। जैसे शबे कद्र में इबादत करना या मस्जिदे हराम में नमाज़ अदा करना। (औनुलबारी, 2/670)

बाब 7 : उमरह करने वाला अहराम से कब आजाद होता है?

٧ - باب: مَتَى يَحِلُّ الْمُعْتَمِرُ

872 : असमा बिन्ते अबी बकर रज़ि. से रिवायत है कि वह जब मकामे हजून से गुजरते तो कहते अल्लाह अपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर रहमतें नाजिल फरमायें। बेशक हम आपके साथ उस मकाम पर उतरते थे, उन दिनों हम हल्के फुल्के थे। हमारी सवारियां भी कम और जादे राह भी थोड़ा था। मैंने और मेरी बहन आइशा रज़ि. ने जुबेर रज़ि. और फलां फलां शख्स ने उमरह किया। हमने काबा का तवाफ करके अहराम खोल दिया, फिर हमने दूसरे वक्त हज का अहराम बांधा।

٨٧٢ : عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهَا كَانَتْ كُلَّمَا مَرَّتْ بِالْحَجُونِ تَقُولُ: صَلَّى ٱللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ، لَقَدْ نَزَلْنَا مَعَهُ هَا هُنَا وَنَحْنُ يَوْمَئِذٍ خِفَافٌ. قَلِيلٌ ظَهْرُنَا قَلِيلَةٌ أَزْوَادُنَا، فَاعْتَمَرْتُ أَنَا وَأُخْتِي عَائِشَةُ وَالزُّبَيْرُ وفُلاَنٌ وَفُلاَنٌ، فَلَمَّا مَسَحْنَا الْبَيْتَ أَحْلَلْنَا، ثُمَّ أَهْلَلْنَا مِنَ الْعَشِيِّ بِالْحَجِّ. [رواه البخاري: ١٧٩٦]

फायदे : इस हदीस में है कि हमने काबा का तवाफ करके अहराम खोल

दिया, इसका मतलब यह नहीं है कि सफा और मरवाह की सई नहीं की थी। क्योंकि मुफस्सल हदीस में बैतुल्लाह के तवाफ के बाद सफा मरवाह की सई का भी जिक्र है। (औनुलबारी, 2/673)

---

٨ - باب: مَا يَقُول إِذَا رَجَعَ مِنَ الحَجِّ أَوِ العُمْرَةِ أَوِ الغَزْوِ

बाब 8 : जब कोई हज, उमरह या जिहाद से लौटे तो क्या दुआ पढ़े?

٨٧٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَانَ إِذَا قَفَلَ مِنْ غَزْوٍ أَوْ حَجٍّ أَوْ عُمْرَةٍ يُكَبِّرُ عَلَى كُلِّ شَرَفٍ مِنَ الأَرْضِ ثَلاَثَ تَكْبِيرَاتٍ، ثُمَّ يَقُولُ: (لاَ إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، آيِبُونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ سَاجِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ، صَدَقَ ٱللهُ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ). [رواه البخاري: ١٧٩٧]

873 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिहाद या हज और उमरह से लौटते तो हर ऊंचाई पर तीन बार अल्लाहु अकबर कहते, फिर यह दुआ पढ़ते। अल्लाह के अलावा कोई माबूद बरहक नहीं, वह एक है, उसका कोई शरीक नहीं। उसी की हुकूमत है, वही तारीफ के सजावार है और वह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है। हम सफर से लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले अपने मालिक की बन्दगी करने वाले, उसके हुजूर सज्दा रेज होने वाले, अपने परवरदीगार की तारीफ करने वाले, जिसने अपना वादा सच्चा कर दिखलाया, अपने बन्दे की मदद फरमाई। उस अकेले ने फौज-ए-कुफ्फार को शिकस्त (हार)से दोचार कर दिया।

फायदे : यह दुआ जिहाद, हज व उमरह के सफर के लिए ही खास नहीं, बल्कि हर सफर से वापसी पर पढ़ी जा सकती है, जो अल्लाह की इताअत के लिए इख्तियार किया गया हो।

(औनुलबारी, 2/675).

बाब 9 : आने वाले हाजियों का इस्तकबाल करना और तीन आदमियों का सवारी पर बैठना।

٩ - باب: اسْتِقْبَالُ الحَاجِّ القَادِمِينَ وَالثَّلَاثَةِ عَلَى الدَّابَّةِ

٨٧٤ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ مَكَّةَ، ٱسْتَقْبَلَتْهُ أُغَيْلِمَةُ بَنِي عَبْدِ المُطَّلِبِ، فَحَمَلَ وَاحِدًا بَيْنَ يَدَيْهِ وَآخَرَ خَلْفَهُ. [رواه البخاري: ١٧٩٨]

874 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का तशरीफ लाये तो बनी अब्दुल मुत्तलिब के चन्द लड़के आपके इस्तकबाल के लिए गये, उनमें से एक को आपने अपने आगे और एक को अपने पीछे सवारी पर बैठा लिया।

फायदे : यह उनवान हज के लिए जाने वालों और हज से वापिस आने वालों का इस्तकबाल करना दोनों मौकों पर मुस्तमिल है। (औनुलबारी, 2/676)

बाब 10 : (मुसाफिर का) सूरज डूबने के बाद घर में दाखिल होना।

١٠ - باب: الدُّخُولُ بِالعَشِيِّ

٨٧٥ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لَا يَطْرُقُ أَهْلَهُ، كَانَ لَا يَدْخُلُ إِلَّا غُدْوَةً أَوْ عَشِيَّةً. [رواه البخاري: ١٨٠٠]

875 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घर वालों के पास सफर से रात के वक्त वापिस न आते थे, या तो सुबह के वक्त आते या बाद अज-ज्वाल तशरीफ लाते थे।

फायदे : रात के वक्त अचानक घर आने से इसलिए मना फरमाया है कि मुबादा कोई नागवार चीज दिखे जो बाहमी नफरत और कुदुरत का सबब हो। (औनुलबारी, 2/678)

876 : जाबिर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (सफर से) रात को अपने घर आने से मना फरमाया।

٨٧٦ : عَنْ جابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَطْرُقَ أَهْلَهُ لَيْلًا. [رواه البخاري: ١٨٠١]

बाब 11 : मदीना के करीब पहुंचने पर सवारी को तेज कर देना।

١١ - باب: مَنْ أَسْرَعَ نَاقَتَهُ إِذَا بَلَغَ المَدِينَة

877 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब किसी सफर से मदीना वापिस आते और मदीना की राहों को देखते तो (फरते शोक से) अपनी ऊंटनी को तेज कर देते थे और अगर कोई और सवारी होती तो उसे भी ऐड़ी लगाते। एक रिवायत में इतना इजाफा है कि मदीना मुनव्वरा से मुहब्बत की वजह से ऐसा करते थे।

٨٧٧ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ، فَأَبْصَرَ دَرَجَاتِ المَدِينَةِ، أَوْضَعَ نَاقَتَهُ، وَإِنْ كَانَتْ دَابَّةً حَرَّكَهَا. وزاد في رواية: مِنْ حُبِّهَا [رواه البخاري: ١٨٠٢]

फायदे : यह हदीस मदीना मुनव्वरा की फज़ीलत पर दलालत करती है, नीज इससे वतन की मुहब्बत और उससे ताल्लुके खातिर की मशरूयत भी साबित होती है। (औनुलबारी, 2/678)

बाब 12 : सफर भी गौया एक किस्म का अज़ाब है।

١٢ - باب: السَّفَرُ قِطْعَةٌ مِنَ العَذَابِ

878 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया सफर अज़ाब का

٨٧٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (السَّفَرُ قِطْعَةٌ مِنَ العَذَابِ، يَمْنَعُ أَحَدَكُمْ طَعَامَهُ وَشَرَابَهُ وَنَوْمَهُ، فَإِذَا قَضَى نَهْمَتَهُ فَلْيُعَجِّلْ إِلَى أَهْلِهِ). [رواه البخاري: ١٨٠٤]

एक हिस्सा है, जो खाने पीने और सोने को रोक देता है। लिहाजा जब सफर की जरूरत पूरी हो जाये तो अपने घर जल्दी वापस आना चाहिए।

फायदे : किताबुल हज में इस हदीस को शायद इसलिए बयान किया गया है कि हज वगैरह से फारिग के बाद इन्सान को अपने घर रवाना होने में जल्दी करना चाहिए, इसके मुताल्लिक हज़रत आइशा रज़ि. से एक हदीस भी मरवी है। (औनुलबारी, 2/679)



www.Momeen.blogspot.com

किताबुल महसर व जज़ाइस्सैद
हज व उमरह से रोके जाना

बैतुल्लाह का तवाफ या वकूफे अरफा के बीच रूकावट आ जाने को अहसार कहा जाता है, यह रूकावट हज और उमरह दोनों में हो सकती है।

बाब 1 : जब उमरह करने वाले को रोक दिया जाये।

١ - باب: إذَا أُحصِرَ المُعتَمِرُ

879 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को (हुदेबीया पर) रोक दिया गया तो आपने अपना सर मुण्डवाया, अपनी बीवियों से सोहबत (हमबिस्तरी) की और कुरबानी के जानवरों को जिब्ह किया, फिर अगले साल (अपना) उमरह किया।

٨٧٩ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَدْ أُحْصِرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، فَحَلَقَ رَأْسَهُ، وَجَامَعَ نِسَاءَهُ، وَنَحَرَ هَدْيَهُ، حَتَّى ٱعْتَمَرَ عَامًا قَابِلًا. [رواه البخاري: ١٨٠٩]

फायदे : इस हदीस से इमाम बुखारी उन लोगों का रद्द करना चाहते हैं, जिनका मुकिफ है कि रूकावट की वजह से अहराम खोल देना सिर्फ हज के साथ खास है। उमरह में अहराम नहीं खोलना चाहिए, क्योंकि हज का वक़्त मुकर्रर है, जबकि उमरह तो किसी वक्त भी किया जा सकता है।

बाब 2 : हज से रोके।

٢ - باب: الإِحْصَارُ فِي الحَجِّ

٨٨٠ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: أَلَيْسَ حَسْبُكُمْ سُنَّةُ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ؟ إِنْ حُبِسَ أَحَدُكُمْ عَنِ الحَجِّ طَافَ بِالْبَيْتِ وَبِالصَّفَا وَالمَرْوَةِ، ثُمَّ حَلَّ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ، حَتَّى يَحُجَّ عَامًا قَابِلًا فَيُهْدِي أَوْ يَصُومُ إِنْ لَمْ يَجِدْ هَدْيًا [رواه البخاري: ١٨١٠]

880 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि वो कहा करते थे क्या तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत काफी नहीं है, तुममें से अगर कोई हज से रोक दिया जाये तो उसे चाहिए कि बैतुल्लाह का तवाफ करे, फिर सफा मरवाह की सई करे, फिर हर चीज से हलाल हो जाये। अगले साल हज करे और कुरबानी करे, अगर कुरबानी न मिले तो रोजे रखे।

फायदे : हज में रूकावट का मतलब यह है कि वकूफे अरफा न हो सकता हो। हजरत इब्ने उमर रजि. ने हज की रूकावट को उमरे की रूकावट पर कयास किया है। बजाहिर यह मालूम होता है कि इब्ने उमर रजि. के नजदीक हज या उमरह का मशरूते अहराम बांधना दुरूस्त नहीं, हालांकि दीगर हजरात ने इसको जाइज रखा है। (औनुलबारी, 2/683)

٣ - باب: النَّحْرُ قَبْلَ الحَلْقِ فِي الحَصْرِ

बाब 3 : जब रोका जाये तो सर मुण्डवाने से पहले कुरबानी करें।

٨٨١ : عَنِ المِسْوَرِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ نَحَرَ قَبْلَ أَنْ يَحْلِقَ، وَأَمَرَ أَصْحَابَهُ بِذٰلِكَ. [رواه البخاري: ١٨١١]

881 : मिस्वर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (जिस साल उमरह से रोक दिये गये थे) पहले कुरबानी की, फिर सर मुण्डवाया और अपने सहाबा किराम रजि. को भी इसका हुक्म दिया था।

फायदे : कुछ लोगों का ख्याल है कि अहसारी की सूरत में कुरबानी को

हरमे काबा भेजा जाये, जब वहां जिब्ह हो जाये तो फिर अहराम खोलने की इजाजत है। जबकि मजकूरा हदीस से उनकी तरदीद होती है कि जहां अहसार हो, वहीं अहराम खोल दे और कुरबानी करे। (औनुलबारी, 2/685)

---

٤ - باب: قول الله تعالى: ﴿أَوْ صَدَقَةٍ﴾ وَهِيَ إِطْعَامُ سِتَّةِ مَسَاكِينَ

बाब 4 : जिस आयत में अल्लाह तआला ने सदका का हुक्म दिया है, उससे मुराद छः मुलसमानों को खाना खिलाना है।

٨٨٢ : عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: وَقَفَ عَلَيَّ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِالْحُدَيْبِيَةِ وَرَأْسِي يَتَهَافَتُ قَمْلًا، فَقَالَ: (يُؤْذِيكَ هَوَامُّكَ؟). قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: (فَاحْلِقْ رَأْسَكَ، أَوْ قَالَ: ٱحْلِقْ). قَالَ: فِيَّ نَزَلَتْ هٰذِهِ الآيَةُ: ﴿فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ بِهِۦٓ أَذًى مِّن رَّأْسِهِۦ﴾ إِلَى آخِرِهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (صُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ، أَوْ تَصَدَّقْ بِفَرَقٍ بَيْنَ سِتَّةٍ، أَوِ ٱنْسُكْ بِمَا تَيَسَّرَ). [رواه البخاري: ١٨١٥]

882 : काब बिन उजरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हुदेबीया में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे करीब खड़े हुये तो मेरे सर से जूऐं गिर रही थी। आपने फरमाया, जूऐं तुम्हे तकलीफ देती होंगी? मैंने अर्ज किया हां! आपने फरमाया कि अपना सर मुण्डवा दो। काब रजि. फरमाते हैं कि यह आयते करीमा मेरे ही हक में उतरी। फिर जो कोई तुममें से बीमार हो जाये या उसके सर में कोई तकलीफ हो तो उस पर फिदिया वाजिब है। रोजे रख ले या सदका दे या कुरबानी करे" इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तीन दिन रोजे रखो या एक फरक (तीन साअ) अनाज छः गरीबों को सदका करो या जो कुरबानी मैसर हो, उसे जिब्ह करो।

फायदे : कुरआन में मुतलक रोजों और मुतलक सदके का जिक्र था,

हदीस ने खुलासा कर दिया कि रोजे तीन दिन और सदका छः गरीबों को खाना खिलाना है। नीज आयत में किसी चीज को बजा लाने का इख्तियार उस शख्स को है, जिसे कुरबानी भी मैसर हो, बसूरत दीगर सिर्फ रोजों और सदका में इख्तियार होगा। - (औनुलबारी, 2/687)

बाब 5 : फिदिया में हर मिसकिन को आधा साअ दिया जाये।

٥ - باب: الإِطْعَامُ فِي الفِدْيَةِ نِصْفُ صَاعٍ

883 : काब रजि. से ही एक रिवायत में है, उन्होंने फरमाया, यह आयत खास मेरे हक में नाजिल हुई। मगर हुक्म के लिए लिहाज से तुम सब लोगों के लिए आम है।

٨٨٣ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ فِي رواية قَالَ: نَزَلَتْ فِيَّ خَاصَّةً، وَهِيَ لَكُمْ عَامَّةً. [رواه البخاري: ١٨١٦]

फायदे : इस हदीस के आखिर में है कि हर मिस्किन को आधा साअ के लिहाज से छः मिस्किनों को खाना खिलाओ, खाना अनाज और खुजूरों में से किसी का भी हो सकता है। (औनुलबारी, 2/688)



किताबुजज़ाइस्सैद वनहविहि

शिकार और उसके बराबर दूसरे अफआल की जज़ा

١ - باب: إِذَا صَادَ الحَلَالُ فَأَهْدَى لِلْمُحْرِمِ الصَّيْدَ، أَكَلَه

बाब 1 : जब कोई गैर मुहरिम शिकार करे और मुहरिम को तौफा दे तो वह उसे खा सकता है।

٨٨٤ : عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ٱنْطَلَقْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَامَ الحُدَيْبِيَةِ، فَأَحْرَمَ أَصْحَابُهُ وَلَمْ أُحْرِمْ أَنَا فَأُنْبِئْنَا بِعَدُوٍّ بِغَيْقَةَ، فَتَوَجَّهْنَا نَحْوَهُمْ، فَبَصُرَ أَصْحَابِي بِحِمَارِ وَحْشٍ، فَجَعَلَ بَعْضُهُمْ يَضْحَكُ إِلَى بَعْضٍ، فَنَظَرْتُ فَرَأَيْتُهُ، فَحَمَلْتُ عَلَيْهِ الفَرَسَ فَطَعَنْتُهُ فَأَثْبَتُّهُ، فَٱسْتَعَنْتُهُمْ فَأَبَوْا أَنْ يُعِينُونِي، فَأَكَلْنَا مِنْهُ، ثُمَّ لَحِقْتُ بِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَخَشِينَا أَنْ نُقْتَطَعَ، أَرْفَعُ فَرَسِي شَأْوًا وَأَسِيرُ عَلَيْهِ شَأْوًا، فَلَقِيتُ رَجُلًا مِنْ بَنِي غِفَارٍ فِي جَوْفِ اللَّيْلِ، فَقُلْتُ: أَيْنَ تَرَكْتَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ؟. فَقَالَ: تَرَكْتُهُ بِتَعْهِنَ، وَهُوَ قَائِلٌ السُّقْيَا، فَلَحِقْتُ بِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ حَتَّى أَتَيْتُهُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ أَصْحَابَكَ أَرْسَلُوا يَقْرَؤُونَ عَلَيْكَ السَّلَامَ وَرَحْمَةَ ٱللهِ، وَإِنَّهُمْ قَدْ

884 : अबू कतादा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम हुदेबीया के साल नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रवाना हुये और आपके तमाम सहाबा रजि. ने अहराम बांध लिया, मगर मैंने अहराम न बांधा। फिर हमें खबर मिली कि मकामे गइका में दुश्मन मौजूद हैं। लिहाजा हम उसकी तरफ चल दिये। मेरे साथियों ने एक जंगली गधा देखा तो वह एक दूसरे को देखकर हंसे। मैंने नजर उठायी तो उसे देखा और उसके पीछे घोड़ा दौड़ाया और उसे जख्मी करके गिरा लिया। फिर मैंने अपने साथियों से मदद

خَشُوا أَنْ يَقْتَطِعَهُمُ الْعَدُوُّ دُونَكَ فَانْتَظِرْهُمْ، فَفَعَلَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّا أَصَدْنَا حِمَارَ وَحْشٍ، وَإِنَّ عِنْدَنَا مِنْهُ فَاضِلَةً؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لأَصْحَابِهِ: (كُلُوا). وَهُمْ مُحْرِمُونَ. [رواه البخاري: ١٨٢١]

चाही, लेकिन उन्होंने कोई मदद न की। आखिरकार हम सबने उसका गोश्त खाया। हमें अन्देशा हुआ कि मुबादा हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जुदा रह जाये। लिहाजा मैं कभी अपने घोड़े को तेज चलाता और कभी धीरे। आखिर मुझे आधी रात एक आदमी मिला, जिससे मैंने पूछा कि तूने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहां छोड़ा है? उसने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तअहिन (चश्मे, नहर) पर छोड़ा था और आपका मकामे सुकिया में कैलुला (दोपहर का आराम) करने का इरादा था यह पूछकर मैं फिर चला और आपसे जल्द जा मिला। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझे आपके असहाब रजि. ने भेजा है और वह आपको सलाम रहमत अर्ज करते हैं। उन्हें यह अन्देशा है कि कहीं दुश्मन उन्हें आप से जुदा न कर दें। लिहाजा आप उनका इन्तेजार फरमायें तो आपने ऐसा ही किया, फिर मैंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैंने एक जगंली गधा शिकार किया था, जिसका मेरे पास कुछ गोश्त है। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा किराम रजि. से फरमाया, खाओ। हालांकि वह सब मुहरिम थे।

फायदे : मुहरिम पर खुद शिकार करने या उसके लिए मदद करने पर पाबन्दी है। अगर मुहरिम शिकार का जानवर जानबूझ कर या अनजाने में कत्ल कर दे तो उस पर फिदीया (जुर्माना) पड़ जाता है। अगर शिकार के सिलसिले में मुहरिम ने कोई मदद न की हो तो शिकार का गोश्त खाने में कोई हर्ज नहीं। (औनुलबारी, 2/691)

शर्त यह है कि शिकार उसी की खातिर न किया गया हो।

बाब 2 : मुहरिम शिकार मारने में गैर मुहरिम की मदद न करें।

٢ - باب: لاَ يُعِينُ المُحْرِمُ الحَلاَلَ فِي قَتْلِ الصَّيْدِ

885 : अबू कतादा रजि. से ही एक रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मकामे काहा में मदीने से तीन मील के फासले पर थे। हममें से कोई अहराम बांधे हुये और कोई बगैर अहराम के था। फिर बाकी हदीस बयान फरमायी।

٨٨٥ : وَعَنْهُ فِي رِوَايَةٍ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِالْقَاحَةِ، مِنَ المَدِينَةِ عَلَى ثَلاَثٍ، وَمِنَّا الْمُحْرِمُ وَمِنَّا غَيْرُ الْمُحْرِمِ، فَذَكَرَ الحَدِيثَ. [رواه البخاري: ١٨٢٣]

फायदे : इस हदीस में है कि अबू कतादा रजि. का कोड़ा गिर गया तो उन्होंने इस सिलसिले में अपने साथियों से मदद मांगी, उन्होंने जवाब दिया कि चूंकि हम अहराम की हालत से हैं। इसलिए तेरी मदद नहीं कर सकते।

बाब 3 : मुहरिम शिकार की तरफ इस गर्ज से इशारा न करे कि गैर मुहरिम उसका शिकार कर ले।

٣ - باب: لا يُشِيرُ المُحْرِمُ إِلَى الصَّيْدِ لِكَي يَصْطَادَهُ الحَلاَلُ

886: अबू कतादा रजि.से ही एक दूसरी रिवायत है कि जब तमाम सहाबा रजि.रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये तो आपने फरमाया कि तुममें से किसी ने उसको जंगली गधे पर हमले का हुक्म दिया था या उसकी तरफ इशारा किया था? उन्होंने अर्ज किया, नहीं! फिर आपने फरमाया, उसका बाकी गोश्त खाओ।

٨٨٦ وَعَنْهُ فِي رِوَايَةٍ: أَنَّهُم فَلَمَّا أَتَوْا رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: (أَمِنْكُمْ أَحَدٌ أَمَرَهُ أَنْ يَحْمِلَ عَلَيْهَا أَو أَشَارَ إِلَيْهَا؟). قَالُوا: لاَ، قَالَ: (فَكُلُوا مَا بَقِيَ مِنْ لَحْمِهَا). [رواه البخاري: ١٨٢٤]

फायदे : हजरत अबू कतादा रजि.की इस रिवायत में है कि सहाबा किराम रजि.जंगली गधे को देखकर हंस पड़े, यह हंसना इशारा के लिए न था, बल्कि इजहारे तआज्जुब के तौर पर था।

(औनुलबारी, 2/690)

٤ - باب: إِذَا أَهْدَى لِلْمُحْرِمِ حِمَارًا وَحْشِيًّا لَمْ يَقْبَلْ

बाब 4: जब कोई आदमी मुहरिम को जिन्दा जंगली गधा तौहफे में दे तो मुहरिम उसे कबूल न करे।

٨٨٧ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ الصَّعْبِ بْنِ جَثَّامَةَ اللَّيْثِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ أَهْدَى لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ حِمَارًا وَحْشِيًّا، وَهُوَ بِالأَبْوَاءِ أَوْ بِوَدَّانَ، فَرَدَّهُ عَلَيْهِ، فَلَمَّا رَأَى مَا فِي وَجْهِهِ قَالَ: (إِنَّا لَمْ نَرُدَّهُ عَلَيْكَ إِلَّا أَنَّا حُرُمٌ). [رواه البخاري: ١٨٢٥]

887 : अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. से रिवायत है कि सअब बिन जसामा लयशी रजि. ने एक जंगली गधा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तौहफे में पेश किया गया, उस वक्त आप मकामे अबवा या मकामे वद्दान में थे तो आपने उसे वापस कर दिया। लेकिन जब आपने उसके चेहरे पर अफसुर्दगी देखी तो फरमाया कि हमने यह सिर्फ इसलिए वापस किया है कि हम मुहरिम हैं।

फायदे : यह जंगली गधा और फिर उसका गोश्त इसलिए वापस किया था कि आपके लिए शिकार किया गया था। मालूम हुआ कि किसी माकूल वजह से तौहफा वापस किया जा सकता है। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि इसकी वजह बयान कर दी जाये ताकि तौहफा देने वाले की हौसला शिकनी न हो।

(औनुलबारी, 2/698)

٥ - باب: مَا يَقْتُلُ الْمُحْرِمُ فِي الْحَرَمِ

बाब 5 : मुहरिम हरम में किन जानवरों को मार सकता है।

888 : आइशा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि पांच जानवर ऐसे मूजी हैं कि उन्हें हरम में भी मार दिया जाये, कौआ, चील, बिच्छू, चूहा और काटने वाला कुत्ता।

٨٨٨ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (خَمْسٌ مِنَ ٱلدَّوَابِّ، كُلُّهُنَّ فَاسِقٌ، يُقْتَلْنَ فِي الْحَرَمِ: الْغُرَابُ، وَالْحِدَأَةُ، وَالْعَقْرَبُ، وَالْفَأْرَةُ، وَالْكَلْبُ الْعَقُورُ). [رواه البخاري: ١٨٢٩]

फायदे : हर मूजी जानवर को मारना अहराम की हालत में जाइज है। इससे यह भी मालूम हुआ कि वाजिब कत्ल मुजरिम अगर हरम में पनाह ले ले तो उसे कत्ल करने में कोई हर्ज नहीं है।

(औनुलबारी, 2/702)

889: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मिना की एक गार में थे, इतने में सूरा मुरसलात आप पर उतरी। जिसकी आप तिलावत फरमाने लगे और मैं भी आपसे सुनकर याद करने लगा और आपका रूये मुबारक तिलावत से अभी तरो ताजा था कि अचानक एक सांप हम लोगों पर कूदा तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उसे मार डालो। चूनांचे हमने उसको मारने की जल्दी की, मगर वह निकल गया तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जिस तरह तुम उसकी तकलीफ से बचा लिये गये हो, उसी तरह वह भी तुम्हारी तकलीफ से बचा लिया गया है।

٨٨٩ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَما نَحْنُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي غَارٍ بِمِنًى، إِذْ نَزَلَ عَلَيْهِ: ﴿وَالْمُرْسَلَاتِ﴾ وَإِنَّهُ لَيَتْلُوهَا، وَإِنِّي لَأَتَلَقَّاهَا مِنْ فِيهِ، وَإِنَّ فَاهُ لَرَطْبٌ بِهَا، إِذْ وَثَبَتْ عَلَيْنَا حَيَّةٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (اُقْتُلُوهَا). فَابْتَدَرْنَاهَا فَذَهَبَتْ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (وُقِيَتْ شَرَّكُمْ، كما وُقِيتُمْ شَرَّهَا). [رواه البخاري: ١٨٣٠]

फायदे : एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मुहरिम को मिना के मकाम पर सांप मारने का हुक्म दिया था, जिससे मालूम होता है कि यह वाक्या अहराम की हालत में पेश आया। (औनुलबारी, 2/703)

890: आइशा रजि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने छिपकली की बाबत फरमाया यह मूजी जानवर है, मगर मैंने नहीं सुना कि आपने उसको मार डालने का हुक्म दिया हो।

٨٩٠ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها، زَوجِ النَّبِيِّ ﷺ: أَنَّ رَسُول ٱللهِ ﷺ قَالَ لِلْوَزَغِ: (فُوَيْسِقٌ). وَلَمْ أَسْمَعْهُ يَأْمُرُنا بِقَتْلِهِ. [رواه البخاري: ١٨٣١]

फायदे : दूसरी रिवायत से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने छिपकली को मारने का हुक्म दिया है। बल्कि उसके मारने से नवेदे सवाब भी सुनाई है।

(औनुलबारी, 2/704)

बाब 6 : मक्का मुकर्रमा में जंग जाइज नहीं।

٦ - باب: لاَ يَحِلُّ القِتَالُ بِمَكَّةَ

891 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का जीतने के रोज फरमाया, अब हिजरत बाकी नहीं रही, अलबत्ता जिहाद कायम और नियत बाकी रहेगी और जब तुमसे जिहाद के लिए निकलने को कहा जाये तो निकल खड़े हो।

٨٩١ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ ٱفْتَتَحَ مَكَّةَ: (لاَ هِجْرَةَ وَلٰكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ، وَإِذَا ٱسْتُنْفِرْتُمْ فَٱنْفِرُوا). [رواه البخاري: ١٨٣٤]

फायदे : इस हदीस में है कि अल्लाह तआला ने मक्का मुकर्रमा की

हुरमत (इज्जत) को जमीन और आसमान की पैदाईश के दिन से बरकरार रखा है और कयामत तक कायम रहेगी।

बाब 7 : मुहरिम के लिए छिंपे लगवाने का बयान।

٧ - باب: الحِجَامَةُ لِلْمُحْرِمِ

892 : इब्ने बुहईना रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मकामे लही जमल में अहराम की हालत में अपने सर के दरमियान छिंपे लगवाये।

٨٩٢ : عَنِ ابْنِ بُحَيْنَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ٱحْتَجَمَ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ مُحْرِمٌ، بِلَحْيِ جَمَلٍ، فِي وَسَطِ رَأْسِهِ. [رواه البخاري: ١٨٣٦]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि मुहरिम के लिए खून निकलवाना, ऑपरेशन कराना, रग कटवाना और दांत निकलवाना जाइज है। बशर्ते कि किसी हुक्मे इमतनाई का मुरतकिब न हो।

(औनुलबारी, 2/706)

बाब 8 : मुहरिम का (अहराम की हालत में) निकाह करना।

٨ - باب: تَزْوِيجُ المُحْرِمِ

893 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अहराम की हालत में मैमुना रजि. से निकाह फरमाया।

٨٩٣ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تَزَوَّجَ مَيْمُونَةَ وَهُوَ مُحْرِمٌ. [رواه البخاري: ١٨٣٧]

फायदे : इमाम बुखारी का मुकिफ यह मालूम होता है कि मुहरिम निकाह कर सकता है। इमाम साहब के इस मुकिफ से इत्तेफाक नहीं किया जा सकता क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुहरिम को ऐसा करने से मना फरमाया है। जैसा कि सही मुस्लिम में हजरत मैमूना रजि. और उनके गुलाम अबू राफिअ

रजि. का बयान भी हजरत इब्ने अब्बास रजि.की इस रिवायत के खिलाफ है, इस बिना पर यह रिवायत मरजूह या काबिले ताविल है। (औनुलबारी, 2/707)

बाब 9 : मुहरिम का नहाना (अहराम की हालत में नहाना)

٩ - باب: الاغْتِسالُ لِلْمُحْرِمِ

894 : अबू अय्युब अन्सारी रजि. से रिवायत है कि उनसे पूछा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अहराम की हालत में सर किस तरह धोया करते थे? अबू अय्यूब रजि. ने अपना हाथ कपड़े पर रखकर उसे इतना नीचे किया कि मुझे आपका सर नजर आने लगा। फिर एक आदमी से पानी डालने के लिए कहा। उसने आपके सर पर पानी डाला तो उन्होंने अपने सर को दोनों हाथों से हिलाया, हाथों को आगे लाये और पीछे ले गये और कहा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऐसा ही करते देखा है।

٨٩٤ : عَنْ أَبي أَيُّوبَ الأَنْصارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ قِيلَ لَهُ: كَيْفَ كانَ رَسولُ ٱللهِ ﷺ يَغْسِلُ رَأْسَهُ وهُوَ مُحْرِمٌ؟. فَوَضَعَ أَبو أَيُّوبَ يَدَهُ عَلَى الثَّوْبِ فَطَأْطَأَهُ حَتَّى بَدَا لِي رَأْسُهُ، ثُمَّ قالَ لإِنْسانٍ يَصُبُّ عَلَيْهِ: اَصْبُبْ، فَصَبَّ عَلَى رَأْسِهِ، ثُمَّ حرَّكَ رَأْسَهُ بِيَدَيْهِ فَأَقْبَلَ بِهِمَا وَأَدْبَرَ، وَقالَ: هٰكَذَا رَأَيْتُهُ ﷺ يَفْعَلُ. [رواه البخاري: ١٨٤٠]

फायदे : मुहरिम के लिए गुस्ले जनाबत तो बिल इत्तेफाक जाइज है। अलबत्ता गुस्ले नजाफत में इख्तिलाफ है। इस हदीस का आगाज यूँ है कि हजरत इब्ने अब्बास रजि.और हजरत मिस्वर बिन मखरमा रजि.का मुहरिम के लिए सर धोने के बारे में इख्तिलाफ हुआ तो उन्होंने हजरत अबू अय्यूब से उसके बारे में पूछा। (औनुलबारी,2/708)

बाब 10 : मक्का और हरम में बगैर अहराम दाखिल होना।

١٠ - باب: دُخُولُ الحَرَمِ وَمَكَّةَ بِغَيْرِ إِحْرَامٍ

٨٩٥ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ دَخَلَ عَامَ الْفَتْحِ وَعَلَى رَأْسِهِ الْمِغْفَرُ، فَلَمَّا نَزَعَهُ جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: إِنَّ ابْنَ خَطَلٍ مُتَعَلِّقٌ بِأَسْتَارِ الْكَعْبَةِ، فَقَالَ: (اُقْتُلُوهُ). [رواه البخاري: ١٨٤٦]

890 : अनस रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फतेह मक्का के साल मक्का में दाखिल हुये तो आपके सर पर एक खूद (लोहे का टोप) था, आपने उसे उतारा तो एक आदमी आपके पास आकर कहने लगा, इब्ने खतल काफिर काबा के पर्दों में लटका हुआ है। आपने फरमाया उसे वहीं कत्ल कर दो।

फायदे : मालूम हुआ कि दुश्मन के मुतवक्के हमले के पेशे नजर हिफाजती इकदामात करना भरोसे के खिलाफ नहीं, नीज मक्का के हरम में शरई हदूद कायम की जा सकती है।

(औनुलबारी, 2/712)

---

١١ - باب: الحَجُّ وَالنُّذُورُ عَنِ المَيِّتِ وَالرَّجُلُ يَحُجُّ عَنِ المَرْأَةِ

बाब 11 : मय्यत की तरफ से हज और नजर का पूरा करना, नीज मर्द का औरत की तरफ से हज करना।

٨٩٦ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ ٱمْرَأَةً مِنْ جُهَيْنَةَ، جَاءَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: إِنَّ أُمِّي نَذَرَتْ أَنْ تَحُجَّ، فَلَمْ تَحُجَّ حَتَّى مَاتَتْ، أَفَأَحُجُّ عَنْهَا؟. قَالَ: (نَعَمْ، حُجِّي عَنْهَا، أَرَأَيْتِ لَوْ كَانَ عَلَى أُمِّكِ دَيْنٌ أَكُنْتِ قَاضِيَةً عَنْهَا؟. اقْضُوا ٱللهَ، فَٱللهُ أَحَقُّ بِالْوَفَاءِ). [رواه البخاري: ١٨٥٢]

896 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, कबिला जुहैना की एक औरत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाजिर हुई और कहा कि मेरी माँ ने हज करने की मिन्नत मानी थी, लेकिन वह हज से पहले ही मर गयी, क्या मैं उसकी तरफ से हज करूं? आपने फरमाया

हां, तू उसकी तरफ से हज कर। भला बता अगर तेरी मां पर कुछ कर्ज होता तो उसे अदा करती? फिर अल्लाह का कर्ज भी अदा करो, उसकी अदायगी तो बहुत जरूरी है।

फायदे : अल्लाह का हक अदा करने में मर्द और औरत सब आ गये। यानी मर्द का औरत की तरफ से और औरत का मर्द की तरफ से हज करना बिल इत्तेफाक जाइज है। यह भी मालूम हुआ कि मय्यत की तरफ से हज करना जाइज है। (औनुलबारी, 2/713)

बाब 12 : बच्चों का हज करना।

١٢ - باب: حَجُّ الصِّبْيَانِ

897 : सायिब बिन यजीद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हज कराया गया था, जबकि मैं उस वक़्त सात बरस का था।

٨٩٧ : عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: حُجَّ بِي مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَأَنَا ابْنُ سَبْعِ سِنِينَ. [رواه البخاري: ١٨٥٨]

फायदे : सही मुस्लिम में है कि एक औरत ने अपना बच्चा उठाकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि इसका हज सही है? आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हां तुझे इसका सवाब मिलेगा। इससे मालूम हुआ कि बच्चे का हज मशरूअ है। लेकिन यह हज फर्ज को साकित नहीं करेगा, बल्कि बालिग होने के बाद फर्ज हज करना होगा।

(औनुलबारी, 2/715)

बाब 13 : औरतों का हज करना।

١٣ - باب: حَجُّ النِّسَاءِ

898 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज

٨٩٨ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا رَجَعَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ حَجَّتِهِ، قَالَ لِأُمِّ سِنَانٍ الأَنْصَارِيَّةِ:

(مَا مَنَعَكِ مِنَ الحَجِّ؟). قَالَتْ: أَبُو فُلَانٍ، تَعْنِي زَوْجَهَا، كَانَ لَهُ نَاضِحَانِ حَجَّ عَلَى أَحَدِهِمَا، وَالآخَرُ يَسْقِي أَرْضًا لَنَا. قَالَ: (فَإِنَّ عُمْرَةً فِي رَمَضَانَ تَقْضِي حَجَّةً مَعِي). [رواه البخاري: ١٨٦٣]

से वापस हुये तो उम्मे सनान रजि. से फरमाया, तुम्हें हज से किस बात ने रोका था? उसने कहा कि फलां आदमी यानी शौहर के हमारे पास दो ऊंट पानी भरने के लिए थे, एक पर तो वह हज को चले गये और दूसरा खेती करने के लिए था। आपने फरमाया, (अच्छा तुम उमरह कर लो), रमजान में जो उमरह करे वह मेरे साथ हज के बराबर होता है।

फायदे : इसका मतलब यह नहीं है कि रमजान में उमरह करने से हज फर्ज की जरूरत नहीं रहेगी, इस हदीस में सिर्फ सवाब को बयान किया गया है और लोगों को रमजानुल मुबारक में उमरह करने की तरगीब दी गई है। (औनुलबारी,2/716)

٨٩٩ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، وَقَدْ غَزَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ثِنْتَي عَشْرَةَ غَزْوَةً، قَالَ: أَرْبَعٌ سَمِعْتُهُنَّ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَأَعْجَبْنَنِي وَآنَقْنَنِي: (أَنْ لَا تُسَافِرَ امْرَأَةٌ مَسِيرَةَ يَوْمَيْنِ لَيْسَ مَعَهَا زَوْجُهَا أَوْ ذُو مَحْرَمٍ، وَلَا صَوْمَ يَوْمَيْنِ: الفِطْرِ وَالأَضْحَى، وَلَا صَلَاةَ بَعْدَ صَلَاتَيْنِ: بَعْدَ العَصْرِ حَتَّى تَغْرُبَ الشَّمْسُ، وَبَعْدَ الصُّبْحِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ، وَلَا تُشَدُّ الرِّحَالُ إِلَّا إِلَى ثَلَاثَةِ مَسَاجِدَ: مَسْجِدِ الحَرَامِ، وَمَسْجِدِي، وَمَسْجِدِ الأَقْصَى). [رواه البخاري: ١٨٦٤]

899 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बारह गजवात (जंगों) में शरीक हुये, फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से चार बातें सुनी हैं जो मुझे बहुत अच्छी और भली मालूम होती हैं। एक यह कि कोई औरत दो दिन का सफर बगैर महरम या शौहर के न करे, ईदुलफितर और ईदुलअजहा का रोजा न रखा जाये

और नमाज़ असर के बाद सूरज डूबने तक और सुबह की नमाज़ के बाद सूरज उगने तक कोई नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए और तीन मस्जिदों में, मस्जिदे हराम और मेरी मस्जिद और मस्जिदे अकसा के अलावा किसी की दूसरी मस्जिद की तरफ रख्ते सफर न बांधा जाये।

फायदे : औरतों के साथ हज में भी महरम का होना जरूरी है। जो औरतें किसी अजनबी को महरम बनाकर हज पर जाती हैं वो दुगुने गुनाह का इरतेकाब करती है। एक तो हदीस की खिलाफत और दूसरे झूठ की लानत। ऐसा करना सवाब के बजाये गुनाह कमाना है।

बाब 14 : जो आदमी काबा तक पैदल जाने की मिन्नत माने।

١٤ - باب: مَنْ نَذَرَ المَشْيَ إِلَى الكَعْبَةِ

900 : अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बूढ़े को देखा जो अपने दो बेटों के सहारे चल रहा था, आपने पूछा, इसे क्या हुआ है? लोगों ने कहा कि इसने पैदल जाने की नजर मानी है। आपने फरमाया यह अपनी जान को तकलीफ दे रहा है। अल्लाह इससे बे-नयाज है, फिर आपने उसे हुक्म दिया कि सवार होकर जाये।

٩٠٠ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى شَيْخًا يُهَادَى بَيْنَ ٱبْنَيْهِ، قَالَ: (مَا بَالُ هٰذَا؟). قَالُوا: نَذَرَ أَنْ يَمْشِيَ. قَالَ: (إِنَّ ٱللهَ عَنْ تَعْذِيبِ هٰذَا نَفْسَهُ لَغَنِيٌّ). وَأَمَرَهُ أَنْ يَرْكَبَ. [رواه البخاري: ١٨٦٥]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे अपनी नजर को पूरा करने का हुक्म नहीं दिया, क्योंकि ऐसे हालात में सवार होकर हज करना पैदल हज करने से ज्यादा फज़ीलत रखता है या इसलिए कि उसमें पैदल चलने की ताकत न थी।

901 : उकबा बिन आमिर रजि. से

٩٠١ : عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ

اَللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: نَذَرَتْ أُخْتِي أَنْ تَمْشِيَ إِلَى بَيْتِ ٱللهِ، وَأَمَرَتْنِي أَنْ أَسْتَفْتِيَ لَهَا النَّبِيَّ ﷺ فَاسْتَفْتَيْتُ لَها، فَقالَ ﷺ: (لِتَمْشِ وَلْتَرْكَبْ).
[رواه البخاري: ١٨٦٦]

रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मेरी बहन ने बैतुल्लाह तक पैदल जाने की नज़र मानी और मुझे हुक्म दिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उसके बारे में पूछूं, चूनांचे मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया तो आपने फरमाया कि वह पैदल भी चले और सवार भी हो जाये।

फायदे : एक रिवायत में है कि वह कमजोरी की बिना पर इस नजर को पूरा करने से लाचार थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उसकी कमजोरी के बारे में शिकायत भी की गई, तब आपने यह हुक्म फरमाया। (औनुलबारी, 2/721)



किताबो फजाइलिल मदीना

फजाइले मदीना के बयान में

बाब 1 : मदीना के हरम का बयान।

١ - باب: حَرَمُ المَدِينَةِ

902 : अनस रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, मदीना फलाँ मकाम से फलाँ मकाम तक हरम है, यहां का पेड़ न काटा जाये और न उसमें किसी बिदअत का इरतेकाब किया जाये, जिसने यहां कोई बिदअत पैदा की, उस पर अल्लाह, फरिश्तों और सब लोगों की लानत है।

٩٠٢ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (المَدِينَةُ حَرَمٌ مِنْ كَذَا إِلَى كَذَا، لاَ يُقْطَعُ شَجَرُهَا، وَلاَ يُحْدَثُ فِيهَا حَدَثٌ، مَنْ أَحْدَثَ فِيهَا حَدَثًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ ٱللهِ والمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ). [رواه البخاري: ١٨٦٧]

फायदे : एक रिवायत में है कि यह लानत जदगी हर आदमी के लिए है जो बिदअत का इरतकाब करे या किसी बिदअती को अपने यहां पनाह दे। मालूम हुआ कि बिदअत एक ऐसा संगीन जुर्म है कि आदमी इस किस्म के मुर्तकिब को पनाह देने पर भी लानती हो जाता है।

---

903 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, मदीना के दोनों

٩٠٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (حُرِّمَ مَا بَيْنَ لاَبَتَي المَدِينَةِ عَلَى لِسَانِي). قَالَ: وَأَتَى النَّبِيُّ ﷺ بَنِي حَارِثَةَ،

فَقَالَ: (أَرَاكُمْ يَا بَنِي حَارِثَةَ قَدْ خَرَجْتُمْ مِنَ الحَرَمِ). ثُمَّ الْتَفَتَ فَقَالَ: (بَلْ أَنْتُمْ فِيهِ). [رواه البخاري: ١٨٦٩]

पत्थरीले मुकामों के बीच का हिस्सा मेरी जबान पर काबिले अहतराम ठहराया गया है। रावी कहता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कबीला बनी हारिसा के पास तशरीफ ले गये और फरमाया कि मैं समझता हूँ, तुम लोग हरम से बाहर हो गये हो। फिर आपने इधर उधर देखकर फरमाया, नहीं तुम हरम के अन्दर ही हो।

फायदे : जबले इर से लेकर जबले सोर तक का इलाका हरम मदीना में शामिल किया गया है। वाजेह रहे कि जबले सोर उहद के पीछे की तरफ एक छोटी सी पहाड़ी है, जिसे मदीना के बाशिन्दे खूब पहचानते हैं। (औनुलबारी, 2/724)

٩٠٤ : عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: مَا عِنْدَنَا شَيْءٌ إِلَّا كِتَابُ ٱللهِ تَعَالَى وَهٰذِهِ الصَّحِيفَةُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى ٱللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: (المَدِينَةُ حَرَمٌ، مَا بَيْنَ عَائِرٍ إِلَى كَذَا، مَنْ أَحْدَثَ فِيهَا حَدَثًا، أَوْ آوَى مُحْدِثًا، فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ ٱللهِ وَالمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَدْلٌ. وَقَالَ: ذِمَّةُ المُسْلِمِينَ وَاحِدَةٌ، فَمَنْ أَخْفَرَ مُسْلِمًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ ٱللهِ وَالمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَدْلٌ. وَمَنْ تَوَلَّى قَوْمًا بِغَيْرِ إِذْنِ مَوَالِيهِ، فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ ٱللهِ وَالمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَدْلٌ). [رواه البخاري: ١٨٧٠]

904: अली रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हमारे पास कुछ नहीं, मगर किताबुल्लाह या फिर यह सहीफा जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मनकूल है (उसमें है) कि मदीना पहाड़ इर से फलाँ जगह तक काबिले एहतेराम है। लिहाजा जो आदमी इसमें कोई नई बात (बिदअत या दस्तदराजी) करेगा, या नई बात करने वाले को जगह देगा, उस पर अल्लाह, फरिश्तों और सब लोगों की लानत है। उसकी न नफ़्ल इबादत कुबूल

होगी और न कोई फर्ज इबादत। नीज फरमाया कि मुसलमानों में पास अहद की जिम्मेदारी एक मुश्तर्का जिम्मेदारी है। अब जो कोई मुसलमान वादा तोड़े, उस पर अल्लाह, फरिश्तों और सब इन्सानों की लानत है। उसका नफ़्ल कुबूल होगा न फर्ज। और जो आदमी (आजाद कर्दा गुलाम) अपने आकाओं की इजाजत के बगैर किसी कौम से मुआइदा मवालात करेगा, उस पर भी अल्लाह, फरिश्तों और सब इन्सानों की लानत है। उसकी न कोई नफ़्ल इबादत कुबूल होगी और न फर्ज इबादत।

फायदे : इस हदीस से उन रवाफिज वशीआ की भी तरदीद होती है जो दावा करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने राजदारी के तौर पर हज़रत अली रज़ि. को कुछ बातें इरशाद फरमायीं थी और वसीयतें भी की थी। (औनुलबारी,2/730)

बाब 2 : मदीना की बड़ाई और उसका बुरे आदमियों को निकालना।

٢ - باب: فَضْلُ المَدِينَةِ وَأَنَّهَا تَنْفِي النَّاس

905 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मुझे एक ऐसी बस्ती में जाने का हुक्म हुआ, जो दूसरी बस्तियों को अपने अन्दर जजब कर लेगी, लोग उसे यसरिब कहते हैं। हालांकि उसका सही नाम मदीना है वह बुरे आदमियों को इस तरह निकाल देगी जैसे भट्टी लोहे की मैल-कुचेल निकाल देती है।

٩٠٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أُمِرْتُ بِقَرْيَةٍ تَأْكُلُ القُرَى، يَقُولُونَ يَثْرِبُ، وَهِيَ المَدِينَةُ، تَنْفِي النَّاسَ كما يَنْفِي الْكِيرُ خَبَثَ الحَدِيدِ). [رواه البخاري: ١٨٧١]

फायदे : इस हदीस में मदीना मुनव्वरा की बड़ाई बयान की गई है कि यह दूसरे शहरों का पाया तहत और दारूले हुकूमत बन जायेगा।

चूनांचे आपकी यह पेशीन गोयी हरफ-ब-हरफ पूरी हुई। मदीना एक मुद्दत तक ईरान, तूरान, मिस्र, और शाम का दारूल खिलाफा (राजधानी) रहा।

बाब 3 : मदीना का एक नाम ताबा है।

٣ - باب: المَدِينَةُ طَابَةٌ

906 : अबू हुमैद रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ तबूक से लौट कर मदीना के करीब पहुंचे तो आपने फरमाया कि यह ताबा यानी पाक जगह है।

٩٠٦ : عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ [السَّاعِدِيِّ] رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَقْبَلْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ مِنْ تَبُوكَ، حَتَّى أَشْرَفْنَا عَلَى المَدِينَةِ، فَقَالَ: (هَذِهِ طَابَةٌ). [رواه البخاري: ١٨٧٢]

फायदे : मदीना मुनव्वरा के कई एक नाम हैं जो उसकी शर्फ व मंजीलत पर दलालत करते हैं। ताबा, तयबा, और तायब उनका इश्तिकाक एक ही है, क्योंकि उसे शिर्क और बिदअत से पाक करार दिया गया और उसकी फिजां और आबो हवा को खुशगवार बना दिया गया। (औनुलबारी, 2/734)

बाब 4 : जो आदमी मदीना से नफरत करे।

٤ - باب: مَنْ رَغِبَ عَنِ المَدِينَةِ

907 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि एक जमाने में लोग मदीना को बहुत अच्छी हालत में छोड़ेंगे और वहां सिवाये अवाफी यानी परिन्दों और खुराक के चाहने वाले दरिन्दों के

٩٠٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (يَتْرُكُونَ المَدِينَةَ عَلَى خَيْرِ مَا كَانَتْ، لَا يَغْشَاهَا إِلَّا العَوَافِ - يُرِيدُ عَوَافِيَ السِّبَاعِ وَالطَّيْرِ - وَآخِرُ مَنْ يُحْشَرُ رَاعِيَانِ مِنْ مُزَيْنَةَ، يُرِيدَانِ المَدِينَةَ، يَنْعِقَانِ بِغَنَمِهِمَا فَيَجِدَانِهَا وُحُوشًا، حَتَّى إِذَا بَلَغَا ثَنِيَّةَ الوَدَاعِ خَرَّا عَلَى وُجُوهِهِمَا). [رواه البخاري: ١٨٧٤]

और कोई न रहेगा और आखिर में कबिला मुजैना के दो चरवाहे मदीना आयेंगे। इसलिए कि अपनी बकरियों को हांक कर ले जायें, वह मदीना को वहशी जानवरों से भरा हुआ पायेंगे। जब वह शनीयतुल वदाअ पहुंचेगे तो मुंह के बल गिर जायेंगे।

फायदे : कुछ रिवायत से पता चलता है कि करीब कयामत के वक्त मदीना मुनव्वरा विरान हो जायेगा, यहां दरिन्दे और भेड़ियों का कब्जा होगा। एक दूसरी हदीस में है कि कयामत के नजदीक मदीना आखरी बस्ती होगी जो तबाही और बर्बादी से दो-चार होगी। (औनुलबारी, 2/738)

---

٩٠٨ : عَنْ سُفْيَانَ بْنِ أَبِي زُهَيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: (تُفْتَحُ الْيَمَنُ، فَيَأْتِي قَوْمٌ يُبِسُّونَ، فَيَتَحَمَّلُونَ بِأَهْلِيهِمْ وَمَنْ أَطَاعَهُمْ، وَالْمَدِينَةُ خَيْرٌ لَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ. وَتُفْتَحُ الشَّأْمُ، فَيَأْتِي قَوْمٌ يُبِسُّونَ، فَيَتَحَمَّلُونَ بِأَهْلِيهِمْ وَمَنْ أَطَاعَهُمْ، وَالْمَدِينَةُ خَيْرٌ لَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ. وَتُفْتَحُ الْعِرَاقُ، فَيَأْتِي قَوْمٌ يُبِسُّونَ، فَيَتَحَمَّلُونَ بِأَهْلِيهِمْ وَمَنْ أَطَاعَهُمْ، وَالْمَدِينَةُ خَيْرٌ لَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ). [رواه البخاري: ١٨٧٥]

908 : सुफियान बिन अबू जुहैरी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुये सुना, जब यमन फतेह होगा तो कुछ लोग अपने ऊंटों को हांकते हुए आयेंगे और अपने घर वालों को और जो उनका कहा मानेंगे, उन्हें सवार करके मदीना से ले जायेंगे। हालांकि वह जान लें तो मदीना उनके लिए बेहतरीन जगह है और जब शाम (सिरिया) फतह होगा तक भी एक जमाअत अपने ऊंट हांकती आयेगी और अपने घर वालों को और उन लोगों को जो उनका कहा मानेंगे (मदीना से) लाद कर ले जायेंगी। काश वह लोग जानते कि मदीना उनके लिए बेहतर है। इसी तरह इराक फतेह होगा तो भी कुछ लोग

अपने जानवर हांकते आयेंगे और मदीना से अपने घर वालों और रिश्तेदारों को निकाल कर ले जायेंगे। काश वह जानते कि मदीना उनके लिए बेहतर था।

फायदे : मदीना मुनव्वरा से निकलकर किसी दूसरे शहर में आबाद होने वाला वह आदमी नफरत के लायक है जो नफरत और कराहत करते हुये यहां से चला जाये। अलबत्ता अपनी किसी जरूरत के पेशे नजर यहां से जाने वाला इस धमकी से बाहर है। (औनुलबारी, 2/740)

٥ - باب: الإيمَانُ يَأرِزُ إلَى المَدِينَةِ

बाब 5 : ईमान मदीना की तरफ सिमट आयेगा।

٩٠٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إنَّ الإيمانَ لَيَأْرِزُ إلَى المَدِينَةِ، كما تَأْرِزُ الحَيَّةُ إلَى جُحْرِهَا). [رواه البخاري: ١٨٧٦]

909 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया (कयामत के करीब) ईमान मदीना की तरफ इस तरह सिमट कर आ जायेगा, जिस तरह सांप अपने बिल की तरफ सिमट जाता है।

फायदे : ईमान का सरचश्मा मदीना मुनव्वरा से फूटा, आखिरकार मदीना में ही ईमान को पनाह मिलेगी। लोग अपने ईमान को बचाने के लिए गिरोह दर गिरोह मदीना की तरफ हिजरत करके आयेंगे। अल्लाह तआला हमें मदीना मुनव्वरा में शहादत की मौत अता फरमाये।

٦ - باب: إثْمُ مَنْ كَادَ أهْلَ المَدِينَةِ

बाब 6 : जो मदीना वालों से धोका करे, उसका गुनाह।

٩١٠ : عَنْ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (لا

910 : सअद रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मैंने नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुये सुना जो आदमी मदीना वालों से धोका करेगा, वह इस तरह घुल जायेगा, जैसे नमक पानी में घुल जाता है।

يَكِيدُ أَهْلَ الْمَدِينَةِ أَحَدٌ إِلَّا انْمَاعَ، كما يَنْماعُ الْمِلْحُ فِي الْمَاءِ). [رواه البخاري: ١٨٧٧]

फायदे : मुस्लिम की एक हदीस में है कि मदीना वालों के साथ धोका करने वाले को अल्लाह तआला आग में इस तरह पिघला देगा, जिस तरह नमक पानी में पिघल जाता है। इससे मालूम होता है कि इस सजा का ताल्लुक आखिरत से है। (औनुलबारी,2/743)

बाब 7 : मदीना के महलों का बयान।

٧ - باب: آطام المدينة

911 : उसामा बिन जैद रज़ि. से रिवायत है,उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना के महलों में से किसी महल पर चढ़े तो फरमाया, क्या तुम वह देखते हो जो मैं देख रहा हूँ? बेशक मैं तुम्हारे घरों में फितनों के मकामात इस तरह देख रहा हूँ, जैसे बारिश का कतरा गिरने की जगह नजर आती है, यानी वो फितने कसरत में बारिश की तरह होंगे।

٩١١ : عَنْ أُسَامَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَشْرَفَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى أُطُمٍ مِنْ آطَامِ الْمَدِينَةِ، فَقَالَ: (هَلْ تَرَوْنَ مَا أَرَى؟، إِنِّي لأَرَى مَوَاقِعَ الْفِتَنِ خِلاَلَ بُيُوتِكُمْ كَمَوَاقِعِ الْقَطْرِ). [رواه البخاري: ١٨٧٨]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फरमान हु-बहू पूरा हुआ। जब से फितनों की आड़ में हज़रत उमर रज़ि. शहीद किये गये, उस वक्त से गंभीर फितनों का आगाज हुआ। चूनांचे हज़रत उसमान रज़ि. की मजलूमाना शहादत उन्हीं फितनों का नतीजा साबित हुई।

बाब 8 : दज्जाल मदीना के अन्दर दाखिल नहीं हो सकेगा।

٨ - باب: لا يدخل الدَّجَّالُ المَدِينَةَ

912 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि मदीना में दज्जाल का रोब और डर दाखिल नहीं होगा। उस वक़्त मदीना के सात दरवाजे होंगे और हर दरवाजे पर दो फरिश्तें पहरा देंगे।

٩١٢ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لاَ يَدْخُلُ المَدِينَةَ رُعْبُ المَسِيحِ الدَّجَّالِ، لَهَا يَوْمَئِذٍ سَبْعَةُ أَبْوَابٍ، عَلَى كُلِّ بَابٍ مَلَكَانِ). [رواه البخاري: ١٨٧٩]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में मदीना के इर्द-गिर्द दीवार न थी और न ही उसमें दरवाजे नसब थे। अब मदीना और मदीना वालो की हिफाजत के लिए यह काम शुरू हो चुका है।

913 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "मदीना के दरवाजों पर फरिश्ते पहरा देंगे, वहां न तो मर्जे ताउन दाखिल होगी और न ही दज्जाल आयेगा।

٩١٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (عَلَى أَنْقَابِ المَدِينَةِ مَلاَئِكَةٌ، لاَ يَدْخُلُهَا الطَّاعُونُ وَلاَ الدَّجَّالُ). [رواه البخاري: ١٨٨٠]

फायदे : अल्लाह तआला ने मदीना वालों को ताउन की वबा और फितना दज्जाल से महफूज रखा है। यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआओं का नतीजा है कि अल्लाह तआला ने मदीना को आम वबाई आफतों से महफूज रखा है। (औनुलबारी, 2/746)

914 : अनस रजि.से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया हर शहर में दज्जाल का

٩١٤ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَيْسَ مِنْ بَلَدٍ إِلَّا سَيَطَؤُهُ الدَّجَّالُ، إِلَّا مَكَّةَ وَالمَدِينَةَ، لَيْسَ لَهُ مِنْ

بِقَابِهَا نَقْبٌ إِلَّا عَلَيْهِ المَلَائِكَةُ صَافِّينَ يَحْرُسُونَهَا، ثُمَّ تَرْجُفُ المَدِينَةُ بِأَهْلِهَا ثَلَاثَ رَجَفَاتٍ، فَيُخْرِجُ اللهُ كُلَّ كَافِرٍ وَمُنَافِقٍ). [رواه البخاري: ١٨٨١]

गुजर होगा, मगर मक्का और मदीना में। क्योंकि उनके हर रास्ते पर फरिश्ते सफ बस्ता पहरा देंगे। फिर मदीना अपने मकिनों को तीन बार खूब जोर से हिला देगा और अल्लाह हर मुनाफिक और काफिर को उसमें से निकाल देगा।

फायदे : यह हदीस इन हालात के खिलाफ नहीं जिनमें है कि मदीना में दज्जाल का रोब दाखिल नहीं होगा, क्योंकि यह जलजले तो मुनाफिकिन को निकालने के लिए होंगे। ताकि मदीना मुनव्वरा को उनकी गन्दगी से पाक किया जाये। (औनुलबारी, 2/749)

٩١٥ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ حَدِيثًا طَوِيلًا عَنِ ٱلدَّجَّالِ، فَكَانَ فِيمَا حَدَّثَنَا بِهِ أَنْ قَالَ: (يَأْتِي ٱلدَّجَّالُ، وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْهِ أَنْ يَدْخُلَ نِقَابَ المَدِينَةِ، فَيَنْزِلُ بَعْضَ السِّبَاخِ الَّتِي بِالمَدِينَةِ، فَيَخْرُجُ إِلَيْهِ يَوْمَئِذٍ رَجُلٌ هُوَ خَيْرُ النَّاسِ، أَوْ مِنْ خَيْرِ النَّاسِ، فَيَقُولُ: أَشْهَدُ أَنَّكَ ٱلدَّجَّالُ، الَّذِي حَدَّثَنَا عَنْكَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ حَدِيثَهُ. فَيَقُولُ ٱلدَّجَّالُ: أَرَأَيْتَ إِنْ قَتَلْتُ هٰذَا ثُمَّ أَحْيَيْتُهُ هَلْ تَشُكُّونَ فِي الأَمْرِ؟ فَيَقُولُونَ: لَا، فَيَقْتُلُهُ ثُمَّ يُحْيِيهِ، فَيَقُولُ حِينَ يُحْيِيهِ: وَٱللهِ مَا كُنْتُ قَطُّ أَشَدَّ مِنِّي بَصِيرَةً ٱلْيَوْمَ، فَيَقُولُ ٱلدَّجَّالُ: أَقْتُلُهُ. فَلَا يُسَلَّطُ عَلَيْهِ). [رواه البخاري: ١٨٨٢]

915 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें दज्जाल के बारे में एक लम्बी हदीस बयान फरमाई, इस हदीस में यह भी था कि दज्जाल आयेगा और मदीना से बाहर एक शोरीली जमीन में ठहरेगा, क्योंकि इस पर मदीना के अन्दर आना तो हराम कर दिया गया है। फिर अहले मदीना से वह आदमी उसके पास जायेगा जो उस वक्त के तमाम लोगों से बेहतर होगा। वह कहेगा, मैं गवाही देता हूँ कि तू ही वह दज्जाल है, जिसके बारे में

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें हदीस बयान फरमायी थी। दज्जाल कहेगा, बताओ अगर मैं उस आदमी को कत्ल करके उससे दोबारा जिन्दा करूं तो क्या तुम फिर भी मेरी उलूहियत में शक करोगे? लोग कहेंगे, नहीं। चूनांचे दज्जाल उस आदमी को कत्ल कर देगा और फिर जिन्दा कर देगा। जब दज्जाल उसे दोबारा जिन्दा करेगा तो वह आदमी कहेगा, अल्लाह की कसम! अब तो मैं और ज्यादा तेरे हाल से वाकिफ हो गया हूँ। दज्जाल कहेगा कि मैं फिर उसे कत्ल करता हूँ, मगर फिर वह उस पर काबू न पा सकेगा।

फायदे : दज्जाल में इतनी ताकत नहीं कि वह किसी को मारकर दोबारा जिन्दा कर सके, क्योंकि जिन्दा करना और मारना तो अल्लाह की खूबी है, लेकिन अल्लाह तआला ईमान वाले को आजमाने के लिए दज्जाल के हाथों यह करिश्मा जाहिर करेगा ताकि ईमान वाले और मुनाफिकीन के बीच खत इम्तीयाज साबित हो।

बाब 9 : मदीना बुरे आदमी को निकाल देता है।

٩ - باب: المَدِينَةُ تَنْفِي الخَبَثَ

916 : जाबिर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक अराबी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और आप से इस्लाम पर बैअत की और वह दूसरे रोज बुखार में मुब्तला हो गया और आपके पास आकर कहने लगा कि आप अपनी बैअत वापिस ले लें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बार इन्कार करते हुये फरमाया कि मदीना भट्टी की तरह है कि वह बुरी

٩١٦ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَبَايَعَهُ عَلَى الإِسْلاَمِ، فَجَاءَ مِنَ الغَدِ مَحْمُومًا، فَقَالَ: أَقِلْنِي، فَأَبَى ثَلاَثَ مِرَارٍ، فَقَالَ: (المَدِينَةُ كَالْكِيرِ تَنْفِي خَبَثَهَا، وَيَنْصَعُ طَيِّبُهَا). [رواه البخاري: ١٨٨٣]

चीज को तो निकाल देती है और उम्दा चीज को खालिस कर देती है।

फायदे : मदीना मुनव्वरा का यह वसफ आम नहीं, बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाना के साथ खास था कि आपके जमाने में मदीना से नफरत करते हुये वही निकलता था जिसके दिल में ईमान का शायबा तक न होता था। नबी सल्ल. के जमाने के बाद बे-शुमार सहाबा किराम ने दावत और तबलीग की खातिर मदीना को खैरबाद कह दिया था।

(औनुलबारी, 2/782)

बाब 10 : ١٠ - باب

٩١٧ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (اللَّهُمَّ ٱجْعَلْ بِالْمَدِينَةِ ضِعْفَيْ مَا جَعَلْتَ بِمَكَّةَ مِنَ الْبَرَكَةِ). [رواه البخاري: ١٨٨٥]

917 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, ऐ अल्लाह जितनी बरकत तूने मक्का में रखी है, उससे दोगुनी बरकत मदीना में कर दे।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस दुआ का नतीजा यह है कि वहां खाने पीने की एक चीज से ऐसी सैराबी हासिल होती है कि दूसरे शहरों में इस तरह की दो-तीन चीजें खाने से भी नहीं होती, चूनांचे अगली हदीस में इसका खुलासा मौजूद है। (औनुलबारी, 2/784)

बाब 11 : ١١ - باب

٩١٨ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا قَدِمَ رَسُولُ ٱللهِ صَلَّى ٱللهُ

918: आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब रसूलुल्लाह

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ وُعِكَ أَبُو بَكْرٍ وَبِلَالٌ، فَكَانَ أَبُو بَكْرٍ إِذَا أَخَذَتْهُ الْحُمَّى يَقُولُ:

كُلُّ آمْرِئٍ مُصَبَّحٌ فِي أَهْلِهِ
وَالْمَوْتُ أَدْنَى مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهِ

وَكَانَ بِلَالٌ إِذَا أُقْلِعَ عَنْهُ الْحُمَّى يَرْفَعُ عَقِيرَتَهُ يَقُولُ:

أَلَا لَيْتَ شِعْرِي هَلْ أَبِيتَنَّ لَيْلَةً
بِوَادٍ وَحَوْلِي إِذْخِرٌ وَجَلِيلُ؟

وَهَلْ أَرِدَنْ يَوْمًا مِيَاهَ مَجَنَّةٍ؟
وَهَلْ يَبْدُوَنْ لِي شَامَةٌ وَطَفِيلُ؟

قَالَ: اللَّهُمَّ الْعَنْ شَيْبَةَ بْنَ رَبِيعَةَ، وَعُتْبَةَ بْنَ رَبِيعَةَ، وَأُمَيَّةَ بْنَ خَلَفٍ، كَمَا أَخْرَجُونَا مِنْ أَرْضِنَا إِلَى أَرْضِ الْوَبَاءِ. ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (اللَّهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الْمَدِينَةَ كَحُبِّنَا مَكَّةَ أَوْ أَشَدَّ، اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي صَاعِنَا وَفِي مُدِّنَا، وَصَحِّحْهَا لَنَا، وَانْقُلْ حُمَّاهَا إِلَى الْجُحْفَةِ). قَالَتْ: وَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ وَهِيَ أَوْبَأُ أَرْضِ اللهِ، قَالَتْ: فَكَانَ بُطْحَانُ يَجْرِي نَجْلًا، تَعْنِي مَاءً آجِنًا. [رواه البخاري: ١٨٨٩]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा तशरीफ लाये तो अबू बकर रज़ि. और बिलाल रज़ि. को बुखार आ गया। अब अबू बकर रज़ि. को जब बुखार आता तो यह शेअर पढते।

घर में अपने सुबह करता है, हर एक फर्दे बशर
मौत उसकी जूती के तसमें से है, नजदीक तर।

और बिलाल रज़ि. का जब बुखार उतरता तो बाआवाज बुलन्द यह शेअर कहते:

काश फिर मक्का की वादी में रहूँ मैं एक रात
सब तरफ आगे हो वहां जलील और इजखिर नबात
काश फिर देखूं मैं शामा काश फिर देखूं तफील
और पीऊं पानी मजिन्ना के जो हैं आबे हयात

"ऐ अल्लाह शयबा बिन रबिया, उतबा बिन रबिया, उमय्या बिन खलफ पर तेरी लानत हो, जिन्होंने हमारे मुल्क से हमें निकाल कर एक वबाई जमीन की तरफ धकेल दिया"। यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, " ऐ अल्लाह मदीना की मुहब्बत इस तरह

हमारे दिलों में डाल दे, जिस तरह हम मक्का से मुहब्बत करते हैं। बल्कि उससे भी ज्यादा। ऐ अल्लाह! हमारे साअ और मुद में बरकत फरमा और मदीना की आबो हवा हमारे लिए अच्छी कर दे और इसका बुखार जुहफा की तरफ भेज दे। आइशा रज़ि. फरमाती हैं कि जब मदीना आये तो वह अल्लाह की जमीनों में सब से ज्यादा वबाई जमीन थी और उस वक्त वादी बुत्हान में बदबूदार और बदमजा पानी बहता था।

फायदे : जलील और इजखिर दो किस्म की घास का नाम है। नीज शामा और तफील दो पहाड़ हैं, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का से हिजरत करके मदीना आये तो उस वक्त मदीना एक सख्त वबाई आबो हवा की लपेट में था। चूनांचे मदीना में आने वाले सख्त बुखार में मुब्तला हो जाते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ से यह वबाअ जुहफा में चली गयी जो उस वक्त मुश्रिकीन की बस्ती थी और मदीना की फिजां और आबो हवा बड़ी खुशगवार हो गयी। (औनुलबारी,2/756)

दुआ

इमाम बुखारी ने किताबुल हज को सय्यदना उमर फारूक रज़ि. की एक महबूब दुआ से खत्म किया है: "ऐ अल्लाह मुझे अपने रास्ते में शहादत नसीब फरमा और मेरी मौत तेरे महबूब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शहर में वाकेअ हो।" अल्लाह तआला ने इस दुआ को हरफ ब हरफ शरफ कबूलियत से नवाजा। चूनांचे मदीना मुनव्वरा 26 जिलहिजा 23 हिजरी बरोज बुध सुबह की नमाज़ पढ़ाते हुये शहीद हुये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हुजरे मुबारक में उन्हें दफन किया गया। (रज़ि.)। बन्दा आजिज मुतरजिम भी बसद इज्जो नियाज दुआ करता है कि ऐ अल्लाह! हमें भी शहादत की मौत अपने महबूब के शहर मदीना में नसीब फरमा।



किताबुस्सोम

रोजे के बयान में

लफ्ज सोम लुग्वी तौर पर रोक लेने को कहते हैं और शरीअत के इस्तलाह में इबादत की नियत से फज्र सूरज उगने के वक्त से सूरज ढ़लने के वक्त तक खाने पीने और अजदवाजी ताल्लुकात से दूर रहने का नाम रोजा है। इसके तफसीली अहकाम के लिए हमारी तालिफ " अहकामे सयाम " का मुतलआ फायदेमन्द रहेगा।

बाब 1 : रोजे की फजीलत।

١ - باب: فَضلُ الصَّوْمِ

919 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, रोजा (जहन्नम से) एक ढ़ाल है, लिहाजा रोज़ेदार को चाहिए कि वह न तो फहशकलामी (गाली गलौच) करे और न ही जाहिलों जैसा काम करे। अगर कोई आदमी उससे लड़े या उसे गाली दे तो उसको दो बार कह दे कि मैं रोजे से हूँ। उस जात की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है कि रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह के नजदीक कस्तूरी की खुशबू से ज्यादा

٩١٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (الصِّيَامُ جُنَّةٌ، فَلاَ يَرْفُثْ وَلاَ يَجْهَلْ، وَإِنِ ٱمْرُؤٌ قَاتَلَهُ أَوْ شَاتَمَهُ، فَلْيَقُلْ إِنِّي صَائِمٌ - مَرَّتَيْنِ - وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَخُلُوفُ فَمِ الصَّائِمِ أَطْيَبُ عِنْدَ ٱللهِ تَعَالَى مِنْ رِيحِ الْمِسْكِ، يَتْرُكُ طَعَامَهُ وَشَرَابَهُ وَشَهْوَتَهُ مِنْ أَجْلِي، الصِّيَامُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ، وَالحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا). [رواه البخاري: ١٨٩٤]

बेहतर है। अल्लाह का इरशाद है कि रोज़ेदार अपना खाना पीना और अपनी ख्वाहिश मेरे लिए छोड़ता है। लिहाजा रोजा मेरे ही लिए है और मैं ही इसका बदला दूंगा और हर नेकी का सवाब दस गुना है।

फायदे : रोज़ेदार के मुंह की बू कस्तूरी की खुशबू से ज्यादा बेहतर है और शहीद के खून की बू को मुश्क करार दिया गया है। हालांकि शहीद अल्लाह की राह में जान का नजराना पेश करता है। इसकी वजह यह है कि रोजा इस्लाम का रूक्न और फर्ज ऐन है। जबकि जिहाद फर्ज किफाया है। यह तफावुत इसी वजह से है। (औनुलबारी, 2/761)

बाब 2 : रय्यान रोजेदारों के लिए है।

٢ - باب: الرَّيَّانُ لِلصَّائِمِينَ

920 : सहल रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि जन्नत का एक दरवाजा है, जिसे रय्यान कहते हैं। कयामत के दिन रोज़ेदार उससे दाखिल होंगे। उनके अलावा दूसरा कोई उसमें से दाखिल न होगा।

٩٢٠ : عَنْ سَهْلٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنَّ فِي الجَنَّةِ بَابًا يُقَالُ لَهُ الرَّيَّانُ، يَدْخُلُ مِنْهُ الصَّائِمُونَ يَوْمَ القِيَامَةِ، لاَ يَدْخُلُ مِنْهُ أَحَدٌ غَيْرُهُمْ، يُقَالُ أَيْنَ الصَّائِمُونَ، فَيَقُومُونَ لاَ يَدْخُلُ مِنْهُ أَحَدٌ غَيْرُهُمْ، فَإِذَا دَخَلُوا أُغْلِقَ، فَلَمْ يَدْخُلْ مِنْهُ أَحَدٌ). [رواه البخاري: ١٨٩٦]

आवाज दी जायेगी, रोजेदार कहां हैं? तो वह उठ खड़े होंगे, उनके सिवा और कोई उसमें से दाखिल नहीं होगा। जब वह दाखिल हो जायेंगे तो उसे बन्द कर दिया जायेगा। कोई और उसमें से दाखिल न होगा।

फायदे : रय्यान का माना सैराबी है। चूंकि रोज़ेदार दुनिया में अल्लाह के लिए भूख और प्यास बर्दाश्त करते थे, इसलिए उन्हें बड़े

एजाज (इनामात) और एहतेराम के साथ उस सैराबी के दरवाजे से गुजारा जायेगा और वहां से गुजरते वक्त उन्हें ऐसा मशरूब (शर्बत) पिलाया जायेगा कि फिर कभी प्यास महसूस नहीं होगी। (औनुलबारी, 2/766)

---

921 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी अल्लाह की राह में बार बार खर्च करेगा तो उसे जन्नत के दरवाजों से बुलाया जायेगा और फरिश्ते कहेंगे, ऐ अल्लाह के बन्दे! यह दरवाजा बेहतर है, फिर नमाज़ियों को नमाज़ के दरवाजे से बुलाया जायेगा और मुजाहिदीन को जिहाद के दरवाजे से आवाज दी जायेगी और रोज़ेदारों को बाबे रय्यान से पुकारा जायेगा और सदका देने वालों को सदका के दरवाजे से अन्दर आने की दावत दी जायेगी। अबू बकर रज़ि. ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरे मां-बाप आप पर कुरबान हो, जो आदमी उन सब दरवाजों से पुकारा जायेगा, उसे तो कोई जरूरत न होगी। तो क्या कोई आदमी उन सब दरवाजों से पुकारा जायेगा? तो आपने फरमाया, हां मुझे उम्मीद है कि तुम उन लोगों में से होंगे।

٩٢١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ فِي سَبِيلِ ٱللهِ، نُودِيَ مِنْ أَبْوَابِ الجَنَّةِ: يَا عَبْدَ ٱللهِ هٰذَا خَيْرٌ، فَمَنْ كانَ مِنْ أَهْلِ الصَّلَاةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّلَاةِ، وَمَنْ كانَ مِنْ أَهْلِ ٱلْجِهَادِ دُعِيَ مِنْ بَابِ ٱلْجِهَادِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصِّيَامِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الرَّيَّانِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّدَقَةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّدَقَةِ). فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُولَ ٱللهِ، مَا عَلَى مَنْ دُعِيَ مِنْ تِلْكَ الأَبْوَابِ مِنْ ضَرُورَةٍ، فَهَلْ يُدْعَى أَحَدٌ مِنْ تِلْكَ الأَبْوَابِ كُلِّهَا؟. قَالَ: (نَعَمْ، وَأَرْجُو أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ). [رواه البخاري: ١٨٩٧]

फायदे : इस हदीस से कतई तौर पर हज़रत अबू बकर रजि.का जन्नती होना साबित होता है। बल्कि अम्बिया के बाद जन्नत वालों में से आला और अफजल होंगे कि फरिश्ते उन्हें जन्नत के हर दरवाजे से अन्दर आने की दावत देंगे।

---

922 : अबू हुरैरा रजि.से ही रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब रमजान आता है तो जन्नत के दरवाजे खुल जाते हैं।

٩٢٢ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِذَا جَاءَ رَمَضَانُ فُتِّحَتْ أَبْوَابُ الجَنَّةِ). [رواه البخاري: ١٨٩٨]

923 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही एक रिवायत में है। उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब रमजान का महीना आता है तो आसमान के दरवाजे खुल जाते हैं और दोजख के दरवाजे बन्द कर दिये जाते हैं और शयातीन को जकड़ दिया जाता है।

٩٢٣ : وَفِي رواية عَنْهُ - قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِذَا دَخَلَ رَمَضَانُ فُتِّحَتْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ، وَغُلِّقَتْ أَبْوَابُ جَهَنَّمَ، وَسُلْسِلَتِ الشَّيَاطِينُ). [رواه البخاري: ١٨٩٩]

फायदे : अब सवाल पैदा होता है कि रमजान में जब शैतानों को जंजीरों में जकड़ दिया जाता है तो सारी जमीन पर अल्लाह की नाफरमानी क्यों होती है? तो इसका जवाब यह है कि आदम अलैहि. की औलाद को गुमराह करने वाली कई ताकतें मुतहरीक हैं। सिर्फ एक ताकत को बेबस कर दिया जाता है।

बाब 3 : रमजान कहा जाये या माहे रमजान और बाज हजरात ने दोनों तरह जाइज ख्याल किया है।

٣ - باب: هَلْ يُقَالُ رَمَضَانُ أَوْ شَهْرُ رَمَضَانَ وَمَن رَأَى ذٰلِكَ كُلَّهُ

924 : इब्ने उमर रजि.से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना कि जब तुम रमजान का चांद देखो तो रोजा रखो और जब तुम शव्वाल का चांद देखो तो रोजा छोड़ दो। अगर मुतला अब्र आलूद हो तो उसके लिए यानी रमजान का अन्दाजा कर लो। (तीस दिन पूरे कर लो)।

٩٢٤ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (إِذَا رَأَيْتُمُوهُ فَصُومُوا، وَإِذَا رَأَيْتُمُوهُ فَأَفْطِرُوا، فَإِنْ غُمَّ عَلَيْكُمْ فَاقْدُرُوا لَهُ). يَعْنِي: هِلاَلَ رَمَضَانَ.
[رواه البخاري: ١٩٠٠]

फायदे : एक हदीस में है कि रमजान चूंकि अल्लाह का नाम है। इसलिए अकेला लफ्ज रमजान इस्तेमाल न किया जाये। इमाम बुखारी इसकी तरदीद फरमाते हैं और मजकूरा हदीस के जईफ (कमजोर) होने की तरफ इशारा करते हैं।

बाब 4: जिस आदमी ने रोज़े की हालत में झूट बोलना और धोका देना न छोड़ा।

٤ - باب: مَنْ لَمْ يَدَعْ قَوْلَ الزُّورِ وَالعَمَلَ بِهِ فِي رَمَضَانَ

925: अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी झूट और धोकेबाजी न छोड़े तो अल्लाह तआला को उसकी जरूरत नहीं कि सिर्फ रोज़े के नाम से वह अपना खाना-पीना छोड़ दे।

٩٢٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ لَمْ يَدَعْ قَوْلَ الزُّورِ وَالْعَمَلَ بِهِ، فَلَيْسَ للهِ حَاجَةٌ فِي أَنْ يَدَعَ طَعَامَهُ وَشَرَابَهُ). [رواه البخاري: ١٩٠٣]

फायदे : रोज़े का मकसद यह है कि इन्सान परहेजगार और तकवा शआर बन जाये। अगर यह मकसद हासिल नहीं होता तो रोजा नहीं बल्कि भूखा रहना है। (औनुलबारी, 2/773)

बाब 5: जब किसी रोजेदार को गाली दी जाये तो क्या जाइज है कि कह दे "मैं रोज़ेदार हूँ।"

٥ - باب: هَلْ يَقُولُ إِنِّي صَائِمٌ إِذَا شُتِمَ

926 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही मरवी हदीस (919) पहले गुजर चुकी है कि (अल्लाह तआला फरमाते हैं) इब्ने आदम के तमाम आमाल उसके लिए हैं, मगर रोज़ा खास मेरे लिए है और मैं खुद ही इसका बदला दूंगा। इस हदीस के आखिर में आपने फरमाया कि रोज़ेदार के लिए दो मुसर्रतें (खुशी) हैं, जिनसे वह खुश होता है। एक तो रोज़ा खोलते वक्त खुश होता है। दूसरे जब वह अपने मालिक से मिलेगा तो रोज़ा का सवाब देखकर खुश होगा।

٩٢٦ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ الحَدِيث المُتَقَدِّم: (كُلُّ عَمَلِ ابْنِ آدَمَ لَهُ إِلَّا الصِّيَامَ، فَإِنَّهُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ). وَقَالَ فِي آخِرِه: (لِلصَّائِمِ فَرْحَتَانِ يَفْرَحُهُمَا: إِذَا أَفْطَرَ فَرِحَ، وَإِذَا لَقِيَ رَبَّهُ فَرِحَ بِصَوْمِهِ). [رواه البخاري: ١٩٠٤]

फायदे : इस हदीस में है कि अगर कोई आदमी रोज़ेदार को गाली दे या उससे लड़े तो वह उसे कह दे कि मैं रोज़े से हूँ।

बाब 6 : जो आदमी जवानी की वजह से बदकारी का डर रखे, तो वह रोज़े रखे।

٦ - باب: الصَّوْمُ لِمَنْ خَافَ عَلَى نَفْسِهِ العُزُوبَةَ

927 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। आपने फरमाया जो आदमी निकाह की कुदरत रखता हो, वह निकाह करे। क्योंकि यह आदमी की निगाह

٩٢٧ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: (مَنِ ٱسْتَطَاعَ البَاءَةَ فَلْيَتَزَوَّجْ، فَإِنَّهُ أَغَضُّ لِلْبَصَرِ وَأَحْصَنُ لِلْفَرْجِ، وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَعَلَيْهِ بِالصَّوْمِ، فَإِنَّهُ لَهُ وِجَاءٌ). [رواه البخاري: ١٩٠٥]

को नीचा रखता है और शर्मगाह को बदकारी से बचाता है और जो आदमी इसकी कुदरत न रखता हो वह रोजा रखे, क्योंकि यह उसके लिए खस्सी करने का हुक्म रखता है। यानी कुव्वत शहवानिया (सैक्सी ताकत) कमजोर कर देता है।

फायदे : चन्द रोज़े रखने के बाद शोहवत के कमजोर होने का अमल शुरू होता है, क्योंकि शुरू में हरारते गरिजी के जोश से शोहवत ज्यादा मालूम होती है। (औनुलबारी, 2/775)

---

٧ - باب: قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: «إِذَا رَأَيْتُمُ الهِلاَلَ فَصُومُوا، وَإِذَا رَأَيْتُمُوهُ، فَأَفْطِرُوا»

बाब 7 : फरमाने नवबी कि रमजान का चाँद देखो तो रोजा रखो और शव्वाल का चांद देखो तो रोजा छोड़ दो।

٩٢٨ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: «الشَّهْرُ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ لَيْلَةً، فَلاَ تَصُومُوا حَتَّى تَرَوْهُ، فَإِنْ غُمَّ عَلَيْكُمْ فَأَكْمِلُوا العِدَّةَ ثَلاَثِينَ». [رواه البخاري: ١٩٠٧]

928 : अब्दुल्ला बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, महीना उन्तीस दिन का भी होता है। लिहाजा तुम चांद देख लो तो रोजा रखो और अगर मत्लआ अब्र आलूद (मौसम साफ न) हो तो तीस की गिनती पूरी कर लो।

फायदे : तमाम लोगों का चांद देखना जरूरी नहीं, बल्कि दो काबिले ऐतबार आदमियों का देखना ही काफी है। बल्कि रमजान के लिए तो एक मोतबर आदमी की गवाही भी काफी है। (औनुलबारी, 2/776)

---

٩٢٩ : عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ آلَى مِنْ نِسَائِهِ شَهْرًا، فَلَمَّا مَضَى تِسْعَةٌ وَعِشْرُونَ

929 : उम्मी सलमा रज़ि. से रिवायत है कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक महीने के

लिए अपनी बीवियों से तर्के ताल्लुक की कसम उठायी, जब उन्तीस दिन गुजर गये तो सुबह सवेरे या दोपहर को आप उनके पास तशरीफ ले गये। अर्ज किया गया कि आपने तो कसम उठायी थी कि एक माह तक न जाऊंगा। आपने फरमाया कि महीना उन्तीस दिन का भी होता है।

يَوْمًا غَدَا، أَوْ رَاحَ، فَقِيلَ لَهُ: إِنَّكَ حَلَفْتَ أَنْ لاَ تَدْخُلَ شَهْرًا؟. فَقَالَ: (إِنَّ الشَّهْرَ يَكُونُ تِسْعَةً وَعِشْرِينَ يَوْمًا). [رواه البخاري: ١٩١٠]

बाब 8 : ईद के दोनों महीने कम नहीं होते।

٨ - باب: شَهْرَا عِيدٍ لاَ يَنْقُصَانِ

930 : अबू बकर रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, ईद के दो महीनें (रमजान और जिलहिज्जा) कम नहीं होते।

٩٣٠ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (شَهْرَانِ لاَ يَنْقُصَانِ، شَهْرَا عِيدٍ: رَمَضَانُ وَذُو الحِجَّةِ). [رواه البخاري: ١٩١٢]

फायदे : मतलब यह है कि दोनों महीनें चाहे उन्तीस के हो या तीस के सवाब तीस दिनों का ही मिलता है, सवाब में कमी नहीं आती।

बाब 9 : फरमाने नबवी कि "हम लोग हिसाब और किताब नहीं जानते।"

٩ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: «لاَ نَكْتُبُ وَلاَ نَحْسُبُ»

931 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, हम उम्मी (अनपढ़) लोग हैं, हिसाब व किताब

٩٣١ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: (إِنَّا أُمَّةٌ أُمِّيَّةٌ، لاَ نَكْتُبُ وَلاَ نَحْسُبُ، الشَّهْرُ هٰكَذَا وَهٰكَذَا). يَعْنِي مَرَّةً تِسْعَةً وَعِشْرِينَ، وَمَرَّةً ثَلاَثِينَ. [رواه البخاري: ١٩١٣]

नहीं जानते। महीना इस तरह और कभी इस तरह होता है, यानी कभी उन्तीस का और कभी तीस का होता है।

फायदे : हमारी इबादात को खुली और साफ निशानियों के साथ रखा गया है, चूनांचे इस साइन्स दौर में बड़ी बड़ी दूरबीनों से चांद देखना और फिर "वहदते उम्मत" की आड़ में तमाम इस्लामी मुल्कों में एक ही दिन रमजान का आगाज या ईद का एहतेमाम करना इस्लाम की फितरत के खिलाफ है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने हाथों से इशारा करके इस फितरी सादगी की तरफ इशारा फरमाया है।

١٠ - باب: لا يَتَقَدَّمَنَّ رَمَضَانَ بِصَوْمِ يَوْمٍ وَلا يَوْمَيْنِ

बाब 10 : कोई आदमी रमजान से एक या दो दिन पहले (इस्तकबाली) रोजा न रखे।

٩٣٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللّٰهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لا يَتَقَدَّمَنَّ أَحَدُكُمْ رَمَضَانَ بِصَوْمِ يَوْمٍ أَوْ يَوْمَيْنِ، إِلاَّ أَنْ يَكُونَ رَجُلٌ كَانَ يَصُومُ صَوْماً، فَلْيَصُمْ ذٰلِكَ الْيَوْمَ). [رواه البخاري: ١٩١٤]

932 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, तुममें से कोई आदमी रमजान से एक या दो दिन पहले रोजा न रखे। लेकिन अगर कोई आदमी अपने मामूल के रोज़े रखता हो तो रख ले।

फायदे : मालूम हुआ कि इस्तकबाल रमजान के पेशे नजर रमजान से पहले रोज़े रखना जाइज नहीं है। (औनुलबारी, 2/783)

١١ - باب: قَوْلُ الله جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ ٱلصِّيَامِ ٱلرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَآئِكُمْ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ﴾

बाब 11 : फरमाने इलाही : "तुम्हारे लिए रोज़े की रात अपनी बीवियों के पास जाना हलाल (जाइज) कर दिया गया है, वह तुम्हारे

लिए और तुम उनके लिए लिबास हो।"

933 : बरा बिन आज़िब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम रज़ि. का यह दस्तूर था कि जब कोई रोजे से होता और इफ्तार के वक्त वह इफ्तार करने से पहले सो जाता तो फिर बाकी रात में कुछ न खा सकता और न दूसरे दिन, यहां तक कि शाम हो जाती। एक दिन कैस बिन सिरमा अनसारी रोजा़ से थे, इफ्तार का वक़्त आया तो अपनी बीवी के पास आये और उनसे पूछा, क्या तुम्हारे पास कुछ खाना है? उन्होंने कहा, नहीं लेकिन मैं जाती हूँ और तुम्हारे लिए खाने का बन्दोबस्त करती हूँ। वह सारा दिन मेहनत मजदूरी करते थे।

٩٣٣ : عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَ قَالَ: كَانَ أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ ﷺ إِ كَانَ الرَّجُلُ صَائِمًا، فَحَضَ الإِفْطَارُ، فَنَامَ قَبْلَ أَنْ يُفْطِرَ، لَ يَأْكُلْ لَيْلَتَهُ وَلاَ يَوْمَهُ حَتَّى يُمْسِيَ، وَإِنَّ قَيْسَ بْنَ صِرْمَةَ الأَنْصَارِيَّ كَانَ صَائِمًا، فَلَمَّا حَضَرَ الإِفْطَارُ أَتَى ٱمْرَأَتَهُ فَقَالَ لَهَا: أَعِنْدَكِ طَعَامٌ؟. قَالَتْ: لاَ، وَلٰكِنْ أَنْطَلِقُ فَأَطْلُبُ لَكَ، وَكَانَ يَوْمَهُ يَعْمَلُ، فَغَلَبَتْهُ عَيْنَاهُ، فَجَاءَتْهُ ٱمْرَأَتُهُ، فَلَمَّا رَأَتْهُ قَالَتْ: خَيْبَةً لَكَ. فَلَمَّا ٱنْتَصَفَ النَّهَارُ غُشِيَ عَلَيْهِ، فَذَكَرَ ذٰلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَنَزَلَتْ هٰذِهِ الآيَةُ: ﴿أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ ٱلصِّيَامِ ٱلرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَآئِكُمْ﴾ فَفَرِحُوا بِهَا فَرَحًا شَدِيدًا، وَنَزَلَتْ: ﴿وَكُلُوا وَٱشْرَبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ ٱلْخَيْطُ ٱلْأَبْيَضُ مِنَ ٱلْخَيْطِ ٱلْأَسْوَدِ﴾. [رواه البخاري: ١٩١٥]

उन पर नींद गालिब आ गयी और सो गये। फिर जब उनकी बीवी आयी तो उन्हें सोया हुआ देखकर कहने लगी, हाय! तुम्हारे महरूमी दूसरे दिन दोपहर को भूख के मारे बेहोश हो गये। यह वाक्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जिक्र किया गया तो उस वक्त यह आयत उतरी "तुम्हारे लिए रोजा़ की रात अपने बीवियों के पास जाना हलाल कर दिया गया है।"

इस पर सहाबा किराम रज़ि. बहुत खुश हुये। यह भी आयत उतरी "रातों को खाओ, पीओ, यहां तक कि स्याही रात की धारी से सफेदा सुबह की धारी नुमाया (साफ) नजर आ जाए।"

फायदे : मुसलमानों ने रोजे के बारे में यह दस्तूर अहले किताब को देखकर जारी किया था। वह भी शाम को सोने के बाद रोजा शुरू कर देते और खाना पीना मना हो जाता। (औनुलबारी, 2/787)

बाब 12 : फरमाने इलाही : रातों को खाओ-पीओ, यहां तक कि तुम्हें रात की काली धारी से सफेद सहर की धारी नुमाया (साफ) नजर आए।

١٢ - باب: قَوْلُ الله تَعَالَى: ﴿وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ﴾

934 : अदी बिन हातिम रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब यह आयत उतरी, यहां तक कि सफेद धागे काले धागे से तुम्हारे लिए वाजेह हो जाये तो मैंने एक काली और एक सफेद रस्सी लेकर उन दोनों को अपने तकीये के नीचे रख लिया और रात को उठकर उनको देखता रहा। लेकिन मुझ को कुछ मालूम न हुआ, चूनांचे मैं सुबह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गया और आपसे इसका जिक्र किया। आपने फरमाया, काला धागा तो रात की स्याही और सफेद धागा सुबह की सफेदी है।

٩٣٤ : عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ﴾. عَمَدْتُ إِلَى عِقَالٍ أَسْوَدَ وَإِلَى عِقَالٍ أَبْيَضَ، فَجَعَلْتُهُمَا تَحْتَ وِسَادَتِي، فَجَعَلْتُ أَنْظُرُ فِي اللَّيْلِ فَلَا يَسْتَبِينُ لِي، فَغَدَوْتُ عَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَذَكَرْتُ لَهُ ذٰلِكَ، فَقَالَ: (إِنَّمَا ذٰلِكَ سَوَادُ اللَّيْلِ وَبَيَاضُ النَّهَارِ). [رواه البخاري: ١٩١٦]

बाब 13 : सहरी और फजर नमाज़ में कितना वक्फा होना चाहिए?

١٣ - باب: قَدْرُ كَمْ بَيْنَ السَّحُورِ وَصَلاَةِ الْفَجْرِ

935 : जैद बिन साबित रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सहरी खाई। फिर आप सुबह की नमाज़ के लिए खड़े हुये, आप से पूछा गया कि उस वक्त अजान और सहरी के बीच कितना फासला था? उन्होंने कहा, पचास आयत की तिलावत के बराबर फासला था।

٩٣٥ : عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: تَسَحَّرْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، ثُمَّ قَامَ إِلَى الصَّلاَةِ، فَقِيلَ لَهُ: كَمْ كَانَ بَيْنَ الأَذَانِ والسَّحُورِ؟ قَالَ: قَدْرُ خَمْسِينَ آيَةً. [رواه البخاري: ١٩٢١]

फायदे : मालूम हुआ कि सहरी देर से करना चाहिए। यह बात खिलाफे सुन्नत है कि आधी रात सहरी खाकर इन्सान सो जाये, बल्कि सुन्नत यह है कि फजर से थोड़ा वक्त पहले सहरी कर ले।

(औनुलबारी, 2/791)

बाब 14 : सहरी बरकत का सबब है, मगर वाजिब (जरूरी) नहीं।

١٤ - باب: بَرَكَةِ السَّحُورِ مِنْ غَيْرِ إِيجَابٍ

936 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सहरी खाया करो, क्योंकि सहरी में बरकत होती है।

٩٣٦ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (تَسَحَّرُوا، فَإِنَّ فِي السَّحُورِ بَرَكَةً). [رواه البخاري: ١٩٢٣]

फायदे : दूसरी रिवायत में है कि सहरी जरूर की जाये, चाहे पानी का घूंट पीकर या खुजूर और मुनक्का के चन्द दाने खाकर ही क्यों न हो। इससे रोजा रखने में ताकत पैदा होती है।

(औनुलबारी, 2/792)

बाब 15 : अगर कोई आदमी दिन को रोजे की नियत करे।

١٥ - باب: إِذَا نَوَى بِالنَّهَارِ صَوْمًا

937 : सलमा बिन अकवा रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी को आशूरा के दिन यह मुनादा करने के लिए भेजा कि आज जिस आदमी ने कुछ खा लिया है, वह शाम तक ज्यादा न खाये या फरमाया कि रोजा रखे और जिसने न खाया हो, वह शाम तक न खाये। (यह फरजियत रमजान से पहले की बात है)

٩٣٧ : عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ رَجُلًا يُنَادِي فِي النَّاسِ يَوْمَ عَاشُورَاءَ: (إِنَّ مَنْ أَكَلَ فَلْيُتِمَّ، أَوْ فَلْيَصُمْ، وَمَنْ لَمْ يَأْكُلْ فَلَا يَأْكُلْ). [رواه البخاري: ١٩٢٤]

फायदे : इमाम बुखारी का गालिबन यह मुकिफ़ है कि रोज़े के लिए रात से नियत करना जरूरी नहीं है। लेकिन जमहूर उलमा ने इससे इत्तिफाक नहीं किया है, क्योंकि मजकूरा हदीस आशूरा से मुताल्लिक है, जो फर्ज नहीं। फर्जी रोजों की रात से नियत करने के बारे में एक सही हदीस सुनन निसाई में मरवी है। अलबत्ता नफ़्ली रोजे की नियत दिन के वक़्त भी की जा सकती है।

(औनुलबारी, 2/794)

बाब 16 : रोज़ेदार सुबह को जनाबत की हालत में हो तो क्या करे?

١٦ - باب: الصَّائِمُ يُصْبِحُ جُنُبًا

938 : आइशा रज़ि. और उम्मी सलमा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी बीवियों की मकारबत की वजह से सुबह तक जनाबत की हालत में रहते फिर गुस्ल करते और रोज़ा रख लेते।

٩٣٨ : عَنْ عَائِشَةَ وَأُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَانَ يُدْرِكُهُ الْفَجْرُ، وَهُوَ جُنُبٌ مِنْ أَهْلِهِ، ثُمَّ يَغْتَسِلُ وَيَصُومُ. [رواه البخاري: ١٩٢٥]

फायदे : जुनुबी आदमी रोजा रखने के बाद गुस्ल कर सकता है, लेकिन अफजल यह है, रोजा से पहले गुस्ल करे। तंगी वक्त के पेशे नजर गुस्ल मौखर करना जाइज है। (औनुलबारी, 2/796)

बाब 17 : रोज़ेदार के लिए मुबाशिरत।

١٧ - باب: المُبَاشَرَةُ لِلصَّائِمِ

939: आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंनें फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोजा की हालत में कभी बोसा (चुम्मा) लेते और मुबाशिरत करते। (यानी साथ लेट जाते) थे मगर आप अपनी ख्वाहिश पर तुमसे ज्यादा काबू रखते थे।

٩٣٩ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُقَبِّلُ وَيُبَاشِرُ وَهُوَ صَائِمٌ، وَكَانَ أَمْلَكَكُمْ لِإِرْبِهِ. [رواه البخاري: ١٩٢٧]

फायदे : मतलब यह है कि अगर किसी रोज़ेदार को अपने आप पर ताकत और कन्ट्रोल हो कि बीवी से बोसो किनार करने से सैक्सी ख्वाहिश पैदा नहीं होगी तो उसके लिए जाइज है, बसूरत दीगर जाइज नहीं। मुबादा अपने आप पर काबू न रखते हुये जिमा (हमबिस्तरी) कर बैठे। (औनुलबारी,2/799)

बाब 18 : रोज़ेदार अगर भूल कर खा-पी ले।

١٨ - باب: الصَّائِمُ إِذَا أَكَلَ أَو شَرِبَ نَاسِيًا

940 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अगर कोई आदमी भूलकर खा-पी ले तो वह अपने रोजा को पूरा करे, क्योंकि यह अल्लाह ने उसको खिलाया पिलाया है।

٩٤٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِذَا نَسِيَ فَأَكَلَ وَشَرِبَ فَلْيُتِمَّ صَوْمَهُ، فَإِنَّمَا أَطْعَمَهُ ٱللهُ وَسَقَاهُ). [رواه البخاري: ١٩٣٣]

फायदे : दूसरी रिवायत में है कि यह अल्लाह का रिज्क है, जो उसे दिया गया है। इमाम मालिक के अलावा तमाम मुहदसीन ने इस हदीस के माफिक फैसला दिया है कि भूलकर खाने पीने से रोजा नहीं टूटता और न ही कजा देना पढ़ती है, बल्कि तयसीर और रफए हर्ज का भी यही तकाजा है। (औनुलबारी, 2/800)

---

١٩ - باب: إِذَا جَامَعَ فِي رَمَضَانَ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَيْءٌ فَتُصُدِّقَ عَلَيْهِ فَلْيُكَفِّرْ

बाब 19 : जब कोई रमजान में जिमा (हमबिस्तरी) करे और उसके पास भी कुछ न हो, उसे सदका मिले तो उससे कफ्फारा दे।

٩٤١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ جُلُوسٌ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، إِذْ جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، هَلَكْتُ. قَالَ: (مَا لَكَ؟). قَالَ: وَقَعْتُ عَلَى ٱمْرَأَتِي فِي رَمَضَانَ وَأَنَا صَائِمٌ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (هَلْ تَجِدُ رَقَبَةً تُعْتِقُهَا؟). قَالَ: لَا. قَالَ: (فَهَلْ تَسْتَطِيعُ أَنْ تَصُومَ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ؟). قَالَ: لَا فَقَالَ: (فَهَلْ تَجِدُ إِطْعَامَ سِتِّينَ مِسْكِينًا؟). قَالَ: لَا. قَالَ: فَمَكَثَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ. فَبَيْنَا نَحْنُ عَلَى ذٰلِكَ أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِعَرَقٍ فِيهِ تَمْرٌ، وَالْعَرَقُ الْمِكْتَلُ، قَالَ: (أَيْنَ السَّائِلُ؟). فَقَالَ: أَنَا. قَالَ: (خُذْ هٰذَا فَتَصَدَّقْ بِهِ). فَقَالَ لَهُ الرَّجُلُ: أَعَلَى أَفْقَرَ مِنِّي يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ فَوَٱللهِ مَا بَيْنَ لَابَتَيْهَا، يُرِيدُ الْحَرَّتَيْنِ، أَهْلُ بَيْتٍ أَفْقَرُ مِنْ أَهْلِ بَيْتِي. فَضَحِكَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى بَدَتْ

941 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार, हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे थे, इतने में एक आदमी ने आकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं बर्बाद हो गया हूँ। आपने पूछा क्यों क्या हुआ? उसने कहा कि मैंने रोज़े की हालत में अपनी बीवी से सोहबत (हमबिस्तरी) कर ली है। आपने फरमाया क्या तेरे पास गुलाम है, जिसे तू आजाद कर दे? उसने कहा नहीं आपने फरमाया, क्या तू लगातार दो माह के रोज़े रख सकता है? उसने कहा, नहीं आपने

फरमाया क्या तू साठ गरीबों को खाना खिला सकता है? उसने कहा, नहीं। अबू हुरैरा रज़ि. कहते हैं कि फिर वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ठहरा रहा, हम सब भी इस तरह बैठे थे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास खुजूरों से भरा हुवा टोकरा लाया गया। आपने फरमाया, सवाल करने वाला कहां है? उसने कहा, मैं हाजिर हूँ। आपने फरमाया, यह लो और इसे खैरात कर दो। उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! खैरात तो उस पर करू जो मुझ से ज्यादा मोहताज हो। अल्लाह की कसम! मदीना के दो तरफा पत्थरीले किनारों में कोई घर मेरे घर से ज्यादा मोहताज नहीं। यह सुनकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतना हंसे कि आपके दांत मुबारक खुल गये। फिर आपने फरमाया, इसे अपने घर वालों ही को खिला दो।

أَنْيَابُهُ ثُمَّ قَالَ: (أَطْعِمْهُ أَهْلَكَ). [رواه البخاري: ١٩٣٦]

फायदे : जमहूर मुहदस्सीन का मुकिफ यह है कि गरीबी की वजह से कफ्फारा नहीं हटता, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह खुजूरें सदका के तौर पर उसे इनायत की थी, ताकि वह उसे अपने घर वालों को खिलाये। उसे कफ्फारा से सुबकदोश नहीं किया। (औनुलबारी, 2/807)

बाब 20 : रोज़ेदार का छींपे लगाना या उसे कै (उल्टी) आना।

٢٠ - باب: الحِجَامَةُ وَالقَيْءُ لِلصَّائِمِ

942 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अहराम की हालत में और रोज़े की हालत में छींपे लगावाये हैं।

٩٤٢ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ ٱحْتَجَمَ وَهُوَ مُحْرِمٌ، وَٱحْتَجَمَ وَهُوَ صَائِمٌ. [رواه البخاري: ١٩٣٨]

फायदे : इमाम बुखारी का मुकिफ है कि सिंगी लगवाने और उल्टी करने से रोज़ा नहीं टूटता। उल्टी के बारे में जो दानिश्ता या गैर दानिश्ता का फर्क किया जाता है, वह सही नहीं। इस सिलसिले में जो रिवायत पेश की जाती है, वह भी मयारे सहत पर पूरी नहीं उतरती।

बाब 21 : सफर में रोज़ा रखना या इफ्तार करना।

٢١ - باب: الصَّوْمُ فِي السَّفَرِ وَالإِفْطَارِ

943 : इब्ने अबी अवफा रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया कि हम एक सफर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। शाम के वक्त आपने एक आदमी से फरमाया, उतरकर मेरे लिए सत्तू तैयार कर। उसने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अभी तो सूरज की रोशनी है। आपने फरमाया, उतर और मेरे लिए सत्तू घोल। उसने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अभी तो सूरज की रोशनी है। आपने फरमाया, उतर के सत्तू तैयार कर। चूनांचे वह उतरा और आपके लिए सत्तू तैयार किये। आपने उन्हें पीया। फिर अपने हाथ से मश्रिक (पूर्व) की तरफ इशारा करके फरमाया, जब इधर से रात का अंधेरा शुरू हो जाये तो रोज़ेदार को इफ्तार करना चाहिए।

٩٤٣ : عَنِ عَبْدِاللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي سَفَرٍ، فَقَالَ لِرَجُلٍ: (ٱنْزِلْ فَٱجْدَحْ لِي) قَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، الشَّمْسُ؟. قَالَ: (ٱنْزِلْ فَٱجْدَحْ لِي). قَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ الشَّمْسُ؟. قَالَ: (ٱنْزِلْ فَٱجْدَحْ لِي). فَنَزَلَ فَجَدَحَ لَهُ فَشَرِبَ، ثُمَّ رَمَى بِيَدِهِ هَا هُنَا، ثُمَّ قَالَ: (إِذَا رَأَيْتُمُ اللَّيْلَ أَقْبَلَ مِنْ هَا هُنَا فَقَدْ أَفْطَرَ الصَّائِمُ). [رواه البخاري: ١٩٤١]

फायदे : सफर में रोजा रखने या न रखने के बारे में मुकिफ यह है कि अगर किसी किस्म की तकलीफ का अन्देशा नहीं है तो रोजा रखना बेहतर है और अगर जिस्मानी ताकत नहीं या आइन्दा उसे जिस्मानी तौर पर नुकसान देह साबित हो सकता है तो इफ्तार करना अफजल है। (औनुलबारी, 2/810)

944: आइशा रज़ि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी से रिवायत है। हमजा बिन अम्र असलमी रज़ि. ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि मैं सफर में रोजा रखूं? और वह अकसर रोजा रखते थे। आपने फरमाया, तुझे इख्तियार है, रोजा रखो या इफ्तार करो।

٩٤٤ : عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ وَرَضِيَ عَنْهَا، أَنَّ حَمْزَةَ بْنَ عَمْرٍو الأَسْلَمِيَّ، قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَأَصُومُ فِي السَّفَرِ؟ وَكَانَ كَثِيرَ الصِّيَامِ، فَقَالَ: (إِنْ شِئْتَ فَصُمْ وَإِنْ شِئْتَ فَأَفْطِرْ). [رواه البخاري: ١٩٤٣]

फायदे : मुस्लिम की रिवायत में खुलासा है कि सवाल करने वाले ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! सफर के दौरान मैं अपने अन्दर रोजा रखने की हिम्मत पाता हूँ। क्या रोजा रखने में कोई हर्ज है? तो आपने फरमाया, अल्लाह की तरफ से यह एक रूखसत है, जो उसे कबूल करता है, उसने अच्छा किया और जो रोजा रखता है, उस पर कोई कदगन नहीं। (औनुलबारी, 2/811)

बाब 22 : जब रमजान में कुछ दिन रोजा रखे, फिर सफर करे।

٢٢ - باب: إِذَا صَامَ أَيَّاماً مِن رَمَضَانَ ثُمَّ سَافَرَ

945 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमजान में मक्का की

٩٤٥ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللَّهِ ﷺ خَرَجَ إِلَى مَكَّةَ فِي رَمَضَانَ فَصَامَ، حَتَّى بَلَغَ

الْكَدِيدَ أَفْطَرَ فَأَفْطَرَ النَّاسُ. [رواه البخاري: ١٩٤٤]

तरफ रवाना हुये, उस वक्त आप रोज़े से थे। जब मकामे कदीद में पहुंचे तो आपने रोजा इफ्तार कर दिया। लोगों ने भी रोजा छोड़ दिया।

फायदे : मालूम हुआ कि रोजा रखने के बाद अगर सफर का आगाज किया जाये तो सफर के दौरान उसका पूरा करना जरूरी नहीं।

बाब 23 :

٢٣ - باب

٩٤٦ : عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ فِي يَوْمٍ حَارٍّ، حَتَّى يَضَعَ الرَّجُلُ يَدَهُ عَلَى رَأْسِهِ مِنْ شِدَّةِ الْحَرِّ، وَمَا فِينَا صَائِمٌ إِلَّا مَا كَانَ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ وَٱبْنِ رَوَاحَةَ. [رواه البخاري: ١٩٤٥]

946 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि किसी सफर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ निकले, गर्मी ऐसी सख्त थी कि उस की शिद्दत से आदमी अपने सर पर हाथ रख लेता था। इस वजह से हममें कोई आदमी रोज़े से न था। सिर्फ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि. रोज़ेदार थे।

फायदे : इस हदीस से यही साबित होता है कि सफर में रोजा रखना और छोड़ना दोनों जाइज़ है।

بَاب 24 : इरशादे नबवी कि (सख्त गर्मी में) सफर के दौरान रोजा रखना नेकी नहीं है।

٢٤ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: «لَيْسَ مِنَ الْبِرِّ الصَّوْمُ فِي السَّفَرِ»

٩٤٧ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي سَفَرٍ، فَرَأَى زِحَامًا وَرَجُلًا قَدْ ظُلِّلَ عَلَيْهِ، فَقَالَ: (مَا هٰذَا؟). فَقَالُوا: صَائِمٌ، فَقَالَ: (لَيْسَ مِنَ الْبِرِّ الصَّوْمُ فِي السَّفَرِ). [رواه البخاري: ١٩٤٦]

947 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक सफर में थे। आपने

एक आदमी के पास भीड़ देखी जो उस आदमी पर साया किये हुये थे। आपने पूछा, यह कौन हैं? लोगों ने कहा, यह रोज़ेदार है। आपने फरमाया, सफर में रोज़ा रखना नेकी नहीं है।

फायदे : यह हदीस उन लोगों की दलील है जो सफर के दौरान इफ्तार करना जरूरी ख्याल करते है। हालांकि इस हदीस से यह साबित होता है कि जिसे सफर में रोज़ा रखने से तकलीफ होती हो, उसके लिए इफ्तार अफजल है। (औनुलबारी, 2/814)

---

٢٥ - باب: لَمْ يَعِبْ أَصْحَابُ النَّبِيِّ ﷺ بَعْضُهُمْ بَعْضاً فِي الصَّوْمِ وَالإِفْطَارِ

बाब 25 : सहाबा किराम सफर के दौरान, कोई किसी पर रोज़ा रखने, न रखने पर ऐब न लगाता था।

٩٤٨ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُسَافِرُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَمْ يَعِبِ الصَّائِمُ عَلَى المُفْطِرِ، وَلاَ المُفْطِرُ عَلَى الصَّائِمِ. [رواه البخاري: ١٩٤٧]

948 : अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सफर किया करते थे। रोज़ा रखने वाला, न रखने वाले पर और रोज़ा इफ्तार करने वाला, रोजेदार पर ऐब न लगाता था।

फायदे : इस हदीस से उन लोगों का रद्द होता है, जिनका मुकिफ है कि सफर के दौरान रोज़ा रखना बेसूद और ला-हासिल है। (औनुलबारी, 2/816)

---

٢٦ - باب: مَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ صَوْمٌ

बाब 26: अगर कोई मर जाये और उसके जिम्में रोजे हों।

٩٤٩ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ صِيَامٌ صَامَ عَنْهُ وَلِيُّهُ). [رواه البخاري: ١٩٥٢]

949 : आइशा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो आदमी

मर जाये और उसके जिम्मे रोजे हों तो उसका वारिस उसकी तरफ से रोज़े रखे।

फायदे : बाज फुकहा का खयाल है कि मय्यत की तरफ से रोजा नहीं रखना चाहिए बल्कि फिदीया देना चाहिए। जबकि इस हदीस से मालूम होता है कि मय्यत की तरफ से वली को रोजा रखना चाहिए और जो रिवायत उस के खिलाफ हैं, वह सेहत की मयार पर पूरी नहीं उतरती। (औनुलबारी, 2/819)

٩٥٠ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ أُمِّي مَاتَتْ وَعَلَيْهَا صَوْمُ شَهْرٍ، أَفَأَقْضِيهِ عَنْهَا؟. قَالَ: (نَعَمْ، فَدَيْنُ ٱللهِ أَحَقُّ أَنْ يُقْضَى). [رواه البخاري: ١٩٥٣]

950 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरी मां मर गयी है, उसके जिम्मे एक महिने के रोज़े थे। क्या मैं उसकी तरफ से रोज़े रख सकता हूँ? आपने फरमाया, हां अल्लाह का कर्ज अदायगी का ज्यादा हक़ रखता है।

फायदे : इमाम बुखारी ने इब्ने अब्बास रज़ि. की इस हदीस को मुख्तलिफ तरीक से बयान किया है, किसी में है कि पूछने वाला मर्द था, किसी रिवायत में है, पूछने वाली औरत है। कोई एक माह के रोज़ों का जिक्र करता है। किसी में पन्द्रह दिन के रोज़ों का बयान है। लेकिन इन इख्तिलाफात से हदीस में कोई नक्स नहीं आता। मुमकिन है कि मुख्तलिफ वाक्यात हों और सवाल करने वाले अलग अलग हो। बहरहाल इतनी बात जरूर है कि मय्यत की तरफ से रोजा भी रखा जा सकता है और हज भी किया जा सकता है।

बाब 27 : रोज़ेदार को किस वक्त रोज़ा इफ्तार करना चाहिए।

٢٧ - باب: مَتَى يَحِلُّ فِطْرُ الصَّائِمِ

951 : इब्ने अबी अवफा रज़ि. की यह हदीस (944) कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको फरमाया कि उतर कर हमारे लिए सतू तैयार करो। अभी अभी पहले गुजर चुकी है, इस रिवायत में आपका इरशाद गरामी है, जब तुम देखो कि रात इस तरफ से आ गयी है तो रोज़ेदार को चाहिए कि रोज़ा इफ्तार कर दे और आपने अपनी उंगली से मश्रिक (पूर्व) की तरफ इशारा फरमाया।

٩٥١ : حَدِيث ابْنِ أَبِي أَوْفَى وَقَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ لَهُ: (انْزِلْ فَاجْدَحْ لَنَا). تَقَدَّم قريباً، وَقالَ فِي هٰذِهِ الرِّوايَة: (إِذَا رَأَيْتُمُ اللَّيْلَ قَدْ أَقْبَلَ مِنْ هَا هُنَا، فَقَدْ أَفْطَرَ الصَّائِمُ). وَأَشَارَ بِإِصْبَعِهِ قِبَلَ المَشْرِقِ. [رواه البخاري: ١٩٥٦]

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि इफ्तार की जल्दी करना चाहिए, नजरिया अहतियात के पेशे नजर इफ्तारी में देर करना अहले किताब की आदत है, जिनकी मुखालफ्त करने का हुक्म है।

(औनुलबारी, 2/821)

बाब 28 : इफ्तार में जल्दी करना अफजल है।

٢٨ - باب: تَعْجِيلُ الإِفْطَارِ

952 : सहल बिन सअद रज़ि.से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, 'लोग हमेशा नेकी पर रहेंगे, जब तक वह रोज़ा जल्दी इफ्तार करते रहेंगे।

٩٥٢ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللهُ [عَنْهُمَا]: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لَا يَزَالُ النَّاسُ بِخَيْرٍ مَا عَجَّلُوا الفِطْرَ). [رواه البخاري: ١٩٥٧]

फायदे : शिया और रवाफिज ने चूंकि यहूदियत की कोख से जन्म लिया है। इसलिए वह भी रोज़ा इफ्तार करने के लिए सितारों को

चमकने का इन्तजार करते रहते है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस अमल को खैर और बरकत से खाली करार दिया है। (औनुलबारी, 2/822)

बाब 29 : अगर रोजा इफ्तार करने के बाद सूरज निकल आये।

٢٩ - بَابٌ: إِذَا أَفْطَرَ فِي رَمَضَانَ ثُمَّ طَلَعَتِ الشَّمْسُ

953 : असमा बिन्ते अबी बकर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में एक दिन मतला अब्र आलूद था (बादल छाये हुए थे) हमने रोजा खोल लिया, फिर उसके बाद सूरज निकल आया।

٩٥٣ : عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: أَفْطَرْنَا عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ غَيْمٍ، ثُمَّ طَلَعَتِ الشَّمْسُ. [رواه البخاري: ١٩٥٩]

फायदे : अब इस रोज़े के बारे में क्या हुक्म है? बाज फुकहा कहते हैं कि उसकी कजा दी जाये, यानी बाद में रोजा रखा जाये, लेकिन उसकी कोई दलील नहीं है। अलबत्ता यह जरूर है कि जब तक दिन गरूब न हो, कोई चीज इस्तेमाल नहीं करनी चाहिए। हज़रत उमर रज़ि. से सही तौर पर यही मनकूल है कि ऐसी हालत में कजा नहीं है, क्योंकि यह ऐसा है, जैसा किसी ने भूल कर खा-पी लिया हो। (औनुलबारी,2/824)

बाब 30 : बच्चों के रोज़े का बयान।

٣٠ - بَابٌ: صَوْمُ الصِّبْيَانِ

954 : रूबैय्य बिन्ते मुअव्विज रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आशूरा के दिन सुबह को अन्सार की बस्तियों में यह पैगाम भेजा

٩٥٤ : عَنِ الرُّبَيِّعِ بِنْتِ مُعَوِّذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَرْسَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَدَاةَ عَاشُورَاءَ إِلَى قُرَى الأَنْصَارِ: (مَنْ أَصْبَحَ مُفْطِرًا فَلْيُتِمَّ بَقِيَّةَ يَوْمِهِ، وَمَنْ أَصْبَحَ صَائِمًا فَلْيَصُمْ). قَالَتْ: فَكُنَّا

نَصُومُهُ بَعْدُ، وَنُصَوِّمُ صِبْيَانَنَا، وَنَجْعَلُ لَهُمُ اللُّعْبَةَ مِنَ الْعِهْنِ، فَإِذَا بَكَى أَحَدُهُمْ عَلَى الطَّعَامِ أَعْطَيْنَاهُ ذَاكَ حَتَّى يَكُونَ عِنْدَ الإِفْطَارِ. [رواه البخاري: ١٩٦٠]

कि जिसने आज रोज़ा न रखा हो वह भी बाकी दिन कुछ न खाये और जिसने रोज़ा रखा हो, वह रोज़े से रहे। रूबैय्य रज़ि. फरमाती हैं, उस हुक्म के बाद हम आशूरा का रोज़ा रखते और अपने बच्चों को भी रखाया करते और उन्हें बहलाने के लिए हम रूई की गुड़िया बना देते। जब कोई उनमें से खाने के लिए रोता तो हम उसे वह खिलौना देते, यहां तक कि इफ्तार का वक्त आ जाता।

फायदे : अगरचे बच्चे पर रोज़ा फर्ज नहीं है फिर भी उसे आदत डालने के लिए रोज़ा रखने का हुक्म दिया जाये ताकि इबादात उसकी घुट्टी में शामिल हो जाये। (औनुलबारी,2/825)

٣١ - باب: الْوِصَالُ إِلَى السَّحَرِ

बाब 31 : सुबह तक विसाल करना यानी सहरी तक कुछ न खाना।

٩٥٥ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (لَا تُوَاصِلُوا، فَأَيُّكُمْ إِذَا أَرَادَ أَنْ يُوَاصِلَ فَلْيُوَاصِلْ حَتَّى السَّحَرِ). [رواه البخاري: ١٩٦٣]

955 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना, लोगों! तुम विसाल न करो, जब तुममें से कोई विसाल का इरादा करे तो सुबह तक करे, इससे ज्यादा न करे।

फायदे : इस हदीस के आखिर में सहाबा ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! आप क्यों विसाल करते हैं? आपने फरमाया कि मुझे मेरा रब खिलाता और पिलाता है। इससे मालूम हुआ कि विसाल करना आपकी खुसूसियत है, दूसरों को इसकी इजाजत नहीं। (औनुलबारी,2/826)

बाब 32 : कसरत से विसाल करने वाले को सामाने इबरत बनाना।

٣٢ - باب: التَّنْكِيلُ لِمَن أَكْثَرَ الوِصَالَ

956 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोज़ों में विसाल करने से मना फरमाया, तो मुसलमानों में से एक आदमी ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप तो विसाल करते हैं, आपने फरमाया तुममें से कौन आदमी मेरी तरह है? मैं रात को सोता हूँ तो मेरा अल्लाह मुझे खिला देता है, लेकिन जब वह लोग विसाल से बाज न आये तो आपने उनके साथ एक दिन कुछ न खाया, दूसरे दिन भी कुछ न खाया, फिर ईद का चांद निकल आया, आपने फरमाया, अगर चांद जाहिर न होता तो मैं तुम से और ज्यादा रोज़ा रखवाता, गौया आपने उन्हें सजा देने के लिए फरमाया, जब वह विसाल के रोज़ों से बाज न आये।

एक रिवायत में यह है, फिर आपने फरमाया काम उतना ही जिम्मे लो, जितनी तुम में ताकत हो।

٩٥٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: نَهى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الْوِصَالِ فِي الصَّوْمِ، فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ: إِنَّكَ تُوَاصِلُ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (وَأَيُّكُمْ مِثْلِي، إِنِّي أَبِيتُ يُطْعِمُنِي رَبِّي وَيَسْقِينِ). فَلَمَّا أَبَوْا أَنْ يَنْتَهُوا عَنِ الْوِصَالِ، وَاصَلَ بِهِمْ يَوْمًا، ثُمَّ يَوْمًا، ثُمَّ رَأَوُا الْهِلَالَ، فَقَالَ: (لَوْ تَأَخَّرَ لَزِدْتُكُمْ). كَالتَّنْكِيلِ لَهُمْ حِينَ أَبَوْا أَنْ يَنْتَهُوا. وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ قَالَ لَهُمْ: (فَاكْلَفُوا مِنَ الْعَمَلِ مَا تُطِيقُونَ).

[رواه البخاري: ١٩٦٥، ١٩٦٦]

फायदे : अल्लाह तआला के खिलाने पिलाने से मुराद यह है कि वह आपके अन्दर इस कद्र ताकते सैराबी पैदा कर देता है कि खाने पीने की जरूरत ही नहीं रहती। (औनुलबारी, 2/829)

बाब 33 : अगर कोई अपने भाई को

٣٣ - باب: مَنْ أَقْسَمَ عَلَى أَخِيهِ

لِيُفطِرَ فِي التَّطَوُّعِ

٩٥٧ : عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: آخى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ سَلْمَانَ وَأَبِي ٱلدَّرْدَاءِ، فَزَارَ سَلْمَانُ أَبَا ٱلدَّرْدَاءِ، فَرَأَى أُمَّ ٱلدَّرْدَاءِ مُتَبَذِّلَةً، فَقَالَ لَهَا: مَا شَأْنُكِ؟. قَالَتْ: أَخُوكَ أَبُو ٱلدَّرْدَاءِ لَيْسَ لَهُ حَاجَةٌ فِي ٱلدُّنْيَا. فَجَاءَ أَبُو ٱلدَّرْدَاءِ، فَصَنَعَ لَهُ طَعَامًا، فَقَالَ: كُلْ، قَالَ: فَإِنِّي صَائِمٌ، قَالَ: مَا أَنَا بِآكِلٍ حَتَّى تَأْكُلَ، قَالَ: فَأَكَلَ، فَلَمَّا كَانَ ٱللَّيْلُ ذَهَبَ أَبُو ٱلدَّرْدَاءِ يَقُومُ، قَالَ: نَمْ، فَنَامَ، ثُمَّ ذَهَبَ يَقُومُ، فَقَالَ: نَمْ، فَلَمَّا كَانَ مِنْ آخِرِ ٱللَّيْلِ، قَالَ سَلْمَانُ: قُمِ الآنَ، فَصَلَّيَا، فَقَالَ لَهُ سَلْمَانُ: إِنَّ لِرَبِّكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَلِنَفْسِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَلأَهْلِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، فَأَعْطِ كُلَّ ذِي حَقٍّ حَقَّهُ، فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَذَكَرَ ذٰلِكَ لَهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (صَدَقَ سَلْمَانُ). [رواه البخاري: ١٩٦٨]

नफ़्ली रोज़ा तोड़ देने की कसम दे।

957 : अबी जुहैफा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सलमान रज़ि. और अबू दरदा रज़ि. में भाई चारा करा दिया था। चूनांचे एक दिन सलमान रज़ि. अबू दरदा रज़ि. से मिलने गये तो उन्होंने उम्मे दरदा रज़ि. को निहायत परा गन्दा (मैल-कुचेल की) हालत में देखा। उन्होंने उससे पूछा, तुम्हारा क्या हाल है? वह बोली कि तुम्हारे भाई अबू दरदा रज़ि. को दुनिया की जरूरत ही नहीं, इतने में अबू दरदा रज़ि. भी आ गए। उन्होंने सलमान रज़ि. के लिए खाना तैयार करवाया, फिर सलमान रज़ि. से कहा, तुम खावो। मैं तो रोज़े से हूँ, सलमान रज़ि. ने कहा, जब तक तुम नहीं खावोगे, मैं भी नहीं खाऊँगा। आखिरकार अबू दरदा रज़ि. ने खाना खाया। जब रात हुई तो अबू दरदा रज़ि. नमाज़ के लिए उठे तो सलमान रज़ि. ने कहा, सो जाओ। चूनांचे वह सो गये। थोड़ी देर बाद फिर उठने लगे तो सलमान रज़ि. ने कहा, अभी सो रहो। जब आखरी शब हुई तो सलमान रज़ि. ने कहा, अब उठो, चूनांचे

दोनों ने नमाज़ पढ़ी, सलमान रज़ि. ने अबू दरदा रज़ि. से कहा, बेशक तुम पर तुम्हारे रब का भी हक है। नीज तुम्हारी जान का और तुम्हारी बीवी का भी तुम पर हक है। लिहाजा तुम्हें सब के हक अदा करने चाहिए। फिर अबू दरदा रज़ि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और आपसे यह सब मामला बयान किया तो आपने फरमाया, सलमान रज़ि. ने सच कहा है।

फायदे : सही इब्ने खुजेमा में है कि हज़रत सलमान रज़ि. ने अबू दरदा को कसम दी कि रोजा तोड़कर मेरे साथ खाना खाओ। इससे मालूम हुआ कि नफ़्ली रोजा किसी माकूल वजह से तोड़ा जा सकता है और उसका पूरा करना जरूरी नहीं। अगर कोई बिलावजह नफ़्ली रोजा खत्म करता है तो उसे कजा देना होगी। (औनुलबारी, 2/834)

बाब 34 : शअबान में रोज़े रखना।

٣٤ - باب: صَوْمُ شَعْبَانَ

958 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निफ़्ल रोजा इस कदर रखते कि हम कहते अब कभी आप रोजा नहीं छोड़ेंगे और जब छोड़ देते तो हमें ख्याल होता कि अब आप कभी रोजा नहीं रखेंगे और मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रमजान के अलावा किसी और महीने के पूरे रोज़े रखते हुये नहीं देखा और मैंने आपको शअबान से ज्यादा किसी और महीने में रोज़े रखते नहीं देखा।

٩٥٨ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَصُومُ حَتَّى نَقولَ لاَ يُفْطِرُ، وَيُفْطِرُ حَتَّى نَقُولَ لاَ يَصُومُ، فَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ ٱسْتَكْمَلَ صِيَامَ شَهْرٍ إِلّا رَمَضَانَ، وَمَا رَأَيْتُهُ أَكْثَرَ صِيَامًا مِنْهُ فِي شَعْبَانَ. [رواه البخاري: ١٩٦٩]

फायदे : शअबान के महीने में रोज़े इसलिए ज्यादा रखते थे कि इस

महीने में अल्लाह की तरफ बन्दों के अमल उठाये जाते हैं, जैसा कि निसाई में है। (औनुलबारी, 2/837)

959 : आइशा रज़ि. से एक दूसरी रिवायत में कुछ ज्यादा अलफाज हैं कि आप फरमाया करते थे कि ऐ लोगों! इतनी ही इबादत करो जो काबिले बर्दाश्त हो, क्योंकि अल्लाह सवाब देने से नहीं थकता, यहां तक कि तुम खुद इबादत करने से उकता जाओगे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वही नमाज़ पसन्द थी जो अगरचे थोड़ी हो, मगर पाबन्दी से अदा हो। चूनांचे जब कोई नमाज़ पढ़ते थे तो उस पर पाबन्दी से हमेशगी करते थे।

٩٥٩ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا في رِوايَة زِيادَة وَكانَ يَقُولُ: (خُذُوا مِنَ العَمَلِ مَا تُطِيقُونَ، فَإِنَّ ٱللهَ لاَ يَمَلُّ حَتَّى تَمَلُّوا). وَأَحبُّ الصَّلاَةِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ مَا دُووِمَ عَلَيْهِ وَإِنْ قَلَّتْ، وَكانَ إِذا صَلَّى صَلاَةً دَاوَمَ عَلَيْهَا. [رواه البخاري: ١٩٧٠]

फायदे : एतदाल के साथ सही वक़्तों में जो काम पाबन्दी से किया जाये, वही पाया तकमील को पहुंचता है। वरना दौड़कर चलने वाला हमेशा ठोकर खाकर गिर पड़ता है। ऐतदाल के साथ काम करने से नफ़्स में पाकिजगी और खुद ऐतमादी भी पैदा होती है। (औनुलबारी, 2/838)

बाब 35: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रोजा रखने और न रखने का बयान।

٣٥ - باب: مَا يُذْكَرُ مِنْ صَوْمِ النَّبِيِّ ﷺ وَإِفْطارِهِ

960 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि उनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रोज़ों के बारे में पूछा गया तो उन्होंने जवाब

٩٦٠ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وقد سُئِلَ عَنْ صِيَامِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: مَا كُنْتُ أُحِبُّ أَنْ أَرَاهُ مِنَ الشَّهْرِ صَائِمًا إِلَّا رَأَيْتُهُ، وَلاَ مُفْطِرًا إِلَّا رَأَيْتُهُ، وَلاَ مِنَ اللَّيْلِ قَائِمًا إِلَّا

رَأَيْتُهُ، وَلاَ نَائِمًا إِلَّا رَأَيْتُهُ، وَلاَ مَسِسْتُ خَزَّةً وَلاَ حَرِيرَةً أَلْيَنَ مِنْ كَفِّ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَلاَ شَمِمْتُ مِسْكَةً وَلاَ عَبِيرَةً أَطْيَبَ رَائِحَةً مِنْ رَائِحَةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ١٩٧٣]

दिया, जब मैं चाहता कि किसी महीने में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रोज़े की हालत में देखूं तो आपको रोज़ेदार देख लेता। जब चाहता आपको इफ्तार की हालत में देखूं तो इसी हालत में देख लेता। इस तरह रात को जब चाहता कि आपको नमाज़ में खड़ा हुआ और जब चाहता आपको सोया हुआ देख लेता और मैंने कोई रेशम और मखमल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हथेलियों से ज्यादा नर्म नहीं देखा और न ही मैंने कोई मुश्क और अम्बर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पसीने की खुशबू से ज्यादा खुशबूदार सूंघा।

फायदे : इबादात में दरमियानी और ऐतदाल इसलिए था कि इबादात करने वाले आसानी के साथ आपके तरीके पर अमल पेरा हो सकें, अगरचे आप इल्तेजाम और पाबन्दी के साथ यह इबादात बजा लाने की ताकत रखते थे। (औनुलबारी, 2/840)

٩٦١ : حَدِيثُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو ابْنِ العَاصِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا تَقَدَّمَ. [رواه البخاري: ١١٣١]

961 : अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि. की हदीस (596) गुजर चुकी है।

फायदे : हजरत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि. कसरत से रोज़े रखा करते थे तो आपने इसे ऐतदाल के साथ रोज़े रखने की तलकीन की थी, चूनांचे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि. जब बूढ़े हो गये तो कहा करते थे कि काश मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने पर अमल करके रूखसत कबूल कर लेता।

बाब 36 : जिस्म का भी रोज़े में हक है।

٣٦ - باب: حَقُّ الجِسْمِ فِي الصَّوْمِ

962 : अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि. से ही इस रिवायत में इतना ज्यादा है कि जब वह बूढ़े हो गये तो कहा करते थे, काश मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाजत कबूल की होती।

٩٦٢ : وَقَالَ فِي هٰذِهِ الرِّوَايَةِ: فَكَانَ عَبْدُ اللهِ يَقُولُ بَعْدَمَا كَبِرَ: يَا لَيْتَنِي قَبِلْتُ رُخْصَةَ النَّبِيِّ ﷺ. [رواه البخاري: ١٩٧٥]

फायदे : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि. एक दिन रोजा रखते और एक दिन इफ्तार करते थे, बुढ़ापे के वक्त यह पाबन्दी दुश्वार हुई, कहने लगे कि काश मैंने आपकी इजाजत कुबूल की होती, क्योंकि अब मुझसे इतने रोज़े नहीं रखे जाते।

बाब 37 : रोजा रखने में बीवी के हक की रिआयत करना।

٣٧ - باب: حَقُّ الأَهْلِ فِي الصَّوْمِ

963 : अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि. से ही एक दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब दाउद अलैहि. के रोज़े का जिक्र किया तो फरमाया, वह दुश्मन से मुकाबला के वक्त जंग का मैदान छोड़कर नहीं भागते थे। अब्दुल्लाह रज़ि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! कोई है जो मेरी तरफ से इस बात की जिम्मेदारी कबूल करे (कि मैं मैदान) जंग से नहीं भागूंगा।) रावी कहता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह दोबारा फरमाया, जिसने हमेशा रोज़े रखे, उसने रोजा रखा ही नहीं।

٩٦٣ : وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ: أَنَّه لَمَّا ذَكَرَ صيام داود قَالَ: (... وكَانَ لاَ يَفِرُّ إِذَا لاَقَى). قَالَ عَبْدُاللهِ: مَنْ لِي بِهٰذِهِ يَا نَبِيَّ ٱللهِ؟ قَالَ: وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لاَ صَامَ مَنْ صَامَ الأَبَدَ). مَرَّتَيْنِ. [رواه البخاري: ١٩٧٧]

फायदे : इस हदीस में यह अलफाज भी है कि तेरी जान और तेरे बीवी बच्चों का भी तुझ पर हक है।

٣٨ - باب: مَنْ زَارَ قَوْماً فَلَمْ يُفْطِرْ عِنْدَهُمْ

٩٦٤ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى أُمِّ سُلَيْمٍ، فَأَتَتْهُ بِتَمْرٍ وَسَمْنٍ، قَالَ: (أَعِيدُوا سَمْنَكُمْ فِي سِقَائِهِ، وَتَمْرَكُمْ فِي وِعَائِهِ، فَإِنِّي صَائِمٌ). ثُمَّ قَامَ إِلَى نَاحِيَةٍ مِنَ الْبَيْتِ فَصَلَّى غَيْرَ الْمَكْتُوبَةِ، فَدَعَا لأُمِّ سُلَيْمٍ وَأَهْلِ بَيْتِهَا، فَقَالَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ: يَا رَسُولَ ٱللهِ إِنَّ لِي خُوَيْصَةً، قَالَ: (مَا هِيَ؟). قَالَتْ: خَادِمُكَ أَنَسٌ، فَمَا تَرَكَ خَيْرَ آخِرَةٍ وَلاَ دُنْيَا إِلَّا دَعَا لِي بِهِ، (اللَّهُمَّ ٱرْزُقْهُ مَالاً، وَوَلَداً، وَبَارِكْ لَهُ). فَإِنِّي لَمِنْ أَكْثَرِ الأَنْصَارِ مَالاً. وَحَدَّثَتْنِي ٱبْنَتِي أُمَيْنَةُ: أَنَّهُ دُفِنَ لِصُلْبِي مَقْدَمَ حَجَّاجٍ الْبَصْرَةَ بِضْعٌ وَعِشْرُونَ وَمِائَةٌ. [رواه البخاري: ١٩٨٢]

बाब 38 : जो कोई (रोज़े की हालत में) किसी से मिलने गया और वहां रोज़ा न तोड़ा।

964 : अनस रज़ि. से रिवायत है उन्होंने फरमाया, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मी सुलैम रज़ि. के पास गये तो उन्होंने आपके लिए खुजूरें और घी पेश किया। आपने फरमाया, अपना घी कोजे में और खुजूरें बर्तन में वापिस डाल दो, क्योंकि मैं रोज़े से हूँ। फिर आपने घर के एक कोने में खड़े होकर फर्ज नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ अदा की। उम्मी सुलैम रज़ि. और उनके दीगर घर वालों के लिए दुआ फरमायी। उम्मी सुलैम रज़ि. ने अर्ज किया, मेरा एक खास अजीज है (उसके लिए) फरमाया कौन है? अर्ज किया, आपका खादिम अनस रज़ि। अनस रज़ि. कहते हैं कि आपने दुनिया और आखिरत की कोई भलाई नहीं छोड़ी, जिसकी मेरे लिए दुआ न की हो। आपने फरमाया, ऐ अल्लाह! उसे माल और औलाद अता फरमा और उसे बरकत दे। चूनांचे देख लो, मैं तमाम अनसार से ज्यादा मालदार हूँ और मुझ से मेरी बेटी आमिना रज़ि. बयान करती थी कि हज्जाज के बसरा आने के वक़्त तक एक सौ बीस से कुछ ज्यादा मेरे हकीकी बच्चे दफन हो चुके थे।

फायदे : जब हज्जाज बिन यूसूफ बसरा में आया तो उस वक्त हज़रत अनस रज़ि. की उम्र कुछ ऊपर अस्सी बरस की थी और आप एक सौ बरस की उम्र में फौत हुये। आपका एक बाग था जो साल में दो बार फल देता था, आपकी औलाद जो जिन्दा रहीं वह एक सौ से ज्यादा थी। (औनुलबारी, 2/844)

बाब 39 : महीने के आखिर में रोज़े रखना।

٣٩ - باب: الصَّوْمُ آخِرَ الشَّهْرِ

965 : इमरान बिन हुसैन रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी से पूछा, ऐ अबू फलां। क्या तूने इस महीने के आखिर में रोज़े रखे? उसने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! नहीं, आपने फरमाया, जब तुम रमज़ान के रोज़ों से फारिग हो जाओ तो दो दिन रोज़ा रख लेना। एक रिवायत में है कि आपने फरमाया, शअबान के आखिर में दो रोज़े नहीं रखे।

٩٦٥ : عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَأَلَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلًا، فَقَالَ: (يَا أَبَا فُلَانٍ، أَمَا صُمْتَ سَرَرَ هٰذَا الشَّهْرِ). قَالَ الرَّجُلُ: لَا يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (فَإِذَا أَفْطَرْتَ فَصُمْ يَوْمَيْنِ). وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ قَالَ: (مِنْ سَرَرِ شَعْبَانَ). [رواه البخاري: ١٩٨٣]

फायदे : एक दूसरी हदीस में है कि रमजान से पहले एक दो दिन का रोज़ा रखना मना है, यह इस सूरत में है जब बतौरे इस्तकबाल रखे जाये, अगर इस्तकबाल की नियत न हो तो आखिर शअबान के रोजे रखने में कोई कबाहत नहीं। (औनुलबारी, 2/846)

बाब 40 : जुमे के दिन रोज़ा रखना।

٤٠ - باب: صَوْمُ يَوْمِ الْجُمُعَةِ

966 : जाबिर रज़ि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया, कि आया रसूलुल्लाह

٩٦٦ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قِيلَ له: أَنَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुमा के दिन रोज़ा रखने से मना फरमाया है? उन्होंने कहा : हाँ।

صَوْمِ يَوْمِ الْجُمُعَةِ؟. قَالَ: نَعَمْ. [رواه البخاري: ١٩٨٤]

967 : जुवैरिया बिन्ते हारिस रजि.से रिवायत है, जुमा के दिन नबी अकरम रज़ि. उनके घर तशरीफ ले गये तो वह रोज़े से थे। आपने पूछा क्या तूने कल भी रोज़ा रखा था? उन्होंने अर्ज किया, नहीं! आपने फरमाया, क्या तू कल आईन्दा रोज़ा रखना चाहती है? उन्होंने अर्ज किया : नहीं। आपने फरमाया, फिर तू रोज़ा इफ्तार कर दे।

٩٦٧ : عَنْ جُوَيْرِيَةَ بِنْتِ الحَارِثِ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا يَوْمَ الجُمُعَةِ، وَهِيَ صَائِمَةٌ، فَقَالَ: (أَصُمْتِ أَمْسِ؟). قَالَتْ: لاَ، قَالَ: (أَتُرِيدِينَ أَنْ تَصُومِي غَدًا؟). قَالَتْ: لاَ، قَالَ: (فَأَفْطِرِي). [رواه البخاري: ١٩٨٦]

फायदे : सिर्फ जुमा का रोज़ा रखना मना है। अगर एक दिन पहले या बाद साथ मिला लिया जाये तो कोई हर्ज नहीं। यह इसलिए मना फरमाया कि यहूदियों से बराबरी न हो, क्योंकि वो जिस दिन अपनी इबादत गाहों में जमा होते हैं, सिर्फ उस दिन का रोज़ा रखते हैं। (औनुलबारी, 2/847)

बाब 41 : रोजे के लिए कोई दिन मुकर्रर (तय) किया जा सकता है?

٤١ - باب: هَلْ يَخُصُّ مِنَ الأَيَّامِ شَيْئًا

968 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उनसे सवाल किया गया, आया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इबादत के लिए कुछ दिनों की तखसीस फरमाते थे,

٩٦٨ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّهَا سُئِلَتْ: هَلْ كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَخْتَصُّ مِنَ الأَيَّامِ شَيْئًا؟. قَالَتْ: لاَ، كَانَ عَمَلُهُ دِيمَةً، وَأَيُّكُمْ يُطِيقُ مَا كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُطِيقُ. [رواه البخاري: ١٩٨٧]

उन्होंने फरमाया, नहीं। आपकी इबादत दायमी हुआ करती थी और तुममें से कौन है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बराबर ताकत रखता हो।

फायदे : इमाम बुखारी का मतलब यह है कि किसी दिन को खास करके पाबन्दी के साथ रोज़ा रखना दुरूस्त नहीं, लेकिन सोमवार और जुमेरात का रोज़ा तो खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रखा करते थे। शायद इमाम साहब के नजदीक यह हदीस सही नहीं होगी। वल्लाहु आलम।

बाब 42: अय्यामे तशरीक में रोज़ा रखना।

٤٢ - باب: صِيَامُ أَيَّامِ التَّشْرِيقِ

969 : आइशा रज़ि. और इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अय्यामे तशरीक में रोज़ा रखने की इजाजत नहीं दी गई। मगर उस आदमी को जिसे (अय्यामे हज में) कुरबानी का जानवर न मिले।

٩٦٩ : عَنْ عَائِشَةَ وَابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمْ قَالاَ: لَمْ يُرَخَّصْ فِي أَيَّامِ التَّشْرِيقِ أَنْ يُصَمْنَ، إِلَّا لِمَنْ لَمْ يَجِدِ الْهَدْيَ. [رواه البخاري: ١٩٩٧، ١٩٩٨]

फायदे : हज्जे तमत्तुऊ करने वाले को अगर हदी (कुर्बानी) न मिले तो अय्यामे तशरीक के रोज़े रखने में कबाहत नहीं। इसके अलावा दूसरों को उन दिनों रोज़ा नहीं रखना चाहिए, क्योंकि यह दिन खाने पीने और अल्लाह के जिक्र के लिए खास हैं।

(औनुलबारी, 2/850)

बाब 43 : आशूरा के दिन रोज़ा रखना।

٤٣ - باب: صَوْمُ يَوْمِ عَاشُورَاءَ

970 : आइशा रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जाहिलीयत के जमाने में कुरैश आशूरा के

٩٧٠ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ يَوْمُ عَاشُورَاءَ تَصُومُهُ قُرَيْشٌ فِي الجَاهِلِيَّةِ، وَكَانَ رَسُولُ

اللهِ ﷺ يَصُومُهُ، فَلَمَّا قَدِمَ المَدِينَةَ صَامَهُ وَأَمَرَ بِصِيَامِهِ، فَلَمَّا فُرِضَ رَمَضَانُ تَرَكَ يَوْمَ عَاشُورَاءَ، فَمَنْ شَاءَ صَامَهُ وَمَنْ شَاءَ تَرَكَهُ. [رواه البخاري: ٢٠٠٢]

दिन रोजा रखा करते थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उस दिन रोजा रखते और जब आप मदीना मुनव्वरा तशरीफ लाये तब भी आपने यह रोजा रखा और लोगों को भी रोजा रखने का हुक्म दिया, लेकिन जब रमजान के रोज़े फर्ज हुये तो आशूरा का रोजा इख्तियारी कर दिया गया। अब जिसका दिल चाहे उस दिन रोजा रख ले और जिसका जी चाहे न रखे।

फायदे : आशूरा दसवीं मोहर्रम को कहते हैं, उस दिन का रोजा रखना मुस्तहब (सुन्नत) है। अलबत्ता यहूदियों की मुखालफत के पेशे नजर एक दिन पहले या बाद का रोजा साथ रख लिया जाये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस ख्वाहिश का इजहार किया था कि अगर मैं जिन्दा रहा तो अगले साल नोंवे मोहर्रम का रोजा भी रखूंगा। लेकिन आप पहले ही रफीकुल आला से जा मिले (इन्तेकाल कर गये)। वाजेह रहे कि हज़रत नूह अलैहि. से यह दिन काबिले एहतेराम है। हज़रत नूअ अलैहि. की कश्ती भी इसी दिन जुदी पहाड़ पर लंगर अन्दाज हुई थी, इसलिए वह भी इस दिन का रोजा रखते थे।

٩٧١ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ المَدِينَةَ، فَرَأَى الْيَهُودَ تَصُومُ يَوْمَ عَاشُورَاءَ، فَقَالَ: (مَا هٰذَا؟). قَالُوا: يَوْمٌ صَالِحٌ، هٰذَا يَوْمٌ نَجَّى ٱللهُ عَزَّ وَجَلَّ بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنْ عَدُوِّهِمْ، فَصَامَهُ مُوسَى. قَالَ: (فَأَنَا أَحَقُّ بِمُوسَى

971 : इब्ने अब्बास रजि.से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना आये तो आपने यहूदियों को आशूरा का रोजा रखते देखा। आपने पूछा, यह रोजा क्या है? उन्होंने जवाब

مِنكُمْ". فَصَامَهُ وَأَمَرَ بِصِيَامِهِ. [رواه البخاري: ٢٠٠٤]

दिया, एक अच्छा दिन है, यानी इस दिन अल्लाह ने बनी इसराईल को उनके दुश्मन से निजात दी थी तो मूसा अलैहि. ने रोज़ा रखा था। आपने फरमाया मैं तुमसे ज्यादा मूसा अलैहि. से ताल्लुक रखता हूँ, चूनांचे आपने उस दिन का रोज़ा रखा और लोगों को भी रोज़ा रखने का हुक्म दिया।

फायदे : पाबन्दी के साथ रोज़ा रखने का यह हुक्म रमजानुल मुबारक के रोज़े फर्ज होने से पहले का था।



किताबुस्सलात्तिरावीह

नमाज़ तरावीह के बयान में

लफ्ज 'तरावीह' तरवीया की जमा और राहः से मुश्तक है, चूनांचे लोग इस नमाज़ में हर चहार गाना के बाद थोड़ी देर के लिए आराम करते थे। इसलिए इन्हें तरावीह कहा जाता है। इसका नाम तहज्जुद, कय्यामुल लैल और कय्यामे रमजान भी है। इसकी तादाद ग्यारह रकअत है। हजरत आइशा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल. रमजान और गैर रमजान में ग्यारह रकअत से ज्यादा नहीं पढ़ा करते थे। रसूलुल्लाह सल्ल. की सुन्नत के पेशे नजर हमारा मुकिफ यह है कि इस अददे मसनून पर इजाफा न किया जाये, हज़रत उमर रजि. ने भी इसी सुन्नत को जिन्दा करते हुये ग्यारह रकअत पढ़ने का अहतिमाम किया था। रसूलुल्लाह सल्ल. से बीस रकअत पढ़ने की जुम्ला रिवायत जईफ और नाकाबिले ऐतबार है।

बाब 1 : रमजान में तरावीह पढ़ने की फजीलत।

١ - باب: فَضْلُ مَنْ قَامَ رَمَضَانَ

972 : आइशा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार आधी रात में घर से बाहर तशरीफ ले गये और आपने मस्जिद में नमाज़ पढ़ी तो

٩٧٢ : عَنْ عَائِشَةَ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ خَرَجَ لَيْلَةً فِي جَوْفِ ٱللَّيْلِ، فَصَلَّى فِي ٱلْمَسْجِدِ، وَصَلَّى رِجَالٌ بِصَلاَتِهِ. تقدم هذا الحديث في كتاب الصلاة، وبينهما مخالفة في اللفظ.

कुछ और लोगों ने भी आपके पीछे नमाज़ अदा की। यह हदीस (423, 424) किताबुस्सलात में गुजर चुकी है। मगर इन दोनों रिवायतों में कुछ लफ्जी इख्तिलाफ है और इस रिवायत के आख़िर में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात तक यही हालत क़ायम रही।

وقَالَ فِي آخِرِ هٰذِهِ الرِّوايَةِ: فَتُوُفِّيَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَالأَمْرُ عَلَى ذٰلِكَ. [رواه البخاري: ٢٠١٢]

फ़ायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिर्फ चन्द दिन बाजमाअत नमाज़ तरावीह पढ़ाने का अहतेमाम किया। फिर लोग अपने अपने तौर घर पढ़ लेते थे। हज़रत उमर रज़ि॰ ने उन लोगों को एक इमाम हज़रत उबे बिन कअब रज़ि॰ पर जमा कर दिया। मौत्ता इमाम मालिक में है कि उन्हें ग्यारह रकअत पढ़ने का हुक्म दिया।

बाब 2 : शबे कद्र को आखरी सात रातों में तलाश करना चाहिए।

٢ - باب: التِماسُ لَيْلَةِ القَدْرِ فِي السَّبْعِ الأَواخِرِ

973 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चन्द सहाबा को लइलतुल कद्र रमजान के आखिरी हफ्ते में ख्वाब की हालत में दिखाई गई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं तुम्हारे ख्वाबों को देखता हूं। वो सब इस बात पर मुत्तफिक हुये हैं कि शबे कद्र रमजान की आखरी रातों में है। लिहाजा जो कोई लइलतुल कद्र का चाहने वाला हो, वो उसे आखरी सात रातों में तलाश करे।

٩٧٣ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما: أَنَّ رِجالًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ أُرُوا لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِي المَنَامِ فِي السَّبْعِ الأَوَاخِرِ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَرَى رُؤْيَاكُمْ قَدْ تَوَاطَأَتْ فِي السَّبْعِ الأَوَاخِرِ، فَمَنْ كَانَ مُتَحَرِّيهَا فَلْيَتَحَرَّهَا فِي السَّبْعِ الأَوَاخِرِ). [رواه البخاري: ٢٠١٥]

फायदे : जब आखरी सात रातों में दिखाई गयी तो इक्कीसवें और तेईसवें रात दाखिल न होगी, जिन रिवायात में आखिरी दस रातों का जिक्र है, उनमें इक्कीसवीं और तेईसवीं शामिल होगी।

974 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रमजान के दरमियानी (बीचले) अशरे में एतकाफ किया और आप बीसवीं तारीख की सुबह को (ऐतकाफगाह से) बाहर तशरीफ लाये और हम से मुखातिब होकर फरमाया, मुझे लइलतुल कद्र ख्वाब में दिखाई गयी थी। मगर मुझे भुला दी गई या यह फरमाया कि मैं भूल गया। लिहाजा अब तुम इसे आखिरी अशरा की ताक रातों में तलाश करो। मैंने ख्वाब में ऐसा देखा गौया मैं कीचड़ में सज्दा कर रहा हूं, इसलिए जिस आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ ऐतकाफ किया है, वह फिर लौट आये और ऐतकाफ करे, चूनाचे हम लौट आये और उस वक्त आसमान पर बादल का निशान तक न था। लेकिन अचानक बादल मण्डलाया और इतना बरसा कि मस्जिद की छत टपकने लगी और वह खजूर की शाखों से बनी हुई थी। फिर नमाज़ कायम की गई तो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कीचड़ में सज्दा करते हुये देखा। यहां तक कि आपकी

٩٧٤ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ٱعْتَكَفْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ الْعَشْرَ الأَوْسَطَ مِنْ رَمَضَانَ، فَخَرَجَ صَبِيحَةَ عِشْرِينَ فَخَطَبَنَا، وَقَالَ: (إِنِّي أُرِيتُ لَيْلَةَ الْقَدْرِ، ثُمَّ أُنْسِيتُهَا، أَوْ: نُسِّيتُهَا، فَالْتَمِسُوهَا فِي الْعَشْرِ الأَوَاخِرِ فِي الْوِتْرِ، وَإِنِّي رَأَيْتُ أَنِّي أَسْجُدُ فِي مَاءٍ وَطِينٍ، فَمَنْ كَانَ ٱعْتَكَفَ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَلْيَرْجِعْ). فَرَجَعْنَا وَمَا نَرَى فِي السَّمَاءِ قَزَعَةً، فَجَاءَتْ سَحَابَةٌ فَمَطَرَتْ حَتَّى سَالَ سَقْفُ الْمَسْجِدِ، وَكَانَ مِنْ جَرِيدِ النَّخْلِ، وَأُقِيمَتِ الصَّلاَةُ، فَرَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَسْجُدُ فِي الْمَاءِ وَالطِّينِ، حَتَّى رَأَيْتُ أَثَرَ الطِّينِ فِي جَبْهَتِهِ ﷺ.

[رواه البخاري: ٢٠١٦]

पैशानी मुबारक पर मैंने मिट्टी का निशान देखा।

फायदे : लइलतुल कद्र रमजान की आखरी अशरा की ताक रातों में है। इसकी कई एक निशानियां हैं जो गुजरने के बाद जाहिर होती हैं। मसलन उस दिन सूरज की गर्मी तेज नही होती हैं, उस रात सितारे नहीं टूटते और दिन मुअतदिल हो जाता है। (औनुलबारी, 2/875)

बाब 3 : लइलतुल कद्र को आखरी दस ताक रातों में इबादत की हालत में तलाश करना।

٣ - باب: تَحَرِّي لَيْلَةِ الْقَدْرِ فِي الوِتْرِ مِنَ الْعَشْرِ الأَوَاخِرِ فِي عِبَادَة

975: इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि लइलतुलकद्र को रमजान की आखरी अशरा में तलाश करो, जब नौ या सात या पांच रातें बाकी रह जायें, यानी इक्कीसवीं, तैईसवीं और पच्चीसवीं रात को।

٩٧٥ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (الْتَمِسُوهَا فِي الْعَشْرِ الأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ، لَيْلَةَ الْقَدْرِ، فِي تَاسِعَةٍ تَبْقَى، فِي سَابِعَةٍ تَبْقَى، فِي خَامِسَةٍ تَبْقَى). [رواه البخاري: ٢٠٢١]

फायदे : इस हदीस के मुताबिक इक्कीसवीं, तैइसवीं और पच्चीसवीं रात मुराद हैं। जबकि उन्तीस दिनों का महीना हो, अगर तीस दिनों का महीना हो तो ताक रातें नहीं बल्कि जुफ्त होगी, सही यह है कि ताक रातें मुराद हैं।

976 : इब्ने अब्बास रज़ि. से ही एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि लइलतुल कद्र आखरी अशरा में होती है। जबकि नौ रातें गुजर जायें या सात रातें बाकी रहें।

٩٧٦ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، فِي رِوَايَةٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (هِيَ فِي الْعَشْرِ الأَوَاخِرِ فِي تِسْعٍ يَمْضِينَ، أَوْ فِي سَبْعٍ يَبْقَيْنَ). يَعْنِي لَيْلَةَ الْقَدْرِ. [رواه البخاري: ٢٠٢٢]

फायदे : नो रातें गुजर जाने से मुराद उन्तीसवीं रात है और सात रातें बाकी रहने से मुराद तीसवीं रात है। इस रात की तईन में खासा इख्तिलाफ है। इबादत करने वाले को चाहिए कि वह आखरी अशरा की ताक रातें इबादत से गुजारें।

---

٤ - باب: العَمَلُ فِي العَشْرِ الأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ

बाब 4 : रमजान के आखरी अशरा में इबादत करना।

٩٧٧ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا دَخَلَ الْعَشْرُ شَدَّ مِئْزَرَهُ، وَأَحْيَا لَيْلَهُ، وَأَيْقَظَ أَهْلَهُ. [رواه البخاري: ٢٠٢٤]

977 : आइशा रजि.से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमजान के आखरी अशरा में इबादत के लिए कमरबस्ता हो जाते, शब बैदारी फरमाते और अपने घर वालों को भी बैदार रखते थे।

फायदे : मकसद यह है कि आखरी अशरा खूब इबादत करते हुये गुजारा जाये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस अशरा में अपनी बीवियों से अलग हो जाते और बिस्तर को लपेट देते। खूब कमर बस्ता होकर इन रातों का कयाम करते।

(औनुलबारी, 2/879)



किताबुल ऐतकाफ

ऐतकाफ के बयान में

ऐतकाफ यह है कि आदमी रमजान का आखरी अशरा इबादत के लिए मस्जिद में गुजारे, वैसे तो साल के तमाम दिनों में ऐतकाफ करना जाइज है। अलबत्ता रमजानुल मुबारक में ऐतकाफ करना सुन्नत मौकिदा है। इसलिए जरूरी यह है कि चाहे मर्द हो या औरत मस्जिद में ऐतकाफ किया जाये।

١ - باب: الاعْتِكَافُ فِي العَشْرِ الأَوَاخِرِ والاعْتِكَافُ فِي المَسَاجِدِ كُلِّهَا

बाब 1 : आखरी अशरा में ऐतकाफ करना नीज ऐतकाफ हर मस्जिद में दुरूस्त (सही) है।

٩٧٨ : عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ وَرَضِيَ عَنْهَا، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَعْتَكِفُ العَشْرَ الأَوَاخِرَ مِنْ رَمَضَانَ حَتَّى تَوَفَّاهُ اللهُ، ثُمَّ اعْتَكَفَ أَزْوَاجُهُ مِنْ بَعْدِهِ. [رواه البخاري: ٢٠٢٦]

978: आइशा रज़ि. नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम रमजान के आखरी अशरा में पाबन्दी से ऐतकाफ करते थे। यहां तक कि अल्लाह तआला ने आपको उठा लिया। फिर आपके बाद आपकी पाक बीवीयां ऐतकाफ करती रहीं।

फायदे : ऐतकाफ के लिए इस शर्त पर तमाम इमामों का इत्तेफाक है कि मस्जिद में होना चाहिए। अक्सर मुद्दत की हद नहीं है, लेकिन कम से कम एक दिन जरूर हो। (औनुलबारी, 2/881)

٢ - باب: لاَ يَدْخُلُ البَيْتَ إِلَّا لِحَاجَةٍ

बाब 2 : जरूरत के वक्त घर में दाखिल होना।

979 : आइशा रजि.से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐतकाफ की हालत में मस्जिद में रहते हुये अपना सर मुबारक मेरी तरफ झुका देते तो मैं आपके कंघी कर देती थी और जब आप मुअतकिफ होते तो घर में बिला जरूरत तशरीफ न लाते।

٩٧٩ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: وَإِنْ كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ لَيُدْخِلُ عَلَيَّ رَأْسَهُ، وَهُوَ فِي المَسْجِدِ، فَأُرَجِّلُهُ، وَكَانَ لاَ يَدْخُلُ البَيْتَ إِلَّا لِحَاجَةٍ إِذَا كَانَ مُعْتَكِفًا. [رواه البخاري: ٢٠٢٩]

फायदे : जरूरत से मुराद कजा-ए- हाजत है। जैसा कि हदीस के रावी इमाम जहरी ने उसकी तफसीर की है। मालूम हुआ कि अगर मस्जिद में लैटरीन वगैरह का इंतजाम न हो तो इस किस्म की जरूरत के लिए अपने घर आना जाइज है।

बाब 3 : सिर्फ रात भर के लिए ऐतकाफ करना।

٣ - باب: الاعْتِكَافِ لَيْلاً

980 : उमर रज़ि. से रिवायत है कि एक बार उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, मैंने जाहिलीयत के जमाने में, बैतुल्लाह में एक रात का ऐतकाफ बैठने की नजरमानी थी, आपने फरमाया तो फिर अपनी नजर पूरी करो।

٩٨٠ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: كُنْتُ نَذَرْتُ فِي الجَاهِلِيَّةِ أَنْ أَعْتَكِفَ لَيْلَةً فِي المَسْجِدِ الحَرَامِ؟. قَالَ: (فَأَوْفِ بِنَذْرِكَ). [رواه البخاري: ٢٠٣٢]

फायदे : मालूम हुआ कि ऐतकाफ में रोजा शर्त नहीं है, क्योंकि रात को रोजा नहीं हो सकता। (औनुलबारी, 2/883)

बाब 4 : ऐतकाफ के लिए मस्जिद में खैमे लगाना।

٤ - باب: الأَخْبِيَةُ فِي المَسْجِدِ

981 : आइशा रजि.से रिवायत है कि नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐतकाफ का इरादा फरमाया और जब आप उस जगह पहुंचे जहां ऐतकाफ करना चाहते थे तो वहां चन्द खैमे देखे। यानी वह आइशा, हफसा और जैनब रज़ि. के खैमे थे। फिर आपने फरमाया, क्या तुम इनमें नेकी समझती हो? फिर आप लौट आये और ऐतकाफ न किया। यहां तक कि माहे शव्वाल में दस रोज ऐतकाफ फरमाया।

٩٨١ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَرَادَ أَنْ يَعْتَكِفَ، فَلَمَّا ٱنْصَرَفَ إِلَى ٱلْمَكَانِ الَّذِي أَرَادَ أَنْ يَعْتَكِفَ فِيهِ، إِذَا أَخْبِيَةٌ: خِبَاءُ عَائِشَةَ، وَخِبَاءُ حَفْصَةَ، وَخِبَاءُ زَيْنَبَ، فَقَالَ: (آلْبِرَّ تَقُولُونَ بِهِنَّ). ثُمَّ ٱنْصَرَفَ فَلَمْ يَعْتَكِفْ، حَتَّى ٱعْتَكَفَ عَشْرًا مِنْ شَوَّالٍ. [رواه البخاري: ٢٠٣٤]

फायदे : मुस्लिम की रिवायत में है कि शव्वाल के आगाज में ऐतकाफ किया, इससे भी यह साबित होता है कि ऐतकाफ के लिए रोजा शर्त नहीं (औनुलबारी, 2/885)

बाब 5 : क्या मुअतकिफ अपनी किसी जरूरत के पेशे नजर मस्जिद के दरवाजे तक आ सकता है?

٥ - باب: هَلْ يَخْرُجُ المُعْتَكِفُ لِحَوَائِجِهِ إِلَى بَابِ المَسْجِدِ

982 : सफिय्या रज़ि. से रिवायत है कि जब नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम रमजान के आखरी अशरा में मस्जिद में मुअतकिफ थे तो वह आपकी जियारत के लिए आई और कुछ देर आपसे बातचीत की। फिर उठकर जाने लगी। तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी

٩٨٢ : عَنْ صَفِيَّةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ وَرَضِيَ عَنْهَا أَنَّهَا جَاءَتْ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ تَزُورُهُ فِي ٱعْتِكَافِهِ فِي المَسْجِدِ، فِي ٱلْعَشْرِ الأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ، فَتَحَدَّثَتْ عِنْدَهُ سَاعَةً، ثُمَّ قَامَتْ تَنْقَلِبُ، فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ مَعَهَا يَقْلِبُهَا، حَتَّى إِذَا بَلَغَتْ بَابَ المَسْجِدِ عِنْدَ بَابِ أُمِّ سَلَمَةَ، مَرَّ رَجُلَانِ مِنَ الأَنْصَارِ، فَسَلَّمَا عَلَى

رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَقَالَ لَهُمَا النَّبِيُّ ﷺ: (عَلَى رِسْلِكُمَا، إِنَّمَا هِيَ صَفِيَّةُ بِنْتُ حُيَيٍّ). فَقَالاَ: سُبْحَانَ ٱللهِ يَا رَسُولَ ٱللهِ، وَكَبُرَ عَلَيْهِمَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّ الشَّيْطَانَ يَبْلُغُ مِنَ الإِنْسَانِ مَبْلَغَ ٱلدَّمِ، وَإِنِّي خَشِيتُ أَنْ يَقْذِفَ فِي قُلُوبِكُمَا شَيْئًا). [رواه البخاري: ٢٠٣٥]

उन्हें पहुंचाने के लिए साथ ही उठे। जब वह मस्जिद के दरवाजे के करीब उम्मी सलमा रज़ि. के दरवाजे के पास पहुंचे तो अन्सार के दो आदमी उधर से गुजरे, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया तो आपने उनसे फरमाया, ठहर जाओ। यह सफिया बिन्ते हुय्य रज़ि. थी। उन दोनों ने कहा, सुब्हान अल्लाह! ऐ अल्लाह के रसूल सल्लाहु अलैहि वसल्लम! (क्या हम आप पर बदगुमान हैं?) और इन्हें यह चीज बहुत शाक गुजरी तो आपने फरमाया, शैतान खून की तरह इन्सान में गरदीश करता है (दौड़ता है)। मुझे अन्देशा हुआ कि मुबादा तुम्हारे दिलों में कोई वसवसा डाल दे।

फायदे : मालूम हुआ कि इन्सान को तोहमत के मकामात से परहेज करना चाहिए और अपनी इज्जत व नामोस की हिफाजत में कोई कसर न उठा रखे।

---

٦ - باب: الاعْتِكَافُ فِي العَشْرِ الأَوْسَطِ مِنْ رَمَضَانَ

बाब 6 : रमजान के दरमियानी अशरा में ऐतकाफ करना।

٩٨٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَعْتَكِفُ فِي كُلِّ رَمَضَانَ عَشْرَةَ أَيَّامٍ، فَلَمَّا كَانَ الْعَامُ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ ٱعْتَكَفَ عِشْرِينَ يَوْمًا. [رواه البخاري: ٢٠٤٤]

983 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम हर रमजान दस दिन ऐतकाफ किया करते थे, मगर वफात के साल आपने बीस दिन ऐतकाफ फरमाया था।

फायदे : इमाम बुखारी का मतलब यह है कि ऐतकाफ के लिए अगरचे आखरी अशरा अफजल है, लेकिन जरूरी नहीं है, इससे पहले भी ऐतकाफ किया जा सकता है।



किताबुल बुयु
खरीदने और बेचने का बयान

कीमत के बदले किसी चीज को दूसरे की मिलकियत करना "बय" कहलाता है। दरअसल इन्तिकाले मिलकियत दो तरह की हैं, इख्तियारी और गैर इख्तियारी। गैर इख्तियारी इन्तिकाल मिलकियत विरासत में होती है। फिर इख्तियारी की भी दो किस्में हैं। अगर मुआवजा (बदले) के साथ है तो बय और अगर मुआवजा के बगैर है तो जिन्दगी में दिया जाये तो हिबा (दान)। मौत के बाद इन्तिकाले मिलकियत हो तो उसे वसीयत कहते हैं, बय के जवाज पर मुसलमानों का इजमाअ है।

बाब 1 : फरमाने इलाही है, जब जुमा की नमाज़ हो जाये तो जमीन में फैल जाओ।

١ - باب: مَا جَاءَ فِي قَوْلِ الله تعالى: ﴿فَإِذَا قُضِيَتِ ٱلصَّلَوٰةُ فَٱنتَشِرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ﴾ الآية

984 : अब्दुल रहमान बिन औफ रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब हम मदीना आये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे और साद बिन रबीअ रज़ि. के बीच भाईचारा करा दिया। साद बिन रबीअ रज़ि. ने मुझ से कहा, मैं तमाम अन्सार से

٩٨٤ : عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا قَدِمْنَا المَدِينَةَ آخَى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بَيْنِي وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ، فَقَالَ سَعْدُ بْنُ الرَّبِيعِ: إِنِّي أَكْثَرُ الأَنْصَارِ مَالاً، فَأَقْسِمُ لَكَ نِصْفَ مَالِي، وَٱنْظُرْ أَيَّ زَوْجَتَيَّ هَوِيتَ نَزَلْتُ لَكَ عَنْهَا، فَإِذَا حَلَّتْ تَزَوَّجْتَهَا، [قَالَ:] فَقَالَ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ: لاَ حَاجَةَ لِي فِي

ذٰلِكَ، هَلْ مِنْ سُوقٍ فِيهِ تِجَارَةٌ؟. قَالَ: سُوقُ قَيْنُقَاعَ، [قَالَ:] فَغَدَا إِلَيْهِ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ، فَأَتَى بِأَقِطٍ وَسَمْنٍ، ثُمَّ تَابَعَ الْغُدُوَّ، فَمَا لَبِثَ أَنْ جَاءَ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ عَلَيْهِ أَثَرُ الصُّفْرَةِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (تَزَوَّجْتَ؟). قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: (وَمَنْ؟). قَالَ: امْرَأَةً مِنَ الأَنْصَارِ، قَالَ: (كَمْ سُقْتَ إِلَيْهَا؟). قَالَ: زِنَةَ نَوَاةٍ مِنْ ذَهَبٍ، أَوْ نَوَاةً مِنْ ذَهَبٍ، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: (أَوْلِمْ وَلَوْ بِشَاةٍ). [رواه البخاري: ٢٠٤٨]

ज्यादा मालदार हूँ। तुम्हें अपना आधा माल देता हूँ और मेरी दोनों बीवियों को देख लो, जिसको तुम पसन्द करो, मैं उसे तलाक देता हूँ। जब उसकी इद्दत गुजर जाये तो उससे निकाह कर लेना। अब्दुल रहमान बिन औफ रज़ि. ने कहा, मुझ को इसकी जरूरत नहीं। यहां कोई बाजार है, जहां तिजारत (व्यापार) होती हो? उन्होंने कहा, हां। केनक़ा एक बाजार है, अब्दुल रहमान बिन औफ रज़ि. सुबह को बाजार गये और कुछ पनीर कमा कर ले आये। फिर वह रोजाना लेन देन की गर्ज से बाजार जाने लगे, कुछ दिन बाद अब्दुल रहमान बिन औफ रज़ि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में आये तो उनके लिबास पर जर्द (पीला) खुशबू का रंग था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, क्या तुमने निकाह किया है? उन्होंने कहा हाँ। आपने फरमाया, किससे? उन्होंने अर्ज किया, एक अन्सारी खातून से। आपने फरमाया, तुमने उसे कितना महर दिया? उन्होंने अर्ज किया एक गुठली बराबर सोना दिया है। या यह कहा कि एक सोने की गुठली। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, वलीमा करो, अगरचे एक बकरी से ही हो।

फायदे : इमाम बुखारी ने इस हदीस से यह साबित किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में बाज सहाबा व्यापार किया करते थे, जिससे खरीद और फरोख्त का सबूत मिलता है। नीज हिबा (दान) वगैरह से माल हासिल करना सहाबा

किराम का मतमअ-ए- नजर न था, बल्कि उन्होंने तिजारत को जरीया मआश बनाया। (औनुलबारी, 3/5)

---

٢ - باب: الحَلاَلُ بَيِّنٌ وَالحَرَامُ بَيِّنٌ وَبَيْنَهُمَا مُشَبَّهَاتٌ

बाब 2 : हलाल खुला है और हराम खुला है और इन दोनों के बीच कुछ शुबे की चीजें हैं।

٩٨٥ : عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (الحَلاَلُ بَيِّنٌ وَالحَرَامُ بَيِّنٌ، وَبَيْنَهُمَا أُمُورٌ مُشْتَبِهَةٌ، فَمَنْ تَرَكَ مَا شُبِّهَ عَلَيْهِ مِنَ الإِثْمِ كَانَ لِمَا ٱسْتَبَانَ أَتْرَكَ، وَمَنِ ٱجْتَرَأَ عَلَى مَا يَشُكُّ فِيهِ مِنَ الإِثْمِ أَوْشَكَ أَنْ يُوَاقِعَ مَا ٱسْتَبَانَ، وَالمَعَاصِي حِمَى ٱللهِ، مَنْ يَرْتَعْ حَوْلَ الحِمَى يُوشِكُ أَنْ يُوَاقِعَهُ). [رواه البخاري: ٢٠٥١]

985 : नुमान बिन बशीर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हलाल जाहिर (साफ) है और हराम भी जाहिर (साफ) है और इनके बीच कुछ शुबा की चीजे हैं। जिस आदमी ने इस चीज को छोड़ दिया, जिसमें गुनाह का शुबा (शक) हो तो वह उस चीज को पहले छोड़ देगा, जिसका गुनाह होना साफ हो और जिसने शक की चीज पर जुर्रात की तो वह जल्दी ही ऐसी बात में शामिल हो सकता है, जिसका गुनाह होना साफ है। गुनाह जैसे अल्लाह की चरागाह में जो अपने जानवर चरागाह के आस पास चराएगा, जल्दी ही उसका चरागाह में पहुंचना मुमकिन होगा।

फायदे : शक शुबे की चीजों से मतलब वह हैं, जिनकी हदें हलाल और हराम दोनों से मिलती हों और कुछ लोग इनकी हलाल और हराम का फैसला न कर सकें। हालांकि वह शक वाले नहीं होते, क्योंकि अल्लाह तआला ने अपना रसूल भेजकर दीन की जरूरी बातों से हमें खबरदार कर दिया है। परहेजगारी यही है कि इन्सान शक व शुब्हात वाली चीजों से भी बचता रहे। (औनुलबारी, 3/6)

बाब 3 : शुब्हात का खुलासा।

٣ - باب: تَفْسِيرِ الْمُشَبَّهَاتِ

986 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि उतबा बिन अबी वकास ने अपने भाई साद बिन अबी वकास रज़ि. से यह वसीयत की थी कि जमआ की लौण्डी का बेटा मेरे नुत्फे (वीर्य) से है। तुम उसे अपने कब्जे में ले लेना। आइशा रज़ि. फरमाती हैं कि मक्का जीतने के साल साद बिन अबी वकास रज़ि. ने उसे ले लिया और कहा कि यह मेरा भतीजा है, मेरे भाई ने उसे लेने की मुझे वसीयत की थी। उस वक्त अब्द बिन जमआ खड़ा हुआ और कहने लगा, यह तो मेरा भाई है। यानी मेरे बाप की लौण्डी का बेटा है और उससे पैदा हुआ है। आखिर दोनों झगड़ते झगड़ते नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये। साद रज़ि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह मेरा भतीजा है, मेरे भाई ने उसे लेने की मुझे वसीयत की थी। अब्द बिन जमआ ने कहा, यह मेरा भाई है और मेरे बाप की लोण्डी से है और उसके बिस्तर पर पैदा हुआ है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ अब्द बिन जमआ! यह बच्चा तुझ

٩٨٦ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ عُتْبَةُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ، عَهِدَ إِلَى أَخِيهِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ [رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ]: أَنَّ ٱبْنَ وَلِيدَةِ زَمْعَةَ مِنِّي فَاقْبِضْهُ، قَالَتْ: فَلَمَّا كَانَ عَامُ الْفَتْحِ أَخَذَهُ سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ [رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ] وَقَالَ: ابْنُ أَخِي، قَدْ عَهِدَ إِلَيَّ فِيهِ، فَقَامَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ فَقَالَ: أَخِي وَٱبْنُ وَلِيدَةِ أَبِي، وُلِدَ عَلَى فِرَاشِهِ، فَتَسَاوَقَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ سَعْدٌ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، ابْنُ أَخِي، كَانَ قَدْ عَهِدَ إِلَيَّ فِيهِ. فَقَالَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ: أَخِي وَٱبْنُ وَلِيدَةِ أَبِي، وُلِدَ عَلَى فِرَاشِهِ. فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (هُوَ لَكَ يَا عَبْدُ بْنَ زَمْعَةَ). ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ وَلِلْعَاهِرِ الْحَجَرُ). ثُمَّ قَالَ لِسَوْدَةَ بِنْتِ زَمْعَةَ، زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ: (ٱحْتَجِبِي مِنْهُ يَا سَوْدَةُ). لِمَا رَأَى مِنْ شَبَهِهِ بِعُتْبَةَ، فَمَا رَآهَا حَتَّى لَقِيَ ٱللهَ عَزَّ وَجَلَّ.

[رواه البخاري: ٢٠٥٣]

को मिलेगा। इसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, बच्चा उसका होता है जो जायज शौहर या मालिक हो और जिनाकार (बदकार) के लिए नाकामी है। उसके बाद आपने उम्मुल मौमिनीन सवदा रज़ि. से फरमाया जो जमआ की बेटी थी, तुम उससे पर्दा करो, क्योंकि आपने उस लड़के में उतबा की मुशाबहत देखी, चूनांचे उस लड़के ने सवदा रज़ि. को नहीं देखा, यहां तक कि वह अल्लाह से जा मिला।

फायदे : इस्लामी कानून के मुताबिक अगरचे बच्चा अब्द बिन जमआ को दिला दिया। मगर कयाफा शनासी की बिना पर शुबा था कि शायद वह उतबा का ही नुत्फा हो, इस शुबे की बिना पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत सवदा रज़ि. को उससे पर्दा करने का हुक्म दिया। (औनुलबारी, 3/12)

٤ - باب: مَنْ لَمْ يَرَ الوَسَاوِسَ وَنَحوِها مِن المُشَبَّهاتِ

बाब 4 : जिन्न के नजदीक वसवसा और उस जैसी चीजें शक शुबे वाली चीजों में दाखिल नहीं।

٩٨٧ : وعَنْها رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: إنَّ قَوْمًا قَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إنَّ قَوْمًا يَأْتُونَنَا بِاللَّحْمِ لَا نَدْرِي: أَذَكَرُوا ٱسْمَ ٱللهِ عَلَيْهِ أَمْ لَا؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (سَمُّوا ٱللهَ عَلَيْهِ وَكُلُوهُ). [رواه البخاري: ٢٠٥٧]

987 : आइशा रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि कुछ लोगों ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हमारे पास आदमी गोश्त लाते हैं, लेकिन हमें यह मालूम नहीं कि उन्होंने जिब्ह करते वक्त बिस्मिल्लाह कही है या नहीं। आपने फरमाया, तुम इस पर बिस्मिल्लाह कहो और खा लो।

फायदे : इस हदीस में शक शुबे और वसवास (ख्याल) में फर्क को साफ बताया गया है। यानी शक वह चीज है, जिसकी हलाल व हराम

के दलाईल बजा हर मुतआरिज हो, ऐसी चीज से बचना परहेजगारी है। वसवसा यह है कि बिलावजह हर चीज को शक और शुबा की नजर से देखना। मसलन एक आदमी से माल खरीदा ख्वामख्वाह उसके हराम होने का गुमान करना इस किस्म के वसवसे अन्दाजी शरीअत में ठीक नहीं है।

बाब 5 : जिसने कुछ परवाह न की, जहां से चाहा माल कमा लिया

٥ - باب: مَنْ لَمْ يُبَالِ مِن حَيْثُ كَسَبَ المال

988 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं, आपने फरमाया, लोगों पर एक जमाना आयेगा, जब इन्सान को इसकी कुछ परवाह नहीं रहेगी कि माल को हलाल (जाइज) तरीके से हासिल किया है या हराम (नाजाइज) तरीके से?

٩٨٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ، لاَ يُبَالِي المَرْءُ مَا أَخَذَ مِنْهُ، أَمِنَ الحَلاَلِ أَمْ مِنَ الحَرَامِ). [رواه البخاري: ٢٠٥٩]

फायदे : इस हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें फितना-ए- माल से खबरदार किया है। हमें चाहिए कि माल कमाने के तरीको के बारे में खूब छानबीन करें। अफसोस कि आज के जमाने में हम ऐसे हालत से दो-चार हैं कि हलाल और हराम की तमीज उठ गई है। सिर्फ माल जमा करने की धुन हम पर सवार है।

बाब 6 : कपड़े की तिजारत करना।

٦ - باب: التِّجَارَةُ فِي البَزِّ

989 : जैद बिन अरक़म रज़ि. और बरा बिन आज़िब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

٩٨٩ : عَنِ البَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ وَزَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالاَ: كُنَّا تَاجِرَيْنِ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَسَأَلْنَا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ عَنِ الصَّرْفِ؟ فَقَالَ: (إِنْ كَانَ يَدًا بِيَدٍ

فَلاَ بأْسَ، وَإِنْ كَانَ نَسَاءً فَلاَ يَصْلُحُ). [رواه البخاري: ٢٠٦٠، ٢٠٦١]

वसल्लम के जमाना में तिजारत करते थे। हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बय सर्फ के बारे में पूछा तो आपने फरमाया, अगर नकद-बा-नकद हो तो कोई हर्ज नहीं, अगर उधार हो तो जाईज नहीं।

फायदे : सोने चांदी के सिक्कों का बाहमी तबादला सर्फ कहलाता है। उसकी दो सूरते हैं। एक यह कि चांदी के बदले चांदी और सोने के बदले सोना। इस में दो शर्तों का होना जरूरी है। यानी दोनों का वजन बराबर हो और हाथो-हाथ हो। अगर एक तरफ से नकद और दूसरी तरफ से उधार हो या नकद की सूरत में वजन में कमी और बैशी की तो मामला हराम हो जायेगा। दूसरी सूरत यह है कि सोने को चांदी या चांदी को सोने के ऐवज में खरीदना तो इस सूरत में वजन का बराबर होना जरूरी नहीं। फिर भी उसका नकद-ब-नकद होना जरूरी है।

---

٧ - باب: الخُرُوجُ فِي التِّجَارَةِ

बाब 7 : तिजारत (व्यापार) के लिए सफर करना।

٩٩٠ : عَنْ أَبِي مُوسَى [الأَشْعَرِيِّ] رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ٱسْتَأْذَنْتُ عَلَى [عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ] فَلَمْ يُؤْذَنْ لَهُ، وَكَأَنَّهُ كَانَ مَشْغُولاً، فَرَجَعْتُ فَفَرَغَ عُمَرُ فَقَالَ: أَلَمْ أَسْمَعْ صَوْتَ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ قَيْسٍ، ٱئْذَنُوا لَهُ. قِيلَ: قَدْ رَجَعَ، فَدَعَانِي، فَقُلْتُ: كُنَّا نُؤْمَرُ بِذٰلِكَ فَقَالَ: تَأْتِينِي عَلَى ذٰلِكَ بِالْبَيِّنَةِ، فَانْطَلَقْتُ إِلَى مَجْلِسِ الأَنْصَارِ فَسَأَلْتُهُمْ، فَقَالُوا: لاَ يَشْهَدُ لَكَ عَلَى هٰذَا إِلَّا أَصْغَرُنَا أَبُو سَعِيدٍ الخُدْرِيُّ،

990 : अबू मूसा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने एक बार उमर रज़ि. से मुलाकात की इजाजत तलब की। लेकिन मुझे इजाजत न मिली। गौया उमर रज़ि. उस वक्त किसी काम में मसरूफ (व्यस्त) थे। ताहम मैं वापिस आ गया। उमर रज़ि. फारिग हुये तो कहने लगे, मैंने

فَذَهَبْتُ بِأَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، فَقَالَ عُمَرُ: أَخَفِيَ هٰذَا عَلَيَّ مِنْ أَمْرِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ؟ أَلْهَانِي الصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ. يَعْنِي الْخُرُوجَ إِلَى التِّجَارَةِ. [رواه البخاري: ٢٠٦٢]

अब्दुल्लाह बिन कैस रज़ि. (अबू मूसा अशअरी) की आवाज नहीं सुनी थी, उनको इजाजत दे दो। लोगों ने कहा, वह तो वापस हो गये हैं। इस पर उन्होंने मुझे बुलाकर पूछा, तुम क्यों वापस हो गये थे? उन्होंने कहा, हमको यही हुक्म दिया जाता था। उमर रज़ि. ने कहा, तुम इस पर कोई गवाही पेश करो। तब मैं अन्सार की मजलिस में गया और उनसे पूछा, उन्होंने कहा, इस बात की शहादत तो अबू सईद खुदरी रज़ि. ही दे देंगे। जो हम सब में कम उम्र है। चूनांचे मैं अबू सईद खुदरी रज़ि. को उमर रज़ि. के पास ले गया और उन्होंने गवाही दी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यही हुक्म था, जिस पर उमर रज़ि. ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह हुक्म मुझसे छुपा रह गया। क्योंकि बाजारों में लेन-देन और तिजारत में लगा रहा, यानी तिजारत की गर्ज से बाहर आने जाने में मशगूल रहा।

फायदे : इससे यह भी मालूम हुआ कि दुनिया हासिल करने की चाहत इन्सान को इल्म से दूर कर देती है। नीज तिजारत के लिए सफर करना भी साबित हुआ और शरीअत के अहकाम बाज औकात बड़े बड़े सहाबा किराम रज़ि. से भी छुपे रहते थे।

(औनुलबारी, 3/17)

बाब 8 : जिसने रिज्क में वुसअत (ज्यादती) की ख्वाहिश की।

٨ - باب: مَنْ أَحَبَّ الْبَسْطَ فِي الرِّزْقِ

٩٩١ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ

991 : अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने

يَقُولُ: (مَنْ سَرَّهُ أَنْ يُبْسَطَ لَهُ فِي رِزْقِهِ، أَوْ يُنْسَأَ لَهُ فِي أَثَرِهِ، فَلْيَصِلْ رَحِمَهُ). [رواه البخاري: ٢٠٦٧]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुये सुना, जिस आदमी को यह पसन्द हो कि उसके रिज्क में ज्यादती और उम्र में ज्यादती हो तो उसे चाहिए कि अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करें।

फायदे : रिज्क में ज्यादती से मुराद उसमें बरकत का पैदा हो जाना और उम्र में ज्यादती से मतलब जिस्म में ताकत और हिम्मत का आ जाना है। क्योंकि रिज्क और उम्र तो उस वक्त ही लिख दी जाती है, जब इन्सान मां के पेट में होता है।

(औनुलबारी, 3/18)

---

٩ - باب: شِرَاءُ النَّبِيِّ ﷺ بِالنَّسِيئَةِ

बाब 9 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उधार खरीदना।

٩٩٢ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ مَشَى إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِخُبْزِ شَعِيرٍ، وَإِهَالَةٍ سَنِخَةٍ، قَالَ وَلَقَدْ رَهَنَ النَّبِيُّ ﷺ دِرْعًا لَهُ بِالْمَدِينَةِ عِنْدَ يَهُودِيٍّ، وَأَخَذَ مِنْهُ شَعِيرًا لأَهْلِهِ، وَلَقَدْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: (مَا أَمْسَى عِنْدَ آلِ مُحَمَّدٍ ﷺ صَاعُ بُرٍّ، وَلاَ صَاعُ حَبٍّ، وَإِنَّ عِنْدَهُ لَتِسْعَ نِسْوَةٍ). [رواه البخاري: ٢٠٦٩]

992 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जौं की रोटी और बू दार चर्बी लेकर गये और उस वक्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी एक जिरह (जंग में पहने वाली लोहे की जाकिट) मदीना में एक यहूदी के पास गिरवी रखी थी और उससे अपने घर वालों के लिए कुछ जौं लिये थे और मैंने आपको यह फरमाते हुये सुना था कि आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कभी शाम को एक साअ गेहूँ या किसी और गल्ले का जमा नहीं रहा, हालांकि आपकी नो बीवियां थी।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक सूद खोर यहूदी से कर्ज का मुआमला किया, लेकिन किसी मुसलमान से कर्ज नहीं लिया, क्योंकि वह मुहब्बत की बिना पर आपको मुफ्त दे देता, लेकिन आपको किसी का अहसान लेना पसन्द नहीं था।

(औनुलबारी, 3/19)

बाब 10 : आदमी का खुद कमाना और अपने हाथ से काम करना।

١٠ - باب: كَسْبُ الرَّجُلِ وَعَمَلِهِ بِيَدِهِ

993 : मिक़दाम रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, किसी आदमी ने अपने हाथ की कमाई से ज्यादा पाक खाना नहीं खाया और अल्लाह के नबी दाउद अलैहि. भी अपने हाथ की कमाई से ही खाना खाया करते थे।

٩٩٣ : عَنِ المِقْدَامِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسولُ ٱللهِ ﷺ: (مَا أَكَلَ أَحَدٌ طَعَامًا قَطُّ، خَيْرًا مِنْ أَنْ يَأْكُلَ مِنْ عَمَلِ يَدِهِ، وَإِنَّ نَبِيَّ ٱللهِ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عَمَلِ يَدِهِ). [رواه البخاري: ٢٠٧٢]

फायदे : मआश (जिन्दगी गुजारने के सामान) के बुनियादी जरिये तीन हैं। जराअत (खेतीबाड़ी), तिजारत (व्यापार) और सनअत व हिरफत (कामकाज)। कुछ ने व्यापार को अफजल कहा है और कुछ ने खेतीबाड़ी को बेहतर करार दिया है। बहरहाल जो कमाई इन्सान के हाथ से हासिल हो उसे हदीस में बेहतर और पाकिजा करार दिया गया है। (औनुलबारी, 3/22)

बाब 11 : खरीद और फरोख्त (लेन-देन) में नरमी और कुशादा दिली (दरियादिली)।

١١ - باب: السُّهُولَةُ وَالسَّمَاحَةُ فِي الشِّرَاءِ وَالبَيعِ

994 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से

٩٩٤ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ

रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह उस आदमी पर रहम फरमाये जो बेचते, खरीदते और तकाजा करते (यानी मांगते) वक़्त नरमी और दरियादिली से काम लें।

قَال: (رَحِمَ ٱللهُ رَجُلًا، سَمْحًا إِذَا بَاعَ، وَإِذَا ٱشْتَرَى، وَإِذَا ٱقْتَضَى). [رواه البخاري: ٢٠٧٦]

फायदे : एक रिवायत में है कि हुकूक की अदायगी के वक़्त भी खुशदीली का इजहार करे, इससे मालूम हुआ कि मुआमलात में खुशी और दरियादिली से पेश आना चाहिए। नीज तंगदिली और खुदगर्जी से बचना चाहिए। (3/23)

बाब 12 : जिस आदमी ने मालदार को भी छूट दे दी।

١٢ - باب: مَنْ أَنْظَرَ مُوسِرًا

995 : हुजैफा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि पहले जमाने में फरिश्तों ने एक आदमी की रूह से मुलाकात करके पूछा क्या तूने कोई नेक काम किया है? उसने कहा मैं अपने नौकरों को यह हुक्म देता था कि वह तंगदस्त को अदायगी में मोहलत दें और मालदार से भी नरमी करें तो अल्लाह ने भी मुझसे नरमी इख्तियार फरमायी।

٩٩٥ : عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (تَلَقَّتِ ٱلْمَلَائِكَةُ رُوحَ رَجُلٍ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، قَالُوا: أَعَمِلْتَ مِنَ الْخَيْرِ شَيْئًا؟. قَالَ: كُنْتُ آمُرُ فِتْيَانِي أَنْ يُنْظِرُوا ٱلْمُعْسِرَ وَيَتَجَاوَزُوا عَنِ ٱلْمُوسِرِ، فَتَجَاوَزَ ٱللهُ عَنْهُ). [رواه البخاري: ٢٠٧٨]

फायदे : कर्जदार अगरचे मालदार ही क्यों न हो, फिर भी उस पर सख्ती नहीं करना चाहिए, अगर वह ज्यादा छूट मांगे तो खुशदीली के साथ छूट दी जाये। अगर मालदार की तारीफ में बहुत

इख्तिलाफ है फिर भी उरफे आम के मुताबिक भी मालदार हो, उसके साथ अच्छा बर्ताव करना चाहिए। (औनुलबारी, 3/24)

١٣ - باب: إِذَا بَيَّنَ الْبَيِّعَانِ وَلَم يَكْتُمَا وَنَصَحَا

बाब 13 : जब खरीदने और बेचने वाले दोनों खराबी व हूनर बयान करें और एक दूसरे की बेहतरी चाहें।

٩٩٦ : عَنْ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (الْبَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ ما لَمْ يَتَفَرَّقَا، أَوْ قَالَ: حَتَّى يَتَفَرَّقَا، فَإِنْ صَدَقَا وَبَيَّنَا بُورِكَ لَهُمَا فِي بَيْعِهِمَا، وَإِنْ كَتَمَا وَكَذَبَا مُحِقَتْ بَرَكَةُ بَيْعِهِمَا). [رواه البخاري: ٢٠٧٩]

996 : हकीम बिन हजाम रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, बेचने और खरीदने वाले दोनों को इख्तियार है, जब तक जुदा न हों या यह फरमाया कि यहां तक कि अलग हो अगर वह दोनों सच बोले और ऐब व हुनर जाहिर करें तो उन्हें उनकी इस तिजारत में बरकत दी जायेगी और अगर झूट बोले या ऐब छिपायें तो बअ (खरीद) की बरकत खत्म कर दी जायेगी।

फायदे : अलग होने से मुराद मजलिस से इधर उधर चले जाना है। खुद रावी हदीस हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से यही तफसीर मनकूल (हदीस नं. 2107) है। बाज ने बातचीत खत्म कर देना मुराद लिया है। जो जाहिर के खिलाफ है। (औनुलबारी, 3/26)

١٤ - باب: بَيْعُ الخِلْطِ مِنَ التَّمْرِ

बाब 14 : खुजूरों की अलग अलग किस्मों को मिलाकर बेचना।

٩٩٧ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُرْزَقُ تَمْرَ الْجَمْعِ، وَهُوَ الْخِلْطُ مِنَ التَّمْرِ، وَكُنَّا نَبِيعُ صَاعَيْنِ بِصَاعٍ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لاَ

997 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि हमें हर किस्म की मिली जुली खुजूरें मिला करती थी। तो हम उनके दो साअ उमदा

खजूरों के एक साअ के ऐवज बीच डालते थे। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया दो साअ खुजूरों का एक साअ खजूर के ऐवज फरोख्त करना दुरूस्त नहीं और न ही दो दिरहम एक दिरहम के ऐवज फरोख्त करना जाइज है।

صَاعَيْنِ بِصَاعٍ، وَلاَ دِرْهَمَيْنِ بِدِرْهَمٍ). [رواه البخاري: ٢٠٨٠]

फायदे : यह हुक्म तमाम खाने पीने की चीजों का है जब एक जिन्स का बाहम सौदा किया जाये तो कमी बैशी और उधार जाइज नहीं है। (औनुलबारी, 3/27)

बाब 15 : सूद अदा करने वाला।

١٥ - باب: مُوكِلُ الرِّبَا

998 : हुजैफा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंनें फरमाया कि मेरे सामने मेरे बाप ने एक गुलाम खरीदा जो पछना (एक किस्म का इलाज) लगाता था। उन्होंने उसकी सींगियां (इलाज का सामान) तोड़ दी। मैंने उसकी वजह पूछी तो कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुत्ते और खून की कीमत लेने से मना फरमाया है और गोदने और गुदवाने वाले नीज सूद लेने और देने वाले के फअल से भी मना किया और तस्वीर बनाने वाले पर आपने लानत फरमायी है।

٩٩٨ : عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ ٱشْتَرَى عَبْدًا حَجَّامًا فَأَمَرَ بِمَحَاجِمِهِ فَكُسِرَتْ، قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ، وَثَمَنِ ٱلدَّمِ، وَنَهَى عَنِ الْوَاشِمَةِ وَالْمَوْشُومَةِ، وَآكِلِ الرِّبَا وَمُوكِلِهِ، وَلَعَنَ الْمُصَوِّرَ. [رواه البخاري: ٢٠٨٦]

फायदे : जानदार चीजों की तस्वीर खींचना हराम है, तस्वीर चाहे बगैर जिस्म वाली हो या जिस्म वाली। अलबत्ता बेजान चीजों की तस्वीर बनाने में कोई हर्ज नहीं है। मसलन पेड़, पहाड़ या दरिया वगैरह। क्योंकि जानदार की तस्वीर पर फितने का जरीया है। (औनुलबारी, 3/29)

बाब 16 : फरमाने इलाही : अल्लाह तआला सूद मिटाता है और सदकात को बढ़ाता है।"

١٦ - باب: يَمْحَقُ الله الرِّبَا وَيُرْبِي الصَّدَقَاتِ

٩٩٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (الحَلِفُ مَنْفَقَةٌ لِلسِّلْعَةِ، مَمْحَقَةٌ لِلْبَرَكَةِ). [رواه البخاري: ٢٠٨٧]

999 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना कि झूटी कसम खाने से माल तो बिक जाता है, लेकिन वह बरकत को खत्म कर देती है।

फायदे : जिस तरह झूठी कसम खाने से सौदागर को खैर व बरकत से महरूम कर दिया जाता है। उसी तरह सूदी कारोबार करने वाले की बरकत को उठा लिया जाता है। अगर बजाहिर सूद लेने वाले की रकम ज्यादा हो जाती है, लेकिन नतीजे के लिहाज से दुनिया व आखिरत में नुकसान होता हैं। (औनुलबारी, 3/30)

बाब : 17 : लोहार के पेशे का बयान।

١٧ - باب: ذِكْرُ القَيْنِ وَالحَدَّادِ

١٠٠٠ : عَنْ خَبَّابٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ قَيْنًا فِي الجَاهِلِيَّةِ، وَكَانَ لِي عَلَى الْعَاصِ بْنِ وَائِلٍ دَيْنٌ، فَأَتَيْتُهُ أَتَقَاضَاهُ، فَقَالَ: لاَ أُعْطِيكَ حَتَّى تَكْفُرَ بِمُحَمَّدٍ ﷺ. فَقُلْتُ: لاَ أَكْفُرُ بِمُحَمَّدٍ حَتَّى يُمِيتَكَ ٱللهُ ثُمَّ تُبْعَثَ. فَقَالَ: دَعْنِي حَتَّى أَمُوتَ وَأُبْعَثَ، فَسَأُوتَى مَالًا وَوَلَدًا فَأَقْضِيكَ. فَنَزَلَتْ: ﴿أَفَرَءَيْتَ ٱلَّذِى كَفَرَ بِـَٔايَٰتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ۝ أَطَّلَعَ ٱلْغَيْبَ أَمِ ٱتَّخَذَ عِندَ ٱلرَّحْمَٰنِ عَهْدًا﴾. [رواه البخاري: ٢٠٩١]

1000 : खत्ताब रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं जाहिलीयत के जमाने में लोहार था और आस बिन वाइल के जिम्मे मेरा कुछ कर्ज था। मैं उसके पास अपने कर्ज का तकाजा करने (मांगने) के लिए आया तो उसने कहा, जब तक तू मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत से इन्कार नहीं करेगा, उस वक्त तक तेरा कर्ज नहीं दूंगा।

मैंने कहा, अगर अल्लाह तुझे मौत दे दे और मरने के बार फिर जिन्दा करे तो भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत से इनकार नहीं करूंगा। उसने कहा, फिर तो मुझे छोड़ दे ताकि मैं मरूं और फिर जिन्दा किया जाऊँ। क्योंकि फिर मुझे माल भी मिलेगा और औलाद भी। फिर तुम्हारा कर्जा अदा कर दूंगा और उस वक्त यह आयत नाजिल हुयी। " ऐ नबी! क्या आपने उस आदमी को देखा जो हमारी आयतों का इन्कार करता है और कहता है कि मरने के बाद जिन्दा होने पर मुझे माल और औलाद मिलेगी। क्या उसे गायब की खबर हो गयी है या अल्लाह से उसने कोई वादा लिया है।"

फायदे : इस हदीस से मतलब लोहार और उसके पेशे का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में यह पेशा मौजूद था और यह पेशा इख्तियार करने में कोई हर्ज नहीं है।

 (औनुलबारी, 3/32)

बाब 18 : दर्जी का बयान

١٨ - باب: ذِكْرُ الخَيَّاطِ

1001: अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि एक दर्जी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए खाना तैयार किया और खाने की दावत दी। मैं भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ गया। उसने आपके सामने रोटी, कद्दू का शौरबा और सूखा गोश्त रखा। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्याले के इधर

١٠٠١ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ [قَالَ:] إِنَّ خَيَّاطًا دَعَا رَسُولَ ٱللهِ لِطَعَامٍ صَنَعَهُ، قَالَ أَنَسُ ابْنُ مَالِكٍ: فَذَهَبْتُ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ إِلَى ذٰلِكَ الطَّعَامِ، فَقَرَّبَ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ خُبْزًا وَمَرَقًا، فِيهِ دُبَّاءٌ وَقَدِيدٌ، فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَتَتَبَّعُ ٱلدُّبَّاءَ مِنْ حَوَالَي القَصْعَةِ، قَالَ: فَلَمْ أَزَلْ أُحِبُّ ٱلدُّبَّاءَ مِنْ يَوْمِئِذٍ. [رواه البخاري: ٢٠٩٢]

उधर से कद्दू को ढूंढ़ते देखा, इसीलिए मैं उस दिन से कद्दू को बहुत पसन्द करता हूँ।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गोश्त में पका हुआ कद्दू बहुत पसन्द था। यह एक उम्दा तरकारी है और डाक्टरी लिहाज से भी बहुत फायदेमन्द है। बुखार, खफखान और कब्ज और बवासीर के लिए फायदेमन्द है। नीज खुश्की व गर्मी को रोकने वाला है।

बाब 19 : जानवरों और गधों की खरीद फरोख्त।

1002 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं किसी जिहाद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था। मेरे ऊंट ने चलने में सुस्ती की और थक गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास तशरीफ लाये और फरमाया ऐ जाबिर रज़ि.! मैंने अर्ज किया : हाजिर हूँ। फरमाया: क्या हाल है? मैंने अर्ज किया मेरा ऊंट चलने में सुस्ती करता है और थक भी गया है, इसलिए पीछे रह गया हूँ। फिर आप उतरे और उसे अपनी लाठी से मार कर फरमायाः अब सवार हो जाओ!

١٩ - باب: شِراءُ الدَّوَابِّ وَالحَمِيرِ

١٠٠٢ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي غَزَاةٍ، فَأَبْطَأَ بِي جَمَلِي وَأَعْيَا، فَأَتَى عَلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ، فَقَالَ: (جَابِرٌ؟). فَقُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: (مَا شَأْنُكَ؟). قُلْتُ: أَبْطَأَ عَلَيَّ جَمَلِي وَأَعْيَا فَتَخَلَّفْتُ، فَنَزَلَ يَحْجُنُهُ بِمِحْجَنِهِ، ثُمَّ قَالَ: (ارْكَبْ). فَرَكِبْتُ، فَلَقَدْ رَأَيْتُهُ أَكُفُّهُ عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، قَالَ: (تَزَوَّجْتَ؟). قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: (بِكْرًا أَمْ ثَيِّبًا؟). قُلْتُ: بَلْ ثَيِّبًا، قَالَ: (أَفَلَا جَارِيَةً تُلَاعِبُهَا وَتُلَاعِبُكَ؟). قُلْتُ: إِنَّ لِي أَخَوَاتٍ، فَأَحْبَبْتُ أَنْ أَتَزَوَّجَ ٱمْرَأَةً تَجْمَعُهُنَّ وَتَمْشُطُهُنَّ، فَتَقُومُ عَلَيْهِنَّ، قَالَ: (أَمَّا إِنَّكَ قَادِمٌ، فَإِذَا قَدِمْتَ فَالْكَيْسَ الْكَيْسَ). ثُمَّ قَالَ: (أَتَبِيعُ جَمَلَكَ؟). قُلْتُ: نَعَمْ، فَاشْتَرَاهُ مِنِّي بِأُوقِيَّةٍ، ثُمَّ قَدِمَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ

قَبْلِي، وَقَدِمْتُ بِالْغَدَاةِ، فَجِئْنَا إِلَى الْمَسْجِدِ فَوَجَدْتُهُ عَلَى بَابِ الْمَسْجِدِ، قَالَ: (الآنَ قَدِمْتَ؟). قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: (فَدَعْ جَمَلَكَ، وَادْخُلْ، فَصَلِّ رَكْعَتَيْنِ). فَدَخَلْتُ فَصَلَّيْتُ، فَأَمَرَ بِلاَلاً أَنْ يَزِنَ لِي أُوقِيَّةً، فَوَزَنَ لِي بِلاَلٌ فَأَرْجَحَ فِي الْمِيزَانِ، فَانْطَلَقْتُ حَتَّى وَلَّيْتُ، فَقَالَ: (ادْعُ لِي جَابِرًا). فَقُلْتُ: الآنَ يَرُدُّ عَلَيَّ الْجَمَلَ، وَلَمْ يَكُنْ شَيْءٌ أَبْغَضَ إِلَيَّ مِنْهُ، قَالَ: (خُذْ جَمَلَكَ وَلَكَ ثَمَنُهُ). [رواه البخاري: ٢٠٩٧]

चूनांचे मैं सवार हो गया, फिर तो ऊँट ऐसा तेज हुआ कि मैं उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बराबर होने से रोकता था। फिर आपने पूछा: क्या तुमने निकाह किया है? मैंने अर्ज किया: हाँ, आपने फरमाया: कुआंरी से या शादीशुदा से? मैंने अर्ज किया, बेवा से। आपने फरमाया : कुंआरी से क्यों नहीं किया? तुम उससे दिल्लगी करते, वह तुमसे दिल्लगी करती। मैंने अर्ज किया कि मेरी बहुत-सी बहनें हैं। इसलिए मैंने एक ऐसी औरत से निकाह करना चाहा जो उनको इकट्ठा करें, उनके कंघी करे और उनकी देखभाल भी करती रहे। आपने फरमाया, अच्छा अब तुम जा रहे हो, जब अपने घर पहुंचो तो अक्ल व समझदारी से काम लेना। फिर फरमाया, क्या तुम अपना ऊंट बेचते हो? मैंने अर्ज किया: जी हां! आपने एक ओकिया (रकम) के ऐवज मुझसे खरीद लिया। फिर आप मुझ से पहले मदीना पहुंच गये और मैं सुबह को पहुंचा। हम लोग मस्जिद की तरफ गये तो आपको मैंने मस्जिद के दरवाजे पर पाया। आपने पूछा, क्या तुम अभी आ रहे हो, मैंने अर्ज किया, जी हाँ! आपने फरमाया, : तुम अपना ऊंट यहीं छोड़ कर मस्जिद में जाओ और दो रकअत नमाज़ पढ़ो। चूनांचे मैंने मस्जिद के अन्दर दो रकअत नमाज़ पढ़ी। आपने बिलाल रज़ि. को हुक्म दिया कि वह मुझे एक ओकिया चांदी दे। चूनांचे बिलाल रज़ि. ने झुकाव के साथ एक ओकिया चांदी मुझे तौल दी। फिर मैं वापिस गया और जब मैंने

पीठ फैरी तो आपने फरमाया कि जाबिर रज़ि. को मेरे पास बुलावो। मैंने दिल में सोचा कि अब मेरा ऊंट मुझे वापिस कर दिया जायेगा और मुझे यह बात बहुत ही नापसन्द थी। आपने फरमाया : तुम ऊंट भी ले लो और उसकी कीमत भी ले जाओ।

फायदे : इस हदीस से यह मालूम हुआ कि आदमी चाहे कितना ही बड़ा हो और उसके खिदमतगार भी हों, उसे अपनी जरूरियात खुद खरीदने में शर्म नहीं करनी चाहिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल करना ही खैर और बरकत का जरीया है। (औनुलबारी, 3/38)

बाब 20 : प्यास के बीमारी में मुब्तला ऊंटों की खरीद और फरोख्त।

٢٠ - باب: شِرَاءُ الإِبِلِ الهِيمِ

1003 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने एक आदमी से प्यास की बीमारी में मुब्तला ऊंट खरीद लिये, उस आदमी का एक शरीक था। वह इब्ने उमर रज़ि. के पास आया और कहने लगा, मेरे शरीक (हिस्सेदार) ने आपको पेट की बीमारी में मुब्तला ऊंट बेच दिये हैं, वह आपको जानता न था। आपने फरमाया ऊंट हांक कर ले जाओ। जब वह हांकने लगा तो फरमाया, उन्हें छोड़ दो। हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फैसले पर राजी हैं कि एक का मर्ज दूसरे को नहीं लगता।

١٠٠٣ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ ٱشْتَرَى إِبِلًا هِيمًا مِنْ رَجُلٍ وَلَهُ فِيهَا شَرِيكٌ، فَجَاءَ شَرِيكُهُ إِلَى ابْنِ عُمَرَ، فَقَالَ لَهُ: إِنَّ شَرِيكِي بَاعَكَ إِبِلًا هِيمًا وَلَمْ يَعْرِفْكَ. قَالَ: فَاسْتَقْهَا، [قَالَ:] فَلَمَّا ذَهَبَ يَسْتَاقُهَا، قَالَ: دَعْهَا، رَضِينَا بِقَضَاءِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ: (لاَ عَدْوَى). [رواه البخاري: ٢٠٩٩]

फायदे : इस हदीस से ऐबदार चीज की खरीद और फरोख्त का सबूत मिलता है। शर्त यह है कि बेचने वाला उसका खुलासा कर दे और

लेने वाला उसे कुबूल करे। अगर खुलासा मामला तय करने के बाद किया जाये तो लेने वाले को हक है, उसे ले या वापिस कर दे। (औनुलबारी, 3/40)

बाब 21 : सिंगी (इलाज करने) लगाने वाले का बयान।

٢١ - باب: ذِكْرُ الحَجَّامِ

1004 : अनस बिन मालिक रजि.से रिवायत है, उन्होंने बयान किया कि अबू तयबा रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिंगी लगाई, आपने उसे एक साअ खुजूरें देने का हुक्म दिया और उसके मालकों को हुक्म दिया कि उसके खिराज (टेक्स) में कमी कर दें।

١٠٠٤ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: حَجَمَ أَبُو طَيْبَةَ رَسُولَ اللهِ ﷺ، فَأَمَرَ لَهُ بِصَاعٍ مِنْ تَمْرٍ، وَأَمَرَ أَهْلَهُ أَنْ يُخَفِّفُوا مِنْ خَرَاجِهِ. [رواه البخاري: ٢١٠٢]

फायदे : साबित हुआ कि सिंगी लगाने का कारोबार जाइज है और उसकी मजदूरी लेने में भी कोई हर्ज नहीं है। अगर उस काम से आम इन्सान को फायदा होता है, लेकिन उसके जाइज होने में कोई शक नहीं। (औनुलबारी, 3/41)

1005 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिंगी लगवाई और लगाने वाले को मजूदरी दी, अगर यह मजदूरी हराम होती तो आप न देते।

١٠٠٥ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: احْتَجَمَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَعْطَى الَّذِي حَجَمَهُ، وَلَوْ كَانَ حَرَامًا لَمْ يُعْطِهِ. [رواه البخاري: ٢١٠٣]

बाब 22 : ऐसी चीजों की तिजारत जिनकी कमाई दुरूस्त नहीं।

٢٢ - باب: التِّجَارَةُ فِيمَا يُكْرَهُ كَسْبُهُ

1006 : आइशा रज़ि. से रिवायत है,

١٠٠٦ : عَنْ عَائِشَةَ [أُمِّ المُؤْمِنِينَ] رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: أَنَّهَا اشْتَرَتْ نُمْرُقَةً

فِيهَا تَصَاوِيرُ، فَلَمَّا رَآهَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ قَامَ عَلَى ٱلْبَابِ فَلَمْ يَدْخُلْ، قَالَتْ: فَعَرَفْتُ فِي وَجْهِهِ ٱلْكَرَاهَةَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَتُوبُ إِلَى ٱللهِ وَإِلَى رَسُولِهِ [ﷺ]، مَاذَا أَذْنَبْتُ؟. فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَا بَالُ هٰذِهِ ٱلنُّمْرُقَةِ؟). قُلْتُ: ٱشْتَرَيْتُهَا لَكَ لِتَقْعُدَ عَلَيْهَا وَتَوَسَّدَهَا، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ أَصْحَابَ هٰذِهِ ٱلصُّوَرِ يَوْمَ ٱلْقِيَامَةِ يُعَذَّبُونَ، فَيُقَالُ لَهُمْ: أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ). وَقَالَ: (إِنَّ ٱلْبَيْتَ ٱلَّذِي فِيهِ ٱلصُّوَرُ لَا تَدْخُلُهُ ٱلْمَلَائِكَةُ). [رواه البخاري: ٢١٠٥]

उन्होंने एक ऐसा तकिया खरीदा जिसमें तस्वीरें थीं। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे देखा तो दरवाजे पर खड़े हो गये, अन्दर तशरीफ न लाये। मैंने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं अल्लाह और उसके रसूल की तरफ लौटती हूँ। मुझसे क्या गुनाह हुआ है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया यह तकिया कैसा है? मैंने अर्ज किया मैंने यह आपके लिए खरीदा है। ताकि आप इस पर टेक लगाकर बैठें। आपने फरमाया यह तस्वीरें बनाने वाले कयामत के दिन अजाब दिये जायेंगे और उनसे कहा जायेगा जो सूरतें तुमने बनाई थी, उनको जिन्दा करो और आपने फरमाया, जिस घर में तस्वीरें हो, उस घर में फरिश्तें दाखिल नहीं होते।

फायदे : फोटोग्राफी हर किस्म की हराम है, चाहे अक्सी हो या जिस्म वाली, दीवार पर बनायी जाये या कपड़े पर नक्शा वाला हो। यह फटकार सिर्फ बनाने वाले के लिए नहीं बल्कि इस्तेमाल करने वाले को भी शामिल है। (औनुलबारी, 3/44)

٢٣ - باب: إِذَا ٱشْتَرَى شَيْئاً فَوَهَبَ مِنْ سَاعَتِهِ قَبْلَ أَنْ يَتَفَرَّقَا

बाब 23 : जब कोई आदमी किसी चीज को खरीदे और खरीदने और बेचने वाले के जुदा जुदा होने से पहले उसी वक्त किसी को दे दे।

1007 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि किसी सफर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे और मैं उमर रज़ि. के एक सरकश (बदमाश) ऊंट पर सवार था। वह ऊंट मेरे काबू न आता था और सबसे आगे बढ़ जाता था। उमर रज़ि. उसे डांट कर पीछे कर देते। मगर वह फिर आगे हो जाता था। उमर रज़ि. फिर उसे डांट कर पीछे कर देते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमर रज़ि. से फरमाया, उसे मेरे हाथ बेच दो। उन्होंने अर्ज किया वह आप ही का है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, नहीं तुम उसे मेरे हाथ बेच दो। चूनांचे उन्होंने वह ऊंट रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बेच दिया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि.! यह ऊंट तुम्हारा ही है, उसको जो चाहो, करो।

١٠٠٧ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ، فَكُنْتُ عَلَى بَكْرٍ صَعْبٍ لِعُمَرَ، فَكَانَ يَغْلِبُنِي فَيَتَقَدَّمُ أَمَامَ الْقَوْمِ، فَيَزْجُرُهُ عُمَرُ وَيَرُدُّهُ، ثُمَّ يَتَقَدَّمُ، فَيَزْجُرُهُ عُمَرُ وَيَرُدُّهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِعُمَرَ: (بِعْنِيهِ). فَقَالَ: هُوَ لَكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ رسول الله ﷺ: (بِعْنِيهِ). فَبَاعَهُ مِنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (هُوَ لَكَ يَا عَبْدَ ٱللهِ بْنَ عُمَرَ، تَصْنَعُ بِهِ مَا شِئْتَ). [رواه البخاري: ٢١١٥]

फायदे : इमाम बुखारी रज़ि. का मतलब यह है कि अगर खरीददार ने सौदा तय करते वक्त ही खरीदी हुई चीज में हेरा फेरी की और बेचने वाले को उस पर ऐतराज न हो तो उसके खामोश रहने से मजलिस का इख्तियार खत्म हो जाता है।

बाब 24 : खरीद और फरोख्त में छल और धोका देना नाजायज है।

٢٤ - باب: مَا يُكْرَهُ مِنَ الخِدَاعِ فِي الْبَيْعِ

1008 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है

١٠٠٨ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا:

أَنَّ رَجُلًا ذَكَرَ لِلنَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ يُخْدَعُ فِي الْبُيُوعِ، فَقَالَ: (إِذَا بَايَعْتَ فَقُلْ: لاَ خِلاَبَةَ). [رواه البخاري: ٢١١٧]

कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया कि उसके साथ अक्सर खरीद व फरोख्त में धोका और फरेब किया जाता है। आपने फरमाया कि खरीदते बेचते वक्त कह दिया करो कि धोका फरेब का कोई काम नहीं?

फायदे : बहकी की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहे हुए अलफाज के इस्तेमाल पर उसे तीन दिन तक इख्तियार रहता था। इसका मतलब यह है कि इस किस्म के अलफाज इस्तेमाल करने से खरीददार को सौदा खत्म करने का इख्तियार मिल जाता है। (औनुलबारी, 3/49)

बाब 25 : बाजारों के बारे में क्या कहा गया है?

٢٥ - باب: مَا ذُكِرَ فِي الأَسْوَاقِ

١٠٠٩ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (يَغْزُو جَيْشٌ الْكَعْبَةَ، فَإِذَا كَانُوا بِبَيْدَاءَ مِنَ الأَرْضِ يُخْسَفُ بِأَوَّلِهِمْ وَآخِرِهِمْ). قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، كَيْفَ يُخْسَفُ بِأَوَّلِهِمْ وَآخِرِهِمْ، وَفِيهِمْ أَسْوَاقُهُمْ، وَمَنْ لَيْسَ مِنْهُمْ؟. قَالَ: (يُخْسَفُ بِأَوَّلِهِمْ وَآخِرِهِمْ، ثُمَّ يُبْعَثُونَ عَلَى نِيَّاتِهِمْ). [رواه البخاري: ٢١١٨]

1009 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि एक लश्कर काबा पर चढ़ाई के इरादे से आयेगा, जब वह मकामे बैयदा में पहुंचेगा तो वहां सब अव्वल से आखिर तक जमीन में धंस जायेंगे। आइशा रज़ि. फरमाती हैं कि मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! सब लोग किस तरह धंस जायेंगे? हालांकि उनमें बाजारी लोग और न लड़ने वाले आदमी होंगे। आपने फरमाया, सब लोग धंस जायेंगे, मगर उनका अंजाम उनकी नियत के मुताबिक होगा।

फायदे : इस बात का मकसद यह है कि एक हदीस के मुताबिक बाजार अगरचे जमीन का बुरा हिस्सा हैं। क्योंकि उनमें शोर व गुल और बिला वजह गाली गलौच और लड़ाई झगड़ा होता रहता है। लेकिन अच्छे और नेक लोगों के वहां जाने और कारोबार करने में कोई हर्ज नहीं है। इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि बुरे और फितना फैलाने वाले लोगों के साथ मैल-मिलाप रखना खुद अपनी तबाही का कारण है।

1010 : अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाजार गये तो एक आदमी ने पुकारा, ऐ अबुल कासिम! आपने उसकी तरफ देखा तो उसने कहा, मैंने फलाँ आदमी को पुकारा है, जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मेरे नाम पर नाम तो रख लिया करो, लेकिन मेरी कुनीयत पर अपनी कुनीयत न रखा करो।

١٠١٠ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ فِي ٱلسُّوقِ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا أَبَا ٱلْقَاسِمِ، فَٱلْتَفَتَ إِلَيْهِ ٱلنَّبِيُّ ﷺ، فَقَالَ: إِنَّمَا دَعَوْتُ هٰذَا، فَقَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (سَمُّوا بِٱسْمِي، وَلاَ تَكَنَّوْا بِكُنْيَتِي). [رواه البخاري: ٢١٢٠]

फायदे : बुखारी की दूसरी रिवायत से मालूम होता है कि यह बाजार बकी में था। नीज इस हदीस से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बाजार जाना साबित हुआ जो रसूल और नबी की शान के खिलाफ नहीं है। जैसा कि काफिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ऐतराज करते थे।

1011 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दिन

١٠١١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ [ٱلدَّوْسِيِّ]، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: خَرَجَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ فِي طَائِفَةٍ مِنَ

के वक्त एक तरफ निकले, मगर न आप मुझ से बातें करते और न मैं आपसे कोई बात करता था। यहां तक कि आप बनी कैनुका के बाजार में पहुंच गये और फातिमा रज़ि. के मकान के सहन में बैठ गये और फरमाया क्या यहां कोई बच्चा है? क्या इधर कोई नन्हा है? फातिमा रज़ि. ने उसे कुछ देर रोके रखा। मैंने ख्याल किया कि वह उन्हें हार वगैरह पहना रही हैं या उसे नहला रही हैं। फिर वह (हसन रज़ि.) दौड़ते हुये आये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे गले लगाया और उससे प्यार किया। फिर फरमाया, ऐ अल्लाह! तू उससे मुहब्बत कर और जो उससे मुहब्बत करे, उससे भी मुहब्बत फरमां।

النَّهارِ، لا يُكَلِّمُني ولاَ أُكَلِّمُهُ، حَتَّى أَتَى سُوقَ بني قَيْنُقاعٍ، فَجَلَسَ بِفِناءِ بَيْتِ فَاطِمةَ رضي الله عنها، فَقَالَ: (أَثَمَّ لُكَعُ، أَثَمَّ لُكَعُ؟). فَحَبَسَتْهُ شَيْئًا، فظَنَنْتُ أَنَّها تُلْبِسُهُ سِخَابًا أَوْ تُغَسِّلُه، فَجاءَ يَشْتَدُّ حَتَّى عانَقَهُ وَقَبَّلَهُ، وَقالَ: (اللَّهُمَّ أَحْبِبْهُ وَأَحِبَّ مَنْ يُحِبُّهُ). [رواه البخاري: ٢١٢٢]

फायदे : मुस्लिम की रिवायत में वजाहत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाजार बनू कैनुका से वापिस आये, फिर हज़रत फातिमा रज़ि. के घर दाखिल हुये। यह वजाहत इसलिए की गई है कि बाजार बनू कैनुका में हज़रत फातिमा रज़ि. का घर नहीं था।

1012 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में लोग अहले काफिला से गल्ला खरीद लेते। आप किसी ऐसे आदमी को उनके पास भेज देते जो उनको खरीद-दारी की जगह गल्ला बेचने से

١٠١٢ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ الله عنهما: أَنَّهُمْ كانُوا يَشْتَرُونَ طعاماً مِن الرُّكْبانِ على عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ، فَيَبْعَثُ إِلَيْهِمْ مَنْ يَمْنَعُهُمْ أَنْ يَبِيعُوهُ حَيْثُ اشْتَرَوْهُ، حَتَّى يَنْقُلُوه حَيْثُ يُباعُ الطَّعَامُ. وَقالَ ابْنُ عُمَرَ: نَهى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُباعَ الطَّعامُ إِذَا اشْتَراهُ

मना करता, यहां तक कि उसे मण्डी में पहुंचा दे, जहां फरोख्त होता है। इब्ने उमर रज़ि. ने यह भी कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना फरमाया था कि गल्ला जिस वक्त खरीदा जाता है, उसी वक्त वहीं फरोख्त कर दिया जाये, यहां तक कि उस पर पूरा पूरा कब्जा न कर लिया जाये।

حَتَّى يَسْتَوْفِيَهُ. [رواه البخاري: ٢١٢٣، ٢١٢٤]

फायदे : इस हदीस में अगरचे बाजार की सराहत नहीं है, लेकिन अकसर तौर पर गल्ला वगैरह बाजार और मण्डी में ही फरोख्त होता है, इसलिए बाजार जाने का जाइज होना साबित होता है। इससे यह भी मालूम हुआ कि खरीदी हुई चीज को कब्जे से पहले फरोख्त करना दुरूस्त नहीं है।

बाब 26 : बाजार में शोर-गुल करना नापसन्द है।

٢٦ - باب: كَرَاهِيَةُ السَّخَبِ فِي السُّوقِ

1013 : अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि. से रिवायत है, उनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वो खूबियां पूछी गई जो तौरात में हैं, उन्होंने फरमाया, अल्लाह की कसम! आपकी बाज सिफात तौरात में वही हैं जो कुरआने करीम में बयान हुई हैं (तौरात में इस किस्म का मजमून है)। ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हमने आपको गवाही देने वाला, खुशखबरी सुनाने वाले, डराने वाला और उम्मियों की निगेहबानी करने वाला बनाकर

١٠١٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ العَاصِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سُئِلَ عَنْ صِفَةِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي التَّوْرَاةِ، قَالَ: أَجَلْ، وَٱللهِ إِنَّهُ لَمَوْصُوفٌ فِي التَّوْرَاةِ بِبَعْضِ صِفَتِهِ فِي القُرْآنِ: ﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا﴾. وَحِرْزًا لِلأُمِّيِّينَ، أَنْتَ عَبْدِي وَرَسُولِي، سَمَّيْتُكَ المُتَوَكِّلَ، لَيْسَ بِفَظٍّ وَلاَ غَلِيظٍ، وَلاَ سَخَّابٍ فِي الأَسْوَاقِ، وَلاَ يَدْفَعُ بِالسَّيِّئَةِ السَّيِّئَةَ، وَلٰكِنْ يَعْفُو وَيَغْفِرُ، وَلَنْ يَقْبِضَهُ ٱللهُ حَتَّى يُقِيمَ بِهِ المِلَّةَ العَوْجَاءَ، بِأَنْ يَقُولُوا: لاَ إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ، وَيَفْتَحُ بِهَا أَعْيُنًا عُمْيًا، وَآذَانًا صُمًّا، وَقُلُوبًا غُلْفًا. [رواه البخاري: ٢١٢٥]

भेजा है, तू मेरा बन्दा और मेरा रसूल है। मैंने तेरा नाम मुतवक्कल रखा है, न तू बुरी आदत वाला है और न संगदिल और न बाजारों में शौर-गुल करने वाला है और न ही बुराई का बदला बुराई से देता है, लेकिन दरगुजर और मेहरबानी करता है, अल्लाह तआला उसको उस वक्त तक हरगिज मौत नहीं देगा, जब तक कि उसके जरीये एक टेढ़ी कौम को सीधा न कर दे, यहां तक कि वो 'ला इलाहा इल्लल्लाह'' कहने लगें, और उसके जिम्मे अंधी आंखे रोशन हो जायें और बेहरे कान खोल दिये जाये और बंद दिल खोल दिये जायें।

फायदे : इससे बाजारी लोगों की बुराई भी साबित होती है, जो बाजार में अपनी चीज की तारीफ और दूसरों की बुराई करते हैं। झूठी कसमें उठाते हैं, ज्यादातर इन्हीं बुरे खूबियों की बिना पर बाजारों को बदतरीन टुकड़ा करार दिया गया है। (औनुलबारी, 3/57)

٢٧ - باب: الْكَيْلُ عَلَى الْبَائِعِ وَالمُعطِي

बाब 27 : नाप तोल करना, बेचने वाले और देने वाले के जिम्मे है।

١٠١٤ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: تُوُفِّيَ عَبْدُ ٱللهِ بْنُ عَمْرِو بْنِ حَرَامٍ [رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ] وَعَلَيْهِ دَيْنٌ، فَاسْتَعَنْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَلَى غُرَمَائِهِ أَنْ يَضَعُوا مِنْ دَيْنِهِ، فَطَلَبَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَيْهِمْ فَلَمْ يَفْعَلُوا، فَقَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: (اذْهَبْ فَصَنِّفْ تَمْرَكَ أَصْنَافًا، الْعَجْوَةَ عَلَى حِدَةٍ، وَعَذْقَ زَيْدٍ عَلَى حِدَةٍ، ثُمَّ أَرْسِلْ إِلَيَّ) فَفَعَلْتُ، ثُمَّ أَرْسَلْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَجَلَسَ عَلَى أَعْلاهُ أَوْ فِي وَسَطِهِ، ثُمَّ قَالَ: (كِلْ

1014 : जाबिर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मेरे वालिद अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम रज़ि. ने जब वफात पायी तो उन पर कुछ कर्ज था। लिहाजा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सिफारिश कराई कि कर्ज वाले कुछ माफ कर दें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन लोगों से उसके

لِلقوم). فكِلْتُهم حتّى أوفيْتُهم الّذي لهُمْ وبقِي تمْري كأنّهُ لمْ ينقُصْ مِنْهُ شيْءٌ. [رواه البخاري: ٢١٢٧]

लिए सिफारिश की, लेकिन उन्होंने मंजूर न किया। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे फरमाया, अपनी खजूरों को छांटकर हर किस्म अलग अलग कर लो, अजवा और अज्क जैद (खजूर की किस्में) अगल करके मुझे खबर देना। चूनांचे मैंने यही किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बुला भेजा। आप तशरीफ लाये और खुजूरों के ढ़ेर के बीच बैठ गये और मुझे फरमाया कि कर्ज वालों को नाप नाप कर दो। मैंने नाप कर सब के हिस्से पूरे कर दिये। फिर भी इस कद्र खुजूरें बाकी रही, जैसे उनसे कुछ भी कम न हुआ हो।

फायदे : हज़रत जाबिर रज़ि. चूंकि कर्ज उतारने के लिए खजूरें दे रहे थे, इसलिए नाप तोल उन्हीं की जिम्मेदारी थी। इससे मालूम हुआ कि देने वाला चाहे बेचने वाला हो या कर्ज उतारने वाला, नाप तौल उसके जिम्मे है। (औनुलबारी, 3/60)

٢٨ - باب: ما يُسْتحبُّ مِن الكيْلِ

बाब 28 : गल्ले वगैरह का नापना सही है।

١٠١٥ : عنِ المِقْدامِ بْنِ معْدِ يكرِب رضِي اللهُ عنْهُ، عنِ النّبِيِّ ﷺ قال: (كِيلُوا طعامكُمْ يُبارِكْ لكُمْ). [رواه البخاري: ٢١٢٨]

1015 : मिकदाम बिन माअदी करब रज़ि. से रिवायत है, वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, गल्ला नापकर लिया करो, उससे तुम्हें बरकत हासिल होगी।

फायदे : यह हुक्म उस वक्त है, जब गल्ला खरीदा जाये और अपने घर लाया जाये, लेकिन खर्च करते वक्त वजन करते रहना, उसकी बरकत को खत्म करने के जैसा है। जैसा कि हज़रत आइशा

रज़ि. का बयान है कि मेरे पास कुछ जौं थे, जिन्हें मैं एक मुद्दत तक इस्तेमाल करती रही, आखिर में मैंने एक दिन उनका वजन किया तो वह खत्म हो गये। (औनुलबारी, 3/61)

बाब 29 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साअ और मुद (वजन करने का तराजू) बाबरकत है।

٢٩ - باب: بَرَكَةُ صَاعِ النَّبِيِّ ﷺ وَمُدِّهِ

1016 : अब्दुल्लाह बिन जैद रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, इब्राहिम अलैहि. ने जिस तरह मक्का को हरम करार दिया है। उसके लिए दुआ फरमायी, उसी तरह मैं मदीना को हरम करार देता हूं और मैंने मदीना के मुद और साअ में बरकत की दुआ की, जिस तरह इब्राहिम अलैहि. ने मक्का के लिए दुआ की थी।

١٠١٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ زَيْدٍ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنَّ إِبْرَاهِيمَ حَرَّمَ مَكَّةَ وَدَعَا لَهَا، وَحَرَّمْتُ الْمَدِينَةَ كَمَا حَرَّمَ إِبْرَاهِيمُ مَكَّةَ، وَدَعَوْتُ لَهَا فِي مُدِّهَا وَصَاعِهَا مِثْلَ مَا دَعَا إِبْرَاهِيمُ [عَلَيْهِ السَّلَامُ] لِمَكَّةَ). [رواه البخاري: ٢١٢٩]

फायदे : इस बाब का मतलब यह मालूम होता है कि गुजरी हदीस में जो गल्ला की खैर व बरकत का जिक्र है, वह उसी सूरत में मुमकिन है, जब उसे अहले मदीना के मुद और साअ से नाप तौल किया जाये। (औनुलबारी, 3/62)

नोट : एक साअ हिजाजी में 5/3 रतल होते हैं। मुख्तलिफ फुकहा की तसरीह के मुताबिक एक रतल नब्बे मिशकाल का होता है, इस हिसाब के मुताबिक एक साअ के 480 मिशकाल हुये। एक मिशकाल 1/4 माशा का होता है। इस तरह 480 मिशकाल के दो हजार एक सौ साठ (2160) माशे हुये, चूंकि एक तौला में बारह माशे होते हैं, लिहाजा बारह पर तकसीम करने

से एक साअ हिजाजी का वजन एक सौ अस्सी (180) तौला बनता है। जदीद आशारी निजाम के मुताबिक तीन तौला के पैंतीस (35) ग्राम होते हैं। इसी हिसाब से एक सौ अस्सी तोला वजन के दो हजार एक सौ (2100) ग्राम बनते हैं। यानी साअ हिजाजी का वजन दो किलो सौ ग्राम है। पुराने वजन के मुताबिक दो सैर, चार छटांक है। बाज हजरात के नजदीक साअ हिजाजी का वजन दो सैर दस छटांक तीन तोला चार माशा, तकरीबन पौने तीन सैर वक्त के मुताबिक तकरीबन अढ़ाई किलो है। अल्लाह बेहतर जानता है।

---

٣٠ - باب: مَا يُذْكَرُ فِي بَيْعِ الطَّعَامِ وَالحُكْرَةِ

बाब 30 : गल्ला बेचने और उसके जमा करने के मुताल्लिक क्या बयान किया जाता है।

١٠١٧ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: رَأَيْتُ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ الطَّعَامَ مُجَازَفَةً، يُضْرَبُونَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ أَنْ يَبِيعُوهُ حَتَّى يُؤْوُوهُ إِلَى رِحَالِهِمْ. [رواه البخاري: ٢١٣١]

1017 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में जो लोग अन्दाजे से गल्ला बेचते थे, उन्हें मैंने पीटते हुये देखा, यहां तक कि वह उस पर कब्जा करके अपने घरों में ले आये, फिर फरोख्त करे।

फायदे : इहतीकार, जमा करने को कहते हैं यह उस वक्त मना है जब लोगों को गल्ले की जरूरत हो तो, ज्यादा महंगाई के इन्तिजार में उसे मार्केट में न लाया जाये। अगर मार्केट में गल्ला मौजूद है तो जमा करना मना नहीं है। मुस्लिम में है कि जमा वही करता है जो गुनाहगार होता है। इमाम बुखारी का ख़्याल जमा करने के जाइज होने की तरफ है। यह भी साबित हुआ कि खरीदी हुई चीज पर कब्जा किये बगैर उसे फरोख्त करना जाइज नहीं है।

1018 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना फरमाया कि कोई आदमी गल्ले को उस पर कब्जा करने से पहले फरोख्त करे, इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत किया गया, ऐसा क्यों हैं? उन्होंने फरमाया यह तो ऐसा ही है, जैसे रूपया, रूपया के बदले फरोख्त किया जाये और गल्ला उधार। जैसे एक आदमी ने गल्ला खरीदा जो मौजूद न था। (क्योंकि मिल्कियत बगैर कब्जा के नहीं होती।)

١٠١٨ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى أَنْ يَبِيعَ الرَّجُلُ طَعَامًا حَتَّى يَسْتَوْفِيَهُ. قِيلَ لِابْنِ عَبَّاسٍ: كَيْفَ ذَاكَ؟. قَالَ: ذَاكَ دَرَاهِمُ بِدَرَاهِمَ، وَالطَّعَامُ مُرْجأٌ [رواه البخاري: ٢١٣٢]

फायदे : उसकी सूरत यूँ होगी कि एक आदमी ने कोई चीज बीस रूपये में खरीदी और रकम अदा कर दी, लेकिन चीज पर कब्जा करने से पहले मालिक को ही तीस रूपये में फरोख्त कर दी। अब गोया बीस रूपये को तीस रूपये के ऐवज दिया है जो बिलकुल ब्याज है। और उस चीज को तो बीच में बतौर बहाना इस्तेमाल किया गया है। (औनुलबारी, 3/64)

1019: उमर बिन खत्ताब रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, सोना सोने के ऐवज फरोख्त करना सूद है, मगर जबकि हाथो हाथ हो तो दुरूस्त है और गेहूं के ऐवज गेहूं फरोख्त करना सूद है, लेकिन हाथो हाथ हो तो जाइज है। इसी तरह खुजूरों के ऐवज खुजूरें और जौं के ऐवज जौं फरोख्त करना सूद है, लेकिन हाथो हाथ हो तो जाइज है।

١٠١٩ : عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: يُخْبِرُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (اَلذَّهَبُ بِالذَّهَبِ رِبًا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ، وَالبُرُّ بِالْبُرِّ رِبًا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ، وَالتَّمْرُ بِالتَّمْرِ رِبًا إِلَّاهَاءَ وَهَاءَ وَالشَّعِيرُ بِالشَّعِيرِ رِبًا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ). [رواه البخاري: ٢١٣٤]

फायदे : इसका मतलब यह है कि बदलने पर दोनों तरफ से कब्जा जरूरी है। वरना सूद कहलायेगा। नीज यह भी मालूम हुआ कि जौं और गेहूं अलग अलग चीज हैं। (औनुलबारी, 3/65)

---

٣١ - باب: «لا يَبِعْ عَلَى بَيْعِ أَخِيهِ وَلا يَسُمْ عَلَى سَوْمِ أَخِيهِ حَتَّى يَأْذَنَ لَهُ أَوْ يَتْرُكَ»

बाब 31 : कोई आदमी अपने भाई की खरीद-फरोख्त पर खरीद-फरोख्त न करे और न ही उसकी कीमत पर कीमत लगाये, यहां तक कि वह इजाजत दे या उसे छोड़ दे।

١٠٢٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ أَنْ يَبِيعَ حَاضِرٌ لِبَادٍ، وَلاَ تَنَاجَشُوا، وَلاَ يَبِيعُ الرَّجُلُ عَلَى بَيْعِ أَخِيهِ، وَلاَ يَخْطُبُ عَلَى خِطْبَةِ أَخِيهِ، وَلاَ تَسْأَلُ الْمَرْأَةُ طَلاَقَ أُخْتِهَا لِتَكْفَأَ مَا فِي إِنَائِهَا. [رواه البخاري: ٢١٤٠]

1020 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना फरमाया है कि कोई मकामी किसी बैरूनी के लिए फरोख्त करे और न कोई धोके देने के लिए कीमत बढ़ाये और न ही कोई आदमी एक भाई की खरीद-फरोख्त पर खरीद-फरोख्त करे और न ही अपने भाई की मंगनी पर मंगनी का पैगाम भेजे और न कोई औरत अपनी बहन की तलाक की ख्वाहिश करे। इस नियत से कि उसके मुंह का निवाला उसके मुंह में पड़ जाये।

फायदे : कोई मकामी किसी बाहर से आने वाले के लिए फरोख्त न करने का मतलब यह है कि देहाती लोग जो अपनी चीज शहर वालो से सस्ते दामों फरोख्त कर जाते हैं, उनसे कोई शहरी कहे कि तुम उसे फरोख्त न करो, बल्कि मेरे पास रख जाओ। मैं मंहगे दाम उसे फरोख्त करूंगा। ऐसा करना मना है कि उससे शहरवालों को नुकसान पहुंचता है। (औनुलबारी, 3/67)

बाब 32: नीलामी की खरीद-फरोख्त का बयान।

٣٢ - باب: بَيْعُ المُزَايَدَةِ

1021 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है कि एक आदमी ने गुलाम को अपने मरने के बाद आजादी का इख्तियार सौंप दिया। मगर वह आदमी कुछ मुद्दत के बाद मोहताज हो गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गुलाम को पकड़कर फरमाया, इस गुलाम को मुझसे कौन खरीदता है? नईम बिन अब्दुल्लाह ने उसको किस कद्र माल के बदले खरीद लिया, फिर आपने वह कीमत उसके मालिक को दे दी।

١٠٢١ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَجُلًا أَعْتَقَ غُلَامًا لَهُ عَنْ دُبُرٍ، فَٱحْتَاجَ، فَأَخَذَهُ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: (مَنْ يَشْتَرِيهِ مِنِّي؟). فَٱشْتَرَاهُ نُعَيْمُ بْنُ عَبْدِ ٱللهِ بِكَذَا وَكَذَا، فَدَفَعَهُ إِلَيْهِ. [رواه البخاري: ٢١٤١]

फायदे : नीलामी अगर कीमत पढ़ाने के लिए की जाये तो मना है, अगर खरीदने के लिए हो तो दुरूस्त है। जैसाकि हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस गुलाम को नीलामी के तौर पर हाजरीन के सामने पेश करके फरमाया कि उसे कौन खरीदता है? (औनुलबारी 3/69)

बाब 33 : धोके और हामला जानवर के पेट के बच्चे के बच्चे की खरीद-फरोख्त।

٣٣ - باب: بَيْعُ الغَرَرِ وَحَبَلِ الحَبَلَةِ

1022 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हामला जानवर के पेट के बच्चे के बच्चे की खरीद-फरोख्त से मना

١٠٢٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ نَهَى عَنْ بَيْعِ حَبَلِ الحَبَلَةِ، وَكَانَ بَيْعًا يَتَبَايَعُهُ أَهْلُ الجَاهِلِيَّةِ: كَانَ الرَّجُلُ يَبْتَاعُ الجَزُورَ إِلَى أَنْ تُنْتَجَ النَّاقَةُ، ثُمَّ تُنْتَجُ الَّتِي فِي بَطْنِهَا. [رواه البخاري: ٢١٤٣]

फरमाया है। यह एक ऐसी खरीद-फरोख्त थी जो जाहिलीयत के जमाने में की जाती थी। इस तरह कि एक आदमी ऊंटनी इस वादे पर खरीदता कि जब वह बच्चा जने फिर वह बड़ी होकर बच्चा जने, तब उसकी कीमत अदा करेगा।

फायदे : धोके की खरीद-फरोख्त यह है कि एक परिन्दा हवा में उड़ रहा है, कोई मछली दरिया में जा रही है, उसे पकड़ने से पहले ही खरीद और फरोख्त करना। जिक्र की गई हदीस में जिस खरीद-फरोख्त का जिक्र है, उसमें भी एक किस्म का धोका है। मुमकिन है कि ऊंटनी या उसका बच्चा आगे जने या न जने।

बाब 34 : बेचने वाले को जाइज नहीं कि वह (किसी को धोका देने के लिए) ऊंट, गाय और बकरी के थनों में दूध जमा करे।

٣٤ - باب: النَّهْيُ لِلْبَائِعِ أَنْ لاَ يُحَفِّلَ الإِبِلَ وَالبَقَرَ وَالغَنَمَ

1023 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अगर कोई दूध देने वाली बकरी को खरीदे तो उसका दूध दुहने के बाद अगर वह उसे पसन्द हो तो देख ले, अगर पसन्द न हो तो उसके दूध के ऐवज साअ भर खुजूरें दे दे (और उसे वापिस कर दे)।

١٠٢٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنِ ٱشْتَرَى غَنَمًا مُصَرَّاةً فَٱحْتَلَبَهَا، فَإِنْ رَضِيَهَا أَمْسَكَهَا، وَإِنْ سَخِطَهَا فَفِي حَلْبَتِهَا صَاعٌ مِنْ تَمْرٍ). [رواه البخاري: ٢١٥١]

फायदे : दूध देने वाले जानवर को वापिस करने की सूरत में खरीदने वाले को चाहिए कि दूध के बदले एक साअ खुजूर भी जानवर के साथ वापिस करे। अहनाफ ने इस हदीस को अक्ल के खिलाफ समझते हुये काबिले अमल नहीं समझा। नीज यह भी कहा कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. गैर फकीअ थे। लिहाजा उनसे मरवी

रिवायत खिलाफे अक्ल होने की सूरत में काबिले कबूल नहीं, हालांकि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक हुक्म नकल किया है जिस पर अमल करना वाजिब है।

बाब 35: जिनाकार गुलाम की खरीद-फरोख्त।

٣٥ - باب: بَيْعُ العَبْدِ الزَّانِي

1026 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुये सुना कि अगर लौण्डी जिना करे और उसका जिना जाहिर हो जाये तो उसका मालिक उसे कोड़े लगाये। सिर्फ डांटने पर बस न करे, अगर फिर जिना करे तो फिर उसे कोड़े लगाये, डांट-डपट करने पर बस न करे और अगर तीसरी जिना करे तो उसको फरोख्त कर दे, चाहे बालों की रस्सी ही के ऐवज हो।

١٠٢٤ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (إِذَا زَنَتِ الأَمَةُ فَتَبَيَّنَ زِنَاهَا فَلْيَجْلِدْهَا وَلاَ يُثَرِّبْ، ثُمَّ إِنْ زَنَتْ فَلْيَجْلِدْهَا وَلاَ يُثَرِّبْ، ثُمَّ إِنْ زَنَتِ الثَّالِثَةَ فَلْيَبِعْهَا وَلَوْ بِحَبْلٍ مِنْ شَعَرٍ). [رواه البخاري: ٢١٥٢]

फायदे : जिनाकारी भी एक ऐब है। खरीददार उस ऐब के जाहिर होने पर उस गुलाम या लौण्डी को वापिस कर सकता है, अगरचे हदीस में लौण्डी का जिक्र है, लेकिन गुलाम का उस पर अन्दाजा लगाया जा सकता है। अहनाफ लौण्डी के मुताल्लिक यह बात दुरूस्त कहते है, लेकिन गुलाम के मुताल्लिक उसको नहीं मानते। (औनुलबारी, 3/76)

बाब 36 : क्या शहरी किसी देहाती के लिए बिजा मुआवजा खरीद-फरोख्त कर सकता है? क्या वह उसकी मदद और भलाई कर सकता है।

٣٦ - باب: هَل يَبِيعُ حَاضِرٌ لِبَادٍ بِغَيْرِ أَجْرٍ؟ وهَلْ يُعِينُهُ أَوْ يَنْصَحُهُ؟

١٠٢٥ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لاَ تَلَقَّوُا الرُّكْبَانَ، وَلاَ يَبِيعُ حَاضِرٌ لِبَادٍ). فَقِيلَ لابْنِ عَبَّاسٍ: مَا قَوْلُهُ: (لاَ يَبِيعُ حَاضِرٌ لِبَادٍ). قَالَ: لاَ يَكُونُ لَهُ سِمْسَارًا. [رواه البخاري: ٢١٥٨]

1025 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि गल्ला लेकर आने वाले काफिला सवारियों से मिलने के लिए आगे न जायें और कोई मकामी किसी बैरूनी के लिए खरीद-फरोख्त न करे। इब्ने अब्बास रज़ि. से पूछा गया, इसका मतलब क्या है कि कोई मकामी किसी बैरूनी के लिए खरीद-फरोख्त न करे? उन्होंने फरमाया, इसका मतलब यह है कि उसका दलाल न बने।

फायदे : इमाम बुखारी का मतलब यह है कि अगर शहरी बाहर से आने वाले का सामान मदद और भलाई के चाहने तौर पर फरोख्त करता है तो ऐसा करने में कोई हर्ज नहीं, क्योंकि दूसरी हदीस में मुसलमान की भलाई चाहने और उसके साथ हमदर्दी करने का हुक्म है। (औनुलबारी,3/78)

---

٣٧ - باب: النَّهي عَنْ تَلَقِّي الرُّكْبَانِ

बाब 37 : शहर से बाहर काफिला वालों से खरीद और फरोख्त की खातिर मुलाकात मना है।

١٠٢٦ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لاَ يَبِيعُ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضٍ وَلاَ تَلَقَّوُا السِّلَعَ حَتَّى يُهْبَطَ بِهَا إِلَى السُّوقِ) [رواه البخاري: ٢١٦٥]

1026 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम से कोई आदमी दूसरे आदमी की खरीद-फरोख्त पर खरीद-फरोख्त न करे और जो माल बाहर से आ रहा हो, उसके मालिक को न मिलो, यहां तक कि वह बाजार में पहुंच जाये।

फायदे : बाज औकात ऐसा होता है कि शहरी व्यापारी बैरूनी काफिलों से गल्ला की रसद को शहर से दूर बाहर निकलकर खरीद लेते हैं और मण्डी में उसे महंगे दाम फरोख्त करते हैं। इमाम बुखारी के नजदीक ऐसी खरीद-फरोख्त हराम है, कुछ औलमा के नजदीक़ यह खरीद-फरोख्त सही है। अलबत्ता मालिक को इख्तियार है कि मण्डी का भाव मालूम होने के बाद अगर चाहे तो उसे कायम रखे या खत्म कर दे। (औनुलबारी, 3/81)

बाब 38 : किशमिश का किशमिश के ऐवज और गल्ले का गल्ले के ऐवज खरीद व फरोख्त करना कैसा है?

٣٨ - باب: بَيْعُ الزَّبِيبِ بِالزَّبِيبِ وَالطَّعَامِ بِالطَّعَامِ

1027 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुजाबना से मना फरमाया है और मुजाबना यह है कि पेड़ की ताजा खुजूर को सूखी खुजूर के ऐवज नाप कर बेचा जाये। इसी तरह बेल के अंगूरों को किशमिश के ऐवज नापकर फरोख्त किया जाये।

١٠٢٧ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ نَهى عَنِ المُزَابَنَةِ. وَالمُزَابَنَةُ: بَيْعُ الثَّمَرِ بِالتَّمْرِ كَيْلًا، وَبَيْعُ الزَّبِيبِ بِالْكَرْمِ كَيْلًا. [رواه البخاري: ٢١٧١]

फायदे : वह खुजूर जो अभी पेड़ों से न उतारी गयी हो, इसी तरह वह अंगूर जो अभी बेलों पर हैं, उनका अन्दाजा करके खुश्क खुजूरों या मुनक्का के ऐवज फरोख्त करना जाइज नहीं, क्योंकि उससे एक जमात को नुकसान पहुंचने का अन्देशा है। (अबू मुहम्मद)

बाब 39 : जौं को जौं के ऐवज फरोख्त करना।

٣٩ - باب: بَيْعُ الشَّعِيرِ بِالشَّعِيرِ

١٠٢٨ : عَنْ مَالِكِ بْنِ أَوْسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ ٱلْتَمَسَ صَرْفًا بِمِائَةِ دِينَارٍ، قَالَ: فَدَعَانِي طَلْحَةُ ٱبْنُ عُبَيْدِ ٱللهِ، فَتَرَاوَضْنَا حَتَّى ٱصْطَرَفَ مِنِّي، فَأَخَذَ ٱلذَّهَبَ يُقَلِّبُهَا فِي يَدِهِ ثُمَّ قَالَ: حَتَّى يَأْتِيَ خَازِنِي مِنَ الغَابَةِ، وَعُمَرُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ يَسْمَعُ ذٰلِكَ، فَقَالَ: وَٱللهِ لاَ تُفَارِقُهُ حَتَّى تَأْخُذَ مِنْهُ، قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (الذَّهَبُ بِٱلذَّهَبِ رِبًا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ..) وَذَكَرَ بَاقِي الحَدِيث وقَدْ تَقَدَّم [رواه البخاري: ٢١٣٤]

1028 : मालिक बिन औस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मुझे सौ दीनार के ऐवज रेजगारी की खरीद-फरोख्त की जरूरत हुई तो मुझे तल्हा बिन उबेदुल्लाह रज़ि. ने बुलाया, हम आपस में भाव के बारे में गुफ्तगू करने लगे। आखिरकार उन्होंने मुझ से रेजगारी की खरीद-फरोख्त करली, उन्होंने सोना लिया और हाथ में उल्ट-पुल्ट कर देखना शुरू कर दिया, फिर कहा इस कद्र इन्तिजार करो कि मेरा खजांची मकामे गाबा से आ जाये। उमर रज़ि. भी यह गुफ्तगू सुन रहे थे। उन्होंने फरमाया (मालिक बिन औस रज़ि.) तुम्हें अल्लाह की कसम! जब तक वसूली न कर लो, उससे जुदा न होना, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि सोना सोने के ऐवज फरोख्त करना सूद है, जब तक हाथो-हाथ न हो, बाकी हदीस (1019) पहले गुजर चुकी है।

फायदे : इस हदीस के आखिर में यह अलफाज हैं, "जौं के बदले जौ और खुजूर के बदले खुजूर बेचना भी सूद है, मगर उस सूरत में कि नकद-ब-नकद हो।"

٤٠ - باب: بَيْعُ الذَّهَبِ بِالذَّهَبِ

बाब 40 : सोने के ऐवज सोना फरोख्त करना कैसा है?

١٠٢٩ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لاَ

1029 : अबू बकर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह

تَبِيعُوا الذهب بِالذَّهَبِ إِلَّا سَوَاءً بِسَوَاءٍ، والْفِضَّةَ بِالفِضَّةِ إِلَّا سَوَاءً بِسَوَاءٍ، وَبِيعُوا الذَّهَبَ بِالْفِضَّةِ، وَالْفِضَّةَ بِالذَّهَبِ، كَيْفَ شِئْتُمْ). [رواه البخاري: ٢١٧٥]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सोने को सोने के ऐवज और चांदी को चांदी के ऐवज कमी बैसी से मत फरोख्त करो, अलबत्ता सोना सोने के बराबर, चांदी चांदी के बराबर फरोख्त करो। हां सोने के ऐवज चांदी और चांदी के ऐवज सोना जिस तरह चाहो फरोख्त कर सकते हो।

फायदे : अगर अजनास मुख्तलिफ हों, मसलन एक तरफ से सोना और दूसरी तरफ से चांदी तो उसमें कमी बैशी तो की जा सकती है, अलबत्ता दोनों तरफ से नकद होना जरूरी है, एक तरफ से नकद और दूसरी तरफ से उधार ठीक नहीं।

(औनुलबारी, 3/85)

٤١ - باب: بَيْعُ الفِضَّةِ بِالفِضَّةِ

बाब 41 : चांदी को चांदी के ऐवज फरोख्त करना।

١٠٣٠ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لاَ تَبِيعُوا الذَّهَبَ بِالذَّهَبِ إِلَّا مِثْلًا بِمِثْلٍ وَلاَ تُشِفُّوا بَعْضَهَا عَلَى بَعْضٍ، وَلاَ تَبِيعُوا الْوَرِقَ بِالْوَرِقِ إِلَّا مِثْلًا بِمِثْلٍ، وَلاَ تُشِفُّوا بَعْضَهَا عَلَى بَعْضٍ، وَلاَ تَبِيعُوا مِنْهَا غَائِبًا بِنَاجِزٍ). [رواه البخاري: ٢١٧٧]

1030 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सोने को सोने के ऐवज मत फरोख्त करो, मगर बराबर बराबर यानी एक दूसरे से कम ज्यादा करके फरोख्त न करो और चांदी के ऐवज चांदी को फरोख्त न करो, मगर बराबर बराबर यानी एक दूसरे से कमी बैशी करके मत बेचो और गायब चीज को हाजिर के ऐवज न फरोख्त करो, यानी एक तरफ से नकद और दूसरी तरफ से उधार पर।

फायदे : एक आदमी को किसी से दिरहम लेने हैं और किसी और को उससे दीनार लेने हैं, यह दोनों आपस में दिरहम व दीनार की खरीद व फरोख्त नहीं कर सकते, क्योंकि जब एक तरफ से उधार और दूसरी तरफ नकद की खरीद व फरोख्त जाइज नहीं तो दोनो तरफ से उधार की लेन-देन कैसे हो सकती है। (औनुलबारी, 3/86)

बाब 42 : दीनार को दीनार के बदले उधार बेचना।

٤٢ - باب: بَيْعُ الدِّينَارِ بِالدِّينَارِ نَسَاءً

١٠٣١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: الدِّينَارُ بِالدِّينَارِ، وَالدِّرْهَمُ بِالدِّرْهَمِ، فَقِيلَ لَهُ: فَإِنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ لاَ يَقُولُهُ، فَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ لاِبْنِ عَبَّاسٍ: سَمِعْتَهُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ، أَوْ وَجَدْتَهُ فِي كِتَابِ ٱللهِ تَعَالَى؟. قَالَ: كُلُّ ذٰلِكَ لاَ أَقُولُ، وَأَنْتُمْ أَعْلَمُ بِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ مِنِّي، وَلٰكِنَّنِي أَخْبَرَنِي أُسَامَةُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (لاَ رِبًا إِلَّا فِي النَّسِيئَةِ). [رواه البخاري: ٢١٧٨، ٢١٧٩]

1031 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, दीनार को दीनार के बदले और दिरहम को दिरहम के बदले (बराबर, बराबर) फरोख्त करना जाइज है। जब उनसे कहा गया कि इब्ने अब्बास रज़ि. तो उसके कायल नहीं। तो अबू सईद खुदरी रज़ि. ने इब्ने अब्बास रज़ि. से पूछा, क्या आपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है या किताबुल्लाह (कुरआन) में देखा है? इब्ने अब्बास रज़ि. ने कहा, उनमें से कोई बात भी नहीं कहता, क्योंकि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हदीसों को मुझ से ज्यादा जानते हो, अलबत्ता मुझे उसामा रज़ि. ने खबर दी है कि रसूलुल्लाह ने फरमाया कि सूद सिर्फ उधार में होता है।

फायदे : हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. का नजरीया यह था कि सूद सिर्फ उसी सूरत में होगा जब एक तरफ से उधार हो, उनके नजदीक

हाथो हाथ एक दिरहम को दो दिरहम के ऐवज फरोख्त किया जा सकता है। यह नजरीया दूसरी हदीसों के खिलाफ है और इब्ने अब्बास रज़ि. इस नजरीये से पलट गये थे, जैसाकि मुस्तदरक हाकिम (किताबे हदीस) में उसकी तफसील मौजूद है।

(औनुलबारी, 3/88)

बाब 43 : चांदी को सोने के ऐवज उधार बेचना।

٤٣ - باب: بَيْعُ الْوَرِقِ بِالذَّهَبِ نَسِيئَةً

1032 : बरा बिन आजिब और जैद बिन अरकम रज़ि. से रेजगारी की लेन-देन के बारे में पूछा गया तो उन दोनों में से हर एक ने दूसरे के बारे में कहा, यह मुझसे बेहतर है, फिर दोनों ने बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सोने को चांदी के ऐवज उधार बेचने से मना फरमाया है।

١٠٣٢ : عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ وَزَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمْ، أَنَّهُمَا سُئِلا عَنِ الصَّرْفِ، فَكُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا يَقُولُ: هٰذَا خَيْرٌ مِنِّي، وَكِلاَهُمَا يَقُولُ: نَهى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَنْ بَيْعِ الذَّهَبِ بِالْوَرِقِ دَيْنًا. [رواه البخاري: ٢١٨٠، ٢١٨١]

फायदे : खरीद व फरोख्त के कुछ अकसाम यह हैं: अगर सोने चांदी के अलावा दूसरी चीजों की लेन-देन चीजों से हो तो उसे मुकाबला कहते हैं और एक नकदी की उसी तरह उसी नकदी से लेन-देन करने को मुरातला कहा जाता है और एक नकदी की दूसरी मुख्तलीफ नकदी से लेन-देन करना सर्फ कहलाता है। अगर चीजों की नकदी के ऐवज लेन-देन हो तो नकदी को कीमत और चीज को ऐवज कहते हैं, इन तमाम का हुक्म यह है कि हाथो-हाथ तो सब जाईज हैं, अलबत्ता उधार लेन-देन में कुछ तफसील है, नकदी का नकदी के ऐवज उधार जाइज नहीं, अलबत्ता चीजों

का नकदी के ऐवज उधार जाइज है। अगर नकदी वसूल करके चीज बाद में हवाले करना है तो भी जाइज है, क्योंकि यह सलम है, अगर दोनों तरफ से उधार है तो जाइज नहीं।

(औनुलबारी, 3/90)

बाब 44 : बेअ मुजाबना।

٤٤ - باب: بَيْعُ الْمُزَابَنَةِ

1033 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक्त तक फलों को बेचने से मना फरमाया है, जब तक उनमें पकने की सलाहियत जाहिर न हो जाये और पेड़ की खुजूर को सूखी खुजूर के बदले मत फरोख्त करो, फिर अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. ने कहा कि जैद बिन साबित रज़ि. ने मुझे खबर दी कि बाद में रसूलुल्लाह ने पेड़ पर लगी हुई खुजूरों को ताजा या सूखी के बदले फरोख्त करने की इजाजत बय अरिया की सूरत में दी है। उसके अलावा किसी और सूरत में इजाजत नहीं दी है।

١٠٣٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لاَ تَبِيعُوا الثَّمَرَ حَتَّى يَبْدُوَ صَلاَحُهُ، وَلاَ تَبِيعُوا الثَّمَرَ بِالتَّمْرِ). قَالَ: وَأَخْبَرَنِي زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ [رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ:] أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ رَخَّصَ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي بَيْعِ الْعَرِيَّةِ بِالرُّطَبِ أَوْ بِالتَّمْرِ، وَلَمْ يُرَخِّصْ فِي غَيْرِهِ. [رواه البخاري: ٢١٨٣، ٢١٨٤]

फायदे : बअय अरिया यह है, बाग का मालिक किसी को खुजूर का पेड़ खैरात के तौर पर दे दे, फिर बे-मौका आने जाने की तकलीफ के पेशे नजर सूखी खुजूर देकर वह पेड़ उससे खरीद ले। शरीअत ने इसकी इजाजत दी है, अगली हदीस में इसकी हद बन्दी की गई है। (औनुलबारी, 3/91)

1034 : जाबिर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु

١٠٣٤ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ بَيْعِ الثَّمَرِ

حَتَّى يَطِيبَ وَلاَ يُبَاعُ شَيْءٌ مِنْهُ إِلَّا بِالدِّينَارِ وَالدِّرْهَمِ، إِلَّا الْعَرَايَا. [رواه البخاري: ٢١٨٩]

अलैहि वसल्लम ने फल की फरोख़्त से मना फरमाया यहां तक कि वह पक न जाये और उनकी कोई किस्म दिरहम व दीनार के अलावा किसी और चीज के ऐवज फरोख़्त न की जाये, सिवाये अरिया के (कि उनको फलों के ऐवज भी फरोख़्त किया जा सकता है)

٤٥ - باب: بَيْعُ الثَّمَرِ عَلَى رُؤُوسِ النَّخْلِ بِالذَّهَبِ وَالفِضَّةِ

बाब 45 : पेड़ पर लगी खुजूर सोने चांदी के ऐवज फरोख़्त करना।

١٠٣٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ رَخَّصَ فِي بَيْعِ الْعَرَايَا فِي خَمْسَةِ أَوْسُقٍ، أَوْ دُونَ خَمْسَةِ أَوْسُقٍ. [رواه البخاري: ٢١٩٠]

1035 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बअय अरिया की इजाजत दी है। बशर्ते कि वह पांच वस्क से कम हूं।

फायदे : एक वसक साठ साअ का होता है। अगर पेड़ पर लगी खुजूरों का अन्दाजा पांच वसक या उससे कम का हो तो बअय अरिया जाइज है, इससे ज्यादा जाइज नहीं है, लेकिन बचाव का तरीका है कि उसका जाइज होना पांच से कम में फिक्स कर दिया जाये। (औनुलबारी, 3/93)

नोट : इस बयान का जाइज होना ऊपर वाली हदीस से साबित हो चुका है। (अलवी)

---

٤٦ - باب: بَيْعُ الثِّمَارِ قَبْلَ أَنْ يَبْدُو صَلاَحُهَا

बाब 46 : सलाहियत पैदा होने से पहले फलों को फरोख़्त करना (मना है)

١٠٣٦ : عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّاسُ فِي عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ يَتَبَايَعُونَ الثِّمَارَ، فَإِذَا

1036: जैद बिन साबित रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में लोग फलों

جَدَّ النَّاسُ وَحَضَرَ تَقَاضِيهِمْ، قَالَ الْمُبْتَاعُ: إِنَّهُ أَصَابَ الثَّمَرَ الدُّمَانُ، أَصَابَهُ مُرَاضٌ، أَصَابَهُ قُشَامٌ، عَاهَاتٌ يَحْتَجُّونَ بِهَا، فَقَالَ رَسُولُ ﷺ فِي ذٰلِكَ: (فَإِمَّا لاَ، فَلاَ تَتَبَايَعُوا حَتَّى يَبْدُوَ صَلاَحُ الثَّمَرِ). كَالْمَشُورَةِ يُشِيرُ بِهَا لِكَثْرَةِ خُصُومَتِهِمْ. [رواه البخاري: ٢١٩٣]

को सलाहियत पैदा होने से पहले फरोख्त करते थे, जब खरीदने वाले अपना फल तोड़ लेते और उनसे कीमत के तकाजे का वक्त आता तो कहते कि फलों में दुमान, मुराज, कुशाम और दूसरी आफतें पैदा हो गयी थीं, बेकार में झगड़ा करते। लिहाजा जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने इस किस्म के ज्यादातर मुकदमात पेश हुये तो आपने बतौर मशवरा उनसे फरमाया, अगर तुम झगड़ों से बाज नहीं आते तो जब तक फलों में सलाहियत न पैदा हो जाये उस वक्त तक उनकी खरीद व फरोख्त न किया करो।

फायदे : ऐसा मालूम होता है कि आपका मना करने का यह हुक्म शुरू में तो बतौर मशवरा था, बाद में साफ तौर पर मना कर दिया। जैसा कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से मरवी हदीस (2194) में है, खुद इस हदीस के रावी हज़रत जैद रज़ि. भी पुख्तगी (पकने) से पहले अपना फल फरोख्त न करते थे। (औनुलबारी, 3/96)

١٠٣٧ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تُبَاعَ الثَّمَرَةُ حَتَّى تُشَقِّحَ. فَقِيلَ: وَمَا تُشَقِّحُ؟ قَالَ تَحْمَارُّ وَتَصْفَارُّ وَيُؤْكَلُ مِنْهَا. [رواه البخاري: ٢١٩٦]

1037 : जाबिर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फलों की खरीद- फरोख्त से मना फरमाया है, जब तक वह मुश्कह न हो जायें। अर्ज किया गया मुश्कह क्या होता है। आपने [illegible] कि वह सुर्ख या जर्द और खाने के काबिल न हो जाये।

बाब 47 : अगर कोई सलाहियत पैदा होने से पहले फलों को बेच डाले तो आफत आने पर वह जिम्मेदार होगा।

٤٧ - باب: إذَا بَاعَ الثِّمَارَ قَبْلَ أَنْ يَبْدُوَ صَلاَحُهَا ثُمَّ أَصَابَتْهُ عَاهَةٌ

1038 : अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फलों के जुहव होने से पहले उन्हें फरोख्त करने से मना फरमाया है। आपसे पूछा गया, जुहव क्या होता है? तो आपने फरमाया कि उनका सुर्ख हो जाना। फिर फरमाया, भला बताओ अगर अल्लाह फल को बर्बाद कर दे तो तुममें से कोई अपने मुसलमान भाई का माल किस चीज के ऐवज खायेगा?

١٠٣٨ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ وقَالَ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ نَهى عَنْ بَيْعِ الثِّمَارِ حَتَّى تُزْهِيَ. فَقِيلَ لَهُ: وَمَا تُزْهِي؟. قَالَ: حَتَّى تَحْمَرَّ. فَقَالَ [رَسُولُ ٱللهِ ﷺ]: (أَرَأَيْتَ إِذَا مَنَعَ ٱللهُ الثَّمَرَةَ، بِمَ يَأْخُذُ أَحَدُكُمْ مَالَ أَخِيهِ). [رواه البخاري: ٢١٩٨]

फायदे : इमाम बुखारी का नजरीया यह मालूम होता है कि फलों की पुख्तगी से पहले उनकी खरीद व फरोख्त जाइज है लेकिन आफत आने की सूरत में उसका हर्जाना बेचने वाले के जिम्मे होगा। यानी खरीददार की कुल रकम उसे वापिस करनी होगी।

बाब 48 : अगर कोई बेहतरीन खुजूरों के ऐवज आम खुजूरों को फरोख्त करना चाहे

٤٨ - باب: إذَا أَرَادَ بَيْعَ تَمْرٍ بِتَمْرٍ خَيْرٍ مِنْهُ

1039 : अबू सईद खुदरी रज़ि. और अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी को खैबर

١٠٣٩ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، وَأَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ ٱسْتَعْمَلَ رَجُلاً عَلَى خَيْبَرَ فَجَاءَهُ بِتَمْرٍ جَنِيبٍ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَكُلُّ تَمْرِ خَيْبَرَ هٰكَذَا؟). قَالَ: لاَ وَٱللهِ يَا رَسُولَ

اللهِ، إِنَّا لَنَأْخُذُ الصَّاعَ مِنْ هٰذَا بِالصَّاعَيْنِ، وَالصَّاعَيْنِ بِالثَّلاثَةِ. فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لاَ تَفْعَلْ، بِعِ الجَمْعَ بِالدَّرَاهِمِ، ثُمَّ ٱبْتَعْ بِالدَّرَاهِمِ جَنِيبًا). [رواه البخاري: ٢٢٠١، ٢٢٠٢]

का तहसीलदार बना दिया। वह एक उम्दा किस्म की खुजूरें लेकर हाजिरे खिदमत हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, क्या खैबर की सब खुजूरें ऐसी ही होती हैं? उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! नहीं अल्लाह की कसम हम इस उम्दा खुजूर के एक साअ को दूसरी खुजूरों के दो साअ के ऐवज और दो साअ को तीन साअ के ऐवज लेते हैं, इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐसा न किया करो, बल्कि तुम उन रद्दी खुजूरों को रूपये के ऐवज फरोख्त करके फिर उन रूपयों से उम्दा खुजूर खरीद लिया करो।

फायदे : इस हदीस के पेशे नजर बाज औलमा ने सूदी मामलात में इस किस्म का बहाना करने को जाइज करार दिया है। मसलन एक सोने के ऐवज दूसरा सोना कम व ज्यादा लेने की जरूरत हो तो पहले सोने को रूपये के ऐवज फरोख्त कर दिया जाये, फिर उन रूपयों के ऐवज दूसरा सोना खरीदा जाये। वल्लाह आलम

बाब 49 : कच्चे दानों या फलों का फरोख्त करना कैसा है?

٤٩ - باب: بَيْعُ المُخَاضَرَةِ

1040 : अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खौशा (बाली) के अन्दर गेहूँ के कच्चे दानों और

١٠٤٠ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَنِ المُحَاقَلَةِ، وَالمُخَاضَرَةِ، وَالمُلاَمَسَةِ، وَالمُنَابَذَةِ، وَالمُزَابَنَةِ. [رواه البخاري: ٢٢٠٧]

कच्चे फलों, सिर्फ फैंक देने और सिर्फ हाथ लगा देने से खरीद-फरोख्त को फिक्स करने से मना फरमाया है, नीज पेड़ पर लगी खुजूरों को पुख्ता खुजूरों के ऐवज फरोख्त करने से भी मना फरमाया।

फायदे : पेड़ पर लगी हुई खुजूरों को अरिया की सूरत में पुख्ता खुजूरों की ऐवज फरोख्त किया जा सकता है, जैसा कि पहले गुजर चुका है।

---

٥٠ - باب: مَنْ أَجْرَى أَمْرَ الأَمْصَارِ عَلَى مَا يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ فِي الْبُيُوعِ وَالإِجَارَةِ وَالمِكْيَالِ وَالوَزْنِ

बाब 50 : खरीद व फरोख्त और इजारा और माप तौल में मुल्की कानून के मुताबिक हुक्म दिया जायेगा।

١٠٤١ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: قَالَتْ هِنْدٌ أُمُّ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ: إِنَّ أَبَا سُفْيَانَ رَجُلٌ شَحِيحٌ، فَهَلْ عَلَيَّ جُنَاحٌ أَنْ آخُذَ مِنْ مَالِهِ سِرًّا؟. قَالَ: (خُذِي أَنْتِ وَبَنُوكِ مَا يَكْفِيكِ بِالمَعْرُوفِ). [رواه البخاري: ٢٢١١]

1041 : आइशा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुआविया रज़ि. की मां हिन्द रज़ि. ने अर्ज किया कि अबू सुफियान रज़ि. बड़ा कंजूस आदमी है। अगर मैं उसके माल से कुछ पौशिदा तौर पर ले लिया करूं तो मुझ पर गुनाह तो न होगा? आपने फरमाया, कानून के मुताबिक सिर्फ इतना ले सकती हो जो तुझे और तेरे बेटों को काफी हो।

फायदे : अगर किसी मुल्क में कोई कैरेन्सी चलती है, खरीद व फरोख्त करते वक्त दूसरी कैरेन्सी की शर्त न लगाने की सूरत में चलने वाली कैरेन्सी ही मुराद होगी। जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान की गई हदीस में कोई हद मुकर्रर नहीं फरमायी, बल्कि रिवाज और कानून के मुताबिक माल लेने का हुक्म दिया।

٥١ - باب: بَيْعُ الشَّرِيكِ مِنْ شَرِيكِهِ

बाब 51 : एक शरीक (साझेदार) अपना हिस्सा दूसरे शरीक (साझेदार) को बेच सकता है।

١٠٤٢ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: جَعَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ الشُّفْعَةَ فِي كُلِّ مَالٍ لَمْ يُقْسَمْ، فَإِذَا وَقَعَتِ الحُدُودُ، وَصُرِّفَتِ الطُّرُقُ، فَلاَ شُفْعَةَ. [رواه البخاري: ٢٢١٣]

1042 : जाबिर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर न बांटे गये माल में शुफआ का हक कायम रखा है। लेकिन जब तकसीम होने के बाद हदें वाकेअ हो जायें और रास्ते बदल जायें, शुफआ खत्म हो जाता है।

फायदे : इस माल से मुराद एक जगह से दूसरी जगह न ले जाने वाली जायदाद है। मसलन मकान, जमीन और बाग वगैरह। क्योंकि ले जाने वाली जायदाद में बिल इत्तेफाक किसी को शुफआ का हक नहीं है। इसी तरह वो माल जो बांटा न जा सके, उसमें भी कोई शुफआ नहीं है। (औनुलबारी, 3/108)

---

٥٢ - باب: شِرَاءُ المَمْلُوكِ مِنَ الحَرْبِيِّ وَهِبَتِهِ وَعِتْقِهِ

बाब 52 : हरबी काफिर (काफिरों के मुल्क) से गुलाम खरीदना और उसको किसी को देना या आजाद करना।

١٠٤٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (هَاجَرَ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ بِسَارَةَ، فَدَخَلَ بِهَا قَرْيَةً فِيهَا مَلِكٌ مِنَ المُلُوكِ، أَوْ جَبَّارٌ مِنَ الجَبَابِرَةِ، فَقِيلَ: دَخَلَ إِبْرَاهِيمُ بِامْرَأَةٍ هِيَ مِنْ أَحْسَنِ النِّسَاءِ، فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ: أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ مَنْ هٰذِهِ الَّتِي مَعَكَ؟. قَالَ: أُخْتِي، ثُمَّ رَجَعَ إِلَيْهَا فَقَالَ: لاَ تُكَذِّبِي حَدِيثِي، فَإِنِّي أَخْبَرْتُهُمْ أَنَّكِ أُخْتِي، وَٱللهِ إِنْ عَلَى وَجْهِ الأَرْضِ مُؤْمِنٌ

1043 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, इब्राहिम अलैहि. अपनी बीवी सारा के साथ हिजरत करके एक ऐसी बस्ती में पहुंचे जहां एक बादशाह था, या यह फरमाया कि एक

غَيْرِي وَغَيْرُكِ، فَأَرْسَلَ بِهَا إِلَيْهِ فَقَامَ إِلَيْهَا، فَقَامَتْ تَوَضَّأُ وَتُصَلِّي، فَقَالَتْ: اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتُ آمَنْتُ بِكَ وَبِرَسُولِكَ وَأَحْصَنْتُ فَرْجِي إِلاَّ عَلَى زَوْجِي فَلاَ تُسَلِّطْ عَلَيَّ الْكَافِرَ، فَغُطَّ حَتَّى رَكَضَ بِرِجْلِهِ).

قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: (قَالَتِ: اللَّهُمَّ إِنْ يَمُتْ يُقَالُ: هِيَ قَتَلَتْهُ، فَأُرْسِلَ، ثُمَّ قَامَ إِلَيْهَا فَقَامَتْ تَوَضَّأُ وتُصَلِّي وَتَقولُ: اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتُ آمَنْتُ بِكَ وَبِرَسولِكَ وَأَحْصَنْتُ فَرْجِي إِلَّا عَلَى زَوْجِي، فَلاَ تُسَلِّطْ عَلَيَّ هٰذَا الْكَافِرَ، فَغُطَّ حَتَّى رَكَضَ بِرِجْلِهِ).

قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: (فَقَالَتِ: اللَّهُمَّ إِنْ يَمُتْ فَيُقَالُ: هِيَ قَتَلَتْهُ، فَأُرْسِلَ فِي الثَّانِيَةِ، أَوْ فِي الثَّالِثَةِ، فَقَالَ: وَاللهِ مَا أَرْسَلْتُمْ إِلَيَّ إِلَّا شَيْطَانًا، أَرْجِعُوهَا إِلَى إِبْرَاهِيمَ، وَأَعْطُوهَا آجَرَ، فَرَجَعَتْ إِلَى إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ، فَقَالَتْ: أَشَعَرْتَ أَنَّ اللهَ كَبَتَ الْكَافِرَ وَأَخْدَمَ وَلِيدَةً). [رواه البخاري: ٢٢١٧]

जालिम था। उससे जब कहा गया कि इब्राहिम अलैहि. एक ऐसी औरत के साथ आये हैं जो बहुत ही खुबसूरत है तो उसने अपना आदमी भेजा कि इब्राहिम! तेरे साथ कौन है? उन्होंने जवाब दिया कि मेरी बहन है, फिर इब्राहिम अलैहि. लौट कर सारा के पास गये और उससे कहा, तुम मेरी बात को झूटा मत करार देना। मैंने उससे कह दिया कि तुम मेरी बहन हो। अल्लाह की कसम! रूये जमीन पर मेरे और तेरे अलावा कोई मौमिन नहीं है। फिर उन्होंने सारा को बादशाह के पास भेज दिया, बादशाह उनकी तरफ मुतवज्जा हुआ तो वह वजू करके नमाज़ पढ़ रही थी। उन्होंने यह दुआ कि ऐ अल्लाह मैं तुझ पर और तेरे रसूल पर ईमान लाई हूँ और मैंने अपने शौहर के सिवा सब से अपनी शर्मगाह की हिफाजत की है। लिहाजा उस काफिर को मुझ पर गालिब (हावी) न करना। यह दुआ मांगते ही वह काफिर ऐसा गिरा कि खर्राटे भरकर अपनी ऐड़िया रगड़ने लगा। अबू हुरैरा रज़ि. कहते हैं कि सारा कहने लगीं, ऐ अल्लाह! अगर यह मर गया तो लोग कहेंगे कि इस औरत ने बादशाह को मार डाला है। फिर उसकी वह

हालत जाती रही और सारा की तरफ दोबारा उठा। वह उठकर वजू करके फिर नमाज़ पढ़ने लगीं और यूँ दुआ की, ऐ अल्लाह! अगर मैं तुझ पर और तेरे रसूल पर ईमान लाई हूँ और शौहर के अलावा सबसे मैंने अपनी शर्मगाह को बचाया है तो इस काफिर को मुझ पर गालिब (हावी) न करना। यह दुआ करते ही वह काफिर जमीन पर ऐसा गिरा कि खर्राटे भरकर ऐड़ियां रगड़ने लगा। अबू हुरैरा रज़ि. ने कहा, सारा कहने लगीं या अल्लाह! यह मर जाये तो लोग कहेंगे कि उसने बादशाह को कत्ल किया है। तो वह बादशाह तीसरी बार होश में आया तो उसने कहा, अल्लाह की कसम! तुमने तो मेरे पास शैतान (जादूगर) को भेजा है, इसे इब्राहिम अलैहि. के पास ही वापिस ले जावो और हाजरा नामी एक लौण्डी भी उसे दे दो। फिर इब्राहिम अलैहि. के पास वापिस आ गयी और कहने लगी, तुमने देखा, अल्लाह ने उस काफिर को जलील किया और एक लौण्डी भी दिलवाई।

फायदे : चूंकि उस काफिर बादशाह ने हाजरा नामी एक लौण्डी हज़रत सारा को दी और उन्होंने उसे कबूल किया। हज़रत इब्राहिम अलैहि. ने भी इस देने को जायज रखा तो मालूम हुआ कि काफिर का देना और उसका कबूल करना सही और जाइज है।

बाब 53 : खंजीर (सूअर) का कत्ल करना कैसा है?

٥٣ - باب: قَتْلُ الخِنْزِيرِ

1044 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कसम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है। तुम

١٠٤٤ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَيُوشِكَنَّ أَنْ يَنْزِلَ فِيكُمْ ابْنُ مَرْيَمَ حَكَمًا مُقْسِطًا، فَيَكْسِرَ الصَّلِيبَ، وَيَقْتُلَ الخِنْزِيرَ، وَيَضَعَ الجِزْيَةَ، وَيَفِيضَ المَالُ حَتَّى لاَ يَقْبَلَهُ أَحَدٌ). [رواه البخاري: ٢٢٢٢]

लोगों में अनकरीब ही (ईसा) इब्ने मरीयम उतरेंगे और वह एक आदिल हाकिम होंगे। सूली को तो तोड़ डालेंगे और खंजीर को कत्ल करेंगे और जजीया (टेक्स) खत्म करेंगे। दौलत की रैल-पैल होगी। यहां तक कि उसे कोई कबूल न करेगा।

फायदे : इस हदीस से इमाम बुखारी ने यह साबित किया है कि सूअर नापाक है और उसकी खरीद व फरोख्त भी नाजाइज है, क्योंकि हज़रत ईसा अलैहि. उसे अपने दौर में खत्म करेंगे। अगर यह पाक होता तो उसे कत्ल करने का हुक्म न दिया जाता।

(औनुलबारी, 3/112)

बाब 54 : बेजान चीजों की तस्वीरें फरोख्त करना, और उनकी कौनसी शक्ल हराम है।

٥٤ - باب: بَيْعُ التَّصَاوِيرِ الَّتِي لَيْسَ فِيهَا رُوحٌ وَمَا يُكْرَهُ مِنْ ذَلِك

1045 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि उनके पास एक आदमी ने आकर कहा, ऐ इब्ने अब्बास रज़ि! मैं अपने हाथ से मेहनत करके खाता हूँ यानी मैं तस्वीरें बनाता हूँ। इस पर इब्ने अब्बास रज़ि. ने फरमाया, मैं तुझ से वही बात कहूंगा जो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुनी है। मैंने आपको यह फरमाते हुये सुना है, तस्वीरें बनाने वाले को अल्लाह अजाब देगा। यहां तक कि वह उसमें जान डाले और वह उसमें कभी जान नहीं डाल सकेगा।

١٠٤٥ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ أَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا [أَبَا] عَبَّاسٍ، إِنِّي إِنْسَانٌ، إِنَّمَا مَعِيشَتِي مِنْ صَنْعَةِ يَدِي، وَإِنِّي أَصْنَعُ هٰذِهِ التَّصَاوِيرَ. فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَا أُحَدِّثُكَ إِلَّا مَا سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: (مَنْ صَوَّرَ [صُورَةً] فَإِنَّ اللهَ مُعَذِّبُهُ حَتَّى يَنْفُخَ فِيهَا الرُّوحَ، وَلَيْسَ بِنَافِخٍ فِيهَا أَبَدًا). فَرَبَا الرَّجُلُ رَبْوَةً شَدِيدَةً وَاصْفَرَّ وَجْهُهُ، فَقَالَ: وَيْحَكَ، إِنْ أَبَيْتَ إِلَّا أَنْ تَصْنَعَ، فَعَلَيْكَ بِهٰذَا الشَّجَرِ، كُلُّ شَيْءٍ لَيْسَ فِيهِ رُوحٌ. [رواه البخاري: ٢٢٢٥]

यह सुनकर उस पर कपकपी तारी हो गयी और चेहरा उदास हो गया। इब्ने अब्बास रज़ि. ने कहा, तेरी खराबी हो। अगर तू यही काम करना चाहता है तो पेड़ों या ऐसी चीजों की तस्वीर बना जो बेजान हो।

फायदे : इससे साबित हुआ कि जानदार की तस्वीर बनाना और उसे फरोख्त करना जाइज नहीं है। मुस्लिम की रिवायत में है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. ने उसे फरमाया कि पेड़ों या ऐसी चीजों की तस्वीरें बनाओ जिसमें रूह न हो। (औनुलबारी, 3/114)

बाब 55 : जो किसी आजाद आदमी को फरोख्त कर दे, उसका गुनाह

٥٥ - باب: إِثْمِ مَنْ بَاعَ حُرًّا

1046 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं, आपने फरमाया कि अल्लाह तआला का इरशाद है, तीन आदमी ऐसे हैं कि कयामत के दिन मैं उनका दुश्मन होऊंगा। वह आदमी जो मेरा नाम लेकर वादा करे, फिर उसे तोड़ डाले, दूसरा वह आदमी जो किसी आजाद आदमी को फरोख्त करके उसकी कीमत खा जाये। तीसरा वह आदमी जो किसी मजदूर को मजदूरी पर रखे, उससे पूरा काम ले, लेकिन उसे मजदूरी न दे।

١٠٤٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (قَالَ ٱللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ثَلاثَةٌ أَنَا خَصْمُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: رَجُلٌ أَعْطَى بِي ثُمَّ غَدَرَ، وَرَجُلٌ بَاعَ حُرًّا فَأَكَلَ ثَمَنَهُ، وَرَجُلٌ ٱسْتَأْجَرَ أَجِيرًا فَٱسْتَوْفَى مِنْهُ وَلَمْ يُعْطِهِ أَجْرَهُ). [رواه البخاري: ٢٢٢٧]

फायदे : आजाद को गुलाम बनाने की दो सूरतें हैं। एक यह कि गुलाम को आजाद करके उसकी आजादी को जाहिर न करे या वैसे ही इनकार कर दे, दूसरा यह आजाद करने के बाद जबरदस्ती उससे खिदमत लेता रहे, चूंकि आजाद अल्लाह का गुलाम है,

इसलिए जो उस पर ज्यादती करेगा, अल्लाह तआला उनका दुश्मन होगा। (औनुलबारी, 3/115)

---

٥٦ - باب: بَيْعُ الْمَيْتَةِ وَالأَصْنَام

बाब 56 : मरे हुए और बूतों का फरोख्त करना।

١٠٤٧ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ عامَ الْفَتْحِ وَهُوَ بِمَكَّةَ: (إِنَّ ٱللهَ وَرَسُولَهُ حَرَّمَ بَيْعَ الْخَمْرِ وَالْمَيْتَةِ والخِنْزِيرِ وَالأَصْنَامِ). فَقِيلَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَرَأَيْتَ شُحُومَ الْمَيْتَةِ، فَإِنَّها يُطْلَى بِها السُّفُنُ، وَيُدْهَنُ بِها الْجُلُودُ، وَيَسْتَصْبِحُ بِها النَّاسُ؟ فَقالَ: (لَا، هُوَ حَرَامٌ). ثُمَّ قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عِنْدَ ذٰلِكَ: (قَاتَلَ ٱللهُ الْيَهُودَ إِنَّ ٱللهَ لَمَّا حَرَّمَ شُحُومَهَا جَمَلُوهُ، ثُمَّ بَاعُوهُ، فَأَكَلُوا ثَمَنَهُ). [رواه البخاري: ٢٢٣٦]

1047 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है, जिस साल मक्का फतह हुआ, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मक्का ही में यह फरमाते सुना, बेशक अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शराब, मुर्दार, खंजीर और बूतों की फरोख्त को हराम करार दिया है। पूछा गया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुरदार जानवर की चरबी के बारे में आप क्या फरमाते हैं? क्योंकि यह कश्तियों को लगायी जाती है और उससे खालें भी चिकनी की जाती हैं और लोग उसे चिरागों में जलाकर रोशनी हासिल करते हैं। आपने फरमाया, नहीं! वह हराम है, फिर आपने फरमाया, अल्लाह यहूदियों को हलाक करे, जब अल्लाह ने चर्बी उन पर हराम कर दी तो उन्होंने उसे पिघलाया, फिर बेचकर उसकी कीमत खायी।

फायदे : इस हदीस से बजाहिर तो यही मालूम होता है कि मुरदार की हर चीज की खरीद व फरोख्त हराम है और उससे नफा उठाने की हुरमत दूसरी हदीसों से मालूम होती हैं। अलबत्ता कोई

नापाक चीजें जिसे पाक करना मुमकिन हो, उसकी खरीद व फरोख्त को अक्सर ओलमा ने जाइज रखा है।

(औनुलबारी, 3/118)

٥٧ - باب: ثَمَنُ الْكَلْبِ

बाब 57 : कुत्ते की कीमत लेना मना है।

١٠٤٨ : عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ نَهى عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ، وَمَهْرِ الْبَغِيِّ، وَحُلْوَانِ الْكَاهِنِ. [رواه البخاري: ٢٢٣٧]

1048 : अबू मसऊद अनसारी रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुत्ते की कीमत, बदकिरदार लौण्डी की कमाई और काहिन (ज्योतिषी) की कमाई से मना फरमाया है।

फायदे : हमारे यहाँ नुजूमी और हाथ देखकर जो खुद-ब-खुद प्रोफेसर कहलाते हैं, उन्हे जो तोहफे और हदिये दिये जाते हैं, वह भी इसी किस्म से हैं। इसी तरह तावीजी कारोबार करने वाले औलमा का तावीज देकर नजराने वसूल करना औलमा किराम का दावत और तबलीग पर दावतें उड़ाना भी काहिन (ज्योतिष) की मिठास में शामिल हैं। (औनुलबारी, 3/121)



किताबे सलम

सलम के बयान में

आइन्दा के किसी चीज की तय किए हुए मिकदार की अदायगी पर तयशुदा मुआवजा पहले वसूल करना सलम या सलफ कहलाता है, इसके लिए जरूरी है कि इस चीज की किस्म, मिकदार, भाव और तारीखे अदायगी खरीद-फरोख्त की मजलीस में ही तय कर ली जाये। यह खरीद-फरोख्त जाइज है।

बाब 1 : फिक्स नाप पर सलम करना।

١ - باب: السَّلَمُ فِي كَيْلٍ مَعْلُومٍ

1049 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ लाये तो उस वक्त लोग मीवा जात में एक या दो साल के वक्त पर सलम किया करते थे, आपने फरमाया जो कोई फलों में सलम करे, उसे चाहिए कि फिक्स नाप और फिक्स वजन के हिसाब से करे, एक रिवायत में इब्ने अब्बास रज़ि. से यूँ है कि वक्त मुकर्रर करके खरीद-फरोख्त करे।

١٠٤٩ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَدِمَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ المَدِينَةَ، وَالنَّاسُ يُسْلِفُونَ فِي الثَّمَرِ العَامَ وَالعَامَيْنِ، فَقَالَ: (مَنْ سَلَّفَ فِي تَمْرٍ، فَلْيُسْلِفْ فِي كَيْلٍ مَعْلُومٍ، وَوَزْنٍ مَعْلُومٍ).

وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ: (إِلَى أَجَلٍ مَعْلُومٍ). [رواه البخاري: ٢٢٣٩]

फायदे : जो चीजें नापकर दी जाती हैं, उनका नाप फिक्स कर दिया जाये और जो चीजें तौल कर दी जाती है, उनका वजन तय कर लिया जाये, इस तरह कुछ चीजें पैमाईश और कुछ गिनती के

हिसाब से दी जाती हैं और उनकी मिकदार और तादाद मुकर्रर कर दी जाये। (औनुलबारी, 3/124)

बाब 2 : उस आदमी से सलम करना, जिसके पास असल माल ही नहीं।

٢ - باب: السَّلَمُ إِلَى مَنْ لَيْسَ عِنْدَهُ أَصْلٌ

1050 : इब्ने अबी औफा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाना और अबू बकर व उमर रज़ि. के दौरे खिलाफत में गेहूँ, जौ, किशमिश और खुजूरों की सलम खरीद-फरोख्त करते थे।

١٠٥٠ : عَنِ ابْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: إِنَّا كُنَّا نُسْلِفُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: فِي ٱلْحِنْطَةِ وَالشَّعِيرِ وَالزَّبِيبِ وَالتَّمْرِ. [رواه البخاري: ٢٢٤٢، ٢٢٤٣]

फायदे : कीमत अदा करने वाला रब्बुस्सलम, चीजे अदा करने वाला मुस्लम इलैह और चीज को मुस्लम फि कहते हैं। सलम खरीद-फरोख्त के जाइज होने के लिए चीज अदा करने वाले के पास चीज का होना जरूरी नहीं। हदीस से भी यही साबित होता है कि सलम खरीद-फरोख्त हर आदमी से की जा सकती है, चाहे जिन्स (चीज) या उसकी असल उसके पास मौजूद हो या न हो।

1051 : इब्ने अबी औफा रज़ि. से ही एक रिवायत में यह है कि हम शाम के किसानों से गेहूँ, जौ और किशमिश में एक फिक्स नाप के हिसाब से एक तय वक्त तक के लिए सलम करते थे। उसने कहा गया, क्या जिसके पास असल माल मौजूद होता था, उससे करते थे? उन्होंने कहा, हम उनसे यह बात न पूछते थे।

١٠٥١ : وَفِي رِوايَةٍ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُسْلِفُ نَبِيطَ أَهْلِ الشَّأْمِ فِي ٱلْحِنْطَةِ وَالشَّعِيرِ وَالزَّبِيبِ، فِي كَيْلٍ مَعْلُومٍ، إِلَى أَجَلٍ مَعْلُومٍ. فقيل له: إِلَى مَنْ كَانَ أَصْلُهُ عِنْدَهُ؟ قَالَ: مَا كُنَّا نَسْأَلُهُمْ عَنْ ذٰلِكَ. [رواه البخاري: ٢٢٤٤، ٢٢٤٥]

किताब : शुफअः

शुफअः के बयान में

शुफअः कहते हैं कि साझेदार या रिश्तेदार का मालिक होने का हक खरीद व फरोख्त के वक्त शरीक या हमसाया को जबरदस्ती चले जाना, जो मुआवजा अदा करके अपने कब्जे में लाया जा सकता है, यह नकल न की जाने वाली जायदाद में होता है।

बाब 1 : शुफअः को अपने साझेदार पर पेश करना।

١ - باب: عَرْضُ الشُّفْعَةِ عَلَى صَاحِبِهَا

1052 : अबू राफेअ रजि. से रिवायत है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुलाम थे, उन्होंने साद बिन अबू वकास रजि. के पास आकर कहा, ऐ साद रजि! तुम मेरे दोनों मकान जो आपके मोहल्ले में हैं, खरीद लो। साद रजि. ने कहा, अल्लाह की कसम! मैं तुम्हें चार हजार से ज्यादा नहीं दूँगा और वो भी किस्तो में। अबू राफेअ रजि. ने कहा, मुझे तो उन दोनों की कीमत पांच सौ अशर्फिया मिलती हैं। अगर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते न सुना होता कि

١٠٥٢ : عَنْ أَبِي رَافِعٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ مَوْلَى النَّبِيِّ ﷺ: أَنَّهُ جَاءَ إِلَى سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ [رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ] فَقَالَ لَه: ٱبْتَعْ مِنِّي بَيْتَيَّ فِي دَارِكَ، فَقَالَ سَعْدٌ: وَٱللهِ لاَ أَزِيدُكَ عَلَى أَرْبَعَةِ آلاَفٍ مُنَجَّمَةٍ، أَوْ مُقَطَّعَةٍ، فَقَالَ أَبُو رَافِعٍ: لَقَدْ أُعْطِيتُ بِهَا خَمْسَمِائَةِ دِينَارٍ، وَلَوْلاَ أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: (الجَارُ أَحَقُّ بِسَقَبِهِ). مَا أَعْطَيْتُكَهَا بِأَرْبَعَةِ آلاَفٍ وَأَنَا أُعْطَى بِهَا خَمْسَمِائَةِ دِينَارٍ. فَأَعْطَاهَا إِيَّاهُ. [رواه البخاري: ٢٢٥٨]

पड़ौसी अपने करीब की वजह से ज्यादा हकदार है तो मैं आपको चार हजार में हरगिज न देता। खसूसन जबकि मुझे पांच सौ दीनार मिल रही है। आखिरकार उन्होंने वो दोनों मकान साद रजि. को ही दे दिये।

फायदे : इमाम बुखारी रज़ि. का नजरीया यह है कि हमसाया के लिए हक्के शुफाअः है, चाहे जायदाद में शरीक न हो। इमाम शाफी के नजदीक सिर्फ उस पड़ौसी के लिए शुफाअः है जो जायदाद में शरीक हो, दूसरे के लिए नहीं। इमाम बुखारी ने उनसे इख्तिलाफ करते हुये मुतल्लक तौर पर हमसाया के लिए हक्के शुफाअः साबित किया, चूनांचे इस हदीस से इमाम बुखारी की ताईद होती है। इससे यह भी मालूम हुआ कि इमाम बुखारी हज़रत इमाम साफी के तकलीद करने वाले न थे।

बाब 2 : कौनसा हमसाया ज्यादा हकदार है।

٢ - باب: أَيُّ الجِوَارِ أَقْرَبُ

1053 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! दो पड़ौसी हैं, उनमें से पहले किसको तोहफा भेजूं? आपने फरमाया: जिसका दरवाजा तुमसे ज्यादा करीब हो।

١٠٥٣ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: [قُلْتُ]: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ لِي جارَيْنِ، فَإِلَى أَيِّهِمَا أُهْدِي؟ قَالَ: (إِلَى أَقْرَبِهِمَا مِنْكِ بَابًا). [رواه البخاري: ٢٢٥٩]

फायदे : इससे इमाम बुखारी ने यह साबित किया है कि अगर कई पड़ौसी हो तो उस पड़ौसी को हक शुफअः मिलेगा जिसका दरवाजा शुफअः की जायदाद के करीब है। (औनुलबारी, 3/131)



किताबुल इजारा

इजारा के बयान में

इजारा लुगत में उजरत (मजदूरी) को कहते हैं और इस्तलाअ में तयशुदा मुआवजे के बदले किसी चीज की जाइज नफा दूसरे के हवाले करना इजारा कहलाता है, इसके जाइज होने में किसी को इख्तिलाफ नहीं।

बाब 1 : इजारा का बयान।

١ - باب: في الإجارة

1054 : अबू मूसा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ, मेरे साथ अशअरी कबीला के दो आदमी थे, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किसी ओहदे की दरख्वास्त की। मैंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझे मालूम नहीं था, यह ओहदा चाहते हैं। आपने फरमाया, हम उस आदमी को हरगिज किसी काम में मामूर नहीं करते जो खुद आमिल (कर्मचारी) बनने का ख्वाहिशमन्द हो।

١٠٥٤ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَقْبَلْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَمَعِي رَجُلاَنِ مِنَ الأَشْعَرِيِّينَ، فَقُلْتُ: ما عَلِمْتُ أَنَّهُمَا يَطْلُبَانِ العَمَلَ، فَقَالَ: (لَنْ - أَوْ: لاَ - نَسْتَعْمِلُ عَلَى عَمَلِنَا مَنْ أَرَادَهُ). [رواه البخاري: ٢٢٦١]

फायदे : आमतौर पर किसी काम की दरख्वास्त मजदूरी लेने के लिए होती है। इससे इजारा साबित होता है। दूसरे जिन्दगी गुजारने के जरीये को छोड़कर नौकरी की दरख्वास्त देना इन्सान की हिर्स

और लालच की निशानी है। लिहाजा तलब करने वाले को कोई मनसब देना जाइज नहीं। (औनुलबारी, 3/133)

बाब 2 : किरात पर बकरियां चराना।

٢ - باب: رَعْيُ الْغَنَمِ عَلَى قَرَارِيطَ

1055 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अल्लाह तआला ने कोई नबी ऐसा नहीं भेजा जिसने बकरियाँ न चराई हो। सहाबा किराम रज़ि. ने अर्ज किया, क्या आपने भी? फरमाया, हां! मैं भी कुछ किरात (रूपये) के ऐवज अहले मक्का की बकरियाँ चराया करता था।

١٠٥٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (ما بَعَثَ ٱللهُ نَبِيًّا إِلاَّ رَعَى الْغَنَمَ). فَقَالَ أَصْحَابُهُ: وَأَنْتَ؟ فَقَالَ: (نَعَم، كُنْتُ أَرْعَاهَا عَلَى قَرَارِيطَ لأَهْلِ مَكَّةَ). [رواه البخاري: ٢٢٦٢]

फायदे : हर पैगम्बर के बकरियां चराने में यह हिकमत है कि इससे दूसरों पर रहम और मेहरबानी करने की आदत पड़ती है जो इन्सानों की निगहबानी के लिए बहुत जरूरी है।

(औनुलबारी, 3/134)

बाब 3 : असर से रात तक मजदूरी लेना।

٣ - باب: الإِجارَةُ مِنَ الْعَصْرِ إِلَى اللَّيْلِ

1056 : अबू मूसा रज़ि. से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, मुसलमान और यहूद व नसारा की मिसाल उस आदमी जैसी है, जिसने चन्द लोगों को मजदूरी पर लगाया, ताकि वह

١٠٥٦ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَثَلُ المُسْلِمِينَ وَالْيَهُودِ وَالنَّصَارَى، كَمَثَلِ رَجُلٍ ٱسْتَأْجَرَ قَوْمًا، يَعْمَلُونَ لَهُ عَمَلًا يَوْمًا إِلَى اللَّيْلِ، عَلَى أَجْرٍ مَعْلُومٍ فَعَمِلُوا لَهُ إِلَى نِصْفِ النَّهَارِ، فَقَالُوا: لاَ حَاجَةَ لَنَا إِلَى أَجْرِكَ

الَّذِي شَرَطْتَ لَنَا، وَمَا عَمِلْنَا بَاطِلٌ، فَقَالَ لَهُمْ: لاَ تَفْعَلُوا، أَكْمِلُوا بَقِيَّةَ عَمَلِكُمْ، وَخُذُوا أَجْرَكُمْ كَامِلًا، فَأَبَوْا وَتَرَكُوا، وَاسْتَأْجَرَ أَجِيرَيْنِ بَعْدَهُمْ، فَقَالَ لَهُمَا: أَكْمِلاَ بَقِيَّةَ يَوْمِكُمَا هٰذَا، وَلَكُمَا الَّذِي شَرَطْتُ لَهُمْ مِنَ الأَجْرِ، فَعَمِلُوا، حَتَّى إِذَا كَانَ حِينَ صَلاَةِ الْعَصْرِ قَالاَ: لَكَ مَا عَمِلْنَا بَاطِلٌ، وَلَكَ الأَجْرُ الَّذِي جَعَلْتَ لَنَا فِيهِ. فَقَالَ لَهُمَا: أَكْمِلاَ بَقِيَّةَ عَمَلِكُمَا، فَإِنَّ مَا بَقِيَ مِنَ النَّهَارِ شَيْءٌ يَسِيرٌ، فَأَبَيَا، وَاسْتَأْجَرَ قَوْمًا أَنْ يَعْمَلُوا لَهُ بَقِيَّةَ يَوْمِهِمْ، فَعَمِلُوا بَقِيَّةَ يَوْمِهِمْ حَتَّى غَابَتِ الشَّمْسُ، وَاسْتَكْمَلُوا أَجْرَ الْفَرِيقَيْنِ كِلَيْهِمَا، فَذٰلِكَ مَثَلُهُمْ وَمَثَلُ مَا قَبِلُوا مِنْ هٰذَا النُّورِ. [رواه البخاري: ٢٢٧١]

दिन भर एक तयशुदा मजदूरी पर उसका काम करें, मगर दोपहर तक काम करके कहने लगे, हमें तेरी तय की हुई मजदूरी की कोई जरूरत नहीं है। अब तक जो हमने काम किया, बेकार है। उस आदमी ने कहा, अब तुम ऐसा न करो, बाकी काम पूरा करके अपनी मजदूरी ले लेना। लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया और उस काम को छोड़ दिया। उस आदमी ने उनके बाद दूसरे लोगों को मजदूरी पर लगाकर कहा कि बाकी दिन का काम पूरा कर दो और तुम्हें वही मिलेगा जो मैंने उनसे तय किया था। चूनांचे उन्होंने काम शुरू किया, मगर असर के वक़्त कहने लगे हमने जो काम किया है वह बेकार गया और तयशुदा मजदूरी भी तुझे मुबारक हो। उस आदमी ने कहा कि बाकी काम पूरा कर दो, अब तो दिन भी थोड़ा सा बाकी है। लेकिन उन्होंने भी इनकार कर दिया। फिर उस आदमी ने बाकी दिन में काम करने के लिए दूसरे लोगों को मजदूरी पर लगाया, जिन्होंने बाकी काम सूरज डूबने तक कर लिया और उन्होंने दोनों गिरोहों की मजदूरी ले ली। बस यही मिसाल है, मुसलमानों की और उस नूर हिदायत की जिसे उन्होंने कबूल किया।

फायदे : हज़रत इब्ने उमर रज़ि. की रिवायत में है कि "मालिक ने

सुबह से दोपहर तक यहूदियों को और दोपहर से असर एक ईसाईयों को मजदूर रखा।" इन दोनों हदीस में बजाहिर इख्तलाफ है। दर हकीकत यह अलग अलग किस्से हैं, लिहाजा इनमें कोई इख्तलाफ नहीं है। (औनुलबारी, 3/136)

٤ - باب: مَن اسْتَأْجَرَ أَجِيرًا فَتَرَكَ أَجْرَهُ فَعَمِلَ فِيهِ الْمُسْتَأْجِرُ فَزَادَ

बाब 4 : एक आदमी मजदूरी छोड़कर चल दे और जिसने मजदूर लगाया था वह उसकी मजदूरी में मेहनत करके उसे बढ़ाये (तो वह कौन लेगा?)

١٠٥٧ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (ٱنْطَلَقَ ثَلاثَةُ رَهْطٍ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، حَتَّى أَوَوُا الْمَبِيتَ إِلَى غَارٍ فَدَخَلُوهُ، فَٱنْحَدَرَتْ صَخْرَةٌ مِنَ الْجَبَلِ فَسَدَّتْ عَلَيْهِمُ الْغَارَ، فَقَالُوا: إِنَّهُ لا يُنْجِيكُمْ مِنْ هٰذِهِ الصَّخْرَةِ إِلاَّ أَنْ تَدْعُوا ٱللهَ بِصَالِحِ أَعْمَالِكُمْ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْهُمْ: اللَّهُمَّ كَانَ لِي أَبَوَانِ شَيْخَانِ كَبِيرَانِ، وَكُنْتُ لاَ أَغْبِقُ قَبْلَهُمَا أَهْلًا وَلاَ مالًا، فَنَاءَ بِي فِي طَلَبِ شَيْءٍ يَوْمًا، فَلَمْ أُرِحْ عَلَيْهِمَا حَتَّى نَامَا، فَحَلَبْتُ لَهُمَا غَبُوقَهُمَا فَوَجَدْتُهُمَا نَائِمَيْنِ، وَكَرِهْتُ أَنْ أَغْبِقَ قَبْلَهُمَا أَهْلًا أَوْ مالًا، فَلَبِثْتُ وَالْقَدَحُ عَلَى يَدَيَّ أَنْتَظِرُ ٱسْتِيقَاظَهُمَا حَتَّى بَرَقَ الْفَجْرُ، فَٱسْتَيْقَظَا فَشَرِبَا غَبُوقَهُمَا، اللَّهُمَّ إِنْ

1057 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुये सुना, तुमसे पहले जमाने में तीन आदमी एक साथ रवाना हुये। रात को पहाड़ की एक गुफा में घुस गये, जब सब गुफा में चले गये तो एक पत्थर पहाड़ से लुड़ककर आया, जिसने गुफा का मुंह बन्द कर दिया, उन तीनों ने कहा, कोई चीज तुम्हें इस पत्थर से रिहाई नहीं दिला सकती। मगर एक जरीया है कि अपनी अपनी नेकियों को बयान करके अल्लाह से दुआ करें। चूनांचे उनमें से एक ने कहा:

كُنْتُ فَعَلْتُ ذٰلِكَ ٱبْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا مَا نَحْنُ فِيهِ مِنْ هٰذِهِ الصَّخْرَةِ، فَٱنْفَرَجَتْ شَيْئًا لَا يَسْتَطِيعُونَ الخُرُوجَ)، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (وَقَالَ الآخَرُ: اللَّهُمَّ كَانَتْ لِي بِنْتُ عَمٍّ كَانَتْ أَحَبَّ النَّاسِ إِلَيَّ، فَأَرَدْتُهَا عَنْ نَفْسِهَا فَٱمْتَنَعَتْ مِنِّي، حَتَّى أَلَمَّتْ بِهَا سَنَةٌ مِنَ السِّنِينَ، فَجَاءَتْنِي فَأَعْطَيْتُهَا عِشْرِينَ وَمِائَةَ دِينَارٍ عَلَى أَنْ تُخَلِّيَ بَيْنِي وَبَيْنَ نَفْسِهَا، فَفَعَلَتْ حَتَّى إِذَا قَدَرْتُ عَلَيْهَا قَالَتْ: لَا أُحِلُّ لَكَ أَنْ تَفُضَّ الخَاتَمَ إِلَّا بِحَقِّهِ، فَتَحَرَّجْتُ مِنَ الوُقُوعِ عَلَيْهَا، فَٱنْصَرَفْتُ عَنْهَا وَهِيَ أَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ وَتَرَكْتُ ٱلذَّهَبَ الَّذِي أَعْطَيْتُهَا، اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتُ فَعَلْتُ ذٰلِكَ ٱبْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَٱفْرُجْ عَنَّا مَا نَحْنُ فِيهِ، فَٱنْفَرَجَتِ الصَّخْرَةُ غَيْرَ أَنَّهُمْ لَا يَسْتَطِيعُونَ الخُرُوجَ مِنْهَا)، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (وَقَالَ الثَّالِثُ: اللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْتَأْجَرْتُ أُجَرَاءَ فَأَعْطَيْتُهُمْ أَجْرَهُمْ غَيْرَ رَجُلٍ وَاحِدٍ تَرَكَ الَّذِي لَهُ وَذَهَبَ، فَثَمَّرْتُ أَجْرَهُ حَتَّى كَثُرَتْ مِنْهُ الأَمْوَالُ، فَجَاءَنِي بَعْدَ حِينٍ، فَقَالَ: يَا عَبْدَ ٱللهِ أَدِّ إِلَيَّ أَجْرِي، فَقُلْتُ لَهُ: كُلُّ مَا تَرَى مِنْ أَجْرِكَ، مِنَ الإِبِلِ وَالبَقَرِ وَالغَنَمِ وَالرَّقِيقِ، فَقَالَ: يَا عَبْدَ ٱللهِ

ऐ अल्लाह! मेरे वालदेन बहुत बूढ़े थे। मैं उनसे पहले किसी को दूध नहीं पिलाता था, न अपने बाल-बच्चों को और न ही लौण्डी, गुलामों को। एक दिन किसी चीज की तलाश में मुझे इतनी देर हो गयी कि जब मैं उनके पास आया तो वह सो गये थे तो मैंने दूध दूहा और उसका बर्तन अपने हाथ में उठा लिया और मुझे यह सख्त नागवार था कि उनसे पहले मैं अपने बीवी-बच्चों या लौण्डी गुलामों को दूध पिलाऊं। लिहाजा मैं प्याला हाथ में लेकर उनके जागने होने का इन्तिजार करता रहा, जब सुबह हुयी तो दोनों ने जागकर दूध पीया। ऐ अल्लाह! अगर मैंने यह काम खालिस तेरी रजामन्दी के लिए किया हो तो हमको इस मुसीबत से निजात दे, चूनांचे यह पत्थर थोड़ा-सा अपनी जगह से हट गया। लेकिन वह उससे निकल न सकते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अब दूसरा आदमी यूँ कहने लगा, ऐ अल्लाह! मेरी चचा

لاَ تَسْتَهْزِئْ بِي، فَقُلْتُ: إِنِّي لاَ أَسْتَهْزِئُ بِكَ، فَأَخَذَهُ كُلَّهُ فَاسْتَاقَهُ فَلَمْ يَتْرُكْ مِنْهُ شَيْئًا، اللَّهُمَّ فَإِنْ كُنْتُ فَعَلْتُ ذٰلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ عَنَّا مَا نَحْنُ فِيهِ، فَانْفَرَجَتِ الصَّخْرَةُ فَخَرَجُوا يَمْشُونَ). [رواه البخاري: ٢٢٧٢]

की एक बेटी थी, जो सबसे ज्यादा मुझे प्यारी थी। मैंने उससे बुरे काम की ख़्वाहिश की, लेकिन वह राज़ी न हुई, एक साल अकाल पड़ा तो मेरे पास आयी। मैंने उसको एक सौ बीस अशर्फ़ियां इस शर्त पर दीं कि मुझे वह बुरा काम करने दे। वह राज़ी हो गई, लेकिन जब मुझे उस पर कुदरत हासिल हुई तो कहने लगी कि मैं तुझे नाहक़ अंगूठी में नगीना डालने की इजाज़त नहीं देती। यह सुनकर मैंने भी उस बात को गुनाह समझा और उससे अलग हो गया, हालांकि वह सबसे ज़्यादा प्यारी थी और मैंने जो सोना उसे दिया था, वह भी छोड़ दिया! ऐ अल्लाह! अगर मैंने यह काम महज तेरी रजामन्दी के लिए किया हो तो जिस मुसीबत में हम मुब्तला हैं, उसको दूर कर दे। चूनांचे वह पत्थर थोड़ा-सा और सरक गया। मगर वह उससे निकल नहीं सकते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अब तीसरे आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह! मैंने कुछ लोगों को मज़दूरी पर लगाया था और उनकी मज़दूरी भी दी थी, लेकिन एक आदमी अपनी मज़दूरी के बग़ैर चला गया। मैंने उसकी रक़म को काम में लगाया, जिससे बहुतसा माल हासिल हुआ। एक मुद्दत के बाद वह मज़दूर आया और कहने लगा, ऐ अल्लाह के बन्दे! मुझे मेरी मज़दूरी दे। मैंने कहा, तू यहां जितने ऊंट, गाय, बकरियां देख रहा है, यह सब के सब तेरी मज़दूरी के हैं। उसने कहा, ऐ अल्लाह के बन्दे! मुझसे मज़ाक़ न कर। मैंने कहा, ऐसी कोई बात नहीं, मैं तेरे साथ मज़ाक़ नहीं कर रहा हूँ। तब उसने तमाम चीज़ें लीं और हांककर ले गया और उसमें से कुछ भी न छोड़ा। ऐ अल्लाह! अगर मैंने

यह काम सिर्फ तेरी रजामन्दी के लिए किया था तो यह मुसीबत हम से टाल दे, जिसमें हम मुब्तला हैं। चूनांचे वह पत्थर बिलकुल हट गया और वह उससे बाहर निकलकर मजे से चलने लगे।

फायदे : इमाम बुखारी के इस्तदलाल पर यह ऐतराज किया गया है कि तीसरे आदमी पर तमाम साजो सामान का देना वाजिब न था, बल्कि उसने बतौर अहसान के उसको दिया था।

 (औनुलबारी, 3/146)

बाब 5 : झाड़फूंक करने से जो मजदूरी दी जाये।

٥ - باب: مَا يُعْطَى فِي الرُّقْيَةِ

1058 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ सहाबा किराम रज़ि. किसी सफर में गये। जाते जाते अरब के एक कबीले के पास पड़ाव किया और चाहा कि अहले कबीला हमारी मेहमानी करे, मगर उन्होंने इससे इनकार कर दिया। इसी दौरान उस कबीले के सरदार को किसी जहरीली चीज ने डस लिया। उन लोगों ने हर तरह की सूरत अपनाई, मगर कोई इलाज फायदेमन्द न हुआ। किसी ने कहा तुम उन लोगों के पास जाओ, जो यहां ठहरे हुये हैं, शायद

١٠٥٨ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ٱنْطَلَقَ نَفَرٌ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي سَفْرَةٍ سَافَرُوهَا، حَتَّى نَزَلُوا عَلَى حَيٍّ مِنْ أَحْيَاءِ الْعَرَبِ، فَٱسْتَضَافُوهُمْ فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمْ، فَلُدِغَ سَيِّدُ ذٰلِكَ الْحَيِّ فَسَعَوْا لَهُ بِكُلِّ شَيْءٍ لا يَنْفَعُهُ شَيْءٌ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَوْ أَتَيْتُمْ هٰؤُلاَءِ الرَّهْطَ الَّذِينَ نَزَلُوا، لَعَلَّهُ أَنْ يَكُونَ عِنْدَ بَعْضِهِمْ شَيْءٌ، فَأَتَوْهُمْ فَقَالُوا: يَا أَيُّهَا الرَّهْطُ، إِنَّ سَيِّدَنَا لُدِغَ، وَسَعَيْنَا لَهُ بِكُلِّ شَيْءٍ لاَ يَنْفَعُهُ، فَهَلْ عِنْدَ أَحَدٍ مِنْكُمْ مِنْ شَيْءٍ؟ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: نَعَمْ، وَاللهِ إِنِّي لأَرْقِي، وَلٰكِنْ وَاللهِ لَقَدِ ٱسْتَضَفْنَاكُمْ فَلَمْ تُضَيِّفُونَا، فَمَا أَنَا بِرَاقٍ لَكُمْ حَتَّى تَجْعَلُوا لَنَا جُعْلًا، فَصَالَحُوهُمْ عَلَى قَطِيعٍ مِنَ الْغَنَمِ، فَانْطَلَقَ يَتْفُلُ عَلَيْهِ وَيَقْرَأُ: ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾. فَكَأَنَّمَا نُشِطَ مِنْ عِقَالٍ،

فَانْطَلَقَ يَمْشِي وَما بِهِ قَلَبَةٌ. قَالَ: فَأَوْفَوْهُمْ جُعْلَهُمُ الَّذِي صَالَحُوهُمْ عَلَيْهِ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: اقْسِمُوا، فَقَالَ الَّذِي رَقَى: لاَ تَفْعَلُوا حَتَّى نَأْتِيَ النَّبِيَّ ﷺ فَنَذْكرَ لَهُ الَّذِي كانَ، فَنَنْظُرَ ما يَأْمُرُنَا، فَقَدِمُوا عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَذَكَرُوا لَهُ، فَقَالَ: (وَما يُدْرِيكَ أَنَّهَا رُقْيَةٌ). ثُمَّ قَالَ: (قَدْ أَصَبْتُمْ، اقْسِمُوا، وَاضْرِبُوا لِي مَعَكُمْ سَهْمًا). فَضَحِكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٢٢٧٦]

उनमें से किसी के पास कोई इलाज हो। चूनांचे वह लोग सहाबा रज़ि. के पास आये और कहने लगे, ऐ लोगों! हमारे सरदार को किसी जहरीली चीज ने डस लिया है और हमने हर तरह की सूरत अपनाई है। मगर कुछ फायदा नहीं हुआ। क्या तुममें से किसी के पास कोई चीज है? उनमें से एक ने कहा, अल्लाह की कसम! मैं झाड़-फूंक करता हूँ, लेकिन तुम लोगों से हमने अपनी मेहमानी की ख्वाहिश की थी तो तुमने उसे रद्द कर दिया तो मैं भी तुम्हारे लिये झाड़-फूंक न करूंगा। जब तक तुम हमारे लिए कुछ मजदूरी न मुकर्रर करो, आखिर उन्होंने चन्द बकरियों की मजदूरी पर उनको राजी कर लिया। तब सहाबा रज़ि. में से एक आदमी गया और सूरा फातिहा पढ़कर दम करने लगा। चूनांचे वह आदमी ऐसा सेहतयाब हुआ, जैसे उसके बन्द खोल दिये गये हो और उठकर चलने फिरने लगा। ऐसा मालूम होता था कि उसे कोई बीमारी न थी और उन लोगों ने उनकी तयशुदा मजदूरी दे दी। सहाबा रज़ि. आपस में कहने लगे, उसे तकसीम कर लो, लेकिन मंतर पढ़ने वाले ने कहा, अभी तकसीम न करो, यहां तक कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में पहुंचकर इस वाकिया का खुलासा न करें और देखे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बारे में क्या हुक्म देते हैं? चूनांचे वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुये और आपसे यह वाक्या बयान किया गया, आपने फरमाया

तुमको कैसे मालूम हुआ कि सूरा फातिहा पढ़ने से झाड़-फूंक की जाती है? फिर फरमाया, तुमने ठीक किया। उसे तकसीम कर लो, बल्कि अपने साथ मेरा हिस्सा भी रखो। यह कह कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुस्करा दिये।

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि कुरआनी आयतों को झाड़-फूंक या दम के तौर पर पढ़ना जाईज है। इस तरह वह मंतर जिनके अलफाज कुरआन व हदीस में नहीं आये, लेकिन उनका मतलब साफ है, और कुरआन व हदीस के खिलाफ भी नहीं। उन्हें अमल में लाना भी जाइज है। (औनुलबारी, 3/144)

बाब 6 : नर को मादा के साथ जुफ्ती (सेक्स) कराने की मजदूरी।

٦ - باب: عَسْبُ الفَحْلِ

1059 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है। उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुफ्ती कराने का मुआवजा लेने से मना किया है।

١٠٥٩ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ عَسْبِ الْفَحْلِ. [رواه البخاري: ٢٢٨٤]

फायदे : यह मजदूरी नाजाइज है। हां, उधार के तौर पर नर जानवर का देना जाइज है। इसी तरह शर्त लगाये बगैर मादा वाला नर वाले को हदीया के तौर पर कुछ दे तो उसे लेने में भी कोई बुराई नहीं है। (औनुलबारी, 3/146)



किताबुलहवालात
हवालों के बयान में

हवाला का लुगवी मायना फैर देना है। इस्तलाहे फुक्हा में किसी के कर्ज को दूसरों की तरफ फैर देना हवाला कहलाता है। पहला मकरूज मुहय्यल (जिसे कर्ज दिया गया) कहलाता है। इस मामले के लिए मुहय्यल की रजामन्दी शर्त अव्वल है। जिसकी तरफ कर्ज फैरा गया है, उसे मुहाल अलैह कहा जाता है।

बाब 1 : जब किसी मालदार पर हवाला किया जाये तो उस मालदार को वापिस कर देने का हक नहीं।

١ - باب: إذَا أحَالَ عَلَى مَلِيءٍ فَلَيْسَ لَهُ رَدٌّ

1060 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मालदार का कर्ज अदा करने में देर करना जुल्म है और अगर तुममें से कोई किसी मालदार के पीछे लगा दिया जाये (यानी फलां शख़्स कर्ज अदा करेगा) तो पीछे लग जाना चाहिए।

١٠٦٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَطْلُ الْغَنِيِّ ظُلْمٌ، وَإِذَا أُتْبِعَ أَحَدُكُمْ عَلَى مَلِيٍّ فَلْيَتْبَعْ). [رواه البخاري: ٢٢٨٨]

फायदे : पीछे लग जाने का मतलब यह है कि कर्ज लेने वाले को यह हवाला कुबूल करके असल मकरूज (जिस पर कर्ज है) का पीछा छोड़ देना चाहिए, इससे यह भी मालूम हुआ कि इस मामले में मुहाल अलैह की रजामन्दी जरूरी नहीं है। (औनुलबारी, 3/151)

बाब 2 : जब कोई शख्स मय्यत के जिम्मे के कर्ज को दूसरे के हवाले कर दे तो जाइज है।

٢ - باب: إِذَا أَحَالَ دَيْنَ المَيِّتِ عَلَى رَجُلٍ جَازَ

1061 : सलमा बिन उकवा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे थे कि इतने में एक जनाजा लाया गया, लोगों ने अर्ज किया, आप उसकी नमाज़ पढ़ा दें। आपने पूछा, उस पर कुछ कर्ज तो न था? लोगों ने कहा, नहीं! फिर आपने पूछा, उसने कुछ माल छोड़ा है? लोगों ने कहा: नहीं! तब आपने उसकी नमाज़े जनाजा अदा की। थोड़ी देर के बाद एक दूसरा जनाजा लाया गया। लोगों ने अर्ज किया: ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! इसकी भी नमाज़े जनाजा पढ़ायें, आपने पूछा : इस पर कुछ कर्ज है? कहा गया : हाँ। फिर आपने पूछा: क्या इसने कोई माल छोड़ा है? लोगों ने कहा, तीन अशर्फियां! तो आपने उसकी भी नमाज़ जनाजा पढ़ा दी। उसके बाद तीसरा जनाजा लाया गया, लोगों ने अर्ज किया : इसकी भी नमाज़े जनाजा पढ़ा दें। आपने फरमाया : इसने कुछ माल छोड़ा है? लोगों ने अर्ज किया : नहीं! फिर आपने फरमाया: इस पर कुछ कर्ज है? लोगों

١٠٦١ : عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ إِذْ أُتِيَ بِجَنَازَةٍ، فَقَالُوا: صَلِّ عَلَيْهَا، فَقَالَ: (هَلْ عَلَيْهِ دَيْنٌ؟). قَالُوا: لاَ، قَالَ: (فَهَلْ تَرَكَ شَيْئًا). قَالُوا: لاَ، فَصَلَّى عَلَيْهِ، ثُمَّ أُتِيَ بِجَنَازَةٍ أُخْرَى، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ! صَلِّ عَلَيْهَا، قَالَ: (هَلْ عَلَيْهِ دَيْنٌ؟). قِيلَ: نَعَمْ، قَالَ: (فَهَلْ تَرَكَ شَيْئًا؟). قَالُوا: ثَلاَثَةَ دَنَانِيرَ فَصَلَّى عَلَيْهَا. ثُمَّ أُتِيَ بِالثَّالِثَةِ، فَقَالُوا: صَلِّ عَلَيْهَا، قَالَ: (هَلْ تَرَكَ شَيْئًا؟). قَالُوا: لاَ، قَالَ: (فَهَلْ عَلَيْهِ دَيْنٌ؟). قَالُوا ثَلاَثَةُ دَنَانِيرَ، قَالَ: (صَلُّوا عَلَى صَاحِبِكُمْ). قَالَ أَبُو قَتَادَةَ: صَلِّ عَلَيْهِ يَا رَسُولَ ٱللهِ وَعَلَيَّ دَيْنُهُ، فَصَلَّى عَلَيْهِ. [رواه البخاري: ٢٢٨٩]

ने कहा, तीन अशर्फिया कर्ज हैं। आपने फरमाया : फिर तुम खुद ही अपने साथी का जनाजा पढ़ लो। अबू कतादा रज़ि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप इसकी नमाज़े जनाजा पढ़ा दीजिए। इसका कर्ज मेरे जिम्मे है। तब आपने उसकी नमाज़े जनाजा पढ़ायी।

फायदे : इससे मालूम हुआ कि कर्ज का मामला इन्तहाई खतरनाक है और उसे सख्त जरूरत के वक्त ही लेना चाहिए और जब भी गुंजाईश हो, उसे अदा कर देना चाहिए। (औनुलबारी, 3/153)

٣ - باب: قَوْلُ الله: ﴿وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَآتُوهُمْ نَصِيبَهُمْ﴾

बाब 3 : फरमाने इलाही : जिनसे तुमने कसमें उठाकर कौल व इकरार किया है, उन्हें उनका हिस्सा दो।"

١٠٦٢ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ الله عَنْهُ أَنَّهُ قِيلَ لَهُ: أَبَلَغَكَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (لاَ حِلْفَ فِي الإِسْلاَمِ). فَقَالَ: قَدْ حَالَفَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ قُرَيْشٍ وَالأَنْصَارِ فِي دَارِي. [رواه البخاري: ٢٢٩٤]

1062 : अनस रज़ि. से रिवायत है कि उनसे पूछा गया, क्या आपको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हदीस पहुंची है कि इस्लाम में मुआहदा (भाई चारा) नहीं है। उन्होंने जवाब दिया बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे घर में बैठकर कुरैश और अनसार में मुआहदा (भाईचारा) कर दिया था।

फायदे : इमाम बुखारी इस हदीस को किताबुल किफाला के तहत लाये हैं, जबकि इस किताब के लेखक ने इसका जिक्र नहीं किया है। इब्तदाये इस्लाम में इस मुआहदा भाईचारा की बिना पर एक को दूसरे का वारिस बनाया जाता था। अब विरासत को खत्म करके सिर्फ आपस की मदद की बुनियाद पर इस मुआहदा को बरकरार रखा गया है। चूनांचे "ला हिलफा फिल इस्लाम" में हक्के विरासत की नफी है।

बाब 4 : जो शख़्स मय्यत की तरफ से कर्ज का जिम्मेदार हो, उसे पलटने की इजाजत नहीं।

٤ - باب: مَنْ تَكَفَّلَ عَنْ مَيِّتٍ دَيْناً فَلَيْسَ لَهُ أَنْ يَرْجِعَ

1063 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अगर बहरेन का माल आ गया तो मैं तुम्हें इस कद्र दूंगा, लेकिन बहरेन के माल से पहले ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात हो गई। फिर जब बहरेन का माल आया तो अबू बकर सिद्दीक रज़ि. ने ऐलान किया, जिस शख़्स से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ वादा फरमाया हो या आप पर किसी का कर्ज हो तो वह मेरे पास आये। चूनांचे मैंने उनसे जाकर कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे इतना देने का वादा फरमाया था। अबू बकर सिद्दीक रज़ि. ने दोनों हाथ भरकर मुझे दिये और फरमाया कि इसे शुमार करो (गिनो)। मैंने शुमार किया तो पांच सौ दिरहम थे। फिर उन्होंने फरमाया, इससे दोगुना और ले लो।

١٠٦٣ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَوْ قَدْ جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ قَدْ أَعْطَيْتُكَ هٰكَذَا وَهٰكَذَا). فَلَمْ يَجِئْ مَالُ الْبَحْرَيْنِ حَتَّى قُبِضَ النَّبِيُّ ﷺ، فَلَمَّا جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ أَمَرَ أَبُو بَكْرٍ فَنَادَى: مَنْ كَانَ لَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ عِدَةٌ، أَوْ دَيْنٌ فَلْيَأْتِنَا، فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِي كَذَا وَكَذَا، فَحَثَى لِي حَثْيَةً، وَقَالَ: عُدَّهَا فَعَدَدْتُهَا، فَإِذَا هِيَ خَمْسُمِائَةٍ وَقَالَ: خُذْ مِثْلَيْهَا. [رواه البخاري: ٢٢٩٦]

फायदे : हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ि. जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खलीफा मुकर्रर हुये तो वो आपके तमाम मामलों व मुआहदात (वादों) के जिम्मेदार ठहरे, लिहाजा उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तमाम वादों को पूरा

करना जरूरी हुआ। चूनांचे उन्होंने उन वादों को पूरा किया, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुद भी वादा पूरा करने के पाबन्द थे। (औनुलबारी, 3/155)



किताबुलवकाला

वकालत के बयान में

लुगवी तौर पर वकालत का मायना सुपुर्द करना है। शरीअत में किसी आदमी का दूसरे को अपना काम सुपुर्द करना वकालत कहलाता है। बशर्ते कि वह दूसरा इस काम को बजा लाने की ताकत और सलाहियत रखता हो। सुपुर्द करने वाले को मुवाकिल और जिसे काम सौंपा जाये, उसे वकील कहते हैं।

बाब 1 : एक शरीक का दूसरे शरीक के लिए वकील बनना।

١ - باب: فِي وَكالَةِ الشَّرِيكِ

1064 : उकबा बिन आमिर रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें कुछ बकरियां दी, ताकि वह आपके सहाबा रज़ि. में तकसीम कर दी जायें। तकसीम के बाद बकरी का एक बच्चा रह गया, जिसका उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जिक्र किया तो आपने फरमाया, तू खुद ही इसकी कुरबानी कर दे।

١٠٦٤ : عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عامِرٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَعْطَاهُ غَنَمًا يَقْسِمُهَا عَلَى صَحَابَتِهِ، فَبَقِيَ عَتُودٌ، فَذَكَرَهُ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: (ضَحِّ بِهِ أَنْتَ). [رواه البخاري: ٢٣٠٠]

फायदे : हज़रत उकबा बिन आमिर रज़ि. का भी इन कुरबानी के जानवरों में हिस्सा था और वह दीगर सहाबा किराम रज़ि. के साथ इनमें शरीक थे। फिर इन्हीं को दूसरे हिस्सेदारों के लिए बांटने का हुक्म दिया गया। (औनुलबारी, 3/157)

बाब 2 : जब चरवाहा या वकील किसी बकरी को देखे कि मर रही है तो उसे जिब्ह कर दे या कोई चीज जो खराब हो रही हो तो उसे ठीक कर दे।

٢ - باب: إِذَا أَبْصَرَ الرَّاعِي أَوِ الْوَكِيلُ شَاةً تَمُوتُ أَوْ شَيْئاً يَفْسُدُ ذَبَحَ أَوْ أَصْلَحَ مَا يَخَافُ عَلَيْهِ الْفَسَادَ

1065 : काब बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हमारे पास बकरियां थी, जो सलआ पहाड़ पर चरा करती थी। हमारी एक लौण्डी ने देखा कि एक बकरी मर रही है तो उसने एक पत्थर तोड़कर उससे बकरी को जिब्ह कर दिया। काब रज़ि. ने लोगों से कहा कि उसका गोश्त मत खावो जब तक कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से खुद पूछूं या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास किसी को पूछने के लिए भेजूं। फिर उसने खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा या कासिद भेजा तो आपने उसके खाने का हुक्म दिया।

١٠٦٥ : عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ كَانَتْ لَهُمْ غَنَمٌ تَرْعَى بِسَلْعٍ، فَأَبْصَرَتْ جَارِيَةٌ لَنَا بِشَاةٍ مِنْ غَنَمِنَا مَوْتًا، فَكَسَرَتْ حَجَرًا فَذَبَحَتْهَا بِهِ، فَقَالَ لَهُمْ: لَا تَأْكُلُوا حَتَّى أَسْأَلَ النَّبِيَّ ﷺ عَنْ ذٰلِكَ، أَوْ أُرْسِلَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ مَنْ يَسْأَلُهُ، وَأَنَّهُ سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ عَنْ ذَاكَ، أَوْ أَرْسَلَ، فَأَمَرَهُ بِأَكْلِهَا.

[رواه البخاري: ٢٣٠٤]

फायदे : हदीस में अगरचे चरवाहे का जिक्र है लेकिन वकील का उस पर अन्दाजा लगाया जा सकता है, क्योंकि उन दोनों को समझ कर अमानतदार समझकर, अमानत उनके हवाले की जाती है, इससे मालूम हुआ कि ऐसी सूरत में चरवाहे या वकील पर कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। (औनुलबारी, 3/158)

बाब 3 : कर्ज अदा करने के लिए वकील बनाना।

٣ - باب: الْوَكَالَةُ فِي قَضَاءِ الدُّيُونِ

1066 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और बड़े सख्त अलफाज में आपसे अपना कर्ज मांगा, इस पर सहाबा किराम रज़ि. ने उसे मारने का इरादा किया, मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उसको छोड़ दो। हक वाला ऐसी बातें कर सकता है। फिर आपने फरमाया, उसे उतनी ही उम्र का ऊंट दे दो, जिस उम्र का उसका ऊंट था। लोगों ने कहा, उस उम्र का ऊंट नहीं, बल्कि उससे बेहतर उम्र के ऊंट मौजूद हैं। आपने फरमाया : वही दे दो, क्योंकि तुममें अच्छा वह है जो खुबी (अच्छाई) के साथ कर्ज अदा करे।

١٠٦٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ ﷺ يَتَقَاضَاهُ فَأَغْلَظَ، فَهَمَّ بِهِ أَصْحَابُهُ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (دَعُوهُ، فَإِنَّ لِصَاحِبِ الْحَقِّ مَقَالًا). ثُمَّ قَالَ: (أَعْطُوهُ سِنًّا مِثْلَ سِنِّهِ). قَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ! لا نَجِدُ إِلَّا أَمْثَلَ مِنْ سِنِّهِ، فَقَالَ: (أَعْطُوهُ، فَإِنَّ مِنْ خَيْرِكُمْ أَحْسَنَكُمْ قَضَاءً). [رواه البخاري: ٢٣٠٦]

फायदे : कर्ज की अदायगी फौरी तौर पर करना जरूरी है। मुमकिन है कि वकील बनाने से उसमें कुछ देर हो जाये तो इसमें कोई गुनाह नहीं है। नीज यह भी मालूम हुआ कि कर्ज की अदायकी में गैर हाजिर की वकालत भी की जा सकती है, क्योंकि हाजिर के मुकाबले में गैर हाजिर की वकालत बदर्जा बेहतर है।

(औनुलबारी, 3/160)

बाब 4 : अगर किसी कौम के वकील या सिफारिशी को कुछ हिबा दिया जाये तो जाइज हैं।

٤ - باب: إِذَا وَهَبَ شَيْئًا لِوَكِيلٍ أَوْ شَفِيعِ قَوْمٍ جَازَ

1067 : मिसवर बिन मखर्रमा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कबीला हवाजिन के लोग जब मुसलमान होकर आये तो आप खड़े हो गये, उन्होंने आपसे यह दरख्वास्त की, उनके माल और कैदी वापिस कर दिये जायें। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मुझे सच्ची बात पसन्द है। लिहाजा तुम लोग एक बात इख्तियार कर लो, कैदी वापिस ले लो या माल, मैं तो मुद्दत से तुम्हारा इन्तेजार कर रहा था। हुआ यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ताईफ से वापिसी पर दस दिन से ज्यादा उनका इन्तिजार किया। फिर जब उन्हें मालूम हो गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको एक ही चीज वापिस देंगे तो उन्होंने कहा, हम अपने कैदी वापिस लेते हैं। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों में खड़े हुये अल्लाह के लायक बड़ाई करने

١٠٦٧ : عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَامَ حِينَ جاءَهُ وَفْدُ هَوَازِنَ مُسْلِمِينَ، فَسَأَلُوهُ أَنْ يَرُدَّ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَسَبْيَهُمْ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَحَبُّ الحَدِيثِ إِلَيَّ أَصْدَقُهُ، فَٱخْتَارُوا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ: إِمَّا السَّبْيَ وَإِمَّا المَالَ، وَقَدْ كُنْتُ ٱسْتَأْنَيْتُ بِكُم)، وَقَدْ كانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ ٱنْتَظَرَهُمْ بِضْعَ عَشْرَةَ لَيْلَةً حِينَ قَفَلَ مِنَ الطَّائِفِ، فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ غَيْرُ رَادٍّ إِلَيْهِمْ إِلاَّ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ، قَالُوا: فَإِنَّا نَخْتارُ سَبْيَنَا، فَقَامَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي المُسْلِمِينَ، فَأَثْنَى عَلَى ٱللهِ تَعالى بِمَا هُوَ أَهْلُهُ، ثُمَّ قَالَ: (أَمَّا بَعْدُ، فَإِنَّ إِخْوَانَكُمْ هٰؤُلاَءِ قَدْ جاؤُونا تَائِبِينَ، وَإِنِّي قَدْ رَأَيْتُ أَنْ أَرُدَّ إِلَيْهِمْ سَبْيَهُمْ، فَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يُطَيِّبَ بِذٰلِكَ فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يَكُونَ عَلَى حَظِّهِ حَتَّى نُعْطِيَهُ إِيَّاهُ مِنْ أَوَّلِ ما يُفِيءُ ٱللهُ عَلَيْنَا فَلْيَفْعَلْ). فَقَالَ النَّاسُ: قَدْ طَيَّبْنَا ذٰلِكَ لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ لَهُمْ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّا لاَ نَدْرِي مَنْ أَذِنَ مِنْكُمْ فِي ذٰلِكَ مِمَّنْ لَمْ يَأْذَنْ، فَٱرْجِعُوا حَتَّى يَرْفَعَ إِلَيْنَا عُرَفاؤُكُمْ أَمْرَكُمْ). فَرَجَعَ النَّاسُ، فَكَلَّمَهُمْ عُرَفاؤُهُمْ، ثُمَّ

رَجَعُوا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَخْبَرُوهُ: أَنَّهُمْ قَدْ طَيَّبُوا وَأَذِنُوا. [رواه البخاري: ٢٣٠٧، ٢٣٠٨]

के बाद फरमाया, तुम्हारे यह भाई हमारे पास तौबा करके आये हैं और मैं मुनासिब समझता हूँ कि उनके कैदी उन्हें वापिस कर दूं। लिहाजा अब जो कोई खुशी से वापिस करना चाहे तो वह वापिस कर दे और जो आदमी अपने हिस्से पर कायम रहना चाहे, वह इस तरह कि अब जो पहली फतेह हम को अल्लाह दे, उसमें से उसका मुआवजा दे दें तो वह इस शर्ते पर दे दे। लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम बिला बदला मुआवजा देना मन्जूर करते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं नहीं जानता कि कौन इस फैसले पर राजी है और कौन नहीं। लिहाजा तुम लोग वापिस जाओ और तुम्हारे सरदार तुम्हारा पैगाम हमारे पास लायें। चूनांचे वह लोग लौट गये। आखिरकार उनके सरदारों ने अपने अपने लोगों से बात की, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और अर्ज किया कि वह राजी हैं और उन्होंने कैदी वापिस करने की बखुशी इजाज़त दे दी।

फायदे : वफदे हवाजीन अपनी कौम की तरफ से वकील और सिफारिशी बन कर आया था, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपना हिस्सा दे दिया था, जैसा कि हदीस में तफसील से मौजूद है। (औनुलबारी, 3/164)

---

٥ - باب: إِذَا وَكَّلَ رَجُلًا فَتَرَكَ الْوَكِيلُ شَيْئاً فَأَجَازَهُ الْمُوَكِّلُ فَهُوَ جَائِزٌ

बाब 5 : जब किसी को वकील बनाये, फिर वकील किसी चीज को छोड़ दे और मुवक्किल (सुपुर्द करने वाला) उसे मन्जूर करे तो जाइज है।

1068 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सदका फित्र की हिफाजत का हुक्म दिया। मेरे पास एक आदमी आया और लप भर भरकर अनाज लेने लगा। मैंने उसे पकड़ लिया और कहा, अल्लाह की कसम! मैं तुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ले जाऊंगा। उसने कहा, मुझे छोड़ दो, क्योंकि मोहताज हूँ और मुझ पर मेरे बच्चों का बोझ होने से सख्त जरूरतमन्द हूँ। अबू हुरैरा रज़ि. कहते हैं कि मैंने उसे छोड़ दिया। सुबह को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अबू हुरैरा रज़ि. गुजिश्ता रात तेरे कैदी ने क्या किया? मैंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जब उसने सख्त मजबूरी बयान की और अपने बाल बच्चो का जिक्र किया तो मैंने तरस खाकर उसे छोड़ दिया। आपने फरमाया कि उसने तुझ से झूट बोला है और वह फिर आयेगा।

١٠٦٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: وَكَّلَنِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِحِفْظِ زَكَاةِ رَمَضَانَ، فَأَتَانِي آتٍ، فَجَعَلَ يَحْثُو مِنَ الطَّعَامِ، فَأَخَذْتُهُ وَقُلْتُ: لأَرْفَعَنَّكَ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، قَالَ: إِنِّي مُحْتَاجٌ وَعَلَيَّ عِيَالٌ وَلِي حَاجَةٌ شَدِيدَةٌ، قَالَ: فَخَلَّيْتُ عَنْهُ، فَأَصْبَحْتُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (يَا أَبَا هُرَيْرَةَ مَا فَعَلَ أَسِيرُكَ الْبَارِحَةَ؟). قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، شَكَا حَاجَةً شَدِيدَةً، وَعِيَالاً، فَرَحِمْتُهُ فَخَلَّيْتُ سَبِيلَهُ، قَالَ: (أَمَا إِنَّهُ قَدْ كَذَبَكَ، وَسَيَعُودُ). فَعَرَفْتُ أَنَّهُ سَيَعُودُ، لِقَوْلِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّهُ سَيَعُودُ)، فَرَصَدْتُهُ، فَجَاءَ يَحْثُو مِنَ الطَّعَامِ، فَأَخَذْتُهُ فَقُلْتُ: لأَرْفَعَنَّكَ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، قَالَ: دَعْنِي فَإِنِّي مُحْتَاجٌ وَعَلَيَّ عِيَالٌ، لاَ أَعُودُ، فَرَحِمْتُهُ فَخَلَّيْتُ سَبِيلَهُ، فَأَصْبَحْتُ فَقَالَ لِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (يَا أَبَا هُرَيْرَةَ مَا فَعَلَ أَسِيرُكَ؟). قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ شَكَا حَاجَةً شَدِيدَةً وَعِيَالاً، فَرَحِمْتُهُ فَخَلَّيْتُ سَبِيلَهُ، قَالَ: (أَمَا إِنَّهُ كَذَبَكَ، وَسَيَعُودُ). فَرَصَدْتُهُ الثَّالِثَةَ، فَجَعَلَ يَحْثُو مِنَ الطَّعَامِ، فَأَخَذْتُهُ فَقُلْتُ: لأَرْفَعَنَّكَ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَهٰذَا آخِرُ ثَلاَثِ مَرَّاتٍ أَنَّكَ تَزْعُمُ لاَ تَعُودُ،

ثمّ تعود. قال: دعني أعلّمك كلماتٍ ينفعك الله بها، قلت ما هنّ؟ قال: إذا أويت إلى فراشك، فاقرأ آية الكرسيّ: ﴿الله لا إله إلا هو الحيّ القيّوم﴾. حتّى تختم الآية، فإنّك لن يزال عليك من الله حافظ، ولا يقربك شيطان حتّى تصبح، فخلّيت سبيله، فأصبحت، فقال لي رسول الله ﷺ: (ما فعل أسيرك البارحة؟). قلت: يا رسول الله، زعم أنّه يعلّمني كلماتٍ ينفعني الله بها فخلّيت سبيله، قال: (ما هي؟). قلت: قال لي: إذا أويت إلى فراشك، فاقرأ آية الكرسيّ من أوّلها حتّى تختم الآية: ﴿الله لا إله إلّا هو الحيّ القيّوم﴾. وقال لي: لن يزال عليك من الله حافظ، ولا يقربك شيطان حتّى تصبح - وكانوا أحرص شيءٍ على الخير - فقال النّبيّ ﷺ: (أما إنّه قد صدقك وهو كذوب، تعلم من تخاطب منذ ثلاث ليالٍ يا أبا هريرة). قلت: لا، قال: (ذاك شيطان). [رواه البخاري: ٢٣١١]

लिहाजा मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान के पेशे नजर कि वह फिर आयेगा, उसका इन्तेजार करता रहा। चूनांचे वह फिर आया और लप भर-भरकर गल्ला लेने लगा। मैंने उसे पकड़ कहा, अब मैं तुझे जरूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ले जाऊंगा। वह कहने लगा, मुझे छोड़ दो, मैं मोहताज हूँ। मुझ पर मेरे बच्चों का बड़ा बोझ है। अब मैं फिर न आऊंगा। अब के भी मैंने उस पर तरस खाया और छोड़ दिया। सुबह को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर पूछा! अबू हुरैरा रज़ि.! तुम्हारे कैदी ने क्या किया? मैंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जब उसने सख्त जरूरत पेश की और बच्चों का जिक्र किया तो मैंने उस पर रहम करते हुये छोड़ दिया। आपने फरमाया कि उसने तुम से झूट बोला। वह फिर आयेगा। चूनांचे मैं तीसरी बार उसका इन्तेजार करने लगा और फिर वह आया और गल्ले से लप भरने लगा। मैंने उसको पकड़कर कहा कि मैं अब तुझे जरूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम के पास ले जाऊंगा और यह तीसरी बार है, तू हर बार कह देता है कि अब न आऊंगा और फिर आ जाता है। वह बोला मुझे छोड़ दो, मैं तुम्हें चन्द कलमात बताता हूँ, जो तुम्हारे लिए फायदेमन्द होंगे। मैंने कहा, वह क्या हैं? उसने कहा जब तुम सोने के लिए अपने बिस्तर पर जाओ तो आयतलकुर्सी पढ़ लिया करो यानी "अल्लाह ला इलाहा इल्लल्ला अल हय्युल कय्युम" इसके आखिर तक, फिर अल्लाह की तरफ से तुम्हारे लिए एक मुहाफिज मुकर्रर हो जायेगा और सुबह तक कोई शैतान तुम्हारे पास न आ सकेगा। मैंने फिर उसको छोड़ दिया। सुबह को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, तुम्हारे कैदी ने पिछली रात क्या किया? मैंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! उसने कहा कि मैं तुम्हें चन्द कलमात की तालीम देता हूँ, जिससे अल्लाह तआला तुम्हें फायदा देगा तो मैंने उसको छोड़ दिया। आपने फरमाया, वह कलमात क्या हैं? मैंने अर्ज किया, उसने मुझसे कहा कि जब अपने बिछौने पर जाओ तो आयतलकुर्सी शुरू से आखिर तक पढ़ लिया करो। अल्लाह की तरफ से एक निगरान तुम्हारे लिए मुकर्रर हो जायेगा कि सुबह तक कोई शैतान तुम्हारे पास नहीं आयेगा और सहाबा किराम रज़ि. तो नेकी के लालची थे ही। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उसने इस मर्तबा तुमसे सच कहा है, अगरचे वह बड़ा झूटा है। अबू हुरैरा रज़ि.! तुम जानते हो कि तीन रात किस से गुफ्तगू करते रहे हो, मैंने अर्ज किया नहीं। आपने फरमाया, वह शैतान था।

फायदे : हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. अगरचे सदका फित्र किसी को देने के लिये जिम्मेदार न थे लेकिन वह उसकी हिफाजत पर जरूर मुकर्रर थे। उसमें उन्होंने कुछ कमी की कि शैतान को छोड़

दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके इस काम को जाइज करार दिया। (औनुलबारी, 3/167)

---

٦ - باب: إِذَا بَاعَ الوَكِيلُ بَيعاً فَاسِدًا فَبَيْعُهُ مَرْدُودٌ

बाब 6 : अगर वकील खरीद-फरोख्त रद्द कर दे तो वह रद्द हो जायेगी।

١٠٦٩ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جاءَ بِلالٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِتَمْرٍ بَرْنِيٍّ، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: (مِنْ أَيْنَ هٰذا؟). قَالَ بِلالٌ: كَانَ عِنْدِي تَمْرٌ رَدِيٌّ، فَبِعْتُ مِنْهُ صَاعَيْنِ بِصَاعٍ، لِيُطْعِمَ النَّبِيُّ ﷺ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ عِنْدَ ذٰلِكَ: (أَوَّهْ أَوَّهْ، عَيْنُ الرِّبَا عَيْنُ الرِّبَا، لا تَفْعَلْ، وَلٰكِنْ إِذَا أَرَدْتَ أَنْ تَشْتَرِيَ فَبِعِ التَّمْرَ بِبَيْعٍ آخَرَ، ثُمَّ اشْتَرِ بِهِ). [رواه البخاري: ٢٣١٢]

1069 : अबू सईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि बिलाल रज़ि. एक दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बरनी किस्म की उम्दा खुजूरें लाये। आपने उनसे पूछा, कहां से लाये हो? बिलाल रज़ि. ने कहा, मेरे पास कुछ खराब खुजूरें थीं, मैंने उनके दो साअ के ऐवज उसका एक साअ लिया है। ताकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें खाये। आपने फरमाया, तौबा, तौबा, यह तो बिलकुल ही सूद है। ऐसा न किया करो। अगर तुम आईन्दा खुजूर खरीदना चाहो तो पहले अपनी खुजूर को फरोख्त करो, फिर उसकी कीमत के ऐवज अच्छी खुजूरें खरीदो।

फायदे : इससे मालूम हुआ कि सूदी मामला किसी सूरत में भी बर्दाश्त के काबिल नहीं। इस हदीस में अगरचे वापिस कर देने का जिक्र नहीं है। लेकिन मुस्लिम की रिवायत में खुलासा है कि उन खुजूरों को वापिस कर दो। (औनुलबारी, 3/169)

---

٧ - باب: الوَكَالَةُ فِي الحُدُودِ

बाब 7 : हद (सजा) लगाने के लिए किसी को वकील बनाना।

١٠٧٠ : عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الحَارِثِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: جِيءَ بِالنُّعَيْمَانِ، أَوِ ٱبْنِ النُّعَيْمانِ، شَارِبًا، فَأَمَرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ مَنْ كانَ فِي ٱلْبَيْتِ أَنْ يَضْرِبُوهُ، قَالَ: فَكُنْتُ أَنَا فِيمَنْ ضَرَبَهُ، فَضَرَبْنَاهُ بِالنِّعَالِ وَالجَرِيدِ. [رواه البخاري: ٢٣١٦]

1070 : उकबा बिन हारिस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नुअईमान या इब्ने नुअईमान रज़ि. को शराब पीने के जुर्म में पेश किया गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो लोग घर में मौजूद थे, उन्हें हुक्म दिया कि उसको मारें, उकबा रज़ि. कहते हैं कि मैं भी उन लोगों में था, जिन्होंने उसको मारा। हमने जूतों और छड़ियों से उसे पीटा था।

फायदे : हज़रत नुअईमान बिन रज़ि. बदर की लड़ाई में शरीक थे और खुशमिजाज इन्सान थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने घर में मौजूद लोगों को उन्हें हद लगाने के लिए वकील मुकर्रर फरमाया, इससे यह भी मालूम हुआ कि शराबी पर हद लगाने के लिए उसके होश में आने का इन्तिजार न किया जाये।

(औनुलबारी, 3/170)



किताबः माजआ फिअलहरसे वलमुजाराअत
खेती-बाड़ी और बटाई का बयान

खेती बाड़ी करना जाइज है, बशर्ते जिहाद और इस तरह के दूसरे कामों के लिए रुकावट का सबब न हो। उसी तरह जमीन बटाई पर देना भी जाइज है, बशर्ते कि जमीन के किसी खास टुकड़े की पैदावार लेने की शर्त न रखी जाये।

١ - باب: فَضْلُ الزَّرْعِ والغَرْسِ

बाब 1 : खेती-बाड़ी और पेड़-पौधे लगाने की फ़ज़ीलत।

١٠٧١ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (ما مِنْ مُسْلِمٍ يَغْرِسُ غَرْسًا أَوْ يَزْرَعُ زَرْعًا، فَيَأْكُلُ مِنْهُ طَيْرٌ، أَوْ إِنْسانٌ، أَوْ بَهِيمَةٌ، إِلاَّ كانَ لَهُ بِهِ صَدَقَةٌ). [رواه البخاري: ٢٣٢٠]

1071 : अनस रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब कोई मुसलमान पेड़ लगाता या खेती-बाड़ी करता है, फिर उसमें से कोई परिन्दा, इन्सान या हैवान खाता है तो उसे सदका और खैरात का सवाब मिलता है।

फायदे : मुसलमान को खास इसलिए किया गया है कि काफिर को सवाबे आखिरत नहीं मिलता अलबत्ता दुनिया में उसे अच्छे काम का बदला मिल सकता है, मौमिन के लिए यह सवाब कयामत के लिए है। (औनुलबारी, 3/173)

٢ - باب: ما يُحذر مِنْ عواقب الاشْتِغَالِ بِآلَةِ الزَّرْعِ أَوْ مُجاوزة الحَدِّ الَّذِي أُمِرَ بِهِ

बाब 2 : खेतीबाड़ी के सामनों में बहुत मसरूफ रहने और जाइज हदों से आगे बढ़ जाने के बुरे अन्ज़ाम का बयान।

١٠٧٢ : عَنْ أَبِي أُمَامَةَ البَاهِلِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ رَأَى سِكَّةً وَشَيْئًا مِنْ آلَةِ الحَرْثِ، فَقَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (لاَ يَدْخُلُ هٰذَا بَيْتَ قَوْمٍ إِلاَّ أَدْخَلَهُ ٱللهُ الذُّلَّ). [رواه البخاري: ٢٣٢١]

1072 : अबू उमामा बाहिली रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने हल का फाल या खेती का कोई आला देखा तो कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना है कि यह खेती-बाड़ी के सामान जिस कौम के घर में घुस आते हैं, अल्लाह तआला उन्हें जिल्लत और रूसवाई से दो-चार करता है।

फायदे : यह जिल्लत और रूसवाई इस बिना पर होगी कि जब इन्सान दिन रात खेती-बाड़ी में लगा रहेगा। जब जिहाद और उसके दूसरे कामों से गाफिल हो जायेगा तो दुश्मन का हावी हो जाना यकीनी है। जैसा कि दूसरी हदीस में इसकी वजाहत भी है।

---

٣ - باب: اقْتِنَاءُ الكَلْبِ لِلْحَرْثِ

बाब 3 : खेती की हिफाजत के लिए कुत्ता रखना।

١٠٧٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ أَمْسَكَ كَلْبًا، فَإِنَّهُ يَنْقُصُ كُلَّ يَوْمٍ مِنْ عَمَلِهِ قِيرَاطٌ، إِلاَّ كَلْبَ حَرْثٍ أَوْ مَاشِيَةٍ). [رواه البخاري: ٢٣٢٢]

1073: अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी कुत्ता पालता है तो रोजाना उसकी नेकियों में से एक किराअत के बराबर सवाब कम होता रहेगा, अलबत्ता खेती या रेवड़ की हिफाजत के लिए कुत्ता रखा जा सकता है।

फायदे : इस हदीस से इमाम बुखारी ने खेती बाड़ी करने का जाइज

होना साबित किया है, क्योंकि जब खेती के लिए कुत्ता रखने की इजाजत है तो खेती-बाड़ी का काम भी दुरस्त होगा। नीज इस हदीस से मजकूरा मकसद के लिए कुत्ते के बच्चे का पालना भी जाइज मालूम होता है। (औनुलबारी, 3/179)

1074 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बकरियों या खेती की हिफाजत या शिकार के लिए कुत्ता रखा जा सकता है।

١٠٧٤ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ في رواية: (إلاَّ كَلْبَ غَنَمٍ أَوْ حَرْثٍ أَوْ صَيْدٍ). [رواه البخاري: ٢٣٢٢]

1075 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही एक दूसरी रिवायत में है कि शिकार और जानवरों की हिफाजत के लिए कुत्ता रखा जा सकता है।

١٠٧٥ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ في رواية أخرى: (إلاَّ كَلْبَ صَيْدٍ أَوْ مَاشِيَةٍ). [رواه البخاري: ٢٣٢٢]

बाब 4 : खेती-बाड़ी के लिए गाय-बैल से काम लेना।

٤ - باب: اسْتِعْمَالُ الْبَقَرِ لِلحِرَاثَةِ

1076 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि कोई आदमी एक बैल पर सवार होकर जा रहा है तो बैल ने मुतवज्जा होकर कहा कि मैं सवारी के लिए नहीं बल्कि खेती के लिए पैदा किया गया हूँ। आपने फरमाया कि मैं

١٠٧٦ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (بَيْنَما رَجُلٌ رَاكِبٌ عَلَى بَقَرَةٍ الْتَفَتَتْ إِلَيْهِ، فَقَالَتْ: لَمْ أُخْلَقْ لِهٰذا، خُلِقْتُ لِلحِرَاثَةِ، قالَ: آمَنْتُ بِهِ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، وَأَخَذَ ٱلذِّئْبُ شَاةً فَتَبِعَهَا الرَّاعِي، فَقَالَ ٱلذِّئْبُ: مَنْ لَهَا يَوْمَ السَّبُعِ، يَوْمَ لاَ رَاعِيَ لَهَا غَيْرِي، قالَ: آمَنْتُ بِهِ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ). قَالَ الراوي عَنْ أَبِي

هُرَيْرَةَ: وَما هُما يَوْمَئِذٍ فِي الْقَوْمِ. [رواه البخاري: ٢٣٢٤]

इस पर यकीन रखता हूँ और अबू बकर व उमर रज़ि. भी यकीन रखते हैं। नीज आपने फरमाया कि एक भेड़िया बकरी ले गया तो चरवाहा उसके पीछे भागा। भेड़िये ने कहा जिस दिन (मदीना में) दरिन्दे ही दरिन्दे होंगे और उस दिन बकरियों का मुहाफिज कौन होगा? उस दिन तो मेरे अलावा कोई चरवाहा नहीं होगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सुनकर फरमाया मैं इस पर यकीन रखता हूँ और अबू बकर व उमर रज़ि. भी यकीन रखते हैं। रावी अबू हुरैरा रज़ि. से बयान करता है कि उस दिन वह दोनों मजलिस में मौजूद नहीं थे।

फायदे : इसमें कोई बात खिलाफे अकल नहीं है, क्योंकि अल्लाह तआला ने हैवानात (जानवरों) को भी जुबान दी है, उनका बात करना मुश्किल नहीं अलबत्ता खिलाफे आदत जरूर है। चूंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी खबर दी है। लिहाजा हमें यकीन है। (औनुलबारी, 3/181)

---

٥ - باب: إِذَا قَالَ: اكْفِنِي مَؤُنَةَ النَّخْلِ

बाब 5 : जब कोई कहे कि तू नखलिस्तान (खुजूरों के बाग) की खिदमत अपने जिम्मे लेकर मुझे फारिग कर दे।

١٠٧٧ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَتِ الأَنْصَارُ لِلنَّبِيِّ ﷺ: اَقْسِمْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ إِخْوَانِنَا النَّخِيلَ. قَالَ: (لاَ). فَقَالُوا: تَكْفُونَا المَؤُنَةَ، وَنَشْرَكْكُمْ فِي الثَّمَرَةِ، قَالُوا: سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا. [رواه البخاري: ٢٣٢٥]

1077 : अबू हुरैरा रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि अन्सार रज़ि. ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया कि आप हमारे और हमारे भाईयों के बीच खुजूरों के बागात तकसीम कर दें। आपने फरमाया, यह नहीं हो सकता। फिर उन्होंने मुहाजरीन से कहा कि तुम मेहनत करो, हम तुम्हें

पैदावार में शरीक कर लेंगे। तब मुहाजरीन ने कहा, अच्छा हमें मन्जूर है।

फायदे : इमाम बुखारी का उनवान इस तरह है "नखलिस्तान वगैरह में मेहनत कर और मुझे उसकी पैदावार से हिस्सा दे।" मालूम हुआ कि ऐसा करना जाइज है, यानी बाग या जमीन एक आदमी की और मेहनत दूसरा आदमी करे। दोनों पैदावार में शरीक हों।

(औनुलबारी,3/182)

١٠٧٨ : عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا أَكْثَرَ أَهْلِ الْمَدِينَةِ مُزْدَرَعًا، كُنَّا نُكْرِي الأَرْضَ بِالنَّاحِيَةِ مِنْهَا مُسَمًّى لِسَيِّدِ الأَرْضِ، قَالَ: فَمِمَّا يُصَابُ ذٰلِكَ وَتَسْلَمُ الأَرْضُ، وَمِمَّا يُصَابُ الأَرْضُ وَيَسْلَمُ ذٰلِكَ، فَنُهِينَا، وَأَمَّا الذَّهَبُ وَالْوَرِقُ فَلَمْ يَكُنْ يَوْمَئِذٍ. [رواه البخاري: ٢٣٢٧]

1078 : राफेअ बिन खदीज रज़ि. से रिवायत है कि तमाम अहले मदीना से हमारे खेत ज्यादा थे। हम जमीन को इस शर्त पर बटाई पर दिया करते थे कि जमीन के एक फिक्स हिस्से की पैदावार जमीन के मालिक की होगी, चूनांचे कभी ऐसा होता कि खेत के उस हिस्से पर आफत आ जाती और बाकी जमीन की पैदावार अच्छी रहती और कभी बाकी खेत पर आफत आ जाती और वह हिस्सा सालिम रहता। इसी बिना पर हमें उससे रोक दिया गया और सोने चांदी के ऐवज ठेके पर देने का तो उस वक्त रिवाज ही नहीं था।

फायदे : बटाई पर जमीन देना जाइज है। लेकिन जमीन के मख्सूस टुकडे की पैदावार लेने की शर्त लगाना जाइज नहीं हैं अलबत्ता नकदी के ऐवज जमीन को ठेके पर देने के बारे में खुद रावी हदीस राफेअ बिन खदीज रज़ि. एक दूसरी रिवायत (बुखारी 2346) में फरमाते हैं कि उसमें कोई हर्ज नहीं है।

बाब 6 : आधी पैदावार पर जमीन खेती करने का बयान।

٦ - باب: المُزَارَعَةُ بِالشَّطْرِ

1079 : अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अहले खैर से अनाज और फल की आधी पैदावार पर मामला किया था और अपनी बीवी को सौ वसक दिया करते थे, जिनमें अस्सी वसक खुजूर और बीस वसक जौ होते थे।

١٠٧٩ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ عامَلَ خَيْبَرَ بِشَطْرِ ما يَخْرُجُ مِنْهَا مِنْ ثَمَرٍ أَوْ زَرْعٍ، فَكانَ يُعْطِي أَزْوَاجَهُ مِائَةَ وَسْقٍ، ثَمَانِينَ وَسْقَ تَمْرٍ وَعِشْرِينَ وَسْقَ شَعِيرٍ. [رواه البخاري: ٢٣٢٨]

फायदे : घरेलू जरूरियात के लिए खुजूर ज्यादा इस्तेमाल होती थी, इसलिए उनकी मिकदार ज्यादा होती और जौ की मिकदार कम इसलिए थी कि घर में रोटी कभी कभी पकाया करते थे।

1080 : इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जमीन ठेके पर देने से मना नहीं फरमाया, बल्कि आपका इरशाद है, कोई आदमी तुम में से अपनी जमीन भाई को यूँ ही दे दे तो यह उससे बेहतर है कि वह उसका कुछ किराया वसूल करे।

١٠٨٠ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَنْهَ عَنِ لكِراءِ، وَلٰكِنْ قالَ: (أَنْ يَمْنَحَ أَحَدُكُمْ أَخاهُ، خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَأْخُذَ عَلَيْهِ خَرْجًا مَعْلُومًا). [رواه البخاري: ٢٣٣٠]

फायदे : इस हदीस का आगाज यूँ है कि सुफियान बिन ओयैना ने हज़रत तावुस से कहा, बेहतर है कि तुम बटाई पर जमीन देना छोड़ दो, क्योंकि लोगों के कहने के मुताबिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बटाई का मामला करने से मना फरमाया है।

हज़रत तावुस ने उनके जवाब में यह हदीस बयान की।

बाब 7 : सहाबा किराम रज़ि. के ख्यालात, टैक्स वाली जमीनों और उनकी बटाई नीज उनके मामलात का बयान।

٧ - باب: أَوْقَافُ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَرْضِ الخَرَاجِ وَمُزَارَعَتِهِمْ وَمُعَامَلَتِهِمْ

1081: उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अगर बाद में आने वाले मुसलमानों का ख्याल न होता तो मैं हर फतह किए हुए शहर को फतह करने वालों पर तकसीम कर देता, जिस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खैबर को तकसीम कर दिया था।

١٠٨١ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: لَوْلاَ آخِرُ المُسْلِمِينَ، ما فُتِحَتْ قَرْيَةٌ إِلاَّ قَسَمْتُهَا بَيْنَ أَهْلِهَا، كما قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ خَيْبَرَ. [رواه البخاري: ٢٣٣٤]

फायदे : हज़रत उमर रज़ि. का मतलब यह था कि आइन्दा बहुत से मुसलमान पैदा होंगे जो जरूरतमन्द और गरीब होंगे, अगर मैं तमाम कब्जे किए गये मुल्कों की जमीन लड़ाई करने वालो में तकसीम कर दूं तो आईन्दा मोहताज मुसलमान महरूम रह जायेंगे।

बाब 8 : जो आदमी किसी बे-आबाद बंजर जमीन को आबाद करे (वह उसी की है)

٨ - باب: مَنْ أَحْيَا أَرْضاً مَوَاتاً

1082 : आइशा रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो आदमी ऐसी जमीन को आबाद करे जो किसी के कब्जे में न हो तो आबाद करने वाला उसका ज्यादा हकदार है।

١٠٨٢ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قالَ: (مَنْ أَعْمَرَ أَرْضًا لَيْسَتْ لأَحَدٍ فَهُوَ أَحَقُّ). [رواه البخاري: ٢٣٣٥]

फायदे : बंजर जमीन को आबाद करने का मतलब यह है कि पानी का बन्दोबस्त करके वहां खेती-बाड़ी करे या बाग लगाये या मकान वगैरह तामीर करे, ऐसा करने से वह जमीन आबादकार की जायदाद बन जायेगी, बशर्ते कि हाकिम वक़्त ने भी उसकी इजाजत दी हो।

١٠٨٣ : عَنِ ابنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: أَجْلَى عُمَرُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى مِنْ أَرْضِ ٱلحِجَازِ، وَكَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، لَمَّا ظَهَرَ عَلَى خَيْبَرَ، أَرَادَ إِخْرَاجَ الْيَهُودِ مِنْهَا، وَكَانَتِ الأَرْضُ حِينَ ظَهَرَ عَلَيْهَا للهِ وَلِرَسُولِهِ ﷺ وَلِلْمُسْلِمِينَ، وَأَرَادَ إِخْرَاجَ الْيَهُودِ مِنْهَا، فَسَأَلَتِ الْيَهُودُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ لِيُقِرَّهُمْ بِهَا أَنْ يَكْفُوا عَمَلَهَا، وَلَهُمْ نِصْفُ الثَّمَرِ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (نُقِرُّكُمْ بِهَا عَلَى ذٰلِكَ مَا شِئْنَا). فَقَرُّوا بِهَا حَتَّى أَجْلاَهُمْ عُمَرُ إِلَى تَيْمَاءَ وَأَرِيحَاءَ. [رواه البخاري: ٢٣٣٨]

1083 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि उमर बिन खत्ताब रज़ि.ने यहूद व नसारी को सरजमीने हिजाज (देश का नाम) से निकाल दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब खैबर पर फतह पाई तो उसी वक्त यहूदियों को वहां से निकाल देना चाहा, क्योंकि फतह पाते ही वह जमीन अल्लाह, उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और तमाम मुसलमानों की हो गयी थी, फिर आपने वहां से यहूद को निकालने का इरादा फरमाया तो यहूद ने आपसे दरख्वास्त की कि उन्हें इस शर्त पर वहां रहने दिया जाये कि वह काम करेंगे और उन्हें आधी पैदावार मिलेगी। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हम इस शर्त पर जब तक चाहें रखेंगे। चूनांचे यहूदी वहां रहे यहां तक कि उमर ने मकामे तइमा और मकामे अरिहा की तरफ उन्हें देश निकाला दे दिया।

फायदे : हज़रत उमर रज़ि. ने यहूदियों को इसलिए देश निकाला दिया था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आखरी वसीयत यह थी कि यहूदियों को अरब से निकाल देना। लिहाजा हज़रत उमर रज़ि. का यह काम किसी आगे के वादे के खिलाफ न था।

बाब 9 : सहाबा किराम रज़ि. एक दूसरे को खेती और फलों में शरीक कर लिया करते थे।

٩ - باب: مَا كَانَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ ﷺ يُوَاسِي بَعْضُهُمْ بَعْضاً فِي الزِّرَاعَةِ وَالثَّمَرَةِ

1084 : राफेअ बिन खदीज रज़ि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मेरे चचा जुहेर बिन राफेअ रज़ि. ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें ऐसे काम से मना फरमा दिया जिससे हमको बहुत आसानी थी, मैंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो फरमाया वह हक है। जुहेर ने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे बुलाकर पूछा, तुम अपने खेतों का क्या करते हो? मैंने अर्ज किया कि हम चौथाई पैदावार पर नीज खुजूर और जौ की, चन्द वसक पर किराये के लिए देते हैं। आपने फरमाया, ऐसा न करो, खुद खेती करो या किसी को खेती के लिए दे दो या उसे अपने पास ही रहने दो। राफेअ कहते हैं कि मैंने कहा, जो इरशाद हुआ, सुना और दिल से मान लिया।

١٠٨٤ : عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ عَمِّي ظُهَيْرُ ابْنُ رَافِعٍ: لَقَدْ نَهَانَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَنْ أَمْرٍ كَانَ بِنَا رَافِقًا، قُلْتُ: مَا قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَهُوَ حَقٌّ، قَالَ: دَعَانِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، قَالَ: (مَا تَصْنَعُونَ بِمَحَاقِلِكُمْ؟). قُلْتُ: نُؤَاجِرُهَا عَلَى الرُّبُعِ، وَعَلَى الأَوْسُقِ مِنَ التَّمْرِ وَالشَّعِيرِ، قَالَ: (لَا تَفْعَلُوا، ٱزْرَعُوهَا، أَوْ أَزْرِعُوهَا، أَوْ أَمْسِكُوهَا). قَالَ رَافِعٌ: قُلْتُ: سَمْعًا وَطَاعَةً. [رواه البخاري: ٢٣٣٩]

फायदे : बटाई पर देते वक्त यह शर्त लगाना कि बरसाती नाले के

इर्द-गिर्द उगने वाली खेती या जमीन के मख्सूस टुकड़े की पैदावार मालिक के लिए होगी। यह नाजाइज है, अगर इस तरह नाजाइज शर्तें न हो तो बटाई पर जमीन देने में कोई बुराई नहीं है।

١٠٨٥ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ كَانَ يُكْرِي مَزَارِعَهُ، عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ وَعُثْمَانَ، وَصَدْرًا مِنْ إِمَارَةِ مُعَاوِيَةَ، ثُمَّ حُدِّثَ عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنْ كِرَاءِ الْمَزَارِعِ، فَذَهَبَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى رَافِعٍ، فَسَأَلَهُ، فَقَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ كِرَاءِ الْمَزَارِعِ، فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: قَدْ عَلِمْتَ أَنَّا كُنَّا نُكْرِي مَزَارِعَنَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ بِمَا عَلَى الْأَرْبِعَاءِ، وَبِشَيْءٍ مِنَ التِّبْنِ. [رواه البخاري: ٢٣٤٣، ٢٣٤٤]

1085 : इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अबू बकर रज़ि., उमर रज़ि., उसमान रज़ि. और अमीरे मुआवया रज़ि. की शुरू की हुकूमत में अपनी जमीन किराये पर देते थे। फिर राफेअ के हवाले से हदीस बयान की गयी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जमीन को किराये पर देने से मनाही फरमायी है। इब्ने उमर रज़ि. ने फरमाया, मुझे मालूम है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में अपने खेत चौथाई पैदावार और कुछ भूसे की ऐवज किराये पर दिया करते थे।

फायदे : हज़रत इब्ने उमर रज़ि. ने हज़रत राफेअ रज़ि. की जबानी फरमाने नबवी सुनकर इसकी वजाहत फरमायी और बटाई पर अपनी जमीन देते रहे। लेकिन बाद में अहतियातन इसे छोड़ दिया, जबकि अगली हदीस से मालूम होता है।

١٠٨٦ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: كُنْتُ أَعْلَمُ فِي عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ

1086 : इब्ने उमर रज़ि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मुझे मालूम

ﷺ أَنَّ الأَرْضَ تُكْرَى، ثُمَّ خَشِيَ عَبْدُ ٱللهِ أَنْ يَكُونَ النَّبِيُّ ﷺ قَدْ أَحْدَثَ فِي ذٰلِكَ شَيْئًا لَمْ يَكُنْ يَعْلَمُهُ، فَتَرَكَ كِرَاءَ الأَرْضِ. [رواه البخاري: ٢٣٤٥]

है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में खेत किराये पर दिये जाते थे, फिर अब्दुल्लाह रज़ि. को यह अन्देशा हुआ कि शायद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस मसले में कोई नया हुक्म दिया हो, जिसकी उन्हें खबर न हुई हो। लिहाजा उन्होंने (अहतियातन) खेत को किराये पर देना बन्द कर दिया।

बाब 10 :

١٠ - باب

١٠٨٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَوْمًا يُحَدِّثُ، وَعِنْدَهُ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْبَادِيَةِ: (أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ اسْتَأْذَنَ رَبَّهُ فِي الزَّرْعِ، فَقَالَ لَهُ: أَلَسْتَ فِيمَا شِئْتَ؟ قَالَ: بَلَى، وَلٰكِنِّي أُحِبُّ أَنْ أَزْرَعَ، قَالَ: فَبَذَرَ، فَبَادَرَ الطَّرْفَ نَبَاتُهُ وَاسْتِوَاؤُهُ وَاسْتِحْصَادُهُ، فَكَانَ أَمْثَالَ الْجِبَالِ، فَيَقُولُ ٱللهُ تَعَالَى: دُونَكَ يَا ابْنَ آدَمَ، فَإِنَّهُ لاَ يُشْبِعُكَ شَيْءٌ). فَقَالَ الأَعْرَابِيُّ: وَٱللهِ لاَ تَجِدُهُ إِلاَّ قُرَشِيًّا أَوْ أَنْصَارِيًّا، فَإِنَّهُمْ أَصْحَابُ زَرْعٍ، وَأَمَّا نَحْنُ فَلَسْنَا بِأَصْحَابِ زَرْعٍ، فَضَحِكَ النَّبِيُّ ﷺ. [رواه البخاري: ٢٣٤٨]

1087 : अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन गुफ्तगू फरमा रहे थे, जबकि एक देहाती भी आपके पास बैठा हुआ था। आपने फरमाया कि एक आदमी जन्नत में अपने रब से खेती-बाड़ी करने की इजाजत मांगेगा। रब फरमायेगा क्या तू मौजूद हालात में खुश नहीं है? वह अर्ज करेगा, क्यों नहीं। खुश तो हूँ, लेकिन खेती बाड़ी करना चाहता हूँ। आपने फरमाया, जब वह बीज बोयेगा तो उसका उगना, बढ़ना और कटने के लायक होना, पलक झपकने से भी पहले हो जायेगा और पैदावार के ढ़ेर पहाड़ों के बराबर होंगे। फिर अल्लाह तआला

फरमायेगा, ऐ इब्ने आदम! ले क्योंकि तू किसी चीज से सैर नहीं होता। फिर देहाती ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप ऐसा आदमी कुरैश या अनसार में पायेंगे क्योंकि वही लोग खेती बाड़ी करते हैं। हम तो खेती वाले नहीं हैं, इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुस्कुरा दिये।

फायदे : इमाम बुखारी का इस हदीस को लाने का मतलब यह मालूम होता है कि ठेके या बटाई पर जमीन देने से मना की हदीसे हराम होने पर दलालत नहीं करतीं, बल्कि इख्लाकी तौर पर लोगों को हमदर्दी पर उभारने के लिए हैं, क्योंकि जमीन के बारे में इस किस्म की लालच पर रोक नहीं लगायी जा सकती, बल्कि जन्नत में भी अगर कोई इस किस्म की लालच पर ख्वाहिश का इजहार करेगा तो उसे पूरा करने का मौका दिया जायेगा। वल्लाहु आलम!

(औनुलबारी, 3/196)



किताबुल मसाकात

मसाकात का बयान

मसाकात दर हकीकत मुजारअत की एक किस्म है, फर्क यह है कि खेती-बाड़ी जमीन में होती है और मसाकात बागात में। यानी एक आदमी का बाग हो, दूसरा इसकी निगहबानी करे, फिर फलों को तयशुदा हिस्से के मुताबिक तकसीम कर लिया जाये, खेतीबाड़ी की तरह यह भी जाइज है।

बाब 1 : पानी की तकसीम का बयान।

١ - باب: في الشرب

1088 : सहल बिन साद रजि. से रिवायत है, इन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पानी का एक बड़ा प्याला लाया गया, आपने उसमें से पीया। उस वक्त आपके दायें तरफ एक कम उम्र लड़का बैठा हुआ था, जबकि बायें तरफ सब बड़े लोग थे। आपने उस लड़के से फरमाया, ऐ लड़के! क्या तू इजाजत देता है कि मैं बाकी पानी इन बड़े लोगों को दे दूं? उसने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपसे बचे हुये पानी पर अपने ऊपर किसी और को फजीलत नहीं दे सकता, चूनांचे आपने वो प्याला उसको दे दिया।

١٠٨٨ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِقَدَحٍ فَشَرِبَ مِنْهُ، وَعَنْ يَمِينِهِ غُلاَمٌ أَصْغَرُ الْقَوْمِ، وَالأَشْيَاخُ عَنْ يَسَارِهِ، فَقَالَ: (يَا غُلاَمُ، أَتَأْذَنُ لِي أَنْ أُعْطِيَهُ الأَشْيَاخَ). قَالَ: مَا كُنْتُ لأُوثِرَ بِفَضْلِي مِنْكَ أَحَدًا يَا رَسُولَ ٱللهِ، فَأَعْطَاهُ إِيَّاهُ. [رواه البخاري: ٢٣٥١]

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि पानी की तकसीम हो सकती है और तकसीम में पहले दायीं तरफ वालों का हक है। (औनुलबारी, 3/197)

١٠٨٩ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: حَلَبْتُ لِرَسُولِ ٱللهِ صَلَّى ٱللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَاةً دَاجِنٍ، فِي دَارِي، وَشِيبَ لَبَنُهَا بِمَاءٍ مِنَ الْبِئْرِ الَّتِي فِي دَارِي، فَأَعْطَى رَسُولَ ٱللهِ ﷺ الْقَدَحَ فَشَرِبَ مِنْهُ، حَتَّى إِذَا نَزَعَ الْقَدَحَ مِنْ فِيهِ، وَعَلَى يَسَارِهِ أَبُو بَكْرٍ، وَعَنْ يَمِينِهِ أَعْرَابِيٌّ، فَقَالَ عُمَرُ، وَخَافَ أَنْ يُعْطِيَهُ الأَعْرَابِيَّ: أَعْطِ أَبَا بَكْرٍ يَا رَسُولَ ٱللهِ عِنْدَكَ، فَأَعْطَاهُ الأَعْرَابِيَّ الَّذِي عَلَى يَمِينِهِ، ثُمَّ قَالَ: (الأَيْمَنَ فَالأَيْمَنَ). [رواه البخاري: ٢٣٥٢]

1089 : अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने अपने घर की एक पालतू बकरी का दूध दूहा और घर वाले कुऐ का पानी लिया और उसमें मिला दिया, फिर उसे एक प्याले में डालकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने पेश किया, जिसे आपने पिया। जब आपने प्याला मुंह से अलग किया तो उस वक्त आपके बायीं तरफ देहाती बैठा था। उमर रजि. ने इस अन्देशा के पैश नजर कि आप अपना बचा हुआ देहाती को दे देगें, अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अबू बकर रजि. को दीजिए जो आपके पास ही बैठे हैं, मगर आपने अपना बचा हुआ अपने दायीं तरफ बैठने वाले देहाती को देते हुए फरमाया, दायीं तरफ वाला ज्यादा हकदार है, फिर जो इसके दायीं तरफ हो।

फायदे : एक रिवायत में है कि हजरत अनस रजि. ने फरमाया, यह सुन्नत है, यह सुन्नत है, यह सुन्नत है। यानी दायीं तरफ वाले को पहले दिया जाये, अगरचे वो मकाम और दर्जा के लिहाज से कमतर ही क्यों न हो, अगर मौजूद लोग सामने हो तो बड़ों का ख्याल रखा जाये। (औनुलबारी, 3/198)

बाब 2 : पानी का मालिक सैराब (लबालब) होने तक पानी का ज्यादा हकदार है।

٢ - باب: مَنْ قَال إنَّ صَاحِبَ الماءِ أحَقُّ بِالمَاءِ حَتَّى يَرْوَى

1090 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि घास को रोकने के लिए जरूरत से ज्यादा पानी न रोका जाये।

١٠٩٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لا يُمْنَعُ فَضْلُ المَاءِ لِيُمْنَعَ بِهِ الْكَلأُ). [رواه البخاري: ٢٣٥٣]

फायदे : इसका मतलब यह है कि किसी आदमी का कुवां ऐसी जगह पर हो, जहां इसके ईद-गिर्द ज्यादा घास उगी हुई हो, वहां सब लोग अपने जानवर चराने का हक रखते हों, लेकिन कुए का मालिक किसी को कुए से पानी न पीने दे, ताकि इस बहाने वो घास भी महफूज रहे, यह नाजाइज है। (औनुलबारी, 3/200)

1091 : अबू हुरैरा रजि. ही से एक और रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जरूरत से ज्यादा घास को रोकने के लिए जरूरत से ज्यादा पानी मत रोको।

١٠٩١ : وفي رواية عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لاَ تَمْنَعُوا فَضْلَ المَاءِ لِتَمْنَعُوا بِهِ فَضْلَ الْكَلإِ) [رواه البخاري: ٢٣٥٤]

फायदे : जरूरत से ज्यादा पानी रोकना गोया उस घास से रोकना है, जो वहां उगी हुई है। इब्ने हिब्बान की एक रिवायत में घास न रोकने की सराहत भी है, इसलिए जाती जरूरियात और खेती-बाड़ी व हैवानात से ज्यादा पानी रोकना जाइज नहीं है।

(औनुलबारी, 3/201)

बाब 3 : कुऐ के मुताल्लिक झगड़ना और इसका फैसला करने का बयान।

٣ - باب: الخُصُومَةُ فِي البِئْرِ وَالْقَضَاءُ فِيهَا

١٠٩٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ يَقْتَطِعُ بِهَا مَالَ ٱمْرِئٍ مُسْلِمٍ، هُوَ عَلَيْهَا فَاجِرٌ، لَقِيَ ٱللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ). فَأَنْزَلَ ٱللهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ ٱللَّهِ وَأَيْمَٰنِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا﴾. الآيَةَ، فَجَاءَ الأَشْعَثُ فَقَالَ: ما يُحَدِّثُكُمْ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمٰنِ؟ فِيَّ أُنْزِلَتْ هٰذِهِ الآيَةُ، كَانَتْ لِي بِئْرٌ فِي أَرْضِ ابْنِ عَمٍّ لِي، فَقَالَ لِي: (شُهُودَكَ). قُلْتُ: مَا لِي شُهُودٌ، قَالَ: (فَيَمِينُهُ). قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِذًا يَحْلِفَ، فَذَكَرَ النَّبِيُّ ﷺ هٰذَا الحَدِيثَ، فَأَنْزَلَ ٱللهُ ذٰلِكَ تَصْدِيقًا لَهُ. [رواه البخاري: ٢٣٥٦، ٢٣٥٧]

1092 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है कि वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया जो किसी मुसलमान का माल हथियाने के लिए झूठी कसम उठाये तो वो अल्लाह से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह उससे नाराज होगा। चूनांचे अल्लाह तआला ने यह आयत नाजिल फरमायी है, जो लोग अल्लाह के वास्ते से झूठी कसमें उठाकर दुनिया का थोड़ा सा माल लेते हैं..... आखिर तक (आले इमरान) इस दौरान अशअस रजि. आ गये और उन्होंने पूछा कि अबू अब्दुल रहमान यानी अब्दुल्लाह बिन मसउद रजि. तुम से क्या बयान करते हैं? यह आयत तो मेरे हक में नाजिल हुई है, क्योंकि मेरे चचाजाद भाई की जमीन में मेरा एक कुंवा था। (इसके मालिकाना हक पर झगड़ा हुआ) तो आपने फरमाया, तुम अपने गवाह पैश करो। मैंने कहा, मेरा तो कोई गवाह नहीं है। आपने फरमाया तो फिर दूसरे फरीक से कसम ली जायेगी। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! वो तो कसम उठा लेगा, तब आपने यह हदीस बयान फरमायी और अल्लाह तआला ने आपकी सच्चाई के लिए यह आयत नाजिल फरमायी।

फायदे : माल पर नाजायज कब्जा करने के बारे में मुसलमान की शर्त आम हालत के पैश नजर है। वरना किसी के माल पर नाजाइज कब्जा करने की इस्लाम इजाजत नहीं देता, चाहे वो टैक्स देकर रहने वाले काफिर या जिस काफिर से वादा किया गया हो, वही क्यों न हो। (औनुलबारी, 3/203)

---

٤ - باب: إِثْمِ مَنْ مَنَعَ ابْنَ السَّبِيلِ مِنَ الْمَاءِ

बाब 4 : उस आदमी का गुनाह जो किसी मुसाफिर को पानी से रोके।

١٠٩٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (ثَلاَثَةٌ لاَ يَنْظُرُ ٱللهُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلاَ يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ: رَجُلٌ كانَ لَهُ فَضْلُ ماءٍ بِالطَّرِيقِ فَمَنَعَهُ مِنِ ابْنِ السَّبِيلِ، وَرَجُلٌ بَايَعَ إِمَامًا لاَ يُبَايِعُهُ إِلاَّ لِدُنْيَا، فَإِنْ أَعْطَاهُ مِنْهَا رَضِيَ وَإِنْ لَمْ يُعْطِهِ مِنْهَا سَخِطَ، وَرَجُلٌ أَقامَ سِلْعَتَهُ بَعْدَ الْعَصْرِ فَقَالَ: وَٱللهِ الَّذِي لاَ إِلٰهَ غَيْرُهُ، لَقَدْ أَعْطَيْتُ بِهَا كَذَا وَكَذَا، فَصَدَّقَهُ رَجُلٌ). ثُمَّ قَرَأَ هٰذِهِ الآيَةَ: ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ ٱللَّهِ وَأَيْمَٰنِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا﴾. [رواه البخاري: ٢٣٥٨]

1093 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला कयामत के दिन तीन आदमियों पर नजरे करम नहीं करेगा, और ना ही उनको गुनाहों से पाक करेगा। पहला उनके लिए दर्दनाक अजाब होगा, एक तो वो आदमी जिसके यहां गुजरगाह के पास जरूरत से ज्यादा पानी हो, वो इससे मुसाफिर को रोके, दूसरा वो आदमी जो किसी इमाम से महज दुनिया की दौलत हासिल करने के लिए बैअत करे। अगर वो इसे कुछ हिस्सा दे दे तो खुश रहे। अगर ना दे तो नाराज हो जाये और तीसरा वो आदमी जो असर के बाद अपना माल बेचने खड़ा हो और यूं कहे कि अल्लाह की कसम जिस के सिवा कोई माबूद हकीकी नहीं। इस माल की मुझे इतनी कीमत मिल रही है (लेकिन मैंने नहीं दिया) और किसी ने

इसे सच्चा समझ कर इससे वो चीज खरीद ली। इसके बाद आपने यह आयत तिलावत फरमायी, वो लोग जो अल्लाह का वास्ता देकर और झूठी कसमें उठाकर दुनिया का थोड़ा माल लेते हैं.... आखिर तक आयत"

फायदे : अगर किसी के पास जरूरत के मुताबिक पानी है तो वो मुसाफिर से ज्यादा उसका हकदार है।

बाब 5 : पानी पिलाने की फजीलत।

٥ - باب: فَضْلُ سَقْيِ المَاءِ

1094 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि एक आदमी चला जा रहा था, उसे जब बहुत जोर की प्यास लगी तो वो कुऐं में उतरा और पानी पिया। वहां से निकला तो देखा कि एक कुत्ता प्यास से हांप रहा है और गीली जमीन चाट रहा है, उस आदमी ने अपने दिल में कहा, आखिर इसे भी वही तकलीफ होगी जो मुझे थी, उसने अपना मौजा पानी से भरा। फिर दांतों से पकड़कर ऊपर चढ़ा और उस कुत्ते को पिलाया। अल्लाह तआला ने उसका यह काम पसन्द फरमाया और उसे बख्श दिया। सहाबा किराम ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या जानवर की खिदमत से हमें सवाब मिलेगा। आपने फरमाया, हां हर जानदार की खिदमत में सवाब है।

١٠٩٤ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (بَيْنَا رَجُلٌ يَمْشِي، فَٱشْتَدَّ عَلَيْهِ العَطَشُ، فَنَزَلَ بِئْرًا فَشَرِبَ مِنْهَا، ثُمَّ خَرَجَ فَإِذَا هُوَ بِكَلْبٍ يَلْهَثُ، يَأْكُلُ الثَّرَى مِنَ العَطَشِ، فَقَالَ: لَقَدْ بَلَغَ هٰذَا مِثْلَ الَّذِي بَلَغَ بِي، فَمَلأَ خُفَّهُ ثُمَّ أَمْسَكَهُ بِفِيهِ، ثُمَّ رَقِيَ فَسَقَى الْكَلْبَ، فَشَكَرَ ٱللهُ لَهُ فَغَفَرَ لَهُ). قَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، وَإِنَّ لَنَا فِي الْبَهَائِمِ أَجْرًا؟ قَالَ: (فِي كُلِّ كَبِدٍ رَطْبَةٍ أَجْرٌ).
[رواه البخاري: ٢٣٦٣]

फायदे : इस हदीस से पानी पिलाने की फजीलत मालूम होती है, अगर

किसी आदमी के गुनाह ज्यादा हों तो उसे भी दूसरों को पानी पिलाने का ख्याल करना चाहिए। अगर कुत्ते को पानी पिलाने से बख्शीश हासिल हो सकती है तो किसी मुसलमान के लिए यह ख्याल करना बहुत ही सवाब का काम है। (औनुलबारी, 3/207)

बाब 6 : हौज और मश्क (चमड़े का बर्तन) का मालिक अपने पानी का ज्यादा हकदार है।

٦ - باب: مَنْ رَأَى أَنَّ صَاحِبَ الحَوْضِ أَوِ القِرْبَةِ أَحَقُّ بِمَائِهِ

1095 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, मुझे उस जात की कसम! जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं कयामत के दिन अपने हौजे कौशर से कुछ लोगों को इस तरह हटाऊंगा, जैसे अजनबी ऊंट हौज से रोक दिये जाते हैं।

١٠٩٥ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لأَذُودَنَّ رِجَالًا عَنْ حَوْضِي، كما تُذَادُ الغَرِيبَةُ مِنَ الإِبِلِ عَنِ الحَوْضِ). [رواه البخاري: ٢٣٦٧]

फायदे : इस हदीस में हौज की निसबत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ की गयी है। जिसका मतलब यह है कि आप ही इस के हकदार थे और जो लोग दुनिया में मुनाफिक और बिदअती रहे हैं, वो उस हौज से महरूम रहेंगे।

(औनुलबारी, 3/208)

1096 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, तीन आदमी ऐसे हैं जिनसे अल्लाह कयामत के दिन

١٠٩٦ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (ثَلاَثَةٌ لاَ يُكَلِّمُهُمُ ٱللهُ يَوْمَ القِيَامَةِ وَلاَ يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ: رَجُلٌ حَلَفَ عَلَى سِلْعَةٍ لَقَدْ أَعْطِي بِهَا أَكْثَرَ مِمَّا أَعْطِي وَهُوَ كَاذِبٌ،

وَرَجُلٌ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ كَاذِبَةٍ بَعْدَ الْعَصْرِ لِيَقْتَطِعَ بِهَا مَالَ رَجُلٍ مُسْلِمٍ، وَرَجُلٌ مَنَعَ فَضْلَ مَائِهِ فَيَقُولُ ٱللهُ: الْيَوْمَ أَمْنَعُكَ فَضْلِي كَمَا مَنَعْتَ فَضْلَ مَا لَمْ تَعْمَلْ يَدَاكَ). [رواه البخاري: ٢٣٦٩]

न बात करेगा और न ही नजरे रहमत से देखेगा। एक वो जिसने अपने माल पर कसम उठायी हो कि उसे इतनी ज्यादा कीमत मिल रही है। हालांकि वो झूटा हो। दूसरा जिसने किसी मुसलमान का माल हड़प करने के लिए असर के बाद झूटी कसम उठायी, तीसरा वो आदमी जो अपनी जरूरत से ज्यादा पानी लोगों से रोके, अल्लाह तआला उससे फरमायेगा कि आज मैं तुझे उसी तरह अपने फजल से महरूम रखता हूं, जिस तरह तूने लोगों को फालतू पानी से महरूम किया था। हालांकि उसे तूने पैदा नहीं किया था।

फायदे : उस आदमी को जरूरत से ज्यादा पानी रोकने पर सजा मिलेगी, इसका मतलब यह है कि जरूरत के हिसाब से पानी रोकना जाइज था, क्योंकि वो उसका हकदार था। निज हदीस के आखिरी अल्फाज से भी मालूम होता है कि अगर किसी ने मेहनत से पानी निकाला हो तो वो उसका हकदार है।

(औनुलबारी, 3/209)

बाब 7 : सरकारी चरागाह तो सिर्फ अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हैं।

٧ - باب: لاَ حِمَى إِلَّا لله وَرَسُولِهِ

١٠٩٧ : عَنِ الصَّعْبِ بْنِ جَثَّامَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لاَ حِمَى إِلاَّ لله وَلِرَسُولِهِ). [رواه البخاري: ٢٣٧٠]

1097 : साब बिन जसशामा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, चरागाह तो अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ही हैं।

फायदे : जंगलात, पहाड़ों की चोटियां और घाटिया, निज बरसाती नालों के इर्द-गिर्द शिकारगाहें हुकूमत वक्त की जायदाद होती हैं। किसी दूसरे को वहां कब्जा करने की इजाजत नहीं, क्योंकि वो सरकारी कामों और आवाम के जरूरी कामों के लिए हैं।

(औनुलबारी, 3/210)

बाब 8 : नहरों से इन्सानों और चौपायों (जानवरों) का पानी पीना दुरूस्त है।

٨ - باب: شُرْبِ النَّاسِ وَسَقْيِ الدَّوَابِ مِنَ الأَنْهَارِ

1098 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, घोड़ा कुछ लोगों के लिए सवाब का जरीया, कुछ के लिए पर्दे का जरीया और कुछ के लिए मुसीबत का जरीया है, सवाब का जरीया उस आदमी के लिए है, जिसने इसे अल्लाह की राह में बांधे रखा। उसकी रस्सी को किसी चरागाह या बाग में लम्बा कर दिया और रस्सी की लम्बाई तक चरागाह या बाग के जिस कद्र मैदान में फिरेगा, उसके बदले उसे नेकियां मिलेगी अगर उसकी रस्सी टूट जाये और वो एक या दो टीलों तक दौड़ जाये तो भी उनके पैरों के निशान और

١٠٩٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (الخَيْلُ لِرَجُلٍ أَجْرٌ، وَلِرَجُلٍ سِتْرٌ، وَعَلَى رَجُلٍ وِزْرٌ: فَأَمَّا الَّذِي لَهُ أَجْرٌ، فَرَجُلٌ رَبَطَهَا فِي سَبِيلِ ٱللهِ، فَأَطَالَ بِهَا فِي مَرْجٍ أَوْ رَوْضَةٍ، فَمَا أَصَابَتْ فِي طِيَلِهَا ذٰلِكَ مِنَ المَرْجِ أَوِ الرَّوْضَةِ كَانَتْ لَهُ حَسَنَاتٍ، وَلَوْ أَنَّهُ ٱنْقَطَعَ طِيَلُهَا، فَٱسْتَنَّتْ شَرَفًا أَوْ شَرَفَيْنِ، كَانَتْ آثَارُهَا وَأَرْوَاثُهَا حَسَنَاتٍ لَهُ، وَلَوْ أَنَّهَا مَرَّتْ بِنَهْرٍ فَشَرِبَتْ مِنْهُ، وَلَمْ يُرِدْ أَنْ يَسْقِيَ كَانَ ذٰلِكَ حَسَنَاتٍ لَهُ، فَهِيَ لِذٰلِكَ أَجْرٌ. وَرَجُلٌ رَبَطَهَا تَغَنِّيًا وَتَعَفُّفًا، ثُمَّ لَمْ يَنْسَ حَقَّ ٱللهِ فِي رِقَابِهَا، وَلَا ظُهُورِهَا، فَهِيَ لِذٰلِكَ سِتْرٌ. وَرَجُلٌ رَبَطَهَا فَخْرًا وَرِيَاءً وَنِوَاءً لِأَهْلِ الإِسْلَامِ، فَهِيَ عَلَى ذٰلِكَ وِزْرٌ). وَسُئِلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَنِ الحُمُرِ؟،

فَقَالَ: (ما أُنْزِلَ عَلَيَّ فِيهَا شَيْءٌ إِلَّا هٰذِهِ الآيَةُ الجَامِعَةُ الفَاذَّةُ: ﴿فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۝ وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ﴾). [رواه البخاري: ٢٣٧١]

लीद वगैरह भी उसके लिए नेकियां शुमार होगी और अगर उसका गुजर किसी नहर पर हो, उसने वहां से पानी पिया, अगरचे उसके मालिक का इरादा पानी पिलाने का ना था, तब भी नेकियां लिख ली जायेंगी। पस इस किस्म का घोड़े मालिक के लिए सवाब का जरीया है और जिस आदमी ने रूपया कमाने और सवाल से बचने के लिए घोड़ा बांधा और वो उसकी जात और उसकी सवारी में अल्लाह के हक को भी अदा करता हो तो यह घोड़ा उसके लिए बचाव का जरीया है और जो आदमी सिर्फ फख्र व दिखावे और मुसलमानों को नुकसान पहुंचाने के लिए घोड़ा बांधता हो वो उसके लिए अजाब और मुसीबत है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से गधों के मुताल्लिक पूछा गया तो आपने फरमाया, गधों के मुताल्लिक खास तौर पर मुझ पर कुछ नाजिल नहीं हुआ। मगर यह आयत जो जामेअ तरीन है।

जो कोई जर्रा भर भलाई करेगा, वो उसको देख लेगा और जो कोई जर्रा बराबर बुराई करेगा, वो भी उसे देख लेगा।

फायदे : इमाम बुखारी का मतलब यह है कि जो नहरें रास्ते पर वाकअ हो, उनसे इन्सान और हैवान सब पानी पी सकते हैं, वो किसी के लिए खास नहीं हैं। (औनुलबारी, 3/212)

बाब 9 : ईधन और घास फरोख्त करना।

٩ - باب: بَيْعُ الحَطَبِ وَالكَلَإِ

١٠٩٩ : عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: أَصَبْتُ شَارِفًا مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي مَغْنَمٍ

1099 : अली बिन अबी तालिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

يَوْمَ بَدْرٍ، قَالَ: وَأَعْطَانِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ شَارِفًا أُخْرَى، فَأَنَخْتُهُمَا يَوْمًا عِنْدَ بَابِ رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ، وَأَنَا أُرِيدُ أَنْ أَحْمِلَ عَلَيْهِمَا إِذْخِرًا لأَبِيعَهُ، وَمَعِيَ صَائِغٌ مِنْ بَنِي قَيْنُقَاعَ، فَأَسْتَعِينُ بِهِ عَلَى وَلِيمَةِ فَاطِمَةَ، وَحَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ المُطَّلِبِ يَشْرَبُ فِي ذٰلِكَ الْبَيْتِ مَعَهُ قَيْنَةٌ، فَقَالَتْ: أَلاَ يَا حَمْزُ لِلشُّرُفِ النِّوَاءِ. فَثَارَ إِلَيْهِمَا حَمْزَةُ بِالسَّيْفِ، فَجَبَّ أَسْنِمَتَهُمَا وَبَقَرَ خَوَاصِرَهُما، ثُمَّ أَخَذَ مِنْ أَكْبَادِهِما. قَالَ عَلِيٌّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: فَنَظَرْتُ إِلَى مَنْظَرٍ أَفْظَعَنِي، فَأَتَيْتُ نَبِيَّ ٱللهِ ﷺ وَعِنْدَهُ زَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ، فَأَخْبَرْتُهُ الخَبَرَ، فَخَرَجَ وَمَعَهُ زَيْدٌ، فَٱنْطَلَقْتُ مَعَهُ، فَدَخَلَ عَلَى حَمْزَةَ، فَتَغَيَّظَ عَلَيْهِ، فَرَفَعَ حَمْزَةُ بَصَرَهُ وَقَالَ: هَلْ أَنْتُمْ إِلاَّ عَبِيدٌ لآبَائِي، فَرَجَعَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُقَهْقِرُ حَتَّى خَرَجَ عَنْهُمْ، وَذٰلِكَ قَبْلَ تَحْرِيمِ الخَمْرِ. [رواه البخاري: ٢٣٧٥]

अलैहि वसल्लम के साथ बदर के माले गनीमत से एक ऊंटनी मिली और एक ऊंटनी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे दी। मैंने एक दिन उन दोनों ऊंटनियों को एक अन्सारी आदमी के दरवाजे पर बैठाया। मेरा इरादा था कि इन पर इजखिर घास लादकर फरोख्त करूं। उस वक्त मेरे साथ बनी कैनुका का एक सुनार भी था। मैं इस काम से फातिमा रजि. से निकाह करके वलीमें के लिए खरचा बना रहा था, जबकि हमजा बिन अब्दुल मुतल्लिब रजि. उस घर में शराब पी रहे थे और उनके पास एक गाने वाली औरत यह गा रही थी। हमजा उठो, उन मोटे ऊंटों को पकड़ो और जिब्ह करो। यह सुनकर हमजा ने तलवान पकड़ी और उन दोनों ऊंटनियां की तरफ बढ़े और उनके कुबड़ काट लिये और पेट फाड़कर उनकी कलेजियां निकाल लीं। अली रजि. का बयान है कि मैं इस मन्जर से खौफजदा होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गया, वहां जैद बिन हारिसा रजि. भी मौजूद थे। मैंने यह सारा वाक्या आपको कह सुनाया। आप उस वक्त बाहर निकल आये। जैद बिन हारिसा रजि. और मैं भी आपके साथ चले।

आपने हमजा रजि. के पास पहुंचकर उन पर बहुत गुस्सा किया। हमजा रजि. ने आंख उठाकर नशे की हालत में कहा, तुम लोग तो मेरे बाप दादा के गुलाम हो। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खामोश वापिस आ गये। यह वाक्या शराब के हराम होने से पहले का है।

फायदे : मालूम हुआ कि बंजर जमीन में जो घास, ईधन और पानी वगैरह होता है, उससे हर आदमी फायदा उठा सकता है। अलबत्ता किसी की जमीन में किसी चीज से फायदा उठाने के लिए मालिक से इजाजत लेना जरूरी है।

बाब 10 : जागीर लिखकर देना।

١٠ - باب: القَطَائِعُ

1100 : अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अन्सार को बहरेन की जागीर देना चाही तो अन्सार ने कहा, हम उस वक्त तक यह जागीर नहीं लेंगे, जब तक कि आप मुहाजिर भाईयों को भी वैसी ही जागीर न दें। आपने फरमाया, तुम मेरे बाद यह देखोगे कि दूसरे लोगों को तुम पर आगे रखा जायेगा, लिहाजा ऐसे हालात में मुझ से मिलने तक सब्र व शुक्र से काम लेना।

١١٠٠ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَرَادَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُقْطِعَ مِنَ الْبَحْرَيْنِ، فَقَالَتِ الأَنْصَارُ: حَتَّى تُقْطِعَ لإِخْوَانِنَا مِنَ الْمُهَاجِرِينَ مِثْلَ الَّذِي تُقْطِعُ لَنَا، قَالَ: (سَتَرَوْنَ بَعْدِي أَثَرَةً، فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي). [رواه البخاري: ٢٣٧٦]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अन्सार को सब्र करने के लिए कहा, जिसका मतलब यह मालूम होता है कि उन्हें हुकूमत से कयामत तक महरूम रखा जायेगा, चूनांचे अन्सार ने इस हदीस के मुताबिक सब्र से काम लेना और खलिफा वक्त की इताअत की। (औनुलबारी, 3/126)

बाब 11 : जिस आदमी के बाग में गुजरगाह या नखलिस्तान में चश्मा हो तो उसका क्या हुक्म है।

١١ - باب: الرَّجُلُ يَكُونُ لَهُ ممرٌّ أَوْ شِرْبٌ فِي حَائِطٍ أَوْ نَخْلٍ

1101 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुये सुना जो आदमी पैवन्द किये जाने के बाद खजूर का पेड़ खरीदे तो उसका फल बेचने वाले को मिलेगा, जब खरीददार ने इसकी शर्त कर ली हो।

١١٠١ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (مَنِ ٱبْتَاعَ نَخْلًا بَعْدَ أَن تُؤَبَّرَ فَثَمَرَتُهَا لِلْبَائِعِ إِلَّا أَنْ يَشْتَرِطَ المُبْتَاعُ، وَمَنِ ٱبْتَاعَ عَبْدًا وَلَهُ مالٌ فَمَالُهُ لِلَّذِي بَاعَهُ إِلَّا أَنْ يَشْتَرِطَ المُبْتَاعُ). [رواه البخاري: ٢٣٧٩]

फायदे : इमाम बुखारी का मतलब यह है कि अगर किसी चीज में दो हक जमा हो जायें, मसलन किसी बाग के मुताल्लिक कब्जे का हक और नफा का हक जमा हों तो नफे का हक रखने वाले के लिए मालिक की तरफ से किसी किस्म की रूकावट नहीं होनी चाहिए। यानी बाग को पानी देने और फल तोड़ने के लिए रास्ता देने की सहुलियत देनी चाहिए।



किताब फिल इस्तेकराजे वदाइदयूने वलहजरी वत्तफलीसी

कर्ज लेना और कर्जा अदा करना, फिजूल खर्ची से रोकना और दिवालिया करार देना

١ - باب: مَنْ أخَذَ أمْوَالَ النَّاسِ يُرِيدُ أدَاءَهَا أوْ إتْلاَفَهَا

बाब 1 : जो आदमी लोगों से अदायगी या बरबादी की नियत से कर्ज ले।

١١٠٢ : عَنْ أبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ أخَذَ أمْوَالَ النَّاسِ يُرِيدُ أدَاءَهَا أدَّى ٱللهُ عَنْهُ، وَمَنْ أخَذَ يُرِيدُ إتْلاَفَهَا أتْلَفَهُ ٱللهُ). [رواه البخاري: ٢٣٨٧]

1102 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जो आदमी लोगों से इस नियत से कर्ज ले कि वो इन्हें अदा करेगा तो अल्लाह तआला उसे अदा करने की तौफीक से नवाजेगा और जो आदमी लोगों का माल बर्बाद कर देने के इरादे से लेगा तो अल्लाह उसको बर्बाद कर देगा।

फायदे : अदायगी की नियत से कर्ज लेने वाले की अल्लाह जरूर मदद करता है, यानी दुनिया में ही उसकी अदायगी के असबाब पैदा कर देता है, अगर तंगी की वजह से अदा ना कर सके तो कयामत के दिन उसके कर्ज वाले को अल्लाह तआला खुश करके जिस पर कर्ज था, उसको रिहाई दिलायेगा।

---

٢ - باب: أدَاءُ الدُّيُونِ

बाब 2 : कर्जों का अदा करना।

1103 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था, आपने उहूद पहाड़ को देख फरमाया, मैं नहीं चाहता कि यह पहाड़ मेरे लिए सोने का बन जाये तो तीन दिन के बाद एक दीनार भी इसमें से मेरे पास बाकी रहे। मगर वो दीनार जिसे मैंने कर्ज की अदायगी के लिए रख लिया हो, फिर आपने फरमाया, देखो जो दौलतमन्द हैं, वही मोहताज हैं। मगर वो आदमी जो माल को इस तरह खर्च करे, लेकिन ऐसे लोग कम हैं। फिर आपने मुझ से फरमाया, जब तक मैं वापिस ना आऊं, तुम अपनी जगह पर ठहरे रहना। आप थोड़ी दूर आगे बढ़ गये। मैंने कुछ आवाज सुनी तो उधर जाना चाहा, लेकिन मुझे आप का फरमान याद आ गया कि यहीं ठहरे रहना, जब तक मैं तेरे पास न आ जाऊं। जब आप वापिस तशरीफ लाये तो मैंने अर्ज किया यह आवाज कैसी थी, जो मैंने सुनी? आपने फरमाया, तूने सुनी थी? मैंने कहा, जी हां। आपने फरमाया, मेरे पास जिब्राईल अलैहि॰ आये थे, उन्होंने कहा, आपकी उम्मत में से जो आदमी इस हाल मरे कि वो अल्लाह के साथ शरीक ना करता हो तो वो जन्नत में दाखिल होगा। मैंने कहा, अगरचे वो ऐसे ऐसे काम करता हो। आपने फरमाया, "हां" (ज़रूर जन्नत में जायेगा)

١١٠٣ : عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَمَّا أَبْصَرَ - يَعْنِي أُحُدًا - قَالَ: (ما أُحِبُّ أَنَّهُ يُحَوَّلُ لِي ذَهَبًا، يَمْكُثُ عِنْدِي مِنْهُ دِينَارٌ فَوْقَ ثَلاَثٍ، إِلَّا دِينَارًا أَرْصِدُهُ لِدَيْنٍ). ثُمَّ قَالَ: (إِنَّ الأَكْثَرِينَ هُمُ الأَقَلُّونَ، إِلاَّ مَنْ قَالَ بِالْمَالِ هٰكَذَا وَهٰكَذَا وَقَلِيلٌ ما هُمْ). وَقَالَ: (مَكَانَكَ). وَتَقَدَّمَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَسَمِعْتُ صَوْتًا، فَأَرَدْتُ أَنْ آتِيَهُ، ثُمَّ ذَكَرْتُ قَوْلَهُ: (مَكَانَكَ حَتَّى آتِيَكَ). فَلَمَّا جَاءَ قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، الَّذِي سَمِعْتُ؟، أَوْ قَالَ: الصَّوْتُ الَّذِي سَمِعْتُ؟ قَالَ: (وَهَلْ سَمِعْتَ؟). قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: (أَتَانِي جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ، فَقَالَ: مَنْ مَاتَ مِنْ أُمَّتِكَ لاَ يُشْرِكُ بِٱللهِ شَيْئًا دَخَلَ الجَنَّةَ. قُلْتُ: وَإِنْ فَعَلَ كَذَا وَكَذَا؟، قَالَ: نَعَمْ). [رواه البخاري: ٢٣٨٨]

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि कर्ज की अदायगी, सदका खैरात करने से पहले जरूरी है, निज इसकी अदायगी के लिए इन्सान को हर वक्त फिक्रमन्द रहना चाहिए। (औनुलबारी, 3/222)

बाब 3 : बेहतर तौर पर हक अदा करना।

٣ - باب: حُسْنُ الْقَضَاءِ

1104 : जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास मस्जिद में चाश्त (नाश्ते) के वक्त आया तो आपने फरमाया, दो रकअत नमाज पढ़ लो। फिर मेरा जो कर्ज आपके जिम्मे था, आपने अदा फरमाया और कुछ ज्यादा भी दिया।

١١٠٤ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ ضُحًى، فَقَالَ: (صَلِّ رَكْعَتَيْنِ). وَكَانَ لِي عَلَيْهِ دَيْنٌ، فَقَضَانِي وَزَادَنِي. [رواه البخاري: ٢٣٩٤]

फायदे : मालूम हुवा कि पहले से तयशुदा शर्त के बगैर अगर कर्ज लेने वाला अपने कर्ज देने वाले को कोई इजाफा देता है तो वो सूद नहीं है, सूद यह है कि कर्ज देते वक्त इजाफे की शर्त तय की जाये। (औनुलबारी, 3/223)

बाब 4 : कर्ज वाले की नमाजे जनाजा पढ़ना।

٤ - باب: الصَّلاةُ عَلَى مَنْ تَرَكَ دَيْناً

1105 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं मौमिन का दुनिया व आखिरत में सब से ज्यादा करीबी दोस्त हूँ। तुम अगर

١١٠٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (ما مِنْ مُؤْمِنٍ إِلاَّ وَأَنَا أَوْلَى بِهِ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، اقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ: ﴿النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ﴾، فَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ ماتَ وَتَرَكَ مالًا فَلْيَرِثْهُ عَصَبَتُهُ مَنْ كانُوا، وَمَنْ تَرَكَ دَيْنًا أَوْ ضَيَاعًا

चाहो तो यह आयत पढ़ो, "पैगम्बर अहले ईमान से खुद इनसे भी ज्यादा ताल्लुक रखते हैं।" लिहाजा जो कोई मौमिन मर जाये और माल छोड़ जाये वो उसके वारिसों को मिलेगा जो भी हों, और जिसने कर्ज या औलाद छोड़े वो मेरे पास आ जाये, मैं उसका बन्दोबस्त करूंगा।

فَلْيَأْتِنِي، فَأَنَا مَوْلاَهُ). [رواه البخاري ٢٣٩٩]

फायदे : शुरू में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कर्ज वाले की नमाजे जनाजा ना पढ़ते थे, ताकि लोगों को कर्ज लेने की संगीनी से खबरदार करें, जंगे जीतने के बाद जब मुसलमानों की माली हालत बदल गयी तो कर्ज लेने वाले पर जनाजा पढ़ने लगे, मालूम हुवा कि कर्ज लेने से दीन में कोई खलल नहीं आता कि इसका जनाजा ही न पढ़ा जाये। (औनुलबारी, 3/225)

बाब 5 : माल को बर्बाद करना मना है।

٥ - باب: مَا يُنْهَىٰ عَنْ إِضَاعَةِ المَالِ

1102 : मुगीरा बिन शोबा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने तुम पर मांओं की नाफरमानी और लड़कियों को जिन्दा दफन करना हराम कर दिया है। खुद तो ना देना और दूसरों से मांगने से भी मना फरमाया है और तुम्हारे लिये फिजूल बक-बक, ज्यादा सवाल और बरबादी माल को नापसन्द किया है।

١١٠٦ : عَنِ المُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّ ٱللهَ حَرَّمَ عَلَيْكُمْ: عُقُوقَ الأُمَّهَاتِ وَوَأْدَ البَنَاتِ، وَمَنْعَ وَهَاتِ، وَكَرِهَ لَكُمْ: قِيلَ وَقَالَ، وَكَثْرَةَ السُّؤَالِ، وَإِضَاعَةَ المَالِ). [رواه البخاري: ٢٤٠٨]

फायदे : शरीअत के खिलाफ खर्ज करना अपने माल को जाया करने के बराबर है, अलबत्ता दीनी कामों में दिल खोलकर खर्च करना चाहिए, अपनी हैसियत के मुताबिक अपनी जात पर खर्च करना भी फिजूल खर्ची नहीं, अलबत्ता बिला जरूरत खर्च करना शरीअत के खिलाफ है। (औनुलबारी, 3/227)



किताबुल खुसूमात
झगड़ों के बयान

बाब 1 : किसी आदमी को गिरफ्तार करने, और मुसलमान और यहूदी के बीच झगड़े के बाबत क्या बयान है?

١ - باب: ما يُذْكَرُ فِي الأشْخَاصِ وَالخُصُومَةِ بَيْنَ المُسْلِمِ واليَهُودِ

1107 : अब्दुल्लाह बिन मसउद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने एक आदमी को एक आयत पढ़ते सुना। जबकि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसके खिलाफ सुना था। लिहाजा मैंने उसका हाथ पकड़ा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ले गया। आपने फरमाया, तुम दोनों अच्छा और दुरूस्त पढ़ते हो, लेकिन इख्तेलाफ न करो, क्योंकि तुमसे पहले लोग इख्तेलाफ ही की वजह से हलाक हुये।

١١٠٧ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَجُلًا قَرَأَ آيَةً، سَمِعْتُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ خِلاَفَهَا، فَأَخَذْتُ بِيَدِهِ، فَأَتَيْتُ بِهِ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، فَقَالَ: (كِلاَكُمَا مُحْسِنٌ لاَ تَخْتَلِفُوا، فَإِنَّ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمُ ٱخْتَلَفُوا فَهَلَكُوا). [رواه البخاري: ٢٤١٠]

फायदे : एक दूसरे से नाहक झगड़ना इख्तेलाफ है, जिससे मना किया गया है। इमाम बुखारी का मकसद यह है कि जब बजाते खुद कुरआन गलत पढ़ने वाले को गिरफ्तार किया जा सकता है तो अपना हक लेने के लिए किसी को गिरफ्तार करने में कोई हर्ज नहीं।

١١٠٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ٱسْتَبَّ رَجُلاَنِ: رَجُلٌ مِنَ ٱلْمُسْلِمِينَ، وَرَجُلٌ مِنَ ٱلْيَهُودِ، قَالَ ٱلْمُسْلِمُ: وَٱلَّذِي ٱصْطَفَى مُحَمَّدًا عَلَى ٱلْعَالَمِينَ، فَقَالَ ٱلْيَهُودِيُّ: وَٱلَّذِي ٱصْطَفَى مُوسَى عَلَى ٱلْعَالَمِينَ، فَرَفَعَ ٱلْمُسْلِمُ يَدَهُ عِنْدَ ذٰلِكَ فَلَطَمَ وَجْهَ ٱلْيَهُودِيِّ، فَذَهَبَ ٱلْيَهُودِيُّ إِلَى ٱلنَّبِيِّ ﷺ، فَأَخْبَرَهُ بِمَا كَانَ مِنْ أَمْرِهِ وَأَمْرِ ٱلْمُسْلِمِ، فَدَعَا ٱلنَّبِيُّ ﷺ ٱلْمُسْلِمَ، فَسَأَلَهُ عَنْ ذٰلِكَ فَأَخْبَرَهُ، فَقَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (لاَ تُخَيِّرُونِي عَلَى مُوسَى، فَإِنَّ ٱلنَّاسَ يَصْعَقُونَ يَوْمَ ٱلْقِيَامَةِ، فَأَصْعَقُ مَعَهُمْ، فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يُفِيقُ، فَإِذَا مُوسَى بَاطِشٌ جَانِبَ ٱلْعَرْشِ، فَلاَ أَدْرِي: أَكَانَ فِيمَنْ صَعِقَ فَأَفَاقَ قَبْلِي، أَوْ كَانَ مِمَّنِ ٱسْتَثْنَى ٱللهُ).

[رواه البخاري: ٢٤١١]

1108 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक मुसलमान और एक यहूदी ने आपस में गाली गलोच की। मुसलमान कहने लगा, कसम है उस जात की जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सारे जहानों पर बरतरी दी। यहूदी ने कहा, कसम है उस जात की जिसने हजरत मूसा अलैहि. को तमाम अहल जहान पर फजीलत दी। इस पर मुसलमान ने हाथ उठाया और यहूदी के मुंह पर तमाचा रसीद कर दिया। इस पर यहूदी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गया। आपसे अपना और मुसलमान का माजरा कह सुनाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस मुसलमान को बुलाकर पूछा तो उसने सारा वाक्या बयान कर दिया। आपने फरमाया, तुम मुझे हजरत मूसा अलैहि पर फजीलत न दो, क्योंकि कयामत के दिन जब सब लोग बेहोश हो जायेंगे और मैं भी बेहोश हो जाऊंगा और सबसे पहले मुझे होश आयेगा तो मैं देखूंगा कि मूसा अलैहि. अर्श (सातवें आसमान) का एक पाया पकड़े खड़े हैं। अब मैं नहीं जानता कि कि वो भी बेहोश होकर मुझ से पहले होश में आ गये या वो उन लोगों में थे, जिनको अल्लाह तआला ने बेहोश किया ही नहीं था।

फायदे : एक रिवायत में है कि उस यहूदी ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं आपकी अमान में एक जुम्मी (वो काफिर जो टेक्स देकर मुसलमान के मुल्क में रहे) की हैसियत से रहता हूँ। इसके बावजूद मुझे मुसलमान ने थप्पड़ मारा है। आप नाराज हुये और मुसलमान को सजा दी।

(औनुलबारी, 3/231)

1109 : अनस रजि. से रिवायत है कि किसी यहूदी ने एक लड़की का सर पत्थरों के बीच रखकर कुचल दिया। जब उस लड़की से पूछा गया कि तेरे साथ ऐसा किसने किया है? क्या फलां ने किया या फलां ने? यहां तक कि उस यहूदी का नाम लिया गया तो लड़की ने अपने सर से इशारा किया। तब वो यहूदी गिरफ्तार किया गया। उसने जुर्म को कबूल भी कर लिया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से उसका सर भी पत्थरों के दरयमियान रखकर कुचल दिया गया।

١١٠٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ يَهُودِيًّا رَضَّ رأسَ جارِيَةٍ بَيْنَ حَجَرَيْنِ، قِيلَ: مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِكِ، أَفُلانٌ، أَفُلانٌ؟ حَتَّى سُمِّيَ الْيَهُودِيُّ، فَأَوْمَتْ بِرَأْسِهَا، فَأُخِذَ الْيَهُودِيُّ فَاعْتَرَفَ، فَأَمَرَ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ فَرُضَّ رَأْسُهُ بَيْنَ حَجَرَيْنِ. [رواه البخاري: ٢٤١٣]

फायदे : मालूम हुआ कि कातिल को उसी तरह सजाये मौत दी जाये, जिस तरह उसने मकतूल (जिसे कत्ल किया गया हो) को कत्ल किया हो। (औनुलबारी, 3/232)

बाब 2 : झगड़ने वालों का एक दूसरे के मुताल्लिक गुफ्तगू करना शरीअत में क्या हुक्म रखता है?

٢ - باب: كَلاَمِ الخُصُومِ بَعْضِهِمْ فِي بَعْضٍ

١١١٠ : حَدِيثُ الأَشْعَثِ تَقَدَّمَ قَرِيبًا وَذَكَرَ فِيهِ أَنَّهُ اخْتَصَمَ هُوَ وَرَجُلٌ مِنْ أَهْلِ حَضْرَمَوتَ وَفِي هٰذِهِ الرِّوَايَةِ قَالَ: إِنَّهُ هُوَ وَيَهُودِيٌّ. [رواه البخاري: ٢٤١٦، ٢٤١٧ وانظر حديث رقم: ٢٣٥٦، ٢٣٥٧]

1110 : अशअस रजि. से मरवी हदीस (1092) पहले गुजर चुकी है, जिसमें बयान था कि वो हजरमुत के एक आदमी से झगड़े थे। इस रिवायत में है कि उनका एक यहूदी से झगड़ा हुआ था।

फायदे : इस रिवायत में है कि हजरत असअस बिन कैस रजि. जो कि मुदई (दावा करने वाले) थे, अपने यहूदी मुद्दा अलैहि. के मुताल्लिक उसकी गैर हाजरी में बयान दिया कि वो झूटी कसम उठाने में बड़ा बहादुर है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे गैबत (चुगली) शुमार नहीं किया।



किताबुल लुकता
गिरी-पड़ी चीज को उठाने के बयान में

बाब 1 : जब गिरी-पड़ी चीज का मालिक उसकी पहचान बता दे तो वो उसके हवाले कर दी जाये।

١ - باب: وَإِذَا أَخْبَرَ صَاحِبُ اللُّقَطَةِ بِالعَلاَمَةِ دَفَعَ إِلَيْهِ

١١١١ : عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: وَجَدْتُ صُرَّةً فِيهَا مِائَةُ دِينَارٍ، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: (عَرِّفْهَا حَوْلًا)، فَعَرَّفْتُهَا حَوْلًا، فَلَمْ أَجِدْ مَنْ يَعْرِفُهَا، ثُمَّ أَتَيْتُهُ فَقَالَ: (عَرِّفْهَا حَوْلًا). فَعَرَّفْتُهَا فَلَمْ أَجِدْ مَنْ يَعْرِفُهَا، ثُمَّ أَتَيْتُهُ ثَلاَثًا، فَقَالَ: (احْفَظْ وِعَاءَهَا، وَعَدَدَهَا، وَوِكَاءَهَا، فَإِنْ جَاءَ صَاحِبُهَا، وَإِلاَّ فَاسْتَمْتِعْ بِهَا). [رواه البخاري: ٢٤٢٦]

1111 : उबे बिन कअब रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि एक दफा मुझे एक थैली मिली, जिसमें सौ अशर्फियां थी। मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाजिर हुआ। आपने फरमाया कि एक साल तक इसका प्रचार करो। लिहाजा मैं ने इसका प्रचार की, मगर कोई आदमी इसका पहचानने वाला ना मिला। फिर मैं दोबारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया तो आपने फरमाया कि एक साल तक और ज्यादा प्रचार करो, चूनांचे मैं साल भर लोगों से पूछता रहा, मगर कोई ऐसा आदमी ना मिला जो इसको पहचानता। फिर मैंने तीसरी बार आपकी खिदमत में हाजरी दी तो आपने फरमाया, इसकी थैली, गिनती और बन्दीश याद रखना, अगर इसका मालिक आ जाये तो दे देना, नहीं तो खुद इससे फायदा हासिल करते रहो।

फायदे : बाजार और इजतेमाअ में जहां लोगों का झुण्ड हो, ऐलान किया जाये कि गुमशुदा चीज निशानी बताकर हासिल की जा सकती है। अगर कोई इसकी निशानी बता दे तो पहचान और गवाहों की जरूरत नहीं, बल्कि बिला झिझक वो चीज उसके हवाले कर दी जाये। (औनुलबारी, 3/235)

बाब 2 : अगर कोई रास्ते में गिरी हुई खजूर पाये तो क्या करे?

٢ - باب: إِذَا وَجَدَ تَمْرَةً فِي الطَّرِيقِ

1112 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, मैं अपने घर लौटकर जाता हूं तो अपने बिस्तर पर खजूर पड़ी हुई पाता हूं और इसे खाने के इरादे से उठा लेता हूं। मगर मुझे यह अन्देशा होता है कि कहीं वो सदका की न हो तो फिर उसे फैंक देता हूं।

١١١٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنِّي لأَنْقَلِبُ إِلَى أَهْلِي، فَأَجِدُ التَّمْرَةَ سَاقِطَةً عَلَى فِرَاشِي، فَأَرْفَعُهَا لآكُلَهَا، ثُمَّ أَخْشَى أَنْ تَكُونَ صَدَقَةً فَأُلْقِيهَا). [رواه البخاري: ٢٤٣٢]

फायदे : मालूम हुआ कि कम कीमत और हकीर (मामूलीसी) चीज अगर रास्ते में मिले तो इसका प्रचार और मालिक को तलाश करने की जरूरत नहीं, बल्कि इसे यों ही इस्तेमाल में लाया जा सकता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का परहेज इस बिना पर था कि सदका का इस्तेमाल आपके लिए जाइज न था।

(औनुलबारी, 3/238)



किताबुल मजालिम
हुकूक के बयान में

इस किताब में दूसरों पर जुल्म करने की बिना पर सही हक दिलाने और उनकी माफी कराने का जिक्र होगा, इन्सान को चाहिए कि अल्लाह के हक की अदायगी के साथ बन्दों के हक का भी ख्याल रखे।

बाब 1 : जुल्म व ज्यादती का बदला।

١ - باب: قِصَاصُ المَظَالِمِ

1113 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है कि वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि जब मौमिन लोग आग से निजात पा लें तो उन्हें दोजख और जन्नत के बीच एक पुल पर रोक दिया जायेगा, वहां उनसे हकों का बदला लिया जायेगा, जो उन्होंने दुनिया में एक दूसरे पर किये थे। जब वो पाक व साफ हो जायेंगे तो फिर उन्हें जन्नत के अन्दर जाने की इजाजत मिलेगी। कसम है उस अल्लाह की जिसके हाथ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान है। हर आदमी जन्नत में अपने ठिकाने को इससे बेहतर तौर पर पहचानेगा, जिस तरह वो

١١١٣ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا خَلَصَ المُؤْمِنُونَ مِنَ النَّارِ حُبِسُوا بِقَنْطَرَةٍ بَيْنَ الجَنَّةِ والنَّارِ، فَيَتَقَاصُّونَ مَظَالِمَ كَانَتْ بَيْنَهُمْ فِي الدُّنْيَا حَتَّى إِذَا نُقُّوا وَهُذِّبُوا، أُذِنَ لَهُمْ بِدُخُولِ الجَنَّةِ، فَوَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ ﷺ بِيَدِهِ، لأَحَدُهُمْ بِمَسْكَنِهِ فِي الجَنَّةِ أَدَلُّ بِمَسْكَنِهِ كَانَ فِي الدُّنْيَا). [رواه البخاري: ٢٤٤٠]

दुनिया में अपने घर को पहचानता था।

फायदे : कयामत के दिन जुल्म व ज्यादती की माफी जालिम से नेकियाँ लेकर या मजलूम की बुराईयां उतारकर की जायेगी।

(औनुलबारी, 3/239)

बाब 2 : फरमाने इलाही : "खबरदार! जालिमों पर अल्लाह की लानत है।"

٢ - باب: قَوْلُ الله تعالى: ﴿أَلَا لَعْنَةُ ٱللَّهِ عَلَى ٱلظَّٰلِمِينَ﴾

1114 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना है कि अल्लाह मौमिन को अपने नजदीक करके उस पर अपना पर्दा इज्जत डालकर उसे छिपायेगा और पूछेगा क्या तुझे फलां फलां गुनाह मालूम हैं। वो कहेगा, हाँ! ऐ परवरदीगार! इस तरह अल्लाह तआला उससे तमाम गुनाहों का इकरार करायेगा और वो आदमी अपने दिल में ख्याल करेगा कि अब तो मैं मारा गया। अल्लाह तआला फरमायेगा मैंने दुनिया में तेरे गुनाह छिपा रखे थे, और आज भी तेरे गुनाह माफ करता हूँ। फिर उसे नेकियों की किताब दी जायेगी, लेकिन काफिर और मुनाफिक के मुताल्लिक गवाही देने वाले कहेंगे कि यह वो लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदीगार पर झूट बांधा था। खबरदार! उन जालिमों पर अल्लाह की लानत है।

١١١٤ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللَّهِ ﷺ يَقُولُ: إِنَّ ٱللَّهَ يُدْنِي المُؤْمِنَ، فَيَضَعُ عَلَيْهِ كَنَفَهُ وَيَسْتُرُهُ، فَيَقُولُ: أَتَعْرِفُ ذَنْبَ كَذَا: أَتَعْرِفُ ذَنْبَ كَذَا؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ أَيْ رَبِّ، حَتَّى إِذَا قَرَّرَهُ بِذُنُوبِهِ، وَرَأَى فِي نَفْسِهِ أَنَّهُ قَدْ هَلَكَ، قَالَ: سَتَرْتُهَا عَلَيْكَ فِي ٱلدُّنْيَا، وَأَنَا أَغْفِرُهَا لَكَ الْيَوْمَ، فَيُعْطَى كِتَابَ حَسَنَاتِهِ، وَأَمَّا الْكَافِرُ وَالمُنَافِقُ، فَيَقُولُ الأَشْهَادُ: ﴿هَٰٓؤُلَآءِ ٱلَّذِينَ كَذَبُوا۟ عَلَىٰ رَبِّهِمْ أَلَا لَعْنَةُ ٱللَّهِ عَلَى ٱلظَّٰلِمِينَ﴾. [رواه البخاري: ٢٤٤١]

फायदे : गुनाहों की यह माफी बन्दों के हुकूक के अलावा होगी, क्योंकि बन्दों के हकों की माफी नेकियां लेकर या मजलूमों की गलतियां जालिम के आमाल नामें में डालकर की जायेगी।

(औनुलबारी, 2/241)

बाब 3 : एक मुसलमान दूसरे मुसलमान पर न जुल्म करे और न इसे अकेला छोड़े।

٣ - باب: لا يَظْلِمُ المُسْلِمُ المُسْلِمَ وَلاَ يُسْلِمُهُ

1115 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मुसलमान मुसलमान का भाई है। लिहाजा न वो उस पर जुल्म करे और ना ही उसे जुल्म के हवाले करे, जो आदमी अपने भाई की जरूरत पूरी करने में लगा रहता है, तो अल्लाह उसकी मुराद पूरी करने के दर पे होगा और जो आदमी किसी मुसलमान की मुसीबत को दूर करता है तो अल्लाह कयामत के दिन उसकी मुसीबत को दूर करेगा और जो आदमी मुसलमान का ऐब छुपाये, कयामत के दिन अल्लाह उसकी पर्दा-पौशी करेगा।

١١١٥ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قالَ: (المُسْلِمُ أَخُو المُسْلِمِ، لاَ يَظْلِمُهُ وَلاَ يُسْلِمُهُ، وَمَنْ كانَ في حاجَةِ أَخِيهِ كانَ ٱللهُ في حاجَتِهِ، وَمَنْ فَرَّجَ عَنْ مُسْلِمٍ كُرْبَةً فَرَّجَ ٱللهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ يَوْمِ القِيامَةِ، وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِماً سَتَرَهُ ٱللهُ يَوْمَ القِيامَةِ). [رواه البخاري: ٢٤٤٢]

फायदे : इस हदीस से यह भी इशारा मिलता है कि इन्सान को किसी दूसरे की गिबत (पीठ पीछे किसी की बुराई करना) नहीं करना चाहिए, क्योंकि गिबत से किसी दूसरे मुसलमान को जलील करके अल्लाह तआला की कयामत के दिन पर्दा-पौशी से महरूम रहना है। (औनुलबारी 3/242)

बाब 4 : तू अपने भाई की मदद कर चाहे वो जालिम हो या मजलूम।

٤ - باب: أَعِنْ أَخَاكَ ظَالِماً أَوْ مَظْلُوماً

1116 : अनस रजि. से रिवायत है कि उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम अपने भाई की मदद करो, चाहे वो जालिम हो या मजलूम। सहाबा किराम रजि. ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! वो मजलूम हो तो उसकी मदद करेंगे, लेकिन जालिम की मदद किस तरह करें? आपने फरमाया, उसका हाथ पकड़कर उसे जुल्म से रोको।

١١١٦ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (ٱنْصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ مَظْلُومًا). قَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، هٰذَا نَنْصُرُهُ مَظْلُومًا، فَكَيْفَ نَنْصُرُهُ ظَالِمًا؟ قَالَ: (تَأْخُذُ فَوْقَ يَدَيْهِ). [رواه البخاري: ٢٤٤٤]

फायदे : जाहिलियत के जमाने में इस जुम्ला के जरिये कौम की इज्जत को हवा दी जाती थी कि हर हाल में अपने भाई की मदद की जाये, चाहे वो जालिम हो या मजलूम, लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी मफहूम को बिलकुल ही बदलकर मुहब्बत व भाई चारे का सबक दिया है। (औनुलबारी, 3/244)

बाब 5 : जुल्म कयामत के दिन तारीकियों (अंधेरों) का सबब होगा।

٥ - باب: الظُّلْمُ ظُلُمَاتٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

1117 : इब्ने उमर रजि. की रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जुल्म कयामत के दिन तारीकियों का सबब होगा।

١١١٧ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (الظُّلْمُ ظُلُمَاتٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ). [رواه

फायदे : जुल्म कयामत के दिन हर तरफ अंधेरों का सबब होगा, क्योंकि यह दो गुनाहों से जुड़ा हुआ है। एक किसी का जाइज हक ले

लेना और दूसरा अल्लाह की मुखालफत करके उससे ऐलान जंग करना। अल्लाह तआला इससे महफूज रखे। (औनुलबारी, 3/244)

बाब 6: जिस आदमी ने किसी पर जुल्म किया हो और मजलूम उसे माफ कर दे तो क्या जालिम को अपने जुल्म का खुलासा करना जरूरी है?

٦ - باب: مَنْ كانَتْ لَهُ مظلِمةٌ عِنْدَ الرَّجُلِ فَحَلَّلَها لَهُ، هَل يُبَيِّنُ مَظلِمَتَهُ؟

1118 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जिस किसी ने अपने भाई का पर्दाफाश किया या किसी भी शक्ल में उस पर ज्यादती की हो तो उसे आज ही माफ करा लेना चाहिए। इससे पहले कि दिरहम व दिनार न रहे। अगर उसके पास नेक अमल होगा तो उसमें से उसके जुल्म के बराबर ले लिया जायेगा और नेक अमल न होगा तो मजलूम की बुराईयां लेकर उस पर डाल दी जायेगी।

١١١٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ كانَتْ لَهُ مَظْلِمَةٌ لأَخِيهِ مِنْ عِرْضِهِ أَوْ شَيْءٍ فَلْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهُ الْيَوْمَ، قَبْلَ أَنْ لاَ يَكُونَ دِينَارٌ وَلاَ دِرْهَمٌ، إِنْ كانَ لَهُ عَمَلٌ صَالِحٌ أُخِذَ مِنْهُ بِقَدْرِ مَظْلِمَتِهِ، وَإِنْ لَمْ تَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ أُخِذَ مِنْ سَيِّئَاتِ صَاحِبِهِ فَحُمِلَ عَلَيْهِ). [رواه البخاري: ٢٤٤٩]

फायदे : कुरआन में है कि कोई जान किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगी, यह हदीस इसके खिलाफ नहीं है, क्योंकि जालिम पर जो मजलूम की बुराईयां डाली जायेंगी वो दरअसल उस जालिम की कमाई का नतीजा होगी। (औनुलबारी, 3/245)

बाब 7 : उस आदमी का गुनाह जो किसी की कुछ जमीन जबरदस्ती छीन ले।

٧ - باب: إِثْمُ مَنْ ظَلَمَ شَيْئاً مِنَ الأَرْضِ

١١١٩ : عَنْ سَعِيدِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: (مَنْ ظَلَمَ مِنَ الأَرْضِ شَيْئًا طُوِّقَهُ مِنْ سَبْعِ أَرَضِينَ). [رواه البخاري: ٢٤٥٢]

1119 : सईद बिन जैद रजि. से रिवायत है कि उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना जो आदमी जुल्म से किसी की कुछ जमीन छीन लेगा तो कयामत के दिन सात जमीनों का बोझ उसके गले में डाल दिया जायेगा।

फायदे : इस हदीस में हड़पने वालों के लिए जबरदस्त फटकार है, खास तौर पर वो हजरात जो जमीन पर नाजाइज कब्जा करके वहां मस्जिद या मदरसा तामीर कर लेते हैं, वो समझते हैं कि इस तरह हमने नेकी का काम किया है, ऐसे काम में कोई नेकी नहीं है। (औनुलबारी, 3/247)

١١٢٠ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَنْ أَخَذَ مِنَ الأَرْضِ شَيْئًا بِغَيْرِ حَقِّهِ، خُسِفَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى سَبْعِ أَرَضِينَ). [رواه البخاري: ٢٤٥٤]

1120 : उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी थोड़ी सी जमीन भी नाहक ले लेगा, उसे कयामत के दिन सात जमीनों तक धंसा दिया जायेगा।

٨ - باب: إِذَا أَذِنَ إِنْسَانٌ لآخَرَ شَيْئًا جَازَ

बाब 8 : जब कोई इन्सान दूसरे को (किसी बात की) इजाजत दे तो वो कर सकता है।

١١٢١ : وعَنْهُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ مَرَّ بِقَوْمٍ يَأْكُلونَ تَمْرًا فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَنْهى عَنِ الإِقْرَانِ،

1121 : इब्ने उमर रजि. से ही रिवायत है कि उनका एक कौम के पास से गुजर हुआ जो खजूरें खा रहे

إلاَّ أَنْ يَسْتَأْذِنَ الرَّجُلُ مِنكُمْ أخاهُ.
[رواه البخاري: ٢٤٥٥]

थे तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो दो खजूरें एक बार उठाकर खाने से मना फरमाया है। हां अगर तुम में से कोई अपने भाई से इजाजत ले ले तो जाइज है।

फायदे : इस मनाही की वजह यह है कि इससे लालच का पता चलता है, ऐसा करना दूसरों के हक छीन लेने के बराबर है। अगर खजूरें किसी की जाति हो तो कोई मनाही नहीं।

(औनुलबारी, 3/250)

९ - باب: قَوْلُ الله تَعَالَى: ﴿وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ﴾

बाब 9 : फरमाने इलाही "वो बड़ा सख्त झगड़ालू है।"

١١٢٢ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنَّ أَبْغَضَ الرِّجالِ إِلَى ٱللهِ الأَلَدُّ الخَصِمُ).
[رواه البخاري: ٢٤٥٧]

1122 : आइशा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आपने फरमाया, अल्लाह को सबसे ज्यादा नापसन्द वो आदमी है जो सख्त झगड़ालू हो।

फायदे : इससे मुराद वो आदमी है जो जरा-जरा सी बात पर लोगों से झगड़ता है या बातिल का दफा करने में बड़ी महारत रखता हो।

١٠ - باب: إِثْمُ مَنْ خاصَمَ فِي بَاطِلٍ وَهوَ يَعْلَمُهُ

बाब 10 : उस आदमी का गुनाह जो जानबूझ कर किसी नाहक बात पर झगड़ा करे।

١١٢٣ : عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ، أَنَّهُ سَمِعَ خُصُومَةً بِبَابِ حُجْرَتِهِ، فَخَرَجَ إِلَيْهِمْ، فَقالَ: (إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ، وَإِنَّهُ يَأْتِينِي الخَصْمُ، فَلَعَلَّ بَعْضَكُمْ أَنْ يَكُونَ أَبْلَغَ مِنْ بَعْضٍ، فَأَحْسِبَ أَنَّهُ

1123 : उम्मे सलमा रजि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने कमरे के दरवाजे पर झगड़ने

صَدَقَ، فَأَقْضِيَ لَهُ بِذٰلِكَ، فَمَنْ قَضَيْتُ لَهُ بِحَقِّ مُسْلِمٍ، فَإِنَّمَا هِيَ قِطْعَةٌ مِنَ النَّارِ، فَلْيَأْخُذْهَا أَوْ لِيَتْرُكْهَا). [رواه البخاري: ٢٤٥٨]

की आवाज सुनी तो बाहर तशरीफ लाये और फरमाया, मैं भी एक इन्सान हूँ। मेरे पास एक गिरोह आता है और शायद एक गिरोह की बहस दूसरे गिरोह से अच्छी हो। जिससे मुझे ख्याल हो कि उसने सच कहा है। फिर मैं उसके मवाफिक फैसला करूं तो अगर मैं किसी को दूसरे मुसलमान का हक दिला दूं तो यह दोजख का एक टुकड़ा है, चाहे उसे कबूल करे, चाहे उसे छोड़ दे।

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि काजी के फैसले से कोई हराम चीज हलाल नहीं होगी, क्योंकि काजी का फैसला जाहिरी तौर पर होता है बातनी तौर पर नहीं। यानी अगर दावा करने वाला हक पर न हो और अदालत उसके हक में फैसला कर दे तो उसके लिए यह फैसला जाइज नहीं होगा।

١١ - باب: قِصَاصُ المَظْلُومِ إِذَا وَجَدَ مَالَ ظَالِمِهِ

बाब 11 : मजलूम अगर जालिम का माल पा ले तो बकद्र ज्यादती अपना हिस्सा वसूल कर सकता है।

١١٢٤ : عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْنَا لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّكَ تَبْعَثُنَا، فَنَنْزِلُ بِقَوْمٍ لاَ يَقْرُونَا، فَمَا تَرَى فِيهِ؟ فَقَالَ لَنَا: (إِنْ نَزَلْتُمْ بِقَوْمٍ، فَأُمِرَ لَكُمْ بِمَا يَنْبَغِي لِلضَّيْفِ فَاقْبَلُوا، فَإِنْ لَمْ يَفْعَلُوا، فَخُذُوا مِنْهُمْ حَقَّ الضَّيْفِ). [رواه البخاري: ٢٤٦١]

1124 : उकबा बिन आमिर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया कि आप हमें बाहर भेजते हैं तो कभी हम ऐसे लोगों के पास जाते हैं जो हमारी मेहमान नवाजी तक नहीं करते, इसके

मुताल्लिक आप क्या फरमाते हैं? आपने फरमाया जब तुम किसी कौम के पास जावो और वो मेहमान की मेजबानी का पूरा पूरा अहतमाम करे तो उसे कबूल कर लो और अगर मेहमानी न करायें तो जबरदस्ती उनसे अपनी मेहमान-नवाजी का हक वसूल करो।

फायदे : माली मामलात में यह गुंजाईश है कि जबरदस्ती छिना हुआ अपना माल किसी भी तरीके से वापिस लिया जा सकता है। अलबत्ता बदनी सजाओं में यह हुक्म नहीं है। बल्कि बादशाह के वक्त की तरफ लौटना जरूरी है। (औनुलबारी, 3/254)

बाब 12 : कोई पड़ौसी दूसरे पड़ौसी को अपनी दीवार पर लकड़ी गाड़ने से न रोके।

١٢ - باب: لا يَمْنَعْ جَار جاره أن يَغرِزَ خشَبَة في جِدارِهِ

1125 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि पड़ौसी दूसरे पड़ौसी को अपनी दीवार में लकड़ी गाड़ने से न रोके, फिर अबू हुरैरा रजि. फरमाने लगे, क्या बात है कि तुम लोगों को मैं इस हदीस से फिरते हुए देखता हूँ? अल्लाह की कसम! मैं यह हदीस तुम्हें बराबर सुनाता रहूंगा।

١١٢٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لا يَمْنَعْ جارٌ جارَهُ أَنْ يَغْرِزَ خَشَبَةً في جِدارِهِ). ثُمَّ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: ما لي أَرَاكُمْ عَنْهَا مُعْرِضِينَ، وَٱللهِ لأَرْمِيَنَّ بِهَا بَيْنَ أَكْتَافِكُمْ. [رواه البخاري: ٢٤٦٣]

फायदे : मालूम हुआ कि अगर हमसाया दीवार पर कोई लकड़ी या गार्टर रखना चाहे तो दीवार के मालिक को रोकना जाइज नहीं, क्योंकि इसमें कोई नुकसान नहीं, बल्कि ऐसा करने से दीवार मजबूत होती है। (औनुलबारी, 3/255)

बाब 13 : घरों के सामने मैदानों और रास्तों में बैठना।

١٣ - باب: أَفْنِيَةُ الدُّورِ والجُلُوسِ فِيهَا، والجُلُوسُ عَلَى الصُّعُدَاتِ

1126 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, तुम लोग रास्तों पर बैठने से परहेज करो, सहाबा रजि. ने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! इस बात में तो हम मजबूर हैं कि क्योंकि वही तो हमारी बैठने और गुफ्तगू करने की जगहें हैं। आपने फरमाया, अच्छा अगर ऐसी ही मजबूरी है तो उसका हक अदा करो। लोगों ने अर्ज किया, रास्ते का क्या हक है? आपने फरमाया, निगाहें नीची रखना, किसी को तकलीफ न देना। सलाम का जवाब देना, अच्छी बात बताना और बुरी बात से रोकना।

١١٢٦ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِيَّاكُمْ وَالْجُلُوسَ عَلَى الطُّرُقَاتِ). فَقَالُوا: ما لَنَا بُدٌّ، إِنَّمَا هِيَ مَجَالِسُنَا نَتَحَدَّثُ فِيهَا قالَ: (فَإِذَا أَبَيْتُمْ إِلاَّ الْمَجالِسَ، فَأَعْطُوا الطَّرِيقَ حَقَّهَا). قَالُوا: وَما حَقُّ الطَّرِيقِ؟ قالَ: (غَضُّ الْبَصَرِ، وَكَفُّ الأَذَى، وَرَدُّ السَّلَامِ، وَأَمْرٌ بِالمَعْرُوفِ، وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ). [رواه البخاري: ٢٤٦٥]

फायदे : एक रिवायत में अंधे को रास्ते पर लगाना, छींक का जवाब देना और कमजोर और जईफ की मदद करना भी रास्ते के हकों में शामिल है। (औनुलबारी, 3/257)

बाब 14 : अगर आम रास्ते के बारे में इख्तेलाफ हो जाये तो क्या किया जाये?

١٤ - باب: إِذَا اخْتَلَفُوا فِي الطَّرِيقِ المِيتَاءِ

1127 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सात हाथ रास्ते

١١٢٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَضَى النَّبِيُّ ﷺ: إِذَا تَشَاجَرُوا فِي الطَّرِيقِ المِيتَاءِ بِسَبْعَةِ أَذْرُعٍ. [رواه البخاري: ٢٤٧٣]

छोड़ने का उस वक्त फैसला फरमाया जब लोगों में आम रास्ते के मुताल्लिक आपस में इख्तेलाफ हुआ था।

फायदे : सात हाथ रास्ते आदमियों और सवारियों के आने जाने के लिए काफी है। जो लोग रास्ते में बैठकर सब्जी या फल बेचते हैं, उनके लिए भी यही हुक्म है ताकि चलने वालों को तकलीफ न हो। (औनुलबारी, 3/258)

बाब 15 : लूट मार और इन्सान के अंग काटना मना है।

١٥ - باب: النَّهيِ عَن النُّهبَى وَالمُثْلَة

1128 : अब्दुल्लाह बिन यजीद अनसारी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लूट-मार करने और इन्सान की सूरत बिगाड़ने से मना फरमाया है।

١١٢٨ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ يَزِيدَ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ النُّهْبَى وَالمُثْلَةِ. [رواه البخاري: ٢٤٧٤]

फायदे : हमारे यहां निकाह के वक्त जो छूंआरों की लूट-खसौट होती है, वो भी इसी में से है। शादी के मौके पर मिस्री, बादाम और टॉफियां वगैर खिलाना मकसूद हो तो इसे बाइज्जत तरीके से तकसीम कर देना चाहिए।

बाब 16 : जो आदमी अपने माल की हिफाजत के लिए लड़ता है।

١٦ - باب: مَنْ قَاتَلَ دُونَ مَالِهِ

1129 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, इन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना, जो आदमी अपने माल की हिफाजत करते हुये मारा जाये, वो शहीद है।

١١٢٩ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (مَنْ قُتِلَ دُونَ مالِهِ فَهُوَ شَهِيدٌ). [رواه البخاري: ٢٤٨٠]

फायदे : इमाम बुखारी का मकसद यह है कि इन्सान को अपना और अपने माल का बचाव करना चाहिए, क्योंकि अगर कत्ल हो गया तो दर्जा शहादत मिल जायेगा और अगर उसने कत्ल कर दिया तो उस पर कोई जुर्माना और बदला नहीं है।

(औनुलबारी, 3/260)

बाब 17 : अगर किसी का प्याला या कोई और चीज तोड़ दे (तो जुर्माना अदा करना पड़ेगा या नहीं?)

١٧ - باب: إِذَا كَسَرَ قَصْعَةً أَوْ شَيْئاً لِغَيْرِهِ

1130 : अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी किसी बीवी के पास थे। इतने में किसी दूसरी बीवी ने खादिम के हाथ एक प्याला भेजा, जिसमें खाना था तो उस बीवी ने जिसके पास आप थे, हाथ मारकर प्याला तोड़ डाला। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्याला उठाकर उसे जोड़ा और उसके अन्दर खाना रख कर फरमाया, खाना खावो। इस दौरान आपने उस कासिद और प्याले को रोके रखा, जब खाने से फारिग हुये तो टूटा हुआ प्याला रख लिया और सही प्याला वापिस किया।

١١٣٠ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ عِنْدَ بَعْضِ نِسَائِهِ، فَأَرْسَلَتْ إِحْدَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ مَعَ خَادِمٍ بِقَصْعَةٍ فِيهَا طَعَامٌ، فَضَرَبَتْ بِيَدِهَا فَكَسَرَتِ الْقَصْعَةَ، فَضَمَّهَا وَجَعَلَ فِيهَا الطَّعَامَ، وَقَالَ: (كُلُوا)، وَحَبَسَ الرَّسُولَ وَالْقَصْعَةَ حَتَّى فَرَغُوا، فَدَفَعَ الْقَصْعَةَ الصَّحِيحَةَ وَحَبَسَ الْمَكْسُورَةَ. [رواه البخاري: ٢٤٨١]

फायदे : जिसने प्याला तौड़ा था, इसके घर से सही प्याला लेकर वापिस किया गया और टूटा हुआ प्याला उसे दे दिया गया। क्योंकि दूसरी हदीस में है कि खाने के बदले खाना और बर्तन के बदले बर्तन दिया जाये। (औनुलबारी, 3/261)



किताबुल शरीका
शराकत के बयान में

लुगवी तौर पर शराकत का मायना शामिल होना है। इस्तलाह में दो या ज्यादा का एक चीज में हकदार होने को शराकत कहा जाता है। यह शराकत कभी तो गैर इख्तेयारी होती है, जैसा कि विरासत के माल में शरीक होना और कभी इख्तेयारी भी होती है, जैसा कि मिलकर किसी चीज को खरीदना।

बाब 1 : खाने, सफर खर्च और दूसरे जिन्दगी के सामानों में शराकत।

١ - باب: في الشَّرِكةِ في الطَّعام وَالنَّهدِ والعُرُوضِ

1131 : सलमा बिन अकवा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक दफा लोगों के खाने पीने का सामान कम हो गया और वो मोहताज हो गये, तो वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाजिर हुये और अपने ऊंट जिब्ह करने की इजाजत मांगी। आपने उन्हें इजाजत दे दी। फिर उन्हें उमर रजि. मिले तो लोगों ने उससे यह माजरा बयान किया। उमर रजि. ने कहा, ऊंटों के बाद

١١٣١ : عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأكْوَعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: خَفَّتْ أَزْوَادُ القَوْمِ وَأَمْلَقُوا، فَأَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ في نَحْرِ إِبِلِهِمْ فَأَذِنَ لَهُمْ، فَلَقِيَهُمْ عُمَرُ فأخْبَرُوهُ فَقالَ: ما بَقاؤُكُمْ بَعْدَ إِبِلِكُمْ، فَدَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ! ما بَقاؤُهُمْ بَعْدَ إِبِلِهِمْ؟ فَقالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (نَادِ في النَّاسِ، يَأْتُونَ بِفَضْلِ أَزْوَادِهِمْ). فَبُسِطَ لِذٰلِكَ نِطَعٌ وَجَعَلُوهُ عَلَى النِّطَعِ، فَقامَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَدَعَا وَبَرَّكَ عَلَيْهِ، ثُمَّ دَعاهُمْ بِأَوْعِيَتِهِمْ، فَاحْتَثَى النَّاسُ حَتَّى فَرَغُوا، ثُمَّ قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَشْهَدُ أَنْ لا إِلٰهَ

إلاَّ ٱللهُ، وَأَنِّي رَسُولُ ٱللهِ». [رواه البخاري: ٢٤٨٤]

तुम्हारी जिन्दगी का गुजारा किसी पर होगा? उसके बाद उमर रजि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुये और कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! ऊंटों के बाद इनकी जिन्दगी कैसी गुजरेगी? आपने फरमाया कि लोगों में ऐलान कर दो कि वो अपना अपना खाने पीने का बाकी सामान लेकर मेरे पास हाजिर हों। फिर चमड़े का एक दस्तरखान बिछा दिया गया और तमाम सामान उस पर डाल दिया गया। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हुये और खैरो-बरकत की दुआ की। फिर सब लोगों को आपने बर्तनों समेत बुलाया, चूनांचे लोगों ने दोनों हाथ से खुब भर-भर कर लेना शुरू किया। जब सब लोग फारिग हो गये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद हकीकी नहीं और इस की भी गवाही देता हूं कि मैं अल्लाह तआला का रसूल हूँ।

फायदे : चूंकि एक मुअज्जा (वो आदत के खिलाफ काम जो नबी के हाथों जाहिर हो) जाहिर हुआ था, इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कलमा शहादत पढ़ा, पहले तो सफर खर्च इतना कम हो गया कि लोग अपनी सवारियाँ जिब्ह करने लगे, फिर दुआ की बरकत से इतना ज्यादा हो गया कि हर एक ने अपनी जरूरत के मुताबिक ले लिया। (औनुलबारी, 3/266)

١١٣٢ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: «إِنَّ الأَشْعَرِيِّينَ إِذَا أَرْمَلُوا فِي الْغَزْوِ، أَوْ قَلَّ طَعَامُ عِيَالِهِمْ بِالْمَدِينَةِ، جَمَعُوا مَا كَانَ عِنْدَهُمْ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ، ثُمَّ

1132 : अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अशअरी लोग जब जिहाद

اَقْتَسَمُوهُ بَيْنَهُمْ فِي إِنَاءٍ وَاحِدٍ بِالسَّوِيَّةِ، فَهُمْ مِنِّي وَأَنَا مِنْهُمْ). [رواه البخاري: ٢٤٨٦]

में मोहताज हो जाते हैं या मदीना में उन के बाल बच्चों के पास खाना कम रह जाता है तो सब लोग अपना अपना मौजूदा सामान मिलाकर एक कपड़े में इक्ट्ठा कर लेते हैं। फिर आपस में एक पैमाना से तकसीम कर लेते हैं। इस बराबरी की वजह से वो मुझ से हैं और मैं उन से हूँ।

फायदे : इससे मालूम हुआ कि सफर व हजर (बगैर सफर) में सफर खर्च को इकट्ठा करना, फिर अन्दाजे से तकसीम करना अच्छा है। (औनुलबारी, 3/267)

---

٢ - باب: قِسْمَةُ الغَنَمِ

बाब 2 : बकरियों का तकसीम करना।

١١٣٣ : عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِذِي الحُلَيْفَةِ، فَأَصَابَ النَّاسَ جُوعٌ، فَأَصَابُوا إِبِلًا وَغَنَمًا، قَالَ: وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ فِي أُخْرَيَاتِ القَوْمِ، فَعَجِلُوا وَذَبَحُوا ونَصَبُوا القُدُورَ، فَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِالقُدُورِ فَأُكْفِئَتْ، ثُمَّ قَسَمَ، فَعَدَلَ عَشَرَةً مِنَ الغَنَمِ بِبَعِيرٍ، فَنَدَّ مِنْهَا بَعِيرٌ، فَطَلَبُوهُ فَأَعْيَاهُمْ، وَكَانَ فِي القَوْمِ خَيْلٌ يَسِيرَةٌ، فَأَهْوَى رَجُلٌ مِنْهُمْ بِسَهْمٍ فَحَبَسَهُ ٱللهُ، ثُمَّ قَالَ: (إِنَّ لِهٰذِهِ البَهَائِمِ أَوَابِدَ كَأَوَابِدِ الوَحْشِ، فَمَا غَلَبَكُمْ مِنْهَا فَاصْنَعُوا بِهِ هٰكَذَا). فَقُلْتُ: إِنَّا نَرْجُو العَدُوَّ غَدًا وَلَيْسَتْ مَعَنَا مُدًى، أَفَنَذْبَحُ بِالقَصَبِ؟ قَالَ: (مَا

1133 : राफेअ बिन खदीज रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जुलहुलैफा में थे कि लोगों को भूक लगी, इन्हें कुछ ऊंट और बकरियां हाथ लगी। रावी कहता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी लोगों में थे, इसलिए लोगों ने जल्दी से उन्हें जिब्ह करके देगें चढ़ा दीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तशरीफ लाकर हुक्म दिया कि देगों को उल्ट दिया जाये, फिर आपने तकसीम फरमायी तो दस

أَنْهَرَ الدَّمَ، وَذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ فَكُلُوهُ، لَيْسَ السِّنَّ وَالظُّفُرَ، وَسَأُحَدِّثُكُمْ عَنْ ذٰلِكَ: أَمَّا السِّنُّ فَعَظْمٌ، وَأَمَّا الظُّفُرُ فَمُدَى الحَبَشَةِ). [رواه البخاري: ٢٤٨٨]

बकरियों को एक ऊंट के बराबर करार दिया। इत्तेफाक से एक ऊंट भाग निकला तो लोग उसके पीछे दौड़े, जिसने उनको थका दिया, उस वक्त लश्कर में घोड़े भी कम थे। आखिरकार एक आदमी ने उसे तीर मारा तो अल्लाह तआला ने उसे रोक दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, वहशी जानवरों की तरह उनमें भी कुछ वहशी होते हैं। अगर इनमें से कोई तुम पर गालिब आ जाये तो तुम भी इसके साथ ऐसा ही किया करो। मैंने कहा, हमें अन्देशा है कि कल दुश्मन से मुडभैड़ होगी और हमारे पास छुर्रियां नहीं है तो क्या हम बांस की खपच्ची से जिब्ह कर लें। आपने फरमाया, जो चीज खून बहा दे और उस पर अल्लाह तआला का नाम लिया जाये, तो उसको खावो। अलबत्ता दांत और नाखून से जिब्ह ना करो। मैं तुम्हें इसकी वजह बयान करता हूँ कि दांत तो एक हड्डी है और नाखून कुफ्फार हब्शा की छूरी है (जिससे वो जिब्ह करते हैं)

फायदे : बगैर परेशानी की हालात में तो जानवर को गले से जिब्ह किया जाये, अलबत्ता परेशानी की हालत में किसी भी मकाम से जिब्ह किया जा सकता है। निज जिब्ह करते वक्त ''बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर'' कहना जरूरी है और अगर किसी को बिस्मिल्लाह के मुताल्लिक शक हो तो वो खाते वक्त इसे पढ़ ले।

(औनुलबारी, 3/270)

बाब 3 : हिस्सेदारों के दरमियान हिस्से वाली चीजों में इन्साफ के साथ कीमत लगाना।

٣ - باب: تَقْوِيمُ الأَشْيَاءِ بَيْنَ الشُّرَكَاءِ بِقِيمَةِ عَدْلٍ

١١٣٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ أَعْتَقَ شَقِيصًا مِنْ مَمْلُوكِهِ فَعَلَيْهِ خَلاَصُهُ فِي مالِهِ، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ مالٌ، قُوِّمَ المَمْلُوكُ قِيمَةَ عَدْلٍ، ثُمَّ ٱسْتُسْعِيَ غَيْرَ مَشْقُوقٍ عَلَيْهِ) [رواه البخاري: ٢٤٩٢]

1134 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जो आदमी हिस्से वाले गुलाम को अपने हिस्से के मुताबिक आजाद कर दे तो वहीं अपने माल से इसे रिहाई दिलाये और अगर उसके पास माल ना हो तो इन्साफ से उस गुलाम की कीमत लगायी जाये, बाकि हिस्सा के लिए उस गुलाम से मजदूरी करायी जाये, लेकिन उस पर सख्ती न की जाये।

फायदे : यानी गुलाम को ऐसे काम पर मजबूर ना किया जाये जो उसके लिए नाकाबिल बर्दाश्त हो। जब वो बाकी हिस्से की कीमत अदा कर देगा तो खुद-ब-खुद आजाद हो जायेगा। (औनुलबारी, 3/272)

٤ - باب: هَل يُقْرَعُ فِي القِسْمَةِ

बाब 4 : क्या तकसीम में कुरआ अन्दाजी (पर्ची) की जा सकती है।

١١٣٥ : عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَثَلُ القَائِمِ عَلَى حُدُودِ ٱللهِ وَالْوَاقِعِ فِيهَا، كَمَثَلِ قَوْمٍ ٱسْتَهَمُوا عَلَى سَفِينَةٍ، فَأَصَابَ بَعْضُهُمْ أَعْلاَهَا وَبَعْضُهُمْ أَسْفَلَهَا، فَكَانَ الَّذِينَ فِي أَسْفَلِهَا إِذَا ٱسْتَقَوْا مِنَ المَاءِ مَرُّوا عَلَى مَنْ فَوْقَهُمْ، فَقَالُوا: لَوْ أَنَّا خَرَقْنَا فِي نَصِيبِنَا خَرْقًا، وَلَمْ نُؤْذِ مَنْ فَوْقَنَا، فَإِنْ يَتْرُكُوهُمْ وَمَا أَرَادُوا هَلَكُوا جَمِيعًا، وَإِنْ أَخَذُوا عَلَى أَيْدِيهِمْ نَجَوْا وَنَجَوْا جَمِيعًا).

1135 : नोमान बिन बशीर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, उस आदमी की मिसाल जो अल्लाह की हदों पर कायम हो, और जो उनमें मुब्तला हो गया हो, उन लोगों की सी है जिन्होंने एक कश्ती को बजरीया कुरआ (पर्ची) तकसीम कर लिया। कुछ लोगों के हिस्से में ऊपर का हिस्सा आया, जबकि

[رواه البخاري: ٢٤٩٣]

कुछ लोगों ने निचला हिस्सा ले लिया। अब निचले हिस्से वालों को जब पानी की जरूरत होती तो वो ऊपर वालों के पास से गुजरते हुये कहने लगे, काश हम अपने हिस्से में सूराख कर लें और ऊपर वालों को तकलीफ ना दें। सो अगर ऊपर वाले नीचे वालों को उनके इरादे के मुताल्लिक छोड़ दें तो सब हलाक हो जायेंगे और अगर वो उनका हाथ पकड़ लें तो वो भी बच जायेंगे और दूसरे भी अलगर्ज सब महफूज रहेंगे।

फायदे : गुनाह करना और उसे सामने होता हुआ देखकर ठण्डे पेट बर्दाश्त कर लेना जुर्म के लिहाज से दोनों बराबर हैं और दोनों ही तबाही और बर्बादी का सबब है। (औनुलबारी, 3/273)

बाब 5 : गल्ला वगैरह में साझेदारी।

٥ - باب: الشَّرِكَةُ فِي الطَّعَامِ وَغَيْرِهِ

1136 : अब्दुल्लाह बिन हिशाम रजि. से रिवायत है, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुलाकात की है। उनकी वालिदा जैनब बिन्ते हुमैद रजि. उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लेकर गयी थीं और अर्ज किया था ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! इससे बेअत लीजिए। आपने फरमाया था कि यह अभी छोटी हैं, लेकिन आपने इनके लिए सर पर हाथ फैरा और इनके लिए दुआ फरमायी। वो अक्सर बाजार जाकर गल्ला खरीदा करती

١١٣٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ هِشَامٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ وَكانَ قَدْ أَدْرَكَ النَّبِيَّ ﷺ، وَذَهَبَتْ بِهِ أُمُّهُ زَيْنَبُ بِنْتُ حُمَيْدٍ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ بَايِعْهُ، فَقَالَ: (هُوَ صَغِيرٌ). فَمَسَحَ رَأْسَهُ وَدَعَا لَهُ. كانَ يَخْرُجُ إِلَى السُّوقِ، فَيَشْتَرِي الطَّعَامَ، فَيَلْقَاهُ ابْنُ عُمَرَ وَٱبْنُ الزُّبَيْرِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمْ، فَيَقُولاَنِ لَهُ: أَشْرِكْنَا، فَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَدْ دَعَا لَكَ بِالْبَرَكَةِ، فَيَشْرَكُهُمْ، فَرُبَّمَا أَصَابَ الرَّاحِلَةَ كَمَا هِيَ، فَيَبْعَثُ بِهَا إِلَى الْمَنْزِلِ. [رواه البخاري: ٢٥٠١، ٢٥٠٢]

थी। इब्ने उमर रजि. और इब्ने जुबैर रजि. उनसे मिलते तो कहते कि हमको भी शरीक कर लो, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तुम्हारे लिए बरकत की दुआ की है। चूनांचे वो उनको शरीक कर लेते। ज्यादातर पूरा पूरा ऊंट हिस्से में आता, जिसको वो अपने घर भेज देते थे।

फायदे : मालूम हुआ कि हर कब्जे वाली चीज में हिस्सेदारी हो सकती है।



किताबुल रहने फिलहजर

ठहराव की हालत में गिरवी रखना

कुरआन मजीद में गिरवी के लिए सफर की शर्त इत्तेफाकी है, क्योंकि हजर में गिरवी रखना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित है। निज गिरवी रखी हुई चीज से फायदा उठाने की मनाही है। अलबत्ता चारा डालने के ऐवज उसका दूध इस्तेमाल किया जा सकता है और उस पर सवारी भी की जा सकती है, जैसा कि आने वाली हदीस में इसकी सराहत है।

बाब 1 : गिरवी के जानवर पर सवार होना और उसका दूध पीना।

١ - باب: الرَّهْنُ مَرْكُوبٌ وَمَحْلُوبٌ

1137 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सवारी का जानवर अगर गिरवी है तो बकद्र खर्च इस पर सवारी की जा सकती है और अगर दूध वाला जानवर गिरवी है तो खर्च के ऐवज उसका दूध पिया जा सकता है। सवार होने और दूध पीने वाले के जिम्मे उसका खर्चा है।

١١٣٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (الظَّهْرُ يُرْكَبُ بِنَفَقَتِهِ إِذَا كَانَ مَرْهُونًا، وَلَبَنُ الدَّرِّ يُشْرَبُ بِنَفَقَتِهِ إِذَا كَانَ مَرْهُونًا، وَعَلَى الَّذِي يَرْكَبُ وَيَشْرَبُ النَّفَقَةُ). [رواه البخاري: ٢٥١٢]

फायदे : गिरवी रखी गई जमीन से फायदा उठाना किसी हालत में

दुरूस्त नहीं। अगर इसे ठेके पर दे तो वो रकम कर्ज से घटा दी जाये तो ऐसा करना जाइज है। या खुद खेती करे और पैदावार तकसीम करके मालिक के हिस्से के मुताबिक उसका कर्जा कम कर दे।

बाब 2 : अगर गिरवी देने वाला और जिसे गिरवी दी गई हो, किसी बात में इख्तेलाफ करें तो क्या किया जाये?

٢ - باب: إِذَا اخْتَلَفَ الرَّاهِنُ وَالمُرْتَهِنُ

1138 : इब्ने अब्बास रजि.से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फैसला किया था कि मुद्दा अलैहि. पर कसम वाजिब है।

١١٣٨ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَضَى: أَنَّ الْيَمِينَ عَلَى المُدَّعَى عَلَيْهِ. [رواه البخاري: ٢٥١٤]

फायदे : गिरवी रखी हुई जमीन में इख्तेलाफ की सूरत यूं होगी कि गिरवी रखने वाला कहे कि मैंने सिर्फ जमीन गिरवी रखी है। जबकि गिरवी कबूल करने वाला दावेदार हो कि दरख्त भी इसमें शामिल हैं। अब दावेदार को अपने दावे के सबूत के लिए दलील यानी गवाह पेश करना होंगे। दूसरी हालत में गिरवी रखने वाले की बात कसम लेकर मान ली जायेगी।



किताब फिलइतके वफजलीही
गुलाम आजाद करने के बयान में

1139 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स किसी मुसलमान गुलाम को आजाद करेगा तो अल्लाह तआला आजादकर्दा गुलाम के हर शरीर के हिस्से के बदले उसका हर शरीर का हिस्सा दोजख से आजाद कर देगा।

١١٣٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَيُّمَا رَجُلٍ أَعْتَقَ امْرَءًا مُسْلِمًا، ٱسْتَنْقَذَ ٱللهُ بِكُلِّ عُضْوٍ مِنْهُ عُضْوًا مِنْهُ مِنَ النَّارِ). [رواه البخاري: ٢٥١٧]

फायदे : एक रिवायत में यहां तक इजाफा है कि गुलाम की शर्मगाह के ऐवज आजाद करने वाले की शर्मगाह को जहन्नम से आजादी मिल जायेगी। चूंकि शिर्क के बाद सब से बड़ा गुनाह जिनाकारी है। इसलिए खसूसी तौर पर इसका जिक्र किया गया है।

 (औनुलबारी, 3/282)

बाब 1 : कौनसा गुलाम आजाद करना बेहतर है?

١ - باب: أَيُّ الرِّقَابِ أَفْضَلُ

1140 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि कौनसा काम सबसे अच्छा है? आपने फरमाया, अल्लाह पर ईमान लाना

١١٤٠ : عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ: أَيُّ الْعَمَلِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: (إِيمَانٌ بِٱللهِ، وَجِهَادٌ فِي سَبِيلِهِ). قُلْتُ: فَأَيُّ الرِّقَابِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: (أَغْلاَهَا ثَمَنًا، وَأَنْفَسُها عِنْدَ أَهْلِهَا). قُلْتُ: فَإِنْ لَمْ أَفْعَلْ؟ قَالَ: (تُعِينُ صَانِعًا،

أَوْ تَصْنَعُ لأَخْرَقَ). قَالَ: فَإِنْ لَمْ أَفْعَلْ؟ قَالَ: (تَدَعُ النَّاسَ مِنَ الشَّرِّ، فَإِنَّهَا صَدَقَةٌ تَصَدَّقُ بِهَا عَلَى نَفْسِكَ). [رواه البخاري: ٢٥١٨]

और उसकी राह में जिहाद करना। मैंने अर्ज किया, कौनसा गुलाम आजाद करना अफजल है? आपने फरमाया, जिसकी कीमत ज्यादा हो और वो अपने मालिक की नजर में निहायत पसन्दीदा हो। मैंने अर्ज किया, अगर मैं यह न कर सकूं। आपने फरमाया तो फिर किसी कारीगर की मदद कर या किसी बे-हूनर अनाड़ी को कोई काम सिखा दे। मैंने अर्ज किया, अगर यह भी न कर सकूं? आपने फरमाया, तो तुम लोगों को नुकसान ना पहुंचाओ, यह भी एक सदका है, जो तूने अपने ऊपर किया है।

फायदे : एक रिवायत में है, साने कारीगर (जिसका मतलब कारीगर है) के बजाये जायअ है, इसका मायना है कि जो तबाह हाल गरीबी और तंगी में मुब्तला हो, उसकी मदद की जाये।

(औनुलबारी, 3/284)

---

٢ - باب: إِذَا أَعْتَقَ عَبْداً بَيْنَ اثْنَيْنِ أَوْ أَمَةً بَيْنَ شُرَكَاءَ

बाब 2 : मुशतरका गुलाम या लौण्डी को आजाद कर देना।

١١٤١ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَنْ أَعْتَقَ شِرْكًا لَهُ فِي عَبْدٍ، فَكَانَ لَهُ مالٌ يَبْلُغُ ثَمَنَ الْعَبْدِ، قُوِّمَ الْعَبْدُ عَلَيْهِ قِيمَةَ عَدْلٍ، فَأَعْطَى شُرَكَاءَهُ حِصَصَهُمْ، وَعَتَقَ عَلَيْهِ الْعَبْدُ، وإِلاَّ فَقَدْ عَتَقَ مِنْهُ ما عَتَقَ). [رواه البخاري: ٢٥٢٢]

1141 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो शख्स मुस्तरिक गुलाम में से अपना हिस्सा आजाद कर दे, फिर इसके पास पूरे गुलाम की कीमत जितना माल भी हो तो इन्साफ के साथ उसकी कीमत लगाई जाये और दूसरे साझीदारों

का हिस्सा वो अदा करे, फिर गुलाम उसकी तरफ से आजाद हो जायेगा, वरना गुलाम जितना आजाद हो चुका है, उतना ही आजाद रहेगा।

٣ - باب: الخَطَأ وَالنِّسيانُ في العَتاقَةِ وَالطَّلاقِ وَنَحوِهِ

बाब 3 : आजाद करने, तलाक देने और इसी तरह दीगर (मामलों) में गलती और भूल हो जाये।

١١٤٢ : عَنْ أَبي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: قالَ رَسولُ ٱللهِ ﷺ: (إنَّ ٱللهَ تَجاوَزَ لي عَنْ أُمَّتي ما وَسْوَسَتْ بِهِ صُدُورُها، ما لَمْ تَعْمَلْ أَوْ تَكَلَّمْ). [رواه البخاري: ٢٥٢٨]

1142 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, बेशक अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत को वो बातें माफ कर दी हैं जो उनके दिलों में वसवसा के तौर पर आयें, जब तक कि उन पर अमल न करें, या जुबान से न निकालें।

फायदे : इन्सान के दिल में जो ख्यालात आते हैं, अगर बुराई पर उभारे करें तो इसे वसवसा कहा जाता है और अगर भलाई की दावत दें तो यह इल्हाम (दिल में अच्छे ख्याल का डाल दिया जाना) है। इस हदीस से मालूम हुआ कि नियत के बगैर अगर भूल-चूक से लफ्ज तलाक मुंह से निकल जाये तो उसे तलाक नहीं पड़ती।

٤ - باب: إذا قالَ لِعَبْدِهِ هُوَ لله ونَوَى العِتقَ، والإشْهادِ بالعِتقِ

बाब 4 : जब कोई अपने गुलाम से कहे, यह अल्लाह के लिए है और नियत आजाद करने की हो, निज आजाद करने में गवाह बनाना।

١١٤٣ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ لَمَّا أَقْبَلَ يُريدُ الإسْلامَ، وَمَعَهُ غُلامُهُ، ضَلَّ كُلُّ واحِدٍ مِنْهُما مِنْ صاحِبِهِ، فَأَقْبَلَ بَعْدَ ذاكَ وأَبُو هُرَيْرَةَ

1143 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि जब वो मुसलमान होने के इरादे से आये तो उनके साथ

جالِسٌ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (يَا أَبَا هُرَيْرَةَ، هٰذَا غُلامُكَ قَدْ أَتَاكَ). فَقَالَ: أَمَا إِنِّي أُشْهِدُكَ أَنَّهُ حُرٌّ، قَالَ: فَهُوَ حِينَ يَقُولُ:

يَا لَيْلَةً مِنْ طُولِهَا وَعَنَائِهَا
عَلَى أَنَّهَا مِنْ دَارَةِ الْكُفْرِ نَجَّتِ

[رواه البخاري: ٢٥٣٠]

इनका गुलाम भी था। लेकिन रास्ते में भूलकर दोनों अलग अलग हो गये, फिर वो गुलाम उस वक्त वापिस आया, जब अबू हुरैरा रजि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुये थे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ अबू हुरैरा रजि.! यह तेरा गुलाम हाजिर है। इस पर अबू हुरैरा रजि. ने कहा कि मैं आपको गवाह करता हूँ कि यह गुलाम आज से आजाद है। रावी का बयान है कि उस वक्त अबू हुरैरा रजि. यह शेअर पढ़ रहे थे।

''है प्यारी, गरचे कठिन है, लम्बी मेरी रात
पर दिलाई इसने दारूलकुफ्र (काफिरों के घर) से मुझको निजात''

फायदे : बुखारी की एक रिवायत (2532) में आप गवाह रहें, वो गुलाम अल्लाह के लिए है। इमाम बुखारी का मतलब यह है कि इस किस्म के गैर सरीह अलफाज इस्तेमाल करने से उस वक्त आजादी मानी जाती है, जब उसकी नियत हो।

बाब 5 : मुश्रिक का गुलाम आजाद करना।

٥ - باب: عِتْقُ الْمُشْرِكِ

١١٤٤ : عَنْ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ: أَنَّهُ أَعْتَقَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ مِائَةَ رَقَبَةٍ، وَحَمَلَ عَلَى مِائَةِ بَعِيرٍ، فَلَمَّا أَسْلَمَ حَمَلَ عَلَى مِائَةِ بَعِيرٍ، وَأَعْتَقَ مِائَةَ رَقَبَةٍ، قَالَ: فَسَأَلْتُ رَسُولَ ٱللَّهِ ﷺ وَذَكَرَ الْحَدِيثَ، وَقَدْ تَقَدَّمَ فِي الزَّكَاةِ. [رواه البخاري: ٢٥٣٨، وانظر حديث رقم: ١٤٣٦]

1144 : हकीम बिन हिजाम रजि. से रिवायत है, उन्होंने जमाना जाहिलियत में सौ गुलाम आजाद किये और एक सौ ऊंट लोगों को सवारी के लिए दिए थे। जब वो मुसलमान हुए तो सौ ऊंट मजीद

लोगों को सवारी के लिए दिये और सौ गुलाम आजाद किये। हकीम रजि. कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया, फिर वो तमाम हदीस (726) बयान की जो किताबुल जकात गुजर चुकी है।

फायदे : काफिर की कोई नेकी कबूल नहीं होती, और न ही इसे आखिरत में कोई सवाब मिलेगा, लेकिन मुसलमान बन्दों पर उसकी खास मेहरबानी है कि उनके कुफ्र के जमाने में की हुई नेकियां बरकरार रहती हैं, जैसा कि हदीस में बयान किया गया है।

बाब 6 : अगर कोई शख्स किसी अरबी गुलाम का मालिक हो जाये (तो क्या यह दुरूस्त है?)

٦ - باب: مَنْ مَلَكَ مِنَ العَرَبِ رَقِيقاً

1145 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कबिला मुसतलिक पर उस वक्त हमला किया, जब वो गफलत में थे और उनके जानवरों को चश्मों पर पानी पिलाया जा रहा था, लिहाजा आपने जंगी आदमियों को कत्ल कर दिया, उनकी औरतों और बच्चों को कैद कर लिया और इस दिन जुवैरिया रजि. आपके हाथ आयीं।

١١٤٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَغَارَ عَلَى بَنِي الْمُصْطَلِقِ وَهُمْ غَارُّونَ، وَأَنْعَامُهُمْ تُسْقَى عَلَى الْمَاءِ، فَقَتَلَ مُقَاتِلَتَهُمْ، وَسَبَى ذَرَارِيَّهُمْ، وَأَصَابَ يَوْمَئِذٍ جُوَيْرِيَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا. [رواه البخاري: ٢٥٤١]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि अरब को गुलाम बनाया जा सकता है, क्योंकि बनू मुसतलिक अरब के एक कबिले खुजाअ से हैं। (औनुलबारी, 3/290)

١١٤٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: ما زِلْتُ أُحِبُّ بَنِي تَمِيمٍ مُنْذُ ثَلاَثٍ، سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ فِيهِمْ، سَمِعْتُهُ يَقُولُ: (هُمْ أَشَدُّ أُمَّتِي عَلَى ٱلدَّجَّالِ). قَالَ: وَجاءَتْ صَدَقَاتُهُمْ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (هٰذِهِ صَدَقَاتُ قَوْمِنَا). وَكَانَتْ سَبِيَّةٌ مِنْهُمْ عِنْدَ عائِشَةَ فَقَالَ: (أَعْتِقِيهَا فَإِنَّهَا مِنْ وَلَدِ إِسْماعِيلَ). [رواه البخاري: ٢٥٤٣]

1146 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं बनी तमीम से बराबर मुहब्बत करता रहता हूँ, जब से उनके मुताल्लिक मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तीन बातें सुनी हैं। आप फरमाते थे, मेरी उम्मत में से दज्जाल पर यही लोग ज्यादा सख्त होंगे। अबू हुरैरा रजि. का बयान है कि इनकी तरफ से जकात आयी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यह हमारी कौम की जकात है ओर उनमें एक लौण्डी आइशा रजि.के पास थी, जिसके मुताल्लिक आपने फरमाया, इसे आजाद कर दे, क्योंकि यह इस्माईल रजि. की औलाद है।

फायदे : हजरत आइशा रजि. ने नजर मानी थी कि इस्माईली गुलाम को आजाद करूंगी, क्योंकि हजरत इस्माईल की औलाद से किसी गुलाम को आजाद करना अल्लाह के यहां बहुत मकाम रखता है। (औनुलबारी, 3/292)

---

٧ - باب: كَرَاهِيَةُ التَّطَاوُلِ عَلَى الرَّقِيقِ

बाब 7 : गुलाम को मारना-पीटना करना नाजाइज है।

١١٤٧ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (لا يَقُلْ أَحَدُكُمْ: أَطْعِمْ رَبَّكَ، وَضِّئْ رَبَّكَ، ٱسْقِ رَبَّكَ، وَلْيَقُلْ: سَيِّدِي وَمَوْلاَيَ، وَلا يَقُلْ أَحَدُكُمْ: عَبْدِي أَمَتِي، وَلْيَقُلْ: فَتَايَ وَفَتَاتِي وَغُلاَمِي). [رواه البخاري: ٢٥٥٢]

1147 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, तुम से कोई शख्स इस तरह ना कहे, तू अपने रब

(मालिक) को खाना खिला, अपने रब को वजू करा, अपने रब को पानी पिला, बल्कि यू कहे, अपने सरदार, अपने आका को और कोई तुम से यूं ना कहे, मेरा बन्दा, मेरी बन्दी बल्कि यूँ कहे, मेरा खादिम, खादमा और मेरा गुलाम।

फायदे : इस लफ्ज का इस्तेमाल इसलिए मना है कि सही मायने में रब तो सिर्फ अल्लाह है, लिहाजा यह लफ्ज किसी मखलूक के लिए इस्तेमाल ना किया जाये, लेकिन कुरआन करीम में इजाफा के साथ यह लफ्ज गैरअल्लाह के लिए इस्तेमाल हुआ है। मालूम हुआ कि यह हराम नहीं है। (औनुलबारी, 3/293)

बाब 8 : जब किसी शख्स का खादिम उसका खाना लाये।

٨ - باب: إِذَا أَتَى أَحَدَكُمْ خَادِمُهُ بِطَعَامِهِ

1148 : अबू हुरैरा रजि. से ही एक और रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया जब तुममें से किसी के पास उसका खादिम खाना लेकर आये तो अगर उसको अपने साथ न खिला सकते तो इसको एक दो लुकमे या खाने की चीज में से कुछ ना कुछ जरूर देना चाहिए, क्योंकि उसने इसको तैयार करने की जहमत उठायी है।

١١٤٨ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: (إِذَا أَتَى أَحَدَكُمْ خَادِمُهُ بِطَعَامِهِ، فَإِنْ لَمْ يُجْلِسْهُ مَعَهُ، فَلْيُنَاوِلْهُ لُقْمَةً أَوْ لُقْمَتَيْنِ، أَوْ أُكْلَةً أَوْ أُكْلَتَيْنِ، فَإِنَّهُ وَلِيَ عِلاَجَهُ). [رواه البخاري: ٢٥٥٧]

फायदे : खादिम को अपने साथ बैठाने का हुक्म अच्छा है, अगर ऐसा मुमकिन ना हो तो कम से कम एक दो लुकमे उसे जरूर देने चाहिए। (औनुलबारी,3/295)

बाब 9 : अगर अपने गुलाम को मारे तो चेहरे पर मारने से परहेज करें।

٩ - باب: إِذَا ضَرَبَ الْعَبْدَ فَلْيَتَجَنَّبِ الْوَجْهَ

1149 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, तुम से कोई अगर किसी को मारपीट करे तो चेहरे पर मारने से परहेज करे।

١١٤٩ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (إذَا قَاتَلَ أَحَدُكُمْ فَلْيَجْتَنِبِ الْوَجْهَ). [رواه البخاري: ٢٥٥٩]

फायदे : मुस्लिम की रिवायत में लफ्ज "जरबा" है, इस हदीस में अगरचे खादिम को मारने की सराहत नहीं, मगर इमाम बुखारी ने अलअदबुलमुफरद (किताब का नाम) की एक रिवायत की तरफ इशारा किया है कि जब तुममें से कोई अपने खादिम को मारे तो चेहरे पर मारने से परहेज करे। (औनुलबारी, 3/296)

बाब 10 : मुकातिब (वो गुलाम जिससे उसके मालिक यह शर्त लिखवायें कि तू इतनी रकम चुका देगा तो आजाद हो जायेगा) से कौनसी शर्तें जाइज हैं?

١٠ - باب: ما يَجُوزُ مِن شُرُوطِ المُكاتَبِ

1150 : आइशा रजि. से रिवायत है कि बरीरा रजि. उनके पास अपनी किताबत में मदद लेने आयीं और उस वक्त तक उन्होंने अपनी किताबत में से कुछ नहीं अदा किया था, आइशा ने उनसे कहा कि तुम अपने मालिक के पास जाओ, अगर वो चाहें मैं तुम्हारी तरफ से अदा करूं, लेकिन तुम्हारी वला (गुलाम के मर जाने के बाद,

١١٥٠ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ بَرِيرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا جاءَتْ تَسْتَعِينُهَا فِي كِتَابَتِهَا، وَلَمْ تَكُنْ قَضَتْ مِنْ كِتَابَتِهَا شَيْئًا، قَالَتْ لَهَا عَائِشَةُ: ٱرْجِعِي إِلَى أَهْلِكِ، فَإِنْ أَحَبُّوا أَنْ أَقْضِيَ عَنْكِ كِتَابَتَكِ، وَيَكُونَ وَلَاؤُكِ لِي فَعَلْتُ، فَذَكَرَتْ ذٰلِكَ بَرِيرَةُ لأَهْلِهَا فَأَبَوْا، وَقَالُوا: إِنْ شَاءَتْ أَنْ تَحْتَسِبَ عَلَيْكِ فَلْتَفْعَلْ، وَيَكُونَ وَلَاؤُكِ لَنَا، فَذَكَرَتْ ذٰلِكَ لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَقَالَ لَهَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (ٱبْتَاعِي، فَأَعْتِقِي، فَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَعْتَقَ). قالَ: ثُمَّ قَامَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: (مَا بَالُ أُنَاسٍ يَشْتَرِطُونَ شُرُوطًا

لَيْسَتْ فِي كِتَابِ ٱللهِ، مَنِ ٱشْتَرَطَ شَرْطًا لَيْسَ فِي كِتَابِ ٱللهِ فَلَيْسَ لَهُ، وَإِنِ اشْتَرَطَ مِائَةَ شَرْطٍ، شَرْطُ ٱللهِ أَحَقُّ وَأَوْثَقُ). [رواه البخاري: ٢٥٦١]

उसकी बची हुई जायदाद) मुझ को मिले तो मैं अदा करूंगी, बरीरा रजि. ने इसका जिक्र अपने आका से किया तो उसने इनकार कर दिया और कहा, अगर इनको सवाब की ख्वाहिश है तो ऐसा कर दे, मगर तुम्हारी वला हमारे पास रहेगी, आइशा रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जिक्र किया तो आपने फरमाया, तुम उसे खरीद कर आजाद कर दो, वला तो इसी को मिलेगी, जो आजाद करेगा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खड़े होकर खुत्बा इरशाद फरमाया, उन लोगों को क्या हो गया है, जो ऐसी शर्ते लगाते हैं, जिनकी अल्लाह के कानून के ऐतबार से इजाजत नहीं है, जो शख्स ऐसी शर्त लगायेगा, जो अल्लाह की किताब में ना हो तो उसकी यह शर्त लागू न की जायेगी, चाहे वो सौ बार शर्त लगाये और अल्लाह की शर्त ही सबसे ज्यादा अक्ल के मुताबिक और मजबूत है।

फायदे : इसका मतलब यह है कि गैर मशरूह शरायत की कोई हैसियत नहीं है, अलबत्ता जाइज और मशरूह शरायत का ऐतबार करना जरूरी है। किसी शर्त का अल्लाह की किताब में न होने का मतलब यह है कि इसका जाइज होना या वाजिब होना किताब से साबित न हो। (औनुलबारी, 3/299)



किताबुल हिबती व फजलिहा वलतहरीजे अलैहा

हिबा की फजीलत और उसकी तरगीब

बाब 1 : हिबा (किसी को कोई चीज खुशी के तौर पर देना) की फजीलत।

١ - باب: فَضْلُ الهِبَةِ

1151 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, ऐ मुसलमान औरतों! कोई पड़ौसन दूसरी पड़ौसन की किसी चीज को कमतर न ख्याल करे, चाहे वो बकरी का खूर (पंजा) ही हो।

١١٥١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يَا نِسَاءَ المُسْلِمَاتِ، لاَ تَحْقِرَنَّ جَارَةٌ لِجَارَتِهَا، وَلَوْ فِرْسِنَ شَاةٍ). [رواه البخاري: ٢٥٦٦]

फायदे : मतलब यह है कि हमसाया का तौहफा खुशी से कबूल करना चाहिए, जुबान से कोई ऐसी बात न निकाली जाये, जिससे उसकी रूसवाई हो, इससे यह भी साबित हुआ कि हमसायों का तोहफा लेना-देना जाइज है। (औनुलबारी, 3/302)

1152 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने उरवा रजि. से कहा, ऐ मेरे भान्जे। बेशक हम चांद देखते फिर दूसरा चांद देखते थे। इसी तरह दो महीने में तीन चांद देख

١١٥٢ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ لِعُرْوَةَ: يَا ابْنَ أُخْتِي، إِنْ كُنَّا لَنَنْظُرُ إِلَى الْهِلاَلِ، ثُمَّ الْهِلاَلِ، ثَلاَثَةَ أَهِلَّةٍ فِي شَهْرَيْنِ، وَمَا أُوقِدَتْ فِي أَبْيَاتِ رَسُولِ ٱللهِ

ﷺ نَارٌ، فَقُلْتُ: يَا خَالَةُ، ما كانَ يُعَيِّشُكُمْ؟ قالَتِ الأَسْوَدَانِ: التَّمْرُ وَالمَاءُ، إلاَّ أَنَّهُ قَدْ كانَ لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ جِيرَانٌ مِنَ الأَنْصارِ، كانَتْ لَهُمْ مَنَائِحُ، وَكانُوا يَمْنَحُونَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ مِنْ أَلْبَانِها فَيَسْقِينَا. [رواه البخاري: ٢٥٦٧]

लेते और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घरों में आग तक न जलाई जाती थी। उरवा रजि. ने कहा, खाला जान! ऐसे हालात में तुम्हारी जिन्दगी कैसी गुजरती थी? आइशा रजि. ने फरमाया, दो काली चीजें यानी खजूर और पानी पर गुजर बसर होता, अलबत्ता रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पड़ौस में कुछ अनसार रहते थे, जिनके पास दूध की बकरियां थीं, वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए दूध भेज देते तो आप वो दूध हमको भी पिला दिया करते थे।

١١٥٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (لَوْ دُعِيتُ إِلَى ذِرَاعٍ، أَوْ كُرَاعٍ، لأَجَبْتُ، وَلَوْ أُهْدِيَ إِلَيَّ ذِرَاعٌ أَوْ كُرَاعٌ لَقَبِلْتُ). [رواه البخاري: ٢٥٦٨]

1153 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अगर मुझे दस्ती या रान के गोश्त की दावत दी जाये तो मैं कबूल कर लूंगा और अगर मेरे पास दस्ती या रान का गोश्त बतौर तौहफा भेजा जाये तो भी कबूल कर लूंगा।

फायदे : इस हदीस पर इमाम बुख़ारी ने यूं उनवान कायम किया है, "थोड़ी सी चीज हिबा करना" तौहफा भी हिबा की तरह है। इस हदीस से मालूम हुआ कि थोड़ी सी चीज का हिबा करना भी दुरूस्त है, और उसे कबूल भी करना चाहिए।

(औनुलबारी, 3/304)

٢ - باب: قَبُولُ هَدِيَّةِ الصَّيْدِ

बाब 2 : शिकार का तौहफा कबूल करना।

١١٥٤ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَنْفَجْنَا أَرْنَبًا بِمَرِّ الظَّهْرَانِ، فَسَعَى الْقَوْمُ فَلَغِبُوا، فَأَدْرَكْتُهَا فَأَخَذْتُهَا، فَأَتَيْتُ بِهَا أَبَا طَلْحَةَ فَذَبَحَهَا، وَبَعَثَ بِهَا إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ: بِوَرِكِهَا أَوْ فَخِذَيْهَا، فَقَبِلَهُ، وَفِي رِوَايَةٍ: وَأَكَلَ مِنْهُ. [رواه البخاري: ٢٥٧٢]

1154 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हमने मरहुज्जहरान में एक खरगौश भगाया तो लोग उसके पीछे दौड़ते हुये थक गये, आखिरकार मैंने उसे पकड़ लिया और अबू तलहा रजि. के पास ले आया। उन्होंने उसे जिब्ह करके उसकी रानें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेज दी, आपने वो कबूल फरमा लीं। एक और रिवायत में है कि आपने उसमें से खाया।

फायदे : इससे शिया की भी तरदीद होती है जो खरगोश का गोश्त इसलिए नहीं खाते कि उसकी मादा को खून आता है, लेकिन यह इसके हराम होने की दलील नहीं। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खाया है तो फिर इसके हलाल होने में क्या शक है?

٣ - باب: قَبُولُ الْهَدِيَّةِ

बाब 3 : हदिया कबूल करना।

١١٥٥ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ

1155 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत

عَنْهُمَا قَالَ: أَهْدَتْ أُمُّ حُفَيْدٍ، خَالَةُ ابْنِ عَبَّاسٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ أَقِطًا وَسَمْنًا وَأَضُبًّا، فَأَكَلَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الأَقِطِ وَالسَّمْنِ، وَتَرَكَ الأَضُبَّ تَقَذُّرًا. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَأُكِلَ عَلَى مَائِدَةِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَلَوْ كَانَ حَرَامًا مَا أُكِلَ عَلَى مَائِدَةِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٢٥٧٥]

है, उन्होंने फरमाया, उम्मे हुफैद रजि. ने जो इब्ने अब्बास रजि. की खाला थी, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पनीर, घी, और कुछ सौ समार (साँडा) हदिया भेजे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पनीर और घी तो खा लिया, मगर सौ समार (साँडा) को नफरत करते हुये छोड़ दिया। इब्ने अब्बास रजि. फरमाते हैं कि वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्तरखान पर खाई गयी, अगर वो हराम होती तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्तरखान पर न खाई जाती।

फायदे : हजरत इब्ने उमर रजि. की रिवायत भी इस हदीस की मजीद वजाहत होती है, आपने सौ समार (साँडा) को किराहत की वजह से नहीं खाया, उसे हराम करार नहीं दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का घी और पनीर को खाना इस बात की दलील है कि आपने हदीया कबूल फरमाया। (औनुलबारी, 3/306)

١١٥٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِذَا أُتِيَ بِطَعَامٍ سَأَلَ عَنْهُ: (أَهَدِيَّةٌ أَمْ صَدَقَةٌ) فَإِنْ قِيلَ صَدَقَةٌ، قَالَ لأَصْحَابِهِ: (كُلُوا). وَلَمْ يَأْكُلْ. وَإِنْ قِيلَ: هَدِيَّةٌ، ضَرَبَ بِيَدِهِ ﷺ فَأَكَلَ مَعَهُمْ. [رواه البخاري: ٢٥٧٦]

1156 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास अगर कोई खाने की चीज लाई जाती तो आप उसकी बाबत दरयाफ्त करते कि यह सदका है या हदीया? अगर कहा जाता कि सदका है तो आप अपने सहाबा किराम रजि. को फरमाते, तुम खा

लो और खुद न खाते और अगर कहा जाता कि हदीया है तो आप अपना हाथ बढ़ाकर उनके साथ खुद भी खाते।

١١٥٧ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِلَحْمٍ، فَقِيلَ: تُصُدِّقَ عَلَى بَرِيرَةَ، قالَ: (هوَ لَهَا صَدَقَةٌ، وَلَنَا هَدِيَّةٌ).

[رواه البخاري: ٢٥٧٧]

1157 : अनस रजि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कुछ गोश्त लाया गया और कहा गया कि यह बरीरा रजि. को सदका में मिला है। आपने फरमाया उसके लिए तो यह सदका है, लेकिन हमारे लिए हदीया है।

फायदे : अगरचे वो गोश्त हजरत बरीरा रजि. को सदका के तौर पर मिला था, मगर उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तौहफा के तौर पर भेजा था, मालूम हुआ कि फकीर अगर सदका की कोई चीज मालदार को तौहफे के तौर पर भेजे तो मालदार उसे इस्तेमाल में ला सकता है।

---

٤ - باب: مَنْ أَهْدَى إِلى صَاحِبِهِ وَتَحَرَّى بَعْضَ نِسَائِهِ دُونَ بَعْضٍ

बाब 4 : अपने किसी दोस्त को जानबूझकर उस दिन तौहफा भेजना जब वो किसी खास बीवी के पास हो।

١١٥٨ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ نِسَاءَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ كُنَّ حِزْبَيْنِ: فَحِزْبٌ فِيهِ عائِشَةُ وَحَفْصَةُ وَصَفِيَّةُ وَسَوْدَةُ، وَٱلْحِزْبُ الآخَرُ فيه أُمُّ سَلَمَةَ وَسَائِرُ نِساءِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَكانَ المُسْلِمُونَ قَدْ عَلِمُوا حُبَّ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ عائِشَةَ، فَإِذَا كَانَتْ عِنْدَ أَحَدِهِمْ هَدِيَّةٌ، يُرِيدُ أَنْ يُهْدِيَهَا إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ أَخَّرَهَا،

1158 : आइशा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों के दो ग्रुप थे। एक में आइशा, हफ्सा, सफिया और सौदा रजि. थीं, दूसरे ग्रुप में उम्मे सलमा रजि. और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

حَتَّى إِذَا كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي بَيْتِ عَائِشَةَ، بَعَثَ صَاحِبُ الْهَدِيَّةِ بِهَا إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي بَيْتِ عَائِشَةَ، فَكَلَّمَ حِزْبُ أُمِّ سَلَمَةَ، فَقُلْنَ لَهَا: كَلِّمِي رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يُكَلِّمُ النَّاسَ، فَيَقُولُ: مَنْ أَرَادَ أَنْ يُهْدِيَ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ هَدِيَّةً، فَلْيُهْدِهَا إِلَيْهِ حَيْثُ كَانَ مِنْ نِسَائِهِ، فَكَلَّمَتْهُ أُمُّ سَلَمَةَ بِمَا قُلْنَ لَهَا، فَلَمْ يَقُلْ لَهَا شَيْئًا، فَسَأَلْنَهَا، فَقَالَتْ: مَا قَالَ لِي شَيْئًا، فَقُلْنَ لَهَا: فَكَلِّمِيهِ، قَالَتْ: فَكَلَّمَتْهُ حِينَ دَارَ إِلَيْهَا أَيْضًا، فَلَمْ يَقُلْ لَهَا شَيْئًا، فَسَأَلْنَهَا فَقَالَتْ: مَا قَالَ لِي شَيْئًا، فَقُلْنَ لَهَا: كَلِّمِيهِ حَتَّى يُكَلِّمَكِ، فَدَارَ إِلَيْهَا فَكَلَّمَتْهُ، فَقَالَ لَهَا: (لاَ تُؤْذِينِي فِي عَائِشَةَ، فَإِنَّ الْوَحْيَ لَمْ يَأْتِنِي وَأَنَا فِي ثَوْبِ ٱمْرَأَةٍ إِلاَّ عَائِشَةَ). قَالَتْ: فَقُلْتُ: أَتُوبُ إِلَى ٱللهِ مِنْ أَذَاكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، ثُمَّ إِنَّهُنَّ دَعَوْنَ فَاطِمَةَ بِنْتَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَأَرْسَلَتْ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ تَقُولُ: إِنَّ نِسَاءَكَ يَنْشُدْنَكَ ٱللهَ الْعَدْلَ فِي بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ، فَكَلَّمَتْهُ فَقَالَ: (يَا بُنَيَّةُ، أَلاَ تُحِبِّينَ مَا أُحِبُّ؟). قَالَتْ: بَلَى، فَرَجَعَتْ إِلَيْهِنَّ فَأَخْبَرَتْهُنَّ، فَقُلْنَ: ٱرْجِعِي إِلَيْهِ فَأَبَتْ أَنْ تَرْجِعَ، فَأَرْسَلْنَ زَيْنَبَ بِنْتَ جَحْشٍ، فَأَتَتْهُ فَأَغْلَظَتْ، وَقَالَتْ: إِنَّ نِسَاءَكَ يَنْشُدْنَكَ ٱللهَ الْعَدْلَ فِي

बाकी बीवियां थी और मुसलमानों को यह मालूम था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज्यादा मुहब्बत आइशा रजि. से है, लिहाजा अगर कोई आदमी नबी अकरम रजि. को हदीया देना चाहता तो वो उस वक्त का इन्तेजार करता जब हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आइशा रजि. के घर तशरीफ लाते। तो हदीया देने वाला हदीया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आइशा रजि. के घर भेजता, (एक दिन) उम्मे सलमा रजि. के ग्रुप ने गुफ्तगू की और उम्मे सलमा रजि. से कहा कि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस बारे में पूछो कि आप लोगों से फरमायें कि जो आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हदिया देना चाहे, वो भेज दे। चाहे आप अपनी किसी बीवी के पास हों, चूनांचे उम्मे सलमा रजि. ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से वो बात कह दी जो उनके ग्रुप ने उन्हें कही थी तो

بِنْتِ ابْنِ أَبِي قُحَافَةَ، فَرَفَعَتْ صَوْتَهَا حَتَّى تَنَاوَلَتْ عَائِشَةَ وَهِيَ قَاعِدَةٌ فَسَبَّتْهَا، حَتَّى إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ لَيَنْظُرُ إِلَى عَائِشَةَ هَلْ تَكَلَّمُ، قَالَ: فَتَكَلَّمَتْ عَائِشَةُ تَرُدُّ عَلَى زَيْنَبَ حَتَّى أَسْكَتَتْهَا، قَالَتْ: فَنَظَرَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى عَائِشَةَ، وَقَالَ: (إِنَّهَا بِنْتُ أَبِي بَكْرٍ). [رواه البخاري: ٢٥٨١]

आपने कोई जवाब न दिया। उनके ग्रुप ने उनसे पूछा तो उन्होंने कहा, आपने कोई जवाब नहीं दिया। उनके ग्रुप ने कहा, फिर आपसे पूछना। आइशा रजि. बयान करती हैं, उसकी जब बारी आयी तो उसने फिर आपसे बात की। आपने फिर कुछ न कहा, उसके ग्रुप ने फिर पूछा तो उन्होंने कहा, आपने कोई जवाब नहीं दिया। उनके ग्रुप ने कहा, जब तक आप जवाब न दें, आप बात करती रहें। फिर उम्मे सलमा की बारी आई तो उन्होंने फिर बातचीत की तो आपने फरमाया, तुम मुझे आइशा रजि. के बारे में तकलीफ न दो। क्योंकि आइशा के अलावा किसी बीवी के कपड़े में मुझ पर वह्य नहीं उतरी। उम्मे सलमा रजि. बयान करती हैं, मैंने गुजारिश की, ऐ अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं आपको तकलीफ देने से अल्लाह से तौबा करती हूँ। उसके बाद उन बीवियों ने आपकी लख्ते-जिगर फातिमा रजि. को बुला कर उनके जरीये हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम तक यह पैगाम पहुंचाया कि आपकी बीवियां आपको अबू बकर रजि. की बेटी की बाबत इन्साफ के लिए अल्लाह का वास्ता देती हैं। फातिमा रजि. ने आपसे बात की। तो आपने फरमाया, ऐ बेटी! क्या तुझे वो बात पसन्द नहीं जो मैं पसन्द करता हूँ? उन्होंने अर्ज किया: क्यों नहीं? तो वो लौटकर उनके पास गयी और उन्हें बताया, उन्होंने फिर उससे कहा, आप फिर हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जायें। उसने दोबारा जाने से इनकार कर दिया, तो उन्होंने जैनब बिन्ते जहश रजि. को भेजा। तो

उसने आपके पास आकर सख्त गुफ्तगू की और कहा, आपकी बीवियां अबू कुहाफा की पोती के सिलसिले में अल्लाह के वास्ते से आपके इन्साफ की तमन्ना करती हैं। जैनब रजि. ने आवाज बुलन्द करते हुये आइशा रजि. को निशान बनाया। वो बैठी हुई थीं, उन्होंने खूब बुरा-भला कहा, यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आइशा रजि. की तरफ देखने लगे कि वो जवाब देती है या नहीं। तो आइशा रजि. ने जैनब रजि. को जवाब देना शुरू किया। आखिरकार उसे खामोश करा दिया, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आइशा रजि. को देखकर फरमाया, आखिर वो भी अबू बकर रजि. की बेटी है।

फायदेः इस हदीस से सिद्दीका कायनात हजरत आइशा रजि. और उनके वालिद गिरामी हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. की फजीलत व अहमियत मालूम होती है। कुछ लोग उनके खिलाफ जुबानदराजी करके अपने आमाल नामे को काला करते रहते हैं।

बाब 5 : किस किस्म के तौहफे वापिस न किये जायें।

٥ - باب: مَا لاَ يُرَدُّ مِنَ الهَدِيَّةِ

1159: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुशबू वापिस नहीं करते थे।

١١٥٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لاَ يَرُدُّ الطِّيبَ. [رواه البخاري: ٢٥٨٢]

फायदे : एक दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तकिया, तेल और दूध वापिस न करते थे। हदीस में तेल से मुराद खुशबू है। आपने उसे वापिस न करने की तलकीन की है, क्योंकि उसके देने से आसानी और ज्यादा नफा पहुंचाना है। (औनुलबारी,3/312)

बाब 6 : तौहफे का बदला देना अच्छा है।

٦ - باب: المُكَافَأَةُ فِي الهِبَة

1160 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तौहफा कबूल फरमा लेते और उसका कुछ बदला भी देते थे।

١١٦٠ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنها قالَتْ: كانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَقْبَلُ الهَدِيَّةَ وَيُثِيبُ عَلَيها. [رواه البخاري: ٢٥٨٥]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अच्छी आदत का तकाजा है कि हदीया कबूल करले और देने वाले को कुछ बदले में दे, निज देने वाला अगर जरूरतमन्द है तो अपने हदीया के बदले की उम्मीद रख सकता है। (औनुलबारी, 3/313)

बाब 7 : हदीया में गवाह बनाना।

٧ - باب: الإِشْهَادُ فِي الهِبَة

1161 : नोमान बिन बशीर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मेरे वालिद ने मुझे कुछ अतिया (खुशी से कोई चीज देना) दिया तो मेरी वाल्दा अमरा बिन्ते रवाहा रजि. ने कहा, मैं उस वक्त तक राजी नहीं होऊंगी, जब तक तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गवाह न बनावो। लिहाजा वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और अर्ज किया कि मैंने अपने बेटे को जो अमरा बिन्ते रवाहा रजि. के बतन से हैं, कुछ तौहफा दिया है, अमरा रजि. कहती हैं कि इस

١١٦١ : عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قالَ: أَعْطَانِي أَبِي عَطِيَّةً، فَقالَتْ عَمْرَةُ بِنْتُ رَوَاحَةَ: لاَ أَرْضَى حَتَّى تُشْهِدَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، فَأَتَى رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فَقالَ: إِنِّي أَعْطَيْتُ ٱبْنِي مِنْ عَمْرَةَ بِنْتِ رَوَاحَةَ عَطِيَّةً، فَأَمَرَتْنِي أَنْ أُشْهِدَكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قالَ: (أَعْطَيْتَ سائِرَ وَلَدِكَ مِثْلَ هٰذَا؟)، قالَ: لاَ، فقالَ النَّبِيُّ ﷺ: (فَٱتَّقُوا ٱللهَ وَٱعْدِلُوا بَيْنَ أَوْلاَدِكُمْ). قالَ: فَرَجَعَ فَرَدَّ عَطِيَّتَهُ. [رواه البخاري: ٢٥٨٧]

पर मैं आपको गवाह बना लूं। आपने पूछा क्या तुमने अपने तमाम औलाद को इतना ही दिया है? उन्होंने कहा, नहीं! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह से डरो और अपनी औलाद के बीच इन्साफ करो। नोमान रजि. का बयान है कि यह सुनकर मेरा बाप लौट आया और उन्होंने दी हुई वो चीज वापिस ले ली।

फायदे : औलाद में इन्साफ का तकाजा यह है कि तमाम बच्चों और बच्चियों को बराबरी की बुनियाद पर तौहफे दिये जाये। हां अगर कोई बच्चा मआजूर या मोहताज है तो उसे कुछ ज्यादा देने में कोई हर्ज नहीं। (औनुलबारी, 3/316)

बाब 8 : बीवी शौहर का आपस में तौहफों का लेन-देन करना कैसा है?

٨ - باب: هِبَةُ الرَّجُلِ لامْرَأَتِهِ وَالمَرأَةِ لِزَوجِهَا

1162: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हिबा देकर वापिस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो उल्टी करके फिर उसे खा जाता है।

١١٦٢ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قالَ: قالَ النَّبِيُّ ﷺ: (العَائِدُ فِي هِبَتِهِ كالْكَلْبِ، يَقِيءُ ثُمَّ يَعُودُ فِي قَيْئِهِ). [رواه البخاري: ٢٥٨٩]

फायदे : हिबा देकर वापिस लेना हराम है, अलबत्ता बाप अपने बच्चों को हिबा देकर वापिस ले सकता है। (औनुलबारी, 3/318)

बाब 9 : शौहर की मौजूदगी में औरत का किसी को हदीया देना और गुलाम आजाद करना।

٩ - باب: هِبَةُ المَرأَةِ لِغَيرِ زَوْجِهَا وَعِتقِهَا إِذَا كَانَ لَهَا زَوْجٌ

١١٦٣ : عَنْ مَيْمُونَةَ بِنْتِ الحَارِثِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّهَا أَعْتَقَتْ وَلِيدَةً، وَلَمْ تَسْتَأْذِنِ النَّبِيَّ ﷺ، فَلَمَّا كَانَ يَوْمُهَا الَّذِي يَدُورُ عَلَيْهَا فِيهِ قَالَتْ: أَشَعَرْتَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَنِّي أَعْتَقْتُ وَلِيدَتِي؟ قَالَ: (أَوَ فَعَلْتِ؟). قَالَتْ: نَعَمْ، قَالَ: (أَمَا إِنَّكِ لَوْ أَعْطَيْتِيهَا أَخْوَالَكِ كَانَ أَعْظَمَ لأَجْرِكِ). [رواه البخاري: ٢٥٩٢]

1163 : मैमूना बिन्ते हारिस रजि. से रिवायत है कि उसने अपनी एक लौण्डी को आजाद कर दिया, जिसकी बाबत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इजाजत नहीं ली थी। जब उनकी बारी के दिन आप तशरीफ लाये तो अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या आपको मालूम है कि मैंने अपनी लौण्डी को आजाद कर दिया है? आपने फरमाया, क्या वाकई आजाद कर चुकी हो? उसने कहा, जी हाँ! आपने फरमाया, अगर तू वो लौण्डी अपने ननिहाल को देती तो तुझे ज्यादा सवाब होता।

फायदे : अगर कोई रिश्तेदार मोहताज हो तो गुलाम आजाद करने के बजाये उन्हें बतौर तौहफा देना ज्यादा अच्छा है।

(औनुलबारी, 3/319)

١١٦٤ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِذَا أَرَادَ سَفَرًا أَقْرَعَ بَيْنَ نِسَائِهِ، فَأَيَّتُهُنَّ خَرَجَ سَهْمُهَا خَرَجَ بِهَا مَعَهُ، وَكَانَ يَقْسِمُ لِكُلِّ ٱمْرَأَةٍ مِنْهُنَّ يَوْمَهَا وَلَيْلَتَهَا، غَيْرَ أَنَّ سَوْدَةَ بِنْتَ زَمْعَةَ وَهَبَتْ يَوْمَهَا وَلَيْلَتَهَا لِعَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ، تَبْتَغِي بِذٰلِكَ رِضَا رَسُولِ ٱللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٢٥٩٣]

1164 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफर का इरादा फरमाते तो अपनी बीवियों के दरमियान कुरआ (पर्ची) डालते जिसका नाम निकल आता, उसे अपने साथ ले जाते और आपका अपनी हर बीवी के लिए एक दिन-रात मुकर्रर था, लेकिन सौदा बिन्ते जमआ रजि. ने अपना दिन आइशा रसूलुल्लाह की बीवी को दे दिया था, उन्हें उसमे

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रजामन्दी मतलूब थी।

बाब 10 : गुलाम लौण्डी और दूसरे सामान पर कैसे कब्जा होता है?

١٠ - باب: كَيْفَ يُقْبَضُ العَبْدُ وَالمَتَاعُ

1165 : मिस्वर बिन मखरमा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ कबायें (चौगा) तकसीम कीं, लेकिन मखरमा रजि. को आपने कोई कुबा न दी, जिस पर मखरमा ने कहा, ऐ मेरे बेटे तू रसूलुल्लाह के पास मेरे साथ चल। लिहाजा मैं उनके साथ चला गया। उन्होंने कहा, अन्दर जा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेरी तरफ से बुला लावो। मिस्वर रजि. कहते हैं कि मैं आपको बुला लाया। आप बाहर तशरीफ लाये तो उन कुबावों में से एक कुबा आप के पास थी और आपने फरमाया, हमने यह तेरे लिये छिपा रखी थी और मिस्वर रजि. का बयान है कि मखरमा रजि. इसे देखकर खुश हो गये।

١١٦٥ : عَنِ المِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ أَقْبِيَةً، وَلَمْ يُعْطِ مَخْرَمَةَ مِنْهَا شَيْئًا، فَقَالَ مَخْرَمَةُ: يَا بُنَيَّ ٱنْطَلِقْ بِنَا إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَانْطَلَقْتُ مَعَهُ، فَقَالَ: ٱدْخُلْ فَٱدْعُهُ لِي، قَالَ: فَدَعَوْتُهُ لَهُ فَخَرَجَ إِلَيْهِ وَعَلَيْهِ قَبَاءٌ مِنْهَا، فَقَالَ: (خَبَأْنَا هٰذَا لَكَ). قَالَ: فَنَظَرَ إِلَيْهِ، فَقَالَ: (رَضِيَ مَخْرَمَةُ). [رواه البخاري: ٢٥٩٩]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि हिबा में दूसरे की मलकियत उस वक्त साबित होगी, जब वो हिबा उसके कब्जे में आ जाये, इससे पहले पहले उसमें से खर्च नहीं किया जा सकता। (औनुलबारी, 3/321)

बाब 11 : ऐसे लिबास का तौहफा देना जिसका पहनना नाजाइज हो।

١١ - باب: هَدِيَّةُ مَا يُكْرَهُ لُبْسُهَا

1166 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है,

١١٦٦ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ

عَنْهُما قالَ: أتى النَّبِيُّ ﷺ بَيْتَ فاطِمَةَ بِنْتِهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا فَلَمْ يَدْخُلْ عَلَيْهَا، وَجاءَ عَلِيٌّ فَذَكَرَتْ لَهُ ذٰلِك، فَذَكَرَهُ لِلنَّبِيِّ ﷺ قالَ: (إِنِّي رَأَيْتُ عَلَى بَابِهَا سِتْرًا مَوْشِيًّا)، فَقَالَ لِي: (ما لِي وَلِلدُّنْيا)، فَأَتاهَا عَلِيٌّ فَذَكَرَ ذٰلِكَ لَهَا، فَقالَتْ: لِيَأْمُرْنِي فِيهِ بِمَا شَاءَ، قَالَ: (تُرْسِلِي بِهِ إِلَى فُلانٍ، أَهْلِ بَيْتٍ بِهِمْ حاجَةٌ). [رواه البخاري: ٢٦١٣]

उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बेटी फातिमा रजि. के घर तशरीफ लाये, मगर अन्दर दाखिल न हुये। अली रजि. आये तो फातिमा रजि. ने उनसे इसका जिक्र किया। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसका कारण पूछा तो आपने फरमाया, मैंने उनके दरवाजे पर एक रेशमी धारीदार पर्दा देखा था, भला हम लोगों को दुनिया के रंगो रौनक से क्या गर्ज है? अली रजि. ने फातिमा रजि. के पास आकर यह बात बयान की। फातिमा रजि. बोली, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो चाहें मुझे इसकी बाबत हुक्म फरमायें? आपने फरमाया, इस पर्दे को फलां आदमी के पास भेज दो जो जरूरतमन्द है।

फायदे : उस पर्दे में तसवीर और नक्सो निगार थी, इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे नापसन्द फरमाया।

(औनुलबारी, 3/323)

١١٦٧ : عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: أَهْدَى إِلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ حُلَّةَ سِيَرَاءَ، فَلَبِسْتُهَا، فَرَأَيْتُ الْغَضَبَ فِي وَجْهِهِ، فَشَقَقْتُهَا بَيْنَ نِسَائِي. [رواه البخاري: ٢٦١٤]

1167: अली रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे एक धारीदार रेशमी जोड़ा हदीया भेजा, जिसको मैंने पहन लिया। फिर क्या देखता हूँ कि आपके चेहरे पर गुस्से के आसार हैं, मैंने उसे फाड़कर अपनी औरतों में तकसीम कर दिया।

फायदे : हजरत अली रजि. ने वो रेशमी जोड़ा जिन औरतों में तकसीम किया, वो उनकी बीवियां न थी, बल्कि उनकी रिश्तेदार ख्वातीन थीं।

١٢ - باب: قَبُولُ الهَدِيَّةِ مِنَ المُشْرِكِينَ

बाब 12 : मुश्रिकीन का हदीया कबूल करना।

١١٦٨ : عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ثَلاثِينَ وَمِائَةً، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (هَلْ مَعَ أَحَدٍ مِنْكُمْ طَعَامٌ؟). فَإِذَا مَعَ رَجُلٍ صَاعٌ مِنْ طَعَامٍ أَوْ نَحْوُهُ، فَعُجِنَ، ثُمَّ جَاءَ رَجُلٌ مُشْرِكٌ، مُشْعَانٌّ طَوِيلٌ، بِغَنَمٍ يَسُوقُهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (بَيْعًا أَمْ عَطِيَّةً؟ أَوْ قَالَ: أَمْ هِبَةً؟). قَالَ: لَا، بَلْ بَيْعٌ، فَاشْتَرَى مِنْهُ شَاةً، فَصُنِعَتْ، وَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِسَوَادِ الْبَطْنِ أَنْ يُشْوَى، وَايْمُ ٱللهِ، مَا فِي الثَّلاثِينَ وَالْمِائَةِ إِلَّا وَقَدْ حَزَّ النَّبِيُّ ﷺ لَهُ حُزَّةً مِنْ سَوَادِ بَطْنِهَا، إِنْ كَانَ شَاهِدًا أَعْطَاهَا إِيَّاهُ، وَإِنْ كَانَ غَائِبًا خَبَأَ لَهُ، فَجَعَلَ مِنْهَا قَصْعَتَيْنِ، فَأَكَلُوا أَجْمَعُونَ وَشَبِعْنَا، فَفَضَلَتِ الْقَصْعَتَانِ، فَحَمَلْنَاهُ عَلَى الْبَعِيرِ، أَوْ كَمَا قَالَ. [رواه البخاري: ٢٦١٨]

1168: अब्दुल रहमान बिन अबी बकर रजि. से रिवायत है कि हम एक सौ तीस आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा तुम में से किसी पास कुछ खाना है? एक आदमी के पास एक साअ या ऐसा ही कुछ गल्ला था, जिसे मिलाया गया। इतने में बिखरे बालों वाला एक लम्बा तड़ंगा मुश्रिक अपनी बकरियो को हांकता हुआ इधर आ निकला। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, इनको फरोख्त करोगे या हदीया देगा या यह फरमाया कि बतौर हदीया देगा। उसने कहा, नहीं बल्कि फरोख्त करूंगा। चूनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उससे एक बकरी खरीद ली। जिसे जिब्ह किया गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कलेजी वगैरह के मुताल्लिक हुक्म दिया कि इसको भून लिया

जाये। अल्लाह की कसम! एक सौ तीस आदमियों में से कोई आदमी ऐसा न था, जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कलेजी की बोटियां न दी हों जो मौजूद था, उसको दे दीं और जो मौजूद न था, उसके लिए रख दी। फिर आपने गोश्त के दो प्याले तैयार किये। सब लोगों ने खूब पेट भरकर खाया, फिर दोनों प्याले भरे बच गये। हमने उन्हें उठाकर ऊंट पर रख दिया। रावी ने कुछ ऐसा ही लफ्ज कहा।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दरयाफ्त करना कि तू इसे फरोख्त करेगा या बतौर हिबा देगा, इससे मालूम हुआ कि मुश्रिक बुतपरस्त से हदीया लिया जा सकता है।

(औनुलबारी, 3/326)

बाब 13 : मुश्रिकीन को तौहफा देना।

١٣ - باب: الهَدِيَّةُ لِلْمُشْرِكِينَ

1169 : असमा बिन्ते अबी बकर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में मेरी वाल्दा मेरे पास आयी, जो मुश्रिक थी। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मसला पूछा कि वो इस्लाम की तरफ रागिब है तो क्या मैं अपनी वाल्दा के साथ नरमी से पेश आऊं। आपने फरमाया, हां! अपनी मां से अच्छा बर्ताव करो।

١١٦٩ : عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: قَدِمَتْ عَلَيَّ أُمِّي وَهِيَ مُشْرِكَةٌ، فِي عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَٱسْتَفْتَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، قُلْتُ: إِنَّ أُمِّي قَدِمَتْ وَهِيَ رَاغِبَةٌ، أَفَأَصِلُ أُمِّي؟ قَالَ: (نَعَمْ، صِلِي أُمَّكِ). [رواه البخاري: ٢٦٢٠]

फायदे : इससे मालूम हुआ कि दीनी मामलों में मुश्रिक वाल्देन से अच्छे सलूक में कोताही नहीं करना चाहिए।

बाब 14 :

١٤ - باب

1170 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने मरवान रजि. के पास हाजिर होकर बनी सुहैब के हक में गवाही दी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह दोनों मकान और एक कमरा सुहैब रजि. को दिया था। लिहाजा मरवान रजि. ने उनकी शहादत की बिना पर उनके हक में फैसला दे दिया।

١١٧٠ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما: أَنَّهُ شَهِدَ عِنْدَ مروانَ لِبَنِي صُهَيْبٍ أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ أَعْطَى صُهَيْبًا بَيْتَيْنِ وَحُجْرَةً، فَقَضَى مَرْوَانُ بِشَهادَتِهِ لَهُمْ. [رواه البخاري: ٢٦٢٤]

बाब 15 : उमरा और रूकबा का बयान।

١٥- باب: مَا قِيلَ فِي الْعُمْرَى وَالرُّقْبَى

1171 : जाबिर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमरा के बारे में यह फैसला किया कि वो उसी का है, जिसको हिबा किया गया हो।

١١٧١ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَضَى النَّبِيُّ ﷺ بِالْعُمْرَى، أَنَّهَا لِمَنْ وُهِبَتْ لَهُ. [رواه البخاري: ٢٦٢٥]

फायदे : उमरा यह है कि उमर भर किसी को रहने के लिए मकान देना और रूकबा यह है कि किसी शख्स को जिन्दा रहने तक के लिए कोई चीज देना। हदीस में सिर्फ उमरा का जिक्र है कि वो एक हिबा है जो वापिस नहीं आ सकता, रूकबा का भी यही हुक्म है। (औनुलबारी, 3/329)

बाब 16 : शादी में दुल्हन को पहनाने के लिए कोई चीज उधार लेना।

١٦ - باب: الاسْتِعَارَةُ لِلْعَرُوسِ عِنْدَ الْبِنَاءِ

1172 : आइशा रजि. से रिवायत है कि उम्मे ऐमन रजि. उनके पास आई और वो एक मोटे कपड़े का कुर्ता

١١٧٢ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها: أَنَّهُ دَخَلَ عَلَيْهَا أَيْمَنُ وَعَلَيْهَا دِرْعُ مِنْ قِطْرٍ - وَفِي رِوَايَةٍ: مِنْ

قُطْنٍ - ثَمَنُهُ خَمْسَةُ دَرَاهِمَ، فَقَالَتْ: ارْفَعْ بَصَرَكَ إِلَى جَارِيَتِي أنْظُرْ إِلَيْهَا، فَإِنَّهَا تُزْهَى أَنْ تَلْبَسَهُ فِي الْبَيْتِ، وَقَدْ كَانَ لِي مِنْهُنَّ دِرْعٌ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَمَا كَانَتِ امْرَأَةٌ تُقَيَّنُ بِالْمَدِينَةِ إِلَّا أَرْسَلَتْ إِلَيَّ تَسْتَعِيرُهُ. [رواه البخاري: ٢٦٢٨]

पहने हुये थी। एक रिवायत में है कि रूई का कुर्ता जिसकी कीमत पांच दिरहम होगी, उन्होंने कहा, मेरी इस लौण्डी की तरफ आंख उठाकर देखो, यह घर में इसको पहनने से इन्कार करती है, हालांकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में मेरे पास इस तरह का एक कुर्ता था। मदीने में जिस औरत को बनाव व सिंगार की जरूरत होती तो यह कुर्ता मुझसे उधार मंगवा लेती।

١٧ - باب: فَضْلُ الْمَنِيحَةِ

बाब 17 : दूध का जानवर उधार देने की फजीलत।

١١٧٣ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا قَدِمَ الْمُهَاجِرُونَ الْمَدِينَةَ مِنْ مَكَّةَ، وَلَيْسَ بِأَيْدِيهِمْ، وَكَانَتِ الأَنْصَارُ أَهْلَ الأَرْضِ وَالْعَقَارِ، فَقَاسَمَهُمُ الأَنْصَارُ عَلَى أَنْ يُعْطُوهُمْ ثِمَارَ أَمْوَالِهِمْ كُلَّ عَامٍ، وَيَكْفُوهُمُ الْعَمَلَ وَالْمَؤُونَةَ، وَكَانَتْ أُمُّهُ أُمُّ أَنَسٍ أُمُّ سُلَيْمٍ، كَانَتْ أُمَّ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، فَكَانَتْ أَعْطَتْ أُمُّ أَنَسٍ رَسُولَ اللهِ ﷺ عِذَاقًا لَهَا، فَأَعْطَاهُنَّ النَّبِيُّ ﷺ أُمَّ أَيْمَنَ مَوْلَاتَهُ أُمَّ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ.

قَالَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ: فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ قِتَالِ أَهْلِ خَيْبَرَ، فَانْصَرَفَ إِلَى الْمَدِينَةِ، رَدَّ الْمُهَاجِرُونَ إِلَى الأَنْصَارِ مَنَائِحَهُمُ الَّتِي كَانُوا

1173 : अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब मुहाजिरीन मक्का से मदीना आये तो उनके पास कुछ न था और अन्सार जमीन और जायदाद वाले थे, इसलिए मुहाजिरीन को अन्सार ने अपने माल इस शर्त पर तकसीम कर दिये कि वो उन्हें हर साल आधा फल दिया करें और मेहनत व मशक्कत सब वही करें। उनकी मां उम्मे सुलैम रजि. ने जो अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा रजि. की भी मां थी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को

مَنَحُوهُمْ مِنْ ثِمَارِهِمْ، فَرَدَّ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى أُمِّهِ عِذَاقَهَا، وَأَعْطَى رَسُولُ اللهِ ﷺ أُمَّ أَيْمَنَ مَكَانَهُنَّ مِنْ حَائِطِهِ. [رواه البخاري: ٢٦٣٠]

खजूर के कुछ पेड़ दिये थे जो आपने अपनी आजादकर्दा लौण्डी उम्मे ऐमन रजि. को दे दिये जो उसामा बिन जैद रजि. की मां थी। अनस रजि. का बयान है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जंगे खैबर से फारिग होकर मदीना वापिस आये तो मुहाजिरीन ने अन्सार को उनकी चीजें वापिस कर दीं। यानी फलदार दरख्त जो उन्होंने मुहाजरीन को दिये थे। चूनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अनस रजि. की वाल्दा को भी उनके दरख्त वापिस कर दिये और उम्मे ऐमन रजि. को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके ऐवज अपने बाग से कुछ दरख्त दे दिये।

फायदे : मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह ने हजरत उम्मे ऐमन रजि.को दस गुना दरख्त देकर राजी किया।

(औनुलबारी, 3/335)

١١٧٤ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (أَرْبَعُونَ خَصْلَةً، أَعْلاَهُنَّ مَنِيحَةُ الْعَنْزِ، مَا مِنْ عَامِلٍ يَعْمَلُ بِخَصْلَةٍ مِنْهَا: رَجَاءَ ثَوَابِهَا، وَتَصْدِيقَ مَوْعُودِهَا، إِلاَّ أَدْخَلَهُ اللهُ بِهَا الْجَنَّةَ). [رواه البخاري: ٢٦٣١]

1174 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि.से रिवायत है। उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, चालीस अच्छी अच्छाईयां हैं, उनमे से अफजल अच्छाई दूध वाली बकरी का उधार देना है। उनमें से किसी भी अच्छाई पर सवाब की उम्मीद और अल्लाह के वादे को सच्चा जानते हुये अमल बजा लाये तो अल्लाह उसके सबब उसको जन्नत में दाखिल फरमायेंगा।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाकी अच्छी आदतों को जानते थे, लेकिन इनका शायद इसलिए जिक्र नहीं किया गया कि लोग दूसरे अच्छे काम बजा लाते में सुस्ती न करें। (औनुलबारी, 3/336)



किताबुल शाहादात
गवाही के बयान में

١ - باب: لاَ يَشْهَدُ عَلَى شَهَادَةِ جَوْرٍ إِذَا أُشْهِدَ

बाब 1 : अगर कोई गवाह बनाया जाये तो किसी जुल्म की बात पर गवाही न दे।

١١٧٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ (خَيْرُ النَّاسِ قَرْنِي ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ أَقْوَامٌ تَسْبِقُ شَهَادَةُ أَحَدِهِمْ يَمِينَهُ وَيَمِينُهُ شَهَادَتَهُ). [رواه البخاري: ٢٦٥٢]

1175 : अब्दुल्लाह बिन मसउद रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, सब लोगों में बेहतर मेरे जमाने के लोग हैं। फिर जो उनके करीब हैं, फिर जो उनके करीब हैं, उनके बाद कुछ ऐसे लोग पैदा होंगे जो कसम से पहले गवाही देंगे और गवाही से पहले कसमें उठायेंगे।

फायदे : मालूम हुआ कि गवाही देना बड़ी जिम्मेदारी है। इसके अदा करने से पहले खूब गौरो फिक्र करना चाहिए। इस हदीस के आखिर में हजरत इब्राहिम नखई का कौल है कि हमारे बुजुर्ग हमें लड़कपन में गवाही और वादा पर मारा करते थे। बुजुर्गों का अहतमाम इस बिना पर था कि गवाही गौरो फ्रिक करने के बाद दी जाये और इस सिलसिले में किसी पर ज्यादती न की जाये।

---

٢ - باب: مَا قِيلَ فِي شَهَادَةِ الزُّورِ

बाब 2 : झूठी गवाही के बारे में क्या कहा गया है?

1176 : अबी बकरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, क्या मैं तुम्हें बड़े गुनाहों की खबर न दूं। तीन बार यह फरमाया। सहाबा किराम रजि. ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जरूर दें! फिर आपने फरमाया, अल्लाह के साथ शिर्क करना, वाल्देन की नाफरमानी करना। पहले आप तकीया लगाये हुये थे, फिर उठ बैठे और फरमाया, खबरदार! झूठी गवाही देना और लगातार इसकी तकरार फरमाते रहे (बार बार यही कहते रहे), यहां तक कि हम लोग कहने लगे, काश आप खामौश हो जायें।

١١٧٦ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: قالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَلاَ أُنَبِّئُكُمْ بِأَكْبَرِ الْكَبَائِرِ؟). ثَلاثًا، قالوا: بَلَى يَا رَسُولَ ٱللهِ، قالَ: (الإِشْرَاكُ بِٱللهِ، وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ - وَجَلَسَ وَكانَ مُتَّكِئًا، فَقالَ:- أَلاَ وَقَوْلُ الزُّورِ). قالَ: فَمَا زَالَ يُكَرِّرُهَا حَتَّى قُلْنَا: لَيْتَهُ سَكَتَ. [رواه البخاري: ٢٦٥٤]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने झूठी गवाही की संगीनी इस बिना पर अहतमाम से बयान फरमायी कि लोग इस जुर्म के ऐरतकाब में बहुत बेबाक हैं और इसके असबाब भी बेशुमार हैं। निज इसके नुकसान की लपैट में बेशुमार लोग आ जाते हैं। (औनुलबारी, 3/342)

बाब 3 : अंधे की गवाही, उसका हुक्म देना, अपना या किसी दूसरे का निकाह पढ़ना, खरीद व फरोख्त करना और अजान वगैरह ठीक है। निज ऐसी बातों का कबूल करना जो आवाज से पहचानी जाती हैं।

٣ - باب: شَهَادَةِ الأَعْمَى وَنِكَاحِهِ وَأَمْرِهِ وَإِنْكَاحِهِ وَمُبَايَعَتِهِ وَقَبُولِهِ فِي التَّأْذِينِ وَغَيْرِهِ وَمَا يُعْرَفُ بِالأَصْوَاتِ

1177 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी को मस्जिद में कुरआन पढ़ते सुना तो फरमाया, अल्लाह उस पर रहमत फरमाये, उसने मुझे एक सूरत की फलां फलां आयत याद दिला दी जो मैं भूल गया था।

١١٧٧ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: سَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلًا يَقْرَأُ في المَسْجِدِ، فَقَالَ: (رَحِمَهُ ٱللهُ، لَقَدْ أَذْكَرَنِي كَذَا وَكَذَا آيَةً، أَسْقَطْتُهُنَّ مِنْ سُورَةِ كَذَا وَكَذَا). [رواه البخاري: ٢٦٥٥]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस आदमी की सख्शीयत को देखे बगैर उसकी आवाज पर यकीन किया, इस तरह अन्धा आदमी अगर आवाज सुने तो उसकी आदमीयत देखे बगैर गवाही दे सकता है। बशर्ते कि उसकी आवाज को पहचानता हो। (औनुलबारी, 3/344)

1178: आइशा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने इस रिवायत में ज्यादा कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे घर में नमाज तहज्जुद पढ़ी। इतने में अब्बाद रजि. की आवाज सुनी जो मस्जिद में नमाज पढ़ रहे थे तो आपने पूछा आइशा रजि. क्या यह अब्बाद रजि. की आवाज है? मैंने अर्ज किया जी हां! आपने फरमाया, ऐ अल्लाह! अब्बाद रजि. पर रहमत फरमा।

١١٧٨ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا في رواية قالَتْ: تَهَجَّدَ النَّبِيُّ ﷺ في بَيْتِي، فَسَمِعَ صَوْتَ عَبَّادٍ يُصَلِّي في المَسْجِدِ، فَقالَ: (يَا عائِشَةُ، أَصَوْتُ عَبَّادٍ هٰذَا؟). قُلْتُ: نَعَمْ، قالَ: (اللَّهُمَّ ٱرْحَمْ عَبَّادًا). [رواه البخاري: ٢٦٥٥]

फायदे : मालूम हुआ कि खुद को शामिल किये बगैर किसी दोस्त के लिए दुआ करना जाइज है। (अल दावत, 6335)

बाब 4 : ख्वातिन का एक दूसरे की सफाई देना।

٤ - باب: تَعْدِيلُ النِّسَاءِ بَعْضِهِنَّ بَعْضاً

1179 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह आदत मुबारक थी कि जब किसी सफर में जाने का इरादा फरमाते तो अपनी बीवियों के दरमियान कुरआ (पर्ची) डालते, फिर उनमें से जिसका नाम कुरआ से निकल आता, उसी को साथ ले जाते। लिहाजा एक जिहाद में जो आपको दरपेश था, हमारे दरमियान कुरआ डाला तो मेरा नाम निकल आया। चूनांचे मैं आपके साथ रवाना हो गयी। यह वाक्या पर्दे के हुक्म उतरने के बाद का है, इसलिए मैं डोली के अन्दर बैठा दी जाती और इसके समेत ही उतार ली जाती थी। हम इसी तरह चलते रहे, फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने जिहाद से फारिग

١١٧٩ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها قالَتْ: كانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إذَا أَرادَ أَنْ يَخْرُجَ سَفَرًا أَقْرَعَ بَيْنَ أَزْوَاجِهِ فَأَيَّتُهُنَّ خَرَجَ سَهْمُهَا خَرَجَ بِهَا مَعَهُ، فَأَقْرَعَ بَيْنَنَا فِي غَزَاةٍ غَزَاهَا، فَخَرَجَ سَهْمِي فَخَرَجْتُ مَعَهُ، بَعْدَ مَا أُنْزِلَ الحِجَابُ، فَأَنَا أُحْمَلُ فِي هَوْدَجٍ وَأُنْزَلُ فِيهِ، فَسِرْنَا حَتَّى إذَا فَرَغَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ مِنْ غَزْوَتِهِ تِلْكَ وَقَفَلَ، وَدَنَوْنَا مِنَ المَدِينَةِ، آذَنَ لَيْلَةً بِالرَّحِيلِ، فَقُمْتُ حِينَ آذَنُوا بِالرَّحِيلِ، فَمَشَيْتُ حَتَّى جَاوَزْتُ الجَيْشَ، فَلَمَّا قَضَيْتُ شَأْنِي، أَقْبَلْتُ إِلَى الرَّحْلِ، فَلَمَسْتُ صَدْرِي، فَإِذَا عِقْدٌ لِي مِنْ جَزْعِ ظِفَارٍ قَدِ انْقَطَعَ، فَرَجَعْتُ فَالْتَمَسْتُ عِقْدِي فَحَبَسَنِي ابْتِغَاؤُهُ، فَأَقْبَلَ الَّذِينَ يُرَحِّلُونَ لِي، فَاحْتَمَلُوا هَوْدَجِي فَرَحَّلُوهُ عَلَى بَعِيرِي الَّذِي كُنْتُ أَرْكَبُ، وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنِّي فِيهِ، وَكانَ النِّسَاءُ إِذْ ذَاكَ خِفَافًا لَمْ يَثْقُلْنَ، وَلَمْ يَغْشَهُنَّ اللَّحْمُ، وَإِنَّمَا يَأْكُلْنَ العُلْقَةَ مِنَ الطَّعَامِ، فَلَمْ يَسْتَنْكِرِ القَوْمُ حِينَ رَفَعُوهُ ثِقَلَ

الْهَوْدَجِ فَاحْتَمَلُوهُ، وَكُنْتُ جَارِيَةً حَدِيثَةَ السِّنِّ، فَبَعَثُوا الْجَمَلَ وَسَارُوا، فَوَجَدْتُ عِقْدِي بَعْدَ مَا اسْتَمَرَّ الْجَيْشُ، فَجِئْتُ مَنْزِلَهُمْ وَلَيْسَ فِيهِ أَحَدٌ، فَأَمَمْتُ مَنْزِلِي الَّذِي كُنْتُ بِهِ، فَظَنَنْتُ أَنَّهُمْ سَيَفْقِدُونَنِي فَيَرْجِعُونَ إِلَيَّ، فَبَيْنَا أَنَا جَالِسَةٌ غَلَبَتْنِي عَيْنَايَ فَنِمْتُ، وَكَانَ صَفْوَانُ بْنُ الْمُعَطَّلِ السُّلَمِيُّ ثُمَّ الذَّكْوَانِيُّ مِنْ وَرَاءِ الْجَيْشِ، فَأَصْبَحَ عِنْدَ مَنْزِلِي، فَرَأَى سَوَادَ إِنْسَانٍ نَائِمٍ فَأَتَانِي، وَكَانَ يَرَانِي قَبْلَ الْحِجَابِ، فَاسْتَيْقَظْتُ بِاسْتِرْجَاعِهِ، حِينَ أَنَاخَ رَاحِلَتَهُ، فَوَطِئَ يَدَهَا فَرَكِبْتُهَا، فَانْطَلَقَ يَقُودُ بِي الرَّاحِلَةَ، حَتَّى أَتَيْنَا الْجَيْشَ بَعْدَ مَا نَزَلُوا مُعَرِّسِينَ فِي نَحْرِ الظَّهِيرَةِ، فَهَلَكَ مَنْ هَلَكَ، وَكَانَ الَّذِي تَوَلَّى الإِفْكَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ، فَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ، فَاشْتَكَيْتُ بِهَا شَهْرًا، وَالنَّاسُ يُفِيضُونَ فِي قَوْلِ أَصْحَابِ الإِفْكِ، وَيَرِيبُنِي فِي وَجَعِي: أَنِّي لاَ أَرَى مِنَ النَّبِيِّ ﷺ اللُّطْفَ الَّذِي كُنْتُ أَرَى مِنْهُ حِينَ أَمْرَضُ، إِنَّمَا يَدْخُلُ فَيُسَلِّمُ، ثُمَّ يَقُولُ: (كَيْفَ تِيكُمْ؟). لاَ أَشْعُرُ بِشَيْءٍ مِنْ ذٰلِكَ حَتَّى نَقَهْتُ، فَخَرَجْتُ أَنَا وَأُمُّ مِسْطَحٍ قِبَلَ الْمَنَاصِعِ، مُتَبَرَّزُنَا، لاَ نَخْرُجُ إِلاَّ لَيْلاً إِلَى لَيْلٍ، وَذٰلِكَ قَبْلَ أَنْ نَتَّخِذَ الْكُنُفَ قَرِيبًا مِنْ بُيُوتِنَا، وَأَمْرُنَا أَمْرُ

होकर सफर से लौटे, यहां तक कि हम मदीना के करीब पहुंच गये तो आपने रात को कूच का ऐलान फरमाया। जब लोगों ने यह ऐलान सुना तो मैं भी खड़ी हो गयी और हाजत पूरी करने के लिए चली गयी। यहां तक कि लश्कर से आगे गुजर गयी, लेकिन जब मैं अपनी हाजत से फारिग होकर कजावे के पास आयी, सीने पर जो हाथ फैरा तो मालूम हुआ कि जिफार के काले नगीनों वाला मेरा हार कहीं गुम हो गया है। पस मैं अपने हार को ढूंढ़ते हुये वापिस गयी। मुझे उसकी तलाश में देर हो गयी। फिर जो लोग मेरी डोली उठाते थे, वो आये और उन्होंने मेरे डोली उठाकर मेरे उस ऊंट पर रख दी, जिस पर मैं सवार होती थी। क्योंकि वो लोग समझते थे कि मैं उसमें मौजूद हूं। उस जमाने में औरतें हल्की फुल्की हुआ करती थी, भारी-भरकम न थीं। उनके जिस्म पर ज्यादा गोश्त न होता था और खाना भी थोड़ा खाती थी। तो जब लोगों ने

الْعَرَبِ الأُوَلِ فِي الْبَرِّيَّةِ، أَوْ فِي التَّنَزُّهِ، فَأَقْبَلْتُ أَنَا وَأُمُّ مِسْطَحٍ بِنْتُ أَبِي رُهْمٍ نَمْشِي، فَعَثَرَتْ فِي مِرْطِهَا، فَقَالَتْ: تَعِسَ مِسْطَحٌ، فَقُلْتُ لَهَا: بِئْسَ مَا قُلْتِ، أَتَسُبِّينَ رَجُلًا شَهِدَ بَدْرًا، فَقَالَتْ: يَا هَنْتَاهْ أَلَمْ تَسْمَعِي مَا قَالُوا؟ فَأَخْبَرَتْنِي بِقَوْلِ أَهْلِ الإِفْكِ، فَازْدَدْتُ مَرَضًا عَلَى مَرَضِي، فَلَمَّا رَجَعْتُ إِلَى بَيْتِي، دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَسَلَّمَ، فَقَالَ: (كَيْفَ تِيكُمْ؟). فَقُلْتُ: ٱئْذَنْ لِي إِلَى أَبَوَيَّ، قَالَتْ: وَأَنَا حِينَئِذٍ أُرِيدُ أَنْ أَسْتَيْقِنَ الْخَبَرَ مِنْ قِبَلِهِمَا، فَأَذِنَ لِي رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَأَتَيْتُ أَبَوَيَّ، فَقُلْتُ لأُمِّي: مَا يَتَحَدَّثُ بِهِ النَّاسُ؟ فَقَالَتْ: يَا بُنَيَّةُ، هَوِّنِي عَلَى نَفْسِكِ الشَّأْنَ، فَوَٱللهِ لَقَلَّمَا كَانَتِ ٱمْرَأَةٌ قَطُّ وَضِيئَةٌ، عِنْدَ رَجُلٍ يُحِبُّهَا، وَلَهَا ضَرَائِرُ، إِلَّا أَكْثَرْنَ عَلَيْهَا، فَقُلْتُ: سُبْحَانَ ٱللهِ، وَلَقَدْ تَحَدَّثُ النَّاسُ بِهٰذَا؟ قَالَتْ: فَبِتُّ تِلْكَ اللَّيْلَةَ حَتَّى أَصْبَحْتُ، لَا يَرْقَأُ لِي دَمْعٌ، وَلَا أَكْتَحِلُ بِنَوْمٍ، ثُمَّ أَصْبَحْتُ فَدَعَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَلِيَّ ابْنَ أَبِي طَالِبٍ وَأُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ، حِينَ ٱسْتَلْبَثَ الْوَحْيُ، يَسْتَشِيرُهُمَا فِي فِرَاقِ أَهْلِهِ، فَأَمَّا أُسَامَةُ فَأَشَارَ عَلَيْهِ بِالَّذِي يَعْلَمُ فِي نَفْسِهِ مِنَ الْوُدِّ لَهُمْ، فَقَالَ أُسَامَةُ: أَهْلَكَ يَا رَسُولَ ٱللهِ وَلَا نَعْلَمُ وَٱللهِ إِلَّا خَيْرًا، وَأَمَّا

मेरी डोली उठाई, उसे मामूल के मुताबिक वजनी ख्याल करके उठा लिया और उसे ऊंट पर लाद दिया। इसकी एक वजह यह भी थी कि मैं उस जमाने में एक कम उम्र लड़की थी। खैर वो ऊंट को हांक कर रवाना हो गये, लश्कर के निकल जाने के बाद मुझे हार मिल गया। जब मैं उनके मकाम पड़ाव पर आयी तो वहां कोई न था, फिर मैंने अपनी उस जगह पर जाने का इरादा कर लिया, जहां मैं पहले थी, क्योंकि मेरा ख्याल था कि वो लोग जल्दी ही मुझे तलाश करेंगे तो मेरे पास इसी जगह लौट कर आयेंगे। फिर जब मैं बैठी हुई थी, नींद से मेरी आंख भारी होने लगी और मैं सो गई।

सफवान बिन मुअतल्ल सलमी जकवानी रजि. जो लश्कर के पीछे आ रहे थे, वो सुबह को मेरी जगह पर आये और उन्हें एक आदमी सोता हुआ दिखाई दिया तो मेरे पास आ गये और वो मुझ पर्दे के हुक्म से पहले देख चुके थे। लिहाजा

عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، لَمْ يُضَيِّقِ اللهُ عَلَيْكَ، وَالنِّسَاءُ سِوَاهَا كَثِيرٌ، وَسَلِ الْجَارِيَةَ تَصْدُقْكَ، فَدَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ بَرِيرَةَ، فَقَالَ: (يَا بَرِيرَةُ، هَلْ رَأَيْتِ فِيهَا شَيْئًا يَرِيبُكِ؟). فَقَالَتْ بَرِيرَةُ: لاَ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ، إِنْ رَأَيْتُ مِنْهَا أَمْرًا أَغْمِصُهُ عَلَيْهَا قَطُّ أَكْثَرَ مِنْ أَنَّهَا جَارِيَةٌ حَدِيثَةُ السِّنِّ، تَنَامُ عَنِ الْعَجِينِ، فَتَأْتِي الدَّاجِنُ فَتَأْكُلُهُ، فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنْ يَوْمِهِ، فَاسْتَعْذَرَ مِنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أُبَيٍّ ابْنِ سَلُولَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (مَنْ يَعْذِرُنِي مِنْ رَجُلٍ بَلَغَنِي أَذَاهُ فِي أَهْلِي، فَوَاللهِ مَا عَلِمْتُ عَلَى أَهْلِي إِلَّا خَيْرًا، وَقَدْ ذَكَرُوا رَجُلًا مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ إِلاَّ خَيْرًا، وَمَا كَانَ يَدْخُلُ عَلَى أَهْلِي إِلاَّ مَعِي)، فَقَامَ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَنَا وَاللهِ أَعْذِرُكَ مِنْهُ: إِنْ كَانَ مِنَ الأَوْسِ ضَرَبْنَا عُنُقَهُ، وَإِنْ كَانَ مِنْ إِخْوَانِنَا مِنَ الْخَزْرَجِ أَمَرْتَنَا فَفَعَلْنَا فِيهِ أَمْرَكَ، فَقَامَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ، وَهُوَ سَيِّدُ الْخَزْرَجِ - وَكَانَ قَبْلَ ذٰلِكَ رَجُلًا صَالِحًا وَلٰكِنِ - احْتَمَلَتْهُ الْحَمِيَّةُ، فَقَالَ: كَذَبْتَ لَعَمْرُ اللهِ لاَ تَقْتُلُهُ، وَلاَ تَقْدِرُ عَلَى ذٰلِكَ، فَقَامَ أُسَيْدُ بْنُ الْحُضَيْرِ فَقَالَ: كَذَبْتَ لَعَمْرُ اللهِ، وَاللهِ لَنَقْتُلَنَّهُ، فَإِنَّكَ مُنَافِقٌ

मुझे पहचान गये और मैं उनके ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना अलैहि राजिउन'' पढ़ने की आवाज सुनकर जाग गई। उन्होंने अपना ऊंट बिठा दिया और उसकी अगली टांग पर पांव रखा, चूनांचे मैं सवार हो गयी और वो मेरे ऊंट को हांकते हुये पैदल चलते रहे और हम काफिले में ठीक दोपहर के वक्त पहुंचे जब वो लोग आराम के लिए पड़ाव डाल चुके थे। अब जिसकी किस्मत में तबाही थी, वो तबाह हुआ और तोहमत लगाने वालों का सरदार अब्दुल्लाह बिन अबी इब्ने सलूल मुनाफिक था, जब हम मदीना पहुंच गये तो मैं एक माह तक बीमार रही और लोग इस तूफान का चर्चा करते रहे। मुझे अपनी बीमारी के दौरान यूं शक पैदा हुआ कि मैं अपने ऊपर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वो महरबानियां नहीं पाती थी जो बीमारी के वक्त आपकी तरफ से हुआ करती थीं। अब सिर्फ आप तशरीफ लाते, सलाम करते और कहते कि तुम

تَجادِلُ عَنِ الْمنافِقِينَ، فَثَارَ الحَيَّانِ: الأَوْسُ وَالْخَزْرَجُ، حَتَّى هَمُّوا وَرَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَلَى الْمِنبَرِ، فَنَزَلَ فَخَفَّضَهُمْ، حَتَّى سَكَتُوا وَسَكَتَ، وَبَكَيْتُ يَوْمِي لَا يَرْقَأُ لِي دَمْعٌ وَلَا أَكْتَحِلُ بِنَوْمٍ، فَأَصْبَحَ عِنْدِي أَبَوَايَ، وَقَدْ بَكَيْتُ لَيْلَتَيْنِ وَيَوْمًا، حَتَّى أَظُنَّ أَنَّ الْبُكَاءَ فالِقٌ كَبِدِي، قالَتْ: فَبَيْنَا هُمَا جالِسَانِ عِنْدِي وَأَنَا أَبْكِي إِذِ ٱسْتَأْذَنَتِ ٱمْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصارِ فَأَذِنْتُ لَهَا، فَجَلَسَتْ تَبْكِي مَعِي، فَبَيْنَا نَحْنُ كَذٰلِكَ إِذْ دَخَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَجَلَسَ وَلَمْ يَجْلِسْ عِنْدِي مِنْ يَوْمِ قِيلَ فِيَّ ما قِيلَ قَبْلَهَا، وَقَدْ مَكَثَ شَهْرًا لَا يُوحى إِلَيْهِ فِي شَأْنِي بِشَيْءٍ، قالَتْ: فَتَشَهَّدَ، ثُمَّ قالَ: (يَا عائِشَةُ، لَقَدْ بَلَغَنِي عَنْكِ كَذَا وَكَذَا، فَإِنْ كُنْتِ بَرِيئَةً فَسَيُبَرِّئُكِ ٱللهُ، وَإِنْ كُنْتِ أَلْمَمْتِ بِذَنْبٍ فَٱسْتَغْفِرِي ٱللهَ وَتُوبِي إِلَيْهِ، فَإِنَّ الْعَبْدَ إِذَا ٱعْتَرَفَ بِذَنْبِهِ ثُمَّ تَابَ تَابَ ٱللهُ عَلَيْهِ). فَلَمَّا قَضَى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ مَقالَتَهُ قَلَصَ دَمْعِي حَتَّى ما أُحِسُّ مِنْهُ قَطْرَةً، وَقُلْتُ لِأَبِي: أَجِبْ عَنِّي رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، قَالَ: وَٱللهِ ما أَدْرِي ما أَقُولُ لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَقُلْتُ لِأُمِّي: أَجِيبِي عَنِّي رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فِيما قالَ، قالَتْ: وَٱللهِ ما أَدْرِي ما أَقُولُ لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ، قالَتْ: وَأَنَا

कैसी हो? मुझको इस तूफान की खबर तक न हुई, यहां तक कि मैं कमजोर हो गयी। एक बार मैं और मिस्तह रजि. की मां मनासेह (टायलेट) की तरफ गयीं, जहां रात को पखाने के लिए जाया करते थे, उन दिनों हमारे घरों के नजदीक बैतुलखला न थे। हमारा मामला जंगल जाने या कजाये हाजत करने की बाबत कदीम अरब के बराबर था। खैर मैं और मिस्तह रजि. की मां जो अबू रहम की बेटी थी, दोनों जा रही थीं, कि वो अचानक चादर में अटक कर फिसली, कहने लगी, हाय मिस्तह रजि. तबाह हो गया। मैंने कहा, तुमने बुरा कहा कि तुम उस आदमी को गाली देती हो जो जंगे बदर में शरीक हो चुका है। उन्होंने कहा, ऐ भोली-भाली! तुझे कुछ खबर भी है, लोगो ने क्या तूफान उठा रखा है? फिर उन्होंने मुझे इल्जाम लगाने वालों की बातचीत से आगाह किया। इससे मेरी बीमारी में मजीद इजाफा हो गया, जब मैं अपने घर पहुंची तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम मेरे पास तशरीफ लाये। आपने सलाम कहा और पूछा, क्या हाल है? मैंने अर्ज किया मुझे वाल्देन के पास जाने की इजाजत दीजिए। आइशा रजि. फरमाती हैं कि मैं चाहती थी कि अपने वाल्देन के पास जाकर इस खबर की तहकीक करूं। चूनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे इजाजत दे दी और मैं अपने वाल्देन के यहां चली आयी और अपनी वाल्दा से वो सब बातें बयान कीं जिनका लोग चर्चा कर रहे थे। उन्होंने कहा, बेटी! तू ऐसी बातों की परवाह न कर, अल्लाह की कसम! ऐसा कम होता है कि कोई खुबसूरत औरत किसी आदमी के पास हो और वो उससे मुहब्बत रखता हो और उस औरत की सोकनें (सौतन) उसकी बुराईयां न करती हों। मैंने कहा, सुब्हान अल्लाह! (मेरी सोकनों ने तो ऐसा नहीं किया) बल्कि यह तो और लोगों का किया हुआ है। आइशा रजि. कहती हैं कि मैंने वो रात इस तरह गुजारी कि सारी रात न

جارِيَةٌ حَدِيثَةُ السِّنِّ لا أَقْرَأُ كَثِيرًا مِنَ الْقُرْآنِ، فَقُلْتُ: إِنِّي وَٱللهِ لَقَدْ عَلِمْتُ أَنَّكُمْ سَمِعْتُمْ ما يَتَحَدَّثُ بِهِ النَّاسُ، وَوَقَرَ فِي أَنْفُسِكُمْ وَصَدَّقْتُمْ بِهِ، وَلَئِنْ قُلْتُ لَكُمْ إِنِّي بَرِيئَةٌ، وَٱللهُ يَعْلَمُ إِنِّي لَبَرِيئَةٌ، لا تُصَدِّقُونِي بِذٰلِكَ، وَلَئِنِ اعْتَرَفْتُ لَكُمْ بِأَمْرٍ، وَٱللهُ يَعْلَمُ أَنِّي لَبَرِيئَةٌ، لَتُصَدِّقُنِّي، وَٱللهِ ما أَجِدُ لِي وَلَكُمْ مَثَلًا إِلَّا أَبا يُوسُفَ إِذْ قالَ: ﴿فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَٱللَّهُ ٱلْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ﴾. ثُمَّ تَحَوَّلْتُ عَلَى فِراشِي، وَأَنا أَرْجُو أَنْ يُبَرِّئَنِي ٱللهُ، وَلٰكِنْ وَٱللهِ ما ظَنَنْتُ أَنْ يُنْزِلَ فِي شَأْنِي وَحْيًا يُتْلَى، ولأَنا أَحْقَرُ فِي نَفْسِي مِنْ أَنْ يُتَكَلَّمَ بِالْقُرْآنِ فِي أَمْرِي، وَلٰكِنِّي كُنْتُ أَرْجُو أَنْ يَرَى رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي النَّوْمِ رُؤْيا يُبَرِّئُنِي ٱللهُ بِها، فَوَٱللهِ ما رامَ مَجْلِسَهُ، وَلا خَرَجَ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ الْبَيْتِ، حَتَّى أُنْزِلَ عَلَيْهِ الْوَحْيُ، فَأَخَذَهُ ما كانَ يَأْخُذُهُ مِنَ الْبُرَحاءِ، حَتَّى إِنَّهُ لَيَتَحَدَّرُ مِنْهُ مِثْلُ الْجُمانِ مِنَ الْعَرَقِ فِي يَوْمٍ شاتٍ، فَلَمَّا سُرِّيَ عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ وَهُوَ يَضْحَكُ، فَكانَ أَوَّلَ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِها أَنْ قالَ لِي: (يا عائِشَةُ، أَحْمَدِي ٱللهَ، فَقَدْ بَرَّأَكِ ٱللهُ). فَقالَتْ لِي أُمِّي: قُومِي إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَقُلْتُ: لا وَٱللهِ لا أَقُومُ إِلَيْهِ، وَلا أَحْمَدُ إِلَّا ٱللهَ، فَأَنْزَلَ ٱللهُ تَعالَى:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ جَآءُو بِٱلۡإِفۡكِ﴾ الآيات، فَلَمَّا أَنْزَلَ ٱللهُ هٰذا في بَرَاءَتِي، قال أَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وَكانَ يُنْفِقُ عَلَى مِسْطَحِ بْنِ أُثَاثَةَ لِقَرَابَتِهِ مِنْهُ: وَٱللهِ لا أُنْفِقُ عَلَى مِسْطَحٍ شَيْئًا، بَعْدَ ما قالَ لِعَائِشَةَ، فَأَنْزَلَ ٱللهُ تَعَالَى: ﴿وَلَا يَأۡتَلِ أُوْلُواْ ٱلۡفَضۡلِ مِنكُمۡ وَٱلسَّعَةِ أَن يُؤۡتُوٓاْ أُوْلِي ٱلۡقُرۡبَىٰ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغۡفِرَ ٱللَّهُ لَكُمۡۚ وَٱللَّهُ غَفُورٞ رَّحِيمٌ﴾. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: بَلَى وَٱللهِ إِنِّي لأُحِبُّ أَنْ يَغْفِرَ ٱللهُ لِي، فَرَجَعَ إِلَى مِسْطَحٍ الَّذِي كانَ يُجْرِي عَلَيْهِ.

وَكانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَسْأَلُ زَيْنَبَ بِنْتَ جَحْشٍ عَنْ أَمْرِي، فَقَالَ: (يَا زَيْنَبُ، ما عَلِمْتِ، ما رَأَيْتِ؟). فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَحْمِي سَمْعِي وَبَصَرِي، وَٱللهِ ما عَلِمْتُ عَلَيْهَا إِلاَّ خَيْرًا. قالَتْ: وَهِيَ الَّتِي كانَتْ تُسَامِينِي، فَعَصَمَهَا ٱللهُ بِالْوَرَعِ. [رواه البخاري: ٢٦٦١]

मेरे आंसू थमें और न मुझे नींद आयी। जब सुबह हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अली बिन अबी तालिब रजि. और उसामा बिन जैद रजि. को बुला भेजा। क्योंकि उस वक्त कोई वहीअ आप पर नहीं उतरी थी। आपने उनसे यह सलाह मशवरा किया कि क्या मैं अपनी बीवी को छोड़ दूं? उसामा रजि. ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दिली कैफियत की, आप अपनी बीवी से मुहब्बत फरमाते थे, उसके मुतालिक मशवरा दिया और अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! वो आपकी बीवी हैं, अल्लाह की कसम! हम उनमें अच्छाई के अलावा और कुछ नहीं जानते। लेकिन अली रजि. ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह ने आप पर हरगिज तंगी नहीं की है और औरतें इनके सिवा बहुत हैं। आप बरीरा लौण्डी से पूछिये, वो आपसे सच सच बयान कर देगी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बरीरा रजि. को बुलाया और पूछा, ऐ बरीरा रजि.! क्या तुमने आइशा रजि. में कोई ऐसी बात देखी है, जिससे तुम को शक गुजरा हो। बरीरा रजि. ने कहा, नहीं! कसम है उस

जात की जिसने आपको यह हक देकर भेजा है। मैंने तो उसमें कोई ऐसी बात नहीं देखी, जिस पर ऐब लगाऊँ। हां! यह तो है कि वो अभी कमसिन लड़की है। आटा गूंथ कर सो जाती है और बकरी इसे आकर खा जाती है, यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हो गये और अब्दुल्लाह बिन उबे की शिकायत की। आपने फरमाया उस आदमी से मेरा कौन बदला लेगा, जिसने मेरी बीवी पर तोहमत लगायी है। अल्लाह की कसम! मैं तो अपनी बीवी को अच्छा ही समझता हूँ और जिस मर्द से तोहमद लगाई हैं, मैं तो उसे भी नेक ख्याल करता हूँ। वो मेरे घर मेरी गैर मौजूदगी में न जाता था, फिर साद बिन मआज रजि. खड़े हुये और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह की कसम! मैं आपका उससे बदला लेता हूँ, अगर वो आदमी औस कबिला का हुआ तो हम उसकी गर्दन उड़ा देंगे और अगर खजरजी भाईयों से है तो आप जो हुक्म देंगे, हम उसकी तामील करेंगे। इस पर साद बिन उबादा रजि. जो खजरज कबीले के सरदार थे और पहले अच्छे आदमी थे, खड़े हो गये और कौमी हमीत से गुस्से में आकर कहा, अल्लाह की कसम! तू झूट कहता है, तुम न उसे कत्ल कर सकते हो और न तुममें इतनी ताकत है। यह सुनकर हुसैद बिन हुजेर रजि. खड़े हो गये और साद बिन उबादा रजि. से कहने लगे, अल्लाह की कसम! तू झूट कहता है, हम जरूर उसे कत्ल कर डालेंगे और तू मुनाफिक है जो मुनाफिकों की तरफदारी करता है। यह कहना ही था कि औस और खजरज दोनों कबीले बिगड़ गये, यहां तक कि उन्होंने आपस में लड़ने का इरादा कर लिया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिम्बर से उतरे और उनको ठण्डा किया। यहां तक कि वो खामोश हो गये। इसके बाद आप भी

खामौश हो रहे। आइशा रजि. का बयान है कि मैं पूरा दिन रोती रही, न आंसू थमे और न मुझे नींद आयी थी। सुबह को मेरे वाल्देन मेरे पास आये, मैं दो रातें और एक दिन से लगातार रो रही थी और मैं ख्याल करती थी कि यह मेरा रोना मेरे कलेजे को फाड़ देगा। आइशा रजि. का बयान है कि वाल्देन मेरे पास ही बैठे थे और मैं रो रही थी। इतने में एक अन्सारी औरत ने अन्दर आने की इजाजत मांगी तो मैंने इजाजत दे दी। फिर वो भी मेरे साथ बैठ कर रोने लगी। हम इसी हाल में थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये और बैठ गये। इससे पहले जिस दिन से यह तूफान उठा था, आप मेरे पास बैठते ही न थे, आप पूरा एक महीना इसी शक में रहे, मेरे बारे में कोई वहीअ न उतरी। आइशा रजि. फरमाती हैं कि फिर आपने खुतबा पढ़ा और फरमाया, ऐ आइशा रजि.! मुझे ऐसी खबर पहुंची है, लिहाजा अगर इससे बरी हो तो जल्द ही अल्लाह तुम्हें बरी कर देगा और अगर तुम गुनाह कर चुकी हो तो अल्लाह से माफी मांगो और उसकी तरफ रूजूअ करो, क्योंकि बन्दा अगर अपने गुनाहों का इकरार करके तौबा करता है तो अल्लाह उसकी तौबा कबूल फरमाता है। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी गुफ्तगू खत्म फरमा चुके तो फौरन मेरे आंसू खुश्क हो गये। यहां तक कि एक कतरा भी न रहा और मैंने अपने बाप से कहा कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेरी तरफ से जवाब दें। उन्होंने कहा, अल्लाह की कसम! मेरी समझ में नहीं आता कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्या जवाब दूँ? फिर मैंने अपनी वाल्दा से कहा कि तुम मेरी तरफ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस बात का जवाब दो, जो आपने फरमायी है। उन्होंने भी यही कहा, अल्लाह

की कसम! मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्या कहूँ? फिर मैंने कहा, हालांकि मैं एक कमसीन लड़की थी और ज्यादा कुरआन भी न पढ़ती थी, अल्लाह की कसम! मुझे मालूम है कि आपने लोगों से वो बात सुनी है, जिसका लोग चर्चा कर रहे हैं और वो तुम्हारे दिल में जम गयी है और आपने इसे सच समझ लिया है और अगर मैं आपसे कहूँ कि मैं इससे बरी हूँ और अल्लाह मेरे बरी होने को खूब जानता है तो आप लोग मुझे सच्चा न जानेंगे और अगर तुम्हारी खातिर मैं किसी बात का इकरार कर लूँ और अल्लाह जानता है कि मैं इससे बरी हूँ। यकीनन मेरी और तुम्हारी वही मिसाल है जो यूसूफ अलैहि. के बाप की थी, जिस पर उन्होंने कहा था।

''बस अच्छी तरह सब्र करना ही मेरा काम है और तुम जो बातें बना रहे हो, उनमें अल्लाह ही मेरा मददगार है।'' फिर मैंने अपने बिस्तर पर करवट ली और मुझे उम्मीद थी कि अल्लाह जरूर मुझे बरी करेगा। मगर अल्लाह की कसम! मुझे यह ख्याल तक न था कि मेरे बारे में वहीअ नाजिल होगी। मैं अपने आपको इस काबिल न समझती थी कि कुरआन में मेरे मामले का जिक्र होगा, बल्कि मुझे इस बात की उम्मीद थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे मुताल्लिक कोई ख्वाब देखेंगे और वो ख्वाब मेरे को बरी कर देगा। फिर अल्लाह की कसम! आप अभी उस जगह से अलग भी न हुये थे और न ही अहले खाना में से कोई बाहर निकला था कि आप पर वहीअ नाजिल हो गयी और वही हालत आप पर तारी हो गयी जो वहीअ के उतरते वक्त हुआ करती थी । यानी सर्दियों में भी आपकी पैशानी से मौतियों की तरह पसीना टपकटता था, फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम से यह हालत दूर हुई तो आप उस वक्त मुस्कुरा रहे थे और सब से पहले जो अलफाज आपने मुझ से फरमाये, वो यह थे, आइशा रजि. तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो, बैशक अल्लाह ने तुम्हें बरी कर दिया है। मेरी मां ने मुझ से कहा, तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने खड़ी हो जावो, मैंने कहा नहीं नहीं, अल्लाह की कसम! मैं आपके सामने खड़ी नहीं होऊंगी और न अल्लाह के अलावा किसी का शुक्रिया अदा करूंगी। फिर अल्लाह तआला ने यह आयात उतारी:

"बेशक वो लोग जिन्होंने यह झूट बांधा है, वो तुम ही में से एक जमात है..आखिर तक" अजगर्ज जब अल्लाह तआला ने यह आयात मेरे बरी होने में नाजिल फरमायी तों अबू बकर रजि. ने कहा, अल्लाह की कसम! मैं मिस्तह रजि. को इसके बाद कुछ नहीं दिया करूंगा कि उसने आइशा रजि. के बारे में तूफान उठाया और वो इससे पहले मिस्तह रजि. को रिश्तेदारी की ऐवज से कुछ इमदाद दिया करते थे, इस पर यह आयात नाजिल हुई

" और तुम में से जो लोग बुज़ुर्गी और कुशादगी वाले हैं, अपने अजीजों के साथ अच्छा सलूक करने से बाज न आयें.... आखिर तक"

तो अबू बकर रजि. ने कहा, अल्लाह की कसम! क्यों नहीं मैं यह चाहता हूँ कि अल्लाह मुझको बख्श दे, चूनांचे उन्होंने मिस्तह रजि. को वही कुछ देना शुरू कर दिया जो पहले दिया करते थे, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे मामले की बाबत जैनब बिन्ते जहश रजि. से फरमाया, ऐ जैनब रजि.! तुम इस मामले के बारे में क्या जानती हो और तुमने क्या देखा है? उन्होंने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम! मैं कान और आंख बचाती हूँ, अल्लाह की कसम! मैं उसमें भलाई के अलावा और कुछ नहीं जानती। आइशा रजि. फरमाती हैं कि जैनब रजि. मेरे साथ थी, मगर अल्लाह तआला ने उनको परहेजगारी के सबब मेरे बारे में बुरा सोचने से बचा लिया।

फायदे : हजरत बरीरा रजि. ने हजरत आइशा रजि. को इस तूफान बदतमीजी से पाकिजा करार दिया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी बात पर यकीन करते हुये खुतबे के लिये खड़े हो गये। (औनुलबारी, 3/356)

बाब 5 : जब एक आदमी दूसरे की सफाई दे तो काफी है।

٥ - باب: إِذَا زَكَّى رَجُلٌ رَجُلاً كَفَاهُ

1180 : अबू बकर रजि. से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने एक आदमी ने दूसरे की तारीफ की तो आपने फरमाया, तेरी खराबी हो, तूने अपने साथी की गर्दन काट दी कई बार आपने यही फरमाया, फिर इरशाद हुआ! तुमसे जो आदमी अपने भाई की तारीफ करना जरूरी ख्याल करे तो उसे चाहिए, यूं कहे कि फलां आदमी को मैं ऐसा समझता हूँ और उस का हिसाब लेने वाला तो अल्लाह तआला ही है और मैं अल्लाह पर किसी की बड़ाई नहीं करता, मैं समझता हूँ वो ऐसा ऐसा है, बशर्ते कि वो उसका हाल जानता हो।

١١٨٠ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَثْنَى رَجُلٌ عَلَى رَجُلٍ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: (وَيْلَكَ، قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ، قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ). مِرَارًا، ثُمَّ قَالَ: (مَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَادِحًا أَخَاهُ لاَ مَحَالَةَ، فَلْيَقُلْ: أَحْسِبُ فُلاَنًا، وَٱللهُ حَسِيبُهُ، وَلاَ أُزَكِّي عَلَى ٱللهِ أَحَدًا، أَحْسِبُهُ كَذَا وَكَذَا، إِنْ كَانَ يَعْلَمُ ذٰلِكَ مِنْهُ).
[رواه البخاري: ٢٦٦٢]

फायदे : इमाम बुखारी का मतलब यह है कि एक आदमी का पाक करार देना ही काफी है, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी का पाक करार देना जाइज रखा है। बशर्ते कि वो दरमियानी तरीफ से काम ले और किसी की हद से ज्यादा तारीफ करने से बचे। (औनुलबारी, 3/362)

बाब 6 : बच्चों की गवाही और उनके बालिग होने का बयान।

٦ - باب: بُلُوغِ الصِّبْيَانِ وَشَهَادَتِهِمْ

1181 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि वो उहूद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने पेश हुये, वो उस वक्त चौदह बरस के थे, वो कहते हैं कि आपने मुझे शिरकत की इजाजत न दी। फिर मुझे खन्दक के दिन अपने सामने बुलाया, उस वक्त मैं पन्द्रह बरस का था तो आपने मुझे लश्कर में शिरकत की इजाजत दे दी।

١١٨١ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ عَرَضَهُ يَوْمَ أُحُدٍ، وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعَ عَشْرَةَ سَنَةً، فَلَمْ يُجِزْنِي، ثُمَّ عَرَضَنِي يَوْمَ الخَنْدَقِ، وَأَنَا ابْنُ خَمْسَ عَشْرَةَ سَنَةً، فَأَجَازَنِي. [رواه البخاري: ٢٦٦٤]

फायदे : औरतों के लिए जवान होने की निशानी हैज और मर्दों के लिए अहतलाम (नाइट फाल) है या कम से कम चांद के महीनों के ऐतबार से पन्द्रह साल का हो जाये। (औनुलबारी, 3/263)

बाब 7 : कुछ लोग अगर कसम उठाने में जल्दी करें तो उनके बारे में क्या कानून है?

٧ - باب: إِذَا تَسَارَعَ قَوْمٌ فِي الْيَمِينِ

1182 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ लोगों पर कसम

١١٨٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ عَرَضَ عَلَى قَوْمٍ الْيَمِينَ، فَأَسْرَعُوا، فَأَمَرَ أَنْ يُسْهَمَ

بَيْنَهُمْ فِي الْيَمِينِ: أَيُّهُمْ يَحْلِفُ. [رواه البخاري: ٢٦٧٤]

पेश की तो वो जल्दी ही कसम उठाने के लिए तैयार हो गये, लेकिन आपने हुक्म दिया कि उनके दरमियान कुरआ अन्दाजी (पर्ची) की जाये कि उनमें से कौन कसम उठायेगा?

फायदे : अबू दाऊद और निसाई में इसकी वजाहत है कि दो आदमियों ने किसी चीज के मुताल्लिक दावा किया और किसी के पास गवाह न थे तो आपने कुरआ अन्दाजी के जरीये एक से कसम लेकर वो चीज उसके हवाले कर दी। (औनुलबारी, 3/365)

बाब 8 : कसम किसी तरह ली जाये?

٨ - باب: كَيْفَ يَسْتَحْلِفُ

١١٨٣ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (مَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِٱللهِ أَوْ لِيَصْمُتْ). [رواه البخاري: ٢٦٧٩]

1183: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी कसम उठाना चाहे तो अल्लाह की कसम उठाये या फिर खामोश रहे।

फायदे : अल्लाह के अलावा किसी और की कसम उठाना दुरूस्त नहीं, अगर गलती से मुंह से निकल जाये तो गुनाह नहीं होगा, अगर अल्लाह की तरह किसी को बरतर व बुजुर्ग समझकर उसकी कसम उठाता है तो यह कुफ्र है। अपने बाप दादा, बुजुर्ग, वली काबा, जिब्राईल या पैगम्बर की कसम खाना भी नाजाईज है। (औनुलबारी, 3/366)

बाब 9 : जो आदमी लोगों के दरमियान सुलह कराये (अगर वाक्ये के खिलाफ बात कर दे) तो वो झूटा नहीं।

٩ - باب: لَيْسَ الْكَاذِبُ الَّذِي يُصْلِحُ بَيْنَ النَّاسِ

1184 : उम्मे कुलसूम बिन्ते उक्बा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुये सुना है कि जो आदमी दो आदमियों के दरमियान सुलह करा दे और उसमें कोई अच्छी बात की निसबत करे या अच्छी बात कर दे तो वो झूटा नहीं है।

١١٨٤ : عَنْ أُمِّ كُلْثُومٍ بِنْتِ عُقْبَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (لَيْسَ الْكَذَّابُ الَّذِي يُصْلِحُ بَيْنَ النَّاسِ، فَيَنْمِي خَيْرًا أَوْ يَقُولُ خَيْرًا). [رواه البخاري: ٢٦٩٢]

फायदे : मुस्लिम की रिवायत में है कि तीन मौकों पर वाक्आ के खिलाफ बात करने में कोई हर्ज नहीं है, लड़ाई, आपस में सुलह और बीवी-खाविन्द का एक दूसरे को खुश करने में, निज मजबूरी के वक्त भी ऐसा किया जा सकता है। (औनुलबारी, 3/368)

बाब 10 : ईमाम का साथियों से कहना कि हमें ले चलो, हम सुलह करा दें।

١٠ - باب: قَوْلُ الإِمَامِ لِأَصْحَابِهِ: اذْهَبُوا بِنَا نُصْلِحُ

1185 : सहल बिन साद रजि. से रिवायत है कि कुबा वाले आपस में लड़ पड़े, यहां तक कि उन्होंने आपस में पत्थर मारे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसकी खबर दी गई तो आपने फरमाया, हमें ले चलो ताकि उनकी आपस में सुलह करा दें।

١١٨٥ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ أَهْلَ قُبَاءٍ اقْتَتَلُوا حَتَّى تَرَامَوْا بِالحِجَارَةِ، فَأُخْبِرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِذٰلِكَ، فَقَالَ: (اذْهَبُوا بِنَا نُصْلِحُ بَيْنَهُمْ). [رواه البخاري: ٢٦٩٣]

फायदे : बड़े झगड़े के वक्त काबिल ऐतमाद इल्म वालों को चाहिए कि वो आपस में सुलह करा दे और इस बात का इन्तजार न करे कि उन्हें कोई सुलह की दावत दे। (औनुलबारी, 3/369)

बाब 11 : सुलह के कागज यूं लिखे जाये: "यह सुलह नामा है, जिस पर फलां बिन फलां और फलां बिन फलां ने सुलह की।" निज खानदान और नसबनामा लिखना जरूरी नहीं।

١١ - باب: كَيْفَ يُكْتَبُ: هٰذَا مَا صَالَحَ فُلَانُ بْنُ فُلَانٍ وَفُلَانُ بنُ فُلَانٍ، وَإِنْ لَمْ يَنْسُبْهُ إِلى قَبِيلَتِهِ أَو نَسَبِهِ

1186 : बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिकअदा में उमरह का इरादा फरमाया, लेकिन मक्का वालों ने इस बात को न माना कि आप मक्का में दाखिल हों। यहां तक कि आपने उनसे इस बात पर सुलह कर ली कि तीन दिन मक्का में रूकेंगे। जब सुलह के दस्तावेज लिख चुके तो इस के शुरू में यों लिखा, यह वो सुलह नामा है, जिस पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुलह की है। काफिर कहने लगे कि हम इसका इकरार नहीं करेंगे, क्योंकि अगर हमें यकीन हो कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो हम आपको उमरह से न रोकते। आप तो सिर्फ मुहम्मद सल्लल्लाहु

١١٨٦ : عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: اعْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ فِي ذِي الْقَعْدَةِ، فَأَبَى أَهْلُ مَكَّةَ أَنْ يَدَعُوهُ يَدْخُلُ مَكَّةَ، حَتَّى قَاضَاهُمْ عَلَى أَنْ يُقِيمَ بِهَا ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ، فَلَمَّا كَتَبُوا الْكِتَابَ كَتَبُوا: هٰذَا ما قاضى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَقَالُوا: لَا نُقِرُّ بِهَا، فَلَوْ نَعْلَمُ أَنَّكَ رَسُولُ اللهِ ما مَنَعْنَاكَ، وَلٰكِنْ أَنْتَ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، فَقَالَ: (أَنَا رَسُولُ اللهِ، وَأَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ)، ثُمَّ قَالَ لِعَلِيٍّ: (امْحُ: رَسُولُ اللهِ). قَالَ: لَا وَاللهِ لَا أَمْحُوكَ أَبَدًا، فَأَخَذَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْكِتَابَ، فَكَتَبَ: (هٰذَا ما قاضى عَلَيْهِ مُحَمَّدُ ابْنُ عَبْدِ اللهِ، لَا يُدْخِلُ مَكَّةَ سِلَاحًا إِلَّا فِي الْقِرَابِ، وَأَنْ لَا يَخْرُجَ مِنْ أَهْلِهَا بِأَحَدٍ إِنْ أَرَادَ أَنْ يَتْبَعَهُ، وَأَنْ لَا يَمْنَعَ أَحَدًا مِنْ أَصْحَابِهِ أَرَادَ أَنْ يُقِيمَ بِهَا)، فَلَمَّا دَخَلَهَا وَمَضَى الأَجَلُ، أَتَوْا عَلِيًّا فَقَالُوا: قُلْ لِصَاحِبِكَ اخْرُجْ عَنَّا فَقَدْ مَضَى

الأجل، فخرج النبي ﷺ، فتبعتهم ابنة حمزة: يا عم يا عم، فتناولها علي، فأخذ بيدها، وقال لفاطمة عليها السلام: دونك ابنة عمك احمليها، قال: فاختصم فيها علي وزيد وجعفر، فقال علي: أنا أحق بها، وهي ابنة عمي، وقال جعفر: ابنة عمي وخالتها تحتي، وقال زيد: ابنة أخي، فقضى بها النبي ﷺ لخالتها، وقال: (الخالة بمنزلة الأم). وقال لعلي: (أنت مني وأنا منك) وقال لجعفر: (أشبهت خلقي وخلقي). وقال لزيد: (أنت أخونا ومولانا). [رواه البخاري: ٢٦٩٩]

अलैहि वसल्लम बिन अब्दुल्लाह हैं। आपने फरमाया, मैं अल्लाह का रसूल हूँ और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बिन अब्दुल्लाह भी हूँ। फिर आपने अली रजि. से फरमाया कि तुम रसूलुल्लाह के लफ्ज को मिटा दो। उन्होंने कहा, नहीं अल्लाह की कसम! मैं हरगिज इसे नहीं मिटाऊंगा, आखिरकार आपने कागज अपने हाथ में लिया और उस पर लिखा, यह वो सुलह नामा है, जिस पर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने सुलह की है, कि मक्का में खुले हथियार लेकर दाखिल नहीं होंगे, यानी तलवारें म्यान में होंगी और मक्का वालों में से अगर कोई उनके साथ जाना चाहेगा तो वो उसे अपने साथ लेकर न जायेंगे और अपने साथियों में से अगर कोई मक्का में रहना चाहेगा तो उसे मना नहीं करेंगे। फिर (अगले साल) आप मक्का में दाखिल हुये और मुद्दत गुजर गई तो कुरैश अली रजि. के पास आये और कहने लगे, तुम अपने साहबा यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहो कि हमारे पास से चले जावो, क्योंकि ठहरने की मुद्दत का वक्त खत्म हो चुका है। चूनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का से बाहर आ गये। फिर हमजा रजि. की बेटी आपके पीछे चचा चचा कहते हुई दौड़ी तो उसको अली रजि. ने ले लिया और उसका हाथ पकड़कर फातिमा रजि. से कहा, अपने चचा की बेटी को लेकर उठा लो।

रावी कहता है कि फिर अली रजि., जैद रजि. और जाफर रजि. ने इसकी बाबत झगड़ा किया, अली रजि. ने कहा, मेरी चचाजाद बहन है। जाफर रजि. ने कहा, मेरी भी चचाजाद बहन है, निज इसकी खाला मेरे निकाह में है। जैद रजि. ने कहा, यह मेरी भतीजी है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे उसकी खाला के हवाले कर दिया और फरमाया, खाला मां की तरह है और अली रजि. से फरमाया, तुम मुझसे हो और मैं तुमसे हूँ और जाफर रजि. से फरमाया, तुम मेरी सूरत व सीरत दोनों की तरह हो और जैद रजि. से आपने फरमाया, तुम हमारे भाई और आजादकर्दा गुलाम हो।

फायदे : मतलब यह है कि सुलह नामा में फलां बिन फलां लिखना ही काफी है। लम्बा चौड़ा नसब नामा और दीगर मालूमात लिखने की जरूरत नहीं।

١٢ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ لِلْحَسَنِ ابْنِ عَلِيٍّ: إِنَّ ابْنِي هٰذَا سَيِّدٌ

बाब 12 : हसन बिन अली रजि. के बारे में फरमाने नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कि यह मेरा बेटा सय्यीद हैं।

١١٨٧ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ عَلَى الْمِنْبَرِ، وَالْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ إِلَى جَنْبِهِ، وَهُوَ يُقْبِلُ عَلَى النَّاسِ مَرَّةً وَعَلَيْهِ أُخْرَى، وَيَقُولُ: (إِنَّ ٱبْنِي هٰذَا سَيِّدٌ، وَلَعَلَّ ٱللهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ عَظِيمَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ). [رواه البخاري: ٢٧٠٤]

1187 : अबू बकर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिम्बर पर देखा, जबकि हसन बिन अली रजि. आपके पहलू में बैठे थे। आप कभी तो लोगों की तरफ और कभी उनकी तरफ देखते और फरमाते, मेरा यह बेटा

सय्यीद है और उम्मीद है कि अल्लाह इसके जरीये मुसलमानों की दो बड़ी जमाअतों के दरमियान सुलह करायेगा।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हजरत हसन रजि. के बारे में यह कहना सही साबित हुआ कि इनके जरीये हजरत अली रजि. और हजरत मआविया रजि. की दोनों जमाअतो में सुलह हो गयी और लोग अमन चैन से जिन्दगी बसर करने लगे।

बाब 13: क्या (यह दुरूस्त है कि) इमाम सुलह के लिए इशारा कर दे।

١٣ - باب: هَلْ يُشِيرُ الإِمَامُ بِالصُّلْحِ

1188: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ झगड़ने वालों की बुलन्द आवाजें दरवाजे पर सुनी, मालूम हुआ कि एक आदमी दूसरे से कर्ज में कुछ माफी चाहता है और उसके बारे में नरमी का मुतालबा करता है। दूसरा कहता है, अल्लाह की कसम! मैं ऐसा नहीं करूंगा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ ले गये और फरमाया वो आदमी कहां है जो अल्लाह की कसम उठाकर यूं कह रहा था कि मैं नेकी नहीं करूंगा। उसने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं हाजिर हूँ। मेरा हरीफ (कर्जदार) जो चाहे मैं उसको मंजूर करता हूँ।

١١٨٨ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ صَوْتَ خُصُومٍ بِالْبَابِ، عَالِيَةٍ أَصْوَاتُهُمَا، وَإِذَا أَحَدُهُمَا يَسْتَوْضِعُ الآخَرَ وَيَسْتَرْفِقُهُ فِي شَيْءٍ، وَهُوَ يَقُولُ: وَٱللهِ لاَ أَفْعَلُ، فَخَرَجَ عَلَيْهِمَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: (أَيْنَ الْمُتَأَلِّي عَلَى ٱللهِ لاَ يَفْعَلُ الْمَعْرُوفَ). فَقَالَ: أَنَا يَا رَسُولَ ٱللهِ، فَلَهُ أَيُّ ذٰلِكَ أَحَبَّ. [رواه البخاري: ٢٧٠٥]

फायदे : इससे मालूम होता है कि सहाबा किराम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इशारों को समझने वाले और भलाई को बढ़-चढ़कर अंजाम देने वाले थे। (औनुलबारी, 3/375)

किताबुल शुरूत
शुरूत के बयान में

बाब 1 : अकद निकाह करते वक्त महर में कोई शर्त लगाने का बयान।

١ - باب: الشُّرُوطِ فِي المَهْرِ عِنْدَ عُقْدَةِ النِّكَاحِ

1189 : उकबा बिन आमिर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तमाम शर्तो में सबसे ज्यादा पूरा करने के काबिल वो शर्त है, जिसके जरीये तुमने औरतों की शर्मगाहों को अपने लिए हलाल किया है।

١١٨٩ : عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَحَقُّ الشُّرُوطِ أَنْ تُوفُوا بِهِ مَا ٱسْتَحْلَلْتُمْ بِهِ الْفُرُوجَ). [رواه البخاري: ٢٧٢١]

फायदे : इससे मुराद वो शर्ते हैं जो कि शरीअत के दायरे में हो। नाजाइज पाबन्दियों का कबूल होना जरूरी नहीं। मसलन औरतों की मौजूदगी में दूसरा निकाह नहीं किया जायेगा या सफर में औरत खाविन्द के साथ नहीं जायेगी, वगैरह।

(औनुलबारी, 3/376)

बाब 2 : अल्लाह की हद में नाजाइज शर्त का बयान।

٢ - باب: الشُّرُوطُ الَّتِي لَا تَحِلُّ فِي الحُدُودِ

1190 : अबू हुरैरा रजि. और जैद बिन खालिद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि एक देहाती

١١٩٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُمَا قَالَا: إِنَّ رَجُلًا مِنَ الأَعْرَابِ أَتَى رَسُولَ

اللهِ ﷺ فقال: يا رَسُولَ اللهِ، أَنْشُدُكَ اللهَ إلاَّ قَضَيْتَ لِي بِكِتَابِ اللهِ، فَقَالَ الخَصْمُ الآخَرُ - وَهُوَ أَفْقَهُ مِنْهُ -: نَعَمْ، فَاقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ، وَائْذَنْ لِي، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (قُلْ)، قَالَ: إِنَّ ابْنِي كَانَ عَسِيفًا عَلَى هٰذَا، فَزَنَى بِامْرَأَتِهِ، وَإِنِّي أُخْبِرْتُ أَنَّ عَلَى ابْنِي الرَّجْمَ، فَافْتَدَيْتُ ابْنِي مِنْهُ بِمِائَةِ شَاةٍ وَوَلِيدَةٍ، فَسَأَلْتُ أَهْلَ العِلْمِ، فَأَخْبَرُونِي: أَنَّمَا عَلَى ابْنِي جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ، وَأَنَّ عَلَى امْرَأَةِ هٰذَا الرَّجْمَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لأَقْضِيَنَّ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللهِ، الوَلِيدَةُ وَالغَنَمُ رَدٌّ عَلَيْكَ، وَعَلَى ابْنِكَ جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ، اغْدُ يَا أُنَيْسُ إِلَى امْرَأَةِ هٰذَا، فَإِنِ اعْتَرَفَتْ فَارْجُمْهَا). قَالَ: فَغَدَا عَلَيْهَا فَاعْتَرَفَتْ، فَأَمَرَ بِهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَرُجِمَتْ. [رواه البخاري: ٢٧٢٤، ٢٧٢٥]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और अर्ज करने लगा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं आपको अल्लाह की कसम देता हूँ ताकि आप मेरे लिए किताबुल्लाह (कुरआन) से फैसला कर दीजिए। दूसरा गिरोह जो उससे ज्यादा समझदार था, कहने लगा। आप हमारे बीच किताबुल्लाह से फैसला फरमा दें, अलबत्ता मुझे इजाजत दें कि मैं अपना हाल बयान करूं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अच्छा बयान कर। उसने कहा, मेरा बेटा इसके यहां मजदूरी करता था, उसने इसकी बीवी से जिना किया और मुझसे लोगों ने कहा कि मेरे बेटे पर रजम (पत्थर से मार-मार कर हलाक) वाजिब है तो मैंने सौ बकरियां और एक लौण्डी उसकी तरफ से दण्ड के तौर पर देकर उसको छुड़ा लिया। फिर मैंने इल्म वालों से मसला पूछा, उन्होंने कहा कि मेरे बेटे को सौ कौड़े पड़ेंगे और एक बरस के लिए इसे देश से बाहर जाना पड़ेगा और उसकी बीवी पत्थर से मार कर हलाक कर दी जायेगी। आपने फरमाया, कसम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं अल्लाह की किताब के मुताबिक तुम्हारा फैसला करूंगा। लौण्डी और बकरियां तो तुझे वापिस मिल

जायेंगी मगर तेरे बेटे पर सौ कौड़े और एक साल का देश निकाला है। ऐ उनैस रजि.! तुम उस औरत के पास जावो और वो करार करे तो उसे पत्थर मार मार कर हलाक कर देना। अबू हुरैरा रजि. कहते हैं कि वो उसके पास गये तो उसने जुर्म का इकरार कर लिया, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से वो पत्थर मार मार कर हलाक कर दी गई।

फायदे : किताबुल्लाह से मुराद इस्लामी कानून है जो कुरआन और हदीस दोनों में है। हदीस के दलील होने के लिए यह हदीस एक जबरदस्त दलील की हैसियत रखती है, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किताबुल्लाह के हवाले से यह फैसला फरमाया है और कुरआन मजीद में यह मौजूद नहीं है।

बाब 3: मुजारअत (बटाई) में शर्त लगाना।

٣ - باب: الاشْتِرَاطُ فِي المُزَارَعَةِ

1191 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि जब खैबर वालों ने अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. के हाथ पांव मरोड़ दिये तो उमर रजि. खुतबा देने के लिए खड़े हुये तो कहने लगे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहूदियों से उनके माल के बारे में मामला किया था और फरमाया था कि जब तक परवरदिगार तुमको यहां रखेगा तो हम भी तुमको कायम रखेंगे और अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. अपना माल वहां लेने

١١٩١ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا فَدَعَ أَهْلُ خَيْبَرَ عَبْدَ ٱللهِ بْنَ عُمَرَ، قَامَ عُمَرُ خَطِيبًا فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَانَ عَامَلَ يَهُودَ خَيْبَرَ عَلَى أَمْوَالِهِمْ، وَقَالَ: (نُقِرُّكُمْ مَا أَقَرَّكُمُ ٱللهُ)، وَإِنَّ عَبْدَ ٱللهِ بْنَ عُمَرَ خَرَجَ إِلَى مَالِهِ هُنَاكَ، فَعُدِيَ عَلَيْهِ مِنَ ٱللَّيْلِ، فَفُدِعَتْ يَدَاهُ وَرِجْلاَهُ، وَلَيْسَ لَنَا هُنَاكَ عَدُوٌّ غَيْرُهُمْ، هُمْ عَدُوُّنَا وَتُهْمَتُنَا، وَقَدْ رَأَيْتُ إِجْلاَءَهُمْ، فَلَمَّا أَجْمَعَ عُمَرُ عَلَى ذٰلِكَ أَتَاهُ أَحَدُ بَنِي أَبِي الْحُقَيْقِ، فَقَالَ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، أَتُخْرِجُنَا وَقَدْ أَقَرَّنَا مُحَمَّدٌ ﷺ، وَعَامَلَنَا عَلَى الأَمْوَالِ، وَشَرَطَ ذٰلِكَ

لَنَا. فَقَالَ عُمَرُ: أَظَنَنْتَ أَنِّي نَسِيتُ قَوْلَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ: (كَيْفَ بِكَ إِذَا أُخْرِجْتَ مِنْ خَيْبَرَ تَعْدُو بِكَ قَلُوصُكَ لَيْلَةً بَعْدَ لَيْلَةٍ). فَقَالَ: كَانَتْ هٰذِهِ هُزَيْلَةً مِنْ أَبِي الْقَاسِمِ، قَالَ: كَذَبْتَ يَا عَدُوَّ ٱللهِ، فَأَجْلاَهُمْ عُمَرُ، وَأَعْطَاهُمْ قِيمَةَ مَا كَانَ لَهُمْ مِنَ الثَّمَرِ، مالًا وَإِبِلًا وَعُرُوضًا مِنْ أَقْتَابٍ وَحِبَالٍ وَغَيْرِ ذٰلِكَ. [رواه البخاري: ٢٧٣٠]

गये तो उन पर रात के वक्त हमला किया गया और उनके दोनों हाथ पांव तोड़ दिये गये। यहूदियों के अलावा हमारा कोई दुश्मन वहां नहीं है। यकीनन वही हमारे दुश्मन हैं और हमारा शक उन्हीं पर है। मैं उनको देश निकाला देना ही मुनासिब समझता हूँ। चूनांचे उमर रजि. ने पुख्ता इरादा कर लिया तो अबू हुकैक यहूदी की औलाद में एक आदमी आया और कहने लगा, ऐ अमीरूल मौमिनीन! क्या आप हमको निकाल देंगे? हालांकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तो हमको वहां ठहराया था और यहां के माल के बारे में हमसे मामला किया था और इस बात की हमसे शर्त की थी। उमर रजि. ने फरमाया, क्या तुम यह समझते हो कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह कौल भूल गया हूँ जो आपने तुझसे फरमाया था कि उस वक्त तेरा क्या हाल होगा, जब तू खैबर से निकाला जायेगा और तेरा ऊंट तुझे कई रातों लगातार लिये फिरेगा? उसने कहा यह तो अबू कासिम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मजाक था। उमर रजि. ने फरमाया कि दुश्मन तो झूट बोलता है, आखिरकार उमर रजि. ने उनको देश निकाला दे दिया और पैदावार, ऊंट, सामान, पालान और रस्सियों की किस्म से जो कुछ भी उनका था, उसकी उनको कीमत अदा कर दी।

फायदे : यहुदियों को खैबर से निकालने की कई सबब थे, जिनमें एक इस हदीस में बयान हुआ है। निज हजरत उमर रजि. के सामने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फरमान भी था

कि जजीरा अरब में दो दीन, यानी दीन इस्लाम और दीन यहूद जमा नहीं हो सकते। इसके अलावा मुसलमान खुद कफील भी हो चुके थे। (औनुलबारी, 3/382)

---

٤ - باب: الشُّرُوطِ فِي الجِهَادِ وَالمُصَالَحَةِ مَعَ أَهْلِ الحَرْبِ وكِتَابَةِ الشُّرُوطِ

बाब 4 : जिहाद और कुफ्फार से सुलह करते वक्त शर्तें लगाना और उन्हें तहरीर में लाना।

١١٩٢ : عَنِ المِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ وَمَرْوَانَ قَالاَ: خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ زَمَنَ الحُدَيْبِيَةِ، حَتَّى إِذَا كَانُوا بِبَعْضِ الطَّرِيقِ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّ خَالِدَ بْنَ الوَلِيدِ بِالغَمِيمِ، فِي خَيْلٍ لِقُرَيْشٍ طَلِيعَةً، فَخُذُوا ذَاتَ اليَمِينِ)، فَوَاللهِ ما شَعَرَ بِهِمْ خَالِدٌ حَتَّى إِذَا هُمْ بِقَتَرَةِ الجَيْشِ، فَانْطَلَقَ يَرْكُضُ نَذِيرًا لِقُرَيْشٍ، وَسَارَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى إِذَا كَانَ بِالثَّنِيَّةِ الَّتِي يُهْبَطُ عَلَيْهِمْ مِنْهَا، بَرَكَتْ بِهِ رَاحِلَتُهُ، فَقَالَ النَّاسُ: حَلْ حَلْ، فَأَلَحَّتْ، فَقَالُوا: خَلأَتِ القَصْوَاءُ، خَلأَتِ القَصْوَاءُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (ما خَلأَتِ القَصْوَاءُ، وَما ذَاكَ لَهَا بِخُلُقٍ، وَلَكِنْ حَبَسَهَا حَابِسُ الفِيلِ)، ثُمَّ قَالَ: (وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لاَ يَسْأَلُونِي خُطَّةً يُعَظِّمُونَ فِيهَا حُرُمَاتِ اللهِ إِلاَّ أَعْطَيْتُهُمْ إِيَّاهَا)، ثُمَّ زَجَرَهَا فَوَثَبَتْ، قَالَ: فَعَدَلَ عَنْهُمْ حَتَّى نَزَلَ

1192 : मिस्वर बिन मखरमा और मरवान रजि. से रिवायत है, उन दोनों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुलह हुदीबिया के जमाने में तशरीफ ले जा रहे थे कि रास्ते में आपने मुअज्जाना तौर पर फरमाया, खालिद बिन रजि. मकामे गमीम में कुरैश के सवारों के साथ मौजूद है और यह कुरैश का हर अव्वल दस्ता है। लिहाजा तुम दायी तरफ का रास्ता इख्तेयार करो तो अल्लाह की कसम! खालिद रजि. को उनके आने की खबर ही नहीं हुई, यहां तक कि जब लश्कर का गुबार उन तक पहुंचा तो वो फौरन कुरैश को खबर करने के लिए वहां से दौड़ा। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चले

بأقْصَى الحُدَيْبِيَةِ عَلَى ثَمَدٍ قَلِيلِ الماءِ، يَتَبَرَّضُهُ النَّاسُ تَبَرُّضًا، فَلَمْ يُلَبِّثْهُ النَّاسُ حَتَّى نَزَحُوهُ، وَشُكِيَ إِلَى رَسُولِ آللهِ ﷺ العَطَشُ، فَانْتَزَعَ سَهْمًا مِنْ كِنَانَتِهِ، ثُمَّ أَمَرَهُمْ أَنْ يَجْعَلُوهُ فِيهِ، فَوَاللهِ ما زَالَ يَجِيشُ لَهُمْ بِالرِّيِّ حَتَّى صَدَرُوا عَنْهُ، فَبَيْنَما هُمْ كَذٰلِكَ إِذْ جاءَ بُدَيْلُ بْنُ وَرْقَاءَ الخُزَاعِيُّ فِي نَفَرٍ مِنْ قَوْمِهِ مِنْ خُزَاعَةَ، وَكانُوا عَيْبَةَ نُصْحِ رَسُولِ آللهِ ﷺ مِنْ أَهْلِ تِهَامَةَ، فَقَالَ: إِنِّي تَرَكْتُ كَعْبَ بْنَ لُؤَيٍّ وَعامِرَ بْنَ لُؤَيٍّ نَزَلُوا أَعْدَادَ مِيَاهِ الحُدَيْبِيَةِ، وَمَعَهُمُ العُوذُ المَطَافِيلُ، وَهُمْ مُقَاتِلُوكَ وَصَادُّوكَ عَنِ البَيْتِ، فَقَالَ رَسُولُ آللهِ ﷺ: (إِنَّا لَمْ نَجِئْ لِقِتَالِ أَحَدٍ، وَلٰكِنَّا جِئْنَا مُعْتَمِرِينَ، وَإِنَّ قُرَيْشًا قَدْ نَهِكَتْهُمُ الحَرْبُ، وَأَضَرَّتْ بِهِمْ، فَإِنْ شَاؤُوا مَادَدْتُهُمْ مُدَّةً، وَيُخَلُّوا بَيْنِي وَبَيْنَ النَّاسِ، فَإِنْ أَظْهَرْ: فَإِنْ شَاؤُوا أَنْ يَدْخُلُوا فِيما دَخَلَ فِيهِ النَّاسُ فَعَلُوا، وَإِلاَّ فَقَدْ جَمُّوا، وَإِنْ هُمْ أَبَوْا، فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لأُقَاتِلَنَّهُمْ عَلَى أَمْرِي هٰذَا حَتَّى تَنْفَرِدَ سَالِفَتِي، وَلَيُنْفِذَنَّ آللهُ أَمْرَهُ). فَقَالَ بُدَيْلٌ: سَأُبَلِّغُهُمْ ما تَقُولُ، قَالَ: فَانْطَلَقَ حَتَّى أَتَى قُرَيْشًا، قَالَ: إِنَّا قَدْ

जा रहे थे। यहां तक कि जब आप उस पहाड पर पहुंचे जिसके ऊपर से होकर मक्का में उतरते थे तो आपकी ऊंटनी बैठ गई। इस पर लोगों ने उसे चलाने के लिए हल हल कहा, मगर उसने कोई हरकत न की। लोग कहने लगे कसवा (रसूल की उंटनी का नाम) बैठ गई, कसवा अड़ गयी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कसवा नहीं बैठी और न ही यूं अड़ना उसकी आदत है। मगर जिस (अल्लाह) ने हाथी वाले बादशाह अबराह को रोका था, उसने कसवा को भी रोक दिया, फिर आपने फरमाया, कसम है उस जात की, जिसके हाथ में मेरी जान है कि अगर कुफ्फार कुरैश मुझसे किसी ऐसी चीज का मुतालबा करें, जिसे वो अल्लाह की तरफ से हुरमत व इज्जत वाली चीजों की इज्जत करें तो उसको जरूर मंजूर करूंगा। फिर आपने उस ऊंटनी को डांटा तो वो जस्त लगाकर उठ खड़ी हुई। आपने मक्का वालों

جِئْنَاكُمْ مِنْ هٰذَا الرَّجُلِ، وَسَمِعْنَاهُ يَقُولُ قَوْلًا، فَإِنْ شِئْتُمْ أَنْ نَعْرِضَهُ عَلَيْكُمْ فَعَلْنَا، فَقَالَ سُفَهَاؤُهُمْ: لَا حَاجَةَ لَنَا أَنْ تُخْبِرَنَا عَنْهُ بِشَيْءٍ، وَقَالَ ذَوُو الرَّأْيِ مِنْهُمْ: هَاتِ مَا سَمِعْتَهُ يَقُولُ، قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ كَذَا وَكَذَا، فَحَدَّثَهُمْ بِمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ، فَقَامَ عُرْوَةُ بْنُ مَسْعُودٍ فَقَالَ: أَيْ قَوْمِ، أَلَسْتُمْ بِالْوَالِدِ؟ قَالُوا: بَلَى، قَالَ أَوَ لَسْتُ بِالْوَلَدِ؟ قَالُوا: بَلَى، قَالَ: فَهَلْ تَتَّهِمُونِي؟ قَالُوا: لَا، قَالَ: أَلَسْتُمْ تَعْلَمُونَ أَنِّي ٱسْتَنْفَرْتُ أَهْلَ عُكَاظٍ، فَلَمَّا بَلَّحُوا عَلَيَّ جِئْتُكُمْ بِأَهْلِي وَوَلَدِي وَمَنْ أَطَاعَنِي؟ قَالُوا: بَلَى، قَالَ: فَإِنَّ هٰذَا قَدْ عَرَضَ عَلَيْكُمْ خُطَّةَ رُشْدٍ، ٱقْبَلُوهَا وَدَعُونِي آتِيهِ، قَالُوا: ٱئْتِهِ، فَأَتَاهُ، فَجَعَلَ يُكَلِّمُ النَّبِيَّ ﷺ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ نَحْوًا مِنْ قَوْلِهِ لِبُدَيْلٍ، فَقَالَ عُرْوَةُ عِنْدَ ذٰلِكَ: أَيْ مُحَمَّدُ، أَرَأَيْتَ إِنِ ٱسْتَأْصَلْتَ أَمْرَ قَوْمِكَ، هَلْ سَمِعْتَ بِأَحَدٍ مِنَ الْعَرَبِ ٱجْتَاحَ أَهْلَهُ قَبْلَكَ، وَإِنْ تَكُنِ الْأُخْرَى، فَإِنِّي وَٱللّٰهِ لَأَرَى وُجُوهًا، وَإِنِّي لَأَرَى أَشْوَابًا مِنَ النَّاسِ خَلِيقًا أَنْ يَفِرُّوا وَيَدَعُوكَ، فَقَالَ لَهُ أَبُو بَكْرٍ: ٱمْصُصْ بَظْرَ اللَّاتِ، أَنَحْنُ نَفِرُّ

की तरफ से रूख फैरा और हुदेबिया के (आखिर) इन्हाई हिस्से में एक नदी पर पड़ाव किया, जिसमें बहुत कम पानी था, लोग उस में से थोड़ा थोड़ा पानी लेने लगे और कुछ ही देर में उसको साफ कर दिया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने प्यास की शिकायत की गई तो आपने एक तीर अपनी तरकश से निकाल दिया और इशारा फरमाया कि इसको इस पानी में गाड़ दें। फिर क्या था, अल्लाह की कसम! पानी जोश मारने लगा और सब लोगों ने खूब सैर होकर पिया और उनकी वापसी तक यही हाल रहा, उसी हालत में बुदैल बिन वरका खुजाई अपनी कौम खुजाअ के चन्द आदमियों को लिये हुये आ पहुंचा और ये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खैर ख्वाह और बा-ऐतमाद तहामा के लोगों में से थे। उसने कहा, मैंने काब बिन लुवे और आमिर बिन लुवे को इस हाल में छोड़ा है कि वो हुदेबिया

عَنْهُ وَنَدَعُهُ؟ فَقَالَ: مَنْ ذَا؟ قَالُوا: أَبُو بَكْرٍ، قَالَ: أَمَا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَوْلَا يَدٌ كَانَتْ لَكَ عِنْدِي لَمْ أَجْزِكَ بِهَا لَأَجَبْتُكَ، قَالَ: وَجَعَلَ يُكَلِّمُ النَّبِيَّ ﷺ، فَكُلَّمَا تَكَلَّمَ أَخَذَ بِلِحْيَتِهِ، وَالْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ قَائِمٌ عَلَى رَأْسِ النَّبِيِّ ﷺ، وَمَعَهُ السَّيْفُ وَعَلَيْهِ الْمِغْفَرُ، فَكُلَّمَا أَهْوَى عُرْوَةُ بِيَدِهِ إِلَى لِحْيَةِ النَّبِيِّ ﷺ ضَرَبَ يَدَهُ بِنَعْلِ السَّيْفِ، وَقَالَ لَهُ: أَخِّرْ يَدَكَ عَنْ لِحْيَةِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَرَفَعَ عُرْوَةُ رَأْسَهُ، فَقَالَ: مَنْ هٰذَا؟ قَالُوا: الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ، فَقَالَ: أَيْ غُدَرُ، أَلَسْتُ أَسْعَى فِي غَدْرَتِكَ، وَكَانَ الْمُغِيرَةُ صَحِبَ قَوْمًا فِي الجَاهِلِيَّةِ فَقَتَلَهُمْ، وَأَخَذَ أَمْوَالَهُمْ، ثُمَّ جَاءَ فَأَسْلَمَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَمَّا الإِسْلَامَ فَأَقْبَلُ وَأَمَّا المَالَ فَلَسْتُ مِنْهُ فِي شَيْءٍ)، ثُمَّ إِنَّ عُرْوَةَ جَعَلَ يَرْمُقُ أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ بِعَيْنَيْهِ، قَالَ: فَوَٱللهِ مَا تَنَخَّمَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ نُخَامَةً إِلَّا وَقَعَتْ فِي كَفِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ، فَدَلَكَ بِهَا وَجْهَهُ وَجِلْدَهُ، وَإِذَا أَمَرَهُمْ ٱبْتَدَرُوا أَمْرَهُ، وَإِذَا تَوَضَّأَ كَادُوا يَقْتَتِلُونَ عَلَى وَضُوئِهِ، وَإِذَا تَكَلَّمَ خَفَضُوا أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَهُ، وَمَا يُحِدُّونَ إِلَيْهِ النَّظَرَ تَعْظِيمًا لَهُ،

के गहरे चश्मों पर ठहरे हुए हैं और उनके साथ दूध वाली ऊंटनिया हैं और वो लोग आपसे जंग करना और बैतुल्लाह से आपको रोकना चाहते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हम किसी से लड़ने नहीं बल्कि सिर्फ उमरह करने आये हैं और बेशक कुरैश को लड़ाई ने कमजोर कर दिया है। और उनको बहुत नुकसान पहुंचा है। लिहाजा अगर वो चाहें तो मैं उनसे एक मुद्दत तय कर लेता हूँ और वो इस मुद्दत में मेरे और दूसरे लोगों के बीच हायल न हों। अगर मैं गालिब हो जावूं और वो चाहें तो उस दीन में दाखिल हो जायें, जिसमें और लोग दाखिल हो गये हैं, वरना वो कुछ रोज और ज्यादा आराम हासिल कर लेंगे। अगर वो यह बात न माने तो कसम है उस अल्लाह की जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं तो इस दीन पर उनसे लड़ता रहूँगा, यहां तक कि मेरी गर्दन कट जाये और यकीनन अल्लाह तआला जरूर अपने दीन को जारी

فَرجع عُرْوَةُ إِلَى أَصْحَابِهِ فَقَالَ: أَيْ قَوْم، وَٱللهِ لَقَدْ وَفَدْتُ عَلَى المُلُوكِ، وَوَفَدْتُ عَلَى قَيْصَرَ وَكِسْرَى وَالنَّجاشِيِّ، وَٱللهِ إِنْ رَأَيْتُ مَلِكًا قَطُّ يُعَظِّمُهُ أَصْحَابُهُ ما يُعَظِّمُ أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ ﷺ مُحَمَّدًا، وَٱللهِ إِنْ يَتَنَخَّمُ نُخَامَةً إِلاَّ وَقَعَتْ فِي كَفِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ فَدَلَكَ بِهَا وَجْهَهُ وَجِلْدَهُ، وَإِذَا أَمَرَهُمُ ٱبْتَدَرُوا أَمْرَهُ، وَإِذَا تَوَضَّأَ كادُوا يَقْتَتِلُونَ عَلَى وَضُوئِهِ، وَإِذَا تَكَلَّمَ خَفَضُوا أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَهُ، وَمَا يُحِدُّونَ إِلَيْهِ النَّظَرَ تَعْظِيمًا لَهُ، وَإِنَّهُ قَدْ عَرَضَ عَلَيْكُمْ خُطَّةَ رُشْدٍ فَٱقْبَلُوهَا، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي كِنَانَةَ: دَعُونِي آتِيهِ، فَقَالُوا ٱئْتِهِ، فَلَمَّا أَشْرَفَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَأَصْحَابِهِ، قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (هٰذَا فُلاَنٌ، وَهُوَ مِنْ قَوْمٍ يُعَظِّمُونَ الْبُدْنَ، فَٱبْعَثُوهَا لَهُ)، فَبُعِثَتْ لَهُ، وَٱسْتَقْبَلَهُ النَّاسُ يُلَبُّونَ، فَلَمَّا رَأَى ذٰلِكَ قَالَ: سُبْحَانَ ٱللهِ، ما يَنْبَغِي لِهٰؤُلاَءِ أَنْ يُصَدُّوا عَنِ الْبَيْتِ، فَلَمَّا رَجَعَ إِلَى أَصْحَابِهِ قَالَ: رَأَيْتُ الْبُدْنَ قَدْ قُلِّدَتْ وَأُشْعِرَتْ، فَمَا أَرَى أَنْ يُصَدُّوا عَنِ الْبَيْتِ، فَقَامَ رَجُلٌ مِنْهُمْ، يُقَالُ لَهُ مِكْرَزُ بْنُ حَفْصٍ، فَقَالَ: دَعُونِي آتِيهِ، فَقَالُوا ٱئْتِهِ، فَلَمَّا أَشْرَفَ

करेगा। इस पर बुदैल ने कहा, मैं आपका पैगाम उनको पहुंचा देता हूँ। चूनांचे वो कुरैश के पास जाकर कहने लगा, हम यहां उस आदमी के पास से आ रहे हैं और हमने उनको कुछ कहते हुये सुना है। अगर तुम चाहो तो तुम्हें सुनाऊँ, इस पर कुछ बेवकूफ लोगों ने कहा, हमें इसकी कोई जरूरत नहीं कि तुम हमें उनकी किसी बात की खबर दो। मगर उनमें से अकलमन्द लोगों ने कहा, अच्छा बतावो, तुम क्या बात सुन कर आये हो। बुदैल ने कहा, मैंने उसको ऐसा ऐसा कहते सुना है। फिर जो कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था, वो उसने बयान कर दिया। इतने में उरवा बिन मसऊद सकफी खड़ा हुआ और कहने लगा मेरी कौम के लोगों! क्या तुम मुझ पर बाप की सी शिफकत नहीं करते हो, उन्होंने कहा, हां क्यों नहीं! उरवा ने कहा, क्या मैं बेटे की तरह तुम्हारा भला चाहने वाला नहीं हूँ? उन्होंने ने कहा, क्यों नहीं। उरवा

عَلَيْهِمْ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (هٰذَا مِكْرَزٌ، وَهُوَ رَجُلٌ فَاجِرٌ). فَجَعَلَ يُكَلِّمُ النَّبِيَّ ﷺ، فَبَيْنَمَا هُوَ يُكَلِّمُهُ إِذْ جَاءَ سُهَيْلُ بْنُ عَمْرٍو. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لَقَدْ سَهُلَ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ). فَقَالَ: هَاتِ اكْتُبْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ كِتَابًا، فَدَعَا النَّبِيُّ ﷺ الْكَاتِبَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (اكْتُبْ: بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ). قَالَ سُهَيْلٌ: أَمَّا الرَّحْمٰنُ فَوَاللهِ مَا أَدْرِي مَا هِيَ، وَلٰكِنِ اكْتُبْ بِاسْمِكَ اللّٰهُمَّ كَمَا كُنْتَ تَكْتُبُ، فَقَالَ الْمُسْلِمُونَ: وَاللهِ لَا نَكْتُبُهَا إِلَّا بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (اكْتُبْ بِاسْمِكَ اللّٰهُمَّ). ثُمَّ قَالَ: (هٰذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ). فَقَالَ سُهَيْلٌ: وَاللهِ لَوْ كُنَّا نَعْلَمُ أَنَّكَ رَسُولُ اللهِ مَا صَدَدْنَاكَ عَنِ الْبَيْتِ وَلَا قَاتَلْنَاكَ، وَلٰكِنِ اكْتُبْ: مُحَمَّدُ ابْنُ عَبْدِ اللهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (وَاللهِ إِنِّي لَرَسُولُ اللهِ وَإِنْ كَذَّبْتُمُونِي، اكْتُبْ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ). فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: (عَلَى أَنْ تُخَلُّوا بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْبَيْتِ فَنَطُوفَ بِهِ). فَقَالَ سُهَيْلٌ: وَاللهِ لَا تَتَحَدَّثُ الْعَرَبُ أَنَّا أُخِذْنَا ضُغْطَةً، وَلٰكِنْ ذٰلِكَ مِنَ الْعَامِ الْمُقْبِلِ، فَكَتَبَ،

ने कहा, तुम मेरे मुताल्लिक कोई शक रखते हो, उन्होंने कहा, नहीं! उरवा ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि मैंने उकाज वालों को तुम्हारी मदद के लिए बुलाया, मगर उन्होंने जब मेरा कहा न माना तो मैं अपने बाल बच्चे, ताल्लुकदार और पैरोकार को लेकर तुम्हारे पास आ गया। उन्होंने कहा, हां, ठीक है। उरवा ने कहा, उस आदमी यानी बुदैल ने तुम्हारी खैर ख्वाही की बात की है, उसको मन्जूर कर लो और इजाजत दो कि मैं उसके पास जाऊं। सब लोगों ने कहा, ठीक है तुम उसके पास जावो। चूनांचे वो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और आपसे बातें करने लगा। आपने उससे भी वहीं गुफ्तगू की जो बुदैल से की थी, उरवा यह सुनकर कहने लगा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अगर तुम अपनी कौम की जड़ बिल्कुल काट दोगे तो क्या फायदा होगा? क्या तुमने अपने से पहले किसी अरब को सुना है कि उसने अपनी

فقال سُهَيْلٌ: وَعَلَى أَنَّهُ لاَ يَأْتِيكَ مِنَّا رَجُلٌ، وَإِنْ كَانَ عَلَى دِينِكَ إِلاَّ رَدَدْتَهُ إِلَيْنَا، قَالَ الْمُسْلِمُونَ: سُبْحَانَ ٱللهِ، كَيْفَ يُرَدُّ إِلَى الْمُشْرِكِينَ وَقَدْ جاءَ مُسْلِمًا، فَبَيْنَما هُمْ كَذٰلِكَ إِذْ دَخَلَ أَبُو جَنْدَلِ بْنُ سُهَيْلِ بْنِ عَمْرٍو يَرْسُفُ فِي قُيُودِهِ، وَقَدْ خَرَجَ مِنْ أَسْفَلِ مَكَّةَ حَتَّى رَمَى بِنَفْسِهِ بَيْنَ أَظْهُرِ الْمُسْلِمِينَ، فَقَالَ سُهَيْلٌ: هٰذَا يَا مُحَمَّدُ أَوَّلُ ما أُقاضِيكَ عَلَيْهِ أَنْ تَرُدَّهُ إِلَيَّ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّا لَمْ نَقْضِ الْكِتَابَ بَعْدُ)، قالَ: فَوَٱللهِ إِذًا لَمْ أُصَالِحْكَ عَلَى شَيْءٍ أَبَدًا، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (فَأَجِزْهُ لِي). قالَ: مَا أَنَا بِمُجِيزِهِ لَكَ، قَالَ: (بَلَى فَٱفْعَلْ). قالَ: مَا أَنَا بِفَاعِلٍ، قَالَ مِكْرَزٌ: بَلْ قَدْ أَجَزْنَاهُ لَكَ، قالَ أَبُو جَنْدَلٍ: أَيْ مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ، أُرَدُّ إِلَى الْمُشْرِكِينَ وَقَدْ جِئْتُ مُسْلِمًا، أَلاَ تَرَوْنَ مَا قَدْ لَقِيتُ؟ وَكَانَ قَدْ عُذِّبَ عَذَابًا شَدِيدًا فِي ٱللهِ.

فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ: فَأَتَيْتُ نَبِيَّ ٱللهِ ﷺ فَقُلْتُ: أَلَسْتَ نَبِيَّ ٱللهِ حَقًّا؟ قَالَ: (بَلَى)، قُلْتُ: أَلَسْنَا عَلَى الْحَقِّ وَعَدُوُّنَا عَلَى الْبَاطِلِ؟ قَالَ: (بَلَى)، قُلْتُ: فَلِمَ نُعْطِي الدَّنِيَّةَ فِي دِينِنَا إِذًا؟ قَالَ: (إِنِّي

कौम का खात्मा किया हो? और अगर दूसरी बात हुई यानी तुम मबलूब हो गये तो अल्लाह की कसम! मैं तुम्हारे साथियों के मुंह देखता हूँ कि यह मुख्तलिफ लोग जिन्हें भागने की आदत है, तुम्हें छोड़ देंगे। अबू बकर रजि. ने यह सुनकर कहा, जा और लात की शर्मगाह पर मुंह मार! क्या हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तन्हा छोड़कर भाग जायेंगे? उरवा ने कहा, यह कौन है? लोगों ने कहा, यह अबू बकर सिद्दीक रजि. हैं। उरवा ने कहा कसम है, उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर तुम्हारा एक अहसान मुझ पर न होता, जिसका अभी तक बदला नहीं दे सका तो मैं तुम्हें सख्त जवाब देता। रावी कहता है कि फिर उरवा बातें करने लगा और जब बात करता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाढ़ी मुबारक को पकड़ता। उस वक्त मुगीराह बिन शोबा रजि. आपके सर के पास खड़े थे,

رَسُولُ ٱللهِ، وَلَسْتُ أَعْصِيهِ، وَهُوَ نَاصِرِي). قُلْتُ: أَوَ لَيْسَ كُنْتَ تُحَدِّثُنَا أَنَّا سَنَأْتِي الْبَيْتَ فَنَطُوفُ بِهِ؟ قَالَ: (بَلَى، فَأَخْبَرْتُكَ أَنَّا نَأْتِيهِ الْعَامَ)، قَالَ: قُلْتُ: لاَ، قَالَ: (فَإِنَّكَ آتِيهِ وَمُطَّوِّفٌ بِهِ)، قَالَ: فَأَتَيْتُ أَبَا بَكْرٍ فَقُلْتُ: يَا أَبَا بَكْرٍ، أَلَيْسَ هٰذَا نَبِيَّ ٱللهِ حَقًّا، قَالَ: بَلَى، قُلْتُ: أَلَسْنَا عَلَى الْحَقِّ وَعَدُوُّنَا عَلَى الْبَاطِلِ؟ قَالَ: بَلَى، قُلْتُ: فَلِمَ نُعْطِي الدَّنِيَّةَ فِي دِينِنَا إِذًا؟ قَالَ: أَيُّهَا الرَّجُلُ، إِنَّهُ لَرَسُولُ ٱللهِ ﷺ، وَلَيْسَ يَعْصِي رَبَّهُ، وَهُوَ نَاصِرُهُ، فَاسْتَمْسِكْ بِغَرْزِهِ، فَوَٱللهِ إِنَّهُ عَلَى الْحَقِّ، قُلْتُ: أَلَيْسَ كَانَ يُحَدِّثُنَا أَنَّا سَنَأْتِي الْبَيْتَ وَنَطُوفُ بِهِ؟ قَالَ: بَلَى، أَفَأَخْبَرَكَ أَنَّكَ تَأْتِيهِ الْعَامَ؟ قُلْتُ: لاَ، قَالَ: فَإِنَّكَ آتِيهِ وَمُطَّوِّفٌ بِهِ. قَالَ عُمَرُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: فَعَمِلْتُ لِذٰلِكَ أَعْمَالاً، قَالَ: فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ قَضِيَّةِ الْكِتَابِ، قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ لأَصْحَابِهِ: (قُومُوا فَٱنْحَرُوا ثُمَّ ٱحْلِقُوا). قَالَ: فَوَٱللهِ مَا قَامَ مِنْهُمْ رَجُلٌ حَتَّى قَالَ ذٰلِكَ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، فَلَمَّا لَمْ يَقُمْ مِنْهُمْ أَحَدٌ دَخَلَ عَلَى أُمِّ سَلَمَةَ، فَذَكَرَ لَهَا مَا لَقِيَ مِنَ النَّاسِ، فَقَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ:

जिनके हाथ में तलवार और सर पर खुद (लोहे का टोप) था, लिहाजा जब उरवा अपना हाथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाढ़ी की तरफ बढ़ाता तो मुगीरा रजि. उसके हाथ पर तलवार का निचला हिस्सा मारते और कहते कि अपना हाथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाढ़ी से दूर रख। यह सुनकर उरवा ने अपना सर उठाया और कहने लगा, यह कौन हैं? लोगों ने कहा, यह मुगीरा बिन शोबा रजि. हैं। उरवा ने कहा, ऐ दगाबाज! क्या मैंने तेरी दगाबाजी की सजा से तुझको नहीं बचाया। हुआ यूं कि जाहिलियत के जमाने में मुगीरा रजि. काफिरों के किसी कौम के साथ गये थे, फिर उन्होंने कत्ल करके उनका माल लूट लिया और चले आये। इसके बाद वो मुसलमान हो गये। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम्हारा इस्लाम तो मैं कबूल करता हूँ, लेकिन जो माल तू लाया है, उससे

يَا نَبِيَّ ٱللهِ، أَتُحِبُّ ذٰلِكَ، ٱخْرُجْ ثُمَّ لَا تُكَلِّمْ أَحَدًا مِنْهُمْ كَلِمَةً، حَتَّى تَنْحَرَ بُدْنَكَ، وَتَدْعُوَ حَالِقَكَ فَيَحْلِقَكَ، فَخَرَجَ فَلَمْ يُكَلِّمْ أَحَدًا مِنْهُمْ حَتَّى فَعَلَ ذٰلِكَ، نَحَرَ بُدْنَهُ، وَدَعَا حَالِقَهُ فَحَلَقَهُ، فَلَمَّا رَأَوْا ذٰلِكَ قَامُوا فَنَحَرُوا وَجَعَلَ بَعْضُهُمْ يَحْلِقُ بَعْضًا، حَتَّى كَادَ بَعْضُهُمْ يَقْتُلُ بَعْضًا غَمًّا، ثُمَّ جَاءَهُ نِسْوَةٌ مُؤْمِنَاتٌ، فَأَنْزَلَ ٱللهُ تَعَالَى: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا جَآءَكُمُ ٱلْمُؤْمِنَٰتُ مُهَٰجِرَٰتٍ فَٱمْتَحِنُوهُنَّ﴾ حَتَّى بَلَغَ ﴿بِعِصَمِ ٱلْكَوَافِرِ﴾ فَطَلَّقَ عُمَرُ يَوْمَئِذٍ ٱمْرَأَتَيْنِ، كَانَتَا لَهُ فِي الشِّرْكِ فَتَزَوَّجَ إِحْدَاهُمَا مُعَاوِيَةُ بْنُ أَبِي سُفْيَانَ، وَالأُخْرَى صَفْوَانُ بْنُ أُمَيَّةَ، ثُمَّ رَجَعَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى الْمَدِينَةِ فَجَاءَهُ أَبُو بَصِيرٍ، رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ وَهُوَ مُسْلِمٌ، فَأَرْسَلُوا فِي طَلَبِهِ رَجُلَيْنِ، فَقَالُوا: الْعَهْدَ الَّذِي جَعَلْتَ لَنَا، فَدَفَعَهُ إِلَى الرَّجُلَيْنِ، فَخَرَجَا بِهِ حَتَّى بَلَغَا ذَا الْحُلَيْفَةِ، فَنَزَلُوا يَأْكُلُونَ مِنْ تَمْرٍ لَهُمْ، فَقَالَ أَبُو بَصِيرٍ لِأَحَدِ الرَّجُلَيْنِ: وَٱللهِ إِنِّي لَأَرَى سَيْفَكَ هٰذَا يَا فُلَانُ جَيِّدًا، فَاسْتَلَّهُ الآخَرُ، فَقَالَ: أَجَلْ، وَٱللهِ إِنَّهُ لَجَيِّدٌ، لَقَدْ جَرَّبْتُ بِهِ، ثُمَّ جَرَّبْتُ، فَقَالَ أَبُو بَصِيرٍ: أَرِنِي أَنْظُرْ

मुझे कोई लेना नहीं। इसके बाद उरवा अपनी निगाह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथियों को देखने लगा। रावी बयान करता है कि उसने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब थूकते थे तो सहाबा मे से किसी न किसी के हाथ पर ही पड़ता था और वो उसे अपने चेहरे और बदन पर मलता था और जब आप उन्हें कोई हुकम देते तो वो फौरन उसकी तामील करते थे और जब आप वजू करते तो वो आपके वजू का गिरा हुआ पानी लेने पर झगड़ पड़ते थे और हर आदमी उसे लेने की ख्वाहिश करता। वो लोग कभी बात करते तो आपके सामने अपनी आवाजें धीमी रखते और आपकी तरफ नजर भरकर न देखते थे। यह हाल देखकर उरवा अपने लोगों के पास लौट कर गया और उनसे कहा, लोगों! अल्लाह की कसम! मैं बादशाहों के दरबार में गया हूँ और कैसर कैसरा और नज्जाशी के दरबार भी देख आया हूँ। मगर

إِلَيْهِ، فَأَمْكَنَهُ مِنْهُ، فَضَرَبَهُ بِهِ حَتَّى بَرَدَ، وَفَرَّ الآخَرُ حَتَّى أَتَى الْمَدِينَةَ، فَدَخَلَ الْمَسْجِدَ يَعْدُو، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ حِينَ رَآهُ: (لَقَدْ رَأَى هٰذَا ذُعْرًا)، فَلَمَّا ٱنْتَهَى إِلَى النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: قُتِلَ وَٱللهِ صَاحِبِي وَإِنِّي لَمَقْتُولٌ، فَجَاءَ أَبُو بَصِيرٍ: فَقَالَ: يَا نَبِيَّ ٱللهِ، قَدْ وَٱللهِ أَوْفَى ٱللهُ ذِمَّتَكَ، قَدْ رَدَدْتَنِي إِلَيْهِمْ، ثُمَّ أَنْجَانِي ٱللهُ مِنْهُمْ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (وَيْلُ أُمِّهِ، مِسْعَرَ حَرْبٍ، لَوْ كَانَ لَهُ أَحَدٌ)، فَلَمَّا سَمِعَ ذٰلِكَ عَرَفَ أَنَّهُ سَيَرُدُّهُ إِلَيْهِمْ، فَخَرَجَ حَتَّى أَتَى سِيفَ الْبَحْرِ، قَالَ: وَيَنْفَلِتُ مِنْهُمْ أَبُو جَنْدَلِ بْنُ سُهَيْلٍ، فَلَحِقَ بِأَبِي بَصِيرٍ، فَجَعَلَ لاَ يَخْرُجُ مِنْ قُرَيْشٍ رَجُلٌ قَدْ أَسْلَمَ إِلاَّ لَحِقَ بِأَبِي بَصِيرٍ، حَتَّى ٱجْتَمَعَتْ مِنْهُمْ عِصَابَةٌ، فَوَٱللهِ مَا يَسْمَعُونَ بِعِيرٍ خَرَجَتْ لِقُرَيْشٍ إِلَى الشَّأْمِ إِلاَّ ٱعْتَرَضُوا لَهَا، فَقَتَلُوهُمْ وَأَخَذُوا أَمْوَالَهُمْ، فَأَرْسَلَتْ قُرَيْشٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ تُنَاشِدُهُ بِٱللهِ وَالرَّحِمِ: لَمَّا أَرْسَلَ: فَمَنْ أَتَاهُ فَهُوَ آمِنٌ، فَأَرْسَلَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَيْهِمْ، فَأَنْزَلَ ٱللهُ تَعَالَى: ﴿وَهُوَ ٱلَّذِى كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُم بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنۢ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ﴾ حَتَّى بَلَغَ ﴿ٱلْحَمِيَّةَ

मैने किसी बादशाह को ऐसा नहीं देखा कि उसके साथी उसकी ऐसी ताजीम करते हों, जिस तरह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताजीम करते हैं। अल्लाह की कसम! जब वो थूकते हैं तो उनमें से किसी न किसी के हाथ पर पड़ता है और वो उसको अपने चेहरे पर मल लेता है और जब वो किसी बात का हुक्म देते हैं तो वो फौरन उनके हुक्म की तामील करते हैं और वो वजू करते हैं तो लोग उनके वजू से बचे हुये पानी के लिए लड़ते मरते हैं और जब गुफ्तगू करते हैं तो उनके सामने अपनी आवाजें धीमी रखते हैं और ताजीम की वजह से उनकी तरफ नजर भरकर नहीं देखते। बेशक उन्होंने तुम्हें एक अच्छी बात की पेशकश की है, तुम उसे कबूल कर लो। इस पर बनी कनाना के एक आदमी ने कहा, अब मुझे उसके पास जाने की इजाजत दो। लोगों ने कहा, अच्छा अब तुम

حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ﴾، وَكَانَتْ حَمِيَّتُهُمْ أَنَّهُمْ لَمْ يُقِرُّوا أَنَّهُ نَبِيُّ اللهِ، وَلَمْ يُقِرُّوا بِبِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ، وحالوا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْبَيْتِ. [رواه البخاري: ٢٧٣١، ٢٧٣٢]

उनके पास जावो, जब वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके साथियों के पास आया तो आपने फरमाया, यह फलां आदमी है और यह उस कौम से ताल्लुक रखता है जो कुरबानी के जानवरों की ताजीम करते हैं। लिहाजा तुम कुरबानी के जानवर उसके सामने पेश करो, चूनांचे कुरबानी उसके सामने पेश की गई और सहाबा किराम रजि. ने लब्बेक पुकारते हुये उसका इस्तकबाल (स्वागत) किया। जब उसने यह हाल देखा तो कहने लगा, सुब्हान अल्लाह! इन लोगों को बैतुल्लाह से रोकना मुनासिब नहीं होता। चूनांचे वो भी अपनी कौम के पास लौट कर गया और कहने लगा, मैंने कुरबानी के जानवरों को देखा कि उनके गले में हार पड़े और कुआन (सर के पास का हिस्सा) जख्मी हैं, मैं तो ऐसे लोगों को बैतुल्लाह से रोकना मुनासिब नहीं समझता। फिर उनमें से एक और आदमी जिसका नाम मिकरज था, खड़ा हो गया और कहने लगा, मुझे इजाजत दो कि मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाऊं। लोगों ने कहा, अच्छा तुम भी जावों और जब वो मुसलमानों के पास आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यह मिकरज है और बद-किरदार आदमी है। फिर वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से गुफ्तगू करने लगा। अभी वो आपसे गुफ्तगू कर ही रहा था कि सोहैल बिन अम्र आ गया। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अब तुम्हारा काम आसान हो गया है। फिर उसने कहा कि आप हमारे और अपने बीच सुलह के दस्तावेज लिखें। चूनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कातिब

को बुलाकर उससे फरमाया कि लिखो:

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"

इस पर सोहैल ने कहा, अल्लाह की कसम! हम नहीं जानते कि रहमान कौन है? आप इसी तरह लिखवायें "बिइस्मीका अल्लाहुम्मा" जैसा कि आप पहले लिखा करते थे। मुलसमानों ने कहा कि हम तो वही "बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम" लिखवायेंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, बिइस्मीका अल्लाहुम्मा ही लिख दो। फिर आपने फरमाया, लिखो कि यह वो तहरीर है जिसकी बुनियाद पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुलह की। सोहैल ने कहा, अल्लाह की कसम! अगर हम यह जानते कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो हम न तो आप को बैतुल्लाह से रोकते और न ही आपसे जंग करते। लिहाजा मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लिखवायें। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह की कसम! बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ। मगर तुमने मुझे झूटलाया है। अच्छा मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही लिखो। लेकिन इस तरह कि तुम हमारे और बैतुल्लाह के बीच रूकावट नहीं बनोगे, ताकि हम काबा का तवाफ कर लें। सोहैल ने कहा, अल्लाह की कसम! ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि अरब बातें करेंगे कि हम दबाव में आ गये हैं। अलबत्ता अगले साल यह बात हो जायेगी। चूनांचे आपने यही लिखवा दिया। फिर सोहेल ने कहा, यह शर्त भी है कि हमारी तरफ से जो आदमी तुम्हारी तरफ आये, अगरचे वो तुम्हारे दीन पर हो, उसे आपको हमारी तरफ वापिस करना होगा। मुसलमानों ने कहा, सुब्हान अल्लाह! वो किस लिये मुश्रिकों को वापिस कर दें, जबकि

वो मुसलमान होकर आया है। अभी यह बातें हो रही थी कि अबू जन्दल बिन सोहेल बिन अम्र रजि. बेड़ियां पहने हुये धीरे-धीरे मक्का के निचले हिस्से से आता हुआ मालूम हुआ, यहां तक कि वो मुसलमान की जमाअत में पहुंच गया। सोहेल ने कहा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे पहली बात जिस पर हम सुलह करते हैं कि उसको मुझे वापिस कर दो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अभी तो सुलह नामा पूरा लिखा भी नहीं गया। सोहेल ने कहा तो फिर अल्लाह की कसम! हम तुमसे किसी बात पर सुलह नहीं करते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अच्छा तुम इसकी मुझे इजाजत दे दो, सोहेल ने कहा, मैं इसकी इजाजत नहीं दूंगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुकर्रर फरमाया, नहीं तुम मुझे इसकी इजाजत दे दो। उसने कहा, मैं नहीं दूंगा। मिकरज बोला, अच्छा यह आपकी खातिर इजाजत देते हैं। आखिरकार जन्दल रजि. बोल उठा, ऐ मुसलमानो! क्या मैं मुश्रिक की तरफ वापिस कर दिया जाऊंगा। हालांकि मैं मुसलमान होकर आया हूँ। क्या तुम नहीं देखते कि मैंने क्या क्या मुसीबतें उठायीं हैं? दर हकीकत इस्लाम की राह में उसे सख्त तकलीफ दी गई थी। उमर बिन खत्ताब रजि. कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और अर्ज किया : क्या आप अल्लाह के सच्चे पैगम्बर नहीं हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, बेशक ऐसा ही है। मैंने अर्ज किया तो फिर अपने दीन को क्यों जलील करते हैं। आपने फरमाया, मैं अल्लाह का रसूल हूँ और मैं उसकी नाफरमानी नहीं करता। वो मेरा परवरदिगार है। मैंने अर्ज किया : क्या आपने नहीं फरमाया था कि हम बैतुल्लाह जायेंगे और उसका तवाफ करेंगे। आपने फरमाया : हां,

मगर क्या मैंने तुमसे यह भी कहा था कि हम इसी साल बैतुल्लाह जायेंगे? मैंने अर्ज किया नहीं। आपने फरमायाः तुम (एक वक्त) बैतुल्लाह जावोगे और उसका तवाफ करोगे। उमर रजि. का बयान है कि फिर मैं अबू बकर रजि. के पास गया और उनसे कहा, ऐ अबू बकर रजि.! क्या यह अल्लाह के सच्चे नबी नहीं हैं? उन्होंने कहा, क्यों नहीं। मैंने कहा, क्या हम हक पर और हमारा दुश्मन झूठ पर नहीं है? उन्होंने कहा, हां! ऐसा ही है। मैंने कहा, तो फिर हम दीन के मुताल्लिक यह जिल्लत क्यों गवारा करें? अबू बकर रजि. ने कहा, भले आदमी! वो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। उसकी खिलाफवर्जी नहीं करते। अल्लाह उनका मददगार है। लिहाजा वो जो हुक्म दें, उसकी तामील करो और उनके साथ हो लो, क्योंकि अल्लाह की कसम! वो हक पर हैं। मैंने कहा, क्या वो हमसे यह बयान नहीं करते थे कि हम बैतुल्लाह जाकर उसका तवाफ करेंगे? अबू बकर रजि. ने कहा, हां कहा था। मगर क्या यह भी कहा था कि तुम इसी साल बैतुल्लाह जावोगे और उसका तवाफ करोगे? मैंने कहा, नहीं! इस पर अबू बकर रजि. ने फरमाया : उमर रजि. कहते हैं कि मैंने इस (बेअदबी और गुस्ताखी की तलाफी के लिए) बहुत से नेक अमल किये। रावी का बयान है कि जब सुलह नामा लिखा जा चुका था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा किराम रजि. से कहा, उठो और कुरबानी के जानवर जिब्ह करो। निज सर के बाल मुण्डावो। रावी कहता है कि अल्लाह की कसम! यह सुनकर कोई भी न उठा। फिर आपने तीन बार यही फरमाया, जब उनमें से कोई न उठा तो आप उम्मे सलमा रजि. के पास आ गये और उनसे यह वाक्या बयान किया जो लोगों से आपको पेश आया था। उम्मे सलमा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अगर आप यह बात चाहते हैं तो बाहर तशरीफ ले जायें और उनमें से किसी के साथ बात न करें। बल्कि आप अपने कुरबानी के जानवर जिब्ह करके सर मुण्डने वाले को बुलायें ताकि वो आपका सर मुण्ड दे। चूनांचे आप बाहर तशरीफ लाये और किसी से गुफ्तगू न की। यहां तक कि आपने तमाम काम कर लिये। कुरबानी के जानवर जिब्ह किये। सर मुण्डने वाले को बुलाया, जिसने आपका सर मुण्डा। चूनांचे जब सहाबा किराम रजि. ने यह देखा तो वो भी उठे और उन्होंने कुरबानी के जानवर जिब्ह किये। फिर एक दूसरे का सर मुण्डने लगे। हुजूम की वजह से खतरा पैदा हो गया था कि एक दूसरे को हलाक कर देंगे। इसके बाद चन्द मुसलमान औरतें आपके यहां हाजिरे खिदमत हुयीं तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाजिल फरमायी।

"मुसलमानों! जब मुसलमान औरतें हिजरत करके तुम्हारे पास आयें तो उनका इम्तेहान लो। आयत के आखरी हिस्से (बइसमील कवाफिर) तक"

तो उमर रजि. ने उस दिन अपनी दो मुश्रिक औरतों को तलाक दे दी जो उनके निकाह में थीं, उनमें एक के साथ मआविया बिन अबी सुफियान रजि. और दूसरी से सुफियान बिन उम्मया ने निकाह कर लिया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना वापिस आये तो अबू बसीर रजि. नामी एक आदमी मुसलमान होकर आपके पास आया, जो कुरैश था और कुफ्फार मक्का ने भी उसके पीछे दो आदमी भेजे। निज रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहलवा भेजा कि जो वादा आपने हमसे किया है, उसका ख्याल करें। लिहाजा रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू बसीर रजि. को उन दोनों के हवाले कर दिया और वो दोनों उसे लेकर जिलहुलैफा पहुचें और वहां उतरकर खजूरें खाने लगे। तो अबू बसीर रजि. ने एक से कहा, अल्लाह की कसम! तेरी तलवार बहुत उम्दा मालूम होती है। उसने खींच कर कहा, बेशक उम्दा है। मैं इसे कई दफा आजमा चुका हूँ। अबू बसीर रजि. ने कहा, मुझे दिखावो, मैं भी तो देखूं, कैसी अच्छी है? चूनांचे वो तलवार उसने अबू बसीर रजि. को दे दी। अबू बसीर रजि. ने उसी तलवार से वार करके उसे ठण्डा कर दिया। दूसरा आदमी भागता हुआ मदीना आया और दौड़ता हुआ मस्जिद में घुस आया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे देखा तो फरमाया, यह कुछ डरा हुआ है। फिर जब वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया तो कहने लगा, अल्लाह की कसम! मेरा साथी कत्ल कर दिया गया है और मैं भी नहीं बचूंगा। इतने में अबू बसीर रजि. भी आ पहुंचा और कहने लगा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह ने आपका वादा पूरा कर दिया है, आपने मुझे कुफ्फार को वापिस कर दिया था। मगर अल्लाह ने मुझे निजात दी है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तेरी मां के लिए खराबी हो। यह तो लड़ाई की आग है, अगर कोई इसका मददगार होता तो जरूर भड़क उठती। जब अबू बसीर रजि.ने यह बात सुनी तो वो समझ गये कि आप उसको फिर कुफ्फार के हवाले करेंगे। लिहाजा वो सीधा निकलकर समन्दर के किनारे जा पहुंचा, दूसरी तरफ से अबू जन्दल रजि. भी मक्का से भागकर उसी से मिल गये। इस तरह जो आदमी भी कुरैश का मुसलमान होकर आता वो अबू बसीर रजि. से मिल जाता था। यहाँ तक कि वहां एक जमाअत वजूद में आ गयी। फिर अल्लाह

की कसम! वो कुरैश के जिस काफिले की बाबत सुनते कि वो शाम की तरफ जा रहा है, उसकी ताक में रहते। उसके आदमियों को कत्ल करके उनका साजो सामान लूट लेते। फिर आखिरकार कुरैश ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आदमी भेजा। आपको अल्लाह और कराबत (रिश्तेदारी) का वास्ता दिया कि अबू बसीर रजि. को कहला भेजें कि वो तकलीफ पहुंचाने से बाज आ जाये और अब से जो आदमी मुसलमान होकर आपके पास आये, उसको अमन है। चूनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू बसीर रजि. की तरफ उसकी बाबत पैगाम भेजा, उस वक्त अल्लाह तआला ने यह आयत नाजिल फरमायी।

वही अल्लाह जिसने ऐन मक्का में तुम्हें उन पर फतह दी और उनके हाथ तुमसे रोक दिये और तुम्हारे हाथ उनसे यहां तक कि "हमीयतुल जाहिलिया" के लफ्ज तक पहुंचे।

और जाहिलाना घमण्ड यह था कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत को न माना, "बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम" न लिखने निज मुसलमानों और काबा के बीच रूकावट हुई।

फायदे : इससे मालूम हुआ कि किसी बड़े और अहम मकसद को पाने के लिए छोटी-छोटी जज्बाती बातों को कुरबान कर देना चाहिए, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बैतुल्लाह की अजमत व हुरमत को बरकरार रखने के लिए कुफ्फार की तरफ से बाज गैर मुनासीब शर्तो को भी कबूल कर लिया।

बाब 5 : इकरार में किस किस्म की शर्त और इस्तस्ना (जुदाई) दुरूस्त है।

٥ - باب: مَا يَجُوزُ مِنَ الاشْتِرَاطِ وَالثُّنْيَا فِي الإِقْرَارِ

1193 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह के निन्यानवें नाम हैं। यानी एक कम सौ नाम हैं। जो आदमी उनको याद करे तो वो जन्नत में दाखिल होगा।

١١٩٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِنَّ لِلهِ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ ٱسْمًا، مِائَةً إِلاَّ وَاحِدًا، مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ ٱلْجَنَّةَ). [رواه البخاري: ٢٧٣٦]

फायदे : इस हदीस से उन नामों की खबर दी गई है, जिन्हें याद करने और उनके मुताबिक अमल करने वाले को जन्नत में जाने की खुशखबरी दी गई है। वैसे निन्यानवे नामों के अलावा भी अल्लाह तआला के बेशुमार नाम हैं। (औनुलबारी, 3/312)



किताबुल वसाया
वसीयतों के बयान में

١ - باب: الْوَصَايَا

बाब 1 : वसीयत की अहमीयत।

١١٩٤ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (ما حَقُّ ٱمْرِىءٍ مُسْلِمٍ، لَهُ شَيْءٌ يُوصِي فِيهِ، يَبِيتُ لَيْلَتَيْنِ إِلاَّ وَوَصِيَّتُهُ مَكْتُوبَةٌ عِنْدَهُ) [رواه البخاري: ٢٧٣٨]

1194 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि.से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस मुसलमान को किसी चीज की वसीयत करना हो, उसे जाइज नहीं कि वो दो रातें भी यूं गुजारें कि वसीयत उसके पास लिखी हुई शक्ल में मौजूद न हो।

फायदे : जिस आदमी के पास माले दौलत या काबिले वसीयत कोई और चीज हो तो उसे चाहिए कि अपनी वसीयत को लिख डाले। माल की वसीयत के लिए जरूरी है कि वो किसी नाजाईज काम और शरई वारिस (जिसके हिस्से कुरआन में मौजूद हैं) के लिए वसीयत न करे और न उसकी वसीयत 1/3 से ज्यादा हो।

١١٩٥ : عَنْ عَمْرِو بْنِ الحَارِثِ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، خَتَنِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، أَخِي جُوَيْرِيَةَ بِنْتِ الحَارِثِ، قَالَ: ما تَرَكَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عِنْدَ مَوْتِهِ دِرْهَمًا، وَلاَ دِينَارًا، وَلاَ عَبْدًا، وَلاَ أَمَةً، وَلاَ شَيْئًا، إِلاَّ

1195 : अम्र बिन हारिस रजि. से रिवायत है, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साले हैं, यानी उम्मे मौमिनीन जुवैरिया बिन्ते हारिस रजि. के भाई हैं। उन्होंने फरमाया कि

بَغْلَتَهُ الْبَيْضَاءَ، وَسِلاَحَهُ، وَأَرْضًا جَعَلَهَا صَدَقَةً. [رواه البخاري: ٢٧٣٩]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी वफात के वक्त न कोई दिरहम छोड़ा, न कोई दीनार और न कोई लौण्डी गुलाम और न कोई और चीज। सिर्फ एक सफेद खच्चर, चन्द हथियार और कुछ जमीन छोड़ी, जिसको आप वक्फ (अल्लाह की राह में वसीयत) कर चुके थे।

फायदे : हदीस में जिन चीजों का जिक्र है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी जिन्दगीयों में ही उन्हें अल्लाह की राह में दे दिया था। अलबत्ता लोगों को इसकी इत्लाअ वफात के वक्त हुई थी। (औनुलबारी, 3/417)

١١٩٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سُئِلَ: هَلْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَوْصَى؟ فَقَالَ: لاَ، فَقِيلَ: كَيْفَ كُتِبَ عَلَى النَّاسِ الْوَصِيَّةُ، أَوْ أُمِرُوا بِالْوَصِيَّةِ؟ قَالَ: أَوْصَى بِكِتَابِ ٱللهِ. [رواه البخاري: ٢٧٤٠]

1196 : अब्दुल्लाह बिन अबी औफा रजि. से रिवायत है, उनसे दरयाफ्त किया गया कि क्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई वसीयत फरमायी थी। उन्होंने कहा, नहीं! फिर उनसे कहा गया कि फिर लोगों पर वसीयत कैसे फर्ज हुई या उनको वसीयत का हुक्म कैसे दिया गया? उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किताबुल्लाह पर अमल करने की वसीयत फरमायी थी।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अमरे खिलाफत या माली मामलात के मुताल्लिक कोई वसीयत नहीं फरमायी। इसके अलावा आपने वफात के वक्त वसीयत की थी कि जजीरा अरब से यहुदियों को निकाल देना और नुमाईन्दा हजरात की इज्जत करना वगैरह। (औनुलबारी, 3/417)

बाब 2 : मरते वक्त सदका करना।

٢ - باب: الصَّدَقَةُ عِنْدَ المَوْتِ

1197 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया कि एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि कौनसा सदका बेहतर है? आपने फरमाया कि सेहत की हालत में जबकि तुम्हें माल की इच्छा, दौलतमन्दी की आरजू और गरीबी का डर हो, उस वक्त सदका दो और सदका देने में देर न करो कि जब हलक में दम आ जाये तो कहो, फलां को यह देना और फलां को इतना देना। क्योंकि उस वक्त तो वो माल फलां वारिस का हो ही चुका है।

١١٩٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَيُّ الصَّدَقَةِ أَفْضَلُ؟ قالَ: (أَنْ تَصَدَّقَ وَأَنْتَ صَحِيحٌ حَرِيصٌ، تَأْمُلُ الْغِنَى، وَتَخْشَى الْفَقْرَ، وَلاَ تُمْهِلْ، حَتَّى إِذَا بَلَغَتِ الحُلْقُومَ، قُلْتَ: لِفُلاَنٍ كَذَا، وَلِفُلاَنٍ كَذَا، وَقَدْ كانَ لِفُلاَنٍ). [رواه البخاري: ٢٧٤٨]

फायदे : अकसर मालदार लोग, माली मामलात में जिन्दगी और मौत के वक्त अल्लाह की नाफरमानी करने का अरतकाब करते हैं। यानी जिन्दगी में कंजूसी से काम लेते हैं और मौत के वक्त नाजाइज वसीयत के जरीये अपने शरई वारिसों का हक मारते हैं।

(औनुलबारी, 3/420)

बाब 3 : क्या औरत और बच्चे करीबी रिश्तेदारों में शामिल हो सकते हैं।

٣ - باب: هَلْ يَدْخُلُ النِّسَاءُ وَالوَلَدُ فِي الأَقَارِبِ؟

1198 : अबू हुरैरा रजि.से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि जब अल्लाह तआला ने यह आयत नाजिल फरमायी "कि आप अपने करीबी

١١٩٨ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: قَامَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ حِينَ أَنْزَلَ ٱللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ﴾. قالَ: (يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ - أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا - ٱشْتَرُوا

أَنفُسَكُمْ، لاَ أُغْنِي عَنكُمْ مِنَ ٱللهِ شَيْئًا، يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ لاَ أُغْنِي عَنكُمْ مِنَ ٱللهِ شَيْئًا، يَا عَبَّاسَ بْنَ عَبْدِ المُطَّلِبِ لاَ أُغْنِي عَنْكَ مِنَ ٱللهِ شَيْئًا، وَيَا صَفِيَّةُ عَمَّةَ رَسُولِ ٱللهِ لاَ أُغْنِي عَنْكِ مِنَ ٱللهِ شَيْئًا، وَيَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ، سَلِينِي مَا شِئْتِ مِنْ مَالِي، لاَ أُغْنِي عَنْكِ مِنَ ٱللهِ شَيْئًا». [رواه البخاري: ٢٧٥٣]

रिश्तेदारों को अल्लाह के अजाब से खबरदार करें" तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खड़े होकर फरमाया, ऐ गिरोह कुरैश! या ऐसा ही कोई लफ्ज फरमाया। तुम अपनी जानें बचावो, क्योंकि मैं तुम्हें अल्लाह के अजाब से नहीं बचा सकता। ऐ औलाद अब्दे मनाफ! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकूंगा। ऐ अब्बास बिन अब्दुल मुतल्लिब रजि! मैं तुम्हें भी अल्लाह के अजाब से नहीं बचा सकता। ऐ सफिया रजि. जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी हैं, मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आऊंगा और ऐ फातिमा रजि. बिन्ते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! तुम मेरा माल जितना चाहो ले लो, लेकिन मैं अल्लाह के अजाब से तुम्हें नहीं बचा सकता।

फायदे : करीबी रिश्तेदारो में औरतें और बच्चे शामिल होते हैं। जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी फूफी हजरत सफिया रजि. और अपनी बच्ची हजरत फातिमा रजि. को शामिल फरमाया है। लेकिन वसीयत में वो रिश्तेदार शामिल होंगे जो उसके माल का शरई वारिस न हों।

٤ - باب: قَوْلُ الله تَعَالَى: ﴿وَٱبْتَلُوا ٱلْيَتَٰمَىٰ حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغُوا ٱلنِّكَاحَ فَإِنْ ءَانَسْتُم مِّنْهُمْ رُشْدًا فَٱدْفَعُوٓا إِلَيْهِمْ أَمْوَٰلَهُمْ﴾

बाब 4 : फरमाने इलाही : और तुम यतीमों का इम्तिहान लो ताकि वो निकाह की उमर को पहुंच जायें। अगर तुम उनमें होशियारी देखो तो उनके माल उनके हवाले कर दो।

١١٩٩ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ أَبَاهُ تَصَدَّقَ بِمَالٍ لَهُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَكَانَ يُقَالُ لَهُ ثَمْغٌ، وَكَانَ نَخْلًا، فَقَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ إِنِّي ٱسْتَفَدْتُ مالًا، وَهُوَ عِنْدِي نَفِيسٌ، فَأَرَدْتُ أَنْ أَتَصَدَّقَ بِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (تَصَدَّقْ بِأَصْلِهِ، لَا يُبَاعُ وَلَا يُوهَبُ وَلَا يُورَثُ، وَلٰكِنْ يُنْفَقُ ثَمَرُهُ). فَتَصَدَّقَ بِهِ عُمَرُ، فَصَدَقَتُهُ ذٰلِكَ فِي سَبِيلِ ٱللهِ، وَفِي الرِّقَابِ، وَالْمَسَاكِينِ، وَالضَّيْفِ، وَٱبْنِ السَّبِيلِ، وَلِذِي الْقُرْبَى، وَلَا جُنَاحَ عَلَى مَنْ وَلِيَهُ أَنْ يَأْكُلَ مِنْهُ بِالْمَعْرُوفِ، أَوْ يُؤْكِلَ صَدِيقَهُ غَيْرَ مُتَمَوِّلٍ بِهِ. [رواه البخاري: ٢٧٦٤]

1199 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि उनके वालिदगरामी उमर रजि. ने अपना एक अच्छा माल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में सदका कर दिया था और वो एक शमग नामी खजूरों का बाग था। उमर रजि. ने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैंने एक उम्दा माल हासिल किया है। मैं चाहता हूँ कि इसे सदका कर दूं। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम असल दरख्त इस शर्त पर सदका कर दो कि वो न फरोख्त किये जायें और न बतौर हिबा दिये जायें और न ही उनमें विरासत जारी हो। बल्कि उनका फल काम में लाया जाये। चूनांचे उमर रजि. ने इसी शर्त पर उसे वक़्फ कर दिया तो उनका यह सदका अल्लाह की राह में गुलामों की आजादी, मोहताजों की जरूरत, मेहमानों की जयाफत और करीबी रिश्तेदारों में ही खर्च किया जाता था। उसके जिम्मेदार को भी इजाजत थी कि इस पर कोई हर्ज नहीं कि दस्तूर के मुताबिक खुद खाये और अपने किसी दोस्त को खिलाये। बशर्ते कि वो माल जमा करने का इरादा न रखता हो।

फायदे : इमाम बुखारी ने इस हदीस से यह बात साबित की है कि यतीम का सरपरस्त उसके माल में मेहनत कर सकता है, तिजारत में लगा सकता है, और अपनी मेहनत का मुआवजा भी दस्तूर के मुताबिक ले सकता है।

५ - باب: قولُ الله تعالى: ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا﴾

बाब 5 : फरमाने इलाही : जो लोग यतीमों का माल जुल्म से खाते हैं, वो अपने पेटों में आग भरते हैं, उन्हें जल्द ही दोजख में डाला जायेगा।

١٢٠٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (ٱجْتَنِبُوا السَّبْعَ المُوبِقَاتِ). قَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، وَما هُنَّ؟ قَالَ: (الشِّرْكُ بِٱللهِ، والسِّحْرُ، وَقَتْلُ النَّفْسِ الَّتِي حَرَّمَ ٱللهُ إِلاَّ بِالحَقِّ، وَأَكْلُ الرِّبا، وَأَكْلُ مالِ اليَتِيمِ، والتَّوَلِّي يَوْمَ الزَّحْفِ، وَقَذْفُ المُحْصَنَاتِ المُؤْمِنَاتِ الغَافِلاتِ). [رواه البخاري: ٢٧٦٦]

1200 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि सात हलाकत चीजें और तबाह करने वाली बातों से परहेज करो। लोगों ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! वो क्या हैं? आपने फरमाया, अल्लाह के साथ शिर्क करना, जादू करना, उस जान को नाहक कत्ल करना जिसे अल्लाह ने हराम किया हो, सूद खाना, यतीमों का माल उठा लेना, मैदाने जंग से भाग जाना और पाकदामन और बे-खबर औरतों को बदकारी की तोहमद लगाना।

फायदे : इसके अलावा पड़ोसी की बीवी से जिना, वाल्देन की नाफरमानी और झूठी कसम भी हलाकत करने वाले गुनाहों से हैं। (औनुलबारी, 3/426)

बाब 6 : वक्फ के जिम्मेदार का खर्चा वक्फ जायदाद से पूरा किया जाये।

٦ - باب: نَفَقَةُ القَيِّمِ لِلوَقْفِ

1201 : अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मेरे वारिस न दीनार तकसीम करें और न दिरहम और जो कुछ मैं अपनी बीवियों के खर्च और जायदाद का अहतमाम करने वालों की तनख्वाह से फाजिल छोड़ूं, वो सब सदका है।

١٢٠١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (لا يَقْتَسِمُ وَرَثَتِي دِينَارًا ولا دِرْهَمًا، ما تَرَكْتُ بَعْدَ نَفَقَةِ نِسَائِي وَمَؤُونَةِ عامِلِي، فَهُوَ صَدَقَةٌ). [رواه البخاري: ٢٧٧٦]

फायदे : मालूम हुआ कि खुद वक्फे जायदाद का जिम्मेदार है और उसका इन्तेजाम करता है, वो सही तरीके से अपनी मेहनत का मुआवजा वसूल कर सकता है। (औनुलबारी, 3/427)

बाब 7 : अगर कोई जमीन या मशरूत तौर पर कुंवा वक्फ करे कि उसका डोल (बर्तन का नाम) भी दूसरे मुसलमानों की तरह उसमें पड़ा करेगा।

٧ - باب: إذا أَوْقَفَ أَرْضًا أو بِئْرًا أو اشْتَرَطَ لِنَفْسِهِ مِثْلَ دِلَاءِ المُسْلِمِينَ

1202 : उस्मान रजि. से रिवायत है कि जब वो घेर लिये गये तो कहने लगे, मैं तुम्हें अल्लाह की कसम देता हूँ और यह कसम सिर्फ असहाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देता हूँ, क्या तुम नहीं जानते कि

١٢٠٢ : عَنْ عُثْمانَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ حِينَ حُوصِرَ، أَشْرَفَ عَلَيْهِمْ، وقالَ: أَنْشُدُكُمُ ٱللهَ، وَلَا أَنْشُدُ إِلَّا أَصْحابَ النَّبِيِّ ﷺ، أَلَسْتُمْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَنْ حَفَرَ رُومَةَ فَلَهُ الجَنَّةُ؟). فَحَفَرْتُهَا، أَلَسْتُمْ تَعْلَمُونَ أَنَّهُ قَالَ: (مَنْ جَهَّزَ جَيْشَ الْعُسْرَةِ فَلَهُ

الْجَنَّةُ؟). فَجَهَّزْتُهُ، قَالَ: فَصَدَّقُوهُ بِمَا قَالَ. [رواه البخاري: ٢٧٧٨]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था, जो आदमी रूमा का कुवां खोदे, उसको जन्नत मिलेगी तो मैंने उसको खोद दिया। क्या तुम नहीं जानते कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था जो आदमी जैश उसरह यानी गजवा-ए- तबूक का सामान कर दे वो जन्नती है। तो मैंने उसका सामान कर दिया। यह सुनकर सहाबा किराम रजि. ने उनकी तसदीक की।

फायदे : इमाम साहब ने इस उनवान से एक रिवायत की तरफ इशारा किया है जिसके अलफाज यह हैं, "कौन है जो रूमा कुंआ खरीदकर दे और उसमें दीगर मुसलमानों की तरफ अपना डोल भी डाले तो उस कुऐ से बढ़कर जन्नत में बदला मिलेगा। इमाम बुखारी ने इससे यह साबित किया है कि वक्फी जायदाद से वक्फ करने वाला खुद भी दीगर मुसलमानों की तरह फायदा उठा सकता है।

٨ - باب: قَوْلُ الله عَزَّ وَجَلَّ: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ شَهَٰدَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ ٱلْمَوْتُ حِينَ ٱلْوَصِيَّةِ ٱثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ ءَاخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ﴾

बाब 8 : इरशाद बारी तआला : मुसलमानो! जब तुममें से कोई मरने लगे तो वसीयत के वक्त तुममें से या तुम्हारे गैरों से दो इन्साफ वाले गवाह होने चाहिए।

١٢٠٣ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَرَجَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي سَهْمٍ مَعَ تَمِيمٍ ٱلدَّارِيِّ وَعَدِيِّ بْنِ بَدَّاءٍ، فَمَاتَ السَّهْمِيُّ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ بِأَرْضٍ لَيْسَ بِهَا مُسْلِمٌ، فَلَمَّا قَدِمَا بِتَرِكَتِهِ فَقَدُوا جَامًا مِنْ فِضَّةٍ

1203 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि कबिला बनी सहम का एक आदमी तमीमदारी और अदी बिन बद्दा के साथ बाहर गया तो वो सहमी ऐसी जमीन में फौत हुआ,

مُخَوَّصًا مِنْ ذَهَبٍ، فَأَحْلَفَهُمَا رَسُولُ اللهِ ﷺ، ثُمَّ وُجِدَ الجَامُ بِمَكَّةَ، فَقَالُوا: ٱبْتَعْنَاهُ مِنْ تَمِيمٍ وَعَدِيٍّ فَقَامَ رَجُلَانِ مِنْ أَوْلِيَاءِ السَّهْمِيِّ، فَحَلَفَا: لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا، وَإِنَّ الجَامَ لِصَاحِبِهِمْ، قَالَ: وَفِيهِمْ نَزَلَتْ هٰذِهِ الآيَةُ: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ شَهَٰدَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ ٱلْمَوْتُ﴾. [رواه البخاري: ٢٧٨٠]

जहां कोई मुसलमान न था, जब तमीमदारी और अदी उसकी जायदाद लाये तो उसमें से एक चांदी का जाम (बर्तन) गायब था, जिस पर सुनहरी नक्स थे। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन दोनों से कसम लिया, उसके बाद वो जाम मक्का में मिला और लोगों ने कहा कि हमने तमीम और अदी से खरीदा है तो दो आदमी मय्यत के अजीजों में से खड़े हुये और उन्होंने कसम उठायी कि हमारी शहादत उन दोनों की शहादत के मुकाबले में ज्यादा वजनी है और हम गवाही देते हैं कि यह जाम हमारे अजीज का है। इब्ने अब्बास रजि. कहते हैं कि यह आयत उन्हीं के हक में नाजिल हुई। मुसलमानों! वसीयत के वक्त तुम पर गवाही लाजिम है। जबकि तुममें से कोई मौत के करीब हो।" (मायदा 106)

फायदे : सफर के दौरान वसीयत के मौके पर जबकि अहले इस्लाम इन्साफ वाले गवाह न मिल सकें तो ऐसे हालात में कुफ्फार की गवाही पर ऐतबार किया जा सकता है। आम हालात में गवाही के लिए इस्लाम और अदालत शर्त है। (औनुलबारी, 3/433)



किताबुल जिहाद

जिहाद और जंग के हालात के बयान में

١ - باب: فَضلُ الجِهادِ وَالسِّيرِ

बाब 1. जिहाद की फजीलत।

١٢٠٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: جاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَقالَ: دُلَّنِي عَلَى عَمَلٍ يَعْدِلُ الجِهادَ، قالَ: (لاَ أَجِدُهُ)، قالَ: (هَلْ تَسْتَطِيعُ إِذَا خَرَجَ المُجاهِدُ أَنْ تَدْخُلَ مَسْجِدَكَ، فَتَقُومَ وَلاَ تَفْتُرَ، وَتَصُومَ وَلاَ تُفْطِرَ؟). قالَ: وَمَنْ يَسْتَطِيعُ ذٰلِكَ. [رواه البخاري: ٢٧٨٥]

1204 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि एक शख्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगा कि मुझे कोई ऐसा काम बतायें, जो सवाब में जिहाद के बराबर हो। आप ने फरमाया, मैं तो कोई ऐसा काम नहीं पाता। फिर आप ने फरमाया कि क्या तू ऐसा कर सकता है कि जब मुजाहिद जिहाद को निकले तो तू अपनी मस्जिद में जाकर नमाज पढ़ने खड़ा हो जाए और सुस्ती न करे और बराबर रोजे रखता जाये, इफ्तार न करे। उसने अर्ज किया, भला ऐसा कौन कर सकता है।

फायदे : इस रिवायत के आखिर में हजरत अबू हुरैरा रजि. का यह कौल भी है कि मुजाहिद का घोड़ा रस्सी में बन्धे हुए जब चलता है तो मुजाहिद के लिए (उसके हर कदम पर) नेकियां लिखी जाती हैं। इस हदीस से साबित होता है कि जिहाद सारे अच्छे कामों से अफजल है, लेकिन बाज रिवायत से मालूम होता है कि अल्लाह का जिक्र जिहाद से भी अफजल है, यह इसलिए कि जिहाद की गर्ज व मकसद अल्लाह के जिक्र को लागू करना है। (औनुलबारी, 3/435)

बाब 2 : सब लोगों में अफजल वह मौमिन है जो अल्लाह के रास्ते में अपनी जान और माल से जिहाद करे।

٢ - باب: أَفْضَلُ النَّاسِ مُؤمِنٌ مُجَاهِدٌ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ فِي سَبِيلِ الله

1205 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि एक बार अर्ज किया गया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! कौन आदमी सब लोगों में अफजल है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, वो मौमिन जो अपनी जान और माल से अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता है, सहाबा किराम रजि. ने अर्ज किया, उसके बाद कौन? आपने फरमाया, वो मौमिन जो किसी पहाड़ के दामन में रहता हो, अल्लाह की इबादत करता हो और लोगों को अपनी बुराई से महफूज रखता हो।

١٢٠٥ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قِيلَ يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَيُّ النَّاسِ أَفْضَلُ؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مُؤْمِنٌ يُجَاهِدُ فِي سَبِيلِ ٱللهِ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ). قَالُوا: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: (مُؤْمِنٌ فِي شِعْبٍ مِنَ الشِّعَابِ، يَتَّقِي ٱللهَ، وَيَدَعُ النَّاسَ مِنْ شَرِّهِ). [رواه البخاري: ٢٧٨٦]

फायदे : आजकल हदीस के इनकार करने वाले और दीन की मुखालफत करने वालों के ऐतराजात को जवाब देते हुए दीने इस्लाम पर आने वाले ऐतराजात को खत्म करना और सही काबिले ऐतमाद लिट्रेचर की छपाई और जगह जगह लोंगो तक पहुंचाना भी जिहाद है, क्योंकि ऐसा करने से नजरियाती हुदूद की हिफाजत होती है।

1206 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना है कि जो आदमी अल्लाह की राह में जिहाद करता है और अल्लाह खूब जानता है कि कौन उसकी राह में

١٢٠٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (مَثَلُ الْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ ٱللهِ، وَٱللهُ أَعْلَمُ بِمَنْ يُجَاهِدُ فِي سَبِيلِهِ، كَمَثَلِ الصَّائِمِ الْقَائِمِ، وَتَوَكَّلَ ٱللهُ لِلْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِهِ بِأَنْ يَتَوَفَّاهُ: أَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ، أَوْ يُرْجِعَهُ

سَالِمًا مَعَ أَجْرٍ أَوْ غَنِيمَةٍ). [رواه البخاري: ٢٧٨٧]

जिहाद करता है? उसकी मिसाल उस शख्स की सी है जो दिन को रोजा रखता हो और रात को तहज्जुद पढ़ता हो और अल्लाह तआला ने अल्लाह की राह में जिहाद करने वालों के लिए यह जिम्मा लिया है कि उसको जब मौत देगा तो उसे जन्नत में दाखिल करेगा, वरना सलामती के साथ सवाब और माले गनीमत देकर उसको घर लौटायेगा।

फायदे : असल कद्रो कीमत तो इख्लास और सच्ची नियत की है, क्योंकि उसके बगैर जिहाद बेसूद बल्कि शहीद हो जाना बर्बादी का सबब होगी। अगर इख्लास है तो जान निकलते ही बिला हिसाब व अजाब जन्नत में पहुंचेगा, जैसाकि हदीस में है कि शहीद की रूह सब्ज रंग के परिन्दे में डाल कर उसे जन्नत में छोड़ दिया जाता है।

---

٣ - باب: دَرَجَاتُ الْمُجَاهِدِينَ فِي سَبِيلِ اللهِ

बाब 3 : अल्लाह की राह में जिहाद करने वालों के दर्जे।

١٢٠٧ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَنْ آمَنَ بِٱللهِ وَرَسُولِهِ، وَأَقامَ الصَّلاَةَ، وَصَامَ رَمَضَانَ، كانَ حَقًّا عَلَى ٱللهِ أَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ، جاهَدَ في سَبِيلِ ٱللهِ، أَوْ جَلَسَ في أَرْضِهِ الَّتِي وُلِدَ فِيهَا). فَقالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَفَلاَ نُبَشِّرُ النَّاسَ؟ قَالَ: (إِنَّ فِي الْجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ، أَعَدَّهَا ٱللهُ لِلْمُجَاهِدِينَ فِي سَبِيلِ ٱللهِ، ما بَيْنَ الدَّرَجَتَيْنِ كَما بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، فَإِذَا سَأَلْتُمُ ٱللهَ فَاسْأَلُوهُ الْفِرْدَوْسَ، فَإِنَّهُ أَوْسَطُ الْجَنَّةِ، وَأَعْلَى الْجَنَّةِ - أُرَاهُ قَالَ: - وَفَوْقَهُ عَرْشُ الرَّحْمٰنِ، وَمِنْهُ تَفَجَّرُ أَنْهَارُ الْجَنَّةِ). [رواه البخاري: ٢٧٩٠]

1207. अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाये, नमाज अदा करे और रोजे रखे तो अल्लाह के जिम्मे यह वादा है कि वो उसको जन्नत में दाखिल करेगा। चाहे वो अल्लाह की राह में जिहाद करे या जहां पैदा हुआ हो, वहीं ही बैठा रहे। सहाबा रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! तो

फिर हम लोगों को खुशखबरी न सुनाये? आपने फरमाया, जन्नत में सौ दर्जे हैं, जो अल्लाह तआला ने अपने रास्ते में जिहाद करने वालों के लिए तैयार किये हैं और हर दो दर्जो के बीच इस कद्र फासला है, जिस कद्र आसमान और जमीन के बीच है। लिहाजा तुम जब अल्लाह से दुआ मांगो तो उससे फिरदोश मांगो, क्योंकि वो जन्नत का अफजल और बेहतरीन हिस्सा है। रावी का ख्याल है कि आपने इसके बाद फरमाया, इसके ऊपर रहमान का अर्श है और वहीं से जन्नत की नहरें फूटती हैं।

फायदे : मतलब यह है कि अगर किसी को जिहाद नसीब नहीं, लेकिन दूसरे काम करने में कौताही नहीं करता और उसी हालत में मौत आ जाती है तो वो अल्लाह के यहां नैमतों भरी जन्नत का हकदार है, बल्कि जन्नते फिरदोश मांगने की तलकीन से तो यह भी इशारा मिलता है कि साफ नियत और दीगर अच्छे आमाल की वजह से गैर मुजाहिद भी मुजाहिद के दर्जे को हासिल कर सकता है। (औनुलबारी, 3/443)

٤ - باب: الغَدْوَةُ وَالرَّوْحَةُ فِي سَبِيلِ اللهِ، وَقَابُ قَوسِ أَحَدِكُمْ فِي الجَنَّةِ

बाब 4 : अल्लाह की राह में सुबह और शाम चलने और जन्नत में एक कमान बराबर जगह की फजीलत।

١٢٠٨ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَغَدْوَةٌ فِي سَبِيلِ اللهِ أَوْ رَوْحَةٌ، خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا). [رواه البخاري: ٢٧٩٢]

1208 : अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अल्लाह की राह में सुबह और शाम चलना तमाम दुनिया और उसके तमाम साजो सामान से बेहतर है।

फायदे : कुछ लोग इस दुनिया में अपनी/मअयार जिन्दगी को ऊँचा करने के लिए जिहाद में हिस्सा नहीं लेते। उन्हें बताया जा रहा है कि दुनिया के हसूल के लिए जब जिहाद को नजर अन्दाज किया जा रहा

है, उसमें सिर्फ सुबह और शाम की समुलियत तमाम दुनिया और उसके सारे साजो सामान से बेहतर है। (औनुलबारी, 3/444)

١٢٠٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَقَابُ قَوْسٍ فِي ٱلْجَنَّةِ خَيْرٌ مِمَّا تَطْلُعُ عَلَيْهِ ٱلشَّمْسُ وَتَغْرُبُ)، وَقَالَ: (لَغَدْوَةٌ أَوْ رَوْحَةٌ فِي سَبِيلِ ٱللهِ خَيْرٌ مِمَّا تَطْلُعُ عَلَيْهِ ٱلشَّمْسُ وَتَغْرُبُ). [رواه البخاري: ٢٧٩٣]

1209 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि जन्नत में एक कमान बराबर जगह उन सब चीजों से बेहतर है, जिस पर सूरज उगना और छुपना होता है और आपने यह भी फरमाया कि अल्लाह की राह में सुबह और शाम चलना उन सब चीजों से बढ़कर है, जिन पर सूरज निकलता और डूबता है।

٥ - باب: الحُورُ العِينُ

बाब 5 : खूबसूरत बड़ी आंख वाली हूरों (जन्नती औरतों) का बयान।

١٢١٠ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَوْ أَنَّ ٱمْرَأَةً مِنْ أَهْلِ ٱلْجَنَّةِ ٱطَّلَعَتْ إِلَى أَهْلِ ٱلأَرْضِ لأَضَاءَتْ مَا بَيْنَهُمَا، وَلَمَلأَتْهُ رِيحًا، وَلَنَصِيفُهَا عَلَى رَأْسِهَا خَيْرٌ مِنَ ٱلدُّنْيَا وَمَا فِيهَا). [رواه البخاري: ٢٧٩٦]

1210 : अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि अगर अहले जन्नत में से कोई औरत अहले जमीन की तरफ रूख करे तो आसमान और जमीन की बीच वाली फिजां रोशन हो जाये और खुशबू से महक जाये। बेशक वो दुपट्टा जो उसके सर पर है, दुनिया व जो कुछ दुनिया में है, उससे बेहतर है।

फायदे : इमाम बुखारी ने इसके पहले हदीस में शहीद की दुनिया में दोबारा जाने की आरजू (इच्छा) जिक्र की थी, उस हदीस में वजह बयान की है कि उसके ख्यालात से बढ़कर, उसे अल्लाह के यहां

एजाज व इकराम (इज्जत) से नवाजा जायेगा। एक और हदीस में है कि शहीद की बेहतर हूरों से शादी कर दी जायेगी। (औनुलबारी, 3/447)

बाब 6 : जिसे अल्लाह की राह में चोट या निजा (बरछी) लगे।

٦ - باب: مَنْ يُنْكَبُ أَوْ يُطْعَنُ فِي سَبِيلِ اللهِ

1211 : अनस रजि से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कबीला बनी सुलेम के कुछ लोगों को जिनकी तादाद सत्तर थी, कबिला बनी आमीर की तरफ भेजा, जब लोग वहां पहुंचे तो मेरे मामू ने उनसे कहा कि मैं पहले जाता हूँ, अगर वो मुझे आमान (माफी) दे ताकि मैं उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पैगाम पहुचा दूँ, तो ठीक है वरना तुम मुझ से करीब रहना। चूनांचे वो आगे बढ़े और काफिरों ने उन्हें माफी दे दी। वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पैगाम उनको सुनाने लगे। इतने में उन्होंने अपने एक आदमी को इशारा किया और उसने उन्हें ऐसा निजा मारा कि आर-पार कर गया। उन्होंने कहा, अल्लाहु अकबर, रब काअबा की कसम! मैं अपनी मुराद को पहुंच गया। फिर वो उसके साथियों पर चल पड़े और उन्हें भी कत्ल कर दिया, सिर्फ एक लंगडा आदमी बचा जो पहाड़ पर चढ़ गया। फिर जिब्राईल अलैहि

١٢١١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ أَقْوَامًا مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ إِلَى بَنِي عامِرٍ فِي سَبْعِينَ، فَلَمَّا قَدِمُوا: قالَ لَهُمْ خالِي: أَتَقَدَّمُكُمْ، فَإِنْ أَمَّنُونِي حَتَّى أُبَلِّغَهُمْ عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَإِلَّا كُنْتُمْ مِنِّي قَرِيبًا، فَتَقَدَّمَ فَأَمَّنُوهُ، فَبَيْنَما يُحَدِّثُهُمْ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ إِذْ أَوْمَؤُوا إِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ فَطَعَنَهُ بِرُمْحٍ فَأَنْفَذَهُ، فَقالَ: ٱللهُ أَكْبَرُ، فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ، ثُمَّ مالُوا عَلَى بَقِيَّةِ أَصْحابِهِ فَقَتَلُوهُمْ إِلَّا رَجُلًا أَعْرَجَ صَعِدَ الْجَبَلَ.
فَأَخْبَرَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ النَّبِيَّ ﷺ: أَنَّهُمْ قَدْ لَقُوا رَبَّهُمْ، فَرَضِيَ عَنْهُمْ وَأَرْضَاهُمْ، فَكُنَّا نَقْرَأُ: أَنْ بَلِّغُوا قَوْمَنَا، أَنْ قَدْ لَقِينَا رَبَّنَا، فَرَضِيَ عَنَّا وَأَرْضَانَا، ثُمَّ نُسِخَ بَعْدُ، فَدَعَا عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ صَبَاحًا، عَلَى رِعْلٍ، وَذَكْوَانَ، وَبَنِي لِحْيَانَ، وَبَنِي عُصَيَّةَ، الَّذِينَ عَصَوُا ٱللهَ تَعالَى وَرَسُولَهُ ﷺ. [رواه البخاري: ٢٨٠١]

ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खबर दी कि वो तो अपने परवरदीगार से मिल चुके हैं, वो उनसे राजी है और वो सब उस पर राजी हैं। हम एक मुद्दत तक कुरआन में यह आयत पढ़ा करते थे।

"हमारी कौम को यह खबर पहुंचा दो कि हम अपने रब से मिल गये हैं और वो हम से खुश हुआ और हमें भी खुश कर दिया।"

इसके बाद उसका पढ़ना खत्म हो गया। फिर आपने चालिस रोज तक कबीला रेल, जकवान, बनी लेहयान और बनी उसैया पर जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाफरमानी की थी, बद-दुआ फरमाई।

फायदे : बुखारी की इस रिवायत में किसी रावी से वहम हुआ है, क्योंकि जिन कारियों को दीन की तबलीग के लिए भेजा गया था, वो कबीला बनू सुलेम से नहीं, बल्कि अनसार से थे और कबीला बनू सुलेम ने तो उनके साथ गद्दारी की थी, चूनांचे एक रिवायत में है, आपने कबीला बनू सुलेम पर बद-दुआ फरमाई। (औनुलबारी 3/448)

١٢١٢ : عَنْ جُنْدَبِ بْنِ سُفْيَانَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَانَ فِي بَعْضِ المَشَاهِدِ وَقَدْ دَمِيَتْ إِصْبَعُهُ، فَقَالَ: (هَلْ أَنْتِ إِلاَّ إِصْبَعٌ دَمِيتِ، وَفِي سَبِيلِ ٱللهِ ما لَقِيتِ). [رواه البخاري: ٢٨٠٢]

1212 : जुनदब बिन सुफियान रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी जिहाद में थे कि आपकी अंगूली जख्म की वजह से खून से लथपथ हो गई। इस पर आपने फरमाया, "तू एक अंगूली है जो खून से लथपथ हो गई है, जो मुसीबत तूने उठाई है, यह सब अल्लाह की राह में है।"

फायदे : कुछ इनकार करने वालों ने ऐतराज किया है कि यह शायराना कलाम है, हालांकि कुरआन करीम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक शायर होने का इनकार किया है तो उसका

जवाब यह है कि यह रज्जीया कलाम है जो बिला कसद व इरादा मौजून हो गया। इस पर शेअर की तारीफ फिट (सही) नहीं आती।

(औनुलबारी, 3/450)

बाब 7 : अल्लाह की राह में जख्मी होने की बड़ाई।

٧ - باب: مَنْ يُجْرَحُ فِي سَبِيلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ

1213 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कसम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है, कोई शख्स अल्लाह की राह में जख्मी न होगा और अल्लाह ही खूब जानता है कि उसकी राह में जख्मी कौन होता है। मगर वो कयामत के दिन उस हाल में आयेगा कि उसके जख्म से खून निकलता होगा, रंगत तो खून जैसी होगी, मगर उसकी खुशबू कस्तूरी की सी होगी।

١٢١٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لاَ يُكْلَمُ أَحَدٌ فِي سَبِيلِ ٱللهِ، وَٱللهُ أَعْلَمُ بِمَنْ يُكْلَمُ فِي سَبِيلِهِ، إِلاَّ جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَاللَّوْنُ لَوْنُ ٱلدَّمِ، وَالرِّيحُ رِيحُ الْمِسْكِ). [رواه البخاري: ٢٨٠٣]

फायदे : मालूम हुआ कि यह बरतरी और बुलन्द मुकाम उस आदमी को मिलेगा जो सिर्फ अल्लाह की खुशी और दीने इस्लाम की सरबुलन्दी के लिए लड़ता है। इसमें बड़ाई करना और फख्र का शक तक न हो। जो आदमी दीन की तालीम देते हुए जख्मी हो जाये, उसके लिए भी यही फजीलत है। (औनुलबारी, 3/451)

बाब 8 : फरमाने इलाही है :" मुसलमानों में कुछ लोग ऐसे हैं, जिन्होंने अल्लाह से जो वादा किया था, उसे पूरा कर दिखाया। अब कोई तो उनमें से अपना काम पूरा कर चुके और कोई मुन्तजीर हैं। अलगर्ज उन्होंने अपनी बात में कुछ तब्दीली नहीं की।"

٨ - باب: قَوْلُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُم مَّن قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُم مَّن يَنتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا﴾

1214 : अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मेरे चचा अनस बिन नजर रजि. किसी वजह से जंगे बदर में शरीक न हो सके। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! पहली जंग में जो आपने मुश्रिकों के खिलाफ लड़ी हैं, मैं उसमें नहीं था। खैर अगर अल्लाह अब मुझे मुश्रिकों के खिलाफ जंग का मौका दे तो वो खुद मुलाहिजा फरमा लेगा कि मैं क्या करता हूँ, चूनांचे उहूद के दिन जब कुछ मुसलमान भाग निकले तो उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह! मुसलमानों ने जो किया, उससे तो मैं उज्र पेश करता हूँ और अगर मुश्रिकों ने जो किया, उससे मैं बेजार हूँ। फिर जब वो आगे बढ़े तो साद बिन मुआज रजि. उनसे पहले मिले, उन्होंने कहा, ऐ साद रजि! नजर के परवरदीगार की कसम! जन्नत तो करीब है और मैं उहूद की उस जानिब से जन्नत की खुशबू पाता हूँ। साद रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जो मर्दानगी उसने दिखाई, मैं वैसी न दिखा सका। अनस बिन मालिक रजि. कहते हैं कि फिर हमने अपने चचा को मरा हुआ पाया

١٢١٤ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: غابَ عَمِّي أَنَسُ بْنُ النَّضْرِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنْ قِتالِ بَدْرٍ، فَقالَ: يا رَسُولَ ٱللهِ، غِبْتُ عَنْ أَوَّلِ قِتالٍ قاتَلْتَ المُشْرِكِينَ، لَئِنِ ٱللهُ أَشْهَدَني قِتالَ المُشْرِكِينَ لَيَرَيَنَّ ٱللهُ ما أَصْنَعُ. فَلَمَّا كانَ يَوْمُ أُحُدٍ، وَٱنْكَشَفَ المُسْلِمُونَ، قالَ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعْتَذِرُ إِلَيْكَ مِمَّا صَنَعَ هٰؤُلاَءِ، يَعْني أَصْحابَهُ، وَأَبْرَأُ إِلَيْكَ مِمَّا صَنَعَ هٰؤُلاَءِ - يَعْني المُشْرِكِينَ - ثُمَّ تَقَدَّمَ فَٱسْتَقْبَلَهُ سَعْدُ بْنُ مُعاذٍ، فَقالَ: يا سَعْدُ بْنَ مُعاذٍ الْجَنَّةَ وَرَبِّ النَّضْرِ، إِنِّي أَجِدُ رِيحَها مِنْ دُونِ أُحُدٍ، قالَ سَعْدٌ: فَما ٱسْتَطَعْتُ يا رَسُولَ ٱللهِ ما صَنَعَ. قالَ أَنَسٌ: فَوَجَدْنا بِهِ بِضْعًا وَثَمانِينَ: ضَرْبَةً بِالسَّيْفِ أَوْ طَعْنَةً بِرُمْحٍ أَوْ رَمْيَةً بِسَهْمٍ، وَوَجَدْناهُ قَدْ قُتِلَ، وَقَدْ مَثَّلَ بِهِ المُشْرِكُونَ، فَما عَرَفَهُ أَحَدٌ إِلَّا أُخْتُهُ بِبَنانِهِ. قالَ أَنَسٌ: كُنَّا نَرَى، أَوْ نَظُنُّ: أَنَّ هٰذِهِ الآيَةَ نَزَلَتْ فِيهِ وَفي أَشْباهِهِ: ﴿مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا۟ مَا عَـٰهَدُوا۟ ٱللَّهَ عَلَيْهِ﴾. إِلَى آخِرِ الآيَةِ.

وَقالَ: إِنَّ أُخْتَهُ، وَهِيَ الَّتي تُسَمَّى الرُّبَيِّعَ، كَسَرَتْ ثَنِيَّةَ ٱمْرَأَةٍ، فَأَمَرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِالْقِصاصِ، فَقالَ أَنَسٌ: يا رَسُولَ ٱللهِ، وَالَّذي

بَعَثَكَ بِالْحَقِّ، لاَ تُكْسَرُ ثَنِيَّتُهَا، فَرَضُوا بِالأَرْشِ وَتَرَكُوا الْقِصَاصَ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ مِنْ عِبَادِ ٱللهِ مَنْ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى ٱللهِ لأَبَرَّهُ).
[رواه البخاري: ٢٨٠٥، ٢٨٠٦]

और उसके जिस्म पर अस्सी से ज्यादा तलवार, निजा और तीर के जख्म लगे थे और मुश्रिकीन ने उनके हाथ पांव और नाक कान काट डाले थे। कोई भी उन्हें पहचान न सका। सिर्फ उसकी बहन ने उंगलियों के पूरों से उसकी पहचान की। अनस बिन मालिक रजि. कहते हैं, हम कहते थे कि यह आयत उनके और उन जैसे दूसरे मुसलमानों के हक में ही उतरी है। "मुसलमानों में कुछ लोग ऐसे हैं, जिन्होंने अल्लाह से जो वादा किया था, उसे पूरा कर दिखाया, आखिर आयत तक।"

अनस रजि. का बयान है कि उनकी बहन ने जिन का नाम रूबय्या था, एक औरत के सामने के दांत तोड़ दिये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बदले का हुक्म दिया। अनस बिन नजर रजि. ने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! कसम है उस अल्लाह की जिसने हक के साथ आपको नबी बनाया है। मेरी बहन के दांत नहीं तोड़े जायेंगे। चूनांचे समझौते पर राजी हो गये और उन्होंने बदला माफ कर दिया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह के बन्दों में से कुछ ऐसे भी हैं कि अगर वो अल्लाह के भरोसे पर कसम उठा लें तो अल्लाह उसे पूरा कर देता है।

फायदे : इस हदीस में हजरत अनस बिन नजर रजि. की ईमानी कुव्वत, अल्लाह पर भरोसा और यकीन और परहेजगारी का तजकिरा है कि उन्होंने अपने वादे का लिहाज करते हुए सर-धड़ की बाजी लगा दी।

(औनुलबारी, 3/455)

1215 : जैद बिन साबित रजि. से

١٢١٥ : عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ

اَللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: نَسَخْتُ الصُّحُفَ فِي الْمَصَاحِفِ، فَفَقَدْتُ آيَةً مِنْ سُورَةِ الأَحْزَابِ، كُنْتُ أَسْمَعُ رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ يَقْرَأُ بِهَا، فَلَمْ أَجِدْهَا إِلاَّ مَعَ خُزَيْمَةَ الأَنْصَارِيِّ الَّذِي جَعَلَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ شَهَادَتَهُ شَهَادَةَ رَجُلَيْنِ، وَهِيَ قَوْلُهُ: ﴿مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ﴾ [رواه البخاري: ٢٨٠٧]

रिवायत है, उन्होंने बयान किया कि मैं कुरआन मजीद को मुख्तलीफ पर्चों से नकल करके इक्ट्ठा किया करता था तो सूरह अहजाब की एक आयत मुझे न मिली, जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पढ़ते हुए सुना करता था, तलाश के बाद वो मुझे खुजैमा अनसारी रजि. के पास से मिली, जिनकी शहादत को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो मर्दों के बराबर करार दिया था, वो आयत यह थी, "मुसलमानों में ऐसे लोग भी हैं कि अल्लाह के साथ उन्होंने जो वादा किया था, उसे पूरा कर दिखाया।"

फायदे : हजरत जैद बिन साबित रजि. ने यह आयत बहुत सारे सहाबा किराम रजि. से सुनी थी, जिनमें हजरत उमर और हजरत उबे बिन कअब रजि. सबसे पहले हैं। अलबत्ता तहरीर शक्ल में सिर्फ खुजैमा अनसारी रजि. के पास से मिली। (औनुलबारी, 3/456)

٩ - باب: عَمَلٌ صَالِحٌ قَبْلَ الْقِتَالِ

बाब 9 : जंग से पहले कोई नेक काम करने का बयान।

١٢١٦ : عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَى النَّبِيَّ ﷺ رَجُلٌ مُقَنَّعٌ بِالْحَدِيدِ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللّٰهِ، أُقَاتِلُ وَأُسْلِمُ؟ قَالَ: (أَسْلِمْ ثُمَّ قَاتِلْ)، فَأَسْلَمَ ثُمَّ قَاتَلَ فَقُتِلَ، فَقَالَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ: (عَمِلَ قَلِيلًا وَأُجِرَ كَثِيرًا). [رواه البخاري: ٢٨٠٨]

1216 : बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक शख्स हथियारों से लैस होकर आया और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं जिहाद में जाऊँ या पहले इस्लाम कबूल करूं। आपने फरमाया, पहले इस्लाम कबूल करो।

फिर जिहाद करो। चूनांचे उसने ऐसा ही किया। फिर जिहाद में शहीद हो गया। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उसने काम तो थोड़ा किया है, लेकिन सवाब बहुत पाया।

फायदे : कुछ दफा मामूली सा काम अल्लाह के फजलो करम से बहुत सवाब का सबब बन जाता है। चूनांचे हजरत अबू हुरैरा लोगों से पूछा करते थे कि वो कौन है, जिसने एक भी नमाज नहीं पढ़ी, लेकिन जन्नत में पहुंच गया? फिर खुद ही जवाब देते कि वो हजरत अम्र बिन साबित रजि. हैं। (औनुलबारी, 3/457)

---

١٠ - باب: مَنْ أَتَاهُ سَهْمٌ غَرْبٌ فَقَتَلَهُ

बाब 10 : अगर कोई आदमी अचानक तीर लगने से मर जाये (तो वो शहीद या नहीं?)

١٢١٧ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ أُمَّ الرُّبَيِّعِ بِنْتَ الْبَرَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، وَهِيَ أُمُّ حارِثَةَ بْنِ سُرَاقَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، أَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَتْ: يَا نَبِيَّ ٱللهِ، أَلاَ تُحَدِّثُنِي عَنْ حارِثَةَ - وَكانَ قُتِلَ يَوْمَ بَدْرٍ، أَصَابَهُ سَهْمٌ غَرْبٌ - فَإِنْ كانَ فِي الْجَنَّةِ صَبَرْتُ، وَإِنْ كانَ غَيْرَ ذٰلِكَ، ٱجْتَهَدْتُ عَلَيْهِ فِي الْبُكَاءِ؟ قالَ: (يَا أُمَّ حارِثَةَ، إِنَّهَا جِنَانٌ فِي الْجَنَّةِ، وَإِنَّ ٱبْنَكِ أَصابَ الْفِرْدَوْسَ الأَعْلَى). [رواه البخاري: ٢٨٠٩]

1217 : अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि अम्मे रूबय्या रजि. जो बराअ की बेटी और हारिशा बिन सुराका रजि. की वालिदा हैं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाजिर होकर कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप मुझे हारिसा रजि. के बारे में बतायें और वो गजवा की जंग में अचानक तीर लगने से शहीद हो गये थे। अगर तो वो जन्नत में हैं तो मैं सब्र करूं, अगर कोई दूसरी बात है तो उस पर जी भरके रो लूं। आपने फरमाया, ऐ उम्मे हारिसा रजि. जन्नत में तो दर्जा-ब-दर्जा कई बाग हैं और तेरा बेटा फिरदोश-ए-आला में है।

फायदे : उम्मे हारिसा रजि. ने यह ख्याल किया कि मेरा बेटा दुश्मन के हाथों शहीद नहीं हुवा, शायद उसे जन्नत न मिले। जब उन्हें पता चला कि मेरा बेटा फिरदोश आला में है तो हंसती मुस्कराहती हुई वापिस हुई और कहने लगी हारिसा, तुझे मुबारक हो, हारिसा तेरे क्या ही कहने रजि.। (औनुलबारी, 3/459)

वाजेह रहे कि उस खातून का नाम उम्मे रूबय्या बिन्ते बराअ की बजाये हजरत रूबय्या बिन्ते नजर है जो हजरत अनस रजि. की फूफी हैं, जिन्होंने अपने शहीद भाई को उंगली के पूरों से शिनाख्त किया था। (फतहुलबारी 2/26)

बाब 11: अल्लाह के दीन की सरबुलन्दी के लिए लड़ने की फजीलत।

١١ - باب: مَنْ قَاتَلَ لِتَكُونَ كَلِمَةُ اللهِ هِيَ الْعُلْيَا

1218 : अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि एक शख्स नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगा, कोई तो गनीमत के लिए लड़ता है और कोई शोहरत के लिए जिहाद करता है। जबकि कोई शख्स जाति बहादुरी दिखाने के लिए जंग के मैदान में कूद पड़ता है। तो अल्लाह की राह में मुजाहिद कौन है? आपने फरमाया, जो शख्स अल्लाह के दीन की सरबुलन्दी के लिए लड़े, वही अल्लाह की राह में मुजाहिद है।

١٢١٨ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: الرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِلْمَغْنَمِ، وَالرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِلذِّكْرِ، وَالرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِيُرَى مَكَانُهُ، فَمَنْ فِي سَبِيلِ اللهِ؟ قَالَ: (مَنْ قَاتَلَ لِتَكُونَ كَلِمَةُ اللهِ هِيَ الْعُلْيَا، فَهُوَ فِي سَبِيلِ اللهِ).
[رواه البخاري: ٢٨١٠]

फायदे : मालूम हुआ कि जंग के वक्त अल्लाह के दीन को सरबुलन्दी करने की नियत हो लूट की चाहत, शोहरत की तलब और इज्जत और बहादुरी का इजहार मकसूद न हो, क्योंकि ऐसा करने से एक बेहतरीन काम के बेकार होने का अन्देशा है। (औनुलबारी, 3/460)

बाब 12 : लड़ाई और धूल मिट्टी लगने के बाद गुस्ल करना।

١٢ - باب: الْغَسْلِ بَعْدَ الحَرْبِ وَالغُبَارِ

1219 : आइशा रजि. से रिवायत है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब गजवा खनदक से लौटे तो आपने हथियार उतारे और गुस्ल फरमाया। उस वक्त जिब्राईल अलैहि. आपके पास आये और उनका सर धूल-मिट्टी से भरा हुआ था। उन्होंने कहा आपने तो हथियार उतार दिये हैं, लेकिन मैंने अभी नहीं उतारे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम्हारा फिर कहां का प्रोग्राम है? जिब्राईल अलैहि. ने फरमाया कि उस तरफ उन्होंने बनी कुरैजा की तरफ इशारा किया। आइशा रजि. का बयान है कि उसी वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रवाना हो गये।

١٢١٩ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ لَمَّا رَجَعَ يَوْمَ الخَنْدَقِ، وَوَضَعَ السِّلاحَ وَٱغْتَسَلَ، فَأَتاهُ جِبْرِيلُ وَقَدْ عَصَبَ رَأْسَهُ الْغُبَارُ، فَقالَ: وَضَعْتَ السِّلاحَ؟ فَوَٱللهِ ما وَضَعْتُهُ. فَقالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (فَأَيْنَ؟). قالَ: هَا هُنَا، وَأَوْمَأَ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةَ. قالَتْ: فَخَرَجَ إِلَيْهِمْ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٢٨١٣]

फायदे : बनू कुरैजा यहूदियों का एक कबिला था, जिनसे मदीने पर हमला होने की सूरत में मिलजुल कर मुकाबला करने का वादा किया गया था। लेकिन उन्होंने ऐन मौके पर वादाखिलाफी करके दगाबाजी का सबूत दिया। इसलिए अल्लाह के हुक्म से उन्हें कत्ल कर दिया गया।

बाब 13 : कोई काफिर किसी मुसलमान को शहीद करके खुद मुसलमान हो जाये, फिर इस्लाम पर कारबन्द रहते हुए अल्लाह की राह में मारा जाये तो उसकी क्या हैसियत है?

١٣ - باب: الكَافِرُ يَقْتُلُ المُسْلِمَ ثُمَّ يُسْلِمُ فَيُسَدِّدُ بَعْدُ وَيُقْتَلُ

١٢٢٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (يَضْحَكُ ٱللهُ إِلَى رَجُلَيْنِ، يَقْتُلُ أَحَدُهُمَا الآخَرَ، يَدْخُلاَنِ الجَنَّةَ: يُقَاتِلُ هٰذَا فِي سَبِيلِ ٱللهِ فَيُقْتَلُ، ثُمَّ يَتُوبُ ٱللهُ عَلَى القَاتِلِ فَيُسْتَشْهَدُ). [رواه البخاري: ٢٨٢٦]

1220: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला उन दो आदमियों के हाल पर ताज्जुब करते हैं कि एक ने दूसरे को कत्ल किया होगा। फिर दोनों जन्नत में भी चले जायेंगे। पहला इसलिए कि उसने अल्लाह की राह में जिहाद किया और मारा गया और कातिल इसलिए कि अल्लाह ने उसे तौबा की तौफीक दी। वो मुसलमान होकर अल्लाह की राह में शहीद हुआ।

फायदे: मुसनद अहमद की रिवायत में मजीद वजाहत कि एक काफिर होगा जो दूसरे मुसलमान को शहीद करेगा, फिर वो मुसलमान होकर मैदाने कारजार में कूद पड़ेगा और अल्लाह की राह में जान का नजराना देकर जन्नत में पहुंच जायेगा। (औनुलबारी 3/464)

١٢٢١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ وَهُوَ بِخَيْبَرَ بَعْدَ مَا ٱفْتَتَحُوهَا، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَسْهِمْ لِي، فَقَالَ بَعْضُ بَنِي سَعِيدِ بْنِ العَاصِ: لاَ تُسْهِمْ لَهُ يَا رَسُولَ ٱللهِ، فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: هٰذَا قَاتِلُ ٱبْنِ قَوْقَلٍ، فَقَالَ ٱبْنُ سَعِيدِ بْنِ العَاصِ: وَاعَجَبًا لِوَبْرٍ، تَدَلَّى عَلَيْنَا مِنْ قَدُومِ ضَأْنٍ، يَنْعِي عَلَيَّ قَتْلَ رَجُلٍ مُسْلِمٍ أَكْرَمَهُ ٱللهُ عَلَى يَدَيَّ، وَلَمْ يُهِنِّي عَلَى يَدَيْهِ. [رواه البخاري: ٢٨٢٧]

1221: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाजिर हुआ और आप उस वक्त खैबर में थे। यह फतह खैबर का जिक्र है। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! माले गनीमत में मेरा भी हिस्सा लगायें। इतने में सईद बिन आस रजि. का एक बेटा कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! इसका हिस्सा न लगायें, इस पर अबू हुरैरा रजि. ने जवाब में कहा कि यह तो इब्ने कव्वकल का कातिल है, तब सईद बिन आस

रजि. के बेटे ने कहा, इस जानवर पर ताज्जुब है। जो अभी पहाड़ की चोटी से उतरा है और मुझ पर एक मुसलमान के कत्ल का ऐब लगाता है। अल्लाह तआला ने मेरी वजह से उसको इज्जत (शहादत) दी और मुझ को उसके हाथों जलील नहीं किया।

फायदे : हजरत अबान बिन सईद रजि. ने गजवा उहूद में हजरत नोमान बिन कव्वकल को शहीद किया था, फिर वो हुदैबिया के बाद खैबर से पहले मुसलमान हुए। उन्होंने हजरत अबू हुरैरा रजि. के जवाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौजूदगी में जो बात कही, उससे उनवान की वजाहत हो गई कि इस्लाम लाने के बाद उस पर कारबन्दी रहना जन्नत में दाखिल होने का जरीया है। चाहे शहादत मिले या न मिले। (औनुलबारी, 3/344)

١٤ - باب: مَنِ اخْتَارَ الْغَزْوَ عَلَى الصَّوْمِ

बाब 14 : जिसने जिहाद को (निफ्ली) रोजे पर फजीलत दी।

١٢٢٢ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ أَبُو طَلْحَةَ لاَ يَصُومُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ مِنْ أَجْلِ الْغَزْوِ، فَلَمَّا قُبِضَ النَّبِيُّ ﷺ لَمْ أَرَهُ مُفْطِرًا إِلاَّ يَوْمَ فِطْرٍ أَوْ أَضْحى. [رواه البخاري: ٢٨٢٨]

1222: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अबू तलहा रजि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में जिहाद की वजह से निफ्ली रोजे नहीं रखा करते थे, लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद मैंने उनको दोनों ईदों के अलावा कभी रोजा छोड़ते नहीं देखा।

फायदे : हजरत अबू तलहा रजि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में निफ्ली रोजे इसलिए नहीं रखते थे कि शायद कमजोर हो जाऊँ और जंग में शामिल न हो सकूं। आखिरकार एक समन्दरी सफर में शहीद हुए। शहादत के सात दिन बाद दफन किया गया, लेकिन जिस्म में कोई तब्दीली दिखाई न दी। (औनुलबारी, 3/427)

बाब 15: कत्ल के अलावा शहादत की (और भी) सात सूरते हैं।

١٥ - باب: الشَّهَادَةُ سَبْعٌ سِوَى القَتْلِ

1223: अनस रजि. से ही रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, तआवुन (बीमारी) मुसलमान के लिए शहादत का जरीया है।

١٢٢٣ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (الطَّاعُونُ شَهَادَةٌ لِكُلِّ مُسْلِمٍ). [رواه البخاري: ٢٨٣٠]

फायदे: इमाम बुखारी ने तआवुन के अलावा बाकी सूरतों की निशानदेही नहीं फरमाई। दूसरी अहादीस की रोशनी में उनकी तफसील यह है कि पेट की बीमारी, पानी में डूबना, ऊँचाई से गिरना, आग में जल जाना, पसली के दर्द से मौत का होना और जचगी के दौरान मौत होना। (औनुलबारी, 3/428)

बाब 16 : फरमाने इलाही : "उज्र वालों लोगों के अलावा वो मुसलमान जो जिहाद से बैठ रहे हैं और वो लोग जो अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करते हैं, बराबर नहीं हैं। (...गफुर्ररहिमा) तक।

١٦ - باب: قَوْلُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿لَّا يَسْتَوِى الْقَٰعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِى الضَّرَرِ﴾ . . . إِلَى قَوْلِهِ: ﴿غَفُورًا رَّحِيمًا﴾

1224: जैद बिन साबित रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे यह आयत लिखवाई "मुसलमान जो जिहाद से बैठ रहे हैं और जो अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करते हैं बराबर नहीं हो सकते।"

١٢٢٤ : عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ أَمْلَى عَلَيَّ: ﴿لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ﴾، فَجَاءَهُ ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ وَهُوَ يُمْلِيهَا عَلَيَّ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، لَوْ أَسْتَطِيعُ الْجِهَادَ لَجَاهَدْتُ، وَكَانَ

رَجُلًا أَعْمى، فَأَنْزَلَ ٱللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى عَلَى رَسُولِهِ ﷺ، وَفَخِذُهُ عَلَى فَخِذِي، فَثَقُلَتْ عَلَيَّ حَتَّى خِفْتُ أَنْ تَرُضَّ فَخِذِي، ثُمَّ سُرِّيَ عَنْهُ، فَأَنْزَلَ ٱللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿غَيْرُ أُوْلِي ٱلضَّرَرِ﴾. [رواه البخاري: ٢٨٣٥]

इतने में इब्ने उम्मे मकतूम रजि. आपके पास आये और आप उस वक्त मुझे यही आयत लिखवा रहे थे। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अगर मैं ताकत रखता तो जरूर जिहाद करता और वो आंखों से अंधे थे। उस वक्त अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वहीअ उतारना शुरू की और उस वक्त आपका जानू मेरी जानू पर था। वो एकदम भारी हो गया और मुझे अन्देश हुआ कि शायद टूट जाये। फिर जब वो हालत जाती रही तो अल्लाह ने नाजिल फरमाया, "मआजूरों के अलावा।"

फायदे : अल्लाह तआला ने इन आखरी अलफाज के जरीये जो लोग लंगड़े, अन्धे और अपाहिज और मआजूर (कमजोर) थे, उन्हें अलग करार दे दिया है। अगर यह लोग जंग में शरीक न हुए तो उनका दर्जा कम नहीं हो सकता, क्योंकि यह लोग जिहाद की ताकत नहीं रखते।

١٧ - باب: التَّحْرِيضُ عَلَى القِتَالِ

बाब 17: लोगों को जंग पर आमादा करने का बयान ।

١٢٢٥ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ إِلَى الخَنْدَقِ، فَإِذَا المُهَاجِرُونَ وَالأَنْصَارُ يَحْفِرُونَ فِي غَدَاةٍ بَارِدَةٍ، فَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ عَبِيدٌ يَعْمَلُونَ ذٰلِكَ لَهُمْ، فَلَمَّا رَأَى مَا بِهِمْ مِنَ النَّصَبِ وَالجُوعِ، قَالَ: (اللّٰهُمَّ إِنَّ العَيْشَ عَيْشُ الآخِرَهْ، فَاغْفِرْ لِلأَنْصَارِ وَالمُهَاجِرَهْ). فَقَالُوا مُجِيبِينَ لَهُ:
نَحْنُ الَّذِينَ بَايَعُوا مُحَمَّدَا
عَلَى الجِهَادِ مَا بَقِينَا أَبَدَا
[رواه البخاري: ٢٨٣٤]

1225: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब खन्दक की तरफ तशरीफ लेकर गये तो आपने देखा कि मुहाजरिन और अनसार सर्दी में सुबह सुबह उसे खोद रहे हैं। उनके पास गुलाम भी न थे जो यह काम करते। आपने उनकी हिम्मत

और भूख की हालत देख कर फरमाया, " ऐ अल्लाह! ऐश तो आखिरत ही की है, लिहाजा तू मुहाजिरीन और अनसार को बख्श दे।" इसके जवाब में मुहाजिरीन और अनसार ने कहाः " हम वो हैं जिन्होंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर बैअत की है, जिहाद के लिए जब तक हम जिन्दा हैं।"

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खन्दक खोदने में खुद हिस्सा लिया ताकि वो दूसरे सहाबा किराम रजि. के नक्शे कदम पर चलते हुए इस हक व बातिल में बिलकुल तैयार रहें।

(औनुलबारी, 3/473)

बाब 18 : खन्दक खोदने का बयान।

١٨ - باب: حَفْرُ الخَنْدَقِ

1226 : अनस रजि. से ही एक दूसरी रिवायत है कि मुहाजिरीन और अनसार मदीना के आसपास खन्दक खोद रहे थे और अपनी पीठ पर मिट्टी ढ़ो रहे थे और यह कहते थेः "हम वो हैं जिन्होंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर बैअत की है। इस्लाम पर जब तक हम जिन्दा हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जवाब में फरमाते थेः "ऐ अल्लाह भलाई तो आखिरत ही की है। लिहाजा मुहाजिरीन और अनसार को बरकत अता फरमा।"

١٢٢٦ : وَعَنْهُ في رِوايَةٍ أَنَّهُمْ كانوا يَقُولُونَ:
نَحْنُ الَّذِينَ بَايَعُوا مُحَمَّدَا
عَلَى الإِسْلامِ ما بَقِينَا أَبَدَا
وَالنَّبِيُّ ﷺ يُجِيبُهُمْ، وَيَقُولُ:
اللَّهُمَّ لاَ خَيْرَ إِلَّا خَيْرُ الآخِرَهْ.
فَبَارِكْ فِي الأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَهْ).
[رواه البخاري: ٢٨٣٥]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनसार और मुहाजिरीन के लिए मुख्तलिफ अल्फाज में बार बार यह दुआ फरमाई, मसलन ऐ अल्लाह! उन्हें इज्जत अता फरमा। (अलजिहाद : 4100) तू उनकी इस्लाह फरमा। (अलमुनाकिब 3795)

١٢٢٧ : عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَوْمَ الأَحْزَابِ يَنْقُلُ التُّرَابَ وَقَدْ وَارَى التُّرَابُ بَيَاضَ بَطْنِهِ، وَهُوَ يَقُولُ: (لَوْلاَ أَنْتَ مَا ٱهْتَدَيْنَا، وَلاَ تَصَدَّقْنَا وَلاَ صَلَّيْنَا، فَأَنْزِلَنْ سَكِينَةً عَلَيْنَا، وَثَبِّتِ الأَقْدَامَ إِنْ لاَقَيْنَا، إِنَّ الأُلَى قَدْ بَغَوْا عَلَيْنَا، إِذَا أَرَادُوا فِتْنَةً أَبَيْنَا). [رواه البخاري: ٢٨٣٧]

1227 : बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जंगे अहजाब के दिन मिट्टी उठाते देखा और मिट्टी ने आपके पेट का गौरा रंग छिपा लिया था आप यह फरमा रहे थे। " तू हिदायत गर न करता तो कहां मिलती निजात, कैसे पढ़ते हम नमाजें, कैसे देते हम जकात। अब उतार हम पर तसल्ली ऐ शेह आली सिफात, पांव जमा दे हमारे, दे लड़ाई में सिबात। बेसबब हम पर यह काफिर जुल्म से चढ़ आये हैं, जब वो बहकायें हम सुनते नहीं उनकी बात।"

फायदे : जंग से पहले लोगों को कत्ल व जिहाद पर आमादा करने के लिए उभारने वाले शेर पढ़ने में कोई हर्ज नहीं, जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस मौके पर हजरत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रजि. के मजकुरा शेर पढ़ते हैं। अगरचे इस किस्म के शेर गजवा खैबर के मौके पर हजरत आमिर बिन अकवा रजि. से भी मनकूल हैं।

١٩ - باب: مَنْ حَبَسَهُ العُذْرُ عَنِ الْغَزْوِ

बाब 19 : जिस शख्स को जिहाद से कोई उज्र (वजह) रोक ले।

١٢٢٨ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ فِي غَزَاةٍ، فَقَالَ: (إِنَّ أَقْوَامًا بِالْمَدِينَةِ خَلْفَنَا، مَا سَلَكْنَا شِعْبًا وَلاَ وَادِيًا إِلاَّ وَهُمْ مَعَنَا فِيهِ، حَبَسَهُمُ الْعُذْرُ). [رواه البخاري: ٢٨٣٩]

1228 : अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक लड़ाई में शरीक थे तो आपने फरमाया, कुछ लोग मदीना में हमारे पीछे रह गये हैं, मगर जिस घाटी या मैदान में जायेंगे वो (सवाब में) जरूर हमारे साथ होगें, क्योंकि वो किसी उज्र की वजह से रूक गये हैं।

फायदे : मालूम हुआ कि अगर किसी मआकूल काम की बिना पर अच्छा काम न किया जा सके तो अल्लाह तआला उसकी अच्छी नियत की वजह से अच्छे काम का सवाब उसके आमाल नामें में लिख देता है। (औनुलबारी 3/476)

बाब 20 : जिहाद में रोजा रखने की फजीलत।

٢٠ - باب: فَضْلُ الصَّوْمِ فِي سَبِيلِ اللهِ

1229 : अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि जो आदमी अल्लाह की राह में एक दिन का भी रोजा रखेगा अल्लाह तआला उसके चेहरे को दोजख से सत्तर बरस की दूरी के बराबर दूर कर देता है।

١٢٢٩ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (مَنْ صَامَ يَوْمًا فِي سَبِيلِ ٱللهِ، بَعَّدَ ٱللهُ وَجْهَهُ عَنِ النَّارِ سَبْعِينَ خَرِيفًا). [رواه البخاري: ٢٨٤٠]

फायदे : अगर रोजा रखने से कमजोरी का अन्देशा हो तो ऐसे मुजाहिद के हक में रोजा न रखना अफजल है। लेकिन अगर रोजे रखने की आदत है और उससे किसी किस्म की कमजोरी का खतरा नहीं तो रोजा रखने में बड़ी फजीलत है। (औनुलबारी, 3/477)

बाब 21 : गाजी (जिहाद करने वाले) का सामान करने या उसके पीछे उसके घर की अच्छे अन्दाज से खबरगिरी करने वाले की फजीलत।

٢١ - باب: فَضْلُ مَنْ جَهَّزَ غَازِيًا أَوْ خَلَفَهُ بِخَيْرٍ

1230: जैद बिन खालिद रजि. से रिवायत हे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो शख्स अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले का सामान तैयार करे, वो ऐसा है जैसे उसने खुद

١٢٣٠ : عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَنْ جَهَّزَ غَازِيًا فِي سَبِيلِ ٱللهِ فَقَدْ غَزَا، وَمَنْ خَلَفَ غَازِيًا فِي سَبِيلِ ٱللهِ بِخَيْرٍ فَقَدْ غَزَا). [رواه البخاري: ٢٨٤٣]

जिहाद किया और जो आदमी अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले के पीछे उसके घर की अच्छी तरह निगरानी करता है तो उसने जैसे खुद ही जिहाद किया है।

फायदे : मतलब यह है कि जितना गाजी को सवाब मिलेगा, उतना ही मुकम्मिल तौर पर उसे तैयार करने वाले को अल्लाह तआला सवाब देगा। एक रिवायत में है कि जो गाजी के सर पर साये का बन्दोबस्त करता है, अल्लाह तआला कयामत के दिन अपने अर्श के साये तले उसे जगह देगा। (औनुलबारी, 3/479)

१٢٣١ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَكُنْ يَدْخُلُ بَيْتًا بِالمَدِينَةِ غَيْرَ بَيْتِ أُمِّ سُلَيْمٍ إِلاَّ عَلَى أَزْوَاجِهِ، فَقِيلَ لَهُ، فَقَالَ: (إِنِّي أَرْحَمُهَا، قُتِلَ أَخُوهَا مَعِي). [رواه البخاري: ٢٨٤٤]

1231 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना में अपनी बीवियों के अलावा किसी औरत के घर में आना जाना न करते थे। मगर उम्मे सुलेम रजि. के पास जाया करते। आपसे उसकी वजह पूछी गई तो आपने फरमाया कि मुझे उस पर तरस आता है, क्योंकि उसका भाई मेरे साथ शहीद हुआ था।

फायदे : हजरत उम्में सुलेम रजि. के भाई का नाम हिराम बिन मिलहान रजि. था, जिसे मुश्रिकीन ने मउना के कुऐ के पास शहीद कर दिया था। चूनांचे उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद रवाना किया था, इसलिए आपने उनकी शहादत को अपने हमराह शहीद होने से ताबीर फरमाया। (औनुलबारी, 3/481)

٢٢ - باب: التَّحَنُّطُ عِنْدَ القِتَالِ

बाब 22 : लड़ाई के वक्त खुश्बू लगाना।

١٢٣٢ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ أَتَى يَوْمَ الْيَمامَةِ ثَابِتَ بْنَ قَيْسٍ، وَقَدْ حَسَرَ عَنْ فَخِذَيْهِ وَهُوَ يَتَحَنَّطُ،

1232 : अनस रजि. से ही रिवायत है कि वो जंगे यमामा के वक्त साबित बिन कैस रजि. के पास आये तो वो अपनी

فَقَالَ: يَا عَمِّ، مَا يَحْبِسُكَ أَنْ لَا تَجِيءَ؟ قَالَ: الآنَ يَا ٱبْنَ أَخِي، وَجَعَلَ يَتَحَنَّطُ - يَعْنِي مِنَ الحَنُوطِ - ثُمَّ جَاءَ فَجَلَسَ، فَذَكَرَ فِي الحَدِيثِ ٱنْكِشَافًا مِنَ النَّاسِ، فَقَالَ: هَكَذَا عَنْ وُجُوهِنَا حَتَّى نُضَارِبَ القَوْمَ، مَا هَكَذَا كُنَّا نَفْعَلُ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، بِئْسَمَا عَوَّدْتُمْ أَقْرَانَكُمْ. [رواه البخاري: ٢٨٤٥]

दोनों राने खोलकर हनूत (खुश्बू) लगा रहे थे। अनस रजि. ने उनसे पूछा, चचा तुम जंग में क्यों नहीं आते? उन्होंने कहा, भतीजे! अभी आता हूँ और फिर खुश्बू लगाने लगे। आखिरकार (मुजाहिदीन की सफ में) आकर बैठ गये। उन्होंने लोगों के भागने का जिक्र किया, फिर इशारा किया कि हमारे सामने से हट जाओ ताकि हम दुश्मन से लड़ें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हमराह हम ऐसा न करते थे। तुमने अपने सामने वालों को बुरी आदत डाल दी है।

फायदे: एक रिवायत में है कि खतीबुल अनसार हजरत साबित बिन कैस रजि. कफन पहनकर मैदाने कारजार में कूद पड़े और इस कद्र बे-जिग्री से लड़े कि शहीद हो गये। (औनुलबारी, 3/483)

٢٣ - باب: فَضْلُ الطَّلِيعَةِ

बाब 23 : दुश्मन के हालात मालूम करने (जासूसी) की फजीलत।

١٢٣٣ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَنْ يَأْتِينِي بِخَبَرِ القَوْمِ؟). يَوْمَ الأَحْزَابِ، فَقَالَ الزُّبَيْرُ: أَنَا، ثُمَّ قَالَ: (مَنْ يَأْتِينِي بِخَبَرِ القَوْمِ؟). فَقَالَ الزُّبَيْرُ: أَنَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا، وَحَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ). [رواه البخاري: ٢٨٤٦]

1233 : जुबेर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जंगे अहजाब में फरमाया कि मेरे पास दुश्मन की खबर कौन लायेगा? जुबेर रजि. ने कहा, मैं लाऊंगा। आपने फिर फरमाया, मेरे पास दुश्मन की खबर कौन लायेगा? जुबेर रजि. गौया हुए मैं लाऊंगा। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हर नबी का एक हवारी (मुखलीस मददगार) होता है और मेरा हवारी जुबेर रजि. है।

फायदे : कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि हजरत हुजेफा बिन यमान रजि. को जासूसी के लिए भेजा गया था तो यह इस रिवायत के खिलाफ नहीं है, क्योंकि हजरत जुबैर रजि. बनू कुरैजा की खबर लाने के लिए हुक्म दिये गये थे। जबकि हजरत हुजैफा को कुफ्फार कुरैश के हालात मालूम करने के लिए भेजा गया था। (औनुलबारी, 3/484)

---

٢٤ - باب: الجِهادُ مَاضٍ مَعَ البَرِّ وَالفَاجِرِ

बाब 24 : इमाम आदिल हो या जालिम, उसकी देखरेख में जिहाद कयामत तक जारी रहेगा।

١٢٣٤ : عَنْ عُرْوَةَ البَارِقِيِّ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (الخَيْلُ مَعْقُودٌ فِي نَوَاصِيهَا الخَيْرُ إِلَى يَوْمِ القِيَامَةِ: الأَجْرُ وَالمَغْنَمُ). [رواه البخاري: ٢٨٥٢]

1234 : उरवाह बारकी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया घोड़ों की पेशानियों में कयामत तक खैर है, जिनकी वजह से सवाब भी मिलता है और गनीमत भी हासिल होती है।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खैर व बरकत को कयामत तक के लिए घोड़ों के साथ बयान फरमाया है, फिर इस बारे में अज्र व गनीमत का भी हवाला दिया है जो जिहाद का नतीजा हैं। इससे मालूम हुआ कि जिहाद कयामत तक जारी रहेगा।

(औनुलबारी, 3/487)

١٢٣٥ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (البَرَكَةُ فِي نَوَاصِي الخَيْلِ). [رواه البخاري: ٢٨٥١]

1235 : अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि खैर व बरकत घोड़ों की पेशानियों में है।

फायदे : जिहाद के लिए जो घोड़ा रखा जाये, उसमें वाकई बड़ी खैर व बरकत है, दुनिया में भी अल्लाह तआला उसे अपने फजलो करम से नवाजेगा, कयामत के दिन तो उसके गोबर व पेशाब तक को आमाल नामे में रख दिया जायेगा। (औनुलबारी, 3/487)

बाब 25 : फरमाने इलाही : "तैयार बन्द घोड़ों से (सामान जिहाद मुहय्या करो)" के पेशे नजर घोड़ा रखने की फजीलत।

٢٥ - باب: مَنِ احْتَبَسَ فَرَسًا لِقَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَمِن رِّبَاطِ الْخَيْلِ﴾

1236 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी ईमान की वजह से अल्लाह के वादे को सच्चा समझते हुए जिहाद के लिए घोड़ा रखे तो उसका खाना पीना और लीद व पेशाब कयामत के दिन आमाल के तराजू में रखे जायेंगे।

١٢٣٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَنِ احْتَبَسَ فَرَسًا فِي سَبِيلِ اللهِ، إِيمَانًا بِاللهِ، وَتَصْدِيقًا بِوَعْدِهِ، فَإِنَّ شِبَعَهُ وَرِيَّهُ وَرَوْثَهُ وَبَوْلَهُ فِي مِيزَانِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ). [رواه البخاري: ٢٨٥٣]

फायदे : एक रिवायत में है कि जो आदमी अल्लाह की राह में जिहाद करने के लिए घोड़ा रखता है, फिर अपने हाथ से उसकी खुराक का बन्दोबस्त करता है तो अल्लाह तआला हर दाने के बदले उसके आमाल नामे में नेकी लिख देता है। (औनुलबारी, 3/489)

बाब 26 : घोड़े और गधे का नाम रखना (कैसा है?)

٢٦ - باب: اسْمُ الفَرَسِ وَالحِمَارِ

1237 : सहल रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि हमारे बाग में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक घोड़ा रहता था, जिसका नाम लुहेफ या लुखेफ था।

١٢٣٧ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فِي حَائِطِنَا فَرَسٌ يُقَالُ لَهُ اللُّحَيْفُ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: اللُّخَيْفُ. [رواه البخاري: ٢٨٥٥]

फायदे : मालूम हुआ कि जानवरों के नाम रखने में कोई हर्ज नहीं है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चौबीस घोड़े थे, हर एक का अलग अलग नाम था। एक खच्चर था दुलदुल और ऊँटनी का नाम कसवा और दूसरी का नाम अजबा था। (औनुलबारी, 3/492)

1238 : मुआज रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैं एक बार गधे पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे सवार था और उस गधे का नाम उफेर था। आपने फरमाया, ऐ मुआज रजि.! क्या तुम जानते हो कि अल्लाह का हक उसके बन्दों पर क्या है? फिर मुआज रजि. ने वो हदीस (105) बयान की जो पहले गुजर चुकी है।

١٢٣٨ : عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ رِدْفَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى حِمَارٍ يُقَالُ لَهُ عُفَيْرٌ، فَقَالَ: (يَا مُعَاذُ، وَهَلْ تَدْرِي مَا حَقُّ ٱللهِ عَلَى عِبَادِهِ) وَسَرَدَ الحَدِيثَ وَقَدْ تَقَدَّمَ (برقم: ١٠٥) [رواه البخاري: ٢٨٥٦ وانظر حديث رقم: ١٢٨]

1239 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि एक बार मदीना वालों को कुछ घबराहट हुई थी तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारा एक घोड़ा उधार लिया था, जिसे मनदुब कहा जाता था। आपने फरमाया हमने तो कोई डर की बात नहीं देखी। अलबत्ता हमने इस घोड़े को समन्दर की तरफ बहुत तेज चलने वाला पाया।

١٢٣٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ فَزَعٌ بِالمَدِينَةِ، فَاسْتَعَارَ النَّبِيُّ ﷺ فَرَسًا لَنَا يُقَالُ لَهُ مَنْدُوبٌ، فَقَالَ: (مَا رَأَيْنَا مِنْ فَزَعٍ، وَإِنْ وَجَدْنَاهُ لَبَحْرًا). [رواه البخاري: ٢٨٥٧]

बाब 27 : घोड़े का जो मनहूस होना बयान किया जाता है (उसकी क्या हकीकत है?)

٢٧ - باب: مَا يُذْكَرُ مِنْ شُؤْمِ الفَرَسِ

1240 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना है, तीन ही चीजें यानी घोड़े, औरत और घर में मनहुसियत (बदफाली) होती है।

١٢٤٠ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّمَا الشُّؤْمُ فِي ثَلاثَةٍ: فِي الْفَرَسِ، وَالمَرْأَةِ، وَٱلدَّارِ). [رواه البخاري: ٢٨٥٨]

फायदे : इमाम बुखारी ने मसला मनहुसियत को हल करने के लिए अजीब अन्दाज इख्तियार फरमाया है। जिससे उनकी जलालते कद्र और बहुत ज्यादा समझने वाले होने का अन्दाजा होता है। इस रिवायत में कलमा हसर अपने असल पर नहीं है, फिर हजरत सहल रजि. की रिवायत का बयान करके मनहुसियत का मुमकिन होना वाजेह किया गया है। फिर अगली रिवायत में घोड़ों की तीन किस्में बयान करके यह बताया है कि यह मनहुसियत तमाम घोड़ों में नहीं, बल्कि उनमें हो सकती है जो अल्लाह के दीन की सरबुलन्दी के लिए न रखे हों।

बाब 28 : (माले गनीमत में) घोड़े के हिस्से।

٢٨ - باب: سِهَامُ الفَرَسِ

1241 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने घोड़े के लिए दो हिस्से, उसके सवार का एक हिस्सा (माले गनीमत में) मुकर्रर फरमाया था।

١٢٤١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ جَعَلَ لِلفَرَسِ سَهْمَيْنِ وَلِصَاحِبِهِ سَهْمًا. [رواه البخاري: ٢٨٦٣]

फायदे : मतलब यह है कि जंग में घोड़े समेत शिरकत करने वाले को तीन हिस्से और पैदल शामिल होने वाले को एक हिस्सा दिया जायेगा। एक मुजाहिद के पास जितने भी घोड़े होंगे, उसे तीन हिस्सों से ज्यादा नहीं मिलेगा और न उससे कम किया जायेगा। (औनुलबारी, 3/497)

١٢٤٢ : عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ قَالَ لَهُ رَجُلٌ: أَفَرَرْتُمْ عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ يَوْمَ حُنَيْنٍ؟ قَالَ: لٰكِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ لَمْ يَفِرَّ، إِنَّ هَوَازِنَ كَانُوا قَوْمًا رُمَاةً، وَإِنَّا لَمَّا لَقِينَاهُمْ حَمَلْنَا عَلَيْهِمْ فَانْهَزَمُوا، فَأَقْبَلَ الْمُسْلِمُونَ عَلَى الْغَنَائِمِ، وَاسْتَقْبَلُونَا بِالسِّهَامِ، فَأَمَّا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَلَمْ يَفِرَّ، فَلَقَدْ رَأَيْتُهُ وَإِنَّهُ لَعَلَى بَغْلَتِهِ الْبَيْضَاءِ، وَإِنَّ أَبَا سُفْيَانَ آخِذٌ بِلِجَامِهَا وَالنَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: (أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبْ، أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ). [رواه البخاري: ٢٨٦٤]

1242 : बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है कि उनसे एक आदमी ने कहा कि क्या तुम गजवा हुनैन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छोड़ कर भाग गये थे? उन्होंने कहा, लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पुश्त (पीठ) नहीं दिखाई। किस्सा यह हुआ कि कबीला हवाजिन के लोग बड़े तीरअन्दाज थे, पहले जो हमने उन पर हमला किया तो वो भाग निकले, लेकिन मुसलमान जब माले गनीमत पर टूट पड़े तो उन्होंने सामने से तीर बरसाना शुरू कर दिये। हम तो भाग गये, मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नहीं भागे। मैंने आपको देखा कि अपने सफेद खच्चर पर थे और अबू सुफियान रजि. उसकी लगाम थामे हुए हैं। इसी हालात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमा रहे थे : हूँ मैं पैगम्बर, बिला शक व खतर (डर) और अब्दुल मुतल्लिब का हूँ पीसर (लड़का)।

फायदा: इमाम बुखारी ने इस हदीस पर यूं उनवान कायम किया है कि अगर कोई लड़ाई में दूसरे के जानवर को खींचे तो उसमें कोई बुराई नहीं है। इस मकाम पर शायद इस किताब वाले या लिखने वाले से गलती हुई है। क्योंकि इस मकाम पर यह हदीस बगैर उनवान के बयान की गई है।

٢٩ - باب: نَاقَةُ النَّبِيِّ ﷺ

बाब 29 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊंटनी।

١٢٤٣ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ

قَالَ: كَانَ لِلنَّبِيِّ ﷺ نَاقَةٌ تُسَمَّى الْعَضْبَاءَ، لاَ تُسْبَقُ، فَجَاءَ أَعْرَابِيٌّ عَلَى قَعُودٍ فَسَبَقَهَا، فَشَقَّ ذٰلِكَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ حَتَّى عَرَفَهُ، فَقَالَ: (حَقٌّ عَلَى ٱللهِ أَنْ لاَ يَرْتَفِعَ شَيْءٌ مِنَ ٱلدُّنْيَا إِلاَّ وَضَعَهُ). [رواه البخاري: ٢٨٧٢]

1243 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक ऊँटनी थी, जिसे अजबा कहा जाता था। कोई ऊँटनी उसके आगे नहीं बढ़ सकती थी। आखिर एक देहाती नौजवान ऊंट पर सवार होकर आया और उससे आगे निकल गया। मुसलमानों पर बात नागवार गुजरी ताकि आपने उनकी नागवारी पहचान ली और फरमाया कि अल्लाह पर हक है, दुनिया की जो चीज बुलन्द हो उसे नीची कर दे।

फायदे : इसमें इशारा है कि दुनिया की बड़ी से बड़ी चीज आखिर खत्म होने वाली है। लिहाजा उसमें दिलचस्पी रखने की बजाये अपनी आखिरत को बेहतरीन बनाने की फिक्र करना चाहिए। कहा जाता है कि हर कमाल को जवाल है। (यानी हर बड़ी चीज को छोटी होना है)।

٣٠ - باب: حَمْلُ النِّسَاءِ الْقِرَبَ إِلَى النَّاسِ فِي الْغَزْوِ

बाब 30 : जिहाद में औरतों का मर्दों के लिए मश्केन (चमड़े के पानी का बर्तन) भरकर ले जाना।

١٢٤٤ : عَنْ عُمَرَ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ قَسَمَ مُرُوطًا بَيْنَ نِسَاءٍ مِنْ نِسَاءِ الْمَدِينَةِ، فَبَقِيَ مِرْطٌ جَيِّدٌ، فَقَالَ لَهُ بَعْضُ مَنْ عِنْدَهُ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، أَعْطِ هٰذَا ٱبْنَةَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ الَّتِي عِنْدَكَ - يُرِيدُونَ أُمَّ كُلْثُومِ بِنْتَ عَلِيٍّ - فَقَالَ عُمَرُ: أُمُّ سَلِيطٍ أَحَقُّ، وَأُمُّ سَلِيطٍ مِنْ نِسَاءِ الأَنْصَارِ، مِمَّنْ بَايَعَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ. قَالَ عُمَرُ: فَإِنَّهَا كَانَتْ تَزْفِرُ لَنَا

1244 : उमर रजि. से रिवायत है कि उन्होंने मदीना की औरतों में कुछ चादरें बांटी तो एक अच्छी चादर बच गई। जो लोग उनके पास बैठे थे, उनमें से किसी ने कहा, या अमीरूल मौमिनीन! यह चादर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नवासी को दीजिए जो आपकी बीवी है। उनकी मुराद उम्मे

الْقِرَبَ يَوْمَ أُحُدٍ. [رواه البخاري: ٢٨٨١]

कुलसूम बिन्ते अली रजि. से थी तो उमर रजि. ने फरमाया, उम्मे सलीत रजि. उसकी ज्यादा हकदार हैं। उम्मे सलीत रजि. एक अन्सारी खातून थी। जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बैअत की थी। उमर रजि. ने ज्यादा फरमाया कि उहद के दिन वो हमारे लिए मश्क में पानी भर भर कर लाती थी।

फायदे : इससे हजरत उमर रजि. की मरदुम सनासी (लोगों के पहचानने की सलाहियत) और अदल गस्तरी (इन्साफवली) का पता चलता है कि उन्होंने बेहतरीन चादर अपनी बीवी उम्मे कलसूम रजि. को देने के बजाये हजरत उम्मे सलीत रजि. को उनकी खिदमात के बदले में अता की। रजि.

٣١ - باب: مُدَاوَاةُ النِّسَاءِ الجَرْحَى فِي الغَزْوِ

बाब 31 : जंग के दौरान औरतों का जख्मियों का इलाज करना कैसा है?

١٢٤٥ : عَنِ الرُّبَيِّعِ بِنْتِ مُعَوِّذٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كُنَّا نَغْزُو مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، فَنَسْقِي الْقَوْمَ، وَنَخْدُمُهُمْ، وَنَرُدُّ الجَرْحَى والقَتْلَى إِلَى المَدِينَةِ. [رواه البخاري: ٢٨٨٢]

1245 : रूबय्या बिन्ते मुअव्विज रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जिहाद में जाती थीं, मुजाहिदीन को पानी पिलाती और उनकी खिदमत करती थी। निज जख्मियों और शहीदों को मदीना वापस लाने में मदद देती थी।

फायदे : मालूम हुआ कि अजनबी औरत किसी दूसरे अजनबी मर्द का इलाज कर सकती है, इस हदीस से एक फेकही का उसूल भी लिया गया है कि जरूरियात के पैशे नजर नाजाईज चीजों के इस्तेमाल में कुछ गुंजाईश निकल आती है। (औनुलबारी, 3/503)

बाब 32 : अल्लाह की राह में जिहाद करने के लिए पासबानी (हिफाजत) करते हुए पहरा देना।

٣٢ - باب: الحِرَاسَةُ فِي الغَزْوِ وَفِي سَبِيلِ اللهِ

1246 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक रात जाग रहे थे जब मदीना पहुंचे तो फरमाया, काश कि मेरे सहाबा में से कोई नेक मर्द आज की रात मेरी पासबानी करे। फिर अचानक हमने हथियार की आवाज सुनी तो आपने फरमाया, यह कौन है? उसने जवाब दिया मैं साद बिन अबी वकास रजि. हूँ और आपकी पासबानी के लिए आया हूँ। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सो गये।

١٢٤٦ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كانَ النَّبِيُّ ﷺ سَهِرَ، فَلَمَّا قَدِمَ المَدِينَةَ، قالَ: (لَيْتَ رَجُلًا مِنْ أَصْحَابِي صَالِحًا يَحْرُسُنِي اللَّيْلَةَ؟)، إِذْ سَمِعْنَا صَوْتَ سِلَاحٍ، فَقالَ: (مَنْ هٰذَا؟). فَقَالَ: أَنَا سَعْدُ ابْنُ أَبِي وَقَّاصٍ جِئْتُ لِأَحْرُسَكَ، وَنَامَ النَّبِيُّ ﷺ. [رواه البخاري: ٢٨٨٥]

फायदे : मालूम हुआ कि असबाब (वास्ते को) तलाश करना भरोसे के मुनाफी नहीं, क्योंकि भरोसा दिल का काम है, जबकि असबाब और जरीये का इस्तेमाल जिस्म के अंगो और हिस्सों का काम है।

 (औनुलबारी, 3/505)

1247 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि दिरहम व दिनार और लिबास के पुजारी हलाक हो जाएं, उन्हें दिया जाये तो खुश हैं, न दिया जाये तो नाराज हैं। अल्लाह करे यह हलाक हो जायें, सर झुकाकर गिर पड़े, अगर कांटा चुभे तो

١٢٤٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (تَعِسَ عَبْدُ ٱلدِّينَارِ، وَعَبْدُ ٱلدِّرْهَمِ وَعَبْدُ الخَمِيصَةِ، إِنْ أُعْطِيَ رَضِيَ، وَإِنْ لَمْ يُعْطَ سَخِطَ، تَعِسَ وَٱنْتَكَسَ، وَإِذَا شِيكَ فَلَا ٱنْتَقَشَ، طُوبَى لِعَبْدٍ آخِذٍ بِعِنَانِ فَرَسِهِ فِي سَبِيلِ ٱللهِ، أَشْعَثَ رَأْسُهُ، مُغْبَرَّةٍ قَدَمَاهُ، إِنْ كَانَ فِي ٱلْحِرَاسَةِ كَانَ فِي ٱلْحِرَاسَةِ، وَإِنْ

كانَ فِي السَّاقَةِ كانَ فِي السَّاقَةِ، إِنْ اسْتَأْذَنَ لَمْ يُؤْذَنْ لَهُ وَإِنْ شَفَعَ لَمْ يُشَفَّعْ». [رواه البخاري: ٢٨٨٧]

कोई न निकाले और उस आदमी के लिए खुशखबरी है, जिसने जिहाद के लिए घोड़े की लगाम पकड़ी है। उसका सर परागिन्दा (बिखरा हुआ) और पांव खाक अलूद (मिट्टी वाले) हैं। अगर वो पासबान हो तो पासबानी करे, और अगर लश्कर के पीछे हिफाजत पर लगाया गया हो तो लश्कर के पीछे रहे, अगर वो जाने की इजाजत मांगे तो इजाजत न मिले। अगर वो किसी की सिफारिश करे तो कबूल न की जाए।

फायदे : अपने काम से दिलचस्पी रखने वाले वाकई गुमनाम और खामोश मिजाज होते हैं, ऐसे लोगों को कुर्सी की चाहत और शोहरत की तलब नहीं होती। दुनियादारों के यहां उनकी कोई कीमत नहीं होती, लेकिन अल्लाह के यहां उनका बहुत ऊँचा मकाम होता है।

٣٣ - باب: الخِدْمَةُ فِي الغَزْوِ

बाब 33 : जिहाद में खिदमत करने की फजीलत।

١٢٤٨ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجْتُ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ إِلَى خَيْبَرَ أَخْدُمُهُ، فَلَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ رَاجِعًا وَبَدَا لَهُ أُحُدٌ، قَالَ: (هٰذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ). [رواه البخاري: ٢٨٨٩]

1248 : अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ आपकी खिदमत के लिए खैबर गया था। फिर जब आप वहां से वापस आये तो उहद पहाड़ नजर आया। तब आपने फरमाया, यह पहाड़ हमको दोस्त रखता है और हम इसको दोस्त रखते हैं।

फायदे : उहद पहाड़ का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करना हकीकत पर मब्नी है, क्योंकि अल्लाह तआला पत्थर वगैरह में भी मुहब्बत भरे जज्बात पैदा करने पर कादिर हैं। जैसा कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फिराक (जुदाई) में खजूर का तना सिसकियां भर कर रोने लगा था। (औनुलबारी, 3/507)

١٢٤٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، أَكْثَرُنَا ظِلاً الَّذِي يَسْتَظِلُّ بِكِسَائِهِ، وَأَمَّا الَّذِينَ صَامُوا فَلَمْ يَعْمَلُوا شَيْئًا، وَأَمَّا الَّذِينَ أَفْطَرُوا فَبَعَثُوا الرِّكَابَ وَٱمْتَهَنُوا وَعَالَجُوا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (ذَهَبَ الْمُفْطِرُونَ الْيَوْمَ بِالأَجْرِ). [رواه البخاري: ٢٨٩٠]

1249 : अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि एक बार हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे तो हम लोगों में से सब से ज्यादा साये में वही आदमी था जिसने अपनी चादर से साया कर लिया था। उस दिन रोजेदारों ने तो कुछ काम न किया, मगर जिन लोगों ने रोजा न रखा था, उन्होंने ऊंटों को उठाया, काम काज किया और फरिजा खिदमत अंजाम दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, आज रोजा न रखने वाले सवाब ले गये।

www.Momeen.blogspot.com

फायदे: मा़लूम हुआ कि सफर के दौरान रोजा रखना अगरचे जाईज है, फिर भी उस दिन रोजा न रखना बेहतर है ताकि जरूरत के वक्त दूसरों की खिदमत करने में कौताही न हो। (औनुलबारी, 3/508)

---

٣٤ - باب: فَضْلُ رِبَاطِ يَوْمٍ فِي سَبِيلِ ٱللهِ

बाब 34 : अल्लाह की राह में एक दिन पहरा देने की फजीलत।

١٢٥٠ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (رِبَاطُ يَوْمٍ فِي سَبِيلِ ٱللهِ خَيْرٌ مِنَ ٱلدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا، وَمَوْضِعُ سَوْطِ أَحَدِكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِنَ ٱلدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا، وَالرَّوْحَةُ يَرُوحُهَا الْعَبْدُ فِي سَبِيلِ ٱللهِ، أَوِ الْغَدْوَةُ، خَيْرٌ مِنَ ٱلدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا).

1250. सहल बिन साद साइदी रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह की राह में एक दिन का पहरा देना दुनिया और दुनिया की चीजों से बेहतर है और जन्नत में तुम में से किसी के कोड़ा रखने की जगह तमाम दुनिया व

दुनिया की चीजों से बेहतर है और सुबह या शाम के वक्त अल्लाह की राह में चलना सारी दुनिया व दुनिया की चीजों से बेहतर है।

[رواه البخاري: ٢٨٩٢]

फायदे : तुमने अफगानिस्तान की जिहाद के दौरान बेशुमार अरब मुजाहिदीन को इस हदीस पर अमल करने वाला बनते हुए देखा कि वो संगलाख और दुश्वार (कठीन) गुजार पहाड़ों की चोटियों पर डेरा जमाये सफेद रीछ (रूस के आदमियों) की नकल व हरकत पर नजर रखे हुए थे।

बाब 35 : जिसने लड़ाई में कमजोर और नेक लोगों के जरिये से मदद चाही।

٣٥ - باب: مَنِ اسْتَعَانَ بِالضُّعَفَاءِ وَالصَّالِحِينَ فِي الحَرْبِ

1251 : अबू साद बिन अबी वकास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम्हारी जो कुछ मदद की जाती है और तुम्हें जो रिज्क दिया जाता है, वो तुम्हारे कमजोर लोगों की वजह से है।

١٢٥١ : عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (هَلْ تُنْصَرُونَ وَتُرْزَقُونَ إِلاَّ بِضُعَفَائِكُمْ). [رواه البخاري: ٢٨٩٦]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह अल्फाज उस वक्त कहे, जब हजरत साद बिन अबी वकास रजि. के दिल में ख्याल आया कि वो बहादुरी व हिम्मत में दूसरों से बढ़कर हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने का मतलब यह था कि उनमें तो आजीजी और इनकेसारी (रोने और गिड़गिड़ाने वाले) के जज्बात परवान चढ़े।

1252 : अबू साद खुदरी रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया

١٢٥٢ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ،

فَيُقَالُ: هَلْ فِيكُمْ مَنْ صَحِبَ النَّبِيَّ ﷺ؟ فَيُقَالُ: نَعَمْ، فَيُفْتَحُ عَلَيْهِ، ثُمَّ يَأْتِي زَمَانٌ، فَيُقَالُ: فِيكُمْ مَنْ صَحِبَ أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ؟ فَيُقَالُ: نَعَمْ، فَيُفْتَحُ عَلَيْهِ، ثُمَّ يَأْتِي زَمَانٌ، فَيُقَالُ: فِيكُمْ مَنْ صَحِبَ صَاحِبَ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ؟ فَيُقَالُ: نَعَمْ، فَيُفْتَحُ). [رواه البخاري: ٢٨٩٧]

कि एक जमाना ऐसा आयेगा कि लोग जब जिहाद करेंगे तो कहा जायेगा कि तुम में कोई ऐसा शख्स है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहा हो? जवाब दिया जायेगा कि हां। फिर उसके जरीये (दुआ करने से) फतह हो जायेगी। फिर एक जमाना आयेगा कि लोग पूछेंगे कि क्या तुममें कोई आदमी ऐसा भी है जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम रजि. का साथ पाया हो? जवाब दिया जायेगा, हां! उसके जरीये से (जब दुआ मांगी जायेगी तो) फतह होगी। फिर एक जमाना आयेगा कि पूछा जायेगा कि तुममें से कोई आदमी ऐसा है, जिसने रसूलुल्लाह के सहाबा का साथ पाने वाले को देखा हो? जवाब दिया जायेगा, हां। तो उसकी (दुआ के वास्ते से) फतह होगी।

फायदे : यह खैर व बरकत सहाबा किराम, ताबईन अजाम और ताबे ताबईन के हिस्से में आई। आज तो कोई बादशाह ऐसा नहीं है कि अल्लाह के दीन की सरबुलन्दी के लिए लड़ता हो, बल्कि आज की लड़ाईयां तो हुकुमत के बचाव और कुर्सी के बचाव के लिए हैं। (इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिउन) (औनुलबारी, 3/511)

---

٣٦ - باب: التَّحْرِيضُ عَلَى الرَّمْيِ

बाब 36 : तीर अन्दाजी पर आमादा करना।

١٢٥٣ : عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَوْمَ بَدْرٍ، حِينَ صَفَفْنَا لِقُرَيْشٍ وَصَفُّوا لَنَا: (إِذَا أَكْثَبُوكُمْ فَعَلَيْكُمْ بِالنَّبْلِ). [رواه البخاري: ٢٩٠٠]

1253 : अबू उसैद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि लड़ाई के दिन जब हम कुफ्फार के सामने सफ बांधे और

उन्होंने भी हमारे मुकाबले सफबन्दी की तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम ने फरमाया, जब वो लोग तुम्हारे करीब आयें तो फिर उन पर तीर अन्दाजी करना।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने हर किस्म के कमालात से नवाजा था। आप लड़ाई के फन में भी पूरी महारत रखते थे। चूनांचे आपने फरमाया कि दुश्मन को देखते ही घबराकर तीरों की बारिश न करो, बल्कि जब देखो कि दुश्मन निशाना की जद (सीमा) में है तो तीर मारो। (औनुलबारी, 3/512)

---

٣٧ - باب: المِجَنُّ وَمَنْ يَتَّرِسُ بِتُرْسِ صَاحِبِهِ

बाब 37 : जो आदमी अपनी या साथी की ढ़ाल से बचाव हासिल करे।

١٢٥٤ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَتْ أَمْوَالُ بَنِي النَّضِيرِ مِمَّا أَفَاءَ ٱللهُ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ، مِمَّا لَمْ يُوجِفِ الْمُسْلِمُونَ عَلَيْهِ بِخَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ، فَكَانَتْ لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ خَاصَّةً، وَكَانَ يُنْفِقُ عَلَى أَهْلِهِ نَفَقَةَ سَنَتِهِ، ثُمَّ يَجْعَلُ مَا بَقِيَ فِي السِّلَاحِ وَالْكُرَاعِ، عُدَّةً فِي سَبِيلِ ٱللهِ. [رواه البخاري: ٢٩٠٤]

1254 : उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि बनू नजीर का माल उन मालों में से था, जिसको अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए गनीमत करार दिया था और मुसलमानों ने उसे हासिल करने के लिए उस पर घोड़े और ऊंट न दौड़ाये थे। लिहाजा यह माल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए खास था। आप इसमें से एक साल का खर्चा अपने घर वालों को दे देते थे और जो बाकी बचता, उससे घोड़े और हथियार खरीद कर जिहाद के सामान की तैयारी करते।

फायदे : इमाम बुखारी का मतलब यह है कि ढ़ाल और दूसरे हथियारों का इस्तेमाल भरोसे के खिलाफ नहीं है। चूनांचे खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम माले गनीमत से हथियार खरीद कर जिहाद के सामान की तैयारी करते थे।

1255 : अली रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने साद रजि. के अलावा किसी को नहीं देखा कि उस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मां बाप कुर्बान किये हो। उन्हीं के मुताल्लिक आपको यह फरमाते सुना कि ऐ साद! तीर मारो, तुम पर मेरे मां बाप फिदा हों।

١٢٥٥ : عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُفَدِّي رَجُلًا بَعْدَ سَعْدٍ، سَمِعْتُهُ يَقُولُ: (ارْمِ، فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي). [رواه البخاري: ٢٩٠٥]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खन्दक की लड़ाई के मौके पर यही अल्फाज हजरत जुबैर रजि. के लिए ही इस्तेमाल किये थे। शायद हजरत अली रजि. को इसका इल्म न था।

(औनुलबारी, 3/514)

बाब 38 : तलवार पर सोने चांदी का मुलम्मा करना (चमक चढ़ाना) ।

٣٨ - باب: مَا جَاءَ فِي حِلْيَةِ السُّيُوفِ

1256 : अबू उमामा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि यह सब फतुहात (लड़ाईयों में कामयाबी) उन लोगों ने हासिल की हैं, जिनकी तलवारों पर सोने चांदी का मुलम्मा न था। बल्कि उनकी तलवारों पर चमड़े, रांग और लोहे का मामूली काम होता था।

١٢٥٦ : عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: لَقَدْ فَتَحَ الْفُتُوحَ قَوْمٌ، مَا كَانَتْ حِلْيَةُ سُيُوفِهِمُ الذَّهَبَ وَلَا الْفِضَّةَ، إِنَّمَا كَانَتْ حِلْيَتُهُمُ الْعَلَابِيَّ وَالْآنُكَ وَالْحَدِيدَ. [رواه البخاري: ٢٩٠٩]

फायदे : इब्ने माजा में इस हदीस को बयान करने की वजह जिक्र की गई है कि जब फातेह कौम हजरत अबू उमामा रजि. के पास आयी तो उनकी तलवारों पर चांदी का मुलम्मा था। हजरत अबू उमामा रजि. उन्हें देखकर बहुत नाराज हुए और यह हदीस बयान की।

 (औनुलबारी, 3/515)

बाब 39 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिरह (लोहे का लिबास) और कमीस (कुर्ता) का बयान जो लड़ाई में पहनते थे।

٣٩ - باب: مَا قِيلَ فِي دِرْعِ النَّبِيِّ ﷺ وَالقَمِيصِ فِي الحَرْبِ

1257 : इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने खेमे में यह फरमा रहे थे, ऐ अल्लाह! मैं तुझे तेरे अहद और वादे का वास्ता देता हूँ कि मुसलमानों को फतह अता फरमा, ऐ अल्लाह! अगर तेरी यही मर्जी है कि आज के बाद तेरी इबादत न हो। तो इतने में अबू बकर रजि. ने आपका हाथ पकड़ कर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! बस यह आपको काफी है कि आपने अपने अल्लाह से खूब रो-रो कर दुआ की है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिरह पहने हुए थे और यह पढ़ते हुए बाहर निकले कि अनकरीब (कुफ्फार की) जमाअत हार जायेगी और वो पीछे भाग जायेंगे। बल्कि कयामत का उनसे वादा है और कयामत सख्त और तलख (कड़वी) चीज है। ''एक और रिवायत में है कि यह वाक्या गजवा बदर का है।''

١٢٥٧ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ فِي قُبَّةٍ: (اللَّهُمَّ إِنِّي أَنْشُدُكَ عَهْدَكَ وَوَعْدَكَ، اللَّهُمَّ إِنْ شِئْتَ لَمْ تُعْبَدْ بَعْدَ اليَوْمِ). فَأَخَذَ أَبُو بَكْرٍ بِيَدِهِ فَقَالَ: حَسْبُكَ يَا رَسُولَ اللهِ فَقَدْ أَلْحَحْتَ عَلَى رَبِّكَ، وَهُوَ فِي الدِّرْعِ، فَخَرَجَ وَهُوَ يَقُولُ: ﴿سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ۝ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَىٰ وَأَمَرُّ﴾. وَفِي رِوَايَةٍ: وَذٰلِكَ يَوْمَ بَدْرٍ. [رواه البخاري: ٢٩١٥]

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मालूम था कि मेरे बाद कोई और नबी नहीं आयेगा। इसलिए कहा कि इन जानिसारों के खत्म हो जाने के बाद कयामत तक इस जमीन पर शिर्क ही शिर्क रहेगा। माबूद हकीकी को कोई मानने वाला नहीं होगा (औनुलबारी, 3/512)

बाब 40 : लड़ाई में रेशमी लिबास पहनना।

٤٠ - باب: الحَرِيرُ فِي الحَرْبِ

1258: अनस रजि. से रिवायत है आपने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अब्दुलर्रहमान बिन औफ रजि. और जुबेर रजि. को खारिश (खुजली) की वजह से रेशमी कमीज पहनने की इजाजत दी थी।

١٢٥٨ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: رَخَّصَ النَّبِيُّ ﷺ لِعَبْدِ الرَّحْمٰنِ ابْنِ عَوْفٍ وَالزُّبَيْرِ فِي قَمِيصٍ مِنْ حَرِيرٍ، مِنْ حِكَّةٍ كَانَتْ بِهِمَا. [رواه البخاري: ٢٩١٩]

फायदेः अगली रिवायत में जुओं का जिक्र है, इनमें ततबीक (इत्तेफाक) इस तरह है कि पहले जुएें पड़ी होगी फिर खुजली का हमला हुआ। कहते हैं कि रेशमी लिबास जुएें मार देता है और खुजली भी खत्म कर देता है। (औनुलबारी, 3/518)

1259 : अनस रजि. से ही एक रिवायत है कि उन दोनों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जुओं की शिकायत की तो आपने उन्हें रेशमी लिबास पहनने की इजाजत दी थी।

١٢٥٩ : وَعَنْهُ فِي رِوَايَةٍ: أَنَّهُمَا شَكَوَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ - يَعْنِي الْقَمْلَ - فَأَرْخَصَ لَهُمَا فِي الحَرِيرِ. [رواه البخاري: ٢٩٢٠]

बाब 41 : रोम की जंग के बारे में जो कहा गया है, उसका बयान।

٤١ - باب: مَا قِيلَ فِي قِتَالِ الرُّومِ

1260 : उम्मे हराम रजि. से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना जो मेरी उम्मत में सब से पहले जो लोग बहरी (समुन्द्री) जंग लड़ेंगे उनके लिए जन्नत वाजिब है। उम्मे हराम रजि. कहती हैं कि मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं उन ही में हूँ? आपने फरमाया, तुम

١٢٦٠ : عَنْ أُمِّ حَرَامٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّهَا سَمِعَتِ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (أَوَّلُ جَيْشٍ مِنْ أُمَّتِي يَغْزُونَ الْبَحْرَ قَدْ أَوْجَبُوا). قَالَتْ أُمُّ حَرَامٍ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ أَنَا فِيهِمْ؟ قَالَ: (أَنْتِ فِيهِمْ). قَالَتْ: ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَوَّلُ جَيْشٍ مِنْ أُمَّتِي يَغْزُونَ مَدِينَةَ قَيْصَرَ مَغْفُورٌ لَهُمْ). فَقُلْتُ: أَنَا فِيهِمْ يَا رَسُولَ ٱللهِ؟ قَالَ: (لَا). [رواه البخاري: ٢٩٢٤]

उन्हीं में हो। उम्मे हराम रजि. कहती हैं कि फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मेरी उम्मत में सबसे पहले जो लोग कैसर रोम के दारूल हुकूमत (कुस्तुनतुनिया) पर हमलावर होंगे वो मगफिरत पाने वाले हैं। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, मैं भी उन लोगों में हूँ? आपने फरमाया, नहीं।

फायदे : सबसे पहले जिसने कैसरे रोम के दारूल हुकूमत पर हमला किया वो यजीद बिन मुआविया था और उसके साथ हजरत इब्ने उमर, इब्ने अब्बास, इब्ने जुबेर और अबू युसूफ अनसारी रजि. जैसे जलीलुल कद्र सहाबा किराम भी थे। (औनुलबारी, 3/520) और सब से पहले बहरी जंग लड़ने वाले हजरत अमीर मुआविया रजि. हैं। (अलवी)

बाब 42 : यहूदियों से लड़ना कैसा है?

٤٢ - باب: قِتَالُ اليَهُودِ

1261 : अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम यहूदियों से जंग करोगे ताकि अगर कोई यहूदी किसी पत्थर के पीछे छिपा हो तो वो कह देगा ऐ मुस्लिम! यह मेरे पीछे यहूद छुपा हुआ है, इसे कत्ल कर डालो। एक और रिवायत में है कि कयामत कायम न होगी, यहां तक कि तुम यहूदियों से जंग करोगे फिर रावी ने बाकी हदीस को जिक्र किया।

١٢٦١ عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (تُقَاتِلُونَ اليَهُودَ، حَتَّى يَخْتَبِيءَ أَحَدُهُمْ وَرَاءَ الحَجَرِ، فَيَقُولُ: يَا عَبْدَ ٱللهِ، هٰذَا يَهُودِيٌّ وَرَائِي فَاقْتُلْهُ) وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: (لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا اليَهُودَ) وَذَكَرَ بَاقِيَ الحَدِيثِ. [رواه البخاري: ٢٩٢٥، ٢٩٢٦]

फायदे : नुजूल ईसा अलैहि. के वक्त ऐसा होगा, क्योंकि तमाम यहूदी मसीह दज्जाल का साथ देंगे। हजरत ईसा अलैहि. दज्जाल को कत्ल करेंगे और यहूदियों को भी खत्म कर डालेंगे। (औनुलबारी, 3/521)

बाब 43 : तुर्कों से जंग करना कैसा है?

٤٣ - باب: قِتَالُ التُّرْكِ

1262 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उस वक्त तक कयामत कायम न होगी, यहां तक कि तुम तुर्कों से जंग करोगे। जिसकी आंखे छोटी छोटी, चेहरे सुर्ख और नाक चिपटी होगी और उनके चेहरे चिमटे चमड़े चढ़ी ढालों की तरह चोड़े और तह-ब-तह होंगे। निज कयामत कायम न होगी, यहां तक कि तुम ऐसे लोगों से जंग करोगे कि जिनके जूते बालों के होंगे।

١٢٦٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لاَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا التُّرْكَ، صِغَارَ الأَعْيُنِ، حُمْرَ الْوُجُوهِ، ذُلْفَ الأُنُوفِ، كَأَنَّ وُجوهَهُمُ الْمَجَانُّ الْمُطْرَقَةُ، وَلاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا قَوْمًا نِعَالُهُمُ الشَّعَرُ). [رواه البخاري: ٢٩٢٨]

फायदे : हदीस में जिक्र किये गये तमाम सिफात तुर्कों पर फिट आती है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और खुलफाये राशिदीन (चारों खलीफा) के जमाने तक काफिर थे। बहकी की रिवायत में सराहत है कि इस हदीस की मुराद कौमे तुर्क है।

बाब 44 : मुश्रिकीन को शिकस्त और जलजले से दो-चार होने की बद दुआ देना।

٤٤ - باب: الدُّعاءُ عَلَى الْمُشْرِكِينَ بِالْهَزِيمَةِ وَالزَّلْزَلَةِ

1263 : अब्दुल्लाह बिन अबी औफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जंगे अहजाब के दिन मुश्रिकीन के लिए यह बद दुआ की थी। किताब के नाजिल करने वाले! और जल्द हिसाब लेने वाले ऐ अल्लाह! इन काफिरों को शिकस्त दे। इन्हें हार से दोचार कर दे और उनके पांव मैदान से उखाड़ दे।

١٢٦٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: دَعَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَوْمَ الأَحْزَابِ عَلَى الْمُشْرِكِينَ، فَقَالَ: (اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ سَرِيعَ الْحِسَابِ، اللَّهُمَّ اهْزِمِ الأَحْزَابَ، اللَّهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ). [رواه البخاري: ٢٩٣٣]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी हलाकत की बद दुआ करने की बजाये उन्हें शिकस्त और जलजले से दो चार होने की दुआ की है, क्योंकि शिकस्त के बाद वो बिलकुल खत्म नहीं होंगे। फिर यह मुमकिन है कि यह खुद या उनकी औलाद में से कोई मुसलमान हो जाये। (औनुलबारी, 3/524)

١٢٦٤ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها: أَنَّ الْيَهُودَ دَخَلُوا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقالُوا: السَّامُ عَلَيْكَ، فَلَعَنْتُهُمْ، فَقالَ: (ما لَكِ؟). قُلْتُ: أَوَ لَمْ تَسْمَعْ ما قالُوا؟ قالَ: (أَوَلَمْ تَسْمَعِي ما قُلْتُ؟ وَعَلَيْكُمْ). [رواه البخاري: ٢٩٣٥]

1264 : आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंनें फरमाया कि यहूदी एक दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और कहा, अस्सामु अलैका यानी तुम पर मौत आये। तो मैंने उन पर लानत की। आपने फरमाया, तुझे क्या हो गया? मैंने कहा उन लोगों ने जो कहा, वो आपने नहीं सुना? आपने फरमाया तुमने नहीं सुना जो मैंने कहा, यानी "अलैकुम" तुम पर ही हो।

फायदे : कुछ रिवायतों में इस हदीस के आखिर में यह अल्फाज हैं " उनके खिलाफ हमारी बद दुआ तो जरूर कबूल होगी, लेकिन हमारे खिलाफ उनकी बद दुआ कबूल नहीं होगी। (औनुलबारी, 6/125)

---

٤٥ - باب: الدُّعاءُ لِلْمُشْرِكِينَ بِالْهُدَى لِيَتَأَلَّفَهُمْ

बाब 45 : मुश्रिकीन के लिए हिदायत की दुआ करना ताकि उनके दिल मुतमईन हो जाये।

١٢٦٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: قَدِمَ طُفَيْلُ بْنُ عَمْرٍو الدَّوْسِيُّ وَأَصْحَابُهُ، عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ دَوْسًا عَصَتْ وَأَبَتْ، فَٱدْعُ ٱللهَ عَلَيْهَا، فَقِيلَ: هَلَكَتْ دَوْسٌ، قالَ: (اللَّهُمَّ

1265 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि तुफैल बिन अम्र रजि. और उनके साथी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुए और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

أهْدِ دَوْسًا وَأْتِ بِهِمْ). [رواه البخاري: ٢٩٣٧]

अलैहि वसल्लम! कबिला दोस ने नाफरमानी की और इस्लाम को कबूल करने से इनकार कर दिया। लिहाजा आप अल्लाह से उनके मुताल्लिक बद दुआ करें। तब कहा गया कि कबिला दोस हलाक हो गया, लेकिन आपने फरमाया, ऐ अल्लाह! कबिला दोस को हिदायत फरमा और उन्हें हक की तरफ ले आ।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब देखते कि मुश्रिकीन का तकलीफ पहुंचाना हद से बढ़ गया है तो उन पर बद दुआ फरमाते और जब मुश्रिकीन का रवैया इतना संगीन न होता, वहां उनकी हिदायत के लिए अल्लाह से दुआ करते, जैसा कि कबिला दौस के लिए दुआ फरमाई तो वो बखुशी इस्लाम कबूल कर गये।

(औनुलबारी, 6/126)

---

٤٦ - باب: دُعَاءُ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى الإِسْلَامِ وَالنُّبُوَّةِ، وَأَنْ لَا يَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللهِ

बाब 46 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लोगों को इस्लाम और नबी होने को मान लेने की दावत देना और कहना कि कोई एक दूसरे को अल्लाह के अलावा माबूद न बनाए।

١٢٦٦ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ يَوْمَ خَيْبَرَ: (لأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ رَجُلًا يَفْتَحُ اللهُ عَلَى يَدَيْهِ)، فَقَامُوا يَرْجُونَ لِذَلِكَ أَيُّهُمْ يُعْطَى، فَغَدَوْا وَكُلُّهُمْ يَرْجُو أَنْ يُعْطَى، فَقَالَ: (أَيْنَ عَلِيٌّ؟). فَقِيلَ: يَشْتَكِي عَيْنَيْهِ، فَأَمَرَ فَدُعِيَ لَهُ، فَبَصَقَ فِي عَيْنَيْهِ، فَبَرَأَ

1266 : सहल बिन साद रजि. से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खैबर के दिन यह कहते हुए सुना कि मैं अब झण्डा उस शख्स को दूंगा जिसके हाथ पर अल्लाह फतह देगा। इस पर सहाबा रजि. इस उम्मीद में खड़े हो गये कि उनमें से किसको

مَكَانَهُ حَتَّى كَأَنَّهُ لَمْ يَكُنْ بِهِ شَيْءٌ، فَقَالَ: نُقَاتِلُهُمْ حَتَّى يَكُونُوا مِثْلَنَا؟ فَقَالَ: (عَلَى رِسْلِكَ، حَتَّى تَنْزِلَ بِسَاحَتِهِمْ، ثُمَّ ادْعُهُمْ إِلَى الإِسْلاَمِ، وَأَخْبِرْهُمْ بِمَا يَجِبُ عَلَيْهِمْ، فَوَاللهِ لأَنْ يُهْدَى بِكَ رَجُلٌ وَاحِدٌ خَيْرٌ لَكَ مِنْ حُمْرِ النَّعَمِ). [رواه البخاري: ٢٩٤٢]

झण्डा मिलता है? और दूसरे दिन हर शख्स को यही उम्मीद थी कि झण्डा उसे दिया जायेगा। मगर आपने फरमाया, अली रजि. कहां हैं? कहा गया वो तो आसूबे चश्म (आंख की बीमारी) में मुब्तला हैं। आपके हुक्म से उन्हें बुलाया गया। आपने उनकी दोनों आंखों में अपना लआबे दहन (थूक) लगाया, जिससे वो फौरन सहतयाब हो गये। जैसे उनको कोई शिकायत ही न थी। फिर अली रजि. ने कहा, हम उन काफिरों से जंग करेंगे ताकि वो हमारी तरह (मुसलमान) हो जायें? आपने फरमाया, चलो, जब तुम उनके मैदान में जाओगे तो उन्हें इस्लाम की दावत दो और उनके फराइज से उन्हें आगाह करो। अल्लाह की कसम! अगर तुम्हारी वजह से एक शख्स को भी हिदायत मिल जाये तो वो तुम्हारे लिए सुर्ख ऊंटों से बेहतर है।

फायदे : सुर्ख ऊंट अरब के यहां पसन्दीदा और कीमती जायदाद थी। हजरत अली रजि. से आपने फरमाया कि अगर इस कद्र महबूब जायदाद अल्लाह की राह में सदका करो तो भी इस सवाब को नहीं पा सकता जो किसी आदमी के मुसलमान होने से तुझे मिलेगा।

(औनुलबारी, 3/528)

---

٤٧ - باب: مَنْ أَرَادَ غَزْوَةً فَوَرَّى بِغَيْرِهَا وَمَنْ أَحَبَّ الخُرُوجَ إِلَى السَّفَرِ يَوْمَ الخَمِيسِ

बाब 47 : जो आदमी किसी जगह का इरादा करे लेकिन जाहिर किसी दूसरे को करे, निज जुमेरात के दिन सफर को जिसने बेहतर ख्याल किया।

١٢٦٧ : عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَقَلَّمَا كَانَ

1267 : कआब बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह

رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَخْرُجُ، إِذَا خَرَجَ فِي سَفَرٍ، إِلاَّ يَوْمَ الخَمِيسِ. [رواه البخاري: ٢٩٤٩]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब किसी सफर का इरादा करते तो जुमेरात के अलावा दूसरे दिनों में कम तशरीफ ले जाया करते थे।

फायदे : हजरत कअब बिन मालिक रजि. से ही मरवी एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब जिहाद का इरादा फरमाते थे। खास सबब के पेशे नजर किसी दूसरे काम का इजहार करते, ताकि दुश्मन को खबर न हो।

बाब 48: सफर के वक्त अलविदा कहना।

٤٨ - باب: التَّوْدِيعُ

١٢٦٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَنَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فِي بَعْثٍ، فَقَالَ لَنَا: (إِنْ لَقِيتُمْ فُلاَنًا وَفُلاَنًا - لِرَجُلَيْنِ مِنْ قُرَيْشٍ سَمَّاهُمَا - فَحَرِّقُوهُمَا بِالنَّارِ). قَالَ: ثُمَّ أَتَيْنَاهُ نُوَدِّعُهُ حِينَ أَرَدْنَا الخُرُوجَ، فَقَالَ: (إِنِّي كُنْتُ أَمَرْتُكُمْ أَنْ تُحَرِّقُوا فُلاَنًا وَفُلاَنًا بِالنَّارِ، وَإِنَّ النَّارَ لاَ يُعَذِّبُ بِهَا إِلاَّ ٱللهُ، فَإِنْ أَخَذْتُمُوهُمَا فَاقْتُلُوهُمَا). [رواه البخاري: ٢٩٥٤]

1268 : अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी लश्कर (फौज) के साथ भेजा और हमसे फरमाया, जब तुम कुरैश के फलां फलां आदमियों को पाओ तो उन्हें आग में जला देना। आपने उनका नाम भी लिया था। अबू हुरैरा रजि. कहते हैं कि फिर हम सफर में जाने लगे तो आपके पास रवाना होने के लिए आये। आपने फरमाया, मैंने तुम्हें हुक्म दिया था कि फलां और फलां शख्स को आग में जला देना। मगर आग से अजाब तो अल्लाह ही करता है। लिहाजा तुम अगर उनको गिरफ्तार करो तो कत्ल कर देना।

फायदे : यानी सफर के वक्त अलविदा कहना सुन्नत है। चाहे मुसाफिर मुकिम को कहे, चाहे उसके उल्टा हो। हदीस में पहली सूरत का बयान है दूसरी सूरत को उस पर कयास किया जा सकता है।

(औनुलबारी 3/529)

बाब 49 : इमाम की बात को सुनना और उसका कहना मानना।

٤٩ - باب: السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ لِلإِمَامِ

1269 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान फरमाते हैं कि आपने फरमाया! इमाम की बात को सुनना और मानना जरूरी है। जब तक कि वो किसी गुनाह का हुक्म न दे। अगर किसी गुनाह का हुक्म दे तो उसकी बात सुनना और मानना जरूरी नहीं है।

١٢٦٩ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ حَقٌّ ما لَمْ يُؤْمَرْ بِمَعْصِيَةٍ، فَإِذَا أُمِرَ بِمَعْصِيَةٍ فَلاَ سَمْعَ وَلاَ طَاعَةَ). [رواه البخاري: ٢٩٥٥]

फायदे : यह हदीस तकलीद की रद्द के लिए जबरदस्त दलील है।

(औनुलबारी, 3/530)

बाब 50 : इमाम के पीछे लड़ा और बचा जाता है।

٥٠ - باب: يُقَاتَلُ مِن وَرَاءِ الإِمَامِ وَيُتَّقَى بِهِ

1270: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि हम लोग बाद में आने वाले हैं, मगर दर्जा में आगे बढ़ने वाले हैं। नीज आपने फरमाया, जिसने मेरी इताअत की, उसने अल्लाह का कहा माना और जिसने मेरी नाफरमानी की, उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की और जिस शख्स ने हाकिम शरीअत (अमीर) की फरमाबरदारी की तो बिलाशुबा उसने मेरी इताअत की और जो शख्स हाकिम शरीअत की नाफरमानी करेगा तो बिलाशुबा उसने मेरी नाफरमानी की और इमाम तो

١٢٧٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (نَحْنُ الآخِرُونَ السَّابِقُونَ). وَيَقُولُ: (مَنْ أَطَاعَنِي فَقَدْ أَطَاعَ ٱللهَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ عَصَى ٱللهَ، وَمَنْ يُطِعِ الأَمِيرَ فَقَدْ أَطَاعَنِي، وَمَنْ يَعْصِ الأَمِيرَ فَقَدْ عَصَانِي، وَإِنَّمَا الإِمَامُ جُنَّةٌ، يُقَاتَلُ مِنْ وَرَائِهِ وَيُتَّقَى بِهِ، فَإِنْ أَمَرَ بِتَقْوَى ٱللهِ وَعَدَلَ فَإِنَّ لَهُ بِذٰلِكَ أَجْرًا، وَإِنْ قَالَ بِغَيْرِهِ فَإِنَّ عَلَيْهِ مِنْهُ). [رواه البخاري: ٢٩٥٧]

ढ़ाल की तरह है। जिसके जैर साया जंग की जाती है और उसके जरीये ही बचा जाता है। अगर वो अल्लाह से डरने का हुक्म दे और इन्साफ करे तो उसे सवाब मिलेगा और अगर वो उसके खिलाफ करे तो उसके सबब गुनाहगार होगा।

फायदे : हाकिम शरीअत की जात लोगों के लिए इस तौर पर ढ़ाल होती है कि उसकी मौजूदगी में कोई दूसरे पर जुल्म नहीं करता। दुश्मन भी खौफजदा रहता है। लिहाजा इस ढ़ाल की हिफाजत करना तमाम मुसलमानों के लिए जरूरी है। (औनुलबारी, 3/523)

٥١ - باب: الْبَيْعَةُ فِي الْحَرْبِ عَلَى أن لا يَفِرُّوا

बाब 51 : जंग में इस बात पर बैअत लेना (हाथ पर हाथ रखकर वादा करना) कि वो भागे नहीं।

١٢٧١ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَجَعْنَا مِنَ الْعَامِ الْمُقْبِلِ، فَمَا اجْتَمَعَ مِنَّا اثْنَانِ عَلَى الشَّجَرَةِ الَّتِي بَايَعْنَا تَحْتَهَا، كَانَتْ رَحْمَةً مِنَ ٱللهِ. قِيلَ لَهُ: عَلَى أَيِّ شَيْءٍ بَايَعَهُمْ، عَلَى الْمَوْتِ؟ قَالَ: لاَ، بَايَعَهُمْ عَلَى الصَّبْرِ. [رواه البخاري: ٢٩٥٨]

1271 : इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि बैअत रिजवान के बाद अगले साल जब दोबारा वहां आये तो हम में से दो आदमियों ने भी बिलइत्तेफाक उस दरख्त को शिनाख्त न किया, जिसके नीचे हमने बैअत की थी। अल्लाह की इसमें कुछ मेहरबानी थी। पूछा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम रजि. से किस बात पर बैअत ली थी। क्या मौत पर? उन्होंने कहा, नहीं बल्कि साबित कदमी रहने पर आपने उनसे बैअत ली थी।

फायदे : इस दरख्त को शिनाख्त न करने में अल्लाह तआला की हिकमत व मेहरबानी थी। वरना अन्देशा था कि जाहिल लोग उसकी इतनी इज्जत करते कि उसके बारे में नफा देने या नुकसान पहुंचाने का यकीन रख लेते। (औनुलबारी, 3/533)

١٢٧٢ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: لَمَّا كانَ زَمَنُ الحَرَّةِ أَتَاهُ آتٍ فَقالَ لَهُ: إِنَّ ٱبْنَ حَنْظَلَةَ يُبَايِعُ النَّاسَ عَلَى المَوْتِ، فَقالَ: لاَ أُبَايِعُ عَلَى هٰذَا أَحَدًا بَعْدَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ. [رواه البخاري: ٢٩٥٩]

1272 : अब्दुल्लाह बिन जैद रजि. से रिवायत है कि हर्रा के जमाने में उनके पास एक आदमी आया, उसने कहा कि हन्जला रजि. का बेटा लोगों से मर मिटने पर बैअत ले रहा है तो अब्दुल्लाह बिन जैद रजि. ने कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद किसी से इस शर्त पर बैअत न करेंगे।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खातिर सर धड़ की बाजी लगा देना ईमान का हिस्सा है लेकिन इनके अलावा किसी दूसरे को यह ऐजाज (इज्जत) नहीं कि इसके लिए अपनी जान का नजराना दे दिया जाये। (औनुलबारी, 3/534)

١٢٧٣ : عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: بَايَعْتُ النَّبِيَّ ﷺ ثُمَّ عَدَلْتُ إِلَى ظِلِّ الشَّجَرَةِ، فَلَمَّا خَفَّ النَّاسُ قالَ: (يَا ٱبْنَ الأَكْوَعِ أَلا تُبَايِعُ؟). قالَ: قُلْتُ: قَدْ بَايَعْتُ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قالَ: (وَأَيْضًا)، فَبَايَعْتُهُ الثَّانِيَةَ، قِيلَ لَهُ: يَا أَبَا مُسْلِمٍ، عَلَى أَيِّ شَيْءٍ كُنْتُمْ تُبَايِعُونَ يَوْمَئِذٍ؟ قالَ: عَلَى المَوْتِ. [رواه البخاري: ٢٩٦٠]

1273 : सलमा बिन अकवअ रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बैअत की और इसके बाद एक दरख्त के साये की तरफ हो गया। फिर जब हुजूम हुआ तो आपने फरमाया, ऐ इब्ने अकवअ रजि! क्या तुम बैअत नहीं करोगे? सलमा बिन अकवअ कहते हैं कि मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं तो बैअत कर चुका हूँ। फिर आपने फरमाया तो फिर सही। लिहाजा मैंने आप से दुबारा बैअत की। फिर उनसे किसी ने पूछा, कि तुमने उस दिन किस बात पर बैअत की थी? उन्होंने कहा मौत पर।

फायदे : हजरत सलमा बिन अकवाअ बड़े जरी, बहादुर और मेहनती इन्सान थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे दूसरी बार बैअत ली ताकि अल्लाह की राह में खुशी खुशी अपनी जान का नजराना पेश करें। (औनुलबारी 3/535)

1274 : मुजाशअ रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास अपने भाई को लाया और मैंने अर्ज किया कि आप हमसे हिजरत पर बैअत ले। आपने फरमाया कि हिजरत तो अहले हिजरत पर खत्म हो चुकी है। मैंने कहा, फिर आपने किस बात पर हमसे बैअत लेंगे? आपने फरमाया इस्लाम और जिहाद पर।

١٢٧٤ : عَنْ مُجَاشِعٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ أَنَا وَأَخِي فَقُلْتُ: بَايِعْنَا عَلَى الْهِجْرَةِ، فَقَالَ: (مَضَتِ الْهِجْرَةُ لِأَهْلِهَا)، فَقُلْتُ: عَلاَمَ تُبَايِعُنَا؟ قالَ: (عَلَى الإِسْلاَمِ وَالْجِهَادِ). [رواه البخاري: ٢٩٦٢، ٢٩٦٣]

फायदे : इस हदीस से मालूम हुआ कि बैअत की कई किस्में हैं। मसलन बैअत इस्लाम, बैअत हिजरत और बैअत जिहाद वगैरह। लेकिन आजकल के बैअत, बैअते तसव्वुफ (सुफियों की बैअत) का दीने इस्लाम में कोई वजूद नहीं है।

बाब 52 : इमाम का लोगों को इसी बात का पाबन्द करना, जिसकी वो ताकत रखते हों।

٥٢ - باب: عَزْمُ الإِمامِ عَلَى النَّاسِ فِيما يُطِيقُونَ

1275: अब्दुल्लाह बिन मसउद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि आज मेरे पास एक आदमी ने आकर एक मसला पूछा, लेकिन मैं न समझा कि क्या जवाब दूँ? उसने कहा, बताये! एक

١٢٧٥ : عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَقَدْ أَتَانِي الْيَوْمَ رَجُلٌ، فَسَأَلَنِي عَنْ أَمْرٍ ما دَرَيْتُ ما أَرُدُّ عَلَيْهِ، فَقَالَ: أَرَأَيْتَ رَجُلاً مُؤْدِيًا نَشِيطًا، يَخْرُجُ مَعَ أُمَرَائِنَا فِي

الْمَغَازِي، فَيَعْزِمُ عَلَيْنَا فِي أَشْيَاءَ لاَ نُحْصِيهَا؟ فَقُلْتُ لَهُ: وَٱللهِ مَا أَدْرِي مَا أَقُولُ لَكَ، إِلاَّ أَنَّا كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، فَعَسى أَنْ لاَ يَعْزِمَ عَلَيْنَا فِي أَمْرٍ مَرَّةً حَتَّى نَفْعَلَهُ، وَإِنَّ أَحَدَكُمْ لَنْ يَزَالَ بِخَيْرٍ مَا ٱتَّقَى ٱللهَ، وَإِذَا شَكَّ فِي نَفْسِهِ شَيْءٌ سَأَلَ رَجُلاً فَشَفَاهُ مِنْهُ، وَأَوْشَكَ أَنْ لاَ تَجِدُوهُ، وَالَّذِي لاَ إِلٰهَ إِلاَّ هُوَ، مَا أَذْكُرُ مَا غَبَرَ مِنَ ٱلدُّنْيَا إِلاَّ كَالثَّغَبِ، شُرِبَ صَفْوُهُ وَبَقِيَ كَدَرُهُ. [رواه البخاري: ٢٩٦٤]

तन्दुरूस्त और ताकतवार आदमी जो हथियार से लैस है वो हमारे उमराह के साथ जिहाद में जाता है, मगर वो कुछ बातों में ऐसे अहकाम देते हैं, जिन पर हम अमल नहीं कर सकते, मैंने उनसे कहा, अल्लाह की कसम! मेरी समझ से बाहर है कि इसके सिवा मैं तुझे क्या जवाब दूं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जाते थे तो आप हम को एक बार हुक्म फरमाते, जिसको हम कर लिया करते थे और बेशक तुम में से हर आदमी नेकी पर रहेगा, जब तक कि अल्लाह से डरता है। लेकिन अगर उसके दिल में किसी बात का खटका हो तो वो किसी ऐसे आदमी से पूछे जो उसको मुतमईन कर दे। लेकिन जल्द ही तुम्हें ऐसा आदमी न मिल सकेगा। कसम है उस जात की जिसके सिवा कोई माबूद बरहक नहीं कि जितनी दुनिया बाकी है, उसकी बाबत मैं यह कहता हूँ कि वो एक हौज की तरह है, जिसका साफ पानी पी लिया गया है और गंदा पानी बाकी रह गया है।

फायदे : मालूम हुआ कि मौजूदा बादशाह अगर शरीअत के मुताबिक कोई हुक्म दे तो उसका कहना मानना जरूरी है। सहाबा किराम रजि. इसी बात पर अमल करने वाले थे। (औनुलबारी, 3/538)

٥٣ - باب: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا لَمْ يُقَاتِلْ أَوَّلَ النَّهَارِ أَخَّرَ الْقِتَالَ حَتَّى تَزُولَ الشَّمْسُ

बाब 53 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सुबह को लड़ाई शुरू करते तो उसे देर कर देते यहां तक कि सूरज ढ़ल जाता।

١٢٧٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَيَّامِهِ، الَّتِي لَقِيَ فِيهَا، ٱنْتَظَرَ حَتَّى مالَتِ الشَّمْسُ، ثُمَّ قامَ فِي النَّاسِ قالَ: (أَيُّها النَّاسُ، لاَ تَتَمَنَّوْا لِقاءَ الْعَدُوِّ، وَسَلُوا ٱللهَ الْعَافِيَةَ، فَإِذَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاصْبِرُوا، وَٱعْلَمُوا أَنَّ الجَنَّةَ تَحْتَ ظِلاَلِ السُّيُوفِ)، ثُمَّ قالَ: (اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ) إِلى آخِرِهِ، وَقَدْ تَقَدَّمَ باقي الدُّعاء. (برقم:١٢٦٣) [رواه البخاري: ٢٩٦٥، ٢٩٦٦]

1276: अब्दुल्लाह बिन अबी औफा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी जिहाद के मौके पर जिस में दुश्मन से मुकाबला हो, इन्तेजार किया, यहां तक कि सूरज ढ़ल गया। इसके बाद आप लोगों में खड़े हुए और कहा, लोगों! दुश्मन से मुकाबले की आरज़ू न करो, बल्कि अल्लाह से पनाह मांगों। लेकिन अगर दुश्मन से मुकाबला हो तो सब्र करो और खूब जान लो कि तलवारों के साये तले जन्नत है। फिर आपने यूं दुआ की, ऐ अल्लाह! किताब के नाजिल करने वाले.....बाकी दुआ पहले गुजर चुकी है। (1243)

फायदे : लड़ाई के लिए सूरज ढ़लने का इसलिए इनकार करते हैं कि यह वक्त पूरब की हवा चलने का है जो आम तौर से कामयाबी और मदद का सबब बनती थी। वल्लाहु आलम। (औनुलबारी, 3/540)

---

٥٤ - باب: الأَجِيرُ

बाब 54 : मजदूर लेकर जिहाद में जाना।

١٢٧٧ : عَنْ يَعْلَى بْنِ أُمَيَّةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: ٱسْتَأْجَرْتُ أَجِيرًا، فَقَاتَلَ رَجُلًا، فَعَضَّ أَحَدُهُمَا يَدَ الآخَرِ، فَانْتَزَعَ يَدَهُ مِنْ فِيهِ وَنَزَعَ ثَنِيَّتَهُ، فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَأَهْدَرَهَا، فَقالَ: (أَيَدْفَعُ يَدَهُ إِلَيْكَ فَتَقْضَمُهَا كما يَقْضَمُ الْفَحْلُ). [رواه البخاري: ٢٩٧٣]

1277: यअला बिन उमैया रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने एक आदमी को मजदूरी पर रखा था, वो एक आदमी से लड़ पड़ा। उन दोनों में से एक ने दूसरे का हाथ काट खाया और जब दूसरे ने अपना हाथ उसके मुंह से खींचा तो उसके अगले दांत गिर

गये और वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया तो आपने उसके दांत का मुआवजा नहीं दिलाया बल्कि फरमाया कि वो अपना हाथ तेरे मुंह में ही रहने देता और तू ऊंट की तरह उसको चबा डालता।

फायदे : अबू दाउद की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार जंग पर जाने का ऐलान किया तो मैं उस वक्त बूढ़ा था और मेरा कोई खिदमतगार भी न था तो मैं एक आदमी को तीन दीनार के बदले अपने साथ जिहाद के लिए ले गया।

(औनुलबारी, 3/541)

बाब 55: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के झण्डे का बयान।

٥٥ - باب: مَا قِيلَ فِي لِوَاءِ النَّبِيِّ ﷺ

1278. अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने जुबैर रजि. से कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तुम्हें उसी जगह झण्डा गाड़ने का हुक्म फरमाया था।

١٢٧٨ : عَنِ الْعَبَّاسِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ قَالَ لِلزُّبَيْرِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: هَا هُنَا أَمَرَكَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تَرْكُزَ الرَّايَةَ. [رواه البخاري: ٢٩٧٦]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का झण्डा सिर्फ जिहाद के लिए इस्तेमाल होता था। लेकिन आज हर तंजीम ने अपना अलग झण्डा बना लिया है, जिसे खास मौके पर लहराया जाता है। इसका शरीअत में कोई सबूत नहीं है।

बाब 56: फरमाने नबवी! मुझे एक माह की दूरी पर खौफ के जरीये मदद दी गई है।

٥٦ - باب: قَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: «نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ مَسِيرَةَ شَهْرٍ»

1279: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है

١٢٧٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، رَضِيَ

اَللّٰهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: (بُعِثْتُ بِجَوَامِعِ الْكَلِمِ، وَنُصِرْتُ بِالرُّعْبِ، فَبَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُتِيتُ بِمَفَاتِيحِ خَزَائِنِ الأَرْضِ فَوُضِعَتْ فِي يَدَيَّ). قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: وَقَدْ ذَهَبَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ وَأَنْتُمْ تَنْتَثِلُونَهَا. [رواه البخاري: ٢٩٧٧]

कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं ऐसी बातें देकर भेजा गया हूं जो जामेअ (हर चीज को जमा करने वाली) हैं और बजरीये खौफ मुझ को मदद दी गई है। लिहाजा एक दिन जबकि मैं सो रहा था, मेरे पास दुनिया के सारे खजानों की चाबिया लाकर मेरे हाथ में रख दी गई। अबू हुरैरा रजि. ने यह हदीस बयान कर के कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो दुनिया से तशरीफ ले गये और अब तुम उन खजानों को निकाल रहे हो।

फायदे : इन खजानों से मुराद कैसर व किसरा के खजाने हैं जो मुसलमानों के हाथ लगे या इससे मुराद मैदनियात हैं जो जमीन से निकलती है। सोना, चांदी और दूसरे जवाहरात इसमें शामिल हैं।

(औनुलबारी, 3/544)

---

٥٧ - باب: حَمْلُ الزَّادِ فِي الْغَزْوِ، وَقَوْلُ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ﴾

बाब 57 : जिहाद में सफर खर्च साथ रखना क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है: ''जाद राह साथ रखो, उम्दा जाद राह तो तकवा (परहेजगारी) ही है।''

١٢٨٠ : عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: صَنَعْتُ سُفْرَةَ رَسُولِ اللّٰهِ ﷺ فِي بَيْتِ أَبِي بَكْرٍ، حِينَ أَرَادَ أَنْ يُهَاجِرَ إِلَى الْمَدِينَةِ، قَالَتْ: فَلَمْ نَجِدْ لِسُفْرَتِهِ، وَلاَ لِسِقَائِهِ مَا نَرْبِطُهُمَا بِهِ، فَقُلْتُ لأَبِي بَكْرٍ: وَاللّٰهِ مَا أَجِدُ شَيْئاً أَرْبِطُ بِهِ إِلاَّ نِطَاقِي، قَالَ: فَشُقِّيهِ بِاثْنَيْنِ فَارْبِطِي: بِوَاحِدٍ

1280: असमा बिन्ते अबी बकर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना की तरफ हिजरत का इरादा फरमाया तो मैंने अबू बकर रजि. के घर में आपके लिए एक दस्तरखान तैयार किया। वो कहती हैं कि जब मुझे आपके

السِّقَاءَ وَبِالآخَرِ السُّفْرَةَ، فَفَعَلْتُ، فَلِذَلِكَ سُمِّيتُ: ذَاتَ النِّطَاقَيْنِ. [رواه البخاري: ٢٩٧٩]

दस्तरखान और पानी के बर्तन को बांधने के लिए कोई चीज न मिली तो मैंने अबू बकर रजि. से कहा, अल्लाह कसम! मुझे अपने कमरबन्द के अलावा कोई चीज नहीं मिलती, जिससे बांधू। तो अबू बकर रजि. ने फ़रमाया, तुम अपने कमरबन्द के दो हिस्से कर दो। एक से पानी के तरफ को बांध दो और दूसरे से दस्तरखान को। मैंने ऐसा ही किया। तो इसी वजह से मेरा नाम जातुन निताकेन रखा गया।

फायदे : मतलब यह है कि सफर में सामान खर्च साथ लेकर चलना अल्लाह पर भरोसे के खिलाफ नहीं, जैसा कि बाज सुफियों का ख्याल है कि अलबत्ता यह सफर हिजरत था और सफर जिहाद को इस पर कयास किया जा सकता है। (औनुलबारी, 3/546)

बाब 58: गधे पर दो आदमियों का सवार होना।

٥٨ - باب: الرِّدْفُ عَلَى الْحِمَارِ

1281: उसामा बिन जैर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ऐसे गधे पर सवार हुए जिसकी जीन (पीठ के गद्दे) पर एक चादर पड़ी हुई थी और उसामा रजि. को अपने साथ पीछे सवार फरमा लिया गया।

١٢٨١ : عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ رَكِبَ عَلَى حِمَارٍ، عَلَى إِكَافٍ عَلَيْهِ قَطِيفَةٌ، وَأَرْدَفَ أُسَامَةَ وَرَاءَهُ. [رواه البخاري: ٢٩٨٧]

1282: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फतह मक्का के दिन मक्का की ऊँचाई से तशरीफ लाये तो

١٢٨٢ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَقْبَلَ يَوْمَ الْفَتْحِ مِنْ أَعْلَى مَكَّةَ عَلَى رَاحِلَتِهِ، مُرْدِفًا أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ، وَمَعَهُ

بِلَالٌ، وَمَعَهُ عُثْمَانُ بْنُ طَلْحَةَ مِنَ الحَجَبَةِ، حَتَّى أَنَاخَ فِي المَسْجِدِ، فَأَمَرَهُ أَنْ يَأْتِيَ بِمِفْتَاحِ البَيْتِ فَفَتَحَ، وَدَخَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ، وباقي الحَدِيثُ قَدْ تَقَدَّمَ. (برقم: ٢٩٦) [رواه البخاري: ٢٩٨٨ وانظر حديث رقم: ٥٠٥]

आप अपनी सवारी पर अपने साथ उसामा बिन जैर रजि. को सवार किए हुए थे। बिलाल रजि. और उसमान बिन तलहा रजि. आपके साथ थे। उसमान रजि. तो काअबा के दरबानों में से थे। फिर आपने मस्जिद में ऊंट बिठाया और उसमान रजि. को हुक्म दिया कि काअबा की चाबी ले आयें। चूनांचे काअबा खोला गया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसमें दाखिल हुए। बाकी हदीस पहले (317) गुजर चुकी है।

फायदे : इस हदीस में ऊंटनी पर दो आदमियों का सवार होना बयान किया गया है। इस तरह गधे पर भी दो आदमी सवार हो सकते हैं। (औनुलबारी 3/548)

٥٩ - باب: كَرَاهِيَةُ السَّفَرِ بِالمَصَاحِفِ إِلَى أَرْضِ العَدُوِّ

बाब 59: दुश्मन के मुल्क की तरफ कुरआन मजीद के साथ सफर करना नापसन्द है।

١٢٨٣ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ نَهَى أَنْ يُسَافَرَ بِالقُرْآنِ إِلَى أَرْضِ العَدُوِّ. (برقم: ٢٩٦) [رواه البخاري: ٢٩٩٠]

1283: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात से मना फरमाया कि दुश्मन के मुल्क की तरफ कुरआन मजीद लेकर सफर किया जाये।

फायदे: कुरआन मजीद की अजमत के पैशे नजर ऐसा हुक्म दिया गया है। मुबादा कुफ्फार के हाथ लग जाये तो वो उसकी बेहुरमत करें। इस बिना पर काफिर के हाथ कुरआन मजीद बेचना भी मना है। (औनुलबारी, 3/549)

बाब 60 : चिल्लाकर तकबीर कहना मना है।

٦٠ - باب: مَا يُكْرَهُ مِنْ رَفْعِ الصَّوْتِ بِالتَّكْبِيرِ

1284 : अबू मूसा अशअरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जा रहे थे, जब हम किसी बुलन्दी पर चढ़ते तो जोर से "ला इलाहा इल्लल्लाहु" और "अल्लाहु अकबर" कहते। जब हमारी आवाजें बुलन्द हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ लोगों! अपनी जानों पर आसानी करो क्योंकि तुम किसी बेहरे या गायब को नहीं पुकार रहे हो, बल्कि वो तो तुम्हारे साथ है। बेशक वो सुनता है और करीब ही है।

١٢٨٤ : عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَكُنَّا إِذَا أَشْرَفْنَا عَلَى وَادٍ، هَلَّلْنَا وَكَبَّرْنَا ٱرْتَفَعَتْ أَصْوَاتُنَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (يَا أَيُّهَا النَّاسُ ٱرْبَعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ، فَإِنَّكُمْ لاَ تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلاَ غَائِبًا، إِنَّهُ مَعَكُمْ وإِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ. [رواه البخاري: ٢٩٩٢]

फायदे: इस हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गायब के बारे में करीब को बयान किया है। हालांकि गायब के मुकाबले में हाजिर होता है। इससे मालूम हुआ कि हाजिर व नाजिर अल्लाह की सिफात में से नहीं है, लेकिन हम लोग उसे बकसरत इस्तेमाल करते हैं।

बाब 61: नसेब (घाटी) में उतरते वक्त सुब्हान अल्लाह कहना।

٦١ - باب: التَّسْبِيحُ إِذَا هَبَطَ وَادِيًا

1285: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब हम बुलन्दी पर चढ़ते थे तो अल्लाहु अकबर कहते और जब नीचे उतरते तो "सुब्हान अल्लाह" कहते थे।

١٢٨٥ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا إِذَا صَعِدْنَا كَبَّرْنَا، وَإِذَا نَزَلْنَا سَبَّحْنَا. [رواه البخاري: ٢٩٩٣]

बाब 62: मुसाफिर की उसी कद्र इबादतें लिखी जाती है जो वो अकामत की हालत में करता है।

٦٢ - باب: يُكْتَبُ لِلْمُسَافِرِ مَا كَانَ يَعْمَلُ فِي الإِقَامَةِ

1286: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब बन्दा बीमार होता है या सफर करता है तो वो जिस कद्र इबादत ठहराव की हालत और तन्दुरूस्ती की हालत में करता था, उसके लिए वो सब लिखी जाती हैं।

١٢٨٦ : عَنْ أَبِي مُوسى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِذَا مَرِضَ الْعَبْدُ، أَوْ سَافَرَ، كُتِبَ لَهُ مِثْلُ مَا كَانَ يَعْمَلُ مُقِيمًا صَحِيحًا). [رواه البخاري: ٢٩٩٦]

फायदे : अगर कोई बीमारी या सफर की वजह से फर्ज की अदायगी से तंग रहे तो हदीस के ऐतबार से उम्मीद है कि सवाब से महरूम नहीं किया जायेगा। मसलन खड़े होकर नमाज पढ़ना फर्ज है, लेकिन किसी मजबूरी की वजह से बैठकर नमाज पढ़ी जाये तो उसके लिए कयाम का सवाब लिख दिया जायेगा। (औनुलबारी, 3/552)

बाब 63 : अकेले सफर करना।

٦٣ - باب: السَّيْرُ وَحْدَهُ

1287: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अकेले चलने का जो नुकसान मुझे मालूम है वो अगर लोगों को मालूम हो जाये तो कोई सवार भी रात के वक्त अकेला सफर न करे।

١٢٨٧ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: (لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِي الْوَحْدَةِ مَا أَعْلَمُ، مَا سَارَ رَاكِبٌ بِلَيْلٍ وَحْدَهُ). [رواه البخاري: ٢٩٩٨]

फायदे : इमाम बुखारी ने हजरत जुबैर रजि. के बारे में एक हदीस जिक्र की है कि उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गजवा खन्दक के मौके पर जासूसी के लिए भेजा था, जिसका मतलब यह है

कि किसी जंगी जरूरत के पैशे नजर अकेला सफर करने में कोई हर्ज नहीं है। (औनुलबारी, 3/553)

बाब 64: मां-बाप की इजाजत से जिहाद करना।

٦٤ - باب: الجِهَادُ بِإِذْنِ الأَبَوَيْنِ

1288: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और उसने आपसे जिहाद की इजाजत मांगी। आपने पूछा, क्या तेरे वाल्देन जिन्दा हैं? उसने कहा, जी हां! फिर आपने फरमाया कि उन्हीं की खिदमत करने में कोशिश करो।

١٢٨٨ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَٱسْتَأْذَنَهُ فِي ٱلْجِهَادِ، فَقَالَ: (أَحَيٌّ وَالِدَاكَ؟). قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: (فَفِيهِمَا فَجَاهِدْ). [رواه البخاري: ٣٠٠٤]

फायदे : वाल्देन की खिदमत हर एक शख्स पर फर्ज है और जिहाद फर्जे किफाया है। अगर वाल्देन में से कोई एक या दोनों इजाजत ना दे तो जिहाद के लिए जाना जाइज नहीं। बशर्ते कि वाल्देन मुसलमान हो। अगर हर एक पर फर्ज हो जाये तो उनसे इजाजत लेना जरूरी नहीं। (औनुलबारी, 3/554)

बाब 65: ऊंट की गर्दन में घंटी वगैरह लटकाने का बयान।

٦٥ - باب: مَا قِيلَ فِي الجَرَسِ وَنَحْوِهِ فِي أَعْنَاقِ الإِبِلِ

1289: अबू बशीर अनसारी रजि. से रिवायत है कि वो किसी सफर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे, जब सब लोग अपनी अपनी ख्वाबगाहों में चले गये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक

١٢٨٩ : عَنْ أَبِي بَشِيرٍ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ كَانَ مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ، وَالنَّاسُ فِي مَبِيتِهِمْ، فَأَرْسَلَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ رَسُولاً: (أَنْ لاَ يَبْقَيَنَّ فِي رَقَبَةِ بَعِيرٍ قِلاَدَةٌ مِنْ وَتَرٍ - أَوْ قِلاَدَةٌ - إِلاَّ قُطِعَتْ). [رواه البخاري: ٣٠٠٥]

कासिद के हाथ पैगाम भेजा कि किसी ऊंट की गर्दन में कोई बंधन, तांत वगैरह न रहे बल्कि उसे काट दिया जाये।

फायदे : चूंकि इस तरह की तांत में घंटी बांधी जाती थी या बुरी नजर से बचने के लिए उसे इस्तेमाल किया जाता था। लिहाजा मना कर दिया गया है। इसलिए मना किया हो कि भागते वक्त उनके गले न घूट जायें। (औनुलबारी, 3/555)

बाब 66: जो आदमी जिहाद के लश्कर में लिख लिया जाये, फिर उसकी अहलिया (बीवी) हज को जाने लगे या कोई और कारण हो तो क्या उसको इजाजत दी जा सकती है?

٦٦ - باب: مَنِ اكْتُتِبَ فِي جَيْشٍ فَخَرجَتِ امْرَأَتُهُ حاجَّةً أَوْ كانَ لَهُ عُذْرٌ هَلْ يُؤْذَنُ لَهُ؟

1290: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना, कोई मर्द किसी अजनबी औरत के साथ तनहाई में न बैठे और न कोई औरत बगैर महरम के सफर करे। यह सुनकर एक आदमी खड़ा हुआ और कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरा नाम फलां फलां जिहाद के लिए लिख लिया गया है, लेकिन मेरी बीवी हज के लिए जा रही है। आपने फरमाया, जाओ अपनी बीवी के साथ हज करो।

١٢٩٠ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (لاَ يَخْلُوَنَّ رَجُلٌ بِٱمْرَأَةٍ، وَلاَ تُسَافِرَنَّ ٱمْرَأَةٌ إِلاَّ وَمَعَهَا مَحْرَمٌ)، فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، ٱكْتُتِبْتُ فِي غَزْوَةِ كَذَا وَكَذَا، وَخَرَجَتِ ٱمْرَأَتِي حَاجَّةً، قَالَ: (ٱذْهَبْ، فَحُجَّ مَعَ ٱمْرَأَتِكَ). [رواه البخاري: ٣٠٠٦]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक जरूरी काम को अहमीयत दी क्योंकि जिहाद में उसके बदले कोई दूसरा भी शरीक हो सकता था लेकिन हज्ज के सफर में उसकी बीवी के साथ कोई और नहीं जा सकता था। (औनुलबारी, 3/557)

बाब 67: कैदियों को जंजीरों से बांधना।

٦٧ - باب: الأسارَى في السَّلاَسِلِ

1291. अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अल्लाह उन लोगों के हाल पर ताअज्जुब करता है। जो जन्नत में जंजीरों से जकड़े हुए दाखिल होंगे।

١٢٩١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (عَجِبَ ٱللهُ مِنْ قَوْمٍ يَدْخُلُونَ الجَنَّةَ في السَّلاَسِلِ). [رواه البخاري: ٣٠١٠]

फायदे : इसका मतलब यह है कि दुनिया में जंजीर से जकड़कर मुसलमानों के कैदी बने, फिर खुशी से मुसलमान हुए और उसी इस्लाम पर उन्हें मौत हुई और जन्नत में दाखिल हुए। यानी उनका जंजीरों में जकड़ा जाना जन्नत में दाखिले का सबब बना।

(औनुलबारी, 3/558)

बाब 68: अगर काफिरों पर हमला करते वक्त औरते बच्चे सोते में कत्ल हो जायें तो जाइज है।

٦٨ - باب: أَهْلُ الدَّارِ يُبَيَّتُون فَيُصَابُ الوِلْدَانُ وَالذَّرَارِيُّ

1292. सअब बिन जस्सामा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अबवाअ या वद्दान के मकाम में मेरी तरफ से गुजरे तो उनसे पूछा गया कि जिन मुश्रिकीन से लड़ाई है, अगर हमलों में उनकी औरतों और बच्चों को मारा जाये तो कैसा है? आपने फरमाया, वो भी तो उन्हीं में से हैं और मैंने आपको यह भी फरमाते हुए सुना कि सरकारी चरागाह अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलावा किसी और के लिए जाईज नहीं।

١٢٩٢ : عَنِ الصَّعْبِ بْنِ جَثَّامَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: مَرَّ بِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِالأَبْوَاءِ أَوْ بِوَدَّانَ، وَسُئِلَ عَنْ أَهْلِ الدَّارِ يُبَيَّتُونَ مِنَ المُشْرِكِينَ، فَيُصَابُ مِنْ نِسَائِهِمْ وَذَرَارِيِّهِمْ؟ قالَ: (هُمْ مِنْهُمْ)، وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: (لا حِمَى إِلَّا لِلهِ تَعَالَى وَلِرَسُولِهِ ﷺ). [رواه البخاري: ٣٠١٢]

फायदेः यानी मुश्रिकिन के बच्चे और औरतें उन्हीं में शामिल हैं। अगर उनका बच्चा या औरत मुसलमानों का मुकाबला करे तो उनका कत्ल जरूरी है। इसी तरह अगर मुश्रिकीन उन बच्चों या औरतों को बतौर ढ़ाल इस्तेमाल करे तो उन्हें कत्ल करना जाइज है।

(औनुलबारी, 3/560)

बाब 69: लड़ाई में बच्चों का कत्ल कर देना कैसा है?

٦٩ - باب: قَتْلُ الصِّبْيَانِ فِي الحَرْبِ

1293: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जिहाद में एक औरत कत्ल हुई पाई गई। तब आपने औरतों और बच्चों को कत्ल करने से मना फरमाया।

١٢٩٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا : أَنَّ ٱمْرَأَةً وُجِدَتْ فِي بَعْضِ مَغَازِي النَّبِيِّ ﷺ مَقْتُولَةً، فَأَنْكَرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ قَتْلَ النِّسَاءِ وَالصِّبْيَانِ. [رواه البخاري: ٣٠١٤]

फायदेः बिला वजह जानबूझ कर औरतों और बच्चों को कत्ल करना मना है। अगर अन्जाने में कत्ल हो जाये तो इस पर पकड़ नहीं होगी।

(औनुलबारी, 3/562)

बाब 70: अल्लाह के अजाब से किसी को अजाब न दिया जाये।

٧٠ - باب: لا يُعَذَّبُ بِعَذَابِ الله

1294: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्हें खबर मिली कि अली रजि. ने कुछ लोगों को आग में जला दिया है तो उन्होंने कहा, अगर मैं होता तो उन्हें हरगिज न जलाता, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह के अजाब (आग) से किसी

١٢٩٤ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا : لَمَّا بَلَغَهُ أَنَّ عَلِيًّا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ حَرَّقَ قَوْمًا بِالنَّارِ، فَقَالَ : لَوْ كُنْتُ أَنَا لَمْ أُحَرِّقْهُمْ، لِأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : (لَا تُعَذِّبُوا بِعَذَابِ ٱللهِ). وَلَقَتَلْتُهُمْ، كَما قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : (مَنْ بَدَّلَ دِينَهُ فَاقْتُلُوهُ). [رواه البخاري: ٣٠١٧]

को अजाब न दो। हां मैं उनको कत्ल करवा देता, जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है, जो शख्स अपना दीन बदले, उसे कत्ल कर दो।

फायदेः दौरे हाजिर में जंगी सामान मसलन तौप, राकेट, गोला बारूद वगैरह तमाम आग ही की किस्म से हैं। चूंकि कुफ्फार ने इस किस्म का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। लिहाजा जवाबन ऐसा असला (हथियार) इस्तेमाल करने में कोई हर्ज नही है।

बाब 71:

٧١ - باب

1295: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि अम्बिया में से किसी नबी को एक चींटी ने काट खाया तो उसके हुक्म से चींटियो का बिल जला दिया गया। फिर अल्लाह ने उन पर वहीअ भेजी कि तुझे एक चींटी ने काटा, लेकिन तूने उनके एक गिरोह को जला दिया जो अल्लाह की तस्बीअ (पाकी बयान) करती थी।

١٢٩٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (قَرَصَتْ نَمْلَةٌ نَبِيًّا مِنَ الأَنْبِيَاءِ، فَأَمَرَ بِقَرْيَةِ النَّمْلِ فَأُحْرِقَتْ، فَأَوْحَى ٱللهُ إِلَيْهِ: أَنْ قَرَصَتْكَ نَمْلَةٌ أَحْرَقْتَ أُمَّةً مِنَ الأُمَمِ تُسَبِّحُ ٱللهَ). [رواه البخاري: ٣٠١٩]

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चींटी और शहद की मक्खी को मार डालने से मना फरमाया है। अलबत्ता मूजी (तकलीफ पहुंचाने वाले) जानवर को मारना या जलाना जाईज है। इमाम बुखारी का इस्तदलाल यही मालूम होता है। (औनुलबारी, 3/565)

बाब 72: घरों और नखलिस्तान (खुजूर के बागों) को जलाना।

٧٢ - باب: حَرْقُ الدُّورِ وَالنَّخِيلِ

1296: जुबैर रजि. से रिवायत है, उन्होंने

١٢٩٦ : عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ

آللهِ ﷺ: (ألا تُرِيحُنِي مِنْ ذِي الخَلَصَةِ؟)، وَكانَ بَيْتًا في خَثْعَمَ يُسَمَّى كَعْبَةَ اليَمانِيَةِ، قالَ: فَانْطَلَقْتُ في خَمْسِينَ وَمِائَةِ فارِسٍ مِنْ أَحْمَسَ، وَكانُوا أَصْحابَ خَيْلٍ، وَكُنْتُ لا أَثْبُتُ عَلَى الخَيْلِ، فَضَرَبَ في صَدْرِي حَتَّى رَأَيْتُ أَثَرَ أَصابِعِهِ في صَدْرِي وَقالَ: (اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ، وَاجْعَلْهُ هادِيًا مَهْدِيًّا). فَانْطَلَقَ إِلَيْها فَكَسَرَها وَحَرَّقَها، ثُمَّ بَعَثَ إِلَى رَسُولِ آللهِ ﷺ يُخْبِرُهُ، فَقالَ رَسُولُ جَرِيرٍ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالحَقِّ، ما جِئْتُكَ حَتَّى تَرَكْتُها كَأَنَّها جَمَلٌ أَجْوَفُ، أَوْ أَجْرَبُ. قالَ: فَبارَكَ في خَيْلِ أَحْمَسَ وَرِجالِها خَمْسَ مَرَّاتٍ. [رواه البخاري: ٣٠٢٠]

कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे फरमाया कि तुम मुझे जिलखलसा से राहत क्यों नहीं देते? यह कबिला खशअम में एक घर था, जिसको काअबा यमानिया कहा जाता था। जुबैर रजि. कहते हैं कि मैं आपका फरमान सुनकर कबिला अहमस के डेढ़ सौ सवारों के साथ चला, जिनके पास घोड़े थे लेकिन मेरा पांव घोड़े पर नहीं जमता था। आपने अपना हाथ मेरे सीने पर मारा, जिससे मैंने आपकी अंगुलियों के निशान अपने सीने पर देखे और आपने फरमाया, ऐ अल्लाह! उसको घोड़े पर जमा दे, इसे हिदायत करने वाला और हिदायत याफता बना दे। अलगर्ज जरीर रजि. वहां गये और उस बूत को तोड़ कर जला दिया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक आदमी के जरीए इसकी खबर दी। जरीर रजि. के कासिद ने बयान किया कि कसम है उस जात की, जिसने आपको हक दे कर भेजा है, मैं आपके पास उस वक्त आया हूँ, जबकि वो खारशी (खुजली वाले) ऊँट की तरह जल चुका था। रावी का बयान है कि आपने पांच बार यह दुआ-ए-कलमात इरशाद फरमाये "कबिला अहमस के घोड़ों और आदमियों में अल्लाह तआला बरकत फरमाये।"

फायदे: इस हदीस से मालूम हुआ कि दुश्मन के बागात और मकानात जलाना दुरूस्त है, अगरचे सहाबा किराम रजि. से इसकी नापसन्दीदगी नकल की गई है। मुमकिन है कि इन्हीं कारणों से उनके फतह होने का

यकीन हो गया हो। इसलिए बागात व मकानात तबाह करने को मकरूह समझा। (औनुलबारी, 3/567)

बाब 73: लड़ाई एक चाल का नाम है

٧٣ - باب: الحَرْبُ خَدْعَةٌ

1297: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, किसरा हलाक हो गया। अब इसके बाद दूसरा किसरा न होगा और कैसर भी हलाक हो गया और इसके बाद फिर दूसरा कैसर न होगा और कैसर व किसरा के खजाने अल्लाह की राह में तकसीम किये जायेंगे।

١٢٩٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (هَلَكَ كِسْرَى، ثُمَّ لاَ يَكُونُ كِسْرَى بَعْدَهُ، وَقَيْصَرُ لَيَهْلِكَنَّ ثُمَّ لاَ يَكُونُ قَيْصَرُ بَعْدَهُ، وَلَتُقْسَمَنَّ كُنُوزُهُمَا فِي سَبِيلِ ٱللهِ). [رواه البخاري: ٣٠٢٧]

फायदे: कुरैश अकसर तिजारत पैशा थे और बगर्ज तिजारत शाम और इराक जाते थे। जब मुसलमान हुए तो उन्होंने इस डर का इजहार किया कि अब कैसर और किसरा की हुकूमतें हमारी तिजारत में रूकावट डालेगी तो आपने उन्हें तसल्ली देते हुए यह पैशीन गोई फरमाई। (औनुलबारी, 3/568)

1298: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लड़ाई को मकरो फरैब (चाल और तदबीर) का नाम दिया। (मुराद चाल और तदबीर है)

١٢٩٨ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمَّى النَّبِيُّ ﷺ الحَرْبَ خِدْعَةً. [رواه البخاري: ٣٠٢٩]

फायदे: लड़ाई में जंगी चालों के जरीये दुश्मन को धोका दिया जा सकता है, लेकिन उससे मुराद दगाबाजी करना या वादा तोड़ना नहीं, क्योंकि ऐसा करना हराम और नाजाईज है। (औनुलबारी, 3/569)

बाब 74 : जंग में आपसी लड़ाई व इख्तिलाफ मना है और जो अपने इमाम

٧٤ - باب: مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّنَازُعِ وَالاخْتِلاَفِ فِي الحَرْبِ وَعُقُوبَةِ مَنْ

की नाफरमानी करे उसकी सजा।

عصى إمامه

1299: बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उहूद के दिन पचास पयादों पर अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि. को सरदार बनाने की ताकीद फरमाई। अगर तुम हमको इस हालत में भी देखो कि परिन्दे हमारा गोश्त नोच रहे हैं, तब भी अपनी जगह न छोड़ना ताकि मैं तुम से कहला भेजूं और अगर तुम देखो कि हमने काफिरों को मार भगाया है और खत्म कर दिया है तब भी तुमने अपनी जगह पर कायम रहना है। जब तक कि मैं तुम्हें पैगाम न भेजूं, चूनांचे मुसलमानों ने काफिरों को शिकस्त देकर भगा दिया। बराअ रजि. का बयान है, अल्लाह की कसम! मैंने खुद मुश्रिक औरतों को देखा कि वो अपने कपड़े उठाये भागी जा रहीं थी। नीज उनकी पाजेब और पिण्डलियां खुली हुई थी। यह नजारा देखकर अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि. के साथियों ने कहा, लोगों! अब लूट का माल उठाओ, गनीमत को इक्ट्ठा करो, तुम्हारे साथी फतह पा चुके हैं और तुम किस चीज का इन्तेजार कर रहे हो? अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि. ने

١٢٩٩ : عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى الرَّجَّالَةِ يَوْمَ أُحُدٍ - وَكَانُوا خَمْسِينَ رَجُلًا - عَبْدَ ٱللهِ بْنَ جُبَيْرٍ فَقَالَ: (إِنْ رَأَيْتُمُونَا تَخْطَفُنَا الطَّيْرُ فَلَا تَبْرَحُوا مَكَانَكُمْ هٰذَا حَتَّى أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ، وَإِنْ رَأَيْتُمُونَا هَزَمْنَا الْقَوْمَ وَأَوْطَأْنَاهُمْ، فَلَا تَبْرَحُوا حَتَّى أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ)، فَهَزَمُوهُمْ، قَالَ: فَأَنَا وَٱللهِ رَأَيْتُ النِّسَاءَ يَشْتَدِدْنَ، قَدْ بَدَتْ خَلَاخِلُهُنَّ وَأَسْوُقُهُنَّ، رَافِعَاتٍ ثِيَابَهُنَّ، فَقَالَ أَصْحَابُ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ جُبَيْرٍ: الْغَنِيمَةَ أَيْ قَوْمِ الْغَنِيمَةَ، ظَهَرَ أَصْحَابُكُمْ فَمَا تَنْتَظِرُونَ؟ فَقَالَ عَبْدُ ٱللهِ بْنُ جُبَيْرٍ: أَنَسِيتُمْ مَا قَالَ لَكُمْ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ؟ قَالُوا: وَٱللهِ لَنَأْتِيَنَّ النَّاسَ فَلَنُصِيبَنَّ مِنَ الْغَنِيمَةِ، فَلَمَّا أَتَوْهُمْ صُرِفَتْ وُجُوهُهُمْ فَأَقْبَلُوا مُنْهَزِمِينَ، فَذَاكَ إِذْ يَدْعُوهُمُ الرَّسُولُ فِي أُخْرَاهُمْ، فَلَمْ يَبْقَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ غَيْرُ اثْنَيْ عَشَرَ رَجُلًا، فَأَصَابُوا مِنَّا سَبْعِينَ، وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَصْحَابُهُ أَصَابُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ يَوْمَ بَدْرٍ أَرْبَعِينَ وَمِائَةً، سَبْعِينَ أَسِيرًا وَسَبْعِينَ قَتِيلًا، فَقَالَ أَبُو سُفْيَانَ: أَفِي الْقَوْمِ مُحَمَّدٌ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، فَنَهَاهُمُ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُجِيبُوهُ، ثُمَّ قَالَ: أَفِي

الْقَوْمِ ابْنُ أَبِي قُحَافَةَ، ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ قَالَ: أَفِي الْقَوْمِ ابْنُ الْخَطَّابِ، ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ رَجَعَ إِلَى أَصْحَابِهِ فَقَالَ: أَمَّا هَؤُلاَءِ فَقَدْ قُتِلُوا، فَمَا مَلَكَ عُمَرُ نَفْسَهُ، فَقَالَ: كَذَبْتَ وَاللهِ يَا عَدُوَّ اللهِ، إِنَّ الَّذِينَ عَدَدْتَ لأَحْيَاءٌ كُلُّهُمْ، وَقَدْ بَقِيَ لَكَ مَا يَسُوؤُكَ، قَالَ: يَوْمٌ بِيَوْمِ بَدْرٍ، وَالْحَرْبُ سِجَالٌ، إِنَّكُمْ سَتَجِدُونَ فِي الْقَوْمِ مُثْلَةً، لَمْ آمُرْ بِهَا وَلَمْ تَسُؤْنِي، ثُمَّ أَخَذَ يَرْتَجِزُ: أُعْلُ هُبَلْ، أُعْلُ هُبَلْ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَلاَ تُجِيبُونَهُ؟). قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ مَا نَقُولُ؟ قَالَ: (قُولُوا: اللهُ أَعْلَى وَأَجَلُّ)، قَالَ: إِنَّ لَنَا الْعُزَّى وَلاَ عُزَّى لَكُمْ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَلاَ تُجِيبُونَهُ؟)، قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ مَا نَقُولُ؟ قَالَ: (قُولُوا: اللهُ مَوْلاَنَا وَلاَ مَوْلَى لَكُمْ). [رواه البخاري: ٣٠٣٩]

कहा, क्या तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद गरामी भूल गये हो? उन्होंने कहा अल्लाह की कसम! हम लोगों के पास जाकर गनीमत का माल लूटेंगे। चूनांचे जब वो लोग वहां गये तो काफिरों ने उनके मुंह फैर दिये और शिकस्त खाकर भागने लगे। उस वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें पिछली तरफ बुला रहे थे और आपके साथ बारह आदमियों के अलावा और कोई न रहा हो काफिरों ने हमारे सत्तर आदमी शहीद कर दिये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा ने बदर के दिन एक सौ चालीस आदमियों का नुकसान किया था। सत्तर को जंजीरों में जकड़ा और सत्तर को कत्ल किया था। फिर अबू सुफियान ने तीन बार यह आवाज दी। क्या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों में जिन्दा हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा को जवाब देने से मना कर दिया था। इसके बाद फिर अबू सुफियान ने तीन बार यह आवाज दी.....क्या उन लोगों में अबू कुहाफा हैं, खत्ताब के बेटे भी मौजूद हैं? इसके बाद वो अपने साथियों की तरफ लौटा और कहने लगा, यह लोग तो कत्ल हो गये हैं। उस वक्त उमर रजि. बेताब होकर कहने लगे, अल्लाह की कसम! तूने गलत कहा है, अल्लाह के दुश्मन! यह सब जिनका तूने नाम लिया, जिन्दा हैं और अभी तेरा बुरा दिन आने

वाला है। अबू सुफियान ने कहा, आज बदर के दिन का बदला हो गया और लड़ाई तो ढोल की तरह है। लिहाजा तुम्हारे मर्दो के नाक, कान काटे गये हैं। अलबत्ता मैंने उसका हुक्म नहीं दिया, लेकिन मैं उसे बुरा भी नहीं समझता हूँ। इसके बाद अबू सुफियान शेर पढ़ने लगा: ऊंचा हो जा, ऐ हुब्बल तू ऊंचा हो जा ऐ हुब्बल।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा किराम रजि. से फरमाया, तुम उसे जवाब क्यों नहीं देते? सहाबा रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम? क्या जवाब दें आपने फरमाया तुम यूं कहो: सब से ऊंचा है वह इलाह, सब से रहेगा वो अजल (बड़ा)। फिर अबू सुफियान ने यह शेर पढ़ा:

हमारा उज्जा है तुम्हारे पास, उज्जा कहां। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया उसको जवाब नहीं देते? सहाबा किराम रजि. ने कहा, क्या जवाब दें। आपने फरमाया यूं कहो: हमारा मौला है इला, तुम्हारा मौला है कहां।

फायदे: वाकई इख्तेलाफ करने से जंगी ताकत तबाह हो जाने के बाद दुश्मन गालिब आ जाता है। इमाम बुखारी ने अपना दावा यूं साबित किया है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि. से उनके साथियों ने इख्तलाफ किया और मोर्चे से हट गये। नतीजे के तौर पर सजा पाई और परेशानी का सामना करना पड़ा। (औनुलबारी, 3/573)

---

७٥ - باب: مَنْ رَأى الْعَدُوَّ فَنادَى بِأعْلَى صَوْتِهِ: يَا صَبَاحَاهْ حَتَّى يُسْمِعَ النَّاسَ

बाब 75: दुश्मन को देखकर ऊंची आवाज में "या सबाहा (हाय सुबह की बर्बादी)" पुकारना ताकि लोग सुन ले।

١٣٠٠ : عَنْ سَلَمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجْتُ مِنَ المَدِينَةِ ذَاهِبًا نَحْوَ الْغَابَةِ، حَتَّى إذَا كُنْتُ بِثَنِيَّةِ الْغَابَةِ

1300: सलमा बिन अकवाअ रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं मदीना से गाबा की तरफ जा रहा था, जब मैं

لَقِيَنِي غُلاَمٌ لِعَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ، قُلْتُ: وَيْحَكَ ما بِكَ؟ قالَ: أُخِذَتْ لِقَاحُ النَّبِيِّ ﷺ، قُلْتُ: مَنْ أَخَذَهَا؟ قالَ: غَطَفَانُ وَفَزَارَةُ، فَصَرَخْتُ ثَلاَثَ صَرَخَاتٍ أَسْمَعْتُ ما بَيْنَ لاَبَتَيْهَا: يَا صَبَاحَاهْ يَا صَبَاحَاهْ، ثُمَّ ٱنْدَفَعْتُ حَتَّى أَلْقَاهُمْ وَقَدْ أَخَذُوهَا، فَجَعَلْتُ أَرْمِيهِمْ وَأَقُولُ:

أَنَا ٱبْنُ الأَكْوَعِ،

وَالْيَوْمُ يَوْمُ الرُّضَّعِ

فَٱسْتَنْقَذْتُهَا مِنْهُمْ قَبْلَ أَنْ يَشْرَبُوا، فَأَقْبَلْتُ بِهَا أَسُوقُهَا، فَلَقِيَنِي النَّبِيُّ ﷺ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ الْقَوْمَ عِطَاشٌ، وَإِنِّي أَعْجَلْتُهُمْ أَنْ يَشْرَبُوا سِقْيَهُمْ، فَٱبْعَثْ فِي إِثْرِهِمْ، فَقَالَ: (يَا ٱبْنَ الأَكْوَعِ: مَلَكْتَ فَأَسْجِحْ، إِنَّ الْقَوْمَ يُقْرَوْنَ فِي قَوْمِهِمْ). [رواه البخاري: ٣٠٤١]

गाबा की पहाड़ी पर पहुंचा तो मुझे अब्दुलरहमान बिन औफ रजि. का एक गुलाम मिला। मैंने कहा, तेरी खराबी हो तू यहां कैसे आया? उसने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊंटनियां पकड़ ली गई हैं। मैंने कहा, उन्हें किसने पकड़ा है? उसने जवाब दिया कि गतफान और फजारह के लोगों ने, इसके बाद मैं या सबाहा, या सबाहा कहता हुआ तीन बार चिल्लाया यहां तक कि मदीना के दोनो पत्थरीले किनारों में रहने वालों ने आवाज को सुन लिया। फिर मैं दौड़ता हुआ डाकूओं से जा मिला। वो ऊंटनियां लिए जा रहे थे। फिर मैंने उनको तीर मारने शुरू कर किए और मैं यह कह रहा था: मैं हूँ सलमा बिन अकवा जान लो, आज कमीने सब मरेंगे मान लो।

चूनांचे मैने वो ऊंटनियां उनसे छीन ली, इसके पहले कि वो उनका दूध पीते। मैं उन्हें हांकता हुआ ला रहा था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे मिले तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! डाकू प्यासे हैं, मैंने उन्हें पानी भी नहीं पीने दिया। लिहाजा आप जल्द ही उनके पीछे किसी को भेज दें। आपने फरमाया, ऐ इब्ने अकवा! तू उन पर गालिब हो चुका। अब जाने दे वो अपनी कौम में पहुंच गये। वहां उनकी मेहमानी हो रही है।

फायदे: जाहिलियत के दौर में जब मुसीबत आती तो बुलन्द आवाज में (या सबाहा, या सबाहा) कहा जाता। यानी यह सुबह मुसीबत भरी है,

जल्द आओ और मदद करो। अगर इस तरह की आवाज कुफ्फार व मुश्रिकीन के खिलाफ इस्तेमाल की जाये तो जाइज है, दूसरी सूरत मना है। (औनुलबारी, 3/575)

बाब 76 : कैदी को रिहा करना।

٧٦ - باب: فِكَاكُ الأَسِيرِ

1301: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कैदी को रिहा करो, भूखे को खाना खिलाओ और बीमार की देखभाल करो।

١٣٠١ : عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (فُكُّوا الْعَانِي [يَعْنِي: الأَسِيرَ] وَأَطْعِمُوا الجَائِعَ، وَعُودُوا المَرِيضَ). [رواه البخاري: ٣٠٤٦]

फायदे: दुश्मन की कैद से मुसलमान कैदी को रिहा करना जरूरी है, चाहे तबादला या मुआवजे या और किसी तरीके से, इसी तरह भूके को खिलाना भी इख्लाकी फर्ज है। अलबत्ता बीमार की देखरेख करना एक अच्छा काम है। (औनुलबारी, 3/576)

1302 : अबू हुजैफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने अली रजि. से पूछा कि अल्लाह की किताब के सिवा कुछ और वह्य भी तुम्हारे पास है? उन्होंने कहा नहीं, उस जात की कसम जिसने दाना फाड़ा और रूह को पैदा किया, मैं इस किस्म की वह्य से वाकिफ नहीं हूँ। अलबत्ता किताबुल्लाह का फहम (समझ) व बसीरत (जानकारी) एक दूसरी चीज है जो अल्लाह बन्दे को अता फरमाता है या जो इस सहिफा (छोटी किताब) में है। मैंने पूछा इस सहिफा में क्या है? उन्होंने कहा कि दैत के अहकाम कैदी को रिहा

١٣٠٢ : عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ لِعَلِيٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: هَلْ عِنْدَكُمْ شَيْءٌ مِنَ الْوَحْيِ إِلاَّ مَا فِي كِتَابِ ٱللهِ؟ قَالَ: لاَ وَالَّذِي فَلَقَ الحَبَّةَ وَبَرَأَ النَّسَمَةَ، مَا أَعْلَمُهُ إِلاَّ فَهْمًا يُعْطِيهِ ٱللهُ رَجُلاً فِي القُرْآنِ، وَمَا فِي هٰذِهِ الصَّحِيفَةِ، قُلْتُ: وَمَا فِي هٰذِهِ الصَّحِيفَةِ؟ قَالَ: الْعَقْلُ، وَفِكَاكُ الأَسِيرِ، وَأَنْ لاَ يُقْتَلَ مُسْلِمٌ بِكَافِرٍ. [رواه البخاري: ٣٠٤٧]

करना और यह कि मुसलमान काफिर के बदले में कत्ल न किया जाये।

फायदेः इस हदीस से शिया हजरात की भी तरदीद होती है जिनका दावा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बेशुमार कुरआनी आयात आम लोगों को नहीं बतायें, बल्कि सिर्फ हजरत अली रजि. और अहले बैअत को उनसे आगाह फरमाया। यह बिलकुल झूठ है।

(औनुलबारी, 3/577)

٧٧ - باب: فِدَاءُ الْمُشْرِكِينَ

बाब 77 : काफिरों से फिदिया (टैक्स) लेना।

١٣٠٣ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رِجَالًا مِنَ الأَنْصَارِ ٱسْتَأْذَنُوا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ، ٱئْذَنْ لَنَا فَلْنَتْرُكْ لِابْنِ أُخْتِنَا عَبَّاسٍ فِدَاءَهُ، فَقَالَ: (لَا تَدَعُونَ مِنْهُ دِرْهَمًا). [رواه البخاري: ٣٠٤٨]

1303: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है कि अनसार के कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप हुक्म दें तो हम अपने भांजे अब्बास रजि. के लिए उनका फिदिया माफ कर दें। आपने फरमाया, नहीं तुम उसके फिदिये से एक दिरहम भी न छोड़ो।

फायदेः मुसलमानों का हक वसूल करने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने हकीकी चाचा से भी कोई रियायत न की और इस सिलसिले में अनसारी की पेशकश को भी ठुकरा दिया। इसी तरह दीनी मामलात में रिश्तेदारी की बुनियाद पर सिफारिश करने का दरवाजा भी हमेशा के लिए बन्द कर दिया। (औनुलबारी, 3/578)

٧٨ - باب: الْحَرْبِيُّ إِذَا دَخَلَ دَارَ الإِسْلَامِ بِغَيْرِ أَمَانٍ

बाब 78: हरबी काफिर जब दारूलस्लाम में आमान (पनाह) लिए बगैर चला आये (तो उसके साथ क्या मामला किया जाये?)

١٣٠٤ : عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَى النَّبِيَّ ﷺ

1304: सलमा बिन अकवा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी

عَيْنٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَهُوَ فِي سَفَرٍ، فَجَلَسَ عِنْدَ أَصْحَابِهِ يَتَحَدَّثُ ثُمَّ انْفَتَلَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (اطْلُبُوهُ وَاقْتُلُوهُ)، فَقَتَلَهُ فَنَفَّلَهُ سَلَبَهُ. [رواه البخاري: ٣٠٥١]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास मुश्रिकीन का एक जासूस आया, जबकि आप सफर में थे और वो सहाबा किराम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठ कर बातें करता रहा। फिर उठकर चल दिया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उसे ढूंढ कर मार डालो। सलमा रजि. ने उसे कत्ल कर दिया तो आपने उन्हें जासूस का सामान भी दिला दिया।

फायदे: यह जंगे हवाजिन का वाक्या है, इससे पहले माले गनीमत के अहकाम नाजिल हो चुके थे कि वो सिर्फ अल्लाह के लिए है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस कुरआनी आम हुक्म को खास फरमाया कि काफिर का साजो सामान उसे कत्ल करने वाले को मिलता है। (औनुलबारी, 3/579)

٧٩ - باب: جَوَائِزُ الوَفْدِ

बाब 79: आने वालों (सफीरों) को इनाम देना।

٨٠ - باب: هل يُسْتَشْفَعُ إِلَى أَهْلِ الذِّمَّةِ وَمُعَامَلَتِهِمْ

बाब 80: जिमीयों (इस्लामी मुल्क में टैक्स देकर रहने वाले काफिर) की सिफारिश और उनसे मामला करना।

١٣٠٥ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: يَوْمُ الخَمِيسِ وَمَا يَوْمُ الخَمِيسِ، ثُمَّ بَكَى حَتَّى خَضَبَ دَمْعُهُ الحَصْبَاءَ، فَقَالَ: اشْتَدَّ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ وَجَعُهُ يَوْمَ الخَمِيسِ، فَقَالَ: (ائْتُونِي بِكِتَابٍ أَكْتُبْ لَكُمْ كِتَابًا لَنْ تَضِلُّوا بَعْدَهُ أَبَدًا). فَتَنَازَعُوا، وَلَا

1305: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि जुमेरात का दिन! क्या है जुमेरात का दिन! इसके बाद वो इतना रोये कि आंसू से जमीन की कंकरीया तर हो गई। फिर कहने लगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीमारी जुमेरात के दिन ज्यादा हो

يَنْبَغِي عِنْدَ نَبِيٍّ تَنَازُعٌ، فَقَالُوا: هَجَرَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ؟ قَالَ: (دَعُونِي، فَالَّذِي أَنَا فِيهِ خَيْرٌ مِمَّا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ)، وَأَوْصَى عِنْدَ مَوْتِهِ بِثَلاثٍ: (أَخْرِجُوا الْمُشْرِكِينَ مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ، وَأَجِيزُوا الْوَفْدَ بِنَحْوِ مَا كُنْتُ أُجِيزُهُمْ). وَنَسِيتُ الثَّالِثَةَ. [رواه البخاري: ٣٠٥٣]

गई। तो आपने फरमाया था, मेरे पास लिखने के लिए कुछ लाओ ताकि मैं तुम्हें एक तहरीर लिख दूं कि तुम उसके बाद हरगिज गुमराह नहीं होगे। लेकिन लोगों ने इख्तिलाफ किया तो आपने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने झगड़ना मुनासिब नहीं फिर लोगों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह जुदाई की बातें कर रहे हैं। आपने फरमाया, मुझे छोड़ दो, क्योंकि मैं इस हालत में हूं वो उससे बेहतर है जिसकी तरफ तुम मुझे बुला रहे हो और आपने अपनी वफात के वक्त तीन बातों की वसीयत फरमाई। मुश्रिकीन को जजीरा अरब से निकाल देना और कासिदों को उसी तरह इनाम देना, जिस तरह मैं देता था। रावी कहता है, मैं तीसरी बात भूल गया।

फायदे: बजाहिर यह मालूम होता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. की खिलाफत के मुताल्लिक कुछ परवाना तहरीर कराना चाहते थे, क्योंकि मुस्लिम की रिवायत में है कि आपने हजरत आइशा रजि. से फरमाया कि अपने बाप और भाई को बुलाओ। मुझे अन्देशा है कि कोई और इस (खिलाफत) की तमन्ना कर बैठे कि मैं उसका हक रखता हूँ। फिर फरमाया कि अल्लाह और दूसरे मुसलमान हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि. के अलावा किसी और को तसलीम नहीं करेंगे। (औनुलबारी, 3/581)

---

٨١ - باب: كَيْفَ يُعْرَضُ الإِسْلامُ عَلَى الصَّبِيِّ

बाब 81. बच्चे पर इस्लाम कैसे पेश किया जाये?

١٣٠٦: عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ

1306: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है,

عَنْهُمَا قَالَ: قَامَ النَّبِيُّ ﷺ فِي النَّاسِ، فَأَثْنَى عَلَى ٱللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ، ثُمَّ ذَكَرَ ٱلدَّجَّالَ، فَقَالَ: (إِنِّي أُنْذِرُكُمُوهُ، وَمَا مِنْ نَبِيٍّ إِلاَّ قَدْ أَنْذَرَهُ قَوْمَهُ، لَقَدْ أَنْذَرَهُ نُوحٌ قَوْمَهُ، وَلٰكِنْ سَأَقُولُ لَكُمْ فِيهِ قَوْلاً لَمْ يَقُلْهُ نَبِيٌّ لِقَوْمِهِ. تَعْلَمُونَ أَنَّهُ أَعْوَرُ، وَأَنَّ ٱللهَ لَيْسَ بِأَعْوَرَ). [رواه البخاري: ٣٠٥٧]

उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों के मजमुए में खड़े हो गये और अल्लाह की शायान शान तारीफ की। इसके बाद दज्जाल के जिक्र में फरमाया, मैं तुम्हें दज्जाल से डराता हूं और हर नबी ने अपनी उम्मत को दज्जाल से डराया है। यहां तक कि नूह अलैहि. ने भी अपनी उम्मत को उससे डराया था। मगर मैं तुम्हें ऐसी निशानी बतलाता हूँ जो किसी नबी ने अपनी उम्मत को नहीं बतलाई। तुम्हें इल्म होना चाहिए कि वो काना होगा और अल्लाह तआला काना नहीं है।

फायदे: जाहिरी तौर पर यह हदीस उनवान के मुताबिक नहीं, लेकिन यह एक लम्बी हदीस का हिस्सा है। उसमें इब्ने सयाद का भी जिक्र किया गया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे फरमाया तू गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। उस वक्त वो जवान होने के करीब था। इस तरह इस तरह उनवान से मुताबिकत (मेल, ताल्लुक) हो गई। (औनुलबारी, 3/586)

बाब 82: मरदुम शुमारी (गिनती) करने का बयान।

٨٢ - باب: كِتَابَةُ الإِمَامِ النَّاسَ

١٣٠٧ : عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (ٱكْتُبُوا لِي مَنْ تَلَفَّظَ بِالإِسْلاَمِ مِنَ النَّاسِ) فَكَتَبْنَا لَهُ أَلْفًا وَخَمْسَمِائَةِ رَجُلٍ. فَقُلْنَا: نَخَافُ وَنَحْنُ أَلْفٌ وَخَمْسُمِائَةٍ، فَلَقَدْ رَأَيْتُنَا ٱبْتُلِينَا حَتَّى إِنَّ الرَّجُلَ لَيُصَلِّي وَحْدَهُ وَهُوَ خَائِفٌ. [رواه البخاري: ٣٠٦٠]

1307. हुजैफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जितने लोग भी कलाम इस्लाम पढ़ते हैं, उनकी मरदूम शुमारी करके मेरे सामने पेश करो। चूनांचे हमने एक हजार पांच सौ मर्दो के नाम

लिखे। फिर हमने अपने दिल में कहा, क्या हम अब भी काफिरों से डरें। हालांकि हम पन्द्रह सौ है? फिर मैंने अपनी जमाअत को देखा कि हम इस कद्र डर गये कि हममें से कोई अकेला डर के मारे ही नमाज पढ़ लेता है।

फायदे: हजरत हुजैफा रजि. ने यह बात उस वक्त कही, जब वलीद बिन उकबा हजरत उस्मान रजि. की तरफ से कुफा का गवर्नर था और नमाज में बहुत देर करता था तो परहेजगार लोग अव्वल वक्त अकेले ही नमाज अदा कर लेते थे, लेकिन हमारे दौर में तो हुकूमरान नमाज का नाम ही नहीं लेते।

बाब 83: जो शख्स दुश्मन पर गालिब होकर तीन दिन तक उनके मैदान में ठहरा रहे।

٨٣ - باب: مَن غَلَبَ العَدُوَّ فَأَقَامَ عَلَى عَرْصَتِهِمْ ثَلاثًا

1308: अबू तल्हा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब किसी कौम पर गालिब हो जाते तो तीन दिन तक उसी मैदान में ठहरे रहते थे।

١٣٠٨ : عَنْ أَبِي طَلْحَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: أَنَّهُ كَانَ إِذَا ظَهَرَ عَلَى قَوْمٍ أَقَامَ بِالْعَرْصَةِ ثَلاثَ لَيَالٍ. [رواه البخاري: ٣٠٦٥]

फायदे: ताकि उस इलाके की कामयाबी के लिए फायदेमन्द दुरूस्तगी को लागू किया जाये। नीज इस्लाम की शान व शौकत का इजहार भी मकसूद होता। तीन दिन इसलिए ठहरते कि मुसाफिराना हालत बरकरार रहे, क्योंकि इससे ज्यादा पड़ाव इकामत (ठहराव) में शामिल हो जाता है। (औनुलबारी, 3/588)

बाब 84: जब मुश्रिक किसी मुसलमान का माल लूट ले, फिर वो मुसलमान अपना माल पा लेने में कामयाब हो जाये तो क्या हुक्म है?

٨٤ - باب: إِذَا غَنِمَ المُشْرِكُونَ مَالَ المُسْلِمِ ثُمَّ وَجَدَهُ المُسْلِمُ

1309. अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में उनका एक घोड़ा भाग निकला और उसे दुश्मन ने पकड़ लिया। फिर मुसलमानों ने काफिरों पर जब फतह पाई तो घोड़ा उन्हें वापस कर दिया गया। इस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिन्दगी के बाद उनका एक गुलाम भी भाग कर रोम के काफिरों से मिल गया था। जब मुसलमान उन पर गालिब हुए तो खालिद बिन वलीद रजि. ने वो गुलाम उन्हें वापस कर दिया।

١٣٠٩ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ذَهَبَ فَرَسٌ لَهُ فَأَخَذَهُ ٱلْعَدُوُّ، فَظَهَرَ عَلَيْهِ ٱلْمُسْلِمُونَ فَرُدَّ عَلَيْهِ فِي زَمَنِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، وَأَبَقَ عَبْدٌ لَهُ فَلَحِقَ بِالرُّومِ، فَظَهَرَ عَلَيْهِمُ ٱلْمُسْلِمُونَ، فَرَدَّهُ عَلَيْهِ خَالِدُ بْنُ ٱلْوَلِيدِ يَعْنِي بَعْدَ ٱلنَّبِيِّ ﷺ. [رواه البخاري: ٣٠٦٧]

फायदे: इमाम बुखारी का मतलब यह है कि काफिर गलबा के बाद भी मुसलमान के किसी माल के मालिक नहीं बन सकते।

(औनुलबारी, 3/589)

बाब 85: फरमाने इलाही है: तुम्हारे रंग और जुबानों के इख्तलाफ में भी कुदरत की निशानी है (रूम) हमने कोई रसूल नहीं भेजा, मगर वो अपनी कौम की जुबान बोलता था।" लिहाजा फारसी या कोई और अजमी (अरबी के अलावा) जुबान बोलना जाइज है।

٨٥ - باب: مَنْ تَكَلَّمَ بِالْفَارِسِيَّةِ وَالرَّطَانَةِ وقول الله تعالى: ﴿وَٱخْتِلَٰفُ أَلْسِنَتِكُمْ وَأَلْوَٰنِكُمْ﴾ وَقَالَ: ﴿وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِۦ﴾

1310: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने गजवा खन्दक के वक्त अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम!

١٣١٠ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، ذَبَحْنَا بُهَيْمَةً لَنَا، وَطَحَنْتُ صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ، فَتَعَالَ

أَنْتَ وَنَفَرٌ، فَصَاحَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: (يَا أَهْلَ الخَنْدَقِ، إِنَّ جَابِرًا قَدْ صَنَعَ سُورًا، فَحَيَّهَلَا بِكُمْ). [رواه البخاري: ٣٠٧٠]

मैंने एक बकरी का बच्चा जिब्ह किया है और एक साअ जौ का आटा पीसा है। लिहाजा आप और दूसरे कुछ लोग तशरीफ ले चलें तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बुलन्द आवाज में फरमाया, ऐ अहले खन्दक! जाबिर रजि. ने तुम्हारे लिए जियाफत (मेहमानी का खाना) तैयार किया है, आओ जल्दी चलें।

फायदे: इन अहादीस से उन लोगों का खुलासा मकसूद है जो अरबी के अलावा दूसरी जुबानों के सीखने पर नाक भौं चढ़ाते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद बाज औकात फारसी अल्फाज इस्तेमाल फरमाये हैं। जैसा कि इस हदीस में सूर फारसी का लफ्ज है।

١٣١١ : عَنْ أُمِّ خَالِدٍ بِنْتِ خَالِدِ ابْنِ سَعِيدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَتَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ مَعَ أَبِي وَعَلَيَّ قَمِيصٌ أَصْفَرُ، قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (سَنَهْ سَنَهْ)، وَهِيَ بِالحَبَشِيَّةِ حَسَنَةٌ، قَالَتْ: فَذَهَبْتُ أَلْعَبُ بِخَاتَمِ النُّبُوَّةِ، فَزَبَرَنِي أَبِي، قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (دَعْهَا)، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَبْلِي وَأَخْلِقِي، ثُمَّ أَبْلِي وَأَخْلِقِي، ثُمَّ أَبْلِي وَأَخْلِقِي). [رواه البخاري: ٣٠٧١]

1311: उम्मे खालिद बिन्ते खालिद बिन सईद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैं अपने वालिद के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुई। उस वक्त मेरे जिस्म पर जर्द रंग का कुर्ता था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सनाह सनाह हब्शी जुबान में उसके मायने ''अच्छी है'' के हैं। उम्मे खालिद रजि. कहते हैं कि फिर मैं मोहरे (स्टाम्प) नबूवत से खेलने लगी तो मेरे वालिद ने मुझे डांटा। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उसे खेलने दो। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (मुझे दुआ दी) फरमाया कुर्ता पुराना करो और फाड़ो, फिर कुर्ता पुराना करो और फाड़ो, फिर पुराना करो और फाड़ो (यानी तेरी उम्र दराज हो)

٨٦ - باب: الْغُلُولُ وَقَولُ الله عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَمَن يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ﴾

बाब 86: अल्लाह तआला का फरमान है: "जो गनीमत के माल में चोरी करेगा वो उसके समैत कयामत के दिन आयेगा।" की रोशनी में माले गनीमत में ख्यानत करने का बयान।

١٣١٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَامَ فِينَا النَّبِيُّ ﷺ فَذَكَرَ الْغُلُولَ فَعَظَّمَهُ وَعَظَّمَ أَمْرَهُ، قَالَ: (لاَ أُلْفِيَنَّ أَحَدَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى رَقَبَتِهِ شَاةٌ لَهَا ثُغَاءٌ، عَلَى رَقَبَتِهِ فَرَسٌ لَهَا حَمْحَمَةٌ، يَقُولُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ أَغِثْنِي، فَأَقُولُ: لاَ أَمْلِكُ لَكَ مِنَ ٱللهِ شَيْئًا، قَدْ أَبْلَغْتُكَ، وَعَلَى رَقَبَتِهِ بَعِيرٌ لَهُ رُغَاءٌ، يَقُولُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ أَغِثْنِي، فَأَقُولُ: لاَ أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا قَدْ أَبْلَغْتُكَ، وَعَلَى رَقَبَتِهِ صَامِتٌ فَيَقُولُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ أَغِثْنِي، فَأَقُولُ: لاَ أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا قَدْ أَبْلَغْتُكَ، أَوْ عَلَى رَقَبَتِهِ رِقَاعٌ تَخْفِقُ، فَيَقُولُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ أَغِثْنِي، فَأَقُولُ: لاَ أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا قَدْ أَبْلَغْتُكَ). [رواه البخاري: ٣٠٧٣]

1312: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमें खुत्बा सुनाने खड़े हुए और आपने गनीमत में ख्यानत का मामले को बहुत संगीन जाहिर किया। फिर फरमाया, मैं तुम से किसी शख्स को कयामत के दिन इस हाल में न पाऊं कि उसकी गर्दन पर बकरी सवार हो और वो मिमया रही हो या उसकी गर्दन पर घोड़ा हिनहिना रहा हो। फिर वो आदमी कहे कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी फरयादरसी फरमायें! और मैं कह दूं कि मैं तेरे लिए कुछ इख्तियार नहीं रखता। क्योंकि मैं तो तुझे अल्लाह का पैगाम पहुंचा चुका हूँ और या उसकी गर्दन पर ऊंट बिलबिला रहा हो और वो आदमी कहे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरी मदद कीजिए और मैं कह दूं कि मैं अब कोई इख्तियार नहीं रखता। मैंने तो तुझे अल्लाह का पैगाम पहुंचा दिया था और या इसकी गर्दन पर सोने चांदी जैसा खामोश माल हो और वो आदमी कहे ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरी फरियादरसी फरमाये! और मैं

कह दूं कि मैं अब कोई इख्तियार नहीं रखता। मैंने तुझे अल्लाह का पैगाम पहुंचा दिया है और या इसकी गर्दन पर कपड़ा हो जो उसका गला घोंट रहा हो और वो आदमी कहे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरी फरियादरसी फरमायें और मैं कह दूं कि अब मैं कोई इख्तियार नहीं रखता। मैं तो तुझे अल्लाह का पैगाम पहुंचा चुका हूँ।

फायदे: इन अहादीस में ख्यानत की संगीनी बयान करना मकसूद है कि कयामत के दिन भरे मजमूये में ख्यानत पेशा लोगों को सब भी सामने जलील व रूस्वा किया जायेगा। नीज ख्यानत थोड़ी हो या ज्यादा जुर्म में सब बराबर है। (औनुलबारी, 3/594)

बाब 87: गनीमत में थोड़ी सी ख्यातन करना।

٨٧ - باب: القَلِيلُ مِنَ الغُلُولِ

1313: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि किर किरा नामी एक आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामान पर मुकर्रर था। जब वो मर गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि वो दोजख में है। लोग उसका हाल देखने गये तो उन्होंने उसके सामान में एक चादर पाई, जिसको उसने ख्यानत के तौर पर माले गनीमत से चुरा लिया था।

١٣١٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ عَلَى ثَقَلِ رَسولِ ٱللهِ ﷺ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ كِرْكِرَةُ فَمَاتَ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (هُوَ فِي النَّارِ)، فَذَهَبُوا يَنْظُرُونَ إِلَيْهِ فَوَجَدُوا عَبَاءَةً قَدْ غَلَّهَا. [رواه البخاري: ٣٠٧٤]

बाब 88: गाजियों का इस्तकबाल करना।

٨٨ - باب: اسْتِقْبَالُ الغُزَاةِ

1314: इब्ने जबीर रजि. से रिवायत है कि उन्होने इब्ने उमर रजि. से कहा, क्या तुम्हें याद है कि जब हम, तुम और

١٣١٤ : عَنِ ابْنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ قَالَ لابْنِ جَعْفَرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَتَذْكُرُ إِذْ تَلَقَّيْنَا رَسُولَ

اَللهِ ﷺ أَنَا وَأَنْتَ وَابْنُ عَبَّاسٍ؟ قَالَ: نَعَمْ، فَحَمَلَنَا وَتَرَكَكَ. [رواه البخاري: ٣٠٨٢]

इब्ने अब्बास रजि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्तकबाल को गये थे? उन्होनें कहा, हां! खूब याद है कि आपने हमें तो अपने साथ सवार कर लिया था और तुम्हें छोड़ दिया था।

फायदे: सही मुस्लिम और मुसनद अहमद की रिवायत से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन जाफर रजि. को छोड़कर अब्दुल्लाह बिन जुबैर और अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. को अपने साथ बैठाया था। यह रावी का वहम है। इमाम बुखारी की रिवायत ज्यादा बेहतर है। (औनुलबारी, 3/597)

١٣١٥ : عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ذَهَبْنَا نَتَلَقَّى رَسُولَ اللهِ ﷺ مَعَ الصِّبْيَانِ إِلَى ثَنِيَّةِ الْوَدَاعِ. [رواه البخاري: ٣٠٨٣]

1315: साइब बिन यजीद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम बच्चों के साथ मिलकर घाटी तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्तकबाल के लिए गये थे।

फायदे: तिरमजी की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब तबूक (जंग का नाम) से वापस आये तो बच्चो ने आपका इस्तकबाल किया था। (औनुलबारी, 3/597)

١٣١٦ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ مَقْفَلَهُ مِنْ عُسْفَانَ، وَرَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى رَاحِلَتِهِ، وَقَدْ أَرْدَفَ صَفِيَّةَ بِنْتَ حُيَيٍّ، فَعَثَرَتْ نَاقَتُهُ فَصُرِعَا جَمِيعًا، فَاقْتَحَمَ أَبُو طَلْحَةَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ جَعَلَنِي اللهُ فِدَاءَكَ، قَالَ: (عَلَيْكَ الْمَرْأَةَ)، فَقَلَبَ ثَوْبًا عَلَى وَجْهِهِ وَأَتَاهَا فَأَلْقَاهُ عَلَيْهَا، وَأَصْلَحَ لَهُمَا

1316: अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम उसफान से वापसी पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी ऊंटनी पर सवार थे और आपने सफिय्या बिन्ते होयई रजि. को अपने पीछे बिठाया हुआ था। फिर अचानक

مَرْكَبُهُمَا قَرِيبًا، وَاكْتَنَفْنَا رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، فَلَمَّا أَشْرَفْنَا عَلَى الْمَدِينَةِ، قَالَ: (آيِبُونَ تَائِبُونَ، عَابِدُونَ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ)، فَلَمْ يَزَلْ يَقُولُ ذٰلِكَ، حَتَّى دَخَلْنَا الْمَدِينَةَ. [رواه البخاري: ٣٠٨٦]

आपकी ऊंटनी का पांव फिसला और आप दोनों गिर पड़े। यह हाल देखकर अबू तल्हा रजि. जल्दी से कूद कर आये और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह तआला आप पर मुझे कुरबान फरमाये, चोट तो नहीं आई? आपने फरमाया, पहले औरत की खबर लो, लिहाजा अबू तल्हा रजि. अपने मुंह पर कपड़ा डालकर सफिय्या रजि. के पास गये और वही कपड़ा सफिय्या रजि. पर डाल दिया। फिर दोनों के लिए सवारी दुरूस्त की। चूनांचे दोनों सवार हुए। हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जमा हो गये। फिर जब हम मदीना के करीब पहुंचे तो आपने फरमाया, "हम वापस हो रहे हैं तौबा करते हुए, अपने अल्लाह की इबादत और तारीफ करते हुए।" आप लगातार यही कलमात फरमाते रहे यहां तक कि मदीना में दाखिल हुए।

फायदे: यह वाक्या गजवा खैर से वापसी पर पेश आया, क्योंकि गजवा उसफान 6 हिजरी में हुआ, जबकि गजवा खैबर 7 हिजरी का है और इसी सफर में हजरत सफिया रजि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थी। (औनुलबारी 3/598)

٨٩ - باب: الصَّلَاةُ إِذَا قَدِمَ مِن سَفَرٍ

बाब 89: सफर से वापसी पर नमाज पढ़ना।

١٣١٧ : عَنْ كَعْبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ ضُحًى دَخَلَ الْمَسْجِدَ، فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يَجْلِسَ. [رواه البخاري: ٣٠٨٨]

1317. कअब रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब किसी सफर से दिन चढ़े वापिस आते तो पहले मस्जिद में तशरीफ ले जाते और बैठने से पहले दो रकअत निफ्ल अदा करते।

फायदेः मकसद यह था कि सफर का खत्म मस्जिद के साथ के ताल्लुक पर हो और अल्लाह का शुक्रिया अदा किया जाये कि उसने खैर व भलाई के साथ वापस आने की तौफिक दी।

---

٩٠ - باب: فَرْضِ الْخُمُسِ

बाब 90: खुमूस (माले गनीमत के पांचवे हिस्से) के फर्ज होने का बयान।

١٣١٨ : عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّه قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لاَ نُورَثُ، ما تَرَكْنَا صَدَقَةٌ)، وَكانَ يُنْفِقُ مِن المالِ الذي أفاءَ الله عَلَيْهِ عَلَى أَهْلِهِ نَفَقَةَ سَنَتِهِم، ثُمَّ يَأْخُذُ ما بَقِيَ فَيَجْعَلُهُ مَجْعَلَ مالِ ٱللهِ، ثُمَّ قَالَ لِمَنْ حَضَرَهُ مِنَ الصَّحابَةِ: أَنْشُدُكُم باللهِ الَّذِي بِإِذْنِهِ تَقُومُ السَّمَاءُ وَالأَرْضُ، هَلْ تَعْلَمُونَ ذٰلِكَ؟ قالوا: نَعَمْ، وكانَ في المَجْلِسِ عَلِيٌّ وعبّاسٌ وعُثْمانُ وعَبْدُ الرَّحْمٰن بن عَوْفٍ والزُّبَيْرُ وسَعْدُ بْنُ أَبِي وقَّاصٍ، وَذَكَرَ حَدِيث عَلِيٍّ والعبّاس ومُنازَعَتَهُما، ولَيْس الإِنْباتُ بِهِ مِن شَرْطِنا. [رواه البخاري: ٣٠٩٤]

1318: उमर बिन खत्ताब रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हमारा कोई वारिस नहीं होता और जो कुछ हम छोड़ जायें वो सदका है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस माल में से जो अल्लाह ने आपको बतौर फय (उस माल को बोला जाता है, जो काफिरों से लड़ाई झगड़ा किये बगैर हासिल हो जाये) दिया था, उसमें से अपने घर वालों के साल भर के मुसारिफ (खर्च-बर्च) में खर्च फरमाते। इसके बाद जो बाकी रहता, उसको उस मसरफ में खर्च फरमाते जहां सदका खर्च किया जाता। फिर उमर रजि. ने हाजिरीन से फरमाया, मैं तुम्हें उस अल्लाह की कसम देता हूँ, जिसके हुक्म से यह आसमान और जमीन कायम है। क्या तुम यह जानते हो? लोगो ने कहा, हाँ! उस वक्त मजलिस में अली, अब्बास, उसमान, अब्दुल रहमान बिन औफ, जुबैर और साद बिन अबी वकास रजि. मौजूद थे।

नोट : इमाम बुखारी रजि. ने इसके बाद हजरत अली और हजरत अब्बास रजि. के झगड़े की पूरी हदीस जिक्र की, जिसका लाना हमारे फराईज में शामिल नहीं। (क्योंकि अखबारे सहाबा हमारा मौजूअ नहीं है।)

फायदे: माले फई में से अपने घर वालों के लिए साल भर के लिए गल्ला और खजूरें रख लेते, उसके बावजूद कुछ वक्तों में दूसरे कामों में घर की जरूरत के लिए रखा हुआ साजो सामान खर्च हो जाता और आप घरेलू जरूरतों के लिए कर्जा लेने पर मजबूर हो जाते।

(औनुलबारी, 3/602)

٩١ - باب: ما ذُكِرَ مِنْ دِرْعِ النَّبِيِّ ﷺ وَعَصاهُ وَسَيْفِهِ وَقَدَحِهِ وَخَاتَمِهِ وَما اسْتَعْمَلَ الْخُلَفَاءُ بَعْدَهُ مِن ذٰلِكَ مِمَّا لَمْ يُذْكَر قِسْمَتُهُ وَمِن شَعَرِهِ وَنَعْلِهِ وَآنِيَتِهِ مما تَبَرَّكَ أَصْحَابُهُ وَغَيْرُهُمْ بَعْدَ وَفَاتِهِ

बाब 91: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिरह (लोहे का लिबास), असा (लाठी), प्याला और अंगूठी का जिक्र, जिन्हें आपके बाद खलिफा ने इस्तेमाल किया, लेकिन उनकी तकसीम मनकूल नहीं इसी तरह आपके बाल मुबारक, नआलेन (जूते) और बर्तनों का बयान जिनसे आपकी वफात के बाद सहाबा और दूसरे सहाबा बरकत हासिल करते रहे।

١٣١٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ أَخْرَجَ إِلَى الصَّحَابَةِ نَعْلَيْنِ جَرْدَاوَيْنِ لَهُمَا قِبَالاَنِ، فَحَدَّثَ: أَنَّهُمَا نَعْلا النَّبِيِّ ﷺ. [رواه البخاري: ٣١٠٧]

1319: अनस रजि. से रिवायत है कि उन्होंने बगैर बालों के दो पुरानी जूतीयां सहाबा किराम रजि. के सामने निकाली। उन पर दो तसमे (फिते) लगे हुए थे और फरमाया यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जूते थे।

फायदेः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम चीजें बाबरकत थी। उनसे बरकत हासिल करने में कोई हर्ज नहीं है। अलबत्ता उन चीजों की बनाई हुई तस्वीरों को बतौर नुमाईश इस्तेमाल करना शरीअत के खिलाफ है। चूनांचे आजकल के मखसूस गौरो-फिक्र ताल्लुक रखने वाले कुछ लोग अकसर दुकानों और बसों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाल मुबारक, नालेन, लाठी और मुसल्ला (जाये नमाज) वगैरह की तस्वीर के कार्ड लिए फिरते हैं और उनके बारे में लोगों को यह बताते हैं कि इनको घरों, दुकानों या दफ्तर वगैरह में रखने से हर किस्म की मुसीबत व बला टल जाती है। तंगदस्त की तंगी दूर हो जाती है और जरूरतमन्द की जरूरत पूरी हो जाती है, वगैरह, वगैरह। यह सब कुछ इस्लामी कानून के खिलाफ है, शरीअत में इन तस्वीरों व ख्यालात के लिए कोई दलील नहीं। तस्वीर से अगर असल का मकसूद हासिल हो सकता है तो हर घर में बैतुल्लाह की तस्वीर रख कर, लाख नमाज का सवाब हासिल किया जा सकता। हजरे असवद की तस्वीर रखकर उसका तवाफ कर लिया जाये, मक्का मुकर्रमा जाने की जरूरत ही न रहे।

1320: आइशा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने एक पैबन्द (कारी) लगी हुई चादर निकाली और बयान किया कि इसको ओढ़े हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वफात पाई।

١٣٢٠ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّهَا أَخْرَجَتْ كِسَاءً مُلَبَّدًا، وَقَالَتْ: فِي هٰذَا نُزِعَ رُوحُ ٱلنَّبِيِّ ﷺ. [رواه البخاري: ٣١٠٨]

फायदेः पैबन्द लगी चादर खाकसारी और आजजी के तौर पर या इत्तेफाक से कभी पहनी होगी, क्योंकि जानबुझकर ऐसा कपड़ा पहनना साबित नहीं है, बल्कि आपकी आदत मुबारक थी कि जो कपड़ा मिलता, उसे पहनते, बिला जरूरत फटी पुरानी पैबन्द लगी चादर पहनना आपकी शान के लायक न था।

1321: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने एक मोटा तहबन्द निकाला जो यमन में बनता था और एक चादर जिसको तुम मुलब्बदा (मोटा या पैबन्ददार) कहते हो (फरमाया कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हैं)

١٣٢١ : وَفِي رِوَايَةٍ: أَنَّهَا أَخْرَجَتْ إِزَارًا غَلِيظًا مِمَّا يُصْنَعُ بِالْيَمَنِ، وَكِسَاءً مِنْ هٰذِهِ الَّتِي تَدْعُونَهَا الْمُلَبَّدَةَ. [رواه البخاري: ٣١٠٨]

1322: अनस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्याला टूट गया तो आपने टूटे हुए प्याले को चांदी के तार से जोड़ लिया था।

١٣٢٢ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ قَدَحَ النَّبِيِّ ﷺ ٱنْكَسَرَ، فَٱتَّخَذَ مَكَانَ الشَّعْبِ سِلْسِلَةً مِنْ فِضَّةٍ. [رواه البخاري: ٣١٠٩]

फायदे: सही बुखारी के कुछ नुस्खो में यह इबारत मौजूद है "इमाम बुखारी फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्याला बसरा में किसी के पास देखा और उससे पानी पीया।"

(औनुलबारी, 10/103)

बाब 92: फरमाने इलाही "माले गनीमत में से पांचवे हिस्सा अल्लाह के लिए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए है।" (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसको तकसीम करेगा)

٩٢ - باب: قوله تعالى: ﴿فَأَنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ﴾

1323. जाबिर बिन अब्दुल्लाह अनसारी रजि. से रिवायत है, उन्होंनें फरमाया कि हम अनसार में से एक आदमी के यहां लड़का पैदा हुआ तो उसने उसका नाम कासिम रखा। इस पर अनसार ने कहा,

١٣٢٣ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: وُلِدَ لِرَجُلٍ مِنَّا غُلاَمٌ فَسَمَّاهُ الْقَاسِمَ، فَقَالَتِ الأَنْصَارُ: لاَ نَكْنِيكَ أَبَا الْقَاسِمِ، وَلاَ نُنْعِمُكَ عَيْنًا، فَأَتَى

النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، وُلِدَ لِي غُلَامٌ، فَسَمَّيْتُهُ الْقَاسِمَ، فَقَالَتِ الأَنْصَارُ: لاَ نَكْنِيكَ أَبَا الْقَاسِمِ وَلاَ نُنْعِمُكَ عَيْنًا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَحْسَنَتِ الأَنْصَارُ، سَمُّوا بِٱسْمِي وَلاَ تَكْتَنُوا بِكُنْيَتِي، فَإِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ). [رواه البخاري: ٣١١٥]

हम तुझे अबू कासिम हरगिज नहीं कहेंगे और न ही उस कुन्नियत (निसबत) से तेरी आंख ठण्डी करेंगे। यह सुनकर वो आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरे यहां लड़का पैदा हुआ है और मैंने उसका नाम कासिम रखा है। अब अनसार कहते हैं कि हम तूझे न तो अबू कासिम कहेंगे और न ही तेरी आंख ठण्डी करेंगे। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अनसार ने अच्छा किरदार अदा किया है। मेरे नाम पर नाम तो रख लो, मगर मेरी कुन्नियत मत इख्तयार करो, क्योंकि कासिम तो मैं ही हूँ।

फायदे: माले खुमश में अल्लाह का जिक्र ताजिम के लिए है, इसमें इख्तिलाफ है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हिस्से का मालिक होता है या सिर्फ तकसीम करने वाला है। बुखारी का मानना यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके मालिक नहीं होते, बल्कि उसकी तकसीम आपके जिम्मे होती है।

١٣٢٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (مَا أُعْطِيكُمْ وَلاَ أَمْنَعُكُمْ إِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ أَضَعُ حَيْثُ أُمِرْتُ). [رواه البخاري: ٣١١٧]

1324: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि न तो मैं तुम्हें कुछ देता हूँ और न ही तुम से कोई चीज रोक सकता हूँ। मैं तो तकसीम करने वाला हूँ, जहां मुझे हुक्म दिया जाता है, वहीं खर्च करता हूँ।

١٣٢٥ : عَنْ خَوْلَةَ الأَنْصَارِيَّةِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّ رِجَالًا يَتَخَوَّضُونَ فِي مَالِ ٱللهِ بِغَيْرِ حَقٍّ، فَلَهُمُ ٱلنَّارُ يَوْمَ ٱلْقِيَامَةِ). [رواه البخاري: ٣١١٨]

1325: खोला अनसारिया रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना जो लोग अल्लाह के माल में फालतू खर्च करते हैं, वो कयामत के दिन दोजख में जायेंगे।

फायदे: इस हदीस के पेशे नजर हाकिम वक्त का यह फर्ज है कि वो कौमी खजाना फिजूल कामों में खर्च न करे, बल्कि अदल व इन्साफ के साथ उसे सही काम में खर्च करना चाहिए।

(औनुलबारी, 3/607)

---

٩٣ - باب: قَوْلُ ٱلنَّبِيِّ ﷺ: «أُحِلَّتْ لَكُمُ ٱلْغَنَائِمُ»

बाब 93: फरमाने नबवी कि तुम्हारे लिए माले गनीमत हलाल कर दिया गया है।

١٣٢٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (غَزَا نَبِيٌّ مِنَ ٱلأَنْبِيَاءِ، فَقَالَ لِقَوْمِهِ: لَا يَتْبَعْنِي رَجُلٌ مَلَكَ بُضْعَ ٱمْرَأَةٍ، وَهُوَ يُرِيدُ أَنْ يَبْنِيَ بِهَا وَلَمَّا يَبْنِ بِهَا، وَلَا أَحَدٌ بَنَى بُيُوتًا وَلَمْ يَرْفَعْ سُقُوفَهَا، وَلَا آخَرُ ٱشْتَرَى غَنَمًا أَوْ خَلِفَاتٍ، وَهُوَ يَنْتَظِرُ وِلَادَهَا، فَغَزَا، فَدَنَا مِنَ ٱلْقَرْيَةِ صَلَاةَ ٱلْعَصْرِ، أَوْ قَرِيبًا مِنْ ذٰلِكَ، فَقَالَ لِلشَّمْسِ: إِنَّكِ مَأْمُورَةٌ وَأَنَا مَأْمُورٌ، ٱللَّهُمَّ ٱحْبِسْهَا عَلَيْنَا، فَحُبِسَتْ حَتَّى فَتَحَ ٱللهُ عَلَيْهِ، فَجَمَعَ ٱلْغَنَائِمَ فَجَاءَتْ - يَعْنِي ٱلنَّارَ - لِتَأْكُلَهَا فَلَمْ تَطْعَمْهَا، فَقَالَ: إِنَّ

1326. अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि पहले अम्बिया में से एक नबी ने जिहाद किया तो उन्होंने अपनी कौम से फरमाया, मेरे साथ वो आदमी न जाये जिसने किसी औरत से निकाह तो किया हो, लेकिन अभी तक रुख्सती न हुई हो और वो रुख्सती का चाहने वाला हो और न वो आदमी जाये, जिसने घर की चारदीवारी तो की हो और अभी तक छत न डाली हो और न ही वो आदमी जिसने हामिला बकरियां और ऊंटनियां खरीदी हों और

فِيكُمْ غُلولاً، فَلْيُبَايِعْني مِنْ كُلِّ قَبِيلَةٍ رَجُلٌ، فَلَزِقَتْ يَدُ رَجُلٍ بِيَدِهِ، فَقَالَ: فِيكُمُ الغُلُولُ، فَلْتُبَايِعْني قَبِيلَتُكَ فَلَزِقَتْ يَدُ رَجُلَيْنِ أَوْ ثَلاثَةٍ بِيَدِهِ فَقَالَ: فِيكم الغُلُولُ فَجَاؤُوا بِرَأْسٍ مِثْلِ رَأْسِ بَقَرَةٍ مِنَ الذَّهَبِ، فَوَضَعُوهَا، فَجَاءَتِ النَّارُ فَأَكَلَتْهَا، ثُمَّ أَحَلَّ ٱللهُ لَنَا الغَنَائِمَ، رَأَى ضَعْفَنَا وَعَجْزَنَا، فَأَحَلَّهَا لَنَا). [رواه البخاري: ٣١٢٤]

उनके बच्चे जनने का मुन्तजिर हो। यह कहकर वो जिहाद के लिए गये और एक गांव के करीब उस वक्त पहुंचे कि असर का वक्त हो चुका था या नजदीक था। उन्होंने सूरज से कहा कि तू भी अल्लाह का महकूम है और मैं भी उसी का ताबेअ (मानने वाला) हूँ। फिर यूं दुआ की, ऐ अल्लाह! इसको हमारे लिए ढ़लने से रोक दे। चूनांचे वो रोक लिया गया यहां तक कि अल्लाह ने उनको फतह दी। फिर उन्होंने माले गनीमत को इकट्ठा किया। फिर आग आई ताकि उसे खा जाये, लेकिन उसने न खाया। तो नबी अलैहि. ने कहा, तुम में से किसी ने ख्यानत की है। लिहाजा अब हर कबीले का एक एक आदमी मुझ से बैअत करे। चूनांचे एक आदमी का हाथ उनके हाथ से चिपक गया तो नबी अलैहि. ने फरमाया कि तेरे कबीले वालों ने चोरी की है। लिहाजा तुम्हारे कबीले के सब लोग मुझ से बैअत करें। फिर दो या तीन आदमियों के हाथ उनके हाथ से चिपक गये। फिर नबी अलैहि. ने फरमाया, तुम ने ही ख्यानत का एरतकाब किया है। फिर वो सोने का सर लाये जो गाय के सर जैसा था, उसको उन्होंने रखा तो आग ने आकर माले गनीमत को खा लिया। फिर अल्लाह ने हमारे लिए माले गनीमत को हलाल कर दिया। चूंकि उसने हमारी आजजी और कम ताकती को मुलाहेजा फरमाया। इसलिए हमारे लिए माले गनीमत को जाइज करार दिया।

फायदे: इस उम्मत के मुसलमानों की अल्लाह के सामने आजजी और कम ताकती इस कद्र रंग लाई कि माले गनीमत उनके लिए हलाल कर दिया गया। यह इस उम्मत की खासियत है जो दूसरी उम्मतों को नहीं मिली। (औनुलबारी, 3/611)

बाब 94:

٩٤ - باب

1327: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ फौज नज्द की तरफ रवाना की जिसमें अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. भी थे और उन्होंने बहुत से ऊंट गनीमत में पाये। हर एक के हिस्से में बारह बारह या ग्यारह ग्यारह आये। फिर एक एक ऊंट उन्हें ज्यादा ईनाम में दिया गया।

١٣٢٧ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ بَعَثَ سَرِيَّةً قِبَلَ نَجْدٍ، وَهُوَ فيها فَغَنِمُوا إِبِلًا كَثِيرَةً، فَكانَتْ سِهامُهُمُ ٱثْنَيْ عَشَرَ بَعِيرًا، أَوْ: أَحَدَ عَشَرَ بَعِيرًا، وَنُفِّلُوا بَعِيرًا بَعِيرًا. [رواه البخاري: ٣١٣٤]

फायदे: बुखारी में यह हदीस बिला उनवान नहीं है बल्कि इस पर यूं उनवान कायम किया है " इमाम माले खुमूस को अपनी सवाबदीद पर तकसीम करने का हकदार है, वो किसी को नुमाया खिदमात की वजह से ज्यादा भी दे सकता है। " चूनांचे इस हदीस में है कि तमाम गाजियों को माले गनीमत के अलावा एक एक ऊंट ज्यादा दिया गया, जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बरकरार रखा।

(औनुलबारी, 3/613)

1328. जाबिर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिराना के मुकाम में माले गनीमत तकसीम कर रहे थे, इतने में एक आदमी ने आपसे कहा कि इन्साफ कीजिए! आपने फरमाया, अगर मैं इन्साफ से तकसीम न करूं तो बदबख्त हो जाऊं।

١٣٢٨ : عَنْ جابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قالَ: بَيْنَما رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يَقْسِمُ غَنِيمَةً بِٱلْجِعْرَانَةِ، إِذْ قالَ لَهُ رَجُلٌ: ٱعْدِلْ، فَقالَ لَهُ: (لَقَدْ شَقِيتُ إِنْ لَمْ أَعْدِلْ). [رواه البخاري: ٣١٣٨]

फायदे: चूंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी सवाबदीद के मुताबिक माले खुमूस को तकसीम करने का इख्तियार था और आपने

किसी को इसकी नुमाया खिदमात की वजह से ज्यादा दिया होगा, तभी ऐतराज किया गया जिसकी हकीकत न थी।

1329: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि उमर रजि. ने हुनैन के कैदियों में से दो लौंडिया पाई थी और उनको मक्का के किसी घर में छोड़ दिया था। उनका बयान है कि फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जंगे हुनैन के कैदियों पर अहसान किया तो वो गली कूचो में दौड़ने लगी। इस पर उमर रजि. ने कहा, ऐ अब्दुल्लाह रजि.! देखो क्या मामला है? उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कैदियों पर अहसान करते हुए उन्हें आजाद कर दिया है। उमर रजि. ने कहा, जाओ और उन दोनों लौण्डियों को आजाद कर दो।

١٣٢٩ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَصَابَ جَارِيَتَيْنِ مِنْ سَبْيِ حُنَيْنٍ، فَوَضَعَهُمَا فِي بَعْضِ بُيُوتِ مَكَّةَ، قَالَ: فَمَنَّ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَلَى سَبْيِ حُنَيْنٍ، فَجَعَلُوا يَسْعَوْنَ فِي السِّكَكِ، فَقَالَ عُمَرُ: يَا عَبْدَ ٱللهِ، ٱنْظُرْ مَا هٰذَا؟ فَقَالَ: مَنَّ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ عَلَى السَّبْيِ، قَالَ: ٱذْهَبْ فَأَرْسِلِ الْجَارِيَتَيْنِ. [رواه البخاري: ٣١٤٤]

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत उमर रजि. को माले खुमूश से दो लौण्डिया दी थीं, जिनका इस हदीस में जिक्र है, चूनांचे इस हदीस पर इमाम बुखारी ने यूं उनवान बन्दी की है, रसूलुल्लाह का मुअल्लिफा कुलूब (हौसला अफजाई के लिए) और गैर मुअल्लिफा कुलूब (गैर हौसला अफजाई के लिए) को खुमूश से कुछ देना।

बाब 95 : जिसने काफिर मकतूल के सामानों में से खुमूस न लिया, नीज जिस मुसलमान ने किसी काफिर को कत्ल किया तो उसका सामान खुमूस

٩٥ - باب: مَنْ لَمْ يُخَمِّسِ الأَسْلاَبَ وَمَنْ قَتَلَ قَتِيلاً فَلَهُ سَلَبُهُ مِنْ غَيْرِ أَنْ يُخَمَّسَ وَحُكْمِ الإِمَامِ فِيهِ

की अदायगी और इमाम के हुक्म के बगैर ही उसी के लिए होगा।

1330: अब्दुल रहमान बिन औफ रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं लड़ाई के दिन मैदाने जंग में खड़ा था। मैंने अपने दायें-बायें देखा तो मुझे अनसार के दो कमऩिसन बच्चे नजर आये। मैंने यह आरजू की कि काश मैं उनसे जबरदस्त और मजबूत के दरमियान होता। इतने में मुझे उनमें से एक ने इशारे से पूछा, ऐ चचा! क्या तूम अबू जहल को पहचानते हो। मैंने कहा, हाँ। ऐ मेरे भतीजे! तुम्हें उससे क्या काम है? लड़के ने कहा, मुझे बताया गया है कि वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां देता है। कसम है, उस अल्लाह की जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर मैं उसको देख लूं तो मेरा जिस्म उसके जिस्म से अलग न होगा यहां तक कि हम में से जिसके लिए पहले मौत मुकर्रर है वो मर जाये। मुझे उसकी बात से ताज्जुब हुआ। फिर मुझे दूसरे ने इशारा किया और उसी कसम की बात उसने भी कही। अलगर्ज थोड़ी देर बाद मैंने अबू जहल को देखा कि वो लोगों में आ जा रहा है। मैंने कहा, देखो वो आ

١٣٣٠ : عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا أَنَا وَاقِفٌ فِي الصَّفِّ يَوْمَ بَدْرٍ، فَنَظَرْتُ عَنْ يَمِينِي وَشِمالِي، فَإِذَا أَنَا بِغُلاَمَيْنِ مِنَ الأَنْصَارِ، حَدِيثَةٍ أَسْنَانُهُمَا، تَمَنَّيْتُ أَنْ أَكُونَ بَيْنَ أَضْلَعَ مِنْهُمَا، فَغَمَزَنِي أَحَدُهُمَا فَقَالَ: يَا عَمِّ هَلْ تَعْرِفُ أَبَا جَهْلٍ؟ قُلْتُ: نَعَمْ، ما حاجَتُكَ إِلَيْهِ يَا ٱبْنَ أَخِي؟ قَالَ: أُخْبِرْتُ أَنَّهُ يَسُبُّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَئِنْ رَأَيْتُهُ لاَ يُفَارِقُ سَوَادِي سَوَادَهُ حَتَّى يَمُوتَ الأَعْجَلُ مِنَّا، فَتَعَجَّبْتُ لِذٰلِكَ، فَغَمَزَنِي الآخَرُ، فَقَالَ لِي مِثْلَهَا، فَلَمْ أَنْشَبْ أَنْ نَظَرْتُ إِلَى أَبِي جَهْلٍ يَجُولُ فِي النَّاسِ، قُلْتُ: أَلاَ، إِنَّ هٰذَا صَاحِبُكُمَا الَّذِي سَأَلْتُمانِي، فَٱبْتَدَرَاهُ بِسَيْفَيْهِمَا، فَضَرَبَاهُ حَتَّى قَتَلاَهُ، ثُمَّ ٱنْصَرَفَا إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَأَخْبَرَاهُ، فَقَالَ: (أَيُّكُمَا قَتَلَهُ؟). قَالَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا: أَنَا قَتَلْتُهُ، فَقَالَ: (هَلْ مَسَحْتُمَا سَيْفَيْكُمَا؟). قَالاَ: لاَ، فَنَظَرَ فِي السَّيْفَيْنِ، فَقَالَ: (كِلاَكُمَا قَتَلَهُ، سَلَبُهُ لِمُعَاذِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الجَمُوحِ)، وَكَانَا مُعَاذَ بْنَ عَفْرَاءَ وَمُعَاذَ بْنَ عَمْرِو بْنِ الجَمُوحِ. [رواه البخاري: ٣١٤١]

पहुंचा, जिसको तुम चाहते हो। फिर वो दोनों अपनी तलवारें लेकर उसकी तरफ बढ़े और वार करने लगे। यहां तक कि उसे कत्ल कर दिया। फिर वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लौट आये और आपसे वाक्या बयान किया तो आपने फरमाया, तुम में से किसने उसे कत्ल किया है। उनमें से हर एक कहने लगा, मैंने किया है। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, क्या तुम ने अपनी तलवारों को साफ कर लिया है? उन्होंने कहा, नहीं! फिर आपने उनकी तलवारें देखी और फरमाया कि तुम दोनों ने उसे कत्ल किया है। फिर आपने उसका सामान मुआज बिन अम्र बिन जमुह रजि. को दे दिया और यह दोनों मुआज बिन अफरा और मुआज बिन अम्र बिन जमूह रजि. थे।

फायदे: हुआ यूं कि मुआज बिन अम्र बिन जमूह ने उसका काम तमाम किया था चूंकि इस कार खैर में मुआज बिन अफरा रजि. भी शामिल था। इसलिए हौसला अफजाई के तौर पर फरमाया कि तुम दोनों ने उसे जहन्नम दाखिल किया है। (औनुलबारी, 3/617)

बाब 96: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मौअल्लफ कुलूब व गैर मौअल्लफा कुलू को खुमूस वगैरह से कुछ देना।

٩٦ - باب مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعْطِي الْمُؤَلَّفَةَ قُلُوبُهُمْ وَغَيْرَهُمْ مِنَ الْخُمُسِ وَغَيْرِهِ

1331: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं कुरैश को उनके दिल को जोड़ने के लिए ज्यादा देता हूँ, क्योंकि उनकी जाहिलियत (कुफ्र) का जमाना अभी अभी गुजरा है।

١٣٣١ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنِّي أُعْطِي قُرَيْشًا أَتَأَلَّفُهُمْ، لأَنَّهُمْ حَدِيثُ عَهْدٍ بِجَاهِلِيَّةٍ). [رواه البخاري: ٣١٤٦]

फायदे: इससे मालूम हुआ कि माले खुमूस इमाम वक्त की सवाबदीद पर मौकूफ है, वो जहां मुनासिब ख्याल करे, तकसीम करने का हकदार है। (औनुलबारी, 3/618)

١٣٣٢ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ نَاسًا مِنَ الأَنْصَارِ، قَالُوا لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ، حِينَ أَفَاءَ ٱللهُ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ مِنْ أَمْوَالِ هَوَازِنَ مَا أَفَاءَ، فَطَفِقَ يُعْطِي رِجَالًا مِنْ قُرَيْشٍ المِائَةَ مِنَ الإِبِلِ، فَقَالُوا: يَغْفِرُ ٱللهُ لِرَسُولِ ٱللهِ ﷺ، يُعْطِي قُرَيْشًا وَيَدَعُنَا، وَسُيُوفُنَا تَقْطُرُ مِنْ دِمَائِهِمْ. قَالَ أَنَسٌ: فَحُدِّثَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ بِمَقَالَتِهِمْ، فَأَرْسَلَ إِلَى الأَنْصَارِ فَجَمَعَهُمْ فِي قُبَّةٍ مِنْ أَدَمٍ، وَلَمْ يَدْعُ مَعَهُمْ أَحَدًا غَيْرَهُمْ، فَلَمَّا ٱجْتَمَعُوا جَاءَهُمْ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَقَالَ: (مَا كَانَ حَدِيثٌ بَلَغَنِي عَنْكُمْ؟). قَالَ لَهُ فُقَهَاؤُهُمْ: أَمَّا ذَوُو آرَائِنَا يَا رَسُولَ ٱللهِ فَلَمْ يَقُولُوا شَيْئًا، وَقَدْ تَقَدَّمَ الحَدِيثُ بِطُولِهِ. (برقم:١٣٣١)

[رواه البخاري: ٣١٤٧ وانظر حديث رقم: ١٤٣٤]

1332: अनस रजि. से रिवायत है कि जब अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हवाजिन के माल में से जितना भी गनीमत दिया तो उसमें से आपने कुरैश के कुछ लोगों को सौ सौ ऊंट दिये। इस पर कुछ अनसारी लोग कहने लगे कि अल्लाह अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को माफ करे। आप कुरैश को इतना दे रहे हैं और हमें नजरअन्दाज कर रहे हैं हालांकि हमारी तलवारों से काफिरों का खून टपक रहा है। अनस रजि. का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उनकी बात बयान की गई तो आपने अनसार को बुलाकर एक चमड़े के खेमें में जमा किया, लेकिन उनके साथ किसी और को न बुलाया और जब वो जमा हो गये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ लाये और फरमाया कि यह क्या बात है जो मुझे तुम्हारी तरफ से पहुंची है? उनके अकलमन्द लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम में से समझदार लोगों ने कुछ नहीं कहा है। यह मुकम्मिल हदीस (1473) आगे आ रही है।

फायदे : इस हदीस के आखिर में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि क्या तुम इस बात पर खुश नहीं हो कि लोग दुनिया का माल लेकर घरों को वापस जायें और तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साथ नसीब हो। इस पर तमाम अनसार खुश हो गये। (औनुलबारी, 3/620)

١٣٣٣ : عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ بَيْنَا هُوَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَمَعَهُ النَّاسُ، مُقْبِلًا مِنْ حُنَيْنٍ، عَلِقَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ الأَعْرَابُ يَسْأَلُونَهُ، حَتَّى اضْطَرُّوهُ إِلَى سَمُرَةٍ فَخَطِفَتْ رِدَاءَهُ، فَوَقَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: (أَعْطُونِي رِدَائِي، فَلَوْ كَانَ عَدَدُ هٰذِهِ الْعِضَاهِ نَعَمًا لَقَسَمْتُهُ بَيْنَكُمْ، ثُمَّ لاَ تَجِدُونِي بَخِيلًا، وَلاَ كَذُوبًا، وَلاَ جَبَانًا). [رواه البخاري: ٣١٤٨]

1333: जुबैर बिन मुतईम रजि. से रिवायत है कि वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। दूसरे कई लोग भी आपके साथ हुनैन से लौटकर आ रहे थे कि कुछ देहाती रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुछ मांगने लगे और ऐसा लपटे कि आपको कीकर के एक पेड़ की तरफ धकेल कर ले गये। जिसमें आपकी चादर अटक गई। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हो गये और फरमाया मेरी चादर तो दे दों अगर मेरे पास उन पेड़ों के बराबर ऊंट होते तो मैं वो तुम ही में बांट देता। तुम हरगिज मुझे बखील (कंजूस), छोटा और बुजदिल नहीं पाओगे।

फायदे: मालूम हुआ कि जरूरत के वक्त इन्सान अपने औसाफ हमीदा (अच्छी आदत) बयान कर सकता है, बशर्ते कि इजहारे फख्र का इरादा न हो। नीज यह भी मालूम हो कि कम से कम कायरीन (रहनुमा) हजरात को कंजूस, छोटा और बुजदिली जैसे बुरी आदतों से बचना चाहिए।

١٣٣٤ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ

1334: अनस रजि. से रिवायत है,

رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ أَمْشِي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَعَلَيْهِ بُرْدٌ نَجْرَانِيٌّ غَلِيظُ الحَاشِيَةِ، فَأَدْرَكَهُ أَعْرَابِيٌّ فَجَذَبَهُ جَذْبَةً شَدِيدَةً، حَتَّى نَظَرْتُ إِلَى صَفْحَةِ عَاتِقِ النَّبِيِّ ﷺ قَدْ أَثَّرَتْ بِهِ حَاشِيَةُ الرِّدَاءِ مِنْ شِدَّةِ جَذْبَتِهِ، ثُمَّ قَالَ: مُرْ لِي مِنْ مَالِ ٱللهِ الَّذِي عِنْدَكَ، فَٱلْتَفَتَ إِلَيْهِ فَضَحِكَ، ثُمَّ أَمَرَ لَهُ بِعَطَاءٍ. [رواه البخاري: ٣١٤٩]

उन्होंने फरमाया कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जा रहा था। उस वक्त आप पर एक मोटे हाशिया की नजरानी चादर थी। एक देहाती ने आपको घेर लिया और जोर से आपको खींचा। मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गर्दन और कंधे के बीच जोर से खींचे जाने के कारण चादर के हाशिये का निशान पड़ गया था। फिर देहाती ने कहा, अल्लाह का वो माल जो तुम्हारे पास है, उस में से कुछ मुझे भी दिलाओ। फिर आप उस की तरफ देखकर मुस्कराये और उसे कुछ देने का हुक्म फरमाया।

फायदे: इस हदीस से मालूम हुआ कि कायदीन हजरात को बुर्द बारी (समझदारी), बुलन्द हुसलगी (ऊंची हिम्मत), सब्र और जवानमर्दी जैसी खसलतों (आदतों) से पूर होना चाहिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में यह आदतें खूब खूब मौजूद थीं। (औनुलबारी, 3/622)

١٣٣٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ حُنَيْنٍ، آثَرَ النَّبِيُّ ﷺ أُنَاسًا فِي القِسْمَةِ، أَعْطَى الأَقْرَعَ بْنَ حَابِسٍ مِائَةً مِنَ الإِبِلِ، وَأَعْطَى عُيَيْنَةَ مِثْلَ ذٰلِكَ، وَأَعْطَى أُنَاسًا مِنْ أَشْرَافِ العَرَبِ، فَآثَرَهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي القِسْمَةِ، قَالَ رَجُلٌ: وَٱللهِ إِنَّ هٰذِهِ لَقِسْمَةٌ مَا عُدِلَ فِيهَا، أَوْ مَا أُرِيدَ فِيهَا وَجْهُ ٱللهِ، فَقُلْتُ: وَٱللهِ لَأُخْبِرَنَّ النَّبِيَّ ﷺ، فَأَتَيْتُهُ فَأَخْبَرْتُهُ،

1335: अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हुनैन के दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ लोगों को तकसीम में ज्यादा दिया था। चूनांचे अकराअ बिन हाबिस रजि. को सौ ऊंट और ओय्यना बिन हसन रजि. को भी सौ ऊंट दिये। उनके अलावा अरब के शरीफ लोगों में से कुछ लोगों को इसी तरह तकसीम में कुछ ज्यादा दिया तो एक

فَقَالَ: (فَمَنْ يَعْدِلُ إِذَا لَمْ يَعْدِلِ ٱللهُ وَرَسُولُهُ، رَحِمَ ٱللهُ مُوسَى، قَدْ أُوذِيَ بِأَكْثَرَ مِنْ هٰذَا فَصَبَرَ). [رواه البخاري: ٣١٥٠]

आदमी ने कहा, अल्लाह की कसम! यह ऐसी तकसीम है कि इसमें इन्साफ पेश नजर नहीं रखा गया या इसमें अल्लाह की रजा मकसूद न थी। मैंने कहा, अल्लाह की कसम! मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस बात से जरूर आगाह करूंगा। चूनांचे मैं आपके पास गया और आपसे बयान किया तो आपने फरमाया, अगर अल्लाह और उसका रसूल इन्साफ न करेंगे तो इन्साफ कौन करेगा? अल्लाह मूसा अलैहि. पर रहम फरमाये, उन्हें इससे भी ज्यादा तकलीफ दी गई, मगर उन्होंने सब्र किया।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस गुस्ताख को कोई सजा न दी क्योंकि जुर्म साबित करने के लिए इकरार हो या कम से कम दो गवाह हों। लेकिन इस मुकाम पर सिर्फ एक गवाही थी और गुस्ताख ने भी जुर्म के सही होने से इनकार कर दिया होगा। (औनुलबारी, 3/623)

बाब 97: काफिरों के मुल्क में खाने की चीजें मिले तो क्या हुक्म है?

٩٧ - باب: مَا يُصِيبُ مِنَ الطَّعَامِ فِي أَرْضِ الحَرْبِ

١٣٣٦ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا نُصِيبُ فِي مَغَازِينَا العَسَلَ وَالعِنَبَ، فَنَأْكُلُهُ وَلاَ نَرْفَعُهُ. [رواه البخاري: ٣١٥٤]

1336. इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम अपनी लड़ाईयों में शहद और अंगूर पाते थे तो उसे खा लेते (कब्जा के लिए) उसे न उठाते थे।

फायदे: मालूम हुआ कि खाने पीने की वो चीज जिनके खराब होने का अन्देशा हो, बांटने से पहले उनका इस्तेमाल जाइज है। इस तरह जानवरों के चारे का भी यही हुक्म है। (औनुलबारी, 3/624)

बाब 98: जिम्मी कारोबार (टैक्स देकर इस्लामी मुल्क में रहने वाला काफिर) से जजीया (टेक्स) लेना और हरबी व जिम्मी काफिरों से (किसी मसलीहत की बिना पर) सुल्ह करना।

٩٨ - باب: الجِزْيَةِ وَالمُوَادَعَةِ مَعَ أَهلِ الذِّمَّةِ والحَرْبِ

1337: उमर बिन खत्ताब रजि. से रिवायत है कि उन्होंने अपनी वफात से एक साल पहले बसरा वालों को खत लिखा कि जिस मजूसी (आग के पुजारी) ने अपनी महरम औरत (जिस औरत से शादी करना हराम हो) को बीवी बनाया हो तो दोनों के बीच जुदाई डाल दो और उमर रजि. मजूसियों से जजीया न लेते थे। यहां तक कि अब्दुल रहमान बिन औफ रजि. ने इस मामले की शहादत दी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजर के मकाम के मजूसियों से जजीया लिया था।

١٣٣٧ : عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ كَتَبَ إِلَى أَهْلِ الْبَصْرَةِ قَبْلَ مَوْتِهِ بِسَنَةٍ: فَرِّقُوا بَيْنَ كُلِّ ذِي مَحْرَمٍ مِنَ الْمَجُوسِ، وَلَمْ يَكُنْ عُمَرُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَخَذَ الْجِزْيَةَ مِنَ الْمَجُوسِ، حَتَّى شَهِدَ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ بْنُ عَوْفٍ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ أَخَذَهَا مِنْ مَجُوسِ هَجَرَ. [رواه البخاري: ٣١٥٦، ٣١٥٧]

फायदे: मौत्ता में है कि पारसियों से किताब वाले जैसा सलूक करो, इससे मालूम हुआ कि उनके वही अहकाम हैं जो अहले किताब के लिए हैं। वल्लाह आलम! (औनुलबारी, 3/625)

1338: अम्र बिन औफ अनसारी रजि. से रिवायत है जो आमिर बिन लुवय कबीले के हलीफ और गजवा बदर में शरीक हो चुके थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू उबैदा बिन जर्राह रजि. को बहरीन भेजा कि

١٣٣٨ : عَنْ عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وَهُوَ حَلِيفٌ لِبَنِي عَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ، وَكَانَ شَهِدَ بَدْرًا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ بَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الجَرَّاحِ إِلَى الْبَحْرَيْنِ يَأْتِي بِجِزْيَتِهَا، وَكَانَ رَسُولُ ٱللهِ هُوَ صَالَحَ أَهْلَ الْبَحْرَيْنِ وَأَمَّرَ عَلَيْهِمُ

الْعَلَاءَ بْنَ الْحَضْرَمِيِّ، فَقَدِمَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ، فَسَمِعَتِ الأَنْصَارُ بِقُدُومِ أَبِي عُبَيْدَةَ فَوَافَتْ صَلَاةَ الصُّبْحِ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَمَّا صَلَّى بِهِمُ الْفَجْرَ انْصَرَفَ، فَتَعَرَّضُوا لَهُ فَتَبَسَّمَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ حِينَ رَآهُمْ، وَقَالَ: (أَظُنُّكُمْ قَدْ سَمِعْتُمْ أَنَّ أَبَا عُبَيْدَةَ قَدْ جَاءَ بِشَيْءٍ). قَالُوا: أَجَلْ يَا رَسُولَ ٱللهِ، قَالَ: (فَأَبْشِرُوا وَأَمِّلُوا مَا يَسُرُّكُمْ، فَوَٱللهِ لَا الْفَقْرَ أَخْشَى عَلَيْكُمْ، وَلٰكِنْ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُبْسَطَ عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا، كَمَا بُسِطَتْ عَلَى مَنْ قَبْلَكُمْ، فَتَنَافَسُوهَا كَمَا تَنَافَسُوهَا، وَتُهْلِكَكُمْ كَمَا أَهْلَكَتْهُمْ). [رواه البخاري: ٣١٥٨]

वहां का जजीया ले आयें। हुआ यह था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहरीन वालों से सुल्ह कर ली थी और अला बिन हजरमी रजि. को वहां का हाकिम बना दिया था। अलगर्ज अबू उबैदा बिन जर्राह रजि. बहरीन का माल लेकर आये। अनसार ने अबू उबैदा रजि. के आने की खबर सुनी तो उन्होंने नमाज सुबह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अदा की। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें देखा तो मुस्कराते हुए फरमाया, मेरे ख्याल में तुमने सुन लिया है कि अबू उबैदा रजि. कुछ माल लाये हैं। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हां। आपने फरमाया तो फिर तुम खुश हो जाओ और खुशी की उम्मीद रखो, अल्लाह की कसम! मुझे तुम्हारी भूकमरी का इतना डर नहीं है, बल्कि मुझे इस बात का अन्देशा है कि तुम्हारे होते हुए दुनिया फैला दी जायेगी, जैसा कि तुम से पहले लोगों के लिए फैलाई गई थी और फिर तुम एक दूसरे से बढ़ोगे जैसा कि तुम से पहले लोगों ने किया था और वो तुम्हें हलाक कर देगी जैसा कि उनको हलाक कर दिया था।

फायदे: मुसलमानों का कौमी सतह पर जितना भी नुकसान हुआ है, अगर गौर से इसका जाइजा लिया जाये तो इसमें भी मनफी जज्बात (गलत असर) कार फरमा (काम करने वाले) नजर आते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी इसी मर्ज की निशानदेही फरमा रहे है।

1339: उमर बिन खत्ताब रजि. से रिवायत है कि उन्होंने लोगों को बड़े बड़े शहरों में मुश्रिक से जंग के लिए भेजा। फिर जब हुरमुजान मुसलमान हो गया तो उमर रजि. ने कहा कि मैं तुझ से अपनी उन जंगी कार्रवाईयों की बाबत मश्वरा करता हूं। हुरमुजान ने कहा बहुत खूब! इन मुल्कों की और जो वहां मुसलमानों के दुश्मन हैं, उनकी मिसाल एक परिन्दे की है, जिसका एक सर दो बाजू और दो पांव हो। अगर बाजू तोड़ दिया जाये तो वो परिन्दा दोनों पांव सर और एक ही बाजू से हरकत करेगा। अगर दूसरा बाजू भी तोड़ दें तब भी उसके दोनों पांव और सर खड़े हो जायेंगे। लेकिन अगर सर कुचल दिया जाये तो न पांव कुछ काम के रहेंगे, न बाजू और न सर। देखिये उन दुश्मनों का सर किसरा है और एक बाजू केसर और दूसरा बाजू फारिस है। लिहाजा आप मुसलमानों को हुक्म दे कि पहले वो किसरा की तरफ कूच करें, फिर उमर रजि. ने लोगों की एक जमाअत को जमा किया और नोमान बिन मुकर्रिम रजि. को सरदार बनाया और जब यह दुश्मन की सरजमीं में पहुंचे तो किसरा

١٣٣٩ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ بَعَثَ النَّاسَ فِي أَفْنَاءِ الأَمْصَارِ يُقَاتِلُونَ الْمُشْرِكِينَ، فَأَسْلَمَ الْهُرْمُزَانُ، فَقَالَ: إِنِّي مُسْتَشِيرُكَ فِي مَغَازِيَّ هٰذِهِ، قَالَ: نَعَمْ، مَثَلُهَا وَمَثَلُ مَنْ فِيهَا مِنَ النَّاسِ مِنْ عَدُوِّ الْمُسْلِمِينَ مَثَلُ طَائِرٍ: لَهُ رَأْسٌ وَلَهُ جَنَاحَانِ وَلَهُ رِجْلَانِ، فَإِنْ كُسِرَ أَحَدُ الْجَنَاحَيْنِ نَهَضَتِ الرِّجْلَانِ بِجَنَاحٍ وَالرَّأْسُ، فَإِنْ كُسِرَ الْجَنَاحُ الآخَرُ نَهَضَتِ الرِّجْلَانِ وَالرَّأْسُ، وَإِنْ شُدِخَ الرَّأْسُ ذَهَبَتِ الرِّجْلَانِ وَالْجَنَاحَانِ وَالرَّأْسُ، فَالرَّأْسُ كِسْرَى، وَالْجَنَاحُ قَيْصَرُ، وَالْجَنَاحُ الآخَرُ فَارِسُ، فَمُرِ الْمُسْلِمِينَ فَلْيَنْفِرُوا إِلَى كِسْرَى، فَنَدَبَ عُمَرُ، وَٱسْتَعْمَلَ عَلَيْنَا النُّعْمَانَ بْنَ مُقَرِّنٍ، حَتَّى إِذَا كَانُوا بِأَرْضِ الْعَدُوِّ، وَخَرَجَ عَلَيْنَا عَامِلُ كِسْرَى فِي أَرْبَعِينَ أَلْفًا، فَقَامَ تَرْجُمَانٌ فَقَالَ: لِيُكَلِّمْنِي رَجُلٌ مِنْكُمْ، فَقَالَ الْمُغِيرَةُ: سَلْ عَمَّا شِئْتَ، قَالَ: مَا أَنْتُمْ؟ قَالَ: نَحْنُ أُنَاسٌ مِنَ الْعَرَبِ، كُنَّا فِي شَقَاءٍ شَدِيدٍ، وَبَلَاءٍ شَدِيدٍ، نَمَصُّ الْجِلْدَ وَالنَّوَى مِنَ الْجُوعِ، وَنَلْبَسُ الْوَبَرَ وَالشَّعَرَ، وَنَعْبُدُ الشَّجَرَ وَالْحَجَرَ، فَبَيْنَا نَحْنُ كَذٰلِكَ إِذْ بَعَثَ رَبُّ السَّمٰوَاتِ وَرَبُّ الأَرَضِينَ - تَعَالَى ذِكْرُهُ، وَجَلَّتْ عَظَمَتُهُ - إِلَيْنَا

نَبِيًّا مِنْ أَنْفُسِنَا نَعْرِفُ أَبَاهُ وَأُمَّهُ، فَأَمَرَنَا نَبِيُّنَا، رَسُولُ رَبِّنَا ﷺ: أَنْ نُقَاتِلَكُمْ حَتَّى تَعْبُدُوا اللهَ وَحْدَهُ أَوْ تُؤَدُّوا الْجِزْيَةَ، وَأَخْبَرَنَا نَبِيُّنَا ﷺ عَنْ رِسَالَةِ رَبِّنَا: أَنَّهُ مَنْ قُتِلَ مِنَّا صَارَ إِلَى الْجَنَّةِ فِي نَعِيمٍ لَمْ يَرَ مِثْلَهَا قَطُّ، وَمَنْ بَقِيَ مِنَّا مَلَكَ رِقَابَكُمْ. فَقَالَ النُّعْمَانُ: رُبَّمَا أَشْهَدَكَ اللهُ مِثْلَهَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمْ يُنَدِّمْكَ وَلَمْ يُخْزِكَ، وَلَكِنِّي شَهِدْتُ الْقِتَالَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، كَانَ إِذَا لَمْ يُقَاتِلْ فِي أَوَّلِ النَّهَارِ، انْتَظَرَ حَتَّى تَهُبَّ الْأَرْوَاحُ، وَتَحْضُرَ الصَّلَوَاتُ. [رواه البخاري: ٣١٥٩، ٣١٦٠]

का एक आमिल चालीस हजार फौज लेकर उनके मुकाबले में आया और उसकी तरफ से एक तर्जुमान खड़ा होकर कहने लगा कि तुम में से कोई एक आदमी मुझ से बात करे। मुगीरा बिन शोबा रजि. ने कहा, पूछ जो चाहता है। उसने कहा, तुम कौन हो? मुगीरा रजि. ने जवाब दिया हम अरब लोग हैं, हम सख्त बदबख्ती और मुसीबत में गिरफ्तार थे। भूक के मारे चमड़ा और खजूर की गुठलियों चूसते थे। ऊन और बाल पहनते थे। पेड़ो और पत्थरों की पूजा करते थे। हम लोग इसी हालत में थे कि जमीन और आसमान के मालिक ने हमारी ही कौम का एक रसूल हमारे पास भेजा। जिसके वाल्देन को हम जानते थे। फिर हमारे परवरदिगार के रसूल और हमारे नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें हुक्म दिया कि जब तक तुम अकेले अल्लाह की इबादत न करो या जजीया न दो, उस वक्त तक हम तुमसे जंग करें। और हमारे नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे परवरदिगार का यह पैगाम पहुंचाया कि जो कोई हम से मारा जायेगा, वो बहिस्त (जन्नत) की ऐसी नैमतों में पहुंच जायेगा जो उसने कभी न देखी होंगी और जो आदमी हम में से जिन्दा रहेगा वो तुम्हारी गर्दनों का मालिक बनेगा। मुगीरा रजि. ने यह गुफ्तगू खत्म कर के जब फौरन लड़ाई शुरू करना चाही तो सरदार लश्कर नोमान बिन मुकरिन रजि. ने कहा कि तुम तो अक्सर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जंग में शरीक हुए और अल्लाह तआला ने तुम्हें किसी मौके पर शर्मिन्दा या जलील

नहीं किया और मैंने भी अक्सर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जंग में शरीक होकर देखा कि आप दिन के अव्वल वक्त में जंग न करते थे बल्कि इन्तेजार फरमाते यहां तक कि हवायें चलने लगती और नमाज का वक्त आ जाता।

फायदे: इस हदीस से आपसी मश्वरे की अहमीयत का पता चलता है। नीज यह भी मालूम हुआ कि मर्तबे (ओहदे) में बड़ा आदमी अपने से कमतर का मश्वरा ले सकता है। (औनुलबारी, 3/635)

बाब 99: जब इमाम किसी बस्ती के बादशाह से सुल्ह करे तो क्या यह सुल्ह तमाम बस्ती वालों की तरफ से मानी जायेगी?

٩٩ - باب: إذا وادع الإمام ملك القرية هل يكون ذلك لبقيتهم

1340: अबू हुमैद साअदी रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ तबूक का जिहाद किया और अयला के बादशाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक सफेद खच्चर तौहफा दिया तो आपने भी उसे एक चादर बतौरे चोगे के तौर पर पहनाई। नीज आपने उसका मुल्क उसी के नाम लिख दिया था।

١٣٤٠ : عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ تَبُوكَ، وَأَهْدَى مَلِكُ أَيْلَةَ لِلنَّبِيِّ ﷺ بَغْلَةً بَيْضَاءَ، وَكَسَاهُ بُرْدًا، وَكَتَبَ لَهُ بِبَحْرِهِمْ. [رواه البخاري: ٣١٦١]

फायदे : एक रिवायत में है कि जब आप तबूक जा रहे थे तो अयला के बादशाह का कासिद आपकी खिदमत में हाजिर हुआ, उसने जजीया देने पर आपसे सुल्ह कर ली। इस तरह तमाम अयला वाले अमन और सुल्ह में आ गये। (औनुलबारी, 3/636)

बाब 100: किसी जिम्मी काफिर को नाहक कत्ल करने में कितना गुनाह है?

١٠٠ - باب: إثم من قتل معاهدا بغير جرم

1341: अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजि. से रिवायत है कि वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जो आदमी किसी अहद वाले को कत्ल करेगा वो जन्नत की खुश्बू तक न पायेगा और बेशक जन्नत की खुश्बू चालीस बरस की दूरी तक पहुंचती है।

١٣٤١ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ قَتَلَ مُعَاهَدًا لَمْ يَرِحْ رَائِحَةَ الجَنَّةِ، وَإِنَّ رِيحَهَا تُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ أَرْبَعِينَ عامًا). [رواه البخاري: ٣١٦٦]

बाब 101: अगर काफिर मुसलमानों से दगा करें तो क्या उन्हें माफी दी जा सकती है?

١٠١ - باب: إِذَا غَدَرَ المُشْرِكُونَ بِالمُسْلِمِينَ هَلْ يُعْفَى عَنْهُمْ

1342: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब खैबर फतह हुआ तो यहूदियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक बकरी तोहफा भेजी, जिसमें जहर मिला हुआ था। आपने फरमाया कि यहां जितने यहूदी हैं, उन सब को इकट्ठा करो। चूनांचे वो सब आप के सामने इक्टठे किये गए। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं तुमसे एक बात पूछने वाला हूँ, क्या तुम सच सच बताओगे। उन्होंने कहा, जी हां! तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम्हारा बाप कौन है? उन्होंने कहा फलां आदमी,

١٣٤٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا فُتِحَتْ خَيْبَرُ أُهْدِيَتْ لِلنَّبِيِّ ﷺ شَاةٌ فِيهَا سُمٌّ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (اجْمَعُوا إِلَيَّ مَنْ كَانَ هَا هُنَا مِنْ يَهُودَ)، فَجُمِعُوا لَهُ، فَقَالَ: (إِنِّي سَائِلُكُمْ عَنْ شَيْءٍ فَهَلْ أَنْتُمْ صَادِقِيَّ عَنْهُ؟). فَقَالُوا: نَعَمْ، قَالَ لَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ: (مَنْ أَبُوكُمْ؟) قالوا: فُلاَنٌ، فَقَالَ: (كَذَبْتُمْ، بَلْ أَبُوكُمْ فُلاَنٌ). قَالُوا: صَدَقْتَ، قَالَ: (فَهَلْ أَنْتُمْ صَادِقِيَّ عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُ عنه؟) فَقَالُوا: نَعَمْ يَا أَبَا القَاسِمِ، وَإِنْ كَذَبْنَا عَرَفْتَ كَذِبَنَا كَمَا عَرَفْتَهُ فِي أَبِينَا، فَقَالَ لَهُمْ: (مَنْ أَهْلُ النَّارِ؟) قَالُوا: نَكُونُ فِيهَا يَسِيرًا، ثُمَّ تَخْلُفُونَا فِيهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ:

(اَخْسَؤُوا فِيهَا، وَاللهِ لَا نَخْلُفُكُمْ فِيهَا أَبَدًا)، ثُمَّ قَالَ: (هَلْ أَنْتُمْ صَادِقِيَّ عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُكُمْ عَنْهُ؟) فَقَالُوا: نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ، قَالَ: (هَلْ جَعَلْتُمْ فِي هٰذِهِ الشَّاةِ سُمًّا؟) قَالُوا: نَعَمْ، قَالَ: (مَا حَمَلَكُمْ عَلَى ذٰلِكَ؟) قَالُوا: أَرَدْنَا إِنْ كُنْتَ كَاذِبًا نَسْتَرِيحُ، وَإِنْ كُنْتَ نَبِيًّا لَمْ يَضُرَّكَ. [رواه البخاري: ٣١٦٩]

आपने फरमाया तुम ने झूट कहा है, बल्कि तुम्हारा बाप फलां आदमी है। उन्होंने कहा, बेशक आप सच कहते हैं। आपने फरमाया, अच्छा अब अगर तुम से कुछ पूछूं तो सच बताओगे? उन्होंने कहा, जी हां! अबू कासिम! अगर हमने झूट बोला तो आप हमारा झूट मालूम कर लेंगे। जैसा कि आपने पहले बाप के बारे में हमारा झूट मालूम कर लिया था। फिर आपने उनसे पूछा कि दोजखी कौन लोग हैं? उन्होंने कहा, हम कुछ रोज के लिए दोजख में जायेंगे। फिर हमारे बाद तुम उसमें हमारे जानशीन होंगे। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम उसमें जलील ही रहोगे, अल्लाह की कसम! हम कभी उसमें तुम्हारी जानशीनी नहीं करेंगे। आपने फिर फरमाया, अगर मैं तुमसे कोई बात पूछूं तो सच कहोगे? उन्होंने कहा हां! अबू कासिम! आपने फरमाया, क्या तुमने इस बकरी में जहर मिलाया था? उन्होंने कहा, हां! आपने फरमाया, तुम्हें इस बात पर किस चीज ने आमादा किया? उन लोगों ने कहा, हमारी चाहत थी कि आप अगर झूटे नबी हैं तो हमको आपसे निजात मिल जायेगी और अगर आप हकीकत में नबी हैं तो आपको कुछ नुकसान नहीं होगा।

फायदे: मुस्लिम की रिवायत में है कि सहाबा किराम रजि. ने उस यहूदी औरत को कत्ल करने की इजाजत मांगी जिसने बकरी में जहर मिलाया था तो आपने इजाजत न दी, बल्कि आपने माफ कर दिया, क्योंकि आप किसी से जाति इन्तेकाम न लेते थे, आखिरकार एक सहाबी के बदले में उसे कत्ल करवा दिया।

١٠٢ - باب: الْمُوَادَعَةُ وَالْمُصَالَحَةُ مَعَ الْمُشْرِكِينَ بِالْمَالِ وَغَيْرِهِ وَإِثْمِ مَنْ لَمْ يَفِ بِالْعَهْدِ

बाब 102: मुश्रिकों से माल वगैरह से सुल्ह करने, लड़ाई छोड़ देने, नीज बद अहदी (वादा खिलाफी) के गुनाह का बयान।

١٣٤٣ : عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَثْمَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ٱنْطَلَقَ عَبْدُ ٱللهِ ابْنُ سَهْلٍ وَمُحَيِّصَةُ بْنُ مَسْعُودِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا إِلَى خَيْبَرَ، وَهِيَ يَوْمَئِذٍ صُلْحٌ، فَتَفَرَّقَا، فَأَتَى مُحَيِّصَةُ إِلَى عَبْدِ ٱللهِ بْنِ سَهْلٍ وَهُوَ يَتَشَحَّطُ فِي دَمِهِ قَتِيلًا، فَدَفَنَهُ ثُمَّ قَدِمَ الْمَدِينَةَ، فَانْطَلَقَ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ بْنُ سَهْلٍ وَمُحَيِّصَةُ وَحُوَيِّصَةُ ٱبْنَا مَسْعُودٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَذَهَبَ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ يَتَكَلَّمُ، فَقَالَ: (كَبِّرْ كَبِّرْ)، وَهُوَ أَحْدَثُ الْقَوْمِ، فَسَكَتَ فَتَكَلَّمَا، فَقَالَ: (أَتَحْلِفُونَ وَتَسْتَحِقُّونَ دَمَ قَاتِلِكُمْ، أَوْ صَاحِبِكُمْ؟) قَالُوا: وَكَيْفَ نَحْلِفُ وَلَمْ نَشْهَدْ وَلَمْ نَرَ؟ قَالَ: (فَتُبْرِئُكُمْ يَهُودُ بِخَمْسِينَ)، فَقَالُوا: كَيْفَ نَأْخُذُ أَيْمَانَ قَوْمٍ كُفَّارٍ، فَعَقَلَهُ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ عِنْدِهِ. [رواه البخاري: ٣١٧٣]

1343: सहल बिन हसमा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अब्दुल्लाह बिन सहल रजि. और मुहैय्सा बिन मसऊद बिन जैद रजि. खैबर की तरफ गये। उन दिनो यहूदियों से सुल्ह थी, फिर दोनों किसी तरह जुदा जुदा हो गये। अचानक मुहैय्सा रजि. जब अब्दुल्लाह बिन सहल रजि. के पास आये तो देखा कि वो अपने खून में लथपथ हैं। किसी ने उनको कत्ल कर डाला था। खैर मुहैय्सा रजि. ने उन्हें दफन कर दिया। इसके बाद वो मदीना आये तो अब्दुल रहमान बिन सहल और मुहैय्सा, हुवैय्सा जो मसऊद के बेटे थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गये। अब्दुल रहमान ने गुफ्तगू करना चाही। तो आपने फरमाया बड़े को बात करने दो, चूंकि वो सब से छोटे थे, इसलिए चुप हो गये। तब मुहैय्सा और हुवैय्सा ने आपसे गुफ्तगू की। आपने फरमाया क्या तुम कसम उठाकर कातिल के खून का इस्तेहकाक साबित कर दोगे? उन्होंने कहा, हम क्यों कसम उठा सकते हैं, जबकि हम वहां मौजूद न थे और न ही हमने उन्हें देखा है। आपने फरमाया

तो फिर यहूदी पचास कसमें उठाकर बरी हो जायेंगे। उन्होंने कहा, वो तो काफिर हैं, हम उनकी कसमों का कैसे विश्वास करें? आखिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको अपने पास से दियत (मुआवजा) अदा कर दी।

फायदे: इस हदीस में कस्सामा (आपस में कसम खाने) का बयान है, जिसमें आम दावे के बर अक्स (खिलाफ) मुदई (दावा करने वाले) कसम के जरीये अपने दावे को साबित करता है। अगर वो कसम न दे तो फिर मुददा अलैय (जिस पर दावा किया जाता है) को कसम देना पड़ती है। नीज इस में पचास कसम देना होती है। (औनुलबारी, 3/641)

बाब 103 : जिम्मी अगर जादू करे तो क्या उसे माफ किया जा सकता है?

١٠٣ - باب: هل يُعفى عن الذمّي إذا سحر

1344: आइशा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू किया गया था, जिसकी वजह से आपको यह ख्याल होता था कि आपने एक काम किया है, हालांकि वो काम न किया होता था।

١٣٤٤ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ سُحِرَ، حَتَّى كانَ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ أَنَّهُ صَنَعَ شَيْئًا وَلَمْ يَصْنَعْهُ. [رواه البخاري: ٣١٧٥]

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चूंकि अपनी जात के लिए किसी से इंतेकाम नहीं लेते थे और आपको उस जादू से कुछ नुकसान भी नहीं पहुंचा था। इसलिए आपने उसे छोड़ दिया। अगर जादू से किसी दूसरे को नुकसान पहुंचे तो जादूगर को सजा दी जा सकती है। (औनुलबारी, 3/642)

बाब 104 : गद्दारी करने से बचना।

١٠٤ - باب: ما يُحذَر من الغَدر

1345 : औफ बिन मालिक रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैं गजवा

١٣٤٥ : عَنْ عَوْفِ بْنِ مالِكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ

فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ، وَهُوَ فِي قُبَّةٍ مِنْ أَدَمٍ، فَقَالَ: (اُعْدُدْ سِتًّا بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ: مَوْتِي، ثُمَّ فَتْحُ بَيْتِ الْمَقْدِسِ، ثُمَّ مُوتَانٌ يَأْخُذُ فِيكُمْ كَقُعَاصِ الْغَنَمِ، ثُمَّ اسْتِفَاضَةُ الْمَالِ حَتَّى يُعْطَى الرَّجُلُ مِائَةَ دِينَارٍ فَيَظَلُّ سَاخِطًا، ثُمَّ فِتْنَةٌ لاَ يَبْقَى بَيْتٌ مِنَ الْعَرَبِ إِلاَّ دَخَلَتْهُ، ثُمَّ هُدْنَةٌ تَكُونُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ بَنِي الأَصْفَرِ، فَيَغْدِرُونَ فَيَأْتُونَكُمْ تَحْتَ ثَمَانِينَ غَايَةً، تَحْتَ كُلِّ غَايَةٍ اثْنَا عَشَرَ أَلْفًا). [رواه البخاري: ٣١٧٦]

तबूक के मौके पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गया तो आप चमड़े के एक खेमें में तशरीफ फरमा रहे थे। आपने फरमाया कि छः निशानियां कयामत से पेशतर होगी, उनको शुमार कर लो, एक तो मेरी वफात, दूसरे बैतुल मुकद्दस की जीत, तीसरे वबा (बीमारी) जो तुम में इस तरह फैलेगी, जैसे बकरियों की बीमारी कवास फैलती है, चौथे माल की इस कद्र रेल-पैल कि अगर किसी को सौ अशर्फियां दी जायेगी तो भी खुश न होगा, पांचवीं एक फितना जिससे अरब का कोई घर न बचेगा, छटे नम्बर पर वो सुल्ह होगी जो तुम्हारे और रूमियों के बीच होगी और वो बेवफाई करेंगे और अपने झण्डे लेकर तुमसे लड़ने आयेंगे और उनके हर झण्डे तले बारह हजार फौज होगी।

फायदे: इमाम बुखारी का यह मकसद है कि दगाबाजी करना काफिरों का काम है और यह कयामत की निशानी है। मुसलमानों को इससे बचना चाहिए।

١٠٥ - باب: إِثْمُ مَنْ عَاهَدَ ثُمَّ غَدَرَ

बाब 105 : उस आदमी का गुनाह जिसने वादा किया, फिर दगाबाजी की।

١٣٤٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَيْفَ بِكُمْ إِذَا لَمْ تَجْتَبُوا دِينَارًا وَلاَ دِرْهَمًا؟ فَقِيلَ لَهُ: وَكَيْفَ تَرَى ذٰلِكَ كَائِنًا يَا أَبَا هُرَيْرَةَ؟ قَالَ: إِي وَالَّذِي نَفْسُ أَبِي هُرَيْرَةَ بِيَدِهِ، عَنْ قَوْلِ الصَّادِقِ الْمَصْدُوقِ،

1346: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने लोगों से कहा, तुम्हारा उस वक्त क्या हाल होगा, जबकि न दीनार हासिल कर सकोगे और न दिरहम। पूछा गया, अबू हुरैरा रजि.! तुम क्या

قالُوا: عَمَّ ذَاكَ؟ قالَ: تُنْتَهَكُ ذِمَّةُ اللهِ وَذِمَّةُ رَسُولِهِ ﷺ، فَيَشُدُّ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ قُلُوبَ أَهْلِ الذِّمَّةِ، فَيَمْنَعُونَ ما فِي أَيْدِيهِمْ. [رواه البخاري: ٣١٨٠]

समझते हो कि ऐसा क्यों होगा? उन्होंने कहा, उस जात की कसम, जिसके हाथ में अबू हुरैरा की जान है कि सादिक व मसदूक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमाने से मुझे मालूम हुआ। लोगों ने कहा किस तरह? अबू हुरैरा रजि. ने कहा, अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जिम्मा तोड़ दिया जायेगा। यानी मुसलमान दगाबाजी करेंगे। फिर अल्लाह तआला जिम्मीयों के दिल सख्त कर देगा और जो कुछ उनके हाथ में है, वो जजीया (टेक्स) के तौर पर नहीं देंगे।

फायदेः आज के समय में मुसलमान उसी किस्म के हालात से गुजर रहे हैं कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से गद्दारी के नतीजे में सख्त नुकसान उठाया है। काफिरों से जजीया लेना तो दूर बल्कि उसके बरअक्स आलिमी गुण्डा अमेरिका मुसलमानों से टेक्स वसूल रहा है और मुस्लिम हुकूमतों को उसने अपने घर की लौण्डी बना कर रखा हुआ है।

---

١٠٦ - باب: إِثْمِ الغَادِرِ لِلْبَرِّ وَالفَاجِرِ

बाब 106 : हर बुरे-भले से गद्दारी करने वाले का बयान।

١٣٤٧ : عَنْ عَبْدِ اللهِ وَأَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (لِكُلِّ غادِرٍ لِوَاءٌ يَوْمَ القِيَامَةِ، قالَ أَحَدُهُما: يُنْصَبُ، وَقالَ الآخَرُ: يُرَى يَوْمَ القِيَامَةِ، يُعْرَفُ بِهِ). [رواه البخاري: ٣١٨٦، ٣١٨٧]

1347.: अब्दुल्लाह और अनस रजि. से रिवायत है कि वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, कयामत के दिन गद्दार के लिए एक झण्डा होगा। इन रावियों में से एक का बयान है कि वो झण्डा गाड़ा जायेगा और दूसरे का बयान है कि वो कयामत के दिन दिखाया जायेगा। जिससे दगाबाजी की शिनाख्त होगी।

फायदेः एक दूसरी रिवायत में है कि यह झण्डा गद्दार की मकअद (चुतड़) पर लगाया जायेगा ताकि महशर वाले की गद्दारी से आगाह हों और उस पर नफरतें और लानत करें। (औनुलबारी, 3/647)



www.Momeen.blogspot.com

किताबो बदईल खलके

पैदाईश की शुरूआत का बयान

١ - باب: مَا جاءَ فِي قَوْلِ الله تَعَالَى: ﴿وَهُوَ الَّذِى يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥ﴾

बाब 1: फरमाने इलाही ''वही है जो तख्लीक (पैदाईश) की इब्तदा करता है, फिर वही उसको लौटायेगा।

١٣٤٨ : عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، قالَ: جاءَ نَفَرٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: (يَا بَنِي تَمِيمٍ أَبْشِرُوا)، قالُوا: بَشَّرْتَنَا فَأَعْطِنَا، فَتَغَيَّرَ وَجْهُهُ، فَجَاءَهُ أَهْلُ الْيَمَنِ، فَقَالَ: (يَا أَهْلَ الْيَمَنِ، اقْبَلُوا الْبُشْرَى إِذْ لَمْ يَقْبَلْهَا بَنُو تَمِيمٍ)، قالُوا: قَبِلْنَا، فَأَخَذَ النَّبِيُّ ﷺ يُحَدِّثُ بَدْءَ الخَلْقِ وَالْعَرْشِ، فَجاءَ رَجُلٌ فَقالَ: يا عِمْرَانُ رَاحِلَتُكَ تَفَلَّتَتْ، لَيْتَنِي لَمْ أَقُمْ. [رواه البخاري: ٣١٩٠]

1348: इमरान बिन हुसैन रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि बनू तमीम के कुछ लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये तो आपने फरमाया बनी तमीम! तुम खुश हो जाओ, उन्होंने कहा आपने हमें खुशखबरी तो दे दी, माल भी दीजिए। इससे आपके चेहरे मुबारक का रंग बदल गया। फिर आपके पास यमन के कुछ लोग आये तो आपने उनसे भी फरमाया: ऐ यमन वालों! तुम खुशखबरी कबूल करो क्योंकि बनू तमीम ने उसे कबूल नहीं किया। उन्होंने कहा हमने उसे कबूल किया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इब्तदाए आफरीनश (शुरूआत की पैदाईश) और अर्श की बातें बयान फरमायी, इतने में एक आदमी आया और उसने मुझ से कहा, ऐ इमरान रजि.! तुम्हारी ऊंटनी खुल गई है, उसे पकड़ो। तो मैं उठकर चला गया

लेकिन मेरे दिल में हसरत रह गई कि काश मैं न उठा होता तो बेहतर होता।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम लाने की वजह से उन्हें उखरवी (आखिरत की) कामयाबी की खुशखबरी सुनाई, उन्होंने उसे दुनिया के माल की खुशखबरी ख्याल किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी हिर्स आरजू और दुनिया तलबी पर अफसोस किया।

1349: इमरान बिन हुसैन रजि. से ही एक रिवायत में है कि उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अव्वल अल्लाह की जात थी, उसके सिवा कोई चीज न थी और उसका अर्श पानी पर था और लोहे महफूज में उसने हर बात लिख दी और उसने जमीन व आसमान को पैदा फरमाया। यह बातें हो रही थी कि एक आदमी ने आवाज दी, ऐ इब्ने हुसैन रजि.! तुम्हारी ऊंटनी भाग गई है, लिहाजा मैं चला गया तो देखा कि वो ऊंटनी सराब से आगे जा चुकी थी। अल्लाह की कसम! मेरी चाहत थी कि काश! उस ऊंटनी को छोड़ देता (और वहां से न उठता तो बेहतर था)

١٣٤٩ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ - في رواية - قال: قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (كانَ ٱللهُ وَلَمْ يَكُنْ شَيْءٌ غَيْرُهُ، وَكانَ عَرْشُهُ عَلَى المَاءِ، وَكَتَبَ فِي ٱلذِّكْرِ كُلَّ شَيْءٍ، وَخَلَقَ السَّماوَاتِ وَالأَرْضَ). فَنَادَى مُنَادٍ: ذَهَبَتْ نَاقَتُكَ يَا ٱبْنَ الحُصَيْنِ، فَٱنْطَلَقْتُ فَإِذَا هِيَ يَقْطَعُ دُونَهَا السَّرَابُ، فَوَٱللهِ لَوَدِدْتُ أَنِّي كُنْتُ تَرَكْتُهَا. [رواه البخاري: ٣١٩١]

फायदे: अल्लाह तआला ने सब से पहले पानी और अर्श को पैदा किया फिर दूसरी कायनात की तख्लीक फरमाई। इससे मालूम हुआ कि अल्लाह का अर्श भी मख्लूक है। (औनुलबारी, 4/6)

1350: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि

١٣٥٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قال: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (قَالَ ٱللهُ

تعالى: يَشْتِمُنِي ٱبْنُ آدَمَ، وَما يَنْبَغِي لَهُ أَنْ يَشْتِمَنِي، وَيُكَذِّبُنِي، وَما يَنْبَغِي لَهُ، أَمَّا شَتْمُهُ فَقَوْلُهُ: إِنَّ لِي وَلَدًا، وَأَمَّا تَكْذِيبُهُ فَقَوْلُهُ: لَيْسَ يُعِيدُنِي كَمَا بَدَأَنِي). [رواه البخاري: ٣١٩٣]

वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह का इरशाद है, इब्ने आदम मुझे गाली देता है। हालांकि उसे मुनासिब नहीं कि मुझे गाली दे और मेरी तकजीब करता है (मुझे झुटलाता है), हालांकि उसे हक नहीं कि वो मेरी तकजीब करे। उसका मुझे गाली देना तो उसका यह कहना है कि मेरी औलाद है और उसकी तकजीब यह कहना है कि अल्लाह दोबारा मुझे जिन्दा नहीं करेगा, जैसे उसने मुझे पहले पैदा किया था।

फायदे: इन्सान को अपने दिखावे और शोहरत के लिए औलाद की जरूरत है। जबकि अल्लाह तआला इस किस्म के तमाम ऐबों से पाक है, लिहाजा अल्लाह की तरफ औलाद की निस्बत करना गोया इस तरह नुक्स (ऐब) को मनसूब करना है।

١٣٥١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَمَّا قَضى ٱللهُ الخَلْقَ كَتَبَ فِي كِتَابِهِ، فَهُوَ عِنْدَهُ فَوْقَ العَرْشِ: إِنَّ رَحْمَتِي غَلَبَتْ غَضَبِي). [رواه البخاري: ٣١٩٤]

1351: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब अल्लाह सब मख्लूक को पैदा कर चुका तो उसने अपनी किताब (लोहे महफूज) में जो उसी के पास अर्श पर है, यह लिखा मेरी रहमत मेरे गजब पर गालिब है।

फायदे: अल्लाह तआला के लिखने से मुराद यह है कि उसने कलम को हुक्म दिया। इससे यह भी मालूम हुआ कि अर्श की पैदाईश कलम से पहले हुई है। जिसके जरीए तकदीर लिखी गई है।

(औनुलबारी, 4/12)

बाब 2: सात जमीनों का बयान

٢ - باب: مَا جَاءَ فِي سَبْعِ أَرَضِينَ

١٣٥٢ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (الزَّمَانُ قَدِ ٱسْتَدَارَ كَهَيْئَتِهِ يَوْمَ خَلَقَ ٱللهُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ، السَّنَةُ ٱثْنَا عَشَرَ شَهْرًا، مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ، ثَلاَثَةٌ مُتَوَالِيَاتٌ: ذُو الْقَعْدَةِ وَذُو الْحِجَّةِ وَالْمُحَرَّمُ، وَرَجَبُ مُضَرَ، الَّذِي بَيْنَ جُمَادَى وَشَعْبَانَ). [رواه البخاري: ٣١٩٧]

1352. अबू बकर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जमाना घूमकर फिर उसी हालत पर आ गया है, जैसे उस दिन था जिस दिन अल्लाह तआला ने जमीन व आसमान बनाये थे। साल बारह महीने का होता है, उनमें चार महीने हुरमत वाले हैं, तीन तो लगातार है, यानी जु-काअदा जिलहिज्जा, मुहर्रम और चौथा रजब, जिसकी कबिला मुजर बहुत ताजीम करता है, जो जोमादस्सानी और शअबान के बीच है।

٣ - باب: صِفَةُ الشَّمْسِ وَالقَمَرِ بِحُسْبَانٍ

बाब 3: फरमाने इलाही "सूरज और चांद एक हिसाब के पाबन्द हैं"

١٣٥٣ : عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِأَبِي ذَرٍّ حِينَ غَرَبَتِ الشَّمْسُ: (تَدْرِي أَيْنَ تَذْهَبُ؟) قُلْتُ: ٱللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: (فَإِنَّهَا تَذْهَبُ حَتَّى تَسْجُدَ تَحْتَ الْعَرْشِ، فَتَسْتَأْذِنَ فَيُؤْذَنُ لَهَا، وَيُوشِكُ أَنْ تَسْجُدَ فَلاَ يُقْبَلَ مِنْهَا، وَتَسْتَأْذِنَ فَلاَ يُؤْذَنُ لَهَا، وَيُوشِكُ أَنْ تَسْجُدَ فَلاَ يُقْبَلَ مِنْهَا، وَتَسْتَأْذِنَ فَلاَ يُؤْذَنُ لَهَا، يُقَالُ لَهَا: ٱرْجِعِي مِنْ حَيْثُ جِئْتِ، فَتَطْلُعُ مِنْ مَغْرِبِهَا، فَذٰلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿وَالشَّمْسُ تَجْرِي

1353: अबू जैद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मुझे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब यह सूरज डूबता है तो क्या तुम्हें मालूम हैं वो कहां जाता है? मैंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही बेहतर जानते हैं। आपने फरमाया, वो जाता है ताकि अर्श के नीचे सज्दा करे, फिर अल्लाह से तुलूअ (उगने) की इजाजत मांगता है तब उसे इजाजत

لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ﴾. [رواه البخاري: ٣١٩٩]

दी जाती है लेकिन करीब है कि वो सज्दा करे। लेकिन कबूल न किया जाये और इजाजत मांगे मगर न दी जाये। बल्कि उससे कहा जाये कि जिधर से आया है, उधर ही से लौट जा। फिर वो मगरिब से तुलुअ होगा और इरशाद बारी तआला के इस बयान का यही मतलब है "और सूरज वो अपने ठिकाने की तरफ चला जा रहा है, यह जबरदस्त अलीम हस्ती (जानने वाले) का बांधा हुआ हिसाब है।"

फायदे: जमीन अण्डे की शक्ल में गोल है और अल्लाह के अर्श ने उसे घेर रखा है। इसलिए सूरज हर वक्त अल्लाह के अर्श के नीचे रहता है और हर वक्त अपने मालिक के लिए सज्दा रेज और आगे बढ़ने का तलबगार रहता है। लेकिन हर मुल्क का मश्रिक व मगरिब अलग अलग है। इसलिए तुलूअ व गुरूब के वक्त को सज्दे के लिए खास किया गया है। (औनुलबारी, 4/18)

١٣٥٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ مُكَوَّرَانِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ). [رواه البخاري: ٣٢٠٠]

1354: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि कयामत के दिन सूरज और चांद लपेट दिये जायेंगे यानी तारीक (अंधेरे) हो जायेंगे।

फायदे: यानी उन दोनों को बे नूर कर कर के आग में फेंक दिया जायेगा ताकि उनकी इबादत करने वालों को शर्मसार किया जाये कि जिनकी तुम इबादत करते थे, उनका हाल देख लो।

(औनुलबारी, 4/19)

٤ - باب: مَا جَاءَ فِي قَوْلِهِ ﴿وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ نُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ﴾

बाब 4: फरमाने इलाही : "और वो अल्लाह ही है जो हवाओं को अपनी रहमत (बारिश) के आगे आगे खुशखबरी लिए हुए भेजता है।"

١٣٥٥ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا رَأَى مَخِيلَةً فِي السَّمَاءِ أَقْبَلَ وَأَدْبَرَ، وَدَخَلَ وَخَرَجَ وَتَغَيَّرَ وَجْهُهُ، فَإِذَا أَمْطَرَتِ السَّمَاءُ سُرِّيَ عَنْهُ، فَعَرَّفَتْهُ عَائِشَةُ ذٰلِكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَا أَدْرِي لَعَلَّهُ كَمَا قَالَ قَوْمٌ: ﴿فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ﴾، الآيَةَ). [رواه البخاري: ٣٢٠٦]

1355. आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कोई अब्र (बादल) का टुकड़ा आसमान पर देखते तो कभी आप आगे बढ़ते, कभी पीछे हटते और कभी अन्दर आते कभी बाहर जाते और आप का चेहरा मुबारक बदल जाता। मगर जब बारिश बरसने लगती तो आपकी मौजूदा कैफियत खत्म हो जाती। मैंने आपकी इस हालत की बाबत पूछा तो आपने फरमाया, मैं नहीं जानता, शायद ऐसा ही हो, जैसा कि एक कौम ने कहा था। "फिर उन्होंने जब उसको अपनी वादियों की तरफ आते देखा तो कहने लगे, यह बादल है जो हमको सैराब कर देगा, आखिर आयत तक।"

फायदे: पूरी आयत का तर्जुमा यह है "बल्कि यह वही चीज है, जिस के लिए तुम जल्दी मचा रहे थे। यह हवा का तूफान है जिसमें दर्दनाक अजाब चला आ रहा है, अपने रब के हुक्म से हर चीज को तबाह कर डालेगा।" (अहकाफ 52)

बाब 5: फरिश्तों का बयान।

٥ - باب: ذِكْرُ المَلَائِكَةِ صَلَوَاتُ ٱللهِ عَلَيْهِم

١٣٥٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ وَهُوَ الصَّادِقُ المَصْدُوقُ، قَالَ: (إِنَّ أَحَدَكُمْ يُجْمَعُ خَلْقُهُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ أَرْبَعِينَ يَوْمًا، ثُمَّ يَكُونُ عَلَقَةً مِثْلَ ذٰلِكَ، ثُمَّ يَكُونُ مُضْغَةً

1356 : अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि हमसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो कि सादिक व मसदूक थे। तुममें से हर एक की पैदाईश उसकी मां के पेट में मुकम्मिल की जाती है। चालीस दिन तक नुत्फा रहता है, फिर

مِثْلَ ذٰلِكَ، ثُمَّ يَبْعَثُ اللهُ مَلَكًا فَيُؤْمَرُ بِأَرْبَعِ كَلِمَاتٍ، وَيُقَالُ لَهُ: اُكْتُبْ عَمَلَهُ، وَرِزْقَهُ، وَأَجَلَهُ، وَشَقِيٌّ أَوْ سَعِيدٌ، ثُمَّ يُنْفَخُ فِيهِ الرُّوحُ، فَإِنَّ الرَّجُلَ مِنْكُمْ لَيَعْمَلُ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ إِلاَّ ذِرَاعٌ، فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ كِتَابُهُ، فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ، وَيَعْمَلُ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّارِ إِلاَّ ذِرَاعٌ، فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ، فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ). [رواه البخاري: ٣٢٠٨]

इतने ही वक्त तक जमा हुआ खून रहता है। फिर इतने ही रोज तक गोश्त का लोथड़ा रहता है। इसके बाद अल्लाह एक फरिश्ता भेजता है और उसे चार बातों का हुक्म दिया जाता है कि उसका अमल, उसकी रिज्क और उसकी उम्र लिख दे और यह भी लिख दे कि बदबख्त है या नेकबख्त। उसके बाद उसमें रूह फूंक दी जाती है, फिर तुम में से कोई ऐसा होता है जो नेक अमल करता है कि उसके और जन्नत के बीच सिर्फ एक हाथ का फासला रह जाता है, मगर उस पर लिखी गई तकदीर गालिब आ जाती है और वो दोजखियों का काम कर बैठता है। ऐसे ही कोई आदमी बुरे काम करता रहता है ताकि उसके और दोजख के बीच सिर्फ एक हाथ का फासला रह जाता है। फिर तकदीर का फैसला गालिब आ जाता है तो वो अहले जन्नत के से काम करने लगता है।

फायदेः इससे मालूम हुआ कि फरिश्ते भी अपना एक वजूद रखते हैं वो अल्लाह के मुअज्ज (इज्जत वाले) बन्दे और जिस्मे लतीफ (बारीक जिस्म) के मालिक हैं और हर शक्ल में जाहिर हो सकते हैं। उन पर ईमान लाना उसूले ईमान से है और उनका इनकार कुफ्र है।

(औनुलबारी 4/23)

١٣٥٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِذَا أَحَبَّ اللهُ الْعَبْدَ نَادَى جِبْرِيلَ: إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُلاَنًا فَأَحْبِبْهُ، فَيُحِبُّهُ

1357: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जब अल्लाह बन्दे से मुहब्बत करता है तो

جِبْرِيلُ، فَيُنَادِي جِبْرِيلُ فِي أَهْلِ السَّمَاءِ: إِنَّ ٱللهَ يُحِبُّ فُلَانًا فَأَحِبُّوهُ، فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ، ثُمَّ يُوضَعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي الأَرْضِ). [رواه البخاري: ٣٢٠٩]

जिब्राईल अलैहि. को आवाज देता है कि अल्लाह तआला फलां आदमी को दोस्त रखता है। लिहाजा तुम भी उसको दोस्त रखो तो जिब्राईल अलैहि. उसको दोस्त रखते हैं। फिर जिब्राईल अलैहि. तमाम आसमान वालों में ऐलान करते हैं कि अल्लाह तआला फलां आदमी से मुहब्बत रखता है, लिहाजा तुम भी उससे मुहब्बत रखो। चूनांचे तमाम आसमान वाले उससे मुहब्बत रखते हैं। फिर जमीन में भी उसकी मकबुलियत रख दी जाती है।

फायदे: इस रिवायत का दूसरा हिस्सा यह है कि जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से दुश्मनी रखता है तो जिब्राईल को आवाज देता है कि मैं फलां आदमी से दुश्मनी रखता हूं, तू भी उससे दुश्मनी रख। तो जिब्राईल उससे दुश्मनी रखते हैं। फिर जिब्राईल तमाम आसमान वालों में ऐलान करते हैं कि अल्लाह फलां आदमी से दुश्मनी रखते हैं। लिहाजा तुम भी उससे दुश्मनी रखो, फिर उसके बारे में यह दुश्मनी जमीन में भी रख दी जाती है। (औनुलबारी 4/24)

١٣٥٨ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ: أَنَّهَا سَمِعَتْ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّ المَلَائِكَةَ تَنْزِلُ فِي الْعَنَانِ - وَهُوَ السَّحَابُ - فَتَذْكُرُ الأَمْرَ قُضِيَ فِي السَّمَاءِ، فَتَسْتَرِقُ الشَّيَاطِينُ السَّمْعَ فَتَسْمَعُهُ، فَتُوحِيهِ إِلَى الْكُهَّانِ، فَيَكْذِبُونَ مَعَهَا مِائَةَ كَذْبَةٍ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ). [رواه البخاري: ٣٢١٠]

1358: उम्मे मौमिनिन आइशा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि फरिश्ते अब्र (बादल) में आते हैं और उस काम का जिक्र करते हैं, जिसका आसमान पर फैसला लिया गया होता है। शैतान क्या करते हैं, चुपके से फरिश्तों की बातें उड़ा लेते हैं और काहिनों (ज्योतिषीयो) से आकर बयान करते हैं

और वो कमबख्त सच्ची बात में अपनी तरफ से सौ झूट मिला देते हैं (उसे अपने मुरीदों से बयान करते हैं)

फायदे: इस हदीस में उन फनकारों की शुअबदा बाजी (जादू-टोने) से पर्दा उठाया गया है जो आये दिन कमजोर लोगों की गुमराही का कारण बनते हैं।

1359: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जुमे के दिन मस्जिद के दरवाजों में हर दरवाजे पर फरिश्ते मुकर्रर होते हैं जो सबसे पहले आये या उसके बाद आये, उसको लिख लेते हैं। फिर जब इमाम मिम्बर पर बैठ जाता है तो वो अपने सईफे (रजिस्टर) लपेटकर खुत्बा सुनने के लिए आ जाते हैं।

١٣٥٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِذَا كَانَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ، كَانَ عَلَى كُلِّ بَابٍ مِنْ أَبْوَابِ الْمَسْجِدِ الْمَلاَئِكَةُ، يَكْتُبُونَ الأَوَّلَ فَالأَوَّلَ، فَإِذَا جَلَسَ الإِمَامُ طَوَوْا الصُّحُفَ، وَجَاؤُوا يَسْتَمِعُونَ الذِّكْرَ). [رواه البخاري: ٣٢١١]

फायदे: इससे मालूम हुआ कि खुत्बा शुरू होने के वक्त या उसके बाद आने वाले लोग जुमे के इजाफी सवाब से महरूम रहते हैं।

1360: बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हस्सान रजि. से फरमाया, तुम मुश्रिकों की बुराई बयान करो या उनकी बुराई का जवाब दो, हर सूरत में जिब्राईल तुम्हारे साथ है।

١٣٦٠ : عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ ٱللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِحَسَّانَ رَضِيَ ٱللّٰهُ عَنْهُ: (اُهْجُهُمْ - أَوْ هَاجِهِمْ - وَجِبْرِيلُ مَعَكَ). [رواه البخاري: ٣٢١٣]

फायदे: शुरू में कुफ्फार से इस किस्म का उलझाव ठीक नहीं, अलबत्ता जवाबी कार्रवाई में उनकी मुजम्मत की जा सकती है।

(औनुलबारी, 4/27)

1361: आइशा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फरमाया कि ऐ आइशा रजि.! यह जिब्राईल अलैहि. हैं और तुम्हें सलाम कहते हैं तो उन्होंने यूं जवाब दिया "वअलैकुम अलैहिस्सलाम व रहमतुल्लाह व बरकातुह" आप वो देखते हैं जो मैं नहीं देखती और मुराद इनकी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

١٣٦١ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا: (يَا عَائِشَةُ، هٰذَا جِبْرِيلُ يَقْرَأُ عَلَيْكِ السَّلَامَ). فَقَالَتْ: وَعَلَيْهِ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ ٱللهِ وَبَرَكَاتُهُ، تَرَى مَا لَا أَرَى. تُرِيدُ النَّبِيَّ ﷺ. [رواه البخاري: ٣٢١٧]

फायदे: इस हदीस से हजरत आइशा रजि. की बड़ाई भी साबित होती है। (औनुलबारी 4/28)

1362: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल अलैहि. से फरमाया, तुम हमारे पास जितना अब आते हो उससे ज्यादा क्यों नहीं आते? रावी का बयान है कि इस पर यह आयत नाजिल हुई "हम तो उस वक्त आते हैं जब तेरे मालिक का हुक्म होता है।"

١٣٦٢ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ لِجِبْرِيلَ: (أَلَا تَزُورُنَا أَكْثَرَ مِمَّا تَزُورُنَا؟) قَالَ: فَنَزَلَتْ: ﴿وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا﴾. الآيَةَ. [رواه البخاري: ٣٢١٨]

फायदे: कुरआन मजीद के आगे पीछे से इस आयत का मतलब समझ में नहीं आ सकता। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस से यह बात समझ में आई। जिससे पता चलता है कि अहादीस से ऊंचे-ऊंचे कुरआन समझने का दावा करना गुमराही है।

1363: इब्ने अब्बास रजि. से ही रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

١٣٦٣ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (أَقْرَأَنِي جِبْرِيلُ

عَلَى حَرْفٍ، فَلَمْ أَزَلْ أَسْتَزِيدُهُ، حَتَّى انْتَهَى إِلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ). [رواه البخاري: ٣٢١٩]

वसल्लम ने फरमाया, मुझे जिब्राईल अलैहि. ने एक किरआत में कुरआन पढ़ाया था। फिर मैं लगातार उनसे ज्यादा चाहता रहा, यहां तक कि सात किरअतों तक पहुंचा।

फायदेः अरब वालों की जुबान अगरचे एक है, फिर भी मुख्तलीफ कबाइल के बोलने के अंदाज अलग अलग हैं। अल्लाह ने अपने बन्दों पर आसानी करते हुए उन्हें सात मुहावरों के मुताबिक पढ़ने की इजाजत दी और यह इख्तलाफ आपसी इख्तेलाफ जैसे नहीं है।

(औनुलबारी 4/30)

١٣٦٤ : عَنْ يَعْلَى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ عَلَى الْمِنْبَرِ: وَنَادَوْا يَا مَالِكُ. [رواه البخاري: ٣٢٣٠]

1364: यअला रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिम्बर पर यह आयत पढ़ते हुए सुना है "वो पुकारेंगे ऐ मालिक! (तेरा रब हमारा काम तमाम कर दे (तो अच्छा है)"

फायदेः मालिक वो फरिश्ता है जो दोजख की जनरल निगरानी के लिए रखा गया है। (औनुलबारी 4/31)

١٣٦٥ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، زَوْجِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ: أَنَّهَا قَالَتْ لِلنَّبِيِّ ﷺ: هَلْ أَتَى عَلَيْكَ يَوْمٌ كَانَ أَشَدَّ مِنْ يَوْمِ أُحُدٍ؟ قَالَ: (لَقَدْ لَقِيتُ مِنْ قَوْمِكِ مَا لَقِيتُ، وَكَانَ أَشَدُّ مَا لَقِيتُ مِنْهُمْ يَوْمَ الْعَقَبَةِ، إِذْ عَرَضْتُ نَفْسِي عَلَى ٱبْنِ عَبْدِ يَالِيلَ ٱبْنِ عَبْدِ كُلاَلٍ، فَلَمْ يُجِبْنِي إِلَى مَا أَرَدْتُ، فَانْطَلَقْتُ وَأَنَا مَهْمُومٌ عَلَى وَجْهِي، فَلَمْ أَسْتَفِقْ إِلا وَأَنَا بِقَرْنِ

1365: उम्मे मौमिनिन आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि क्या उहूद से भी ज्यादा सख्त दिन आप पर कभी आया है? आपने फरमाया, मैंने तुम्हारी कौम की तरफ से जो जो तकलीफें उठाई हैं, उनमें सब से ज्यादा मुसीबत अकबा के दिन थीं जबकि मैंने खुद को इब्ने अब्द यालील बिन अब्द कुलाल के सामने पेश

الثَّعالِبِ، فَرَفَعْتُ رَأْسِي، فَإِذَا أَنَا بِسَحَابَةٍ قَدْ أَظَلَّتْنِي، فَنَظَرْتُ فَإِذَا فِيهَا جِبْرِيلُ، فَنَادَانِي فَقَالَ: إِنَّ ٱللهَ قَدْ سَمِعَ قَوْلَ قَوْمِكَ لَكَ، وَما رَدُّوا بِهِ عَلَيْكَ، وَقَدْ بَعَثَ ٱللهُ إِلَيْكَ مَلَكَ الْجِبَالِ، لِتَأْمُرَهُ بِمَا شِئْتَ فِيهِمْ، فَنَادَانِي مَلَكُ ٱلْجِبَالِ، فَسَلَّمَ عَلَيَّ، ثُمَّ قَالَ: يَا مُحَمَّدُ، فَقَالَ: ذٰلِكَ فِيمَا شِئْتَ، إِنْ شِئْتَ أَنْ أُطْبِقَ عَلَيْهِمُ الأَخْشَبَيْنِ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (بَلْ أَرْجُو أَنْ يُخْرِجَ ٱللهُ مِنْ أَصْلَابِهِمْ مَنْ يَعْبُدُ ٱللهَ وَحْدَهُ، لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا) [رواه البخاري: ٣٢٣١]

किया और उसने मेरा कहा न माना। मैं रंजीदा मुंह चलता हुआ वहां से लौटा (मुझे होश नहीं था कि किधर जा रहा हूँ) जब करने सालिब पहुंचा तो जरा होश आया, मैंने ऊपर सर उठाया तो देखा कि एक अब्द के टुकड़े ने मुझ पर साया कर दिया है। फिर मैंने देखा कि उसमें हजरत जिब्राईल अलैहि. मौजूद हैं। उन्होंने मुझे आवाज दी कि अल्लाह ने वो जवाब सुन लिया है जो तुम्हारी कौम ने तुम्हें दिया है और उसने आपके पास पहाड़ों के फरिश्ते को भेजा है। आप उसे काफिरों के बाबत जो चाहे हुक्म दें। फिर मुझे पहाड़ों के फरिश्ते ने आवाज दी और सलाम किया। फिर कहा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! तुम जो चाहो (मैं हुक्म पूरा करने के लिए हाजिर हूँ) अगर तुम चाहो तो मक्का के दोनों तरफ जो पहाड़ हैं। उन पर रख दूं। मैंने कहा, नहीं बल्कि मैं उम्मीद रखता हूँ कि अल्लाह उनकी नस्ल से ही ऐसे लोग पैदा करेगा जो सिर्फ अल्लाह की इबादत करेंगे और उसके साथ किसी को शरीक न करेंगे।

फायदे: यह वाक्या नबूवत के दसवें साल पेश आया जबकि हजरत खदीजा और जनाब अबू तालिब फौत हो चुके थे और कुफ्फार की तकलीफ पहुंचाने में शिद्दत आ गई तो आप ताईफ वालों के पास गये। (औनुलबारी 4/32)

١٣٦٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ فِي قَوْلِ ٱللهِ تَعَالَى:

1366: इब्ने मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने अल्लाह के कौल "वो दो

﴿فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ۝ فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ﴾ قَالَ: أَنَّهُ رَأَى جِبْرِيلَ، لَهُ سِتُّمَائَةِ جَنَاحٍ [رواه البخاري: ٣٢٣٢]

कोसैन (तीर का दो कमान) बल्कि इससे भी करीब था, पस उसने अपने बन्दे की तरफ जो वहीअ करना थी की'' की तफसीर करते हुए फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल अलैहि. को देखा था कि उनके छः सौ पर थे।

फायदे : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत जिब्राईल अलैहि. को उसकी असली हालत में देखा और उसके दो परों के बीच इतना फासला था जितना मश्रिक और मगरिब (पूर्व और पश्चिम) के बीच है। (औनुलबारी, 4/34)

١٣٦٧ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ، فِي قَوْلِ اللهِ تعالى: ﴿لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ ءَايَٰتِ رَبِّهِ ٱلْكُبْرَىٰٓ﴾، قَالَ: رَأَى رَفْرَفًا أَخْضَرَ سَدَّ أُفُقَ السَّمَاءِ. [رواه البخاري: ٣٢٣٣]

1367: इब्ने मसऊद रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने अल्लाह के कौल ''उन्होंने अपने रब की बड़ी बड़ी निशानियां देखी'' की तफसीर करते हुए फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक सब्ज बिछौना देखा था जिसने आसमान के किनारो को ढ़ांप लिया था।

फायदे: निसाई की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इतने वसीअ लम्बे चौड़े सब्ज बिछौने पर हजरत जिब्राईल को बैठे देखा था। (औनुलबारी 4/34)

١٣٦٨ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَنْ زَعَمَ أَنَّ مُحَمَّدًا رَأَى رَبَّهُ فَقَدْ أَعْظَمَ، وَلٰكِنْ قَدْ رَأَى جِبْرِيلَ فِي صُورَتِهِ، وَخَلْقِهِ سَادًّا مَا بَيْنَ الأُفُقِ. [رواه البخاري: ٣٢٣٤]

1368: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया जो आदमी ख्याल करता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने रब को देखा है तो उसने बुरा ख्याल किया। बल्कि आपने

जिब्राईल अलैहि. को उनकी असल पैदाईशी शक्ल व सूरत में देखा। उन्होंने आसमान की किनारों को भर दिया था।

फायदेः मुस्लिम की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला तो एक नूर है, मैं उसे क्योंकर देख सकता हूँ? इससे हजरत आइशा के ख्याल का खुलासा होता है। अगरचे ज्यादातर औलमा उसके खिलाफ हैं।

١٣٦٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِذَا دَعَا الرَّجُلُ ٱمْرَأَتَهُ إِلَى فِرَاشِهِ فَأَبَتْ، فَبَاتَ غَضْبَانَ عَلَيْهَا، لَعَنَتْهَا ٱلْمَلَائِكَةُ حَتَّى تُصْبِحَ). [رواه البخاري: ٣٢٣٧]

1369: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब कोई मर्द अपनी बीवी को अपने बिस्तर पर बुलाये और वो न आये जिसकी वजह से खाविन्द रात भर उससे नाराज रहे तो फरिश्ते उस औरत पर सुबह तक लानत करते रहते हैं।

फायदेः हदीस में रात का जिक्र आम हालात के पेशे नजर है, वरना यह वईद तो हुकूके जवजियत (शौहर) के इनकार पर है, चाहे दिन के वक्त हो।(औनुलबारी, 4/35)

١٣٧٠ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (رَأَيْتُ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِي مُوسَى رَجُلًا آدَمَ، طُوَالًا جَعْدًا، كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ شَنُوءَةَ، وَرَأَيْتُ عِيسَى رَجُلًا مَرْبُوعًا، مَرْبُوعَ الْخَلْقِ إِلَى الْحُمْرَةِ وَالْبَيَاضِ، سَبِطَ الرَّأْسِ، وَرَأَيْتُ مَالِكًا خَازِنَ النَّارِ، وَالدَّجَّالَ، فِي آيَاتٍ أَرَاهُنَّ ٱللهُ إِيَّاهُ: ﴿فَلَا تَكُن فِي مِرْيَةٍ مِن لِقَائِهِ﴾). [رواه البخاري: ٣٢٣٩]

1370: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जिस रात मुझे मेराज (आसमान पर ले जाया गया) हुआ मैंने मूसा अलैहि. को देखा कि वो एक गेहूंआ रंग, दराज कामत (लम्बे कद), मजबूत और घटे हुए जिस्म वाले हैं। गोया वो कबिला शनूअ के मर्द हैं और मैंने ईसा अलैहि.

को भी देखा कि वो मयाना कामत (दरमियानी कद) मतूसत बदन (दरमियाना बदन) सुर्ख व सफेद रंगत वाले, सीधे बालों वाले आदमी हैं और मैंने उस फरिश्ते को भी देखा जो दोजख का दरोगा है और दज्जाल को भी देखा। यह सब निशानियां अल्लाह ने मुझे दिखलाई। लिहाजा तुम उन्हें देखने में शक न करो।

फायदे: इन हालात से मकसूद फरिश्तों के औसाफ बयान करना है। इस हदीस में जहन्नम के निगरान हजरत मालिक का जिक्र है।

बाब 6 : जन्नत का बयान, नीज यह कि वो पैदा हो चुकी है।

٦ - باب: مَا جَاءَ فِي صِفَةِ الجَنَّةِ وَأَنَّهَا مَخْلُوقَةٌ

1371: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम में से जो कोई मर जाता है तो उसे उसका मुकाम सुबह व शाम दिखाया जाता है। अगर जन्नती है तो जन्नत में और अगर जहन्नमी है तो जहन्नम में।

١٣٧١ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِذَا مَاتَ أَحَدُكُمْ، فَإِنَّهُ يُعْرَضُ عَلَيْهِ مَقْعَدُهُ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ، فَإِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الجَنَّةِ فَمِنْ أَهْلِ الجَنَّةِ، وَإِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَمِنْ أَهْلِ النَّارِ). [رواه البخاري: ٣٢٤٠]

फायदे: कुछ मोअतजला (गुमराह जमात) का बयान है कि जन्नत अब मौजूद नहीं है, उसे कयामत के दिन पैदा किया जायेगा। इमाम बुखारी उनकी तरदीद में इन अहादीस को लाये हैं कि जन्नत को अल्लाह ने पैदा कर दिया है। अबू दाउद की एक रिवायत में तो उसकी सिराहत है। (औनुलबारी 4/37)

1372: इमरान बिन हुसैन रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि मैंने जन्नत को देखा तो

١٣٧٢ : عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (اطَّلَعْتُ فِي الجَنَّةِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا الْفُقَرَاءَ، وَاطَّلَعْتُ فِي النَّارِ

فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ). [رواه البخاري: ٣٢٤١]

वहां अकसरीयत फुकरा (फकीरों) की थी और दोजख को देखा तो वहां औरतें ज्यादा थी।

फायदेः इमाम बुखारी का मकसद यह है कि जन्नत मौजूद है, तभी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे देखा। मुमकिन है कि आपने मैराज की रात देखा हो। (औनुलबारी 4/38)

١٣٧٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، إِذْ قَالَ: (بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي فِي الجَنَّةِ، فَإِذَا ٱمْرَأَةٌ تَتَوَضَّأُ إِلَى جَانِبِ قَصْرٍ، فَقُلْتُ: لِمَنْ هٰذَا القَصْرُ؟ فَقَالُوا: لِعُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ، فَذَكَرْتُ غَيْرَتَهُ، فَوَلَّيْتُ مُدْبِرًا). فَبَكَى عُمَرُ وَقَالَ: أَعَلَيْكَ أَغَارُ يَا رَسُولَ ٱللهِ. [رواه البخاري: ٣٢٤٢]

1373: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास थे, जबकि आपने फरमाया मैंने नींद की हालत में अपने आपको जन्नत में देखा कि एक औरत जन्नत के गोशे (कोने) में वजू कर रही थी। मैंने पूछा, यह महल किसका है? फरिश्तों ने कहा कि उमर बिन खत्ताब रजि. का है। मुझे उनकी गैरत का ख्याल आया तो वापस आ गया। इस पर उमर रजि. रोने लगे और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या मैं आप पर भी गैरत करूंगा।

फायदेः मालूम हुआ कि जन्नत पैदा हो चुकी है और उसमें साजो सामान भी मौजूद है। नीज हजरत उमर रजि. का कतई तौर पर जन्नती होना भी इस हदीस से साबित होता है। (औनुलबारी 4/39)

١٣٧٤ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَوَّلُ زُمْرَةٍ تَلِجُ الجَنَّةَ صُورَتُهُمْ عَلَى صُورَةِ القَمَرِ لَيْلَةَ البَدْرِ، لَا يَبْصُقُونَ فِيهَا وَلَا يَمْتَخِطُونَ وَلَا يَتَغَوَّطُونَ،

1374: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सब से पहला गिरोह वो जो जन्नत में दाखिल होगा। उनकी सूरत चौहदवीं के चांद की

آنِيَتُهُمْ فِيهَا الذَّهَبُ، أَمْشَاطُهُمْ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، وَمَجَامِرُهُمُ الأَلُوَّةُ، وَرَشْحُهُمُ الْمِسْكُ، وَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ زَوْجَتَانِ، يُرَى مُخُّ سُوقِهِمَا مِنْ وَرَاءِ اللَّحْمِ مِنَ الْحُسْنِ، لاَ اخْتِلاَفَ بَيْنَهُمْ وَلاَ تَبَاغُضَ، قُلُوبُهُمْ قَلْبُ رَجُلٍ وَاحِدٍ، يُسَبِّحُونَ اللهَ بُكْرَةً وَعَشِيًّا). [رواه البخاري: ٣٢٤٥]

तरह होगी जो वहां न थूकेंगे और न बलगम निकालेंगे और न ही बोल व बराज (पखाना-पेशाब) करेंगे। उनके बर्तन सोने के और कंघीया सोने और चांदी की होंगी। उनकी अंगीठीयों में उद (लकड़ी) सुगलेगा और उनका पसीना खुश्बू जैसा होगा और उनमें से हर एक के लिए दो बीवियां होगी। लताफते हुस्न (खुबसूरती) की वजह से उनकी पिण्डलियों का मगज गोश्त के ऊपर से दिखाई देगा। नीज उनमें बाहमी इख्तलाफ न होगा, न दुमश्नी। उन सब के दिल एक होंगे और वो सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बयान करेंगे।

फायदे: जन्नत में एक अदना दर्जा के रिहाईश के लिए खिदमत गुजारी के तौर पर दस हजार खादिम होगा, जिनके हाथों में सोने चांदी की प्लेटें होगी। (औनुलबारी 4/41)

١٣٧٥ : وَعَنْهُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ في رواية: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: (وَالَّذِينَ عَلَى إِثْرِهِمْ كَأَشَدِّ كَوْكَبٍ إِضَاءَةً، قُلُوبُهُمْ عَلَى قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ، لاَ اخْتِلاَفَ بَيْنَهُمْ وَلاَ تَبَاغُضَ، لِكُلِّ امْرِىءٍ مِنْهُمْ زَوْجَتَانِ، كُلُّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا يُرَى مُخُّ سَاقِهَا مِنْ وَرَاءِ لَحْمِهَا مِنَ الْحُسْنِ، يُسَبِّحُونَ اللهَ بُكْرَةً وَعَشِيًّا، لاَ يَسْقَمُونَ، وَلاَ يَمْتَخِطُونَ)، وَذَكَرَ بَاقِي الْحَدِيثِ. [رواه البخاري: ٣٢٤٦ وانظر حديث رقم: ٣٢٤٥]

1375: अबू हुरैरा रजि. से ही एक और रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उनके बाद जो लोग जन्नत में दाखिल होंगे वो जगमगाते सितारों की तरह होंगे। उन सब के दिल मुहब्बत में एक आदमी के दिल की तरह होंगे। उनमें न किसी बात का इख्तलाफ होगा और न दुश्मनी। उनमें से हर एक के लिए दो दो बीवियां होगी। लतीफ हुस्न की वजह से उनकी

पिण्डली का मगज गोश्त के ऊपर से दिखाई देगा। वो सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बयान करेगी। न कभी बीमार होगी और न नाक से रिंजिश (नाक की गन्दगी) गिरायेगी। फिर उन्होंने बाकी हदीस को जिक्र फरमाया।

फायदेः इस हदीस के आखिर में है कि उनकी कंघीया सोने की होंगी। वहां सिर्फ हुस्न को दोबाला (बढ़ाने) और हुसूले लज्जत (मजा हासिल करने) के लिए कंघी की जायेगी, क्योंकि बालों में मैल-कुचेल का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। (औनुलबारी 4/41)

१٣٧٦ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَيَدْخُلَنَّ مِنْ أُمَّتِي سَبْعُونَ أَلْفًا، أَوْ سَبْعُمَائَةِ أَلْفٍ، لَا يَدْخُلُ أَوَّلُهُمْ حَتَّى يَدْخُلَ آخِرُهُمْ، وُجُوهُهُمْ عَلَى صُورَةِ ٱلْقَمَرِ لَيْلَةَ ٱلْبَدْرِ). [رواه البخاري: ٣٢٤٧]

1376 : सहल बिन साद रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, यकीनन मेरी उम्मत में से सत्तर हजार या सात लाख आदमी एक साथ जन्नत में दाखिल होंगे। उनके चेहरे चौहदवीं की रात के चांद की तरह रोशन होंगे।

फायदेः बुखारी की ही एक रिवायत (6541) में उन खुशकिस्मत हजरात के यह वसफ बयान हुए हैं कि वो दम झाड़ नहीं करायेंगे, आग से दागने को इलाज का जरिया नहीं बनायेंगे, बद शगुनी नहीं लेंगे और अपने रब ही पर भरोसा करेंगे। नीज कुछ रिवायतों में हैं कि एक हजार के साथ सत्तर हजार ज्यादा होंगे। इसी तरह बिला हिसाब जन्नत में दाखिल होने वालों की तादाद चार करोड़ नो लाख बनती है, इस तादाद पर ज्यादा अल्लाह की तरफ से इजाफा होगा।

١٣٧٧ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أُهْدِيَ لِلنَّبِيِّ ﷺ جُبَّةُ سُنْدُسٍ،

1377: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि

وَكَانَ يَنْهَى عَنِ الحَرِيرِ، فَتَعَجَّبَ النَّاسُ مِنْهَا، فَقَالَ: (وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ، لَمَنَادِيلُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ فِي الجَنَّةِ أَحْسَنُ مِنْ هٰذَا). [رواه البخاري: ٣٢٤٨]

वसल्लम को एक बार बारीक रेशमी जाबा तौहफा दिया गया जबकि आप रेशमी कपड़े के इस्तेमाल से मना फरमाया करते थे। लोग (उसकी उमदगी और बनावट देखकर) बहुत खुश हुए तो आपने फरमाया, उस जात की कसम जिसके हाथ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान है। हजरते साद रजि. को जन्नत में मिलने वाले रूमाल इससे कहीं बेहतर होंगे।

फायदे: लिबास में रूमाल की हकीकत बहुत कमतर ख्याल की जाती है, क्योंकि इससे हाथ साफ किए जाते हैं या चेहरे की धूल मिट्टी दूर की जाती है। जन्नत में घटिया कपड़े की यह हकीकत होगी तो बेहतरीन और आला कपड़ों की खूबसूरती और बनावट तो हमारे ख्यालात से दूर है। (औनुलबारी, 3/47)

١٣٧٨ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنَّ فِي الجَنَّةِ لَشَجَرَةً، يَسِيرُ الرَّاكِبُ فِي ظِلِّهَا مِائَةَ عَامٍ لَا يَقْطَعُهَا). [رواه البخاري: ٣٢٥١]

1378: अनस रजि. से ही रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जन्नत में एक पेड़ इतना बड़ा है कि अगर सवार उसके साये में सौ बरस तक चले तब भी उसे तय न कर सके।

फायदे: एक रिवायत में इस पेड़ का नाम तौबा बताया गया है, एक दूसरी रिवायत में है कि अगर तैयारशुदा तेज रफ्तार घोड़ा सौ साल तक भी सरपट दौड़ता रहे तो भी उसे तय नहीं कर सकेगा।

(औनुलबारी 4/48)

١٣٧٩ : وفي رِوايَةٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ مِثْلَ ذٰلِكَ،

1389: अबू हुरैरा रजि. से एक रिवायत में इसी तरह वारिद है। मगर आखिर में

قَالَ: (وَٱقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ: ﴿وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ﴾). [رواه البخاري: ٣٢٥٢]

उन्होंने फरमाया, अगर तुम उसकी सदाकत चाहते हो तो अल्लाह का यह इरशाद पढ़ लो "और लम्बे लम्बे साये।"

١٣٨٠ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنَّ أَهْلَ الجَنَّةِ يَتَرَاءَوْنَ أَهْلَ الغُرَفِ مِنْ فَوْقِهِمْ، كَمَا تَتَرَاءَوْنَ الْكَوْكَبَ الدُّرِّيَّ الْغَابِرَ فِي الأُفُقِ، مِنَ الْمَشْرِقِ أَوِ الْمَغْرِبِ، لِتَفَاضُلِ مَا بَيْنَهُمْ). قالوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ تِلْكَ مَنَازِلُ الأَنْبِيَاءِ لَا يَبْلُغُهَا غَيْرُهُمْ، قَالَ: (بَلَى، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، رِجَالٌ آمَنُوا بِٱللهِ وَصَدَّقُوا الْمُرْسَلِينَ). [رواه البخاري: ٣٢٥٦]

1380: अबू साद खुदरी रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि जन्नत वाला बालाखाना वालों को इस तरह देखेंगे जिस तरह लोग आसमान के मश्रिकी या मगरिबी किनारे पर चमकता हुआ सितारा देखते हैं। क्योंकि आपस में दर्जो का फर्क जरूर होगा। लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह तो हजरात अम्बिया अलैहि. के मकाम हैं। उनके मकाम पर कोई दूसरा नहीं पहुंच सकता। आपने फरमाया, क्यों नहीं। उस जात की कसम! जिसके हाथ में मेरी जान है, जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये और रसूलों की तसदीक की (वो यकीनन इन मुकाम को हासिल करेंगे)

फायदे : यह इम्तियाजी खुसूसियत सिर्फ इस उम्मत के खुशकिस्मत लोगों को नसीब होगी, क्योंकि तमाम अम्बिया अलैहि. की तसदीक इन्हीं से मुमकिन है। (औनुलबारी, **4/50**)

---

٧ - باب: صِفَةُ النَّارِ وَأَنَّهَا مَخْلُوقَةٌ

बाब 7: दोजख का बयान नीज इस बात की वजाहत कि वो पैदा हो चुकी है।

١٣٨١ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (الحُمَّى مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ، فَأَبْرِدُوهَا بِالمَاءِ).

1381: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बुखार दोजख

[رواه البخاري: ٣٢٦٣]

की भाप से आता है, लिहाजा तुम उसे पानी से ठण्डा करो।

फायदेः हदीस में बुखार को पानी से ठण्डा करने की कैफियत बयान नहीं हुई। मुस्लिम की रिवायत में है कि हजरत असमा रजि. बुखार होने वाले के सीने पर पानी झिड़कते थे। डाक्टरों का भी यही फैसला है कि जर्द बुखार में बीमार को ठण्डा पानी पिलाया जाये और उस पर झिड़काव भी किया जाये। (औनुलबारी, 4/51)

١٣٨٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (نَارُكُمْ جُزْءٌ مِنْ سَبْعِينَ جُزْءًا مِنْ نَارِ جَهَنَّمَ)، قِيلَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنْ كَانَتْ لَكَافِيَةً، قَالَ: (فُضِّلَتْ عَلَيْهِنَّ بِتِسْعَةٍ وَسِتِّينَ جُزْءًا، كُلُّهُنَّ مِثْلُ حَرِّهَا). [رواه البخاري: ٣٢٦٥]

1382: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम्हारी दुनिया की आग जहन्नम की आग का सत्तरवां हिस्सा है। कहा गया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह दुनिया की आग ही काफी थी। आपने फरमाया, वो आग इस पर उन्हत्तर हिस्से ज्यादा कर दी गई है और हर हिस्सा इस आग के बराबर गर्म है।

फायदेः मुस्नद इमाम अहमद की रिवायत में है कि दोजख की आग दुनिया की आग के मुकाबले में सौ दर्जा ज्यादा हरारत अपने अन्दर रखती है। वाजेह रहे कि दुनियावी आग की कुछ किस्में ऐसी हैं कि कुछ मिनटो में लोहे को पिघला देती है।

١٣٨٣ : عَنْ أُسَامَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (يُجَاءُ بِالرَّجُلِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُلْقَى فِي النَّارِ، فَتَنْدَلِقُ أَقْتَابُهُ فِي النَّارِ، فَيَدُورُ كَمَا يَدُورُ ٱلْحِمَارُ

1383: उसामा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना, कयामत के दिन एक आदमी को लाया जायेगा और उसे

بِرَحاهُ، فيجتمع أهلُ النَّارِ عَلَيْهِ فيقولون: أيْ فُلانُ ما شأنُكَ؟ ألَيْسَ كُنْتَ تأمُرُنا بِالمعْرُوفِ وَتَنْهانا عَنِ المُنْكَرِ؟ قال: كُنْتُ آمُرُكُمْ بِالمَعْرُوفِ وَلا آتِيهِ، وَأَنْهاكُمْ عَنِ المُنْكَرِ وآتِيهِ). [رواه البخاري: ٣٢٦٧]

जहन्नम में डाल दिया जायेगा तो दोजख में उसकी अंतड़ियां निकल पड़ेगी और वो इस तरह घूमता फिरेगा जिस तरह गधा अपनी चक्की के आसपास घूमता है। फिर दोजख वाले उसके पास जमा होकर कहेंगे ऐ फलां! तेरा क्या हाल है? क्या तू हमें अच्छी बातों का हुक्म न देता था और बुरे कामों से न रोकता था? वो जवाब देगा, हाँ! लेकिन मैं तुम्हें अच्छी बातों का हुक्म देता था, मगर खुद मैं उस पर अमल नहीं करता था और तुम्हें बुरे कामों से रोकता था मगर खुद उनका करने वाला होता था।

फायदे: इस सख्त वईद के पेशे नजर उन औलमा व खुतबा को गौर करना चाहिए जो अपने इल्म व वअज (तकरीर) के मुताबिक अमल नहीं करते। (औनुलबारी 4/53)

---

٨ - باب: صِفَةُ إِبْلِيسَ وَجُنُودِهِ

बाब 8 : इबलीस और उसके लश्कर का बयान।

١٣٨٤ - عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْها قالَتْ: سُحِرَ النَّبِيُّ ﷺ، حَتَّى كانَ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ أَنَّهُ يَفْعَلُ الشَّيْءَ وَما يَفْعَلُه، حَتَّى كانَ ذاتَ يَوْمٍ دَعا وَدَعا، ثُمَّ قالَ ﷺ: (أَشَعَرْتِ أَنَّ ٱللهَ أَفْتاني فِيما فِيهِ شِفائي، أَتاني رَجُلانِ: فَقَعَدَ أَحَدُهُما عِنْدَ رَأْسي وَالآخَرُ عِنْدَ رِجْلَيَّ، فَقالَ أَحَدُهُما لِلآخَرِ: ما وَجَعُ الرَّجُلِ؟ قالَ: مَطْبُوبٌ، قالَ وَمَنْ طَبَّهُ؟ قالَ: لَبِيدُ

1384: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू किया गया तो आपकी यह हालत हो गई कि आप यह ख्याल करते कि मैं यह काम कर सकता हूँ, लेकिन कर नहीं सकते थे। फिर आपने एक दिन खूब दुआ फरमाई। इसके बाद मुझ से फरमाया! ऐ आइशा रजि. क्या तुम्हें मालूम है कि अल्लाह ने आज

ابْنُ الأَعْصَمِ، قَالَ: فِيمَا ذَا؟ قَالَ: فِي مُشْطٍ وَمُشَاقَةٍ وَجُفِّ طَلْعَةِ ذَكَرٍ، قَالَ: فَأَيْنَ هُوَ؟ قَالَ: فِي بِئْرِ ذَرْوَانَ)، فَخَرَجَ إِلَيْهَا النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ رَجَعَ، فَقَالَ لِعَائِشَةَ حِينَ رَجَعَ: (نَخْلُهَا كَأَنَّهُ رُؤُوسُ الشَّيَاطِينِ). فَقُلْتُ: أَسْتَخْرَجْتَهُ؟ فَقَالَ: (لَا، أَمَّا أَنَا فَقَدْ شَفَانِي ٱللهُ، وَخَشِيتُ أَنْ يُثِيرَ ذٰلِكَ عَلَى النَّاسِ شَرًّا). ثُمَّ دُفِنَتِ الْبِئْرُ. [رواه البخاري: ٣٢٦٨]

मुझे ऐसी खबर बताई है जिसमें मेरी शिफा है, यानी मेरे पास दो आदमी आये, उनमें से एक सर के पास और दूसरा पांव के पास बैठ गया। फिर उनमें से एक ने दूसरे से कहा, इस आदमी को क्या बीमारी है? दूसरे ने जवाब दिया, इस पर जादू किया गया है। उसने कहा इस पर किस ने जादू किया है? उसने कहा, नबी बिन आसम यहूदी ने। उसने कहा, किस चीज में किया है? दूसरे ने जवाब दिया कि कंघी, आपके बाल और नर खजूर के खोशा में। उसने कहा, यह कहां रखा है? दूसरे ने जवाब दिया, जरवान नामी कुंए में। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुएं के पास तशरीफ ले गये और वापिस आकर आपने आइशा रजि. से फरमाया, वहां की खजूरें शैतान के सर की तरह हैं। आइशा रजि. फरमाती हैं कि मैंने कहा! आपने उसको निकलवाया। फरमाया नहीं, अल्लाह ने मुझे शिफा दे दी है और मुझे अन्देशा है कि इससे लोगों में फसाद फैलेगा। इसके बाद वो कुंआ बन्द कर दिया गया।

फायदे: एक रिवायत में है कि आपने उसे कुए से निकलवाया, लेकिन रद्दे अमल के तौर पर उस यहूदी से पूछताछ नहीं की। मुबादा मुसलमान जज्बाती होकर उसे कत्ल कर दे। मालूम हुआ कि शरअंगेजी (बुराई उभरने) के डर से अपने जज्बात को कुर्बान कर देना चाहिए। (औनुलबारी, 4/55)। आप पर जादू बीवियों के सिलसिले में हुआ था कि आप उनके पास न जा सके, आप समझते थे; मैं उनसे ताल्लुक कायम कर सकता हूँ, लेकिन ताल्लुक कायम कर नहीं सकते थे। निज

इस्तख़राज से मुराद उस जादू की तसहीद और इशाअत है। (अलवी)

1385: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, शैतान तुम में से किसी के पास आता है और उसे कहता है, यह किसने पैदा किया? वो किसने पैदा किया? यहां तक कि यह सवाल करने लगता कि अल्लाह को किसने पैदा किया? लिहाजा जब नौबत यहां तक पहुंच जाये तो इन्सान को अऊज़ुबिल्लाह पढ़ना चाहिए और उस शैतानी ख्याल को छोड़ देना चाहिए।

١٣٨٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (يَأْتِي الشَّيْطَانُ أَحَدَكُمْ فَيَقُولُ: مَنْ خَلَقَ كَذَا، مَنْ خَلَقَ كَذَا، حَتَّى يَقُولَ: مَنْ خَلَقَ رَبَّكَ؟ فَإِذَا بَلَغَهُ فَلْيَسْتَعِذْ بِٱللهِ وَلْيَنْتَهِ). [رواه البخاري: ٣٢٧٦]

फायदे: शैतानी ख्यालात दो तरह के होते हैं। एक ऐसे होते हैं जो क़ायम नहीं रहते और न ही उनसे कोई शक जन्म लेता है। यह तो अदम दिलपेशी से खत्म हो जाते हैं। अगर दिल में जम जायें और शक पैदा करने वाले हो तो अल्लाह की पनाह में आना चाहिए।

(औनुलबारी, 4/57)

1386: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि मश्रिक की तरफ इशारा करके फरमाते थे, फितना यहां है, फसाद इसी तरफ से निकलेगा जहां से शैतान का सींग तुलूअ होता है।

١٣٨٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يُشِيرُ إِلَى الْمَشْرِقِ، فَقَالَ: (هَا، إِنَّ الْفِتْنَةَ هَا هُنَا، إِنَّ الْفِتْنَةَ هَا هُنَا، مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ). [رواه البخاري: ٣٢٧٩]

फायदे: एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह हदीस बयान करते वक्त मश्रिक की तरफ इशारा फरमाया,

इससे मुराद सर जमीने इराक है जो मदीना से मश्रिक में है और शुरू से आज तक फितनों का अड्डा है।

1387: जाबिर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जब रात शुरू हो या उसका अन्धेरा छा जाये तो तुम अपने बच्चो को बाहर निकलने से रोक लो, क्योंकि उस वक्त शैतान फैल जाते हैं। फिर जब रात का कुछ हिस्सा गुजर जाये तो उस वक्त बच्चों को छोड़ दो और बिस्मिल्लाह पढ़कर दरवाजा बन्द करो और बिस्मिल्लाह पढ़ कर ही चिराग बुझा दो और अल्लाह का नाम लेकर मश्कीजे का मुंह बांध दो। फिर अल्लाह का नाम लेकर खाने का बर्तन ढ़ांप दो। अगर ढ़ांकने की कोई चीज न मिले तो और कोई चीज (लकड़ी वगैरह) उस पर रख दो।

١٣٨٧ : عَنْ جابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (إِذَا ٱسْتَجْنَحَ اللَّيْلُ، أَوْ: كانَ جُنْحُ اللَّيْلِ، فَكُفُّوا صِبْيانَكُمْ، فَإِنَّ الشَّياطِينَ تَنْتَشِرُ حِينَئِذٍ، فَإِذَا ذَهَبَ ساعَةٌ مِنَ الْعِشاءِ فَخَلُّوهُمْ، وأَغْلِقْ بابَكَ، وَٱذْكُرِ ٱسْمَ اللهِ، وأَطْفِئْ مِصْباحَكَ وَٱذْكُرِ ٱسْمَ ٱللهِ، وأَوْكِ سِقاءَكَ وَٱذْكُرِ ٱسْمَ ٱللهِ، وَخَمِّرْ إِناءَكَ وَٱذْكُرِ ٱسْمَ ٱللهِ، وَلَوْ تَعْرُضُ عَلَيْهِ شَيْئًا). [رواه البخاري: ٣٢٨٠]

फायदे: रात को सोते वक्त अगर नुकसान का डर न हो, मसलन लालटेन छत से लटक रही है या बिजली का बल्ब जल रहा है तो जरूरत के पेशे नजर उसका गुल करना जरूरी नहीं है।

(औनुलबारी 4/60)

1388: सुलेमान बिन सुरद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठा हुआ था। इतने में दो आदमी आपस में गाली गलौच करने लगे। फिर उनमें से एक का चेहरा सुर्ख हो गया और रगे

١٣٨٨ : عَنْ سُلَيْمانَ بْنِ صُرَدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: كُنْتُ جالِسًا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَرَجُلانِ يَسْتَبَّانِ، فَأَحَدُهُما ٱحْمَرَّ وَجْهُهُ، وَٱنْتَفَخَتْ أَوْداجُهُ، فَقالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنِّي لأَعْلَمُ كَلِمَةً لَوْ قالَها ذَهَبَ عَنْهُ ما

يَجِدُ، لَوْ قَالَ: أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ، ذَهَبَ عَنْهُ مَا يَجِدُ»، فَقَالُوا لَهُ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: تَعَوَّذْ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَقَالَ: وَهَلْ بِي جُنُونٌ؟ [رواه البخاري: ٣٢٨٢]

फूल गई। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं एक ऐसी दुआ जानता हूँ। अगर यह आदमी उसे पढ़ ले तो उसका गुस्सा जाता रहे। अगर यह "अऊजुबिल्लाह मिनश्शैतान अर्रजीम" पढ़ ले तो इसका गुस्सा खत्म हो जाये। लोगों ने उस आदमी से कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है, तू शैतान से अल्लाह की पनाह मांग। उसने कहा, क्या मैं दिवाना हूँ। (कि शैतान से पनाह मांगू)

फायदे: उस आदमी के ख्याल के मुताबिक शैतान से उस वक्त पनाह मांगी जाती है जब इन्सान दीवानगी में गिरफ्तार हो। शायद उसे मालूम न था कि गुस्सा कोई फरजानगी की निशानी नहीं है, बल्कि यह भी जुनून और दीवानापन ही की किस्म है। (औनुलबारी 4/61)

١٣٨٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «التَّثَاؤُبُ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَإِذَا تَثَاءَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَرُدَّهُ مَا اسْتَطَاعَ، فَإِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا قَالَ: هَا، ضَحِكَ الشَّيْطَانُ». [رواه البخاري: ٣٢٨٩]

1389: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि जमाई (अंगड़ाई) लेना एक शैतानी हरकत है। लिहाजा जब तुम में से किसी को जमाई आये तो जहां तक हो सके, उसे रोके क्योंकि जब तुम में से कोई जमाई लेते हुए हाकता है तो शैतान हंसता है।

फायदे: अगर जमाई न रूक सके तो इन्सान को चाहिए कि अपने मुंह पर हाथ रख ले ताकि शैतान को उसके साथ खेल खेलने का मौका न मिले। ध्यान रहे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बल्कि किसी भी नबी को जमाई नहीं आई है।

١٣٩٠ : عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ مِنَ ٱللهِ، وَالْحُلُمُ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَإِذَا حَلَمَ أَحَدُكُمْ حُلُمًا يَخَافُهُ فَلْيَبْصُقْ عَنْ يَسَارِهِ، وَلْيَتَعَوَّذْ بِٱللهِ مِنْ شَرِّهَا، فَإِنَّهَا لاَ تَضُرُّهُ). [رواه البخاري: ٣٢٩٢]

1390: हजरत अबू कतादा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अच्छा ख्वाब अल्लाह की तरफ से और बुरा ख्वाब शैतान की तरफ से होता है। लिहाजा अगर तुम में से कोई परेशान ख्वाब देखे जिससे वो डर महसूस करे तो उसे अपनी बायीं तरफ थूक देना चाहिए और उसकी बुराई से अल्लाह की पनाह मांगे। इस तरह वो उसको नुकसान नहीं देगा।

फायदे: शैतान चाहता है कि बुरे ख्वाब के जरीये मुसलमान को परेशान करके अपने रब से उसको बदगुमान कर दिया जाये। इसलिए ऐसी हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तलकीन फरमाई है कि अल्लाह की पनाह में आना चाहिए। (औनुलबारी, 4/63)

١٣٩١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِذَا ٱسْتَيْقَظَ أَحَدُكُمْ مِنْ مَنَامِهِ فَتَوَضَّأَ فَلْيَسْتَنْثِرْ ثَلاَثًا، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَبِيتُ عَلَى خَيْشُومِهِ). [رواه البخاري: ٣٢٩٥]

1391: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि जब तुममें से कोई अपनी नींद से बैदार हो तो वजू करे और तीन बार नाक में पानी डालकर उसे साफ करे, क्योंकि शैतान उसकी नाक में रात बसर करता है।

फायदे: शैतान का रात गुजारना हकीकत पर मब्नी है, क्योंकि दिल और दिमाग तक जाने का यही एक रास्ता है। जागने के वक्त अगर नबी की हिदायत के मुताबिक अमल किया जाये तो उसकी रात गुजारी के असरात खत्म हो जायेंगे।

٩ - باب: قَوْلُ ٱللهِ تَعَالَى: ﴿وَبَثَّ

बाब 9: फरमाने इलाही है : "उसने

﴿فِيهَا مِن كُلِّ دَآبَّةٍ﴾

जमीन में हर किस्म के जानवर फैलाये।"

١٣٩٢ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: سَمِعْتُ ٱلنَّبِيَّ ﷺ يَخْطُبُ عَلَى الْمِنْبَرِ يَقُولُ: (ٱقْتُلُوا الحَيَّاتِ، وَٱقْتُلُوا ذَا الطُّفْيَتَيْنِ وَالأَبْتَرَ، فَإِنَّهُمَا يَطْمِسَانِ البَصَرَ، وَيَسْتَسْقِطَانِ الحَبَلَ). قَالَ عَبْدُ ٱللهِ: فَبَيْنَا أَنَا أُطَارِدُ حَيَّةً لِأَقْتُلَهَا، فَنَادَانِي أَبُو لُبَابَةَ: لَا تَقْتُلْهَا، فَقُلْتُ: إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَدْ أَمَرَ بِقَتْلِ الحَيَّاتِ. قَالَ: إِنَّهُ نَهَى بَعْدَ ذٰلِكَ عَنْ ذَوَاتِ البُيُوتِ، وَهِيَ الْعَوَامِرُ. [رواه البخاري: ٣٢٩٧، ٣٢٩٨]

1392: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिम्बर पर खुत्बे में यह फरमाते हुए सुना, सांपों को मार डालो। खसूसन वो सांप जो दो धारी वाला और दुम कटा हो, उसे किसी सूरत में जिन्दा न छोड़ो। क्योंकि यह दोनों आंख की रोशनी खत्म कर देते हैं और हमल गिरा देते हैं। अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. का बयान है कि मैं एक सांप मारने की ताक में था कि मुझे अबू लुबाबा रजि. ने आवाज दी कि उसको न मारना। मैंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सांपो को मारने का हुक्म दिया है। अबू लुबाबा रजि. बोले, आपने बाद में उन सांपो को मारने से मना फरमाया है जो घरों में रहते हैं और उन्हें अवामिर कहा जाता है।

फायदे: मुस्लिम की रिवायत में है कि घर में रहने वाले सांप को तीन बार या तीन दिन तक कहते रहो कि हमें परेशान न करो, यहां से चलें जाओ। अगर फिर भी न जाये तो उन्हें मार डालो। (औनुलबारी 4/67)

---

١٠ - باب: خَيْرُ مَالِ المُسْلِمِ غَنَمٌ يَتْبَعُ بِهَا شَعَفَ الجِبَالِ

बाब 10 : मुसलमान का उम्दा माल बकरियां है, जिन्हें चराने के लिए पहाड़ की चोटियों पर ले जाते हैं।

١٣٩٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (رَأْسُ

1393: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

الْكُفرِ نَحْوَ الْمَشرِقِ، وَالفَخْرُ وَالْخُيَلاءُ فِي أَهْلِ الخَيْلِ وَالإِبلِ، وَالفَدَّادِينَ أَهْلِ الْوَبَرِ، وَالسَّكِينَةُ فِي أَهْلِ الغَنَم). [رواه البخاري: ٣٣٠١]

वसल्लम ने फरमाया, कुफ्र का चरचश्मा मुश्रिक की तरफ है और फख्र व तकब्बुर (घमण्ड) घोड़े और ऊंट रखने वाले उन चरवाहों में है जो जंगलात में रहते हैं और ऊंट के बालों से घर बनाते हैं और बकरियां रखने वालों में गुरबत व मिसकनत (गरीबी) होती है।

फायदेः बकरियां पालने में बहुत खैरो बरकत होती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत उम्मे हानी रजि. को फरमाया था कि बकरियां रखो, क्योंकि उसमें बरकत होती है। (औनुलबारी, 4/69)

١٣٩٤ : عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَمْرٍو أَبِي مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَشَارَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِيَدِهِ نَحْوَ اليَمَنِ، فَقَالَ: (الإِيمَانُ يَمَانٍ هَا هُنَا، أَلاَ إِنَّ الْقَسْوَةَ وَغِلَظَ الْقُلُوبِ فِي الْفَدَّادِينَ، عِنْدَ أُصُولِ أَذْنَابِ الإِبِلِ، حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنَا الشَّيْطَانِ، فِي رَبِيعَةَ وَمُضَرَ). [رواه البخاري: ٣٣٠٢]

1394: अबू मसऊद उकबा बिन अम्र रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने हाथ से यमन की तरफ इशारा करके फरमाया, ईमान यमन में है। इस तरह आगाह रहो! कि सख्ती और संगदिली उन काश्तकारों में है जो ऊंटों के पास उस मुल्क में रहते हैं, जहां से शैतान के दोनों सींग निकलते हैं। यानी रबिआ और मुजर की कौमों में।

फायदेः यमन वाले बिला जंग व जदाल (झगड़ा) बल्कि बरेजा व रगबत (खुशी-खुशी) मुसलमान हुए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी तारीफ फरमाई। वैसे भी वहां बड़े बड़े अहले इल्म और हदीस पर अमल करने वाले लोग गुजरे हैं जैसा कि अल्लामा शौकानी और अल्लामा सनआनी वगैरह। इस दौर में मकबल अब्दुल हादी हैं जो किताब व सुन्नत में हमेशा लगे रहते हैं, राकिम (किताब लिखने वाले) ने एक यमनी को देखा था जो कुतूब सिता का हाफिज था।

1395: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब तुम मुर्ग की आवाज सुनो तो अल्लाह का फजल तलब करो क्योंकि वो फरिश्ते को देखता है और जब तुम गधे की आवाज सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह मांगे, वो शैतान को देखता है।

١٣٩٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (إِذَا سَمِعْتُمْ صِيَاحَ ٱلدِّيَكَةِ فَٱسْأَلُوا ٱللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ، فَإِنَّهَا رَأَتْ مَلَكًا، وَإِذَا سَمِعْتُمْ نَهِيقَ ٱلْحِمَارِ فَتَعَوَّذُوا بِٱللَّهِ مِنَ ٱلشَّيْطَانِ، فَإِنَّهُ رَأَى شَيْطَانًا). [رواه البخاري: ٣٣٠٣]

फायदे: एक रिवायत में है कि मुर्ग को बुरा भला मत कहो, क्योंकि वो नमाज के वक्त जगा देता है, नीज दूसरी रिवायत में है कि जब कुत्ता भोंके तो भी शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह मांगो।

(औनुलबारी 2/72)

1396: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि बनी इस्राईल का एक गिरोह गुम हो गया था। नामालूम उनका क्या हश्र हुआ। मेरे ख्याल में यह चूहे हैं, क्योंकि जब उनके सामने ऊंट का दूध रखा जाता है तो उसे नहीं पीते और जब उनके सामने बकरियों का दूध रखा जाता है तो उसे पी जाते हैं। रावी कहता है कि जब मैंने यह हदीस कअब रजि. से बयान की तो उन्होंने कहा, आया तुमने खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना है? मैंने कहा हाँ! फिर उन्होंने मुझ से मुकर्रर पूछा तो मैंने कहा, क्या मैं तौरात पढ़ा करता हूँ?

١٣٩٦ : وعَنْه رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (فُقِدَتْ أُمَّةٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ لاَ يُدْرَى مَا فَعَلَتْ، وَإِنِّي لاَ أُرَاهَا إِلاَّ ٱلْفَأْرَ، إِذَا وُضِعَ لَهَا أَلْبَانُ ٱلإِبِلِ لَمْ تَشْرَبْ، وَإِذَا وُضِعَ لَهَا أَلْبَانُ ٱلشَّاءِ شَرِبَتْ). فَحَدَّثْتُ كَعْبًا فَقَالَ: أَنْتَ سَمِعْتَ ٱلنَّبِيَّ ﷺ يَقُولُهُ؟ قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ لِي مِرَارًا، فَقُلْتُ: أَفَأَقْرَأُ ٱلتَّوْرَاةَ؟. [رواه البخاري: ٣٣٠٥]

फायदेः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह बात अपने ख्याल के मुताबिक फरमाई थी बाद में वहीअ के जरीये बताया गया कि मसखशुदा (मिटाई गई) कौमों की नस्ल बाकी नहीं, बल्कि उन्हें चन्द दिनों के बाद सफहाये हस्ती (दुनिया) से मिटा दिया जाता है।

(औनुलबारी 4/74)

---

١١ - باب: إِذَا وَقَعَ الذُّبَابُ فِي شَرَابِ أَحَدِكُمْ فَلْيَغْمِسْهُ فَإِنَّ فِي أَحَدِ جَنَاحَيْهِ دَاءً وَفِي الأُخْرَى شِفَاءً

बाब 11: जब तुममें से किसी के खाने पीने की चीज में मक्खी गिर जाये तो उसको डूबो दो, क्योंकि उसके एक पर में बीमारी, दूसरे में शिफा है।

١٣٩٧ : وعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (إِذَا وَقَعَ ٱلذُّبَابُ فِي شَرَابِ أَحَدِكُمْ فَلْيَغْمِسْهُ ثُمَّ لِيَنْزِعْهُ، فَإِنَّ فِي إِحْدَى جَنَاحَيْهِ دَاءً وَالأُخْرَى شِفَاءً). [رواه البخاري: ٣٣٢٠]

1397: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब तुम में से किसी के पीने की चीज में मक्खी गिर जाये तो उसे चाहिए कि उसको डूबो दे, फिर निकाल फेंके क्योंकि उसके दोनों परों में से एक में बीमारी और दूसरे में शिफा है।

फायदेः एक रिवायत में खाने और बर्तन के अल्फाज भी हैं। अबू वाकिद रजि. की रिवायत में है कि मक्खी गिरते वक्त बीमारी वाले पर को नीचे करती है, अब नये डाक्टरों ने भी इस बात की तसदीक कर दी कि उसके एक पर में जहर और दूसरे में शिफा है, अगरचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादगरामी डाक्टरों तसदीक का मोहताज नहीं है।

١٣٩٨ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (غُفِرَ لاِمْرَأَةٍ مُومِسَةٍ، مَرَّتْ بِكَلْبٍ عَلَى رَأْسِ

1398: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि एक

رَكِيٍّ يَلْهَثُ، قَدْ كَادَ يَقْتُلُهُ الْعَطَشُ، فَنَزَعَتْ خُفَّهَا، فَأَوْثَقَتْهُ بِخِمَارِهَا، فَنَزَعَتْ لَهُ مِنَ الْمَاءِ، فَغُفِرَ لَهَا بِذَٰلِكَ). [رواه البخاري: ٣٣٢١]

जानिया (जिना करने वाली औरत) सिर्फ इसलिए बख़्श दी गई कि उसका गुजर एक कुत्ते पर हुआ जो एक कुंऐ के किनारे बैठा प्यास की वजह से जबान निकाले हांप रहा था और मरने के करीब था। उस औरत ने अपना मौजा उतारा और उसको अपने दुपट्टे से बांध कर उसके लिए कुंऐ से पानी निकाला। बस इसी बात पर वो बख़्श दी गई।

फायदे: यह अल्लाह तआला की शान करीमी है कि बड़े बड़े गुनाहों को मामूली से कार खैर की बिना पर माफ कर देता है। बशर्ते कि वो साफ नियत से किया गया हो। चूनांचे उस बदकार औरत को उसके साफ नियत की बिना पर माफ कर दिया गया। (औनुलबारी, 4/77)



किताबु अहादीसिल अम्बिया
पैगम्बरों के हालात के बयान में

बाब 1: आदम और उसकी औलाद की पैदाईश।

١ - باب: خَلْقُ آدَمَ وَذُرِّيَّتِهِ

1399: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि अल्लाह ने जब आदम को पैदा फरमाया तो उसका कद साठ हाथ था। फिर अल्लाह ने उनसे फरमाया कि जाओ और उन फरिश्तों को सलाम करो। नीज सुनो वो तुम्हें क्या जवाब देते हैं? वही तुम्हारा और तुम्हारी औलाद का सलाम होगा। पस आदम अलैहि. ने कहा, "अस्सलामु अलैकुम" फरिश्तों ने जवाब दिया अस्सलामु अलैका वरहमतुल्ला। उन्होंने रहमतुल्लाह का इजाफा किया। खैर जो लोग जन्नत में दाखिल होंगे वो सब आदम की सूरत पर होंगे। अगरचे लोग इन्तदाये पैदाईश से अब तक जिस्म में कम हो रहे हैं।

١٣٩٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (خَلَقَ ٱللهُ آدَمَ وَطُولُهُ سِتُّونَ ذِرَاعًا، ثُمَّ قالَ: اَذْهَبْ فَسَلِّمْ عَلَى أُولٰئِكَ مِنَ المَلاَئِكَةِ، فَاسْتَمِعْ ما يُحَيُّونَكَ، تَحِيَّتُكَ وَتَحِيَّةُ ذُرِّيَّتِكَ، فَقَالَ: السَّلامُ عَلَيْكُمْ، فَقالُوا: السَّلامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ ٱللهِ، فَزَادُوهُ: وَرَحْمَةُ ٱللهِ، فَكُلُّ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ آدَمَ، فَلَمْ يَزَلِ الخَلْقُ يَنْقُصُ حَتَّى الآنَ). [رواه البخاري: ٣٣٢٦]

फायदे: जन्नत में दाखिल होने के वक्त जन्नत वालों का हजरत आदम

अलैहि. जैसा कद काठ, शक्लो सूरत और हुस्नो जमाल होगा। दुनिया में जो कद की पस्ती, रंग की स्याही और बदसूरती है, जाती रहेगी। (औनुलबारी, 4/79)

١٤٠٠ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: بَلَغَ عَبْدَ ٱللهِ بْنَ سَلاَمٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ مَقْدَمُ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ ٱلْمَدِينَةَ، فَأَتَاهُ فَقَالَ: إِنِّي سَائِلُكَ عَنْ ثَلاَثٍ لاَ يَعْلَمُهُنَّ إِلاَّ نَبِيٌّ قَالَ: مَا أَوَّلُ أَشْرَاطِ ٱلسَّاعَةِ، وَمَا أَوَّلُ طَعَامٍ يَأْكُلُهُ أَهْلُ ٱلْجَنَّةِ، وَمِنْ أَيِّ شَيْءٍ يَنْزِعُ ٱلْوَلَدُ إِلَى أَبِيهِ، وَمِنْ أَيِّ شَيْءٍ يَنْزِعُ إِلَى أَخْوَالِهِ؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (خَبَّرَنِي بِهِنَّ آنِفًا جِبْرِيلُ)، قَالَ: فَقَالَ عَبْدُ ٱللهِ: ذَاكَ عَدُوُّ ٱلْيَهُودِ مِنَ ٱلْمَلاَئِكَةِ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَمَّا أَوَّلُ أَشْرَاطِ ٱلسَّاعَةِ فَنَارٌ تَحْشُرُ ٱلنَّاسَ مِنَ ٱلْمَشْرِقِ إِلَى ٱلْمَغْرِبِ، وَأَمَّا أَوَّلُ طَعَامٍ يَأْكُلُهُ أَهْلُ ٱلْجَنَّةِ فَزِيَادَةُ كَبِدِ حُوتٍ، وَأَمَّا ٱلشَّبَهُ فِي ٱلْوَلَدِ: فَإِنَّ ٱلرَّجُلَ إِذَا غَشِيَ ٱلْمَرْأَةَ فَسَبَقَهَا مَاؤُهُ كَانَ ٱلشَّبَهُ لَهُ، وَإِذَا سَبَقَ مَاؤُهَا كَانَ ٱلشَّبَهُ لَهَا)، قَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ ٱللهِ، ثُمَّ قَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّ ٱلْيَهُودَ قَوْمٌ بُهْتٌ، إِنْ عَلِمُوا بِإِسْلاَمِي قَبْلَ أَنْ تَسْأَلَهُمْ بَهَتُونِي عِنْدَكَ، فَجَاءَتِ ٱلْيَهُودُ وَدَخَلَ عَبْدُ ٱللهِ ٱلْبَيْتَ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَيُّ رَجُلٍ فِيكُمْ عَبْدُ ٱللهِ بْنُ سَلاَمٍ؟) قَالُوا: أَعْلَمُنَا،

1400: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि. को यह खबर पहुंची कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना में तशरीफ लाये हैं। चूनांचे वो आपके पास आये और कहने लगे। मैं आपसे तीन बातें पूछना चाहता हूँ। जिनको नबी के अलावा कोई नहीं जानता। फिर उन्होंने पूछा कि कयामत की पहली निशानी क्या है? सब से पहली गिजा कौनसी है जो जन्नत वाले खायेंगे? बच्चा किस सबब से अपने ददिहाल और ननिहाल की तरह होता है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यह बातें जिब्राईल अलैहि. ने अभी अभी बताई हैं। अनस रजि. कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि. ने कहा, फरिश्तों में से जिब्राईल तो यहूदियों के दुश्मन हैं। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कयामत की निशानियों में से पहली निशानी एक आग है जो लोगों को मशरिक से मगरिब

وَابْنُ أَعْلَمِنَا، وَأَخْيَرُنَا، وَابْنُ أَخْيَرِنَا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (أَفَرَأَيْتُمْ إِنْ أَسْلَمَ عَبْدُ اللهِ؟) قَالُوا: أَعَاذَهُ اللهُ مِنْ ذٰلِكَ، فَخَرَجَ عَبْدُ اللهِ إِلَيْهِمْ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ، فَقَالُوا: شَرُّنَا، وَابْنُ شَرِّنَا، وَوَقَعُوا فِيهِ. [رواه البخاري: ٣٣٢٩]

की तरफ ले जायेगी और पहली गिजा जो जन्नत वाले खायेंगे वो मछली की कलेजी का जाईद टुकड़ा है और बच्चे की मुशाबहत का सबब यह है कि कहा जब मर्द औरत से हम बिस्तर होता है तो अगर मर्द का पानी औरत के पानी पर गालिब आ जाता है तो बच्चा ददीहाल की तरह होता है और अगर औरत का पानी मर्द के पानी पर गालिब आ जाता है तो बच्चा ननिहाल की तरह होता है। इस पर अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि. फौरन बोल पड़े कि मैं गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के रसूल हैं। इसके बाद उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यहूद बहुत इल्जाम लगाने वाले हैं। अगर उनको मेरे मुसलमाम होने की खबर हो गई तो उससे पहले कि आप उनसे मेरे बारे में कोई सवाल करें, वो आपके सामने मुझ पर कोई इल्जाम लगा देंगे। चूनांचे जब यहूदी आये तो अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि. घर में छुप गये। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा कि तुम लोगों में अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि. कैसे हैं? उन्होंने जवाब दिया कि वो हम सबसे बड़े आलिम और बड़े आलिम के बेटे हैं और हम सब से बेहतर और बेहतरीन बाप की औलाद हैं। आपने फरमाया, अगर वो मुसलमान हो जायें (तो फिर क्या होगा?) उन्होंने कहा, अल्लाह उन्हें मुसलमान होने से बचाये। यह सुनकर अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि. उनके सामने आये और कहने लगे "अश्हदु अन्ना ला इलाह इल्लल्लाह व अशहदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह" फिर यहूद कहने लगे अब्दुल्लाह रजि. तो हम सब में बुरा और बदतरीन बाप का बेटा है और उन्हें बुरा भला कहना शुरू कर दिया।

फायदे: मुस्लिम की एक रिवायत से मालूम होता है कि रहमे मादर (बच्चेदानी) में पानी का पहले जाना मर्द और औरत का सबब है और इस हदीस से मालूम होता है कि रहमे मादिर में पानी का गालिब आना शक्लो सूरत का सबब है। (औनुलबारी, 7/273)

1401: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अगर बनी इस्राईल न होते तो कभी गोश्त खराब होकर न सड़ता और अगर हव्वा अलैहि. न होती तो कोई औरत अपने खाविन्द की ख्यानत न करती।

١٤٠١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَوْلاَ بَنُو إِسْرَائِيلَ لَمْ يَخْنَزِ اللَّحْمُ، وَلَوْلاَ حَوَّاءُ لَمْ تَخُنْ أُنْثَى زَوْجَهَا). [رواه البخاري: ٣٣٣٠]

फायदे: इसका मतलब यह नहीं है कि गोश्त में खराब होने की खासियत इस वाक्ये के बाद पैदा हुई, बल्कि खासियत तो पहले भी थी। लेकिन यह बनी इस्राईल की इस हरकत से जाहिर हुआ। क्योंकि उनसे पहले किसी ने भी गोश्त जमा न किया था। ख्यानत का मकसद यह है कि ऐसी बात का मश्वरा देना जो खाविन्द के लिए नुकसान देह हो। यह औरत की सरशत में दाखिल होने की वजह से हव्वा अलैहि. की तमाम बेटियों में मौजूद हैं।

1402: अनस रजि. से रिवायत है, वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि अल्लाह उस दोजखी से फरमायेगा जो सब जहन्नम वालों में हल्के अजाब वाला होगा। अगर तुझे दुनिया तमाम की चीजें मिल जायें तो क्या तू इस अजाब के ऐवज उन्हें फिदिया

١٤٠٢ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ - يَرْفَعُهُ: إِنَّ ٱللهَ يَقُولُ لأَهْوَنِ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا: لَوْ أَنَّ لَكَ مَا فِي الأَرْضِ مِنْ شَيْءٍ كُنْتَ تَفْتَدِي بِهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَقَدْ سَأَلْتُكَ مَا هُوَ أَهْوَنُ مِنْ هٰذَا وَأَنْتَ فِي صُلْبِ آدَمَ: أَنْ لاَ تُشْرِكَ بِي، فَأَبَيْتَ إِلاَّ الشِّرْكَ) [رواه البخاري: ٣٣٣٤]

(कीमत) में देगा? वो कहेगा, हां! अल्लाह तआला फरमायेगा, मैंने उससे बहुत कम चीज तुझसे मांगी थी। जब तू बनी आदम की पीठ में था कि मेरे साथ किसी को शरीक न करना, लेकिन तू शिर्क से बाज न आया।

फायदे: आदम की पीठ में इससे जिस चीज का मुतालबा किया गया था, उसका जिक्र इस आयते करीमा में है "और जब तुम्हारे रब ने बनी आदम की पीठों से उनकी नस्ल को निकाला और उन्हें खुद उनके ऊपर गवाह बनाते हुए पूछा, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? उन्होंने कहा जरूर आप ही हमारे रब हैं, हम इस पर गवाही देते हैं।

(औनुलबारी 172)

१٤٠٣ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَا تُقْتَلُ نَفْسٌ ظُلْمًا، إِلَّا كَانَ عَلَى ٱبْنِ آدَمَ ٱلأَوَّلِ كِفْلٌ مِنْ دَمِهَا، لِأَنَّهُ أَوَّلُ مَنْ سَنَّ ٱلْقَتْلَ). [رواه البخاري: ٣٣٣٥]

1403: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो आदमी जुल्म से कत्ल किया जाता है, उसका कुछ वबाल (गुनाह) आदम अलैहि. के पहले बेटे पर जरूर होता है। क्योंकि वो पहला आदमी है, जिसने बेकार कत्ल करने की रस्म डाली।

फायदे: इसका जिक्र कुरआन मजीद (माइदा 27) में है।

٢ - باب: قَوْلُ ٱللهِ: ﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَن ذِى ٱلْقَرْنَيْنِ قُلْ سَأَتْلُوا عَلَيْكُم مِّنْهُ ذِكْرًا ۝ إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِى ٱلْأَرْضِ وَءَاتَيْنَٰهُ مِن كُلِّ شَىْءٍ سَبَبًا﴾

बाब 2 : फरमाने इलाही : और आपसे लोग जुल करनैन (नाम) के बारे में पूछते हैं। उनसे कहो मैं इसका कुछ हाल तुम्हें सुनाता हूँ। हमने उसे जमीन में हुकूमत अता कर रखी थी और उसे हर किस्म के असबाब व वसायल दिये थे।

١٤٠٤ : عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ جَحْشٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا فَزِعًا يَقُولُ: (لاَ إِلٰهَ إِلاَّ ٱللهُ، وَيْلٌ لِلْعَرَبِ مِنْ شَرٍّ قَدِ ٱقْتَرَبَ، فُتِحَ الْيَوْمَ مِنْ رَدْمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مِثْلُ هٰذِهِ)، وَحَلَّقَ بِإِصْبَعِهِ الإِبْهَامِ وَالَّتِي تَلِيهَا، قَالَتْ زَيْنَبُ بِنْتُ جَحْشٍ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَنَهْلِكُ وَفِينَا الصَّالِحُونَ؟ قَالَ: (نَعَمْ، إِذَا كَثُرَ الْخَبَثُ). [رواه البخاري: ٣٣٤٦]

1404: जैनब बिन्ते जहस रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घबराये हुए उनके पास आये और फरमाने लगे कि अरब की खराबी उस आफत से होने वाली है जो बिल्कुल करीब आ गई है। आज याजूज माजूज की दीवार में इतना सूराख हो गया है कि आपने अंगूठे और शहादत की अंगूली से सूराख बनाकर उसकी मिकदार बताई। जैनब बिन्ते जहस रजि. कहते हैं कि मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! नेक लोगों की मौजूदगी में क्या हम हलाक हो जायेंगे। आपने फ़रमाया, हां! जब बुराई ज्यादा फैल जायेगी।

फायदे: इमाम बुखारी ने इस हदीस को किस्साये याजूज माजूज के उनवान में जिक्र किया है। इस हदीस से मालूम हुआ कि कसरत मआसी (ज्यादा नाफरमानी) के नतीजे में जब अल्लाह का अजाब नाजिल होता है तो बुरे के साथ नेको को भी दुनिया से मिटा दिया जाता है।

١٤٠٥ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يَقُولُ ٱللهُ تَعَالَى: يَا آدَمُ، فَيَقُولُ: لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ، وَالْخَيْرُ فِي يَدَيْكَ، فَيَقُولُ: أَخْرِجْ بَعْثَ النَّارِ، قَالَ: وَمَا بَعْثُ النَّارِ؟ قَالَ: مِنْ كُلِّ أَلْفٍ تِسْعَمِائَةٍ وَتِسْعَةً وَتِسْعِينَ، فَعِنْدَهُ يَشِيبُ الصَّغِيرُ، وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا، وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَى

1405: अबू साद खुदरी रजि. से रिवायत है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, अल्लाह का कयामत के दिन इरशाद होगा, ऐ आदम! अर्ज करेंगे, हाजिर हूं तैयार हूं। सब भलाई तेरे हाथ में है। इरशाद होगा, दोजख का लश्कर निकालो। आदम कहेंगे दोजख का लश्कर

وَما هُمْ بِسُكَارَى، وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللهِ شَدِيدٌ)، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، وَأَيُّنَا ذٰلِكَ الْوَاحِدُ؟ قَالَ: (أَبْشِرُوا، فَإِنَّ مِنْكُمْ رَجُلًا وَمِنْ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ أَلْفًا، ثُمَّ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، إِنِّي لَأَرْجُو أَنْ تَكُونُوا رُبُعَ أَهْلِ الْجَنَّةِ)، فَكَبَّرْنَا، فَقَالَ: (أَرْجُو أَنْ تَكُونُوا ثُلُثَ أَهْلِ الْجَنَّةِ)، فَكَبَّرْنَا، فَقَالَ: (أَرْجُو أَنْ تَكُونُوا نِصْفَ أَهْلِ الْجَنَّةِ)، فَكَبَّرْنَا، فَقَالَ: (ما أَنْتُمْ فِي النَّاسِ إِلَّا كَالشَّعْرَةِ السَّوْدَاءِ فِي جِلْدِ ثَوْرٍ أَبْيَضَ، أَوْ كَشَعْرَةٍ بَيْضَاءَ فِي جِلْدِ ثَوْرٍ أَسْوَدَ). [رواه البخاري: ٣٣٤٨]

कितना है? अल्लाह फरमायेगा। हर हजार में से नौ सौ निन्यानवे। पस उस वक्त मारे डर के बच्चे बूढ़े हो जायेंगे और हर हामला औरत अपना हमल गिरा देगी और तुम लोगों को बेहोश होते देखोगे। हालांकि वो बेहोश न होंगे, बल्कि अल्लाह का सख्त अजाब होगा। सहाबा रजि. ने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! वो एक आदमी हम में से कौन होगा? आपने फरमाया, तुम खुश हो जाओ। क्योंकि वो एक आदमी तुम में से होगा और एक हजार याजूज माजूज के होंगे। फिर आपने फरमाया, कसम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है। मैं उम्मीद करता हूँ कि जन्नत वालों में एक चौथाई तुम लोग होंगे। हमने इस पर नारा-ए-तकबीर बुलन्द किया और आपने फरमाया, मैं उम्मीद रखता हूं कि तुम जन्नत वालों का तीसरा हिस्सा होगे। फिर हमने अल्लाहु अकबर कहा। आपने फरमाया, मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम जन्नत वालों के आधे होंगे। यह सुनकर हम लोगों ने फिर अल्लाहु अकबर कहा। आपने फरमाया, लोगों में तुम ऐसे हो, जैसे एक काला बाल सफेद बाल की खाल पर या एक सफेद बाल काले बाल की खाल पर।

फायदे: मालूम होता है कि याजूज व माजूज इस कसरत से होंगे कि उम्मते मुहम्मदीया उनके मुकाबले में हजारों हिस्सा होगी। तिरमजी की एक हदीस में है कि जन्नत वालों की जन्नत में एक सौ बीस सफें होगी। जिनमें अस्सी सफें उम्मते मुहम्मदीया की और बीस सफें दीगर उम्मतों से होगी। (औनुलबारी 4/89)

बाब 3:

٣ - باب

1406: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, कयामत के दिन तुम लोग नंगे पांव, बरहना बदन और बगैर खत्ना जमा किये जाओगे। फिर आपने तिलावत फरमाई। "जैसे हमने पहली बार पैदा किया, उसी तरह हम दोबारा लौटायेंगे। यह वादा हमारे जिम्मे है, जिसको हम पूरा करेंगे।"

और कयामत के दिन सब से पहले इब्राहिम अलैहि. को कपड़े पहनाये जायेंगे और ऐसा होगा कि मेरे चन्द असहाब बायीं तरफ खींच लिए जायेंगे। मैं कहूंगा, यह तो मेरे असहाब हैं। जवाब दिया जायेगा कि जब तुम्हारी वफात हो गई तो यह लोग इस्लाम से फिर गये थे। फिर मैं वही कहूंगा, जैसा कि नेक बन्दे ईसा अलैहि. ने कहा था। "मैं जब तक उन लोगों में रहा, उनका हाल देखता रहा। आखिर आयत अलहकीम तक।"

١٤٠٦ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُما، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنَّكُمْ تُحْشَرُونَ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلًا، ثُمَّ قَرَأَ: ﴿كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ﴾، وَأَوَّلُ مَنْ يُكْسَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِبْرَاهِيمُ، وَإِنَّ أُنَاسًا مِنْ أَصْحَابِي يُؤْخَذُ بِهِمْ ذَاتَ الشِّمَالِ، فَأَقُولُ: أَصْحَابِي أَصْحَابِي، فَيُقَالُ: إِنَّهُمْ لَمْ يَزَالُوا مُرْتَدِّينَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ مُنْذُ فَارَقْتَهُمْ، فَأَقُولُ كما قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ: ﴿وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿الْحَكِيمُ﴾). [رواه البخاري: ٣٣٤٩]

फायदे: इनसे मुराद ज्यादातर वो लोग हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद खिलाफते सिद्दीकी में इस्लाम से फिर गये थे और हजरत अबू बकर रजि. ने उनके खिलाफ जिहाद किया था। (औनुलबारी 4/91)

1407: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, कयामत के दिन इब्राहिम अलैहि. जब अपने बाप आजर से मिलेंगे तो आजर के चेहरे पर उस वक्त स्याही और धूल मिट्टी होगी। इब्राहिम अलैहि. उनसे कहेंगे, मैंने तुम से न कहा था कि मेरी नाफरमानी न करो? उसका बाप जवाब देगा, अब मैं तुम्हारी नाफरमानी न करूंगा। फिर इब्राहिम अलैहि. कहेंगे, ऐ रब! तूने मुझ से वादा फरमाया था कि कयामत के दिन तुझे जलील नहीं करूंगा और अब मेरे रहमत से इन्तहाई दूर बाप की जिल्लत से ज्यादा कौनसी रुसवाई होगी? अल्लाह फरमायेगा, मैंने तो काफिरों पर जन्नत हराम कर दी है। फिर कहा जायेगा, ऐ इब्राहिम अलैहि.! तुम्हारे पांव के नीचे क्या चीज है? वो देखेंगे तो एक बिजू (जानवर का नाम) गन्दगी में लथड़ा हुआ पायेंगे। फिर उसकी टांग से घसीट कर उसे दोजख में डाल दिया जायेगा।

١٤٠٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (يَلْقَى إِبْرَاهِيمُ أَبَاهُ آزَرَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَعَلَى وَجْهِ آزَرَ قَتَرَةٌ وَغَبَرَةٌ، فَيَقُولُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ: أَلَمْ أَقُلْ لَكَ: لاَ تَعْصِنِي فَيَقُولُ أَبُوهُ: فَالْيَوْمَ لاَ أَعْصِيكَ فَيَقُولُ إِبْرَاهِيمُ: يَا رَبِّ إِنَّكَ وَعَدْتَنِي أَنْ لاَ تُخْزِيَنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ، فَأَيُّ خِزْيٍ أَخْزَى مِنْ أَبِي الأَبْعَدِ؟ فَيَقُولُ اللهُ تَعَالَى: إِنِّي حَرَّمْتُ الجَنَّةَ عَلَى الْكَافِرِينَ، ثُمَّ يُقَالُ: يَا إِبْرَاهِيمُ، مَا تَحْتَ رِجْلَيْكَ؟ فَيَنْظُرُ، فَإِذَا هُوَ بِذِيخٍ مُلْتَطِخٍ، فَيُؤْخَذُ بِقَوَائِمِهِ فَيُلْقَى فِي النَّارِ). [رواه البخاري: ٣٣٥٠]

फायदे: इस से मालूम हुआ कि इन्सान अगर कुफ्र पर मरा हो तो उसके बेटे का बुलन्द मर्तबा होना उसे कोई फायदा नहीं देगा और न ही बाप का बुलन्द मर्तबा (पद) होना नफा दे सकता है। जैसा कि हजरत नूह अलैहि. और उनके बेटे का वाक्या है। (औनुलबारी 4/93)

1408: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, एक बार रसूलुल्लाह

١٤٠٨ : وَعَنْهُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قِيلَ يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ مَنْ

أَكْرَمُ النَّاسِ؟ قَالَ: (أَتْقَاهُمْ). فَقَالُوا: لَيْسَ عَنْ هٰذَا نَسْأَلُكَ، قَالَ: (فَيُوسُفُ نَبِيُّ ٱللهِ، ٱبْنُ نَبِيِّ ٱللهِ، ٱبْنِ نَبِيِّ ٱللهِ، ٱبْنِ خَلِيلِ ٱللهِ). قَالُوا: لَيْسَ عَنْ هٰذَا نَسْأَلُكَ، قَالَ: (فَعَنْ مَعَادِنِ الْعَرَبِ تَسْأَلُونَ؟ خِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الإِسْلَامِ، إِذَا فَقُهُوا). [رواه البخاري: ٣٣٥٣]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! (अल्लाह के यहां) लोगों में किसका मर्तबा ज्यादा है? आपने फरमाया, जो उन सब में अल्लाह का खौफ ज्यादा रखता हो। लोगों ने अर्ज किया कि हम यह बात नहीं पूछ रहे हैं। आपने फरमाया (तो सबसे ज्यादा बुजुर्ग) युसूफ पैगम्बर हैं जो खुद नबी थे, बाप नबी, दादा नबी, परदादा नबी, अल्लाह के खलील। लोगों ने कहा, हम यह बात भी नहीं पूछते। आपने फरमाया कि खानदान अरब की बाबत पूछते हो? उन सब में से जो ज्यादा जाहिलियत में बेहतर था वही इस्लाम में भी बेहतर है। बशर्ते कि वो दीन का इल्म हासिल रखता हो।

फायदेः शराफत की दर्जा बन्दी बायस तौर पर है कि जो दौरे जाहिलियत में शरीफ था और इस्लाम लाने के बाद भी उसने शराफत को दागदार नहीं किया, वो अल्लाह के यहां अच्छा मुकाम रखता है। अगर इसके साथ दीनी बसीरत भी शामिल हो जाये तो उसका मुकाम तो बहुत ही ऊंचा है। अलबत्ता बेदीनी की सूरत में शराफत का कोई मुकाम नहीं है। (औनुलबारी 4/95)

١٤٠٩ : عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَتَانِي اللَّيْلَةَ آتِيَانِ، فَأَتَيْنَا عَلَى رَجُلٍ طَوِيلٍ، لَا أَكَادُ أَرَى رَأْسَهُ طُولًا، وَإِنَّهُ إِبْرَاهِيمُ ﷺ). [رواه البخاري: ٣٣٥٤]

1409: समरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, आज रात ख्वाब में मेरे पास दो आदमी आये और मुझे अपने साथ ले गये। फिर हम एक लम्बे कद के शख्स के पास पहुंचे। उसके

दराज कद होने की वजह से हम उसका सर नहीं देख सके थे और वो इब्राहिम अलैहि. थे।

फायदे: हजरत इब्राहिम अलैहि. के लम्बे कद वाले होने से मुराद उनका आली मर्तबा होना है। अगली हदीस से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शक्लो सूरत और अख्लाक व सीरत में हजरत इब्राहिम के जैसे थे। (औनुलबारी 4/96)

1410: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अगर तुम इब्राहिम अलैहि. को देखना चाहते हो तो अपने साहब यानी मेरी तरफ देख लो। रहे मूसा अलैहि. तो वो गठे हुए जिस्म वाले गन्दमी रंग के आदमी थे। सुर्ख ऊंट पर सवार थे। जिसकी नुकैल खजूर के पत्तो की बनी हुई रस्सी की थी। जैसे मैं उनकी तरफ देख रहा हूं कि नशीबी इलाके में उतर रहे हैं।

١٤١٠ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَمَّا إِبْرَاهِيمُ فَٱنْظُرُوا إِلَى صَاحِبِكُمْ، وَأَمَّا مُوسَى فَجَعْدٌ آدَمُ، عَلَى جَمَلٍ أَحْمَرَ، مَخْطُومٍ بِخُلْبَةٍ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ ٱنْحَدَرَ فِي ٱلْوَادِي). [رواه البخاري: ٣٣٥٥]

1411: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, इब्राहिम अलैहि. ने अपना खतना खुद एक बसोले (लकड़ी छिलने का औजार) से किया था। जबकि वो अस्सी बरस के थे।

١٤١١ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (ٱخْتَتَنَ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ ٱلسَّلاَمُ - وَهُوَ ٱبْنُ ثَمَانِينَ سَنَةً - بِٱلْقَدُومِ). [رواه البخاري: ٣٣٥٦]

फायदे: दूसरी रिवायत में है कि खत्ना करने से जब इब्राहिम अलैहि. को तकलीफ होती तो इसका इजहार किया। फिर अल्लाह से गोया हुए कि

इलाही तेरे हुक्म में देर करना मुझे नापसन्द था। इसलिए हुक्म को पूरा करने में जल्दी की है। (औनुलबारी 4/97)

١٤١٢ : وَعَنْهُ فِي رِوَايَةٍ: (بِالْقَدُومِ) مُخَفَّفَةً. [رواه البخاري: ٣٣٥٦]

1412: अबू हुरैरा रजि. से ही दूसरी रिवायत लफ्जे कुदूम दाल की तख्फीफ (बगैर तशदीद) के आया है।

फायदे: मुस्लिम की जुमला रियायत में यह लफ्ज तखफीक के साथ है, जिसका मायना बसूला है। अलबत्ता तशदीक के साथ यह लफ्ज दो मायनों में इस्तेमाल होना है। एक मुकाम का नाम और राजिह बात यही है कि दोनों सूरतों में आला का नाम है। (औनुलबारी 4/97)

١٤١٣ : وعَنْهُ رضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لَمْ يَكْذِبْ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلَامُ إِلَّا ثَلَاثَ كَذَبَاتٍ، ثِنْتَيْنِ مِنْهُنَّ فِي ذَاتِ ٱللهِ عَزَّ وَجَلَّ. قَوْلُهُ: ﴿إِنِّي سَقِيمٌ﴾. وَقَوْلُهُ: ﴿بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَٰذَا﴾. وَقَالَ: بَيْنَا هُوَ ذَاتَ يَوْمٍ وَسَارَةُ، إِذْ أَتَى عَلَى جَبَّارٍ مِنَ الْجَبَابِرَةِ، فَقِيلَ لَهُ: إِنَّ هَا هُنَا رَجُلًا مَعَهُ ٱمْرَأَةٌ مِنْ أَحْسَنِ النَّاسِ، فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ فَسَأَلَهُ عَنْهَا، فَقَالَ: مَنْ هٰذِهِ؟ قَالَ: أُخْتِي، فَأَتَى سَارَةَ وَذَكَرَ بَاقِي الْحَدِيثَ. [رواه البخاري: ٣٣٥٨ وانظر حديث رقم: ٢٢١٧]

1413: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इब्राहिम अलैहि. ने तीन बार के अलावा कभी तौरया (हकीकत के खिलाफ बात कहना) नहीं किया। उनका यह कहना कि मैं बीमार हूं और दूसरा यह कहना कि उन बूतों में से बड़े बूत ने यह काम किया है (यह दोनों तो अल्लाह के लिए थे) फिर आपने फरमाया, तीसरा उस वक्त जबकि इब्राहिम अलैहि और साराह अलैहि. दोनों मियां बीवी जा रहे थे कि उनका एक जालिम बादशाह की तरफ से गुजर हुआ। उस बादशाह से कहा गया कि यहां एक आदमी आया है और उसके साथ एक खुबसूरत औरत है। चूनांचे उस बादशाह ने उनके पास एक आदमी भेजा और साराह के बारे में पूछा कि वो कौन है? इब्राहिम

अलैहि. ने जवाब दिया कि यह मेरी बहन है। इसके बाद आप साराह के पास तशरीफ ले गये। फिर उन्होंने बाकी हदीस (1043) बयान की जो पहले गुजर चुकी है।

फायदे: मालूम हुआ कि दीनी मकसद के लिए बतौरे तआरीज (इशारा) व इलजाम ऐसी गुफ्तगु करना जो बजाहिरे खिलाफ वाक्या हो, ऐसा झूट नहीं जिस पर फटकार आई है, ऐसा करना न सिर्फ जाइज है, बल्कि बाज औकात जरूरी होता है।

१٤١٤ : وقَدْ تَقَدَّمَ حَدِيثُ أُمِّ شَرِيكٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَ بِقَتْلِ الْوَزَغِ، وَقَدْ تَقَدَّمَ، وزادَ هُنا: (وكانَ يَنْفُخُ عَلَى إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السَّلامُ) (راجع: ٨٩). [رواه البخاري: ٣٣٥٩]

1414: उम्मे शरीक रजि. से रिवायत कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गिरगिट को मार डालने का हुक्म दिया। यह हदीस पहले गुजर चुकी है। लेकिन यहां इतना ज्यादा है कि वो इब्राहिम अलैहि. पर फूंक से आग तेज करता था।

फायदे: गिरगिट की खासियत में तकलीफ पहुंचाना शामिल है और उसकी यह फितरत हजरत इब्राहिम अलैहि. के उस वाक्ये में बिल्कुल नुमाया हो चुकी थी। इसलिए इस्लामी कानून में उसे मार देने का हुक्म है।

नोट : यह हदीस बुखारी में पहले (3307) गुजर चुकी है, लेकिन तहरीद में पहली दफा आई है, मुसन्निफ (लेखक) का पहले गुजर जाने का हवाला लिखने वाले की गलती मालूम होती है।

١٤١٥ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَوَّلَ مَا ٱتَّخَذَ النِّسَاءُ الْمِنْطَقَ مِنْ قِبَلِ أُمِّ إِسْمَاعِيلَ ٱتَّخَذَتْ مِنْطَقًا لِتُعَفِّيَ أَثَرَهَا عَلَى سَارَةَ، ثُمَّ

1415: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया औरतों ने जब कमरबन्द तैयार किया तो इस्माईल अलैहि. की वाल्दा हाजरा अलैहि. से

جاءَ بِهَا إِبْرَاهِيمُ وَبِابْنِهَا إِسْمَاعِيلَ وَهِيَ تُرْضِعُهُ، حَتَّى وَضَعَهُما عِنْدَ الْبَيْتِ، عِنْدَ دَوْحَةٍ فَوْقَ زَمْزَمَ في أَعْلَى الْمَسْجِدِ، وَلَيْسَ بِمَكَّةَ يَوْمَئِذٍ أَحَدٌ، وَلَيْسَ بِهَا مَاءٌ، فَوَضَعَهُمَا هُنَالِكَ، وَوَضَعَ عِنْدَهُمَا جِرَابًا فِيهِ تَمْرٌ، وَسِقَاءً فِيهِ مَاءٌ، ثُمَّ قَفَّى إِبْرَاهِيمُ مُنْطَلِقًا، فَتَبِعَتْهُ أُمُّ إِسْمَاعِيلَ، فَقَالَتْ: يَا إِبْرَاهِيمُ، أَيْنَ تَذْهَبُ وَتَتْرُكُنَا بِهٰذَا الْوَادِي، الَّذِي لَيْسَ فِيهِ إِنْسٌ وَلاَ شَيْءٌ؟! فَقَالَتْ لَهُ ذٰلِكَ مِرَارًا، وَجَعَلَ لاَ يَلْتَفِتُ إِلَيْهَا، فَقَالَتْ لَهُ: آللهُ الَّذِي أَمَرَكَ بِهٰذَا؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَتْ: إِذَنْ لاَ يُضَيِّعُنَا، ثُمَّ رَجَعَتْ، فَانْطَلَقَ إِبْرَاهِيمُ حَتَّى إِذَا كَانَ عِنْدَ الثَّنِيَّةِ حَيْثُ لاَ يَرَوْنَهُ، اسْتَقْبَلَ بِوَجْهِهِ الْبَيْتَ، ثُمَّ دَعَا بِهٰؤُلاَءِ الْكَلِمَاتِ، وَرَفَعَ يَدَيْهِ فَقَالَ: ﴿رَبَّنَآ إِنِّىٓ أَسْكَنتُ مِن ذُرِّيَّتِى بِوَادٍ غَيْرِ ذِى زَرْعٍ عِندَ بَيْتِكَ ٱلْمُحَرَّمِ﴾ حَتَّى بَلَغَ ﴿يَشْكُرُونَ﴾، وَجَعَلَتْ أُمُّ إِسْمَاعِيلَ تُرْضِعُ إِسْمَاعِيلَ وَتَشْرَبُ مِنْ ذٰلِكَ الْمَاءِ، حَتَّى إِذَا نَفِدَ مَا فِي السِّقَاءِ عَطِشَتْ وَعَطِشَ ابْنُهَا، وَجَعَلَتْ تَنْظُرُ إِلَيْهِ يَتَلَوَّى، أَوْ قَالَ يَتَلَبَّطُ، فَانْطَلَقَتْ كَرَاهِيَةَ أَنْ تَنْظُرَ إِلَيْهِ، فَوَجَدَتِ الصَّفَا أَقْرَبَ جَبَلٍ فِي الأَرْضِ يَلِيهَا، فَقَامَتْ عَلَيْهِ، ثُمَّ اسْتَقْبَلَتِ الْوَادِي تَنْظُرُ هَلْ تَرَى

सीखा है क्योंकि सब से पहले उन्होंने ही कमरबन्द इस्तेमाल किया था। उनकी गर्ज यह थी कि साराह अलैहियाहस्सलाम उनका सुराग न पाये। इसके बाद इब्राहिम अलैहि. उसे और उसके बेटे इस्माईल को ले आये। उस वक्त हाजरा अलैहिस्सलाम इस्माईल अलैहि. को दूध पिलाती थी। और उन दोनों को खाना काअबा के पास एक बड़े पेड़ के नीचे जमजम के कुंए पर मस्जिदे हराम की जगह छोड़ दिया। उस वक्त मक्का में तो आदमी का नामोनिशान न था और न ही पानी मौजूद था। खैर इब्राहिम अलैहि. उन दोनों को वहां छोड़ गये। उनके करीब ही एक थैला खजूरों का और एक मशकीजा (बर्तन) पानी का रख दिया। जब वहां से वापिस हुए तो इस्माईल की वाल्दा आपके पीछे रवाना हुई और कहने लगी, ऐ इब्राहिम! तुम कहां जा रहे हो? हमें एक ऐसे जंगल में छोड़कर जा रहे हो, जहां आदमी का पता तक नहीं और न ही कोई चीज मिलती है। उन्होंने कई बार पुकार पुकार कर यह कहा। मगर इब्राहिम अलैहि. ने उनकी तरफ देखा तक नहीं फिर इस्माईल अलैहि. की वाल्दा ने उनसे कहा, क्या यह हुक्म आपको

أَحَدًا فَلَمْ تَرَ أَحَدًا، فَهَبَطَتْ مِنَ الصَّفَا، حَتَّى إِذَا بَلَغَتِ الْوَادِيَ رَفَعَتْ طَرَفَ دِرْعِهَا، ثُمَّ سَعَتْ سَعْيَ الإِنْسَانِ الْمَجْهُودِ حَتَّى جَاوَزَتِ الْوَادِيَ، ثُمَّ أَتَتِ الْمَرْوَةَ فَقَامَتْ عَلَيْهَا وَنَظَرَتْ هَلْ تَرَى أَحَدًا فَلَمْ تَرَ أَحَدًا، فَفَعَلَتْ ذٰلِكَ سَبْعَ مَرَّاتٍ، قَالَ ٱبْنُ عَبَّاسٍ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (فَذٰلِكَ سَعْيُ النَّاسِ بَيْنَهُمَا)، فَلَمَّا أَشْرَفَتْ عَلَى الْمَرْوَةِ سَمِعَتْ صَوْتًا، فَقَالَتْ صَهٍ - تُرِيدُ نَفْسَهَا - ثُمَّ تَسَمَّعَتْ، فَسَمِعَتْ أَيْضًا، فَقَالَتْ: قَدْ أَسْمَعْتَ إِنْ كَانَ عِنْدَكَ غَوَاثٌ، فَإِذَا هِيَ بِالْمَلَكِ عِنْدَ مَوْضِعِ زَمْزَمَ، فَبَحَثَ بِعَقِبِهِ - أَوْ قَالَ: بِجَنَاحِهِ - حَتَّى ظَهَرَ الْمَاءُ، فَجَعَلَتْ تُحَوِّضُهُ، وَتَقُولُ بِيَدِهَا هٰكَذَا، وَجَعَلَتْ تَغْرِفُ مِنَ الْمَاءِ فِي سِقَائِهَا وَهُوَ يَفُورُ بَعْدَ مَا تَغْرِفُ. قَالَ ٱبْنُ عَبَّاسٍ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (يَرْحَمُ ٱللهُ أُمَّ إِسْمَاعِيلَ، لَوْ تَرَكَتْ زَمْزَمَ - أَوْ قَالَ: لَوْ لَمْ تَغْرِفْ مِنَ الْمَاءِ - لَكَانَتْ زَمْزَمُ عَيْنًا مَعِينًا). قَالَ: فَشَرِبَتْ وَأَرْضَعَتْ وَلَدَهَا، فَقَالَ لَهَا الْمَلَكُ: لَا تَخَافُوا الضَّيْعَةَ، فَإِنَّ هَا هُنَا بَيْتَ ٱللهِ، يَبْنِي هٰذَا الْغُلَامُ وَأَبُوهُ، وَإِنَّ ٱللهَ لَا يُضِيعُ أَهْلَهُ، وَكَانَ الْبَيْتُ مُرْتَفِعًا مِنَ

अल्लाह ने दिया है? इब्राहिम अलैहि. ने कहा, हां! इस्माईल अलैहि. की वाल्दा ने कहा, फिर तो अब हम को वो बर्बाद नहीं करेगा। इसके बाद वो लौट आये और इब्राहिम अलैहि. चले गये। फिर जब वो सनया (घाटी) के पास पहुंचे जहां से वो उन्हें न देख सकते थे तो उन्होंने कअबा की तरफ मुंह करके हाथ उठाये और इन अलफाज में दुआ करने लगे: "ऐ मेरे रब! मैंने अपनी औलाद को बे-आबू गयाह वादी (बगैर घास व पानी की वादी) में तेरे मुहतरम घर के पास छोड़ दिया है। यहां तक कि लफ्जे (यशकरून) तक दुआ करते रहे।"

इधर उम्मे इस्माईल अलैहि. का यह हाल हुआ कि वो इस्माईल अलैहि. को दूध पिलाती और उस पानी में से खुद पीती रही, लेकिन जब मश्क (बर्तन) का पानी खत्म हो गया तो खुद भी प्यासी हुई और बच्चे को भी प्यास लगी। बच्चे को देखा कि वो मारे प्यास के लोट पोट हो रहा है। यानी तड़प रहा है। बच्चे की यह हालत उनके लिए नाकाबिले बर्दाश्त थी। इसलिए उठकर चली तो सफा पहाड़ी को दूसरी पहाड़ियों की निसबत पास पाया। वो उस पर

खड़ी होकर वादी की तरफ देखने लगी ताकि वो किसी को देखे। लेकिन वहां कोई नजर न आया। मजबूरन वहां से उतर कर नशीब (घाटी) में पहुंची। तो अपना दामन उठाकर बहुत तेजी के साथ दौड़ती जैसे कोई सख्त मुसीबत वाला इन्सान दौड़ता है। फिर नशीब से गुजरकर मरवाह पहाड़ी पर चढ़ी और उस पर खड़े होकर देखा कि कोई आदमी नजर आ जाये। लेकिन वहां भी कोई आदमी नजर न आया। फिर उन्होंने इस तरह सात चक्कर लगाये। इब्ने अब्बास रजि. ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, लोग इसलिए सफा-मरवाह के बीच सई करते हैं। फिर इसी तरह जब सातवीं बार मरवाह पर पहुंची तो उन्होंने एक आवाज सुनी। खुद ब खुद कहने लगी, खामोश! फिर उन्होंने खूब कान लगाकर सुना तो एक आवाज सुनाई दी, उसके बाद कहने लगी तूने आवाज तो सुना दी लेकिन क्या तू हमारी फरियादरसी कर सकती है? फिर अचानक उन्होंने जमजम की जगह एक फरिश्ता देखा जिसने अपनी ऐडी या पर से जमीन खोदी। फौरन वहां से पानी निकलकर बहने लगा। वो फिर

الأَرْضِ كالرَّابِيَةِ، تَأْتِيهِ السُّيُولُ، فَتَأْخُذُ عَنْ يَمِينِهِ وَشِمالِهِ، فَكانَتْ كَذٰلِكَ حَتَّى مَرَّتْ بِهِمْ رُفْقَةٌ مِنْ جُرْهُمَ، أَوْ أَهْلُ بَيْتٍ مِنْ جُرْهُمَ، مُقْبِلِينَ مِنْ طَرِيقِ كَدَاءٍ، فَنَزَلُوا في أَسْفَلِ مَكَّةَ، فَرَأَوْا طَائِرًا عائِفًا، فَقالُوا: إِنَّ هٰذا الطَّائِرَ لَيَدُورُ عَلَى ماءٍ، لَعَهْدُنَا بِهٰذَا الْوَادِي وَما فِيهِ ماءٌ، فَأَرْسَلُوا جَرِيًّا أَوْ جَرِيَّيْنِ فَإِذَا هُمْ بِالْمَاءِ، فَرَجَعُوا فَأَخْبَرُوهُمْ بِالْمَاءِ فَأَقْبَلُوا، قالَ وَأُمُّ إِسْمَاعِيلَ عِنْدَ الْمَاءِ، فَقالُوا: أَتَأْذَنِينَ لَنَا أَنْ نَنْزِلَ عِنْدَكِ؟ فَقالَتْ: نَعَمْ، وَلٰكِنْ لاَ حَقَّ لَكُمْ في الْمَاءِ، قالُوا: نَعَمْ. قالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: قالَ النَّبِيُّ ﷺ: (فَأَلْفَى ذٰلِكَ أُمَّ إِسْمَاعِيلَ وَهِيَ تُحِبُّ الأُنْسَ)، فَنَزَلُوا وَأَرْسَلُوا إِلَى أَهْلِيهِمْ فَنَزَلُوا مَعَهُمْ، حَتَّى إِذَا كانَ بِهَا أَهْلُ أَبْيَاتٍ مِنْهُمْ، وَشَبَّ الْغُلاَمُ وَتَعَلَّمَ الْعَرَبِيَّةَ مِنْهُمْ، وَأَنْفَسَهُمْ وَأَعْجَبَهُمْ حِينَ شَبَّ، فَلَمَّا أَدْرَكَ الْحُلُمَ زَوَّجُوهُ امْرَأَةً مِنْهُمْ، وَماتَتْ أُمُّ إِسْمَاعِيلَ، فَجَاءَ إِبْرَاهِيمُ بَعْدَ ما تَزَوَّجَ إِسْمَاعِيلُ يُطَالِعُ تَرِكَتَهُ، فَلَمْ يَجِدْ إِسْمَاعِيلَ، فَسَأَلَ امْرَأَتَهُ عَنْهُ فَقالَتْ: خَرَجَ يَبْتَغِي لَنَا، ثُمَّ سَأَلَهَا عَنْ عَيْشِهِمْ وَهَيْئَتِهِمْ، فَقالَتْ: نَحْنُ بِشَرٍّ، نَحْنُ في ضِيقٍ وَشِدَّةٍ، فَشَكَتْ إِلَيْهِ، قالَ: فَإِذَا جاءَ زَوْجُكِ فَاقْرَئِي

عَلَيْهِ السَّلاَمَ، وَقُولِي لَهُ يُغَيِّرْ عَتَبَةَ بَابِهِ، فَلَمَّا جَاءَ إِسْمَاعِيلُ كَأَنَّهُ آنَسَ شَيْئًا، فَقَالَ: هَلْ جَاءَكُمْ مِن أَحَدٍ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، جَاءَنَا شَيْخٌ كَذَا وَكَذَا، فَسَأَلَنَا عَنْكَ فَأَخْبَرْتُهُ، وَسَأَلَنِي كَيْفَ عَيْشُنَا، فَأَخْبَرْتُهُ أَنَّا فِي جَهْدٍ وَشِدَّةٍ، قَالَ: فَهَلْ أَوْصَاكِ بِشَيْءٍ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ السَّلاَمَ، وَيَقُولُ: غَيِّرْ عَتَبَةَ بَابِكَ، قَالَ: ذَاكِ أَبِي، وَقَدْ أَمَرَنِي أَنْ أُفَارِقَكِ، الْحَقِي بِأَهْلِكِ، فَطَلَّقَهَا، وَتَزَوَّجَ مِنْهُمْ أُخْرَى، فَلَبِثَ عَنْهُمْ إِبْرَاهِيمُ مَا شَاءَ اللهُ، ثُمَّ أَتَاهُمْ بَعْدُ فَلَمْ يَجِدْهُ، فَدَخَلَ عَلَى امْرَأَتِهِ فَسَأَلَهَا عَنْهُ، فَقَالَتْ: خَرَجَ يَبْتَغِي لَنَا، قَالَ: كَيْفَ أَنْتُمْ؟ وَسَأَلَهَا عَنْ عَيْشِهِمْ وَهَيْئَتِهِمْ، فَقَالَتْ: نَحْنُ بِخَيْرٍ وَسَعَةٍ، وَأَثْنَتْ عَلَى اللهِ. فَقَالَ: مَا طَعَامُكُمْ؟ قَالَتِ: اللَّحْمُ. قَالَ فَمَا شَرَابُكُمْ؟ قَالَتِ: الْمَاءُ. قَالَ: اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِي اللَّحْمِ وَالْمَاءِ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ يَوْمَئِذٍ حَبٌّ، وَلَوْ كَانَ لَهُمْ دَعَا لَهُمْ فِيهِ)، قَالَ: فَهُمَا لاَ يَخْلُو عَلَيْهِمَا أَحَدٌ بِغَيْرِ مَكَّةَ إِلاَّ لَمْ يُوَافِقَاهُ، قَالَ: فَإِذَا جَاءَ زَوْجُكِ فَاقْرَئِي عَلَيْهِ السَّلاَمَ، وَمُرِيهِ يُثْبِتُ عَتَبَةَ بَابِهِ، فَلَمَّا جَاءَ إِسْمَاعِيلُ قَالَ: هَلْ أَتَاكُمْ مِنْ أَحَدٍ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، أَتَانَا شَيْخٌ حَسَنُ الْهَيْئَةِ، وَأَثْنَتْ

उसके पास मुण्डेर (दीवार) बनाकर उसे हौज की शक्ल देने लगी और पानी के चुल्लू भर भर कर अपनी मश्क में डालने लगी। मगर उनके चुल्लू भरने के बाद पानी का चश्मा जोश मारने लगा। इब्ने अब्बास रजि. कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह इस्माईल अलैहि. की वाल्दा पर रहम फरमाये। अगर वो जमजम को उसके हाल पर छोड़ देती या यह फरमाया कि वो पानी का चुल्लू न भरती तो जमजम जमीन की सतह पर एक बहने वाला चश्मा रहता। रावी कहते हैं कि फिर हाजरा ने पानी पिया और अपने बच्चे को दूध पिलाया। इसके बाद फरिश्ते ने उनसे कहा, तुम हलाकत का डर न करो। यहां अल्लाह का घर है, जिसको यह बच्चा और उसका वालिद बनायेंगे और अल्लाह अपने आदमियों को बेकार नहीं करेगा। उस वक्त कअबा का यह हाल था कि वो एक टीले की तरह जमीन की सतह से ऊंचा था। जब सैलाब (तूफान) आते तो उसकी दायीं बायीं तरफ कट जाती थी। फिर हाजरा ने एक मुद्दत इसी तरह गुजारी। यहां तक कि कबीला जुरहूम के कुछ लोग

عَلَيْهِ، فَسَأَلَنِي عَنْكَ فَأَخْبَرْتُهُ، فَسَأَلَنِي كَيْفَ عَيْشُنَا فَأَخْبَرْتُهُ أَنَّا بِخَيْرٍ، قَالَ: فَأَوْصَاكِ بِشَيْءٍ، قَالَتْ: نَعَمْ، هُوَ يَقْرَأُ عَلَيْكَ السَّلَامَ، وَيَأْمُرُكَ أَنْ تُثَبِّتَ عَتَبَةَ بَابِكَ، قَالَ: ذَاكِ أَبِي وَأَنْتِ الْعَتَبَةُ، أَمَرَنِي أَنْ أُمْسِكَكِ، ثُمَّ لَبِثَ عَنْهُمْ مَا شَاءَ اللهُ، ثُمَّ جَاءَ بَعْدَ ذٰلِكَ، وَإِسْمَاعِيلُ يَبْرِي نَبْلًا لَهُ تَحْتَ دَوْحَةٍ قَرِيبًا مِنْ زَمْزَمَ، فَلَمَّا رَآهُ قَامَ إِلَيْهِ، فَصَنَعَا كَمَا يَصْنَعُ الْوَالِدُ بِالْوَلَدِ وَالْوَلَدُ بِالْوَالِدِ، ثُمَّ قَالَ: يَا إِسْمَاعِيلُ، إِنَّ اللهَ أَمَرَنِي بِأَمْرٍ، قَالَ: فَاصْنَعْ مَا أَمَرَكَ رَبُّكَ، قَالَ: وَتُعِينُنِي؟ قَالَ: وَأُعِينُكَ، قَالَ: فَإِنَّ اللهَ أَمَرَنِي أَنْ أَبْنِيَ هَا هُنَا بَيْتًا، وَأَشَارَ إِلَى أَكَمَةٍ مُرْتَفِعَةٍ عَلَى مَا حَوْلَهَا، قَالَ: فَعِنْدَ ذٰلِكَ رَفَعَا الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ، فَجَعَلَ إِسْمَاعِيلُ يَأْتِي بِالْحِجَارَةِ وَإِبْرَاهِيمُ يَبْنِي، حَتَّى إِذَا ارْتَفَعَ الْبِنَاءُ، جَاءَ بِهٰذَا الْحَجَرِ فَوَضَعَهُ لَهُ فَقَامَ عَلَيْهِ، وَهُوَ يَبْنِي وَإِسْمَاعِيلُ يُنَاوِلُهُ الْحِجَارَةَ، وَهُمَا يَقُولَانِ: ﴿رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّآ إِنَّكَ أَنتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ﴾ [رواه البخاري: ٣٣٦٤]

उनकी तरफ से गुजरे या यूं फरमाया कि जुरहूम की कुछ आदमी कदाअ के रास्ते से वापस आ रहे थे तो मक्का के नशीब (घाटी) में उतर गये। इतने में उन्होंने कुछ परिन्दों को एक जगह चक्कर लगाते देखा तो कहने लगे कि यह परिन्दे जरूर पानी पर घूम रहे हैं। हालांकि हम उस वादी को जानते हैं और यहां हमने कभी पानी देखा तक नहीं। तब उन्होंने दो आदमी भेजे तो वो पानी पर पहुंच गये। फिर उन्होंने लौट कर उन लोगों तो खबर दी। लिहाजा वो सब लोग चल पड़े। आपने फरमाया कि उन लोगों ने इस्माईल अलैहि. की वालदा को पानी पर मौजूद पाकर पूछा, क्या आप हमें अपने पास ठहरने की इजाजत देती हैं? उन्होंने कहा कि इस शर्त पर कि तुम्हारा पानी पर कुछ हक न होगा। उन्होंने कहा, ठीक है। इब्ने अब्बास रजि. ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उस कबीले ने इस्माईल अलैहि. की वाल्दा को उलफत पसन्द पाया। इसलिए उन्होंने अपने घर वालों को वहां बुलाकर रहने लगे। यहां तक कि उन लोगों के वहां कई घर बन गये और लड़का भी जवान हो गया और उसने उनसे अरबी जबान भी सीख ली और उन लोगों के

नजदीक इस्माईल अलैहि. एक पसन्दीदा अखलाकी आदमी साबित हुए। जब वो अच्छी तरह जवान हो गये तो अपने खानदान की एक औरत से उसकी शादी कर दी। उस दौरान इस्माईल अलैहि. की वाल्दा इन्तेकाल कर गई। इस्माईल अलैहि. की शादी के बाद इब्राहिम अलैहि. अपने बीवी बच्चों को देखने आये। लेकिन उस वक्त इस्माईल अलैहि. से मुलाकात न हो सकी। फिर आपने उसकी बीवी से उनका हाल पूछा तो उसने कहा कि हमारे लिए रोजी की तलाश में बाहर गये हैं। फिर आपने उससे उनके रहन सहन बारे में पूछा तो बीवी ने कहा कि हम सख्त मुसीबत और तकलीफ में हैं और हमारे हालात बहुत खराब हैं। गर्ज उसने इब्राहिम अलैहि. से बहुत शिकायत की। यह सुनकर आपने फरमाया, जब तुम्हारे शौहर आयें तो उनसे मेरा सलाम कहना और अपने दरवाजे की चौखट बदलने का पैगाम देना। फिर जब इस्माईल अलैहि. घर आये तो उन्होंने अपने बाप की खुशबू पाई। बीवी से पूछा, यहां कोई आया था? उसने कहा कि हां, इस तरह का एक बूढ़ा आदमी आया था और उसने आपके बारे में मुझ से पूछा तो मैंने उसे आपके बारे में बता दिया था। फिर उसने जिन्दगी के बारे में पूछा तो मैंने बताया कि जिन्दगी बड़ी तंगी और मुसीबत में गुजर रही है। फिर इस्माईल अलैहि. ने पूछा कि फिर उसने तुम्हें क्या वसीअत फरमाई? बीवी ने कहा कि उन्होंने मुझे आपका सलाम दिया और दरवाजे की चौखट बदलने का पैगाम दिया था। इस पर इस्माईल अलैहि. ने कहा कि वो मेरे वालिद मोहतरम थे और उन्होंने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुमसे अलग हो जाऊँ। लिहाजा तुम अपने घर वालों के पास चली जाओ। अलगर्ज इस्माईल अलैहि. ने उसे तलाक देकर उनमें से ही एक दूसरी औरत से निकाह कर लिया। फिर अल्लाह अल्लाह को जितने दिन मंजूर था। इब्राहिम अलैहि. अपने मुल्क में ठहरे, उसके बाद दोबारा तशरीफ लाये, लेकिन मकान पर उन्हें फिर न पाया तो उनकी बीवी के

पास गये और पूछा कि इस्माईल अलैहि. कहां हैं? उसने कहा कि हमारे लिए रोजी की तलाश में बाहर निकले हैं। इब्राहिम अलैहि. ने पूछा कि तुम्हारा रहन सहन कैसे होता है और दूसरे हालातों के बारे में भी पूछा तो उसने कहा अल्लाह का शुक्र है। हम अच्छी हालत में हैं। इब्राहिम अलैहि. ने पूछा कि तुम क्या खाते हो? उसने कहा, गोश्त, फिर पूछा कि तुम क्या पीते हो? उसने कहा, पानी। फिर इब्राहिम अलैहि. ने उनके लिए दुआ की कि ऐ अल्लाह उनके गोश्त और पानी में बरकत अता फरमा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उस वक्त वहां गल्ला न होता था। अगर गल्ला होता तो उसमें भी उनके लिए दुआ करते और आपने फरमाया कि मक्का वालों के अलावा जो आदमी भी उन दो चीजों पर हमेशगी करेगा, उसे यह चीजें रास न आयेगी। इब्राहिम अलैहि. ने फरमाया कि जब तुम्हारे शौहर आयें तो उसे मेरा सलाम कह देना और कहना कि अपने दरवाजे की चौखट को बाकी रखे। फिर जब इस्माईल अलैहि. आये तो उन्होंने पूछा कि तुम्हारे पास कोई आया था? उन्होंने कहा, एक बूढ़े आदमी खुश वजा हमारे पास आये थे और उसने उनकी तारीफ करते हुए बताया कि उन्होंने मुझसे तुम्हारे बारे में पूछा था। मैंने बतला दिया कि वो फलां काम गये हैं। फिर उसने हमारी गुजरती जिन्दगी के बारे में पूछा तो मैंने कह दिया कि हम अच्छी हालत में हैं। इस्माईल अलैहि. ने उनसे पूछा कि उन्होंने तुम्हें किस बात की वसीयत की? बीवी ने कहा, हां! उन्होंने तुम्हें सलाम और अपने दरवाजे की चौखट कायम रखने का पैगाम दिया था। इस्माईल अलैहि. ने कहा, वो मेरे वालिद मुहतरम थे और चौखट तुम हो। उन्होंने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें अपने पास रखूं। फिर इब्राहिम अलैहि. जिस कद्र अल्लाह ने चाहा, उनसे गायब रहे। उसके बाद फिर तशरीफ लाये ओर उस वक्त इस्माईल अलैहि. जमजम के पास एक बड़े पेड़ के नीचे बैठे अपने तीर सही कर रहे थे। तो जब इस्माईल अलैहि. ने

इब्राहिम अलैहि. को देखा तो अदब के लिए उठ खड़े हुए। फिर दोनों ने वही कुछ किया जो बाप बेटे के साथ और बेटा बाप अपने बाप के साथ करता है। फिर इब्राहिम अलैहि. ने कहा, ऐ इस्माईल अलैहि.! अल्लाह ने मुझे एक काम करने का हुक्म दिया है। उन्होंने कहा कि जो कुछ आपके रब ने हुक्म दिया है, उसे जरूर करें। इब्राहिम अलैहि. ने फरमाया, तुम मेरी मदद करोगे। उन्होंने कहा, हां मैं आपकी मदद करूंगा। इब्राहिम अलैहि. ने फरमाया कि मुझे अल्लाह ने हुक्म दिया है कि यहां घर बनाऊं और उन्होंने एक टीले की तरफ इशारा फरमाया जो अपने आस पास की चीजों से कुछ ऊंचा था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उस वक्त उन दोनों ने बैतुल्लाह की बुनियादें ऊंची कीं। इस्माईल अलैहि. तो पत्थर लाते और इब्राहिम अलैहि. तामीर करते थे। यहां तक कि जब दीवारें ऊंची हो गई तो इस्माईल अलैहि. यह पत्थर (जिसे मकामे इब्राहिम कहा जाता है) लाये और उसे उनके लिए रख दिया। चूनांचे इब्राहिम अलैहि. उस पर खड़े होकर तामीर करने लगे और इस्माईल अलैहि. उन्हें पत्थर देते थे। वो दोनों यह कहते जाते थे, ऐ हमारे रब! तुम हमसे इस खिदमत को कबूल फरमा, यकीनन तू सुनने वाला और जानने वाला है।"

फायदे: इस हदीस से मालूम होता है कि बाप बेटे के बीच किस कद्र उलफत और मेल मिलाप था और बाप की खैरख्वाही और बेटे का इशारा पहचान लेना दोनों ही बेमिसाल हैं।

1416: अबू जर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रूए जमीन पर सबसे पहले

١٤١٦ : عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَيُّ مَسْجِدٍ وُضِعَ فِي الأَرْضِ أَوَّلُ؟ قَالَ: (المَسْجِدُ الحَرَامُ). قَالَ: قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: (المَسْجِدُ الأَقْصَى). قُلْتُ: كَمْ كَانَ بَيْنَهُمَا؟

قَالَ: (أَرْبَعُونَ سَنَةً، ثُمَّ أَيْنَمَا أَدْرَكَتْكَ الصَّلَاةُ بَعْدُ فَصَلِّهْ، فَإِنَّ الْفَضْلَ فِيهِ). [رواه البخاري: ٣٣٦٦]

कौनसी मस्जिद बनाई गई? तो आपने फरमाया, मस्जिदे हराम! मैंने कहा, फिर कौनसी? तो आपने फरमाया, मस्जिदे अकसा! मैंने पूछा, इन दोनों में कितने वक्त का फासला था। आपने फरमाया, चालीस साल का। मगर जहां भी तुम्हें नमाज का वक्त आ जाये, वहीं नमाज पढ़ लो, क्योंकि उस वक्त बड़ाई इसी में है।

फायदे: इस मुकाम पर एक शक है कि बैतुल्लाह की तामीर हजरत इब्राहिम अलैहि. ने फरमाई और बैतुल मुकद्दस को हजरत सुलेमान रजि. ने तामीर किया और उन दोनों के बीच चालीस साल से ज्यादा फासला है। दरअसल उन हजरात ने नये तरीके से तामीर नहीं की थी, बल्कि उन्होंने नई बनायी थी। जबकि बैतुल्लाह हजरत इब्राहिम और बैतुल मुकद्दस हजरत सुलेमान अलैहि. से पहले तामीर हो चुकी थे।

 (औनुलबारी, 14/119)

١٤١٧ : عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، أَنَّهُمْ قَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ كَيْفَ نُصَلِّي عَلَيْكَ؟ فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (قُولُوا: اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ). [رواه البخاري: ٣٣٦٩]

1417: अबू हुमैद साअदी रजि. से रिवायत है कि सहाबा किराम रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम आप पर दरूद शरीफ कैसे पढ़ें? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यूं कहो: "ऐ अल्लाह! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनकी अजवाज व औलाद पर रहमत नाजिल फरमा, जिस तरह तूने हजरत इब्राहिम अलैहि. की औलाद पर रहमत नाजिल फरमाई थी और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उसकी अजवाज व औलाद पर बरकत नाजिल फरमा, जिस तरह तूने हजरत इब्राहिम

अलैहि. की औलाद पर बरकत नाजिल फरमाई थी। बेशक तू खूबीयों वाला और अजमत वाला है।

फायदे: तशह्हुद के दौरान पढ़े जाने वाले दरूद में जो आल का लफ्ज है, इससे मुराद बीवी नीज दूसरी औलाद जिन पर सदका हराम है। (औनुलबारी 4/122)

1418: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नीचे के कलमात से हसन रजि. और हुसैन रजि. को दम करते और फरमाते कि तुम्हारे दादा इब्राहिम अलैहि. भी इन्हीं कलमात से इसहाक अलैहि. और इस्माईल अलैहि. के लिए पनाह मांगी थी। ''मैं अल्लाह के कलमाते ताअमा के जरीये हर शैतान, जहरीले जानवर और हर बुरी नजर के डर से पनाह मांगता हूँ।''

١٤١٨ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعَوِّذُ الحَسَنَ وَالحُسَيْنَ، وَيقُولُ: (إِنَّ أَبَاكُمَا كَانَ يُعَوِّذُ بِهَا إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحٰقَ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ ٱللهِ التَّامَّةِ، مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لاَمَّةٍ). [رواه البخاري: ٣٣٧١]

फायदे: इससे यह भी मालूम हुआ कि कलाम अल्लाह गैर मखलूक है, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी मख्लूक की पनाह नहीं लेते थे। (औनुलबारी 4/123)

बाब 4: फरमाने इलाही: ''ऐ पैगम्बर! उन लोगों को हजरत इब्राहिम अलैहि. के मेहमानों का किस्सा सुनाओ।''

٤ - باب: قوله: ﴿وَنَبِّئْهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَٰهِيمَ﴾ الآية

1419: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हम हजरत

١٤١٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (نَحْنُ أَحَقُّ مِنْ إِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ: ﴿رَبِّ أَرِنِي

كَيْفَ تُحْيِ ٱلْمَوْتَىٰ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِن قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِي﴾، وَيَرْحَمُ اللهُ لُوطًا. لَقَدْ كَانَ يَأْوِي إِلَى رُكْنٍ شَدِيدٍ، وَلَوْ لَبِثْتُ فِي السِّجْنِ طُولَ مَا لَبِثَ يُوسُفُ، لأَجَبْتُ الدَّاعِيَ. [رواه البخاري: ٣٣٧٢]

इब्राहिम अलैहि. से ज्यादा इस कौल के हकदार थे, जब उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह मुझे दिखा कि तू मुर्दो को कैसे जिन्दा करता है? तो अल्लाह ने फरमाया, क्या तुम ईमान नहीं लाये? इब्राहिम अलैहि. ने कहा, क्यों नहीं। ईमान तो लाया हूँ लेकिन चाहता हूँ कि मेरा दिल मुतमईन (यकीन) हो जाये।

और अल्लाह लूत अलैहि. पर रहम फरमाये, वो जबरदस्त रूक्न (अल्लाह) की पनाह लेते थे और अगर मैं कैद खाने में इतने समय रहता जितना युसूफ अलैहि. रहे तो मैं फौरन बुलाने वाले की बात को मान लेता।

फायदे: हजरत इब्राहिम अलैहि. को किसी वक्त भी अल्लाह की कुदरत मुर्दा को जिन्दा करने में शक नहीं हुआ था। वो सिर्फ यकीनी इल्म से देखने के इल्म तक जाना चाहते थे। इसी तरह हजरत लूत अलैहि. का जबरदस्त सहारा खुद अल्लाह तआला था और हजरत युसूफ अलैहि. के बारे में जो कुछ आपने फरमाया, वो इनकसारी (सब्र) के तौर पर था। आपके अन्दर तो सब्र व इस्कलाल (साबिते कदमी) बदर्जा पूरा मौजूद था। (औनुलबारी, 4/126)

٥ - باب: قَوْلُ الله تعالى: ﴿وَٱذْكُرْ فِي ٱلْكِتَٰبِ إِسْمَٰعِيلَ إِنَّهُۥ كَانَ صَادِقَ ٱلْوَعْدِ﴾

बाब 5: फरमाने इलाही: "और किताब में हजरत इस्माईल अलैहि. का जिक्र करो, बेशक वो वादे के सच्चे थे।"

١٤٢٠ : عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَرَّ النَّبِيُّ عَلَى نَفَرٍ مِنْ أَسْلَمَ يَنْتَضِلُونَ، فَقَالَ رَسُولُ

1420: सलमा बिन अकवा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुजर

कबीला असलम के कुछ लोगों पर हुआ, जो तीर अन्दाजी कर रहे थे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ इस्माईल अलैहि. की औलाद! तीर अन्दाजी करो, क्योंकि तुम्हारे बाप भी बड़े तीर अन्दाज थे और मैं फलां फरीक की तरफ हूँ। रावी कहता है कि यह सुनकर दूसरे फरीक ने हाथ रोक लिए। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम्हें क्या हुआ, तीर अन्दाजी क्यों नहीं करते? उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! किस तरह तीर अन्दाजी करें, जबकि आप इस फरीक के साथ हैं? फिर आपने फरमाया, तीर अन्दाजी करो, मैं तुम सब के साथ हूँ।

ٱللهِ ﷺ: (ٱرْمُوا بَنِي إِسْمَاعِيلَ، فَإِنَّ أَبَاكُمْ كَانَ رَامِيًا، وَأَنَا مَعَ بَنِي فُلَانٍ)، قَالَ: فَأَمْسَكَ أَحَدُ ٱلْفَرِيقَيْنِ بِأَيْدِيهِمْ، فَقَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (مَا لَكُمْ لَا تَرْمُونَ؟) فَقَالُوا: يَا رَسُولَ ٱللهِ نَرْمِي وَأَنْتَ مَعَهُمْ؟ قَالَ: (ٱرْمُوا وَأَنَا مَعَكُمْ كُلِّكُمْ). [رواه البخاري: ٣٣٧٣]

फायदेः जजीरा अरब के वाशिन्द बनू इस्माईल हैं, जबकि शाम और फिलिस्तीन के बाशिन्दे बनू इस्राईल हैं। हजरत इस्माईल ने अरबी जबान यमन के एक जुरहूम नामी कबीले से सीखी थी, जैसा कि बुखारी में इसकी सराहत है।

बाब 6: और कौमे समूद की तरफ उनके कौमी भाई हजरत सालेह अलैहि. को भेजा।

٦ - باب: قوله تعالى: ﴿وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَٰلِحًا﴾

1421: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि उन्होंने कहा, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जंगे तबूक के मौके पर मकामे हजर में उतरे तो आपने सहाबा किराम रजि. को हुक्म दिया कि वो यहां के कुएं से न

١٤٢١ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ، لَمَّا نَزَلَ ٱلْحِجْرَ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ، أَمَرَهُمْ أَنْ لَا يَشْرَبُوا مِنْ بِئْرِهَا، وَلَا يَسْتَقُوا مِنْهَا، فَقَالُوا: قَدْ عَجَنَّا مِنْهَا وَٱسْتَقَيْنَا، فَأَمَرَهُمْ أَنْ يَطْرَحُوا ذٰلِكَ ٱلْعَجِينَ، وَيُهَرِيقُوا ذٰلِكَ ٱلْمَاءَ.

[رواه البخاري: ٣٣٧٨]

पानी पीऐ और न ही बर्तनों में भरे। इस पर सहाबा किराम रजि. ने कहा कि हमने तो इस पानी से आटा गूंथा है और उसे बर्तनों में भर लिया है। आपने हुक्म दिया कि उस आटे को फैंक दो और वो पानी भी बहा दो।

फायदे: मुबादा उस पानी की वजह से तुम भी संगदिली का शिकार हो जाओ या जिस्मानी तौर पर किसी बीमारी में मुब्तला हो जाओ। (औनुलबारी, 4/128)

٧ - باب: ﴿أَمْ كُنتُمْ شُهَدَآءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ ٱلْمَوْتُ إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ﴾ الآية

बाब 7: फरमाने इलाही: क्या तुम उस वक्त मौजूद थे जब हजरत याकूब अलैहि. मरने लगे तो उन्होंने अपने बेटों से कहा. .... आखरी आयत तक''

١٤٢٢ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: (الكَرِيمُ، ابْنُ الكَرِيمِ ابْنِ الكَرِيمِ، ابْنِ الكَرِيمِ، يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ بْنِ إِسْحٰقَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ). [رواه البخاري: ٣٣٨٢]

1422: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम बिन युसूफ बिन याकूब बिन इस्हाक बिन इब्राहिम अलैहि. हैं।

फायदे: इस हदीस में हजरत याकूब अलैहि. का जिक्र खैर है कि वो शरीफ बाप के बेटे थे।

٨ - باب: حَدِيثُ الخَضِرِ مَعَ مُوسَىٰ عَلَيْهِ السَّلَامُ

बाब 8: हजरत ख़िज़्र और हजरत मूसा अलैहि. का किस्सा।

١٤٢٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّمَا سُمِّيَ الخَضِرَ أَنَّهُ جَلَسَ عَلَى فَرْوَةٍ بَيْضَاءَ،

1423. अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, हजरते

فَإِذَا هِيَ تَهْتَزُّ مِنْ خَلْفِهِ خَضْرَاءَ. [رواه البخاري: ٣٤٠٢]

खिज़्र का नाम इसलिए हजरते खिज़्र रखा गया है कि वो एक बार सूखी जमीन पर बैठे थे। जब वहां से चले तो वो हरी भरी होकर लहलाने लगी।

फायदे: हजरत खिज़्र अलैहि. के बारे में अकसरीयत का ख्याल है कि वो अब भी जिन्दा हैं, लेकिन राजेह बात यह है कि वो फौत हो चुके हैं। (औनुलबारी 4/139)

बाब 9 :

٩ - باب

١٤٢٤ : عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ نَجْنِي الْكَبَاثَ، وَإِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (عَلَيْكُمْ بِالأَسْوَدِ مِنْهُ، فَإِنَّهُ أَطْيَبُهُ)، قَالُوا: أَكُنْتَ تَرْعَى الْغَنَمَ؟ قَالَ: (وَهَلْ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا وَقَدْ رَعَاهَا؟). [رواه البخاري: ٣٤٠٦]

1424: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि हम एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ पीलू का फल चुन रहे थे तो आपने फरमाया कि काले फल तलाश करो, क्योंकि वो अच्छा होता है। लोगों ने कहा, आपने क्या बकरियां चराई हैं? आपने फरमाया, कोई नबी ऐसा नहीं गुजरा, जिसने बकरियां न चराई हों।

फायदे: हर पैगम्बर को इसलिए बकरियां चराने का मौका दिया गया ताकि उन्हें लोगों की निगहबानी (देखरेख) करने का तरीका आ जाये। नीज इस में इशारा है कि नबूवत दुनिया तलब और शोहरत पसन्द लोगों को नहीं दी जाती, बल्कि मुनकसिर और मुतवाजेह (सब्र करने वाले) हजरात को दी जाती है। (औनुलबारी 4/130)

बाब 10: फरमाने इलाही: अल्लाह तआला ने ईमान वालों के लिए अहलिया फिरओन की मिसाल बयान की।"

١٠ - باب: قول الله تعالى: ﴿وَضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱمْرَأَتَ فِرْعَوْنَ﴾ إلى قوله ﴿وَكَانَتْ مِنَ ٱلْقَٰنِتِينَ﴾

1425: अबू मूसा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मर्दों में तो बहुत से कामिल गुजरे हैं। लेकिन औरतों में आसया फिरओन की बीवी और मरीयम इमरान की बेटी के अलावा कोई औरत कामिल नहीं हुई और आइशा रजि. की बड़ाई तमाम औरतों पर ऐसी है, जैसे सरीद (एक किस्म का खाना) की दूसरे तमाम खानों पर।

١٤٢٥ : عَنْ أَبِي مُوسى رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (كَمُلَ مِنَ الرِّجَالِ كَثِيرٌ، وَلَمْ يَكْمُلْ مِنَ النِّسَاءِ: إلاَّ آسِيَةُ ٱمْرَأَةُ فِرْعَوْنَ، وَمَرْيَمُ بِنْتُ عِمْرَانَ، وَإِنَّ فَضْلَ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ كَفَضْلِ الثَّرِيدِ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ). [رواه البخاري: ٣٤١١]

फायदे: कमाल से मुराद वली होने का वो आखरी दर्जा है जो नबूवत से नीचे हो, क्योंकि नबूवत सिर्फ मर्दों के लिए है, कोई औरत नबी नहीं होती। इस हदीस से हजरत आइशा रजि. की बरतरी और बड़ाई भी साबित होती है। (औनुलबारी, 4/131)

बाब 11: फरमाने इलाहीः बेशक हजरत युनूस अलैहि. रसूलों में से थे आखिर आयत (वहुवा मुलीम) तक।

١١ - باب: قَوْلُ ٱللهِ تَعَالَى: ﴿وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ﴾ إلى قوله ﴿وَهُوَ مُلِيمٌ﴾

1426. इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, किसी आदमी को यह हक नहीं कि वो कहे मैं (यानी आप हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) युनूस बिन मत्ता से बेहतर हों। आपने उनको बाप की तरफ मनसूब फरमाया।

١٤٢٦ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَا يَنْبَغِي لِعَبْدٍ أَنْ يَقُولَ: إِنِّي خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى)، وَنَسَبَهُ إِلَى أَبِيهِ. [رواه البخاري: ٣٤١٣]

फायदे: कुछ तारीख लिखने वालों ने मत्ता हजरत युनूस अलैहि. की वालदा का नाम बताया है इमाम बुखारी इसका रद्द फरमाते हैं कि यह

उनके वालिद का नाम है। ध्यान रहे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशाद फरोतनी और आजजी के तौर पर है। वरना आप तमाम अम्बिया से बेहतर हैं। (औनुलबारी 4/134)

---

١٢ - باب: قَوْلُ الله تَعَالَى: ﴿وَءَاتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا﴾

बाब 12: फरमाने इलाहीः हमने हजरत दाऊद अलैहि॰ को जबूर (किताब का नाम) अता की।

١٤٢٧ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ الله عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (خُفِّفَ عَلَى دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ القُرْآنُ، فَكَانَ يَأْمُرُ بِدَوَابِّهِ فَتُسْرَجُ، فَيَقْرَأُ القُرْآنَ قَبْلَ أَنْ تُسْرَجَ دَوَابُّهُ، وَلَا يَأْكُلُ إِلَّا مِنْ عَمَلِ يَدِهِ) [رواه البخاري: ٣٤١٧]

1427: अबू हुरैरा रज़ि॰ से रिवायत है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, दाऊद अलैहि. पर जबूर की तिलावत इस कद्र आसान कर दी गई थी कि वो जब अपनी सवारियों की बाबत हुक्म देते कि उन पर जीन रखी जाये तो उससे पहले कि सवारियों पर जीन रखी जाये। वो तिलावत जबूर से फारिग हो चुके होते। नीज वो अपने हाथ की कमाई के अलावा कुछ न खाते थे।

फायदेः हजरत दाऊद अलैहि. वक्त के बादशाह थे, उसके बावजूद वो अपने हाथ से मेहनत करके जिन्दगी बसर करते थे। उनके हाथों अल्लाह तआला ने लोहे को मोम कर दिया था, इसलिए वो जिरहें बनाया करते थे। (औनुलबारी, 4/136)

---

١٣ - باب: قَوْلُ الله تَعَالَى: ﴿وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمَٰنَ نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ﴾

बाब 13: फरमाने इलाही : और हमने हजरत दाऊद अलैहि॰ को हजरत सुलेमान अलैहि. नामी फरजन्द अता फरमाया, वो एक अच्छा बन्दा जो रूजूअ (अल्लाह की तरफ पलटने वाला) करने वाला था।

١٤٢٨ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (مَثَلِي وَمَثَلُ النَّاسِ، كَمَثَلِ رَجُلٍ ٱسْتَوْقَدَ نَارًا، فَجَعَلَ الْفَرَاشُ وَهٰذِهِ ٱلدَّوَابُّ تَقَعُ فِي النَّارِ). وَقَالَ: (كانَتِ ٱمْرَأَتَانِ مَعَهُمَا ٱبْنَاهُمَا، جاءَ ٱلذِّئْبُ فَذَهَبَ بِٱبْنِ إِحْدَاهُمَا، فَقَالَتْ صَاحِبَتُهَا: إِنَّمَا ذَهَبَ بِٱبْنِكِ، وقَالَتِ الأُخْرَى: إِنَّمَا ذَهَبَ بِٱبْنِكِ، فَتَحَاكَمَتَا إِلَى دَاوُدَ، فَقَضَى بِهِ لِلْكُبْرَى، فَخَرَجَتَا عَلَى سُلَيْمَانَ بْنِ دَاوُدَ فَأَخْبَرَتَاهُ، فَقَالَ: ٱئْتُونِي بِالسِّكِّينِ أَشُقُّهُ بَيْنَهُمَا، فَقَالَتِ الصُّغْرَى: لاَ تَفْعَلْ يَرْحَمُكَ ٱللهُ، هُوَ ٱبْنُهَا، فَقَضَى بِهِ لِلصُّغْرَى) [رواه البخاري: ٣٤٢٦، ٣٤٢٧]

1428: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना कि मेरी और उन लोगों की मिसाल उस आदमी जैसी है जो आग जलाये तो परवाने और यह कीट पतंगे उसमें गिरने लगें। फिर आपने फरमाया कि दो औरतें थी, जिनके साथ उनके दो बच्चे भी थे। एक भेड़िया आया और उनमें से एक के बच्चे को उठाकर ले गया। उसकी सहेली ने कहा कि भेड़िया तेरे बच्चे को ले गया है। दूसरी बोली कि नहीं वो तेरे बच्चे को ले गया है। फिर दोनों दाऊद अलैहि. के पास मुकदमा ले गई तो उन्होंने बड़ी औरत के हक में फैसला दे दिया। फिर वो दोनों सुलेमान बिन दाऊद अलैहि. के पास गई और उन्हें वाकया सुनाया। हजरत सुलेमान अलैहि॰ ने कहा, मेरे पास एक छुरी लाओ ताकि मैं बच्चे को काट कर तुम्हारे बीच बांट दूं। छोटी बोली अल्लाह आप पर रहम करे, ऐसा न करें यह उसी का बेटा सही। तब सुलेमान रजि. ने बच्चे का फैसला छोटी के हक में कर दिया।

फायदे: जिन्दा रहने वाला बच्चा बड़ी औरत के पास था और छोटी के पास आपने दावे के सबूत के लिए दलील न थी। इसलिए हजरत दाऊद अलैहि. ने बड़ी के हक में फैसला दे दिया। हजरत सुलेमान रज़ि॰ ने छोटी औरत की घबराहट को देखा तो सही हाल मालूम करने के लिए एक हैला निकाला। चूनांचे वो मामले की तह तक पहुंच गये और बच्चा छोटी औरत के हवाले कर दिया। (औनुलबारी 4/139)

١٤ - باب: قوله تعالى: ﴿وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ يَا مَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ﴾ إلى قوله ﴿أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ﴾

बाब 14: जब फरिश्तों ने मरियम से कहा, अल्लाह ने तुम्हें बरगुजिदा किया है, आखिर तक कि मरियम की कौन किफालत करेगा?

١٤٢٩ : عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (خَيْرُ نِسَائِهَا مَرْيَمُ ابْنَةُ عِمْرَانَ، وَخَيْرُ نِسَائِهَا خَدِيجَةُ). [رواه البخاري: ٣٤٣٢]

1429: अली रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि मरियम बिन्ते इमरान अपने जमाने की औरतों से बेहतरीन हैं और खदीजा रजि. इस उम्मत की औरतों में सबसे बेहतरीन हैं।

फायदेः एक रिवायत में है कि जन्नत की औरतों में से अफजल खदीजा, फातिमा, मरियम और आसया हैं और एक दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक फरिश्ते ने खुशखबरी दी कि फातिमा रजि. जन्नत में औरतों की सरदार होंगी।

(औनुलबारी, 4/142)

١٤٣٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: (نِسَاءُ قُرَيْشٍ خَيْرُ نِسَاءٍ رَكِبْنَ الإِبِلَ أَحْنَاهُ عَلَى طِفْلٍ، وَأَرْعَاهُ عَلَى زَوْجٍ فِي ذَاتِ يَدِهِ). [رواه البخاري: ٣٤٣٤]

1430: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह को यह फरमाते हुए सुना कि कुरैश की औरतें उन तमाम औरतों से बेहतर हैं जो ऊंट पर सवार होती हैं। क्योंकि यह औरतों से ज्यादा बच्चों पर शिफकत करती हैं और शौहर के माल का ज्यादा ख्याल रखने वाली हैं।

फायदेः इस हदीस में अरब औरतों में से कुरैश की औरतों को अफजल करार दिया गया है। क्योंकि अबर की औरतें ही ऊंटनियों पर सवार होती हैं, यही वजह है कि हजरत अबू हुरैरा रजि. इस हदीस के बाद

फरमाया करते थे कि हजरत मरियम अलैहि. ऊंट पर सवार नहीं हुई। (औनुलबारी 4/143)

बाब 15 : फरमाने इलाही : ऐ अहले किताब! अपने दीन में ज्यादती न करो, आखिर आयत (वकीलन) तक।

١٥ - باب: قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ لَا تَغۡلُواْ فِي دِينِكُمۡ﴾ إلى ﴿وَكِيلًا﴾

1431: उबादा बिन सामित रजि. से रिवायत है वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो आदमी इस बात की गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद हकीकी नहीं वो एक है, कोई उसका शरीक नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं और ईसा अलैहि. अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं और उसका कलमा हैं जो अल्लाह ने मरियम की तरफ पहुंचाया और उसकी तरफ से एक रूह हैं। नीज जन्नत बरहक और जहन्नम बरहक है तो अल्लाह उसे जन्नत में दाखिल करेगा। चाहे वो जिस तरह के काम करता हो।

١٤٣١ : عَنْ عُبَادَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (مَنْ شَهِدَ أَنْ لاَ إِلٰهَ إِلَّا ٱللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، وَأَنَّ عِيسَى عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ، وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ، وَالجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، أَدْخَلَهُ ٱللهُ الجَنَّةَ عَلَى مَا كَانَ مِنَ الْعَمَلِ). [رواه البخاري: ٣٤٣٥]

फायदे: अगरचे तमाम रूह अल्लाह की तरफ से हैं, लेकिन हजरत ईसा अलैहि. एक खास रूह हैं जिसका मकाम दूसरे अरवाह से ज्यादा है, चूंकि उन्हें अल्लाह ने खिलाफे आदत कलमा कुन से पैदा किया है। इसलिए उन्हें रूह अल्लाह कहा जाता है। (औनुलबारी, 4/144)

बाब 16: कुरआन पाक में हजरत मरियम का जिक्र पढो जब वो अपने घर वालों से अलग हुई.... आखिर आयत तक।

١٦ - باب: قَوْلُ ٱللهِ تَعَالَى: ﴿وَٱذۡكُرۡ فِي ٱلۡكِتَٰبِ مَرۡيَمَ إِذِ ٱنتَبَذَتۡ مِنۡ أَهۡلِهَا﴾ الآية

1432: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, गोद में सिर्फ तीन बच्चों ने बातचीत की। आइशा रजि. ने दूसरे बनी इस्राईल में जुरैज नामी एक आदमी था। वो नमाज पढ़ रहा था कि उसकी मां आई और उसने उसे बुलाया। जुरैज ने दिल में सोचा कि मैं नमाज पढ़ूं या वाल्दा को जवाब दूं। (आखिर उसने जवाब न दिया) उसकी मां ने बद-दुआ दी और कहा ऐ अल्लाह! यह उस वक्त तक न मरे, जब तक कि तू उसे जिनाकार औरतों की सूरत दिखाये। फिर ऐसा हुआ कि जुरैज अपने इबादत खाने में था। एक जिना करने वाली औरत आई और उसने बदकारी के बारे में बातचीत की। लेकिन जुरैज ने इन्कार कर दिया। फिर वो एक चरवाहे के पास गई। उससे मुंह काला किया और फिर उसने एक बच्चा जना और यह कह दिया कि बच्चा जुरैज का है। लोग जुरैज के पास आये और उसके इबादत खाने को तोड़-फोड़ दिया। उसे नीचे उतारा और खूब गालियां दी।

١٤٣٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: (لَمْ يَتَكَلَّمْ فِي المَهْدِ إِلَّا ثَلاثَةٌ: عِيسَى، وكانَ فِي بَنِي إِسْرَائيلَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ جُرَيْجٌ، كانَ يُصَلِّي، جاءَتْهُ أُمُّهُ فَدَعَتْهُ، فَقَالَ: أُجِيبُهَا أَوْ أُصَلِّي، فَقَالَتِ: اللَّهُمَّ لاَ تُمِتْهُ حَتَّى تُرِيَهُ وُجُوهَ المُومِسَاتِ، وَكانَ جُرَيْجٌ فِي صَوْمَعَتِهِ، فَتَعَرَّضَتْ لَهُ ٱمْرَأَةٌ وَكَلَّمَتْهُ فَأَبى، فَأَتَتْ رَاعِيًا فَأَمْكَنَتْهُ مِنْ نَفْسِهَا، فَوَلَدَتْ غُلاَمًا، فَقَالَتْ: مِنْ جُرَيْجٍ، فَأَتَوْهُ فَكَسَرُوا صَوْمَعَتَهُ وَأَنْزَلُوهُ وَسَبُّوهُ، فَتَوَضَّأَ وَصَلَّى ثُمَّ أَتَى الغُلامَ، فَقَالَ: مَنْ أَبُوكَ يَا غُلاَمُ؟ قالَ: الرَّاعِي، قالُوا: نَبْنِي صَوْمَعَتَكَ مِنْ ذَهَبٍ؟ قالَ: لاَ، إِلَّا مِنْ طِينٍ، وَكانَتِ ٱمْرَأَةٌ تُرْضِعُ ٱبْنًا لَهَا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ، فَمَرَّ بِهَا رَجُلٌ رَاكِبٌ ذُو شَارَةٍ، فَقَالَتِ: اللَّهُمَّ ٱجْعَلِ ٱبْنِي مِثْلَهُ، فَتَرَكَ ثَدْيَهَا وَأَقْبَلَ عَلَى الرَّاكِبِ، فَقَالَ: اللَّهُمَّ لاَ تَجْعَلْنِي مِثْلَهُ، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى ثَدْيِهَا يَمَصُّهُ) قالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَمَصُّ إِصْبَعَهُ (ثُمَّ مُرَّ بِأَمَةٍ، فَقَالَتْ: اللهُمَّ لا تَجْعَلِ ٱبْنِي مِثْلَ هٰذِهِ، فَتَرَكَ ثَدْيَهَا، فَقَالَ: اللَّهُمَّ ٱجْعَلْنِي مِثْلَهَا، فَقَالَتْ: لِمَ ذَاكَ؟ فَقَالَ: الرَّاكِبُ جَبَّارٌ مِنَ الجَبَابِرَةِ، وَهٰذِهِ الأَمَةَ يَقُولُونَ: سَرَقْتِ،

رَنِيَتِ، وَلَمْ تَفْعَلْ). [رواه البخاري: ٣٤٣٦]

जुरैज ने वजू किया, नमाज पढ़ी फिर बच्चे के पास आकर कहा, तेरा बाप कौन है? उसने कहा "चरवाहा"। यह हाल देखकर लोगों ने कहा कि हम तेरा इबादतखाना सोने की ईटों से बनाये देते हैं। उसने कहा, नहीं मिट्टी से बना दो, तीसरे यह कि बनी इस्राईल की एक औरत अपने बच्चे को दूध पिला रही थी तो उधर से एक खुबसूरत सवार गुजरा। औरत उसे देखकर कहने लगी, ऐ अल्लाह! मेरे बच्चे को भी ऐसा कर दे तो उस बच्चे ने मां की छाती छोड़ कर सवार की तरफ मुंह कर कहा, ऐ अल्लाह! मुझे उस जैसा न करना। फिर वो मां का पिस्तान चूसने लगा। अबू हुरैरा रजि. कहते हैं कि जैसे मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख रहा हूँ। वो अपनी अंगली चूस कर दूध पीने की कैफियत बता रहे हैं। फिर एक लौण्डी उधर से गुजरी तो मां ने कहा, ऐ अल्लाह! मेरे बेटे को उस जैसा न करना। बच्चे ने फिर पिस्तान छोड़कर कहा, ऐ अल्लाह! मुझे उस जैसा कर दे। उसकी मां ने कहा, बच्चे दरअसल बात क्या है? बच्चे ने कहा वो सवार घमण्ड करने वालों में से एक घमण्डी था और यह लौण्डी बेकसूर है। लोग उसे कहते हैं तूने चोरी की है, तूने जिना किया है। हालांकि उसने कुछ नहीं किया है।

फायदे: मुस्लिम की एक रिवायत में है कि गोद में उस बच्चे ने भी बातचीत की थी, जिसकी मां को असहाब उखलुद (खन्दक वाले) आग के अलाव में डालने लगे थे। (औनुलबारी, 4/151)

١٤٣٣ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (رَأَيْتُ عِيسَى وَمُوسَى وَإِبْرَاهِيمَ، فَأَمَّا عِيسَى فَأَحْمَرُ جَعْدٌ عَرِيضُ الصَّدْرِ، وَأَمَّا مُوسَى فَآدَمُ جَسِيمٌ سَبْطٌ، كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ الزُّطِّ). [رواه البخاري: ٣٤٣٨]

1433: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैंने (शबे मैराज) ईसा, मूसा और इब्राहिम अलैहि. को देखा। ईसा अलैहि. सुर्ख रंग और गठे

बदन और चौड़े सीने वाले हैं और मूसा अलैहि. गनदमी रंग के दराज कद और सीधे बालों वाले हैं। जैसे कबीला जुत के लोगो में से हैं।

फायदे: कबीला जुत दरअसल जुट से अरबी बनाया गया है, जिन्हें जाट भी कहा जाता है। बरसगीर में दराजकद, जसामत और ताकत में मशहूर हैं। (औनुलबारी, 4/152) नीज यह रिवायत हजरत इब्ने उमर रजि. से नहीं बल्कि हजरत इब्ने अब्बास रजि. से मरवी है।

(फतहुल बारी 6/485)

١٤٣٤ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَرَانِي اللَّيْلَةَ عِنْدَ الْكَعْبَةِ فِي الْمَنَامِ، فَإِذَا رَجُلٌ آدَمُ، كَأَحْسَنِ مَا يُرَى مِنْ أُدْمِ الرِّجَالِ تَضْرِبُ لِمَّتُهُ بَيْنَ مَنْكِبَيْهِ، رَجِلُ الشَّعَرِ، يَقْطُرُ رَأْسُهُ مَاءً، وَاضِعًا يَدَيْهِ عَلَى مَنْكِبَيْ رَجُلَيْنِ وَهُوَ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ، فَقُلْتُ: مَنْ هٰذَا؟ فَقَالُوا: هٰذَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ، ثُمَّ رَأَيْتُ رَجُلًا وَرَاءَهُ جَعْدًا قَطِطًا، أَعْوَرَ الْعَيْنِ الْيُمْنَى، كَأَشْبَهِ مَنْ رَأَيْتُ بِابْنِ قَطَنٍ، وَاضِعًا يَدَيْهِ عَلَى مَنْكِبَيْ رَجُلٍ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ، فَقُلْتُ: مَنْ هٰذَا؟ قَالُوا: الْمَسِيحُ الدَّجَّالُ. [رواه البخاري: ٣٤٤٠]

1434: इब्ने उमर रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह ने मुझे आज रात को सोते में कअबा के करीब दिखाना। मैने एक आदमी को देखा जो ऐसे गन्दमी रंग का था कि गन्दमी रंग वालों में उससे बेहतर कोई और आदमी न था और उसके बाल कान की लो से नीचे लटके हुए दोनों शानों के बीच पड़े थे। मगर बाल सीधे थे और सर से पानी टपक रहा था और वो अपने दोनों हाथ और आदमियों के शानों पर रखे हुए कअबा का तवाफ कर रहा है। मैंने कहा, यह कौन है? तो लोगों ने कहा कि यह मसीह बिन मरियम है। फिर मैंने उनके पीछे एक आदमी को देखा जो बहुत सख्त पेचदार बालों वाला दाहिनी आंख से काना और इब्ने कत्न काफिर से बहुत मिलता जुलता था। वो भी अपने दोनों हाथ एक आदमी के कन्धे पर रखे कअबा का तवाफ कर रहा था। मैंने पूछा, यह कौन है?

लोगों ने कहा यह मसीह दज्जाल है।

फायदेः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दज्जाल को भी तवाफ करते देखा। हालांकि दज्जाल मक्का और मदीना में दाखिल नहीं होगा। लेकिन यह उस वक्त होगा, जब वो बाकायदा निकलेगा। उससे पहले हरमेन में आ सकता है। (औनुलबारी 4/154)

١٤٣٥ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ في رواية أخرى قالَ: لاَ وَٱللهِ، ما قالَ النَّبِيُّ ﷺ لِعِيسَى أَحْمَرُ، وَلٰكِنْ قالَ: (بَيْنَما أَنَا نائِمٌ أَطُوفُ بِالْكَعْبَةِ، فَإِذَا رَجُلٌ آدَمُ، سَبْطُ الشَّعَرِ، يُهَادَى بَيْنَ رَجُلَيْنِ، يَنْطُفُ رَأْسُهُ ماءً، أَوْ يُهَرَاقُ رَأْسُهُ ماءً، فَقُلْتُ: مَنْ هٰذَا؟ قالُوا: ٱبْنُ مَرْيَمَ، فَذَهَبْتُ أَلْتَفِتُ، فَإِذَا رَجُلٌ أَحْمَرُ جَسِيمٌ، جَعْدُ الرَّأْسِ، أَعْوَرُ عَيْنِهِ الْيُمْنَى، كَأَنَّ عَيْنَهُ عِنَبَةٌ طَافِيَةٌ، قُلْتُ: مَنْ هٰذَا: قالُوا: هٰذَا الدَّجَّالُ، وَأَقْرَبُ النَّاسِ بِهِ شَبَهًا ٱبْنُ قَطَنٍ). [رواه البخاري: ٣٤٤١]

1435: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया अल्लाह की कसम! नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ईसा अलैहि. को सूर्ख रंग का नहीं फरमाया, बल्कि यह फरमाया था कि उस वक्त जब मैं ख्वाब की हालत में कअबा का तवाफ कर रहा था। तो अचानक देखा कि एक आदमी गन्दमी रंग का है, जिसके बाल सीधे और वो दो आदमियों के बीच चल रहा है और अपने सर से पानी निचोड़ रहा है या उसके सर से पानी टपक रहा था। मैने पूछा यह कौन है? लोगों ने कहा, इब्ने मरियम हैं। मैं मुड़कर देखने लगा तो मुझे एक और आदमी नजर आया जो सुर्ख रंग फरबा जिस्म और पेचदार बालों वाला दायीं आंख से काना जैसे उसकी आंख एक फूला हुआ अंगूर है। मैंने कहा यह कौन है? लोगों ने कहा, यह दज्जाल है वो लोगों में इब्ने कत्न काफिर से ज्यादा दूरी रखता था।

फायदेः हजरत अबू हुरैरा रजि. से मरवी रिवायत है कि हजरत ईसा अलैहि॰ सुर्ख रंग के होंगे। मुमकिन है कि हजरत इब्ने उमर रजि. ने

हजरत ईसा अलैहि. के बारे में बायस अल्फाज न सुना हो या वो भूल गये हों। (औनुलबारी 4/154)

1436: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि मैं इब्ने मरियम अलैहि. का सबसे करीब वाला हूँ और तमाम नबी आप में बाप के ऐतबार से भाई हैं। मेरे और ईसा अलैहि. के बीच कोई नबी नहीं है।

١٤٣٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (أَنَا أَوْلَى النَّاسِ بِٱبْنِ مَرْيَمَ، وَالأَنْبِيَاءُ أَوْلاَدُ عَلاَّتٍ، لَيْسَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ نَبِيٌّ). [رواه البخاري: ٣٤٤٢]

फायदे: इक्तदा और पैरवी के लिहाज से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत इब्राहिम अलैहि. के करीब हैं और जमाने के लिहाज से हजरत ईसा अलैहि. से करीब हैं। (औनुलबारी 4/155)

1437: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं दुनिया और आखिरत में सबसे ज्यादा ईसा इब्ने मरियम अलैहि. से करीब वालो में हूँ। तमाम नबी आपस में बाप के ऐतबार से भाई हैं, उनकी मांऐ अलग अलग हैं। मगर दीन सबका एक है।

١٤٣٧ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَنَا أَوْلَى النَّاسِ بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، وَالأَنْبِيَاءُ إِخْوَةٌ لِعَلاَّتٍ، أُمَّهَاتُهُمْ شَتَّى وَدِينُهُمْ وَاحِدٌ). [رواه البخاري: ٣٤٤٣]

फायदे: अकायद और असूल दीन में तमाम अम्बिया किराम मुत्तफिक हैं अलबत्ता फरोआत व मसाईल में अलग अलग हैं। (औनुलबारी 4/156)

1438: अबू हुरैरा रजि. से ही एक और रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप

١٤٣٨ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (رَأَى عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَجُلاً يَسْرِقُ، فَقَالَ لَهُ:

أَسَرَقْتَ؟ قَالَ: كَلَّا وَاللهِ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ، فَقَالَ عِيسَى: آمَنْتُ بِاللهِ، وَكَذَّبْتُ عَيْنِي). [رواه البخاري: ٣٤٤٤]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ईसा अलैहि. ने किसी आदमी को चोरी करते हुए देखा तो उससे पूछा क्या तूने चोरी की है? उसने कहा, नहीं! अल्लाह की कसम जिसके अलावा कोई माबूद बरहक नही है। मैंने ऐसा नहीं किया। ईसा अलैहि. ने फरमाया, मैं अल्लाह पर ईमान लाता हूँ और अपनी आंख को झूटलाता हूँ।

फायदेः चूनांचे चोर ने अल्लाह के नाम की कसम उठाकर अपने चोर न होने का इजहार किया, इसलिए हजरत ईसा अलैहि. ने अल्लाह के नाम की लाज रखते हुए उसे सच्चा समझा और अपनी आंख को झूटा करार दिया। (औनुलबारी 4/158)

١٤٣٩ : عَنْ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (لَا تُطْرُونِي، كَمَا أَطْرَتِ النَّصَارَى ٱبْنَ مَرْيَمَ، فَإِنَّمَا أَنَا عَبْدُهُ، فَقُولُوا: عَبْدُ ٱللهِ وَرَسُولُهُ). [رواه البخاري: ٣٤٤٥]

1439: उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना, मुझे ऐसा न बढ़ाओ जैसे नसारा ने ईसा इब्ने मरीयम अलैहि. को बढ़ाया। क्योंकि मैं तो अल्लाह का बन्दा हूँ बल्कि तुम यूं कहा करो कि अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल है।

फायदेः सूरत जिन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह का बन्दा ही कहा गया है, लेकिन आज नामो निहाद मुसलमानों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में तारीफ करने में इस कद्र ज्यादती की है कि आपको इला होने के मकाम पर पहुंचा दिया है।

١٧ - باب: نُزُولُ عِيسَى ابنِ مَرْيَمَ عَلَيهِمَا السَّلَامُ

बाब 17 : हजरत ईसा अलैहि. का आसमान से उतरना।

१४४٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا نَزَلَ ٱبْنُ مَرْيَمَ فِيكُمْ، وَإِمَامُكُمْ مِنْكُمْ). [رواه البخاري: ٣٤٤٩]

1440: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उस वक्त तुम्हारा क्या हाल होगा जब ईसा इब्ने मरियम अलैहि. तुम में नुजूल होंगे और तुम्हारा इमाम तुम्हारी ही कौम से होगा।

फायदे: नुजूल ईसा अलैहि. कयामत की निशानी में से है, उस वक्त इमाम महदी भी मौजूद होंगे। कुछ लोगों का ख्याल हे कि हजरत ईसा अलैहि. ही महदी (इमाम) होंगे और इब्ने माजा की एक कमजोर रिवायत इसके लिए बतौर दलील पेश की जाती है, बयान की गई हदीस इसकी तरदीद के लिए है। (औनुलबारी 4/161)

١٤٤١ : عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّ مَعَ ٱلدَّجَّالِ إِذَا خَرَجَ مَاءً وَنَارًا، فَأَمَّا ٱلَّذِي يَرَى ٱلنَّاسُ أَنَّهَا ٱلنَّارُ فَمَاءٌ بَارِدٌ، وَأَمَّا ٱلَّذِي يَرَى ٱلنَّاسُ أَنَّهُ مَاءٌ بَارِدٌ فَنَارٌ تُحْرِقُ، فَمَنْ أَدْرَكَ مِنْكُمْ فَلْيَقَعْ فِي ٱلَّذِي يَرَى أَنَّهَا نَارٌ، فَإِنَّهُ عَذْبٌ بَارِدٌ). [رواه البخاري: ٣٤٥٠]

1441: हुजैफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना। जब दज्जाल निकलेगा तो उसके साथ पानी और आग होगी। लेकिन जिसको लोग देखेंगे कि आग है, वो हकीकत में ठण्डा पानी होगा और जिसे लोग ठण्डा पानी समझेंगे वो आग होगी। जो जलावेगी। लिहाजा जो आदमी तुममें से उसे पाये तो उसे चाहिए कि जिसको वो आग मानता है, उसमें कूद जाये। क्योंकि वो तो बहुत ठण्डा और मीठा पानी होगा।

फायदे: दज्जाल के इस जादू से अल्लाह तआला अपने बन्दों का इम्तेहान लेगा। बिलआखिर इस मरदूद की कमजोरी और दरमान्दगी को अल्लाह जाहिर करेगा और उसे बर-सरेआम रूसवा करेगा। (औनुलबारी 4/162)

बाब 18: बनी इस्राईल के हालात व औकात का बयान।

١٨ - باب: مَا ذُكِرَ عَنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ

١٤٤٢ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّ رَجُلًا حَضَرَهُ المَوْتُ، فَلَمَّا يَئِسَ مِنَ الحَيَاةِ أَوْصَى أَهْلَهُ: إِذَا أَنَا مُتُّ فَاجْمَعُوا لِي حَطَبًا كَثِيرًا، وَأَوْقِدُوا فِيهِ نَارًا، حَتَّى إِذَا أَكَلَتْ لَحْمِي وَخَلَصَتْ إِلَى عَظْمِي فَامْتَحَشَتْ، فَخُذُوهَا فَاطْحَنُوهَا، ثُمَّ انْظُرُوا يَوْمًا رَاحًا فَاذْرُوهُ فِي اليَمِّ، فَفَعَلُوا، فَجَمَعَهُ ٱللهُ فَقَالَ لَهُ: لِمَ فَعَلْتَ ذٰلِكَ؟ قَالَ: مِنْ خَشْيَتِكَ، فَغَفَرَ ٱللهُ لَهُ). [رواه البخاري: ٣٤٥٢]

1442: हुजैफा रज़ि० से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना, एक आदमी मरने लगा, जब जिन्दगी से बिल्कुल मायूस हो गया तो उसने अपने घर वालों को वसीयत की कि मैं जब मर जाऊं तो मेरे लिए बहुत सी लकड़ियां जमा करके उनमें आग लगा देना (और मुझे जला देना) और जब आग मेरे गोश्त को खा जाये और मेरी हड्डी तक पहुंच जाये और वो भी जल कर कोयला हो जाये तो उस कोयले को पीसना। फिर किसी तेज हवा वाला दिन देखकर उसे दरिया में बहा देना। चूनांचे उन्होंने ऐसा ही किया। फिर अल्लाह ने उसके टुकड़े जमा करके उससे पूछा तूने ऐसा क्यों किया? उसने कहा कि तेरे डर से। आखिर अल्लाह ने उसे माफ कर दिया।

फायदे: इस हदीस के आखिर में वजाहत है कि बनी इस्राईल का यह आदमी कफन चोर था, उसने अल्लाह से डरते हुए अपने बेटों को इस कार्रवाई की वसीयत की, आखिरकार अल्लाह ने उसे माफ कर दिया।

١٤٤٣ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (كَانَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ تَسُوسُهُمُ الأَنْبِيَاءُ، كُلَّمَا هَلَكَ نَبِيٌّ خَلَفَهُ نَبِيٌّ، وَإِنَّهُ لَا نَبِيَّ

1443: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया

بَعْدِي، وَسَيَكُونُ خُلَفَاءُ فَيَكْثُرُونَ)، قَالُوا: فَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: (فُوا بِبَيْعَةِ الأَوَّلِ فَالأَوَّلِ، أَعْطُوهُمْ حَقَّهُمْ، فَإِنَّ ٱللهَ سَائِلُهُمْ عَمَّا ٱسْتَرْعَاهُمْ). [رواه البخاري: ٣٤٥٥]

कि बनी इस्राईल की हुकूमत हजरात अम्बिया अलैहि. चलाते थे। जब एक नबी की वफात हो चुकी तो उसका जानशीन (गद्‌दी पर बैठने वाला) दूसरा नबी हो जाता था। लेकिन मेरे बाद कोई नबी तो न होगा। अलबत्ता खलीफा होंगे और बहुत ज्यादा होंगे। सहाबा किराम रजि. ने कहा, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमें क्या हुक्म देते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब कोई खलीफा हो जाये तो उसकी बैअत कर लो। फिर उसके बाद जो पहले हो, उसकी बैअत पूरी करो। उन्हें उनका हक दो। अगर वो जुल्म करें तो अल्लाह उनसे पूछेगा कि उन्होंने अपनी जनता का हक कैसे अदा किया?

फायदे: इस दुनिया में मुसलमानों के एक वक्त दो खलीफा नहीं हो सकते, जब एक खलीफा की खलाफत शरई तरीके से मुन्नकिद हो जाये तो वफादारी और जानिसारी उसी से वाबस्ता की जायेगी। सही मुस्लिम में है कि दूसरे को कत्ल कर दिया जाये।

 (औनुलबारी 4/165)

١٤٤٤ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (لَتَتَّبِعُنَّ سُنَنَ مَنْ قَبْلَكُمْ شِبْرًا بِشِبْرٍ، وَذِرَاعًا بِذِرَاعٍ، حَتَّى لَوْ سَلَكُوا جُحْرَ ضَبٍّ لَسَلَكْتُمُوهُ) قُلْنَا يَا رَسُولَ ٱللهِ، اليَهُودَ والنَّصَارَى؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (فَمَنْ؟) [رواه البخاري: ٣٤٥٦]

1444: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यकीनन तुम मुसलमान भी अपने से पहले लोगों की बालिस्त बालिस्त (उंगली) और हाथ हाथ पैरवी करोगे। अगर वो किसी सोसुमार (जानवर) के बिल में दाखिल हुए होंगे तो तुम भी उसमें घूस जाओगे। हमने कहा, ऐ अल्लाह

के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या पहले लोगों से मुराद यहूद व नसारा हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, और कौन हो सकते हैं?

फायदे: अफसोस कि आजकल के मुसलमान इस हदीस के मिस्दाक अन्धा धून यहूद व नसारा की पैरवी करने में फख्र महसूस करते हैं, मुल्की सतह पर भी हमारे यहां अंग्रेज का कानून चल रहा है।

١٤٤٥ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ ٱلنَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ آيَةً، وَحَدِّثُوا عَنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلاَ حَرَجَ، وَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ ٱلنَّارِ). [رواه البخاري: ٣٤٦١]

1445: अब्दुल्लाह बिन अम्र रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मेरी बातें लोगों को पहुंचाओ अगरचे एक ही आयत क्यों न हो। और बनी इस्राईल से जो सुनो, उसे भी बयान करो। इसमें कोई हर्ज नहीं, लेकिन जो आदमी जानबूझकर मुझ पर झूट बांधे तो वो अपना ठिकाना दोजख में तलाश करे।

फायदे: इस्लाम के शुरू में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रिवायात बनी इस्राईल से मना फरमाया था, लेकिन जब इस्लाम की हकीकत दिलों में समा गई तो फिक्स पैमाने पर सिर्फ ऐसी बातें बयान करने की इजाजत दी जो कुरआन और हदीस के खिलाफ न हो।

(औनुलबारी 4/167)

١٤٤٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (إِنَّ ٱلْيَهُودَ وَٱلنَّصَارَى لاَ يَصْبُغُونَ، فَخَالِفُوهُمْ). [رواه البخاري: ٣٤٦٢]

1446: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यहूद व नसारा बालों को खिजाब (रंग) नहीं लगाते। तुम उनकी मुखालफत करो, यानी खिजाब किया करो।

फायदेः यह हदीस सिर्फ दाढ़ी और सर के बालों के बारे में है, क्योंकि कपड़ों और हाथ पांव रंगने ठीक नहीं हैं। फिर काले खिजाब की भी मनाही है। जैसा कि मुस्लिम की रिवायत है। अलबत्ता सफेद बालों का भी कुछ हदीसों से सबूत मिलता है।

١٤٤٧ : عَنْ جُنْدَبِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (كَانَ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ رَجُلٌ بِهِ جُرْحٌ، فَجَزِعَ، فَأَخَذَ سِكِّينًا فَحَزَّ بِهَا يَدَهُ، فَمَا رَقَأَ الدَّمُ حَتَّى مَاتَ، قَالَ ٱللهُ تَعَالَى: بَادَرَنِي عَبْدِي بِنَفْسِهِ، حَرَّمْتُ عَلَيْهِ الجَنَّةَ). [رواه البخاري: ٣٤٦٣]

1447: जुन्दूब बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुमसे पहले एक आदमी था। उसे जख्म लग गया था। उसने बेकरार होकर एक छुरी से अपना हाथ काट डाला। चूनांचे खून बन्द न हुआ और वो मर गया तो अल्लाह ने फरमाया कि मेरे बन्दे ने जान देने में जल्दी बाजी की है। इसलिए मैंने भी जन्नत को उस पर हराम कर दिया है।

फायदेः हमारी जान एक अमानत है जो अल्लाह ने हमारे हवाले की है, इसमें बेजा तसर्रूफ नाजाइज और हराम है, खुदकशी करने वाला भी अपनी जान पर ज्यादती करने वाला होता है। इसलिए सख्त फटकार का सजादार ठहरा। (औनुलबारी 4/170)

١٤٤٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّ ثَلَاثَةً مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ: أَبْرَصَ وَأَقْرَعَ وَأَعْمَى، بَدَا لِلهِ تعالى أَنْ يَبْتَلِيَهُمْ، فَبَعَثَ إِلَيْهِمْ مَلَكًا، فَأَتَى الأَبْرَصَ فَقَالَ: أَيُّ شَيْءٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: لَوْنٌ حَسَنٌ، وَجِلْدٌ حَسَنٌ، قَدْ قَذِرَنِي النَّاسُ، قَالَ:

1448: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि बनी इस्राईल में तीन आदमी थे। एक कोढ़ी, एक अन्धा और एक गंजा। अल्लाह ने उन तीनों को आजमाना चाहा। चूनांचे उनकी तरफ एक फरिश्ता भेजा जो

فَمَسَحَهُ فَذَهَبَ عَنْهُ فَأُعْطِيَ لَوْنًا حَسَنًا، وَجِلْدًا حَسَنًا، فَقَالَ: أَيُّ الْمَالِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: الإِبِلُ فَأُعْطِيَ نَاقَةً عُشَرَاءَ، فَقَالَ: يُبَارَكُ لَكَ فِيهَا، وَأَتَى الأَقْرَعَ فَقَالَ: أَيُّ شَيْءٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: شَعَرٌ حَسَنٌ، وَيَذْهَبُ عَنِّي هٰذَا، قَدْ قَذِرَنِي النَّاسُ، قَالَ: فَمَسَحَهُ فَذَهَبَ، وَأُعْطِيَ شَعَرًا حَسَنًا، قَالَ: فَأَيُّ الْمَالِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: الْبَقَرُ، قَالَ: فَأَعْطَاهُ بَقَرَةً حَامِلًا، وَقَالَ: يُبَارَكُ لَكَ فِيهَا، وَأَتَى الأَعْمَى فَقَالَ: أَيُّ شَيْءٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ يَرُدُّ اللهُ إِلَيَّ بَصَرِي، فَأُبْصِرُ بِهِ النَّاسَ، قَالَ: فَمَسَحَهُ فَرَدَّ اللهُ إِلَيْهِ بَصَرَهُ، قَالَ: فَأَيُّ الْمَالِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: الْغَنَمُ، فَأَعْطَاهُ شَاةً وَالِدًا، فَأُنْتِجَ هٰذَانِ وَوَلَّدَ هٰذَا، فَكَانَ لِهٰذَا وَادٍ مِنْ إِبِلٍ، وَلِهٰذَا وَادٍ مِنْ بَقَرٍ، وَلِهٰذَا وَادٍ مِنَ الْغَنَمِ، ثُمَّ إِنَّهُ أَتَى الأَبْرَصَ فِي صُورَتِهِ وَهَيْئَتِهِ، فَقَالَ: رَجُلٌ مِسْكِينٌ، تَقَطَّعَتْ بِيَ الْحِبَالُ فِي سَفَرِي، فَلاَ بَلاَغَ الْيَوْمَ إِلاَّ بِاللهِ ثُمَّ بِكَ، أَسْأَلُكَ بِالَّذِي أَعْطَاكَ اللَّوْنَ الْحَسَنَ وَالْجِلْدَ الْحَسَنَ وَالْمَالَ، بَعِيرًا أَتَبَلَّغُ عَلَيْهِ فِي سَفَرِي. فَقَالَ لَهُ: إِنَّ الْحُقُوقَ كَثِيرَةٌ، فَقَالَ لَهُ: كَأَنِّي أَعْرِفُكَ، أَلَمْ

पहले कोढ़ी के पास आया और कहने लगा कि तुझे क्या चीज प्यारी है? उसने कहा कि अच्छा रंग और खूबसूरत खाल, क्योंकि लोग मुझसे नफरत व दूरी रखते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि फरिश्ते ने उस पर हाथ फैरा तो उसकी बीमारी जाती रही और उसे अच्छा रंग और खूबसूरत खाल मिल गई। फिर फरिश्ते ने कहा, तुझे कौनसा माल ज्यादा पसन्द है? उसने कहा, ऊंट। लिहाजा उसे हामिला ऊंटनी दे दी गई। फरिश्ते ने कहा, तुझे इसमें बरकत दी जायेगी। फिर फरिश्ता गंजे के पास गया और उससे कहा तू क्या चाहता है? उसने कहा, अच्छे बाल हों और यह गंजापन जाता रहे, क्योंकि लोग मुझ से नफरत करते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि फरिश्ते ने उस पर भी हाथ फैरा। उसका गंजापन जाता रहा और बेहतरीन बाल निकल आये। फिर फरिश्ते ने कहा कि तुझे कौनसा माल ज्यादा पसन्द है। वो कहने लगा, गाय, बैल! चूनांचे फरिश्ते ने उसे एक हामिला गाये दे कर कहा कि तुझे इसमें बरकत दी जायेगी। इसके बाद वो फरिश्ता अंधे के पास गया और उससे

تَكُنْ أَبْرَصَ يَقْذَرُكَ النَّاسُ فَقِيرًا فَأَعْطَاكَ ٱللهُ؟ فَقَالَ: لَقَدْ وَرِثْتُ لِكَابِرٍ عَنْ كَابِرٍ، فَقَالَ: إِنْ كُنْتَ كَاذِبًا فَصَيَّرَكَ ٱللهُ إِلَى مَا كُنْتَ، وَأَتَى الأَقْرَعَ فِي صُورَتِهِ وَهَيْئَتِهِ، فَقَالَ لَهُ مِثْلَ مَا قَالَ لِهٰذَا، فَرَدَّ عَلَيْهِ مِثْلَ مَا رَدَّ عَلَيْهِ هٰذَا، فَقَالَ: إِنْ كُنْتَ كَاذِبًا فَصَيَّرَكَ ٱللهُ إِلَى مَا كُنْتَ، وَأَتَى الأَعْمَى فِي صُورَتِهِ، فَقَالَ: رَجُلٌ مِسْكِينٌ وَٱبْنُ سَبِيلٍ، وَتَقَطَّعَتْ بِيَ ٱلْحِبَالُ فِي سَفَرِي، فَلاَ بَلاَغَ الْيَوْمَ إِلاَّ بِٱللهِ ثُمَّ بِكَ، أَسْأَلُكَ بِالَّذِي رَدَّ عَلَيْكَ بَصَرَكَ شَاةً أَتَبَلَّغُ بِهَا فِي سَفَرِي، فَقَالَ: قَدْ كُنْتُ أَعْمَى فَرَدَّ ٱللهُ بَصَرِي، وَفَقِيرًا فَقَدْ أَغْنَانِي، فَخُذْ مَا شِئْتَ، فَوَٱللهِ لاَ أَجْهَدُكَ الْيَوْمَ بِشَيْءٍ أَخَذْتَهُ لِلهِ، فَقَالَ: أَمْسِكْ مَالَكَ، فَإِنَّمَا ٱبْتُلِيتُمْ، فَقَدْ رَضِيَ ٱللهُ عَنْكَ، وَسَخِطَ عَلَى صَاحِبَيْكَ). [رواه البخاري: ٣٤٦٤]

पूछा कि तुझे कौनसी चीज ज्यादा पसन्द है? उसने कहा कि अल्लाह तआला मेरी आंखों की रोशनी मुझे वापस दे दे ताकि मैं उसके जरीये लोगों को देखूं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, फिर फरिश्ते ने उस पर हाथ फैरा तो अल्लाह ने उसकी आंखों की रोशनी वापस कर दी। अब यह पूछा कि तूझे कौनसा माल ज्यादा पसन्द है। वो बोला, बकरियां। फरिश्ते ने उसे एक हामिला बकरी दे दी। चूनांचे उन दोनों की ऊंटनी और गाय बच्चे जन्ने लगे और उसकी बकरी भी। फिर तो उस कोढ़ी के पास जंगल भर ऊंट हो गये और गंजे के पास जंगल भर गायें और अन्धे के पास जंगल भर बकरियां। इसके बाद वही फरिश्ता इन्सानी शक्लो सूरत में कोढ़ी के पास गया और कहा, मैं एक गरीब हूँ, सफर में सामान वगैरह खत्म हो गया है और मैं अल्लाह की मदद और तेरी इनायत के बगैर अपने ठिकाने पर नहीं पहुंच सकता हूँ। लिहाजा मैं तुझ से उस अल्लाह के नाम पर सवाल करता हूँ, जिसने तुझे अच्छा रंग, अच्छी खाल और अच्छा माल दिया है। मुझे एक ऊंट दे दे ताकि मैं इस पर सवार होकर सफर कर सकूं। कोढ़ी ने कहा, मुझ पर और बहुत से हक हैं। फरिश्ते ने कहा, जैसे मैं तुझे पहचानता हूँ, तू कोढ़ी था। सब लोग तुझसे नफरत करते थे और तू मोहताज भी था। अल्लाह ने तुझे सब कुछ दे दिया। उसने कहा, वाह! मैं तो बुजुर्गों के

वक्त से मालदार चला आ रहा हूँ। फरिश्ते ने कहा, अगर तू झूठ बोलता है तो अल्लाह तुझे फिर वैसा ही कर दे, जैसा पहले था। फिर वही फरिश्ता उसी शक्लो सूरत में गंजे के पास गया। उससे भी वही कहा जो कोढ़ी से कहा था। गंजे ने भी वैसा ही जवाब दिया, जैसा कोढ़ी ने दिया था। फरिश्ते ने कहा, अगर तू झूठ बोलता है तो अल्लाह तुझे वैसा ही कर दे, जैसा तू पहले था। बाद में वो फरिश्ता उस सूरत व हाल में अंधे के पास गया और उससे कहा कि मैं एक मुसाफिर हूँ और सफर के दौरान खाना पीना खत्म हो गया है। लिहाजा अब मैं अल्लाह की मदद और तेरे तवज्जुह के बगैर अपने वतन नहीं पहुंच सकता हूँ। मुझे उस अल्लाह के नाम पर एक बकरी दे दे, जिसने तेरी आंखें दोबारा रोशन की। ताकि मैं उसके जरीए अपना सफर तय कर सकूं। अंधे ने कहा, बेशक मैं अंधा था। अल्लाह ने मुझे आंखों की रोशनी दी, मैं मोहताज था, अल्लाह ने मुझे मालदार कर दिया। लिहाजा जो तू चाहे ले ले, अल्लाह की कसम! आज जो जरूरत वाली चीज भी अल्लाह के नाम पर लेगा। तेरे ऊपर कोई तंगी न होगी। फरिश्ते ने कहा, बस तू अपना माल अपने पास ही रहने दे। सिर्फ तुम लोगों का इम्तेहान लिया गया था। पस अल्लाह तुझ से राजी हो गया और तेरे दोनों साथियों से नाराज हुआ।

फायदे: इस हदीस से मालूम हुआ कि इन्सान को नैमत के इनकार करने से परहेज करना चाहिए क्योंकि इसका अंजाम नैमत का भी जाना है। लिहाजा हमें अल्लाह की नैमतों का ऐतराफ फिर उनका शुक्र बजा लाते रहना चाहिए, क्योंकि इस तरह खैरो बरकत में इजाफा होता है।

(औनुलबारी 4/167)

1449: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

١٤٤٩ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ ٱللّٰهُ عَنْهُ عَنِ ٱلنَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (كَانَ فِي

بَنِي إِسْرَائِيلَ رَجُلٌ قَتَلَ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ إِنْسَانًا، ثُمَّ خَرَجَ يَسْأَلُ، فَأَتَى رَاهِبًا فَسَأَلَهُ فَقَالَ لَهُ: هَلْ مِنْ تَوْبَةٍ؟ قَالَ: لاَ، فَقَتَلَهُ، فَجَعَلَ يَسْأَلُ، فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: ائْتِ قَرْيَةَ كَذَا وَكَذَا، فَأَدْرَكَهُ الْمَوْتُ، فَنَاءَ بِصَدْرِهِ نَحْوَهَا، فَاخْتَصَمَتْ فِيهِ مَلاَئِكَةُ الرَّحْمَةِ وَمَلاَئِكَةُ الْعَذَابِ، فَأَوْحَى ٱللهُ إِلَى هٰذِهِ أَنْ تَقَرَّبِي، وَأَوْحَى ٱللهُ إِلَى هٰذِهِ أَنْ تَبَاعَدِي، وَقَالَ: قِيسُوا مَا بَيْنَهُمَا، فَوُجِدَ إِلَى هٰذِهِ أَقْرَبَ بِشِبْرٍ، فَغُفِرَ لَهُ). [رواه البخاري: ٣٤٧٠]

से बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, बनी इस्राईल का एक आदमी था, जिसने निन्यानवें आदमी कत्ल किये थे। फिर वो मसला पूछने निकला तो पहले एक दरवेश के पास गया और उससे कहा, मेरी तौबा कबूल हो सकती है? दरवेश ने कहा, नहीं! फिर उस आदमी ने दरवेश को भी कत्ल कर दिया। फिर मसला पूछने चला तो उससे किसी ने कहा कि तू फलां बस्ती में जा। लेकिन रास्ते में ही उसे मौत आ गई और मरते वक्त उसने अपना सीना उस बस्ती की तरफ कर दिया। अब उसके बारे में रहमत और अजाब के फरिश्ते झगड़ने लगे। अल्लाह ने उस बस्ती को हुक्म दिया कि उस आदमी के करीब हो जा और उस बस्ती को जहां से वो निकला था, यह हुक्म दिया कि उससे दूर हो जा। फिर फरिश्तों से फरमाया कि तुम उन दोनों बस्तियों के बीच का फासला नाप लो। तो वो उस बस्ती से बालिस्त भर करीब निकला। जहां तौबा करने जा रहा था, उस बिना पर उसे माफ कर दिया गया।

फायदेः इस हदीस से मालूम हुआ कि बेकार में किया गया कत्ल भी तोबा से माफ हो सकता है और अल्लाह हकदारों को खुद अपनी तरफ से अच्छा बदला देकर उन्हें राजी कर देगा। तमाम औलमा का इस पर इत्तेफाक है। (औनुलबारी 4/177)

١٤٥٠ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (اشْتَرَى

1450: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि

رَجُلٌ مِنْ رَجُلٍ عَقَارًا لَهُ، فَوَجَدَ الرَّجُلُ الَّذِي اشْتَرَى الْعَقَارَ فِي عَقَارِهِ جَرَّةً فِيهَا ذَهَبٌ، فَقَالَ لَهُ الَّذِي اشْتَرَى الْعَقَارَ: خُذْ ذَهَبَكَ مِنِّي، إِنَّمَا اشْتَرَيْتُ مِنْكَ الأَرْضَ، وَلَمْ أَبْتَعْ مِنْكَ الذَّهَبَ، وَقَالَ الَّذِي لَهُ الأَرْضُ: إِنَّمَا بِعْتُكَ الأَرْضَ وَمَا فِيهَا، فَتَحَاكَمَا إِلَى رَجُلٍ، فَقَالَ الَّذِي تَحَاكَمَا إِلَيْهِ: أَلَكُمَا وَلَدٌ؟ قَالَ أَحَدُهُمَا: لِي غُلَامٌ، وَقَالَ الآخَرُ: لِي جَارِيَةٌ، قَالَ: أَنْكِحُوا الْغُلَامَ الْجَارِيَةَ، وَأَنْفِقُوا عَلَى أَنْفُسِهِمَا مِنْهُ وَتَصَدَّقَا). [رواه البخاري: ٣٤٧٢]

वसल्लम ने फरमाया, पहले जमाने में एक आदमी ने दूसरे आदमी से जमीन खरीदी थी। जिसने जमीन खरीदी थी, उसने जमीन में एक घड़ा पाया। जो सोने से भरा हुआ था तो उसने बेचने वाले से कहा कि तुम अपना सोना मुझ से ले लो। क्योंकि मैंने तुझ से सिर्फ जमीन खरीदी थी, सोना नहीं खरीदा था। जमीन के मालिक ने कहा, मैंने जमीन और जो कुछ उसमें था, सब तुझे बेच दिया था। आखिर दोनों झगड़ते झगड़ते एक आदमी के पास गये। जिसके पास मुकदमा लेकर गये थे, उसने पूछा तुम दोनों की औलाद है? उन दोनों में से एक ने कहा, मेरा एक लड़का है, दूसरे ने कहा, मेरे एक लड़की है। तो उसने यूं फैसला किया कि उस लड़के का निकाह लड़की से कर दो और उस माल को उन दोनों पर खर्च करो और कुछ खैरात भी करो।

फायदे: हमारे इस्लामी कानून में ऐसे माल के बारे में यह तफसील है कि अगर किसी तरीके से मालूम हो जाये कि जाहिलियत के दौर का दबा हुआ खजाना है तो निकाज (दबा हुआ खजाना) है। अगर इस्लाम के दौर का है तो लुक्त (गिरी पड़ी चीज) के हुक्म में होगा। अगर पता न चल सके तो उसे बैतुलमाल में जमा कर दिया जाये जो मुसलमानों की दूसरी जरूरतों में खर्च किया जाये। (औनुलबारी 4/181)

١٤٥١ : عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: قِيلَ لَهُ: مَاذَا سَمِعْتَ

1451: उसामा बिन जैद रजि. से रिवायत है, उनसे पूछा गया कि आपने

مِنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فِي الطَّاعُونِ؟ فَقَالَ أُسَامَةُ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (الطَّاعُونُ رِجْسٌ، أُرْسِلَ عَلَى طَائِفَةٍ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ، أَوْ: عَلَى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، فَإِذَا سَمِعْتُمْ بِهِ بِأَرْضٍ فَلَا تَقْدَمُوا عَلَيْهِ، وَإِذَا وَقَعَ بِأَرْضٍ وَأَنْتُمْ بِهَا فَلَا تَخْرُجُوا فِرَارًا مِنْهُ). [رواه البخاري: ٣٤٧٣]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ताऊन (बीमारी) के बारे में क्या सुना है? उसामा रजि. ने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि ताऊन एक अजाब है जो बनी इस्राईल के एक गिरोह पर भेजा गया था। या यूं फरमाया कि उन लोगों पर भेजा गया था जो तुम से पहले थे। लिहाजा जब तुम सुनो कि किसी मुल्क में ताऊन फैला है तो वहां मत जाओ और जब उस मुल्क में फैले जहां तुम रहते हो तो भागने की नियत से वहां मत निकलो।

फायदे: जिस जगह ताऊन फैली हो, वहां से तिजारत के कारण, इल्म हासिल करने और जिहाद वगैरह के लिए निकलना जाईज है।

(औनुलबारी 4/182)

١٤٥٢ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا، زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: سَأَلْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ عَنِ الطَّاعُونِ، فَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ: (عَذَابٌ يَبْعَثُهُ ٱللهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ، وَأَنَّ ٱللهَ جَعَلَهُ رَحْمَةً لِلْمُؤْمِنِينَ، لَيْسَ مِنْ أَحَدٍ يَقَعُ الطَّاعُونُ، فَيَمْكُثُ فِي بَلَدِهِ صَابِرًا مُحْتَسِبًا، يَعْلَمُ أَنَّهُ لَا يُصِيبُهُ إِلَّا مَا كَتَبَ ٱللهُ لَهُ، إِلَّا كَانَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِ شَهِيدٍ). [رواه البخاري: ٣٤٧٤]

1452: उम्मे मौमिनीन आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ताऊन के बारे में पूछा तो आपने मुझ से बयान किया कि वो एक अजाब है। अल्लाह जिन पर चाहता है, उसे भेजता है और मुसलमानों के लिए अल्लाह ने उसे रहमत बना दिया है। जब कहीं ताऊन फैले तो जो भी मुसलमान अपने उस शहर में सब्र करके सवाब की गर्ज से ठहरे। नीज इसका यह ऐतकाद हो कि अल्लाह ने जो मुसीबत किस्मत में लिख दी है, वही पेश आयेगी तो उसे शहीद का सवाब मिलेगा।

फायदेः ताऊन से मरना शहादत जैसा है। ताऊन में सवाब की नियत से वहां ठहरना भी बरकत का बाअस है। इस हदीस में ऐसे आदमी को शहादत की खुशखबरी दी गई है अगरचे जमाना ताऊन के बाद किसी और बीमारी की वजह से मर जाये। (4/183)

١٤٥٣ : عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَحْكِي نَبِيًّا مِنَ الأَنْبِيَاءِ، ضَرَبَهُ قَوْمُهُ فَأَدْمَوْهُ، وَهُوَ يَمْسَحُ الدَّمَ عَنْ وَجْهِهِ وَيَقُولُ: (اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِي فَإِنَّهُمْ لاَ يَعْلَمُونَ). [رواه البخاري: ٣٤٧٧]

1453: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया, जैसे मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख रहा हूँ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबियों में से एक नबी का हाल बयान कर रहे हैं। उन्हें एक कौम ने इतना मारा कि लहूलुहान कर दिया। मगर वो अपने चेहरे से खून साफ करते और कहते जाते थे कि ऐ अल्लाह! मेरी कौम को बख्श दे, क्योंकि वो नहीं जानते।

फायदेः मालूम हुआ कि दावत व तबलीग पर गालियां सुनना और मारें खाना अम्बिया अलैहि. की सुन्नत है।

١٤٥٤ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (بَيْنَمَا رَجُلٌ يَجُرُّ إِزَارَهُ مِنَ الخُيَلاَءِ خُسِفَ بِهِ، فَهُوَ يَتَجَلْجَلُ فِي الأَرْضِ إِلَى يَوْمِ القِيَامَةِ). [رواه البخاري: ٣٤٨٥]

1454: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि एक आदमी अपनी इजार को घमण्ड से लटकाता हुआ जा रहा था तो उसे जमीन में धंसा दिया गया और वो कयामत तक जमीन में धंसता ही चला जायेगा।

फायदेः मुस्लिम की रिवायत में है कि वो आदमी पहले लोगों यानी बनी इस्राईल से था। कुछ मुहद्दसीन ने उस सजा को कारून (बादशाह का नाम) से वाबस्ता किया है। (औनुलबारी 4/158)

١٩ - باب: المَنَاقِبُ

बाब 19. फजाईल का बयान।

١٤٥٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (تَجِدُونَ النَّاسَ مَعَادِنَ، خِيَارُهُمْ فِي الجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الإِسْلَامِ إِذَا فَقِهُوا، وَتَجِدُونَ خَيْرَ النَّاسِ فِي هٰذَا الشَّأْنِ أَشَدَّهُمْ لَهُ كَرَاهِيَةً، وَتَجِدُونَ شَرَّ النَّاسِ ذَا الوَجْهَيْنِ، الَّذِي يَأْتِي هٰؤُلَاءِ بِوَجْهٍ، وَيَأْتِي هٰؤُلَاءِ بِوَجْهٍ). [رواه البخاري: ٣٤٩٣، ٣٤٩٤]

1455: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम लोगों को कानों (खजानों) की तरह पाओगे जो उनमें से जाहिलियत के जमाने में अच्छे थे। वो इस्लाम में भी अच्छे और शरीफ हैं, बशर्तेकि वो दीन का इल्म हासिल करे और तुम हुकूमत के लायक उस आदमी को पाओगे जो उसे बहुत नापसन्द करता हो और लोगों में से बदतरीन वो आदमी है जो दोरूखा इख्तेयार किए हुए है। वो उन लोगों के पास एक मुंह से आता है और दूसरे लोगों में दूसरा मुंह लेकर आता है।

फायदे: खानदानी शराफत, इल्म के बगैर इज्जत व अहतराम के लायक नहीं। असल शराफत तो दीन का इल्म हासिल करने से मिलती है। फिर दीनी मामलों में कयास करना जिहालत है।

١٤٥٦ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: (النَّاسُ تَبَعٌ لِقُرَيْشٍ فِي هٰذَا الشَّأْنِ، مُسْلِمُهُمْ تَبَعٌ لِمُسْلِمِهِمْ، وَكَافِرُهُمْ تَبَعٌ لِكَافِرِهِمْ، وَالنَّاسُ مَعَادِنُ، خِيَارُهُمْ فِي الجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الإِسْلَامِ إِذَا فَقِهُوا، تَجِدُونَ مِنْ خَيْرِ النَّاسِ أَشَدَّهُمْ كَرَاهِيَةً لِهٰذَا الشَّأْنِ حَتَّى يَقَعَ فِيهِ). [رواه البخاري: ٣٤٩٥، ٣٤٩٦]

1456: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, लोग इमामत व खिलाफत में कुरैश के ताबेअ थे। उनका मुसलमान उनके मुसलमान के और उनका काफिर उनके काफिर के ताबेअ फरमां है। लोगों का हाल तो कानों की तरह है जो जाहिलियत के जमाने में बेहतर थे, वो इस्लाम के जमाने में भी बेहतर है।

बशर्ते की दीन का इल्म हासिल करें और तुम हुकूमत के सिलसिले में जो उसे बहुत नापसन्द करता हो, यहां तक कि उसको हुकूमत मिल जाये। सबसे बेहतर पाओगे।

फायदे: जब हुकूमत की चाह न रखने वाले को इमामत का ओहदा सौंप दिया जाये तो अल्लाह की मदद उसके शामिले हाल होती है। फिर मुसलमानों की फलाह व बहबूद के पेशे नजर उसके दिल से मनसब की कराहत (नापसन्दीदगी) भी दूर कर दी जाती है। (औनुबारी 4/189)

---

٢٠ - باب: مَنَاقِبُ قُرَيْشٍ

बाब 20: कुरैश के फजाईल का बयान।

١٤٥٧ : عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، وَقَدْ بَلَغَهُ: أَنَّ عَبْدَ ٱللهِ بْنَ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا، يُحَدِّثُ: أَنَّهُ سَيَكُونُ مَلِكٌ مِنْ قَحْطَانَ، فَغَضِبَ مُعَاوِيَةُ، فَقَامَ فَأَثْنَى عَلَى ٱللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ، ثُمَّ قَالَ: أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّهُ بَلَغَنِي أَنَّ رِجالًا مِنْكُمْ يَتَحَدَّثُونَ أَحادِيثَ لَيْسَتْ فِي كِتَابِ ٱللهِ تَعَالَى، وَلاَ تُؤْثَرُ عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَأُولَٰئِكَ جُهَّالُكُمْ، فَإِيَّاكُمْ وَالأَمَانِيَّ الَّتِي تُضِلُّ أَهْلَهَا، فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (إِنَّ هٰذَا الأَمْرَ فِي قُرَيْشٍ، لا يُعَادِيهِمْ أَحَدٌ إِلاَّ أَكَبَّهُ ٱللهُ عَلَى وَجْهِهِ، ما أَقَامُوا ٱلدِّينَ) [رواه البخاري: ٣٥٠٠]

1457: मआविया रजि. से रिवायत है, जब उनको यह खबर पहुंची कि अब्दुल्लाह बिन आस रजि. यह बयान करते हैं कि अनकरीब अरब का बादशाह कोहतानी होगा। मआविया रजि. यह सुनकर गुस्से में आये और खड़े हो गये। फिर अल्लाह की ऐसी तारीफ की जो उसको मुनासिब है बाद में कहा, मुझे यह खबर मिली है कि तुम से कुछ लोग ऐसी बातें करते हैं जो न तो किताबुल्लाह (कुरआन) में है और न ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित है। खबरदार! यह जाहिल लोग हैं, ऐसी आरजूं से बचो जो साहबे आरजूं को गुमराह करती हैं। उनसे दूरी करो और उनके ख्यालात से परहेज करो। जिन ख्यालात ने उन लोगों को गुमराह कर दिया है। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते थे कि खलाफत और सरदारी कुरैश में रहेगी, जो आदमी उनसे दुश्मनी करेगा, अल्लाह उसके सर को झुका देगा और जलील कर देगा जब तक कि वो उस शरीअत को कायम रखेंगे।

फायदेः कुरैश की सरदारी को दीन के अकामत के लिए शर्त लगाई गई है। चूनांचे जब कुरैश ने इस तरह की पाबन्दी न की तो उनकी खिलाफत भी जाती रही। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद छः सदियों तक कुरैशी हुक्मरान रहे। (औनुलबारी 4/191)

1458: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कुरैश, अनसार, जुहईना, मुजैना, असलम और गिफार के लोग मेरे दोस्त है और उनका दोस्त अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिवाय कोई नहीं।

١٤٥٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (قُرَيْشٌ، وَالأَنْصَارُ، وَجُهَيْنَةُ، وَمُزَيْنَةُ، وَأَسْلَمُ، وَأَشْجَعُ، وَغِفَارُ، مَوَالِيَّ، لَيْسَ لَهُمْ مَوْلًى دُونَ ٱللهِ وَرَسُولِهِ). [رواه البخاري: ٣٥٠٤]

1459: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि यह खिलाफत कुरैश में बाकी रहेगी, जब तक उनमें दो आदमी भी दीनदार रहेंगे।

١٤٥٩ : عَنِ ٱبْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لاَ يَزَالُ هٰذَا الأَمْرُ فِي قُرَيْشٍ ما بَقِيَ مِنْهُمُ ٱثْنَانِ). [رواه البخاري: ٣٥٠١]

फायदेः आजकल कुरैश हुक्मरान नहीं हैं। अलबत्ता उनके हक के बारे में किसी को भी इनकार नहीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी वाक्ये की खबर नहीं दी। बल्कि हुक्म फरमाया कि उनमें हुकूमत रहनी चाहिए। (औनुलबारी 4/193)

١٤٦٠ : عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: مَشَيْتُ أَنَا وَعُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَعْطَيْتَ بَنِي ٱلْمُطَّلِبِ وَتَرَكْتَنَا، وَإِنَّمَا نَحْنُ وَهُمْ مِنْكَ بِمَنْزِلَةٍ وَاحِدَةٍ؟ فَقَالَ ٱلنَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّمَا بَنُو هَاشِمٍ وَبَنُو ٱلْمُطَّلِبِ شَيْءٌ وَاحِدٌ). [رواه البخاري: ٣٥٠٢]

1460 : जुबैरीन मुतईम रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैं और उस्मान रजि. दोनों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गये। उस्मान रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपने बनी मुतल्लिब को माल दिया और हमें नजरअन्दाज कर दिया। हालांकि हम और वो आपके नजदीक बराबर हैं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सिर्फ बनू हाशिम और बनू मुतल्लिब एक हैं।

फायदे: हजरत जुबैर बनू नौफल और हजरत उस्मान बनू अब्द शमस से थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम माले खुमूस से रिश्तेदारी का हिस्सा बनू हाशिम और बनू मुतल्लिब को देते थे। हालांकि बनू नोफल बनू अब्द शमस, बनू हाशिम और बनू मुतल्लिब का जद्दे आला (दादा) अब्द मुनाफ है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि बनू हाशिम और बनू मुतल्लिब तो जाहिलियत के दौर और इस्लाम के दौर में एक चीज की तरह रहे हैं। अलबत्ता बनू नोफल और बनू अब्द शमस उनसे अलग हो गये थे। इसलिए वो रिश्तेदारी का हिस्सा लेने के हकदार नहीं हैं।

बाब 21:

٢١ - باب

١٤٦١ : عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ سَمِعَ ٱلنَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: (لَيْسَ مِنْ رَجُلٍ ٱدَّعَى لِغَيْرِ أَبِيهِ - وَهُوَ يَعْلَمُهُ - إِلَّا كَفَرَ، وَمَنِ ٱدَّعَى قَوْمًا لَيْسَ لَهُ فِيهِمْ نَسَبٌ فَلْيَتَبَوَّأْ

1461: अबू जर रजि. से रिवायत है, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना जो आदमी दानिस्ता तौर पर अपने आपको हकीकी बात के अलावा किसी और तरफ मनसूब

مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ﴾. [رواه البخاري: ٣٥٠٨]

करे तो वो कुफ्र करता है और जो आदमी ऐसी कौम में से होने का दावा करे जिसमें उसका कोई रिश्ता न हो तो वो अपना ठिकाना दोजख में तलाश करे।

फायदेः इस हदीस से मालूम हुआ कि किसी ऐसी चीज का दावा करना हराम है जो उसकी न हो। चाहे इसका ताल्लुक माल व मुताअ से हो या इल्म व फजल से या हस्ब व नस्ब (खानदान) से। कुछ लोग अपनी कौम के अलावा किसी दूसरी कौम की तरफ अपने आपको मनसूब करते हैं, वो भी इस फटकार के हुक्म में आते हैं।

١٤٦٢ : عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الأَسْقَعِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (إِنَّ مِنْ أَعْظَمِ الْفِرَى أَنْ يَدَّعِيَ الرَّجُلُ إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ، أَوْ يُرِيَ عَيْنَهُ ما لَمْ تَرَهُ، أَوْ يَقُولَ عَلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ ما لَمْ يَقُلْ) [رواه البخاري: ٣٥٠٩]

1462: वाशिला बिन असकअ रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, बड़ा इल्जाम यह है कि आदमी अपने बाप के अलावा किसी और को अपना बाप कहे या अपनी आंख की तरफ ऐसी बात मनसूब करे जो उसने नहीं देखी। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ऐसी बात लगाये जो आपने नहीं फरमाई है।

फायदेः इस हदीस में झूटा ख्वाब बयान करने को बड़ा गुनाह करार दिया गया है। क्योंकि ख्वाब नबूत का छियालिसवें हिस्से है। इसलिए झूटा ख्वाब बयान करना अल्लाह पर झूट बांधने जैसा ही है।

 (औनुलबारी 4/197)

---

٢٢ - باب: ذِكْرُ أَسْلَمَ وغِفَارَ وَمُزَيْنَةَ وَجُهَيْنَةَ وأَشْجَعَ

बाब 22 : असलम, गिफार, मुजैना, जुहैना और अशजाअ कबीलों का बयान

١٤٦٣ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا : أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ عَلَى الْمِنْبَرِ : (غِفَارُ غَفَرَ ٱللهُ لَهَا، وَأَسْلَمُ سَالَمَهَا ٱللهُ، وَعُصَيَّةُ عَصَتِ ٱللهَ وَرَسُولَهُ). [رواه البخاري: ٣٥١٣]

1463: इब्ने उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मिम्बर पर फरमाया कि कबीला गिफार को अल्लाह बख्शे और कबीला असलम को अल्लाह सलामत रखे। मगर कबीला उसैया ने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाफरमानी की है।

फायदे: कबीला गिफार हाजियों का सामान चुराया करता था। उनके इस्लाम लाने की वजह से अल्लाह ने उन्हें माफ कर दिया और कबीला उसैया ने वादा खिलाफी का ऐरतकाब किया और बिरे मउना में कारी सहाबा को शहीद कर डाला था। (औनुलबारी, 4/197)

١٤٦٤ : عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ : أَنَّ الأَقْرَعَ بْنَ حَابِسٍ قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ : إِنَّمَا تَابَعَكَ سُرَّاقُ الْحَجِيجِ، مِنْ أَسْلَمَ وَغِفَارَ وَمُزَيْنَةَ - وَأَحْسِبُهُ - وَجُهَيْنَةَ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : (أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ أَسْلَمُ وَغِفَارُ وَمُزَيْنَةُ وَجُهَيْنَةُ، خَيْرًا مِنْ بَنِي تَمِيمٍ، وَبَنِي عَامِرٍ، وَأَسَدٍ، وَغَطَفَانَ، خَابُوا وَخَسِرُوا؟) قَالَ : نَعَمْ، قَالَ : (وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّهُمْ لَخَيْرٌ مِنْهُمْ). [رواه البخاري: ٣٥١٦]

1464: अबू बकरा रजि. से रिवायत है कि अकरा बिन हाबिस रजि. ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा। आपसे उन लोगों ने बैअत की है जो हाजियों का माले असबाब चुराया करते थे, यानी असलम, गिफार और मुजैना के लोग। मैं समझता हूं कि उसने जुहैना का भी जिक्र किया। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, बता अगर असलम, गिफार, मुजैना और जुहैना यह सब बनू तमीम, बनू आमिर और गतफान से बेहतर हो तो वो नाकाम और बर्बाद हुए। अकरअ बोला, हां। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कसम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है, यह उनसे कहीं बेहतर हैं।

फायदेः असलम, गिफार, मुजैना और जुहैया पहले इस्लाम लाये और उनके अख्लाक व आदतें भी अच्छे थे। इसलिए वो दूसरे कबीलो से बेहतर और अफजल करार पाये। (औनुलबारी 4/198)

1465: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, असलम और गिफार और कुछ लोग मुजैना और जुहैना के या यूं फरमाया कि कुछ लोग जुहैना या मुजैना के अल्लाह के यहाँ या यूं फरमाया कयामत के दिन कबीला असद, तमीम, हवाजिन और गतफान से बेहतर होंगे।

١٤٦٥ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (أَسْلَمُ وَغِفَارُ وَشَيْءٌ مِنْ مُزَيْنَةَ وَجُهَيْنَةَ، أَوْ قَالَ: شَيْءٌ مِنْ جُهَيْنَةَ أَوْ مُزَيْنَةَ خَيْرٌ عِنْدَ ٱللهِ - أَوْ قَالَ: يَوْمَ الْقِيَامَةِ - مِنْ أَسَدٍ، وَتَمِيمٍ، وَهَوَازِنَ وَغَطَفَانَ). [رواه البخاري: ٣٥٢٣]

फायदेः पहली हदीस में मुत्तलक तौर पर कुछ कबीलों को अफजल करार दिया गया था। इसमें कुछ तख्सीस की गई है। यानी इस्लाम लाने वाले अफजल हैं या उस वक्त अफजल करार दिये गये थे। (औनुलबारी 4/199)

बाब 23: कतहान (कबीले का नाम) का बयान।

٢٣ - باب: ذِكْرُ قَحْطَانَ

1466: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कयामत न आयेगी यहां तक कि कतहान का एक आदमी बादशाह होकर लोगों को अपनी लाठी से न हांकेगा।

١٤٦٦ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَخْرُجَ رَجُلٌ مِنْ قَحْطَانَ، يَسُوقُ النَّاسَ بِعَصَاهُ). [رواه البخاري: ٣٥١٧]

फायदेः यह आदमी हजरत महदी के बाद आयेगा और उन्हीं के नक्शों कदम पर चलकर हुकूमत करेगा। (औनुलबारी 4/300)

٢٤ - باب: مَا يُنْهَى عَنْ دَعْوَى الجَاهِلِيَّةِ

١٤٦٧ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَقَدْ ثَابَ مَعَهُ نَاسٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ حَتَّى كَثُرُوا، وَكَانَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ رَجُلٌ لَعَّابٌ، فَكَسَعَ أَنْصَارِيًّا، فَغَضِبَ الأَنْصَارِيُّ غَضَبًا شَدِيدًا حَتَّى تَدَاعَوْا، وَقَالَ الأَنْصَارِيُّ: يَا لَلأَنْصَارِ، وَقَالَ الْمُهَاجِرِيُّ: يَا لَلْمُهَاجِرِينَ، فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: (ما بَالُ دَعْوَى أَهْلِ الجَاهِلِيَّةِ؟ ثُمَّ قَالَ: ما شَأْنُهُمْ؟) فَأُخْبِرَ بِكَسْعَةِ الْمُهَاجِرِيِّ الأَنْصَارِيَّ، قَالَ: فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (دَعُوهَا فَإِنَّهَا خَبِيثَةٌ)، وَقَالَ عَبْدُ ٱللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ: أَقَدْ تَدَاعَوْا عَلَيْنَا؟ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ، فَقَالَ عُمَرُ: أَلاَ نَقْتُلُ يَا رَسُولَ ٱللهِ هٰذَا الخَبِيثَ؟ لِعَبْدِ ٱللهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (لاَ يَتَحَدَّثُ النَّاسُ أَنَّهُ كَانَ يَقْتُلُ أَصْحَابَهُ). [رواه البخاري: ٣٥١٨]

बाब 24: जाहिलियत की सी बातों से बचने का बयान।

1467: जाबिर रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जिहाद में थे। उस वक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास मुहाजिरीन में से बहुत से लोग जमा हो गये। चूंकि मुहाजिरीन में से एक आदमी बहुत चालाक था। उसने एक अनसारी की दुबुर (चुतड़) पर जर्ब (मार) लगाई। अनसारी को बहुत गुस्सा आया। नौबत यहां तक आ गई की हरैक ने अपने अपने लोगों को बुलाया। अनसारी ने कहा, ऐ जमात नसारा! मेरी मदद को पहुंचो और मुहाजिरीन ने कहा, ऐ जमात मुहाजिरीन! मेरी मदद के लिए दौड़ो। यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ लाये और फरमाया, यह जाहिलियत की बेकार बातें कैसी हैं? फिर पूछा किस्सा क्या है? लोगों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक मुहाजिरीन के अनसारी को थप्पड़ मारने का हाल बयान किया। जाबिर रजि. का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जाहिलियत की ऐसी नापाक बातें छोड़ दो। इस पर अब्दुल्लाह बिन उबे बिन सलूल कहने लगा। यह मुहाजिरीन हमारे खिलाफ अपनी कौम को पुकारते हैं। अच्छा अगर हम मदीना वापस होंगे तो जो हम में ज्यादा इज्जतदार

होगा, वो जलील को निकाल बाहर करेगा। यह सुनकर उमर रजि. ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हुक्म हो तो हम इस नापाक पलीद का सर कत्ल कर दे। यानी अब्दुल्लाह बिन उबे का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, नहीं लोग चर्चा करेंगे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथियों को कत्ल करते हैं।

फायदे: अगरचे अब्दुल्लाह बिन उबे मरदूद मुनाफिक था, मगर बजाहिर मुसलमान में शरीक था। उसके कत्ल से लोगों में नफरत फैलने का अन्देशा था। ऐसे हालात में इस्लाम लाने में शको-शुबा करेंगे।

 (औनुलबारी, 4/201)

---

٢٥ - باب: قصة خزاعة

बाब 25: कबीला खुजाआ के किस्से का बयान।

١٤٦٨ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (عَمْرُو بْنُ لُحَيِّ بْنِ قَمَعَةَ بْنِ خِنْدِفَ أَبُو خُزَاعَةَ). [رواه البخاري: ٣٥٢٠]

1468: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अम्र बिन लुहैय बिन कमआ बिन खिन्दीफ कबीला खुजाआ का बाप था।

फायदे: खुजाआ अरब का एक मशहूर आदमी था, जिसके खानदान के बारे में इख्तलाफ है। मगर इस पर इत्तेफाक है कि वो अम्र बिन लुहैय की औलाद से है। (औनुलाबरीर 4/203)

١٤٦٩ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (رَأَيْتُ عَمْرَو ابْنَ عَامِرِ بْنِ لُحَيٍّ الْخُزَاعِيَّ يَجُرُّ قُصْبَهُ فِي النَّارِ، وَكَانَ أَوَّلَ مَنْ سَيَّبَ السَّوَائِبَ). [رواه البخاري: ٣٥٢١]

1469: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैंने अम्र बिन लुहैय खुजाई को देखा कि वो अपनी अंतड़ियां दोजख में खींच रहा था और यह सबसे पहला आदमी था जिसने उस ऊंटनी

को आजाद कर देने की रस्म निकाली जो पांच बच्चे जन्म दे डाले।

फायदेः एक रिवायत में अम्र बिन लुहैय के बारे में ज्यादा वजाहत है कि वो पहला आदमी है, जिसने दीने इस्माईल को खत्म किया। उसने बैतुल्लाह में बूतों को गाड़ा किया, या सायबा को आजाद किया, बुहैरा, वसीला और हाम जैसी गंदी रस्मों को जारी किया। (औनुलबारी 4/203)

٢٦ - باب: قِصَّةُ إِسْلامِ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ

बाब 26: अबू जर रजि. के इस्लाम लाने का बयान।

١٤٧٠ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ أَبُو ذَرٍّ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: كُنْتُ رَجُلًا مِنْ غِفَارٍ، فَبَلَغَنَا أَنَّ رَجُلًا قَدْ خَرَجَ بِمَكَّةَ يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ فَقُلْتُ لِأَخِي: ٱنْطَلِقْ إِلَى هٰذَا ٱلرَّجُلِ كَلِّمْهُ وَأْتِنِي بِخَبَرِهِ، فَٱنْطَلَقَ فَلَقِيَهُ ثُمَّ رَجَعَ، فَقُلْتُ: مَا عِنْدَكَ؟ فَقَالَ: وَٱللهِ لَقَدْ رَأَيْتُ رَجُلًا يَأْمُرُ بِٱلْخَيْرِ وَيَنْهَى عَنِ ٱلشَّرِّ، فَقُلْتُ لَهُ: لَمْ تَشْفِنِي مِنَ ٱلْخَبَرِ، فَأَخَذْتُ جِرَابًا وَعَصًا، ثُمَّ أَقْبَلْتُ إِلَى مَكَّةَ، فَجَعَلْتُ لَا أَعْرِفُهُ، وَأَكْرَهُ أَنْ أَسْأَلَ عَنْهُ، وَأَشْرَبُ مِنْ مَاءِ زَمْزَمَ وَأَكُونُ فِي ٱلْمَسْجِدِ، قَالَ: فَمَرَّ بِي عَلِيٌّ فَقَالَ: كَأَنَّ ٱلرَّجُلَ غَرِيبٌ؟ قَالَ: قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: فَٱنْطَلِقْ إِلَى ٱلْمَنْزِلِ، قَالَ: فَٱنْطَلَقْتُ مَعَهُ، لَا يَسْأَلُنِي عَنْ شَيْءٍ وَلَا أُخْبِرُهُ، فَلَمَّا أَصْبَحْتُ غَدَوْتُ إِلَى ٱلْمَسْجِدِ

1470: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा अबू जर रजि. ने फरमाया कि मैं कबीला गिफार का एक आदमी था। जब हमें यह खबर पहुंची कि मक्का में एक आदमी पैदा हुआ है जो नबूवत का दावा करता है। मैंने अपने भाई से कहा, तुम जाकर उनसे मुलाकात करो और उनसे बातचीत करके मुझे हकीकत हाल से आगाह करो। चूनांचे वो गये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिले। फिर जब लौटकर आये तो मैंने उनसे कहा, बताओ क्या खबर लाये हो? उन्होंने कहा, अल्लाह की कसम! मैंने एक ऐसे आदमी को देखा है जो अच्छी बात का हुक्म देता है और बुरी बात से मना करता है। मैंने कहा, इतनी सी खबर से तो मेरी तसल्ली

لأسأل عنه، وليس أحد يخبرني عنه بشيء، قال: فمرّ بي عليّ، فقال: أما نال للرجل يعرف منزله بعد؟ قال: قلت: لا، قال: انطلق معي، قال: فقال: ما أمرك، وما أقدمك هذه البلدة؟ قال: قلت له: إن كتمت عليّ أخبرتك، قال فإني أفعل، قال: قلت له: بلغنا أنه قد خرج ها هنا رجل يزعم أنه نبي، فأرسلت أخي ليكلمه، فرجع ولم يشفني من الخبر، فأردت أن ألقاه، فقال له: أما إنك قد رشدت، هذا وجهي إليه فاتبعني، ادخل حيث أدخل، فإني إن رأيت أحدا أخافه عليك، قمت إلى الحائط كأني أصلح نعلي وامض أنت، فمضى ومضيت معه حتى دخل ودخلت معه على النبي ﷺ، فقلت له: اعرض عليّ الإسلام، فعرضه فأسلمت مكاني، فقال لي: (يا أبا ذر، اكتم هذا الأمر، وارجع إلى بلدك، فإذا بلغك ظهورنا فأقبل)، فقلت: والذي بعثك بالحق، لأصرخن بها بين أظهرهم، فجاء إلى المسجد وقريش فيه، فقال: يا معشر قريش، إني أشهد أن لا إله إلا الله، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله. فقالوا: قوموا إلى هذا الصابىء، فقاموا فضربت لأموت،

नहीं होती। आखिर मैंने एक सामान की थैली और एक लाठी उठाई और खुद मक्का की तरफ चला। लेकिन मैं वहां आपको न पहचानता था और यह भी ठीक न समझता कि आपके बारे में किसी से पूछूं। लिहाजा मैं जमजम का पानी पीता और मस्जिद में रहा करता। एक दिन अली रजि. मेरे सामने से गुजरे और कहने लगे, तुम मुसाफिर मालूम होते हो, मैंने कहा: हां। उन्होंने कहा, मेरे साथ घर चलो। चूनांचे मैं उनके साथ हो लिया। न तो वो मुझ से कोई बात पूछते और न ही मैं उनसे कुछ बयान करता। इस तरह सुबह हो गई तो मैं फिर काअबा में गया ताकि मैं किसी से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में पूछूं। लेकिन कोई आदमी मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कुछ बयान न करता। फिर इत्तेफाक से अली रजि. का मेरी तरफ आना हुआ। उन्होंने कहा, क्या अभी तक उस आदमी को यानी तूझे अपना ठिकाना नहीं मिला? अबू जर रजि. कहते हैं, मैंने कहा नहीं! उन्होंने कहा, तुम मेरे साथ चलो। अबू जर रजि. का बयान है कि फिर अली

فَأَدْرَكَنِي الْعَبَّاسُ فَأَكَبَّ عَلَيَّ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْهِمْ، فَقَالَ: وَيْلَكُمْ، تَقْتُلُونَ رَجُلًا مِنْ غِفَارٍ، وَمَتْجَرُكُمْ وَمَمَرُّكُمْ عَلَى غِفَارٍ، فَأَقْلَعُوا عَنِّي، فَلَمَّا أَنْ أَصْبَحْتُ الْغَدَ رَجَعْتُ، فَقُلْتُ مِثْلَ ما قُلْتُ بِالأَمْسِ، فَقَالُوا: قُومُوا إِلَى هٰذَا الصَّابِىءِ، فَصُنِعَ بِي مِثْلَ ما صُنِعَ بِالأَمْسِ، وَأَدْرَكَنِي الْعَبَّاسُ فَأَكَبَّ عَلَيَّ، وَقالَ مِثْلَ مَقَالَتِهِ بِالأَمْسِ. قالَ: فَكَانَ هٰذَا أَوَّلَ إِسْلَامِ أَبِي ذَرٍّ رَحِمَهُ ٱللهُ. [رواه البخاري: ٣٥٢٢]

रजि. ने मुझसे कहा कि तुम्हारा काम क्या है? और इस शहर में कैसे आये हो? मैंने कहा कि अगर आप मेरी बात को छुपी रखें तो तुमसे बयान करूं। अली रजि. ने फरमाया, मैं ऐसा करूंगा। फिर मैंने उनसे कहा कि हमें यह खबर मिली कि यहां एक आदमी पैदा हुए हैं जो नबूवत का दावा करते हैं। तब मैंने अपने भाई को भेजा था कि वो उनसे बात करे। मगर वो लौट कर आया और तसल्ली के काबिल कोई खबर न लाया। चूनांचे मैंने चाहा कि खुद उनसे मिलूं। अली रजि. ने कहा, यकीन करो कि तुम मकसूद को पहुंच गये हो। मैं अब उन्हीं के पास जा रहा हूं। तुम भी मेरे साथ चले आओ। जहां मैं जाऊ, वहां तुम भी चले आना। अगर मैं किसी ऐसे आदमी को देखूं जिससे नुकसान का डर होगा तो मैं किसी दीवार के पास खड़ा हो जाऊंगा। गोया मैं अपनी जूती सही कर रहा हूँ। मगर आप वहां से चलते रहे। चूनांचे अली रजि. रवाना हो हुए तो मैं भी उनके साथ चला ताकि मैं और वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हो गये। मैंने कहा, मुझे मुसलमान कर लीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ पर इस्लाम पेश किया और मैं फौरन ही मुसलमान हो गया। फिर आपने मुझे फरमाया, ऐ अबू जर रजि. अपने इस्लाम को छुपाओ और अपने शहर लौट जाओ। और जब तुम्हें हमारे गलबा की खबर पहुंचे तो आ जाना। मैंने कहा, कसम है उस जात की जिसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हक देकर भेजा है। मैं तो यह बात लोगों में पुकार पुकार कर कहूंगा। चूनांचे अबू जर रजि. बैतुल्लाह गये, जहां कुरैश थे और उनसे

कहा ऐ गिरोह कुरैश! मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद बरहक नहीं और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। तो उन्होंने कहा कि इस बे दीन की खबर लो। चूनांचे वो उठे और मुझे खूब पीटा, ताकि मर जाऊं। इतने में अब्बास रजि. ने मुझे देखा और मुझ पर गिर पड़े और काफिरों की तरफ होकर कहने लगे, तुम्हारी खराबी हो। कबीला गिफार के एक आदमी को मारे डालते हो। हालांकि यह कबीला तुम्हारी तिजारत गाह और जाने का रास्ता है। तब वो लोग मेरे पास से हटे। फिर जब मैं दूसरे रोज सुबह को उठा तो वापस आकर फिर वही बात कही जो पिछले दिन कही थी। और उन्होंने फिर कहा कि इस बे दीन की तरफ खड़े हो जाओ। फिर मेरे साथ पहले रोज जैसा सलूक किया गया और अब्बास रजि. ने मुझे देखा तो मुझ पर झुक गये और उन्होंने वैसी ही बातचीत की जैसी कल की थी। अब्बास रजि. कहते हैं, यह अबू जर रजि. के इस्लाम की शुरूआत थी। अल्लाह उन पर रहम फरमाये।

फायदेः कुरैश तिजारत करने वाले थे। मुल्क शाम जाने के लिए रास्ते में कबीला गिफार पड़ता था। हजरत अब्बास रजि. ने कुरैश को खबरदार किया कि अगर कबीला गिफार बिगड़ गया तो तुम्हारी तिजारत खत्म हो जायेगी। इसी तरह हजरत अबू जर रजि. को कुरैश की जुल्मो सितम से निजात मिली।

बाब 27: काफिर या मुसलमान बाप दादा की तरफ अपनी निस्बत कायम करने का बयान।

٢٧ - باب: مَنِ انْتَسَبَ إِلَى آبَائِهِ فِي الإِسْلَامِ وَالجَاهِلِيَّةِ

1471: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा कि जब यह आयत उतरीः "अपने करीबी रिश्तेदारों को

١٤٧١ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ ٱلْأَقْرَبِينَ﴾، جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَدْعُوهُمْ

قَبَائِلَ قَبَائِلَ، يُنَادِي: (يَا بَنِي فِهْرٍ، يَا بَنِي عَدِيٍّ)، لِبُطُونِ قُرَيْشٍ. [رواه البخاري: ٣٥٢٥]

अल्लाह के अजाब से डराओ'' तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम अरब वालों को कबीला कबीला करके पुकारने लगे। बनी फहर के लोगों! बनी अदी के लोगों! यह सब कुरैश के खानदान से थे।

फायदेः हजरत अबू हुरैरा रजि. से भी इसी तरह का वाक्या मरवी है। हालांकि हजरत अबू हुरैरा रजि. हिजरत के बाद मुसलमान हुए। ऐसा मालूम होता है कि इस तरह का वाक्या दो बार पेश आया। मक्का में इस्लाम के शुरू के वक्त और फिर मदीना पहुंचकर।

 (औनुलबारी 4/207)

٢٨ - باب: مَنْ أَحَبَّ أَنْ لَا يُسَبَّ نَسَبُهُ

बाब 28: जो इस बात को पसन्द करे कि उसके खानदान को गाली न दी जाये।

١٤٧٢ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قَالَتْ: اسْتَأْذَنَ حَسَّانُ النَّبِيَّ ﷺ فِي هِجَاءِ الْمُشْرِكِينَ، قَالَ: (كَيْفَ بِنَسَبِي؟). فَقَالَ حَسَّانُ: لَأَسُلَّنَّكَ مِنْهُمْ كَمَا تُسَلُّ الشَّعَرَةُ مِنَ الْعَجِينِ. [رواه البخاري: ٣٥٣١]

1472: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हसान रजि. ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुश्रिकिन की बुराई करने की इजाजत मांगी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मेरे खानदान का क्या करोगे? हसान रजि. ने जवाब दिया। मैं आपको उनसे ऐसे निकाल लूंगा, जिस तरह आटे से बाल निकाल लिया जाता है।

फायदेः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तीरों की बारिश से मुश्रिकीन को इतनी तकलीफ नहीं होती जितनी बुरे शेअरों से होती है। लिहाजा आपने हजरत अब्दुल्लाह बिन रवाहा, हजरत कअब बिन मालिक और हजरत हसान बिन साबित रजि. को इस काम पर मामूर फरमाया। (औनुलबारी 4/208)

बाब 29: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नामों का बयान।

٢٩ - باب: ما جاءَ في أسماءِ رَسُولِ الله ﷺ

1473: जुबैर बिन मुतइम रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मेरे पांच नाम हैं। मैं मुहम्मद हूँ और अहमद हूँ और माही हूँ। मेरे जरीये अल्लाह कुफ्र को मिटाता है। मैं हाशिर हूँ। तमाम लोग मेरे पीछे जमा किए जायेंगे और मैं आकिब हूँ, यानी सब के बाद आने वाला मेरे बाद कोई नया पैगम्बर नहीं आयेगा।

١٤٧٣ : عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (لِي خَمْسَةُ أَسْمَاءٍ: أَنَا مُحَمَّدٌ، وَأَحْمَدُ، وَأَنَا المَاحِي الَّذِي يَمْحُو ٱللهُ بِيَ الْكُفْرَ، وَأَنَا الحَاشِرُ الَّذِي يُحْشَرُ النَّاسُ عَلَى قَدَمِي، وَأَنَا الْعَاقِبُ). [رواه البخاري: ٣٥٣٢]

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेशुमार नाम हैं। लेकिन बिदअती हजरात ने आपकी तरफ कुछ ऐसे नाम रख रखे हैं, जिनमें बढ़ावा पाया जाता है। जैसे ऐ अर्शे इलाही की किन्दील, वगैरह इसी तरह के अन्दाज से खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना फरमाया है। (औनुलबारी 4/211)

1474: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मेरी और दूसरे पैगम्बरों की मिसाल ऐसी है, जैसे एक आदमी ने मकान बनाकर उसे पूरा और मुजय्यन कर दिया (सजा दिया)। सिर्फ एक ईट की जगह बाकी रह गई। अब जो लोग घर में जाते तो ताज्जुब करते कि अगर इस ईट की खाली जगह न होती तो कैसा अच्छा पूरा घर होता।

١٤٧٤ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قالَ: قالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (أَلَا تَعْجَبُونَ كَيْفَ يَصْرِفُ ٱللهُ عَنِّي شَتْمَ قُرَيْشٍ وَلَعْنَهُمْ، يَشْتِمُونَ مُذَمَّمًا وَيَلْعَنُونَ مُذَمَّمًا، وَأَنَا مُحَمَّدٌ). [رواه البخاري: ٣٥٣٣]

बाब 30: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खातमुल्लबईन होने का बयान।

٣٠ - باب: خَاتَمُ النَّبِيِّينَ ﷺ

1475. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मेरी और दूसरे पैगम्बरों की मिसाल ऐसी है, जैसे एक आदमी ने मकान बनाकर उसे पूरा कर दिया। सिर्फ एक ईट की जगह बाकी रह गई। अब जो लोग घर में जाते तो ताज्जुब करते कि अगर इस ईट की खाली जगह न होती तो कैसा अच्छा पूरा घर होता।

١٤٧٥ : عَنْ جابِرِ بْنِ عَبْدِ ٱللهِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا قالَ: قالَ النَّبِيُّ ﷺ: (مَثَلِي وَمَثَلُ الأَنْبِياءِ، كَرَجُلٍ بَنَى دَارًا، فَأَكْمَلَهَا وَأَحْسَنَهَا إِلَّا مَوْضِعَ لَبِنَةٍ، فَجَعَلَ النَّاسُ يَدْخُلُونَهَا وَيَتَعَجَّبُونَ وَيَقُولُونَ: لَوْلَا مَوْضِعُ اللَّبِنَةِ). [رواه البخاري: ٣٥٣٤]

1476: अबू हुरैरा रजि. की रिवायत में इजाफा है। मगर एक कोने में ईट की जगह छोड़ दी गई हो, इस रिवायत के आखिर में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, वो ईट मैं हूं और मैं नबीयों का मोहर (स्टाम्प) हूं।

١٤٧٦ : وفي رِوايَةٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ زِيادَةٌ: (.. إِلَّا مَوْضِعَ لَبِنَةٍ مِنْ زَاوِيَةٍ...) وقالَ في آخِرِهِ: (.. فَأَنَا اللَّبِنَةُ، وَأَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّينَ). [رواه البخاري: ٣٥٣٥]

फायदे: मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जात बाबरकात से नबूवत का महल पूरा हुआ। अगरचे इसमें सुराख करने वाले बेशुमार पैदा हुए। हिन्दुस्तान में अंग्रेज के पालतू गुलाम अहमद कादयानी ने भी दावा नबूवत किया।

बाब 31: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात का बयान।

٣١ - باب: وَفَاةُ النَّبِيِّ ﷺ

١٤٧٧ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاثٍ وَسِتِّينَ. [رواه البخاري: ٣٥٣٦]

1477: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जब वफात हुई तो उस वक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र तरैसठ बरस थी।

फायदेः इस उनवान की यहां कोई जरूरत न थी, बल्कि इसका मकाम किताबुल मगाजी के बाद है। चूंकि यहां आपके नाम और सिफात बयान करना मकसूद था और किताब वालों के यहां आप की जुम्ला सिफात में से यह भी मशहूर था कि आख़िरी नबी की उम्र तरैसठ बरस होगी। इस मुनासिबत से इमाम बुखारी ने इस हदीस को बयान फरमाया है। वल्लाह आलम (औनुलबारी **4/559**)

बाब **32:**

٣٢ - باب

١٤٧٨ : عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ - قَالَ وهو ابْنُ أَرْبَعٍ وَتِسْعِينَ، جَلْدًا مُعْتَدِلًا -: قَدْ عَلِمْتُ: ما مُتِّعْتُ بِهِ سَمْعِي وَبَصَرِي إِلَّا بِدُعَاءِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، إِنَّ خالَتِي ذَهَبَتْ بِي إِلَيْهِ، فَقالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ ابْنَ أُخْتِي شاكٍ، فَادْعُ اللهَ لَهُ، قالَ: فَدَعَا لِي. [رواه البخاري: ٣٥٤٠]

1478: सायब बिन यजीद रजि. से रिवायत है कि उन्होंने चौरानवें साल की उम्र में फरमाया, जबकि वो अच्छे ताकतवर और सेहतमन्द थे। मुझे खूब मालूम है कि मेरे हवास कान आंख सब अब तक काम कर रहे हैं। यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ की बरकत है। मेरी खाला मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ले गई थीं और उन्होंने कहा था, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरा भांजा बीमार है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह से इसके लिए दुआ फरमां दे। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे लिए दुआ फरमाई थी।

फायदे: यह हदीस बयान करने का मकसद यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते तय्यबा में अगर आपकी तवज्जुह अपनी तरफ करवाना मकसूद होता तो ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! कहा जाये आपको नाम या कुन्नियत (अबू कासिम) से याद न किया जाये। वल्लाह आलम! (औनुलबारी, 6/561)

बाब 33: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शक्लो सूरत का बयान।

٣٣ - باب: صِفَةُ النَّبِيِّ ﷺ

1479: उकबा बिन हारिस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि अबू बकर सिद्दीक रजि. असर की नमाज अदा करके पैदल बाहर तशरीफ ले गये। हसन रजि. को बच्चों में खेलते देखा तो उसे अपने कन्धे पर बैठा लिया और फरमाया, मेरे मां बाप आप पर फिदा हों। शक्लो सूरत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समान है। अली रजि. के समान नहीं। अली रजि. यह सुनकर हंस रहे थे।

١٤٧٩ : عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الحَارِثِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّى أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ العَصْرَ، ثُمَّ خَرَجَ يَمْشِي، فَرَأَى الحَسَنَ يَلْعَبُ مَعَ الصِّبْيَانِ فَحَمَلَهُ عَلَى عَاتِقِهِ، وَقَالَ: بِأَبِي، شَبِيهٌ بِالنَّبِيِّ لَا شَبِيهٌ بِعَلِيٍّ، وَعَلِيٌّ يَضْحَكُ. [رواه البخاري: ٣٥٤٢]

फायदे: तिरमजी की एक रिवायत के मुताबिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निस्फे आला यानी सर, चेहरा और सीने में हसन रजि. की मुशाबहत थी और आपके निस्फे असफल (नीचे के आधे बदन) में हुसैन रजि. मुशाबहत थे। अलगर्ज दोनों शहजादे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पूरी तस्वीर थे। (फतहुलबारी, 6/97)

1480: अबू हुजैफा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह

١٤٨٠ : عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ،

وَكَانَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ يُشْبِهُهُ، فَقِيلَ لَهُ: صِفْهُ لِي، قَالَ: كَانَ أَبْيَضَ قَدْ شَمِطَ، وَأَمَرَ لَنَا النَّبِيُّ ﷺ بِثَلَاثَ عَشْرَةَ قَلُوصًا، قَالَ: فَقُبِضَ النَّبِيُّ ﷺ قَبْلَ أَنْ نَقْبِضَهَا. [رواه البخاري: ٣٥٤٤]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खूब अच्छी तरह देखा और हसन बिन अली रजि. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत समान थे। अबू जुहैफा रजि. से कहा गया कि आप हमारे सामने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुलिया मुबारक बयान करें, तो उन्होंने फरमाया कि आपका रंग सफेद था और आपके कुछ बालों की रंगत बदली गई थी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें तेरह ऊंटनियां देने का हुक्म दिया था, लेकिन इसके पहले कि हम उन पर कब्जा कर ले, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात हो गई।

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद जब अबू बकर रजि. खलीफा बने तो उन्होंने वादा पूरा करते हुए तेरह ऊंटनियां हजरत अबू जुहैफा रजि. के हवाले कर दी।

(औनुलबारी 4/216)

١٤٨١ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُسْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، صَاحِبِ النَّبِيِّ ﷺ، قِيلَ لَهُ: أَرَأَيْتَ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ شَيْخًا؟ قَالَ: كَانَ فِي عَنْفَقَتِهِ شَعَرَاتٌ بِيضٌ. [رواه البخاري: ٣٥٤٦]

1481: अब्दुल्लाह बिन बुस्र रजि. जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी हैं। उनसे पूछा कि बताये, क्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बूढ़े थे? उन्होंने कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के होटों के नीचे और ठोढ़ी के बीच के कुछ बाल सफेद थे।

١٤٨٢ : عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ رَبْعَةً مِنَ الْقَوْمِ، لَيْسَ بِالطَّوِيلِ وَلَا

1482: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आदमियों में बीच के

بِالْقَصِيرِ، أَزْهَرَ اللَّوْنِ، لَيْسَ بِأَبْيَضَ أَمْهَقَ وَلاَ آدَمَ، لَيْسَ بِجَعْدٍ قَطَطٍ وَلاَ سَبْطٍ رَجِلٍ، أُنْزِلَ عَلَيْهِ وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعِينَ، فَلَبِثَ بِمَكَّةَ عَشْرَ سِنِينَ يُنْزَلُ عَلَيْهِ، وَبِالْمَدِينَةِ عَشْرَ سِنِينَ، وَقُبِضَ وَلَيْسَ فِي رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ عِشْرُونَ شَعَرَةً بَيْضَاءَ. [رواه البخاري: ٣٥٤٧]

कद के थे, न ज्यादा बड़े और न ज्यादा छोटे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रंग चमकदार था। न खालिस सफेद और न बिलकुल गन्दमी। आपके बाल भी दरमियाना थे। न ज्यादा पेचदार और न बहुत सीधे। चालीस साल की उम्र में आप पर वह्य उतरी। दस साल मक्का में रहे (वह्य उतरती रही) और दस बरस मदीना में रहे और जिस वक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात हुई तो आपके सर और दाढ़ी में बीस बाल भी सफेद न थे।

फायदेः कुछ रिवायतों में हजरत अनस रजि. का यह कौल भी मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने साठ साल की उम्र में वफात पाई। सही यह है कि आप तेरह साल मक्का में ठहरे और तरेसठ बरस की उम्र में वफात पाई। (औनुलबारी 4/266)

١٤٨٣ : وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ لَيْسَ بِالطَّوِيلِ الْبَائِنِ وَلاَ بِالْقَصِيرِ، وَلاَ بِالأَبْيَضِ الأَمْهَقِ، وَلَيْسَ بِالآدَمِ، وَلَيْسَ بِالْجَعْدِ الْقَطَطِ، وَلاَ بِالسَّبْطِ، بَعَثَهُ ٱللهُ عَلَى رَأْسِ أَرْبَعِينَ سَنَةً، وَذَكَرَ تَمَامَ الْحَدِيثِ. [رواه البخاري: ٣٥٤٨]

1483: अनस रजि. से ही एक दूसरी रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न तो बड़े कद के थे और न छोटे कद के और न खालिस सफेद रंग के थे और न गन्दमी रंग के और आपके बाल न तो बहुत पेचदार और न बिलकुल सीधे थे और अल्लाह ने आपको चालीस साल की उम्र में नबूवत से सरफराज फरमाया (नवाजा)। उसके बाद बाकी हदीस बयान की।

١٤٨٤ : عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَحْسَنَ النَّاسِ وَجْهًا، وَأَحْسَنَهُمْ خَلْقًا، لَيْسَ بِالطَّوِيلِ الْبَائِنِ، وَلاَ بِالْقَصِيرِ. [رواه البخاري: ٣٥٤٩]

1484: बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब लोगों से ज्यादा खूबसूरत और जिस्मानी ऐतबार से निहायत तन्दुरूस्त थे। न बहुत बड़े कद के और न ही छोटे कद के थे।

١٤٨٥ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سُئِلَ: هَلْ خَضَبَ النَّبِيُّ ﷺ؟ قَالَ: لاَ، إِنَّمَا كَانَ شَيْءٌ فِي صُدْغَيْهِ. [رواه البخاري: ٣٥٥٠]

1485: अनस रजि. से रिवायत है कि उनसे पूछा गया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खिजाब किया था? उन्होंने फरमाया, नहीं (आपके बालों में सफेदी कहां थी) सिर्फ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कंपटियों में कुछ बाल सफेद थे।

फायदेः मुस्लिम की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खिजाब नहीं लगाया। आपके लब जेरें और ठोडी के बीच, कंपटी और सर में चन्द सफेद बाल थे। इससे मालूम हुआ कि जेरें लब नुमाया तौर पर सफेरी नजर आती थी। (औनुलबारी 4/222)

١٤٨٦ : عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ مَرْبُوعًا، بَعِيدَ مَا بَيْنَ الْمَنْكِبَيْنِ، لَهُ شَعَرٌ يَبْلُغُ شَحْمَةَ أُذُنَيْهِ، رَأَيْتُهُ فِي حُلَّةٍ حَمْرَاءَ، لَمْ أَرَ شَيْئًا قَطُّ أَحْسَنَ مِنْهُ. [رواه البخاري: ٣٥٥١]

1486: बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दरमियाना कद के थे। दोनों शानों के बीच कुशादगी थी। आपके बाल कान की लो तक पहुंचते थे। मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक बार सुर्ख (धारीदार) जोड़ा पहने देखा। आपसे ज्यादा किसी को हसीन और खूबसूरत नहीं देखा।

फायदेः हमने ब्रेकिट में धारीदार इसलिए लिखा है कि खालिस सुर्ख रंग का लिबास जेबे तन करना मना है। (औनुलबारी 4/223)

1487: बराअ बिन आजिब रजि. से ही एक और रिवायत में है कि उनसे पूछा गया। आया, आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहरा मुबारक तलवार की तरह (लम्बा और पतला) था। उन्होंने कहा, नहीं बल्कि चांद की तरह (गोल और चमकदार) था।

١٤٨٧ : وَفِي رِوايَةٍ عَنْهُ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ قِيلَ لَهُ: أَكانَ وَجْهُ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَ السَّيْفِ، قالَ: لاَ، بَلْ مِثْلَ الْقَمَرِ. [رواه البخاري: ٣٥٥٢]

फायदेः मुस्लिम की रिवायत में हजरत जाबिर बिन समरा रजि. ने आपके चेहरा नूर को रोशन और चमकदार होने की बिना पर सूरज जैसा कहा है। (औनुलबारी 4/223)

1488: अबू जुहैफा रजि. से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वादी बत्हा में नमाज पढ़ते हुए देखा और आपके सामने बरछा गाड़ा हुआ था। यह हदीस (313) पहले गुजर चुकी है और इस रिवायत में इतना इजाफा है कि लोग आपके हाथ पकड़कर अपने चेहरे पर मलने लगे। चूनांचे मैंने आपका हाथ लेकर अपने चेहरे पर रखा तो वो बर्फ से ज्यादा ठण्डा और कस्तूरी से ज्यादा खुशबूदार था।

١٤٨٨ : عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّهُ رَأى النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي بِالْبَطْحاءِ وَبَيْنَ يَدَيْهِ عَنَزَةٌ، قَدْ تَقَدَّمَ هٰذا الحَدِيث، وفي هٰذِهِ الرِّوايَة قالَ: فَجَعَلَ النَّاسُ يَأْخُذُونَ يَدَيْهِ فَيَمْسَحُونَ بِهِمَا وُجوهَهُمْ، قالَ: فَأَخَذْتُ بِيَدِهِ فَوَضَعْتُهَا عَلَى وَجْهِي، فَإِذَا هِيَ أَبْرَدُ مِنَ الثَّلْجِ، وَأَطْيَبُ رَائِحَةً مِنَ المِسْكِ. (راجع: ٣١٣) [رواه البخاري: ٣٥٥٣]

फायदेः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाक जिस्म से अपने आप खुश्बू आती थी। अगरचे आपने खुश्बू न भी इस्तेमाल की हो। चूनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस रास्ते से गुजरते वो खुश्बू से महक उठता। लोगों को पता चल जाता कि यहां से

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गुजरे हैं। (औनुलबारी 4/224)

1489: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं एक दूसरे के बाद दीगरे बनी आदम के बेहतरीन जमानों में होता आया हूँ। यहां तक वो जमाना आया जिसमें मैं पैदा हुआ हूँ।

١٤٨٩ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (بُعِثْتُ مِنْ خَيْرِ قُرُونِ بَنِي آدَمَ، قَرْنًا فَقَرْنًا، حَتَّى كُنْتُ مِنَ الْقَرْنِ الَّذِي كُنْتُ فِيهِ). [رواه البخاري: ٣٥٥٧]

फायदे: यानी पहले औलाद इस्माईल फिर कनाना और कुरैश आखिर में बनी हाशिम में मुन्तकिल हुआ। (औनुलबारी, 4/225)

1490: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने सर के बाल लटकाये रखते और मुश्रिकीन अपने सर के बालों की मांग निकालते। लेकिन किताब वाले अपने सर के बालो को लटकाये रखते थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जिस बात के बारे में कोई हुक्म न आता तो अहले किताब जैसे करना पसन्द फरमाते थे। बाद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी सर में मांग निकालने लगे थे।

١٤٩٠ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ كَانَ يَسْدِلُ شَعَرَهُ، وَكَانَ الْمُشْرِكُونَ يَفْرُقُونَ رُؤُوسَهُمْ، وَكَانَ أَهْلُ الْكِتَابِ يَسْدِلُونَ رُؤُوسَهُمْ، وَكَانَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ يُحِبُّ مُوَافَقَةَ أَهْلِ الْكِتَابِ فِيمَا لَمْ يُؤْمَرْ فِيهِ بِشَيْءٍ، ثُمَّ فَرَقَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ رَأْسَهُ. [رواه البخاري: ٣٥٥٨]

फायदे: अहले किताब की तरह करना इसलिए आपको पसन्द था कि वो कम से कम आसमानी दीन पर अमल करने वाले होने के दावेदार थे। इसके खिलाफ मुश्रिकीन के यहां तो बूतपरस्ती का चर्चा था। (औनुलबारी 4/226)

1491: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न तो गाली-गलौच करने वाले थे और न ही बदजुबान बनते थे। बल्कि फरमाया करते थे, तुम में सबसे बेहतर वो आदमी है जिसके अख्लाक अच्छे हों।

١٤٩١ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ ﷺ فَاحِشًا وَلاَ مُتَفَحِّشًا، وَكَانَ يَقُولُ: (إِنَّ مِنْ خِيَارِكُمْ أَحْسَنَكُمْ أَخْلاَقًا). [رواه البخاري: ٣٥٥٩]

फायदे: मतलब यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आदतन और बजाते खुद बद-अख्लाक न थे।

(औनुलबारी 4/227)

1492: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब भी दो बातों का इख्तियार दिया जाता तो आप उसी बात को इख्तियार फरमाते जो आसान होती। बशर्ते गुनाह न हो। लेकिन अगर वो बात गुनाह होती तो आप सब लोगों से उससे ज्यादा दूर रहते और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी जात के लिए कभी इन्तेकाम नहीं लिया। हां! अगर अल्लाह की हुरमत के खिलाफ काम किया जाता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अल्लाह के लिए उसका इन्तेकाम लेते थे।

١٤٩٢ : عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: مَا خُيِّرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَيْنَ أَمْرَيْنِ إِلَّا أَخَذَ أَيْسَرَهُمَا مَا لَمْ يَكُنْ إِثْمًا، فَإِنْ كَانَ إِثْمًا كَانَ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنْهُ، وَمَا انْتَقَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِنَفْسِهِ إِلَّا أَنْ تُنْتَهَكَ حُرْمَةُ اللهِ، فَيَنْتَقِمَ للهِ بِهَا. [رواه البخاري: ٣٥٦٠]

फायदे: अब्दुल्लाह बिन खतल और अकबा बिन अबी मुईत का कत्ल जाति इन्तेकाम का नतीजा न था, बल्कि दीनी हुरमात की बर्बादी उनके कत्ल का सबब था। (औनुलबारी 4/228)

1493: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि मैंने किसी मोटे या बारीक रेशम को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हथेली से ज्यादा नर्म नहीं पाया और न मैंने कभी कोई खुश्बू या इत्र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुश्बू या इत्र से अच्छी सूंघी।

١٤٩٣ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: مَا مَسِسْتُ حَرِيرًا وَلاَ دِيبَاجًا أَلْيَنَ مِنْ كَفِّ النَّبِيِّ ﷺ، وَلاَ شَمِمْتُ رِيحًا قَطُّ أَوْ عَرْفًا قَطُّ أَطْيَبَ مِنْ رِيحِ أَوْ عَرْفِ النَّبِيِّ ﷺ. [رواه البخاري: ٣٥٦١]

1494: अबू सईद खुदरी रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस कुंआरी लड़की से भी ज्यादा शर्मीले थे जो पर्दे में रहती हो।

١٤٩٤ : عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَشَدَّ حَيَاءً مِنَ الْعَذْرَاءِ فِي خِدْرِهَا. [رواه البخاري: ٣٥٦٢]

फायदे: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शर्मीला होना हदूद अल्लाह के अलावा दूसरे मामलों में था। क्योंकि हदूद अल्लाह के लागू करने में भी आपने कभी शर्मिन्दी का मुजाहिरा नहीं फरमाया।

(औनुलबारी 4/230)

1495: अबू सईद खुदरी रजि. से ही एक रिवायत में है कि जब कोई बात आपको नागवार गुजरती तो उसे आपके चेहरे से पहचान लिया जाता था।

١٤٩٥ : وَفِي رِوَايَةٍ: وَإِذَا كَرِهَ شَيْئًا عُرِفَ فِي وَجْهِهِ. [رواه البخاري: ٣٥٦٢]

1496: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी किसी खाने में कभी ऐब नहीं निकाला। अगर आप का दिल चाहता तो खा लेते वरना छोड़ देते थे।

١٤٩٦ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: مَا عَابَ النَّبِيُّ ﷺ طَعَامًا قَطُّ، إِنِ ٱشْتَهَاهُ أَكَلَهُ وَإِلَّا تَرَكَهُ. [رواه البخاري: ٣٥٦٣]

फायदे: हमारे यहां आम रिवाज है कि खाना खाते वक्त मिर्च नमक की कमी का शिकवा करते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेहतरीन नमूने की रोशनी में हमें इस आदत का जाइज लेना चाहिए। (औनुलबारी 4/231)

1497: आइशा रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस तरह ठहर ठहर कर बात करते कि अगर कोई गिनने वाला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातें गिनना चाहता तो गिन सकता था।

١٤٩٧ : عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كانَ يُحَدِّثُ حَدِيثًا، لَوْ عَدَّهُ الْعَادُّ لأَحْصَاهُ. [رواه البخاري: ٣٥٦٧]

1498: आइशा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस तरह जल्दी जल्दी बातें न करते थे जैसे तुम लोग करते हो।

١٤٩٨ : وَعَنْهَا رَضِيَ ٱللهُ عَنْهَا قالَتْ: إِنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ لَمْ يَكُنْ يَسْرُدُ الحَدِيثَ كَسَرْدِكُمْ. [رواه البخاري: ٣٥٦٨]

फायदे: हदीस के आगे पीछे से पता चलता है कि हजरत आइशा रजि. ने हजरत अबू हुरैरा रजि. की अहादीस के बारे में जल्दी जल्दी बातें करने पर इनकार फरमाया। मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ के नतीजे में हजरत अबू हुरैरा रजि. की याददाश्त बहुत मजबूत थी। इसलिए अहादीस जल्दी जल्दी बयान करते थे। (औनुलबारी 4/232)

बाब 34 : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आखें दिखने में तो सोती थी लेकिन दिल जागता रहता था।

٣٤ - باب: كانَ النَّبِيُّ ﷺ تَنَامُ عَيْنُهُ وَلاَ يَنَامُ قَلْبُهُ

١٤٩٩ : عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يُحَدِّثُ عَنْ لَيْلَةِ أُسْرِيَ بِالنَّبِيِّ ﷺ مِنْ مَسْجِدِ الْكَعْبَةِ: جَاءَ ثَلَاثَةُ نَفَرٍ قَبْلَ أَنْ يُوحَى إِلَيْهِ، وَهُوَ نَائِمٌ فِي مَسْجِدِ الْحَرَامِ، فَقَالَ أَوَّلُهُمْ: أَيُّهُمْ هُوَ؟ فَقَالَ أَوْسَطُهُمْ: هُوَ خَيْرُهُمْ، وَقَالَ آخِرُهُمْ: خُذُوا خَيْرَهُمْ. فَكَانَتْ تِلْكَ، فَلَمْ يَرَهُمْ حَتَّى جَاؤُوا لَيْلَةً أُخْرَى فِيمَا يَرَى قَلْبُهُ، وَالنَّبِيُّ ﷺ نَائِمَةٌ عَيْنَاهُ وَلَا يَنَامُ قَلْبُهُ، وَكَذَلِكَ الْأَنْبِيَاءُ تَنَامُ أَعْيُنُهُمْ وَلَا تَنَامُ قُلُوبُهُمْ فَتَوَلَّاهُ جِبْرِيلُ، ثُمَّ عَرَجَ بِهِ إِلَى السَّمَاءِ. [رواه البخاري: ٣٥٧٠]

1499: अनस रजि. से रिवायत है, वो उस रात का वाक्या बयान करते है जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मस्जिद काबा से मैराज हुई कि वहीअ उतरने से पहले आपके पास तीन आदमी आये। आप उस वक्त मस्जिदे हराम में सो रहे थे। उन तीनों में से एक ने कहा, वो आदमी कौन है? दूसरे ने कहा वही जो इन सब से बेहतर हैं। तीसरे ने कहा जो आखिर में था, उन सब में बेहतर को ले चलो। उस रात इतनी ही बातें हुई। आपने उन लोगों को देखा नहीं, यहां तक कि वो किसी दूसरी रात फिर आये। बायस हालत कि आपका दिल जाग रहा था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आखें तो सो जाती थी, लेकिन आपका दिल न सोता था और तमाम अम्बिया अलैहि. का यही हाल है कि उनकी आंखे सो जाती हैं और उनके दिल नहीं सोते। फिर जिब्राईल अलैहि. ने अपने जिम्मे यह काम लिया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आसमान की तरफ चढ़ाकर ले गये।

फायदे: इस रिवायत की बिना पर कुछ लोगों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख्वाब की हालत में मैराज हुआ था। लेकिन यह इस्तदलाल इसलिए गलत है कि मुमकिन है, फरिश्ते की आमद के वक्त आप सो रहे हों। इसलिए अलावा हजरत अनस रजि. से यह अल्फाज नकल करने में जो शख्स हैं, वो अकेले हैं। लिहाजा यह अल्फाज सही हदीस के खिलाफ हैं। (औनुलबारी 4/234)

बाब 35: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मौजिजात और नबूवत के निशानात का बयान।

٣٥ - باب: عَلَامَاتُ النُّبُوَّةِ فِي الإِسْلَامِ

1500: अनस रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि आप मुकामें जवराअ में तशरीफ रखते थे। वहां आपके पास पानी का एक बर्तन लाया गया। आपने अपना हाथ उस बर्तन में रखा तो आपकी अंगुलियों की बीच से पानी जोश मारने लगा। जिससे तमाम लोगों ने वज़ू किया। अनस रजि. से पूछा गया कि तुम उस वक्त कितने आदमी थे तो उन्होंने कहा, तीन सौ या तीन सौ के करीब करीब आदमी थे।

١٥٠٠ : وعَنْهُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أُتِيَ النَّبِيُّ بِإِنَاءٍ، وَهُوَ بِالزَّوْرَاءِ، فَوَضَعَ يَدَهُ فِي الإِنَاءِ، فَجَعَلَ المَاءُ يَنْبُعُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِهِ، فَتَوَضَّأَ القَوْمُ. قِيلَ لأَنَسٍ: كَمْ كُنْتُمْ؟ قَالَ: ثَلَاثَمِائَةٍ، أَوْ زُهَاءَ ثَلَاثِمِائَةٍ. [رواه البخاري: ٣٥٧٢]

फायदे: अंगुलियों के बीच से पानी के चश्मे फूटने का मोज़िज़ा सिर्फ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए है और किसी नबी को यह मोज़िज़ा नहीं मिला। (औनुलबारी 4/236)

1501: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि हम तो मौजिजात को बरकत का सबब ख्याल करते थे और तुम समझते हो कि कुफ्फार को डराने के लिए हुआ करते थे। एक बार हम किसी सफर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे कि पानी कम हो गया। आपने फरमाया कि कुछ बचा हुआ पानी तलाश कर लाओ। चूनांचे लोग एक बर्तन लाये, जिसमें थोड़ा सा पानी बाकी था। आपने

١٥٠١ : عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نَعُدُّ الآيَاتِ بَرَكَةً، وَأَنْتُمْ تَعُدُّونَهَا تَخْوِيفًا، كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي سَفَرٍ، فَقَلَّ المَاءُ، فَقَالَ: (اطْلُبُوا فَضْلَةً مِنْ مَاءٍ). فَجَاؤُوا بِإِنَاءٍ فِيهِ مَاءٌ قَلِيلٌ، فَأَدْخَلَ يَدَهُ فِي الإِنَاءِ ثُمَّ قَالَ: (حَيَّ عَلَى الطَّهُورِ المُبَارَكِ، وَالبَرَكَةُ مِنَ اللهِ). فَلَقَدْ رَأَيْتُ المَاءَ يَنْبُعُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَلَقَدْ كُنَّا نَسْمَعُ تَسْبِيحَ الطَّعَامِ وَهُوَ يُؤْكَلُ. [رواه البخاري: ٣٥٧٩]

अपना हाथ पानी में डाल दिया और उसके बाद फरमाया कि मुबारक पानी की तरफ आओ और बरकत तो अल्लाह के तरफ से है। मैंने देखा, अंगुलियों से पानी फूट रहा रहा था और कभी कभी हमें खाते वक्त खाने में तस्बीह की आवाजें आती थी।

फायदे: सहाबा किराम रजि. को तस्बीह सुनाना आपका मोजिज़ा था। वैसे तो कुरआन करीम की तस्रीह के मुताल्लिक हर चीज ही अल्लाह की तस्बीह बयान करती है। (औनुलबारी, 4/238)

١٥٠٢ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا قَوْمًا نِعَالُهُمُ الشَّعَرُ.) وقَدْ تَقَدَّمَ الحَدِيثُ بِطُولِهِ، وقَالَ فِي آخِرِ هٰذِهِ الرِّوَايَةِ: (وَلَيَأْتِيَنَّ عَلَى أَحَدِكُمْ زَمانٌ، لأَنْ يَرَانِي أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْ أَنْ يَكُونَ لَهُ مِثْلُ أَهْلِهِ وَمالِهِ) (راجع: ١٢٦٢).
[رواه البخاري: ٣٥٨٧، ٣٥٨٩ وانظر حديث رقم: ٢٩٢٨]

1502: अबू हुरैरा रजि. से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया कि कयामत कायम न होगी, जब तक कि तुम एक ऐसी कौम से जंग न करोगे जिनकी जूतियां बालों से बनी होगी। यह हदीस (1262) पहले गुजर चुकी है। लेकिन इतना इजाफा है कि तुम लोगों पर ऐसा जमाना भी आने वाला है कि सिर्फ मेरा एक बार का दीदार आदमी को अपने बीवी बच्चों व असबाब से भी ज्यादा महबूब होगा।

फायदे: यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा है कि अदना सा मुसलमान भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रूखे अनवर की झलक देखने के लिए बेचैन व बेताब है।

 (औनुलबारी 4/239)

١٥٠٣ : وعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ قَالَ: (لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا خُوزًا وَكِرْمَانَ مِنَ الأَعَاجِمِ،

1503: अबू हुरैरा रजि. से ही रिवायत है, उन्होंने कहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कयामत कायम न

حُمْرَ الْوُجُوهِ، فُطْسَ الأُنُوفِ، صِغَارَ الأَعْيُنِ، كَأَنَّ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُّ الْمُطْرَقَةُ، نِعَالُهُمُ الشَّعَرُ). [رواه البخاري: ٣٥٩٠]

होगी, यहां तक कि तुम अजम के शहरों में से खुज और करमान पर हमला आवर होंगे। वहां के बाशिन्दों के चेहरे सुर्ख, नाक उठी हुई और आंखे छोटी होंगी। जैसे के उनके चेहरे तह ब तह तैयारशुदा ढ़ाल की तरह हैं और उनके जूते बालों से बने हुए होंगे।

फायदेः अगरचे तुर्की कौमों के भी यही औसाफ बयान किये गये हैं ताहम मकामात को खास करने से मालूम होता है कि यह किसी और कौम के औसाफ हैं। क्योंकि खोज और करमान तुर्क अकवाम के इलाके नहीं हैं। (औनुलबारी, 4/240)

١٥٠٤ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (يُهْلِكُ النَّاسَ هٰذَا الحَيُّ مِنْ قُرَيْشٍ). قَالُوا: فَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: (لَوْ أَنَّ النَّاسَ ٱعْتَزَلُوهُمْ). [رواه البخاري: ٣٦٠٤]

1504: अबू हुरैरा रजि. से ही एक और रिवायत है, उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तुम लोगों को यह कबीला कुरैश हलाक करेगा। सहाबा किराम रजि. ने कहा, फिर हमारे लिए उस वक्त क्या हुक्म है? आपने फरमाया, काश कि उस वक्त लोग उनसे अलग रहें।

फायदेः इस हदीस में कुरैश नापुख्ताकार (ना तजुरबेकार) और नौखैज (नये) मुराद हैं। जो हुकूमत के भूके होंगे और हुकूमत की हवस की खातिर कत्ल व गारत और खूनरेजी से भी परहेज नहीं करेंगे। इरशादे नबवी के मुताबिक ऐसे हालात में उनसे उलझने की बजाये अपने दीन को बचाने की फिक्र करना चाहिए। (औनुलबारी 4/243)

١٥٠٥ : وَعَنْهُ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَيْضًا، فِي رِوَايَةٍ قَالَ: سَمِعْتُ

1505: अबू हुरैरा रजि. से ही एक दूसरी रिवायत में है, उन्होंने कहा कि

الصَّادِقَ الْمَصْدُوقَ يَقُولُ: (هَلَاكُ أُمَّتِي عَلَى يَدَيْ غِلْمَةٍ مِنْ قُرَيْشٍ). إِنْ شِئْتَ أَنْ أُسَمِّيَهُمْ بَنِي فُلَانٍ وَبَنِي فُلَانٍ. [رواه البخاري: ٣٦٠٥]

मैंने सादिक व मस्दूक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना, मेरी उम्मत की हलाकत कुरैश के कुछ लड़कों के हाथ पर होगी। अगर मैं चाहूं तो उनका नाम भी बता सकता हूं कि फलां बिन फलां और फलां बिन फलां।

फायदे: कुछ लोगों ने हजरत मरवान रजि. को भी इस हदीस का मिस्दाक ठहराया है। हालांकि किताबुलफितन की हदीस (7058) में हैं कि मरवान रजि. ने जब यह हदीस सुनी तो कहने लगे कि उन लड़कों पर अल्लाह की लानत हो।

١٥٠٦ : عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّاسُ يَسْأَلُونَ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ عَنِ الْخَيْرِ، وَكُنْتُ أَسْأَلُهُ عَنِ الشَّرِّ مَخَافَةَ أَنْ يُدْرِكَنِي، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، إِنَّا كُنَّا فِي جَاهِلِيَّةٍ وَشَرٍّ، فَجَاءَنَا ٱللهُ بِهٰذَا الْخَيْرِ، فَهَلْ بَعْدَ هٰذَا الْخَيْرِ مِنْ شَرٍّ؟ قَالَ: (نَعَمْ). قُلْتُ: وَهَلْ بَعْدَ هٰذَا الشَّرِّ مِنْ خَيْرٍ؟ قَالَ: (نَعَمْ، وَفِيهِ دَخَنٌ). قُلْتُ: مَا دَخَنُهُ؟ قَالَ: (قَوْمٌ يَهْدُونَ بِغَيْرِ هَدْيِي، تَعْرِفُ مِنْهُمْ وَتُنْكِرُ)، قُلْتُ: فَهَلْ بَعْدَ ذٰلِكَ الْخَيْرِ مِنْ شَرٍّ؟ قَالَ: (نَعَمْ، دُعَاةٌ إِلَى أَبْوَابِ جَهَنَّمَ، مَنْ أَجَابَهُمْ إِلَيْهَا قَذَفُوهُ فِيهَا)، قُلْتُ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، صِفْهُمْ لَنَا؟ فَقَالَ: (هُمْ مِنْ جِلْدَتِنَا، وَيَتَكَلَّمُونَ بِأَلْسِنَتِنَا).

1506: हुजैफा बिन यमान रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से खैर के बारे में पूछते थे। जबकि मैं आपसे फितने के बारे में पूछा करता था। सिर्फ इस अन्देशे से कि मुबादा मुझे पहुंच जाये। चूनांचे मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम जाहिलियत और शर में थे कि अल्लाह तआला ने हमें यह खैर यानी इस्लाम अता फरमाया तो इस खैर के बाद कोई और शर भी आने वाली है। आपने फरमाया, हां! मैंनें कहा कि इस शर के बाद भी कोई खैर होगी। आपने फरमाया, हां! मगर इसमें कुछ कदूरत

قُلْتُ: فَمَا تَأْمُرُنِي إِنْ أَدْرَكَنِي ذٰلِكَ؟ قَالَ: (تَلْزَمُ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِينَ وَإِمَامَهُمْ)، قُلْتُ: فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ جَمَاعَةٌ وَلَا إِمَامٌ؟ قَالَ: (فَاعْتَزِلْ تِلْكَ الْفِرَقَ كُلَّهَا، وَلَوْ أَنْ تَعَضَّ بِأَصْلِ شَجَرَةٍ، حَتَّى يُدْرِكَكَ الْمَوْتُ وَأَنْتَ عَلَى ذٰلِكَ). [رواه البخاري: ٣٦٠٦]

होगी। मैंने कहा, वो कदूरत क्या है? आपने फरमाया, कुछ लोग मेरे तरीके के खिलाफ तरीका इख्तियार करेंगे। तुम्हें उनके कुछ काम अच्छे मालूम होंगे और कुछ बुरे। फिर मैंने कहा, इस खैर के बाद क्या और शर भी होगी। फरमाया, हां! कुछ लोग जहन्नम के दरवाजों की तरफ आने की दावत देंगे जो उनकी बात मान लेगा उसको वो जहन्नम में गिरा देंगे। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझे उन लोगों का हाल बयान कर दीजिए। आपने फरमाया वो हमारी ही कौम से होंगे और हमारी ही तरह बातचीत करेंगे। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अगर मुझे यह जमाना मिले तो आप मुझे क्या हुक्म देते हैं? आपने फरमाया तुम मुसलमानों की जमात और उसके इमाम को मजबूत पकड़े रहना। मैंने कहा अगर उनकी कोई जमात और इमाम न हो? आपने फरमाया, तो उस वक्त तमाम फिरकों से अलग हो जाना। अगरचे उससे तेरी नौबत पेड़ की जड़ चबाने तक पहुंच जाये यहां तक कि उसी हालत में तुझे मौत आ जाये।

फायदेः इस हदीस को बुनियाद बनाकर कराची के एक फिरके ने जमाअते मुस्लिमीन का एक खुशनूमा लकब इख्तियार किया है जो अपने अलावा तमाम अहले इस्लाम को काफिर कहता है। हालांकि इस हदीस से अहले इस्लाम की हुकूमत और उनका खलीफा मुराद है। चूनांचे मुसनद इमाम अहमद (5/403) में इसका खुलासा है।

١٥٠٧ : عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِذَا حَدَّثْتُكُمْ عَنْ رَسُولِ اللهِ

1507: अली रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि जब मैं तुम से रसूलुल्लाह

قَالَ: إِذَا حَدَّثْتُكُمْ عَنْ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ، فَلأَنْ أَخِرَّ مِنَ السَّمَاءِ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَكْذِبَ عَلَيْهِ، وَإِذَا حَدَّثْتُكُمْ فِيمَا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ، فَإِنَّ الْحَرْبَ خَدْعَةٌ، سَمِعْتُ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ يَقُولُ: (يَأْتِي فِي آخِرِ الزَّمَانِ قَوْمٌ، حُدَثَاءُ الأَسْنَانِ، سُفَهَاءُ الأَحْلاَمِ، يَقُولُونَ مِنْ قَوْلِ خَيْرِ الْبَرِيَّةِ، يَمْرُقُونَ مِنَ الإِسْلاَمِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ، لاَ يُجَاوِزُ إِيمَانُهُمْ حَنَاجِرَهُمْ، فَأَيْنَمَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاقْتُلُوهُمْ، فَإِنَّ قَتْلَهُمْ أَجْرٌ لِمَنْ قَتَلَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ). [رواه البخاري: ٣٦١١]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस बयान करता हूँ तो आप पर झूठ बोलने से मुझको यह ज्यादा पसन्द है कि मैं आसमान से गिर जाऊं। और जब मैं तुमसे वो बातें करूं जो मेरे और तुम्हारे बीच हुई हैं तो (कोई नुकसान नहीं क्योंकि) लड़ाई एक पुरफरेब चाल है। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि आखिर जमाने में कुछ नौ उमर बेवकूफ पैदा होंगे जो जुबान से बेहतरीन मखलूक की बातें करेंगे। लेकिन इस्लाम से इस तरह निकल जायेंगे जिस तरह तीर कमान से निकल जाता है और ईमान उनके हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा। ऐसे लोगों से जहां मुलाकात हो, उन्हें कत्ल करने की कोशिश करना क्योंकि कयामत के दिन उस आदमी को सवाब मिलेगा जो उनको कत्ल करेगा।

फायदे: ख्वारिज और उनके फितनो की तरफ इशारा है, उन्होंने "सिर्फ अल्लाह का फैसला है" की आड़ में हजरत अली और हजरत मआविया रजि. को काफिर कहा। हजरत अली रजि. फरमाया करते थे कि कुरआनी आयत हकीकत पर मब्नी है, अलबत्ता उसे गलत मायने पहनाये गये हैं। (औनुलबारी 4/246)

١٥٠٨ : عَنْ خَبَّابِ بْنِ الأَرَتِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: شَكَوْنَا إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ وَهُوَ مُتَوَسِّدٌ بُرْدَةً لَهُ

1508: खब्बाब बिन अरत रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

في ظِلِّ الْكَعْبَةِ، قُلْنَا لَهُ: أَلا تَسْتَنْصِرُ لَنَا، أَلا تَدْعُو ٱللهَ لَنَا؟ قَالَ: (كانَ الرَّجُلُ فِيمَنْ قَبْلَكُمْ يُحْفَرُ لَهُ فِي الأَرْضِ، فَيُجْعَلُ فِيهِ، فَيُجَاءُ بِالْمِنْشَارِ فَيُوضَعُ عَلَى رَأْسِهِ فَيُشَقُّ بِاثْنَتَيْنِ، وَمَا يَصُدُّهُ ذٰلِكَ عَنْ دِينِهِ، وَيُمْشَطُ بِأَمْشَاطِ الحَدِيدِ ما دُونَ لَحْمِهِ مِنْ عَظْمٍ أَوْ عَصَبٍ، وَما يَصُدُّهُ ذٰلِكَ عَنْ دِينِهِ، وَٱللهِ لَيُتِمَّنَّ هٰذا الأَمْرَ، حَتَّى يَسِيرَ الرَّاكِبُ مِنْ صَنْعَاءَ إِلَى حَضْرَمَوْتَ، لاَ يَخَافُ إِلَّا ٱللهَ، أَوِ الذِّئْبَ عَلَى غَنَمِهِ، وَلٰكِنَّكُمْ تَسْتَعْجِلُونَ). [رواه البخاري: ٣٦١٢]

वसल्लम कअबा के साये तले अपनी चादर से तकिया लगाये बैठे थे कि हमने आपसे कुफ्फार की तकलीफ के बारे में शिकायत की? हमने कहा कि आप हमारे लिए मदद क्यों नहीं मांगते? आपने फरमाया, तुम लोगों से पहले कुछ लोग ऐसे हुए हैं कि उनके लिए जमीन में गड्ढ़ा खोदा जाता था। फिर उसमें उन्हें खड़ा कर दिया जाता। आरा लाया जाता और उनके सर पर रख कर उनके दो टुकड़े कर दिये जाते। लेकिन इस कद्र सख्ती उनको उनके दीन से अलग न करती थी। फिर उनके गोश्त के नीचे हड्डी और पट्ठों पर लोहे की कंघियां खैंच दी जाती थी। लेकिन यह तकलीफ भी उन्हें उनके दीन से न हटा सकती थी। अल्लाह की कसम! यह दीन जरूर पूरा होगा। इस हद तक कि अगर कोई मुसाफिर सनाअ से हजरे मौत तक का सफर करेगा तो उसे अल्लाह के सिवा किसी का डर न होगा और न कोई अपनी बकरियों के लिए भेड़ियें का डर करेगा। मगर तुम जल्दी करते हो।

١٥٠٩ : عَنْ أَنَسٍ، رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ ٱفْتَقَدَ ثَابِتَ بْنَ قَيْسٍ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ ٱللهِ، أَنا أَعْلَمُ لَكَ عِلْمَهُ، فَأَتَاهُ فَوَجَدَهُ جَالِسًا فِي بَيْتِهِ، مُنَكِّسًا رَأْسَهُ، فَقَالَ: ما شَأْنُكَ؟ فَقَالَ: شَرٌّ، كانَ

1509: अनस रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने साबित बिन कैस रज़ि॰ को न पाया तो एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उसकी

يَرْفَعُ صَوْتَهُ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ، وَهُوَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، فَأَتَى الرَّجُلُ فَأَخْبَرَهُ أَنَّهُ قَالَ كَذَا وَكَذَا. فَرَجَعَ المَرَّةَ الآخِرَةَ بِبِشَارَةٍ عَظِيمَةٍ، فَقَالَ: (ٱذْهَبْ إِلَيْهِ، فَقُلْ لَهُ: إِنَّكَ لَسْتَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ وَلٰكِنْ مِنْ أَهْلِ الجَنَّةِ). [رواه البخاري: ٣٦١٣]

खबर लाकर दूंगा। चूनांचे वो साबित बिन कैस रजि. के पास गया और उसे अपने घर में सर झुकाये बैठा पाया तो उस आदमी ने पूछा, तुम्हारा क्या हाल है? साबित बिन कैस रजि. ने कहा, बुरा हाल है। यह अपनी आवाज को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आवाज पर बुलन्द करता है। लिहाजा उसका अमल जाया हो गया और वो दोजखियों से है। चूनांचे वो आदमी वापस आया और आपको हकीकते हाल से आगाह किया कि उसने ऐसा कहा है। फिर वो आदमी दूसरी बार बड़ी खुशी लेकर गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, साबित बिन रजि. के पास जाओ और उसे कहो कि तुम दौजखियों में से नहीं, बल्कि तुम जन्नती हो।

फायदे: हजरत अनस रजि. फरमाते हैं कि हजरत साबित बिन कैस रजि. को हम चलता फिरता जन्नती शुमार करते थे। यहां तक कि जंगे यमामा के वक्त उन्होंने कफन पहना, खुशबू लगाई और मैदाने कारजार में कूद पड़े और शहादत के जाम को नोश फरमाया।

 (औनुलबारी 4/249)

١٥١٠ : عَنِ البَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَرَأَ رَجُلٌ الكَهْفَ، وَفِي الدَّارِ الدَّابَّةُ، فَجَعَلَتْ تَنْفِرُ، فَسَلَّمَ الرَّجُلُ، فَإِذَا ضَبَابَةٌ، أَوْ سَحَابَةٌ، غَشِيَتْهُ، فَذَكَرَهُ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: (ٱقْرَأْ فُلاَنُ، فَإِنَّهَا السَّكِينَةُ نَزَلَتْ لِلْقُرْآنِ، أَوْ تَنَزَّلَتْ لِلْقُرْآنِ). [رواه البخاري: ٣٦١٤]

1510: बराअ बिन आजिब रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक आदमी ने सूरह कहफ पढ़ी तो सवारी बिदकने लगी। जो उनके घर में बंधी हुई थी। इस पर उस आदमी ने सलामती की दुआ की। तो अचानक उसके सर

पर एक बादल साया किये हुए था। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसका जिक्र किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ऐ आदमी! तू पढ़ता ही रहता, क्योंकि यह एक सकून व इत्मिनान होता है जो कुरआन की बरकत से नाजिल हुआ करता है।

फायदे: बुखारी किताब फजाइले कुरआन में इस तरह का एक वाक्या हजरत उसैद बिन हुजैर रजि. से भी पेश आया। जबकि वो रात के वक्त सूराह बकरह की तिलावत कर रहे थे। मुमकिन है कि यह वाक्या भी उन्हीं से मुताल्लिक हो। (औनुलबारी 4/250)

١٥١١ : عَنِ ٱبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَى أَعْرَابِيٍّ يَعُودُهُ، قَالَ: وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا دَخَلَ عَلَى مَرِيضٍ يَعُودُهُ قَالَ: (لَا بَأْسَ، طَهُورٌ إِنْ شَاءَ ٱللهُ). فَقَالَ لَهُ: (لَا بَأْسَ طَهُورٌ إِنْ شَاءَ ٱللهُ)، قَالَ: قُلْتَ: طَهُورٌ؟ كَلَّا، بَلْ هِيَ حُمَّى تَفُورُ، أَوْ تَثُورُ، عَلَى شَيْخٍ كَبِيرٍ، تُزِيرُهُ الْقُبُورَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (فَنَعَمْ إِذًا). [رواه البخاري: ٣٦١٦]

1511: इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक देहाती की बीमारी का हाल जानने के लिए तशरीफ ले गये और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदत थी कि जब किसी मरीज को देखने के लिए तशरीफ ले जाते तो यह फरमाया करते, कोई हर्ज नहीं, इन्शा अल्लाह पाकिजगी का सबब होगा। लिहाजा आपने उसे भी यही कहा, कुछ हर्ज नहीं, अगर अल्लाह ने चाहा तो यह गुनाह की माफी का सबब है। उसने कहा कि आप कहते हैं कि यह बीमारी गुनाहों से पाक कर देगी, हरगिज नहीं! यह तो एक सख्त बुखार है जो एक बूढ़े को लपेट में लिए हुए है और उसे कब्र में ले जायेगा। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हां अब ऐसा ही होगा।

फायदे: चूनांचे वो अगले दिन चल बसा। जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने उसके बारे में कहा था। (औनुलबारी 4/252)

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ : ١٥١٢ قَالَ: كَانَ رَجُلٌ نَصْرَانِيًّا فَأَسْلَمَ، وَقَرَأَ ٱلْبَقَرَةَ وَآلَ عِمْرَانَ، فَكَانَ يَكْتُبُ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَعَادَ نَصْرَانِيًّا، فَكَانَ يَقُولُ: مَا يَدْرِي مُحَمَّدٌ إِلا مَا كَتَبْتُ لَهُ، فَأَمَاتَهُ ٱللهُ فَدَفَنُوهُ، فَأَصْبَحَ وَقَدْ لَفَظَتْهُ الأَرْضُ، فَقَالُوا: هٰذَا فِعْلُ مُحَمَّدٍ وَأَصْحَابِهِ لَمَّا هَرَبَ مِنْهُمْ، نَبَشُوا عَنْ صَاحِبِنَا فَأَلْقَوْهُ، فَحَفَرُوا لَهُ فَأَعْمَقُوا، فَأَصْبَحَ وَقَدْ لَفَظَتْهُ الأَرْضُ، فَقَالُوا: هٰذَا فِعْلُ مُحَمَّدٍ وَأَصْحَابِهِ، نَبَشُوا عَنْ صَاحِبِنَا لَمَّا هَرَبَ مِنْهُمْ فَأَلْقَوْهُ خَارِجَ القَبْرِ، فَحَفَرُوا لَهُ وَأَعْمَقُوا لَهُ فِي الأَرْضِ مَا ٱسْتَطَاعُوا، فَأَصْبَحَ قَدْ لَفَظَتْهُ الأَرْضُ، فَعَلِمُوا: أَنَّهُ لَيْسَ مِنَ النَّاسِ، فَأَلْقَوْهُ. [رواه البخاري: ٣٦١٧]

1512: अनस रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि एक नसरानी आदमी ने मुसलमान होकर सूरह बकरह और सूरह आले इमरान पढ़ ली। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए किताबत वहय करने लगा। इसके बाद वो फिर नसरानी हो गया और कहने लगा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सिर्फ वही कुछ जानते हैं जो मैंने उनके लिए लिख दिया है। चूनांचे अल्लाह ने उसे मौत दे दी तो लोगों ने उसे दफन कर दिया। जब सुबह हुई तो लोगों ने देखा कि जमीन ने उसकी लाश बाहर फैंक दी है। लोगों ने कहा, यह तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उसके साथियों का काम है। क्योंकि उनके पास से भाग आया था। इसलिए हमारे साथी की कब्र उन्होंने खोद डाली है। फिर उन्होंने उसे कब्र में रखकर बहुत गहराई में दफन कर दिया। मगर सुबह को जमीन ने उसकी लाश फिर बाहर फैंक दी। इस पर लोगों ने कहा कि यह तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उसके साथियों का काम है। उन्होंने हमारे साथी की कब्र उखाड़ी है क्योंकि वो उनके पास से भाग आया था। लिहाजा उन्होंने उसकी कब्र फिर और ज्यादा गहरी खोद दी जितना कि उनके ख्याल में था। लेकिन सुबह के वक्त उसकी लाश फिर जमीन ने बाहर फैंक दी थी। तब लोगों ने यकीन किया कि

यह आदमियों की तरफ से नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ से है। लिहाजा उसको उसी तरह डाल दिया।

फायदे: मुस्लिम की रिवायत में है कि अपने साथियों में रहते हुए अचानक गर्दन टूटने से उसकी मौत वाकेअ हुई थी।

 (औनुलबारी 4/253)

١٥١٣ : عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (هَلْ لَكُمْ مِنْ أَنْمَاطٍ؟)، قُلْتُ: وَأَنَّى يَكُونُ لَنَا الأَنْمَاطُ؟ قَالَ: (أَمَا إِنَّهُ سَيَكُونُ لَكُمُ الأَنْمَاطُ)، فَأَنَا أَقُولُ لَهَا أَخِّرِي عَنَّا أَنْمَاطَكِ، فَتَقُولُ: أَلَمْ يَقُلِ النَّبِيُّ ﷺ: (إِنَّهَا سَتَكُونُ لَكُمُ الأَنْمَاطُ)، فَأَدَعُهَا. [رواه البخاري: ٣٦٣١]

1513: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि. से रिवायत है, उन्होंने कहा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, क्या तुम्हारे पास कालीन है। मैंने कहा, हम लोगों के पास कहां? आपने फरमाया, जल्दी ही तुम्हारे पास कालीन होगी। चूनाचें एक वक्त आया कि मैं अपनी बीवी से कहता था कि अपने कालीन को हमारे पास से हटा दे तो वो कहती है कि क्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया न था कि जल्दी ही तुम्हारे पास कालीन होंगी। इसलिए मैं उनको क्यों अलग रख दूं। चूंनाचे मैं उसे उसके हाल पर छोड़ देता हूँ।

फायदे: अनमात जमा है, नम्त की, वो कपड़ा है जो पर्दे के तौर पर लटकाया जाये या नीचे बिछाया जाये। हकीकी जरूरत के पैशे नजर इसके इस्तेमाल में कोई हर्ज नहीं। अलबत्ता दीवार ढ़कने और नुमाईश के इजहार के लिए ठीक नहीं है। (औनुबारी, 4/254)

١٥١٤ : عَنْ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ لِأُمَيَّةَ بْنِ خَلَفٍ: إِنِّي سَمِعْتُ مُحَمَّدًا ﷺ يَزْعُمُ أَنَّهُ قَاتِلُكَ، قَالَ: إِيَّايَ؟،

1514: साद बिन मुआज रजि. से रिवायत है कि उन्होंने उमैया बिन खलफ से कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए

قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: وَٱللهِ ما يَكْذِبُ مُحَمَّدٌ إِذا حَدَّثَ، فَقَتَلَهُ ٱللهُ بِبَدْرٍ، وفي الحَدِيثِ قِصَّةٌ هَذا مَضمونُ الحَديثِ منها. [رواه البخاري: ٣٦٣٢]

सुना है कि वो खुद मुझे कत्ल करेंगे। उमैया ने पूछा क्या मुझे? उन्होंने कहा, हां! उमैया ने कहा, अल्लाह की कसम! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जो बात कहते हैं, तो वो झूट नहीं कहते। चूनांचे अल्लाह ने उसे गजवा बदर में कत्ल कर दिया। इस हदीस में एक वाक्या भी है, मगर असल हदीस का मजमून यही है।

फायदाः चूनांचे यह कहना पूरा हो गया, उमैया गजवा बदर में नहीं जाना चाहता था, मगर अबू जहल जबरदस्ती साथ ले आया। चूनांचे वहीं वो जहन्नम वालों में से हुआ।

١٥١٥ : عَنْ اسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلامُ أَتَى النَّبِيَّ ﷺ وَعِنْدَهُ أُمُّ سَلَمَةَ، فَجَعَلَ يُحَدِّثُ ثُمَّ قَامَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأُمِّ سَلَمَةَ: (مَنْ هٰذَا؟) أَوْ كَمَا قَالَ، قَالَ: قَالَتْ: هٰذَا دِحْيَةُ، قَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ: ايْمُ ٱللهِ ما حَسِبْتُهُ إِلَّا إِيَّاهُ، حَتَّى سَمِعْتُ خُطْبَةَ نَبِيِّ ٱللهِ ﷺ يُخْبِرُ عَنْ جِبْرِيلَ، أَوْ كما قالَ: [رواه البخاري: ٣٦٣٤]

1515: उसामा बिन जैद रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जिब्राईल अलैहि. उस वक्त तशरीफ लाये, जबकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास उम्मे सलमा रजि. बैठी थी। जिब्राईल अलैहि. आपसे बाते करने लगे। फिर उठकर चले गये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मे सलमा से पूछा कि यह कौन थे? उन्होंने कहा कि यह दहया रजि. थे। उम्मे सलमा रजि. का बयान है कि अल्लाह की कसम! मैं उन्हें दहया रजि. ख्याल करती रही, यहां तक कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खुत्बा सुना कि आप जिब्राईल अलैहि. से रिवायत कर रहे थे या जैसा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया।

फायदेः हजरत जिब्राईल जब इन्सानी शक्ल में तशरीफ लाते तो अकसर हजरत दहया कलबी रजि. की सूरत इख़्तेयार करते थे।

(औनुलबारी 4/256)

1516: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैंने लोगों को पाक साफ जमीन में इकट्ठा देखा, इतने में अबू बकर रजि. उठे और उन्होंने एक या दो डोल निकाल लिये। मगर उनके निकालने में कमजोरी पाई जाती थी। अल्लाह उनकी बख़्शीश फरमाये। फिर वो डोल उमर रजि. ने ले लिया और वो डोल उनके लेते ही एक बहुत बड़ा डोल बन गया और मैंने लोगों में से किसी ताकतवर आदमी को नहीं देखा जो उमर रजि. की तरह ताकत के साथ पानी भरता हो। उन्होंने इतना पानी भरा कि सब लोगों ने अपने ऊंटो को पानी पिला कर बैठा दिया।

١٥١٦ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ ٱللهِ ﷺ قَالَ: (رَأَيْتُ النَّاسَ مُجْتَمِعِينَ فِي صَعِيدٍ، فَقَامَ أَبُو بَكْرٍ فَنَزَعَ ذَنُوبًا أَوْ ذَنُوبَيْنِ، وَفِي بَعْضِ نَزْعِهِ ضَعْفٌ، وَٱللهُ يَغْفِرُ لَهُ، ثُمَّ أَخَذَهَا عُمَرُ، فَٱسْتَحَالَتْ بِيَدِهِ غَرْبًا، فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا فِي النَّاسِ يَفْرِي فَرِيَّهُ، حَتَّى ضَرَبَ النَّاسُ بِعَطَنٍ) [رواه البخاري: ٣٦٣٤]

फायदेः इसमें इशारा था कि हजरत अबू बकर रजि. का दौरे खिलाफत थोड़ा होगा। मगर काफिर हो जाने वालों को सजा देने की वजह से ज्यादा फतह भी न हो सकी। (औनुलबारी 4/257)

बाब 36: फरमाने इलाही : "जिन लोगों को हमने किताब दी वो आपको ऐसा पहचानते हैं, जैसा अपने औलाद को पहचानते हैं। मगर उनमें से एक गिरोह जानबूझ कर हक को छिपा रहा है।"

٣٦ - باب: قَوْلُ الله تَعَالَى: ﴿يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ ٱلْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ﴾

١٥١٧ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ ٱلْيَهُودَ جاؤُوا إِلَى رَسُولِ ٱللهِ ﷺ فَذَكَرُوا لَهُ أَنَّ رَجُلًا مِنْهُمْ وَٱمْرَأَةً زَنَيَا، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ ٱللهِ ﷺ: (ما تَجِدُونَ فِي التَّوْرَاةِ فِي شَأْنِ الرَّجْمِ؟) فَقَالُوا: نَفْضَحُهُمْ وَيُجْلَدُونَ فَقَالَ عَبْدُ ٱللهِ بْنِ سَلَامٍ: كَذَبْتُمْ، إِنَّ فِيهَا الرَّجْمَ، فَأْتُوا بِالتَّوْرَاةِ فَنَشَرُوهَا، فَوَضَعَ أَحَدُهُمْ يَدَهُ عَلَى آيَةِ الرَّجْمِ، فَقَرَأَ ما قَبْلَهَا وَما بَعْدَهَا، فَقَالَ لَهُ عَبْدُ ٱللهِ بْنُ سَلَامٍ: ٱرْفَعْ يَدَكَ، فَرَفَعَ يَدَهُ فَإِذَا فِيهَا آيَةُ الرَّجْمِ، فَقَالُوا: صَدَقَ يَا مُحَمَّدُ، فِيهَا آيَةُ الرَّجْمِ، فَأَمَرَ بِهِمَا رَسُولُ ٱللهِ ﷺ فَرُجِمَا. [رواه البخاري: ٣٦٣٥]

1517: अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. से ही रिवायत है कि यहूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और आपसे कहने लगे कि उनमें से एक मर्द और एक औरत ने जिना किया है। आपने उनसे पूछा कि तुम रजम (पत्थर से मार मार कर हलाक करने) की बाबत तौरात में क्या हुक्म पाती हो? यहूद ने कहा कि हम जिनाकारी को रूसवा करते हैं और उन्हें कोड़े लगाते हैं। यह सुनकर अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि. ने कहा, तुम झूठ बोलते हो। तौरात में रजम का हुक्म है। तौरात लाओ। चूनांचे वो लाये और उसे खोला। फिर उनमें से एक आदमी ने अपना हाथ आयते रजम पर रख लिया और उसके पहले और बाद का मजमून पढ़ दिया। अब्दुल्लाह बिन सलाम रजि. ने कहा कि अपना हाथ तो हटाओ। चूनांचे उसने अपना हाथ हटाया तो उस जगह रजम की आयत मौजूद थी। उस वक्त बोले, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! ठीक है तौरात में यकीनन आयते रजम मौजूद है। लिहाजा उन दोनों के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रजम का हुक्म दिया और उन्हें संगसार कर दिया गया।

फायदेः यहूदी बदनियत होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास यह मुकदमा लेकर आये थे। क्योंकि उन्हें पता चला था कि यह नबी अपनी उम्मत के लिए आसानी लेकर आया है, ताकि रजम से हल्की सजा पर गुजारा हो जायेगा। बिलआखिर रजम की सजा का

सामना करना पड़ा। (औनुलबारी 4/258)

बाब 37: मुश्रिकीन के मुतालबे पर हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बतौर निशानी चांद का टुकड़े होते हुए दिखाना।

٣٧ - باب: سُؤالُ الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُرِيَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ آيَةً فَأَرَاهُمُ انْشِقَاقَ الْقَمَرِ

1518: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से रिवायत है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में चांद के दो टुकड़े हुए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, गवाह रहना।

١٥١٨ : عَنْ عَبْدِ ٱللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ قَالَ: ٱنْشَقَّ الْقَمَرُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ ٱللهِ ﷺ شِقَّتَيْنِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: (ٱشْهَدُوا). [رواه البخاري: ٣٦٣٦]

फायदे: हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. का बयान है कि हम मक्का में थे कि चांद के एक टुकड़े को मिना के पहाड़ों पर गिरते देखा है। (औनुलबारी 4/259)

1519: उरवा बारिकी रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको एक अशर्फी दी ताकि उससे आपके लिए एक बकरी खरीदे। उन्होंने उसके बदले आपके लिए दो बकरियां खरीद ली। फिर एक बकरी एक अशर्फी में बेच दी और आपके पास एक बकरी और एक अशर्फी ले आये। आपने उनके लिए उनकी खरीद व फरोख्त में बरकत की दुआ की। चूंनाचे फिर वो अगर मिट्टी भी खरीदते तो उसमें भी उन्हें नफा होता।

١٥١٩ : عَنْ عُرْوَةَ الْبَارِقِيِّ رَضِيَ ٱللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَعْطَاهُ دِينَارًا يَشْتَرِي لَهُ بِهِ شَاةً، فَٱشْتَرَى لَهُ بِهِ شَاتَيْنِ، فَبَاعَ إِحْدَاهُمَا بِدِينَارٍ، وَجَاءَهُ بِدِينَارٍ وَشَاةٍ، فَدَعَا لَهُ بِالْبَرَكَةِ فِي بَيْعِهِ، وَكَانَ لَوِ ٱشْتَرَى التُّرَابَ لَرَبِحَ فِيهِ. [رواه البخاري: ٣٦٤٢]

फायदेः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उरवा बारिकी रजि. के इस सौदे को न सिर्फ बरकरार रखा, बल्कि उसे पसन्द फरमाकर दुआ दी कि अल्लाह उसकी खरीद व फरोख्त के मामलों में बरकत अता फरमाये। (औनुलबारी 4/260)

नोट : इस्लाम में मुनाफे की मिकदार को फिक्स नहीं किया, क्योंकि इसका ताल्लुक हालात से है जो बदलते रहते हैं। अमूमी उसूल दिया है कि मुसलमानों को एक दूसरे का भला चाहने वाला और हमदर्द होना चाहिए और अपने भाई के लिए वही चीज पसन्द करनी चाहिए जो अपने लिए पसन्द करता है। लिहाजा इन्सान खरीदते वक्त जितना नफा दूसरे को देना चाहता है, बेचते वक्त दूसरों से उतना नफा ले ले। (अलवी)



www.Momeen.blogspot.com

www.Momeen.blogspot.com

www.Momeen.blogspot.com

प्रकाशक :

इस्लामिक बुक सर्विस

2872-74, कूचा चेलान, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002
फोन: +91-11-23253514, 23286551, 23244556
फैक्स: +91-11-23277913, 23247899
E-mail: ibsdelhi@del2.vsnl.net.in
islamic@eth.net
Website: www.islamicindia.co.in
www.islamicindia.in



Price Rs. 150.00